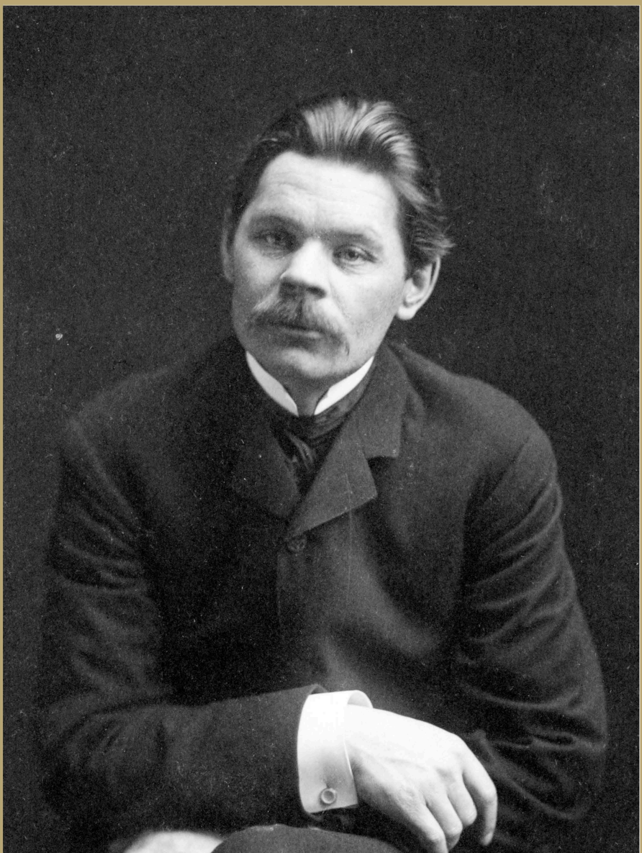
बीसवीं शताब्दी का साहित्य

मक्सिम गोर्की

चुनी हुई रचनाएं

२



रादुगा प्रकाशन
मास्को

साहित्य अकादमी
नई दिल्ली

साहित्य अकादमी
नई दिल्ली

रादुगा प्रकाशन
मास्को

बीसवीं शताब्दी का साहित्य

२

मक्सिम गोर्की

चुनी हुई रचनाएं

अनुवादक और सपादक डा० 'मधु'

МАКСИМ ГОРЬКИЙ

Избранное

(Библиотека советской литературы XX века, том II)

На языке хинди

MAXIM GORKY

Selected Works

(The 20th Century Soviet Literature, Vol. II)

In Hindi

मोवियत सघ में प्रकाशित

ISBN 5-05-001492-1

अनुक्रम

कहानियां

बुढ़िया इज़रगिल

१

मैंने ये कहानियां बेस्साराबिया में अक्करमन के नज़दीक समुद्र-तट पर सुनी थी।

सांझ का ममय था। अंगूर तोड़ने का काम ख़त्म हो चुका था। मोल्दावियावासियो का दल, जिमके साथ मैं अगूर तोड़ने का काम करता था, समुद्र-तट को चल दिया। मै और बुढ़िया इजरगिल अंगूरी बेलों की घनी छाव में चुपचाप लेटे थे और रात के नीले तिमिर में ममुद्र-तट की ओर जाते लोगो की परछाइयों को विलीन होते देख रहे थे।

वे गाते और हंसते हुए जा रहे थे। सांवले मर्दों की मूंछें घनी और काली थी, कधो तक के बाल घुंघराले थे। वे छोटे कुरते और ढीली-ढाली सलवारें पहने थे। गहरी नीली आखो और सुघड़-सुडौल बदनवाली प्रमन्न तथा प्रफुल्ल औरते और लडकियां भी सावली थी। रेशम-से मुलायम उनके काले बाल लहरा रहे थे, सुहानी हवा उनके बालों के साथ खिलवाड़ कर रही थी और उनमें गुंथे सिक्के आपस में टकराकर झंकार कर रहे थे। हवा की एक प्रशस्त और निर्बाध धारा बह रही थी, लेकिन जब-तब वह मानो किसी अदृश्य चीज़ के ऊपर से ज़ोर की छलांग लगाती, जिमसे तेज झोंका आता, हवा स्त्रियों के बालों को छितरा देती और वे उनके सिरों के इर्द-गिर्द लहरानेवाले काल्पनिक अयाल-से प्रतीत होने लगते। इसमे औरतें परी-लोक की अद्भुत-सी जीव मालूम होती। वे हमसे जितनी ही दूर होती जाती थी, रात और कल्पना उन्हें उतने ही सुन्दर आवरणो में लपेटती जाती थी।

कोई वायोलिन बजा रहा था एक लड़की मधुर, गहरे स्वर से गा रही थी, हंसने की आवाज़ आ रही थी...

हवा समुद्र की तीखी गंध और कुछ पहले बारिश द्वारा खूब तर की गयी धरती की घनी भाप से सराबोर थी। विचित्र आकारों और रंगोंवाले बादल आकाश में अभी भी तैर रहे थे – कहीं धुएं के गुब्बारे की भांति अस्पष्ट, नीलगूं और राख जैसे हल्के नीले रग के और कही

चट्टान के खण्डों की भांति कटावदार, एकदम काले या कत्थई। उनके बीच से प्यार से झांक रहा था सुनहरे तारों-जड़ी रात का आकाश। यह सभी कुछ – ध्वनियां और गंध, बादल और लोग – विचित्र रूप से सुन्दर और उदास थे तथा किसी अद्भुत परी-कथा का आरम्भ-सा प्रतीत हो रहे थे। ऐसा मालूम होता था, मानो सब कुछ ने दम साध लिया हो, सब कुछ गतिहीन हो। जैसे-जैसे वे दूर होते गये, लोगों की आवाज़ें अस्पष्ट और उदास उसांसों में परिणत होकर शून्य में खोती गईं।

"तुम उनके साथ क्यों नहीं गये?" सिर हिलाकर समुद्र की ओर इशारा करते हुए बुढ़िया इज़रगिल ने पूछा।

समय ने उसकी कमर को दोहरा कर दिया था। उसकी आंखें, जो कभी खूब काली और चमकदार रही होंगी, अब धुंधली और पनीली हो गई थीं। उसकी खरखरी आवाज़ अजीब-सी थी – जब वह बोलती, तो ऐसे लगता मानो हड्डियां चिटक रही हों।

"मन नहीं हुआ," मैंने जवाब दिया।

"ओह!.. तुम रूसी लोग जन्म से ही बूढ़े होते हो। सबके सब अजगर की भांति उदास.. हमारी लड़कियां तुमसे डरती हैं... हालांकि तुम जवान और मज़बूत हो "

चांद निकल आया – खूब बड़ा और रक्ताभ। ऐसा मालूम होता था मानो वह इस स्तेपी के अन्तहीन मैदानों के गर्भ में से प्रकट हुआ हो, जिसमें न जाने कितना मानवीय रक्त और मांस समाया है और जो शायद इसीलिये इतनी सम्पन्न और उपजाऊ है। बुढ़िया और मैं पत्तों की बेल-बूटेदार परछाइयों के जाल में घिर-से गये थे। बाईं ओर, स्तेपी के ऊपर बादलों की परछाइयां दौड़ रही थीं जिन्हें नीली चांदनी ने और भी अधिक झीना और पारदर्शी बना दिया था।

"देखो, वह लारा है!"

मेरी आंखें उस ओर मुड़ गईं, जिधर बुढ़िया की कांपती हुई टेढ़ी उंगली इशारा कर रही थी। वहां बहुत-सी परछाइयां तैर रही थीं और उनमें से एक, जो अन्य सबसे गहरी और घनी थी, तेज़ी से बढ़ रही थी। वह बादल के उस गाले की छाया थी जो धरती के अधिक निकट तैर रहा था और अपने साथी-बादलों की तुलना में अधिक तेज़ी से उड़ रहा था।

"वहां तो कोई नही है!" मैंने कहा।

"तुम्हारी नज़र मुझ बुढ़िया से भी गयी-बीती है। देखो, वह काला-सा, स्तेपी में दौड़ रहा है!"

मैंने फिर देखा और परछाइयों के सिवा इस बार भी और कुछ दिखाई नही दिया।

"वह तो केवल परछाई है। तुम उसे लारा क्यों कहती हो?"

"क्योकि यह वही है। वह अब छाया ही बनकर रह गया है— इसका वक्त जो आ गया है। हज़ारो वर्ष हो गये उसे भटकते हुए। सूरज ने उसके मास, रक्त और हड्डियो को सुखा दिया है और हवा ने उन्हे छितरा दिया। देखा तुमने, ख़ुदा किस तरह घमडी को दड देता है!"

"मुझे पूरी कथा सुनाओ!" मैने इस आशा से बुढ़िया से अनुरोध किया कि स्तेपी में जन्मी एक अद्भुत कहानी सुनने को मिलेगी।

और उसने मुझे यह कहानी सुनायी।

"हज़ारों साल पहले यह घटना घटी थी। समुद्र के पार बहुत दूर — जहा से सूरज निकलता है — एक बहुत बडी नदीवाला देश है। उस देश का प्रत्येक पत्ता और घास का प्रत्येक डठल इतनी छांव देता है कि उसमे बैठकर आदमी बेरहम सूरज से अपने को बचा सकता है।

"तो इतनी उपजाऊ है उस देश की धरती!

"उस देश मे शक्तिशाली लोगों का एक क़बीला बसता था। वे रेवड पालते, शक्ति तथा साहस से जगली जानवरो का शिकार करते, शिकार के बाद ख़ूब जशन मनाते, गीत गाते और लड़कियो के साथ मौज करते।

"एक दिन, ऐसे ही एक जशन के वक्त एक बाज़ ने सहसा आकाश से झपट्टा मारा और एक लडकी को, जो रात की भाति काले बालो-वाली तथा प्यारी थी, उठा ले गया। लोगो ने तीर छोड़े, लेकिन बाज़ का बाल तक बाका नही हुआ और तीर वैसे ही धरती पर आ गिरे। लोग लड़की की खोज में गये, लेकिन बेसूद। समय बीता और वे उसे भूल गये, जैसे कि इस धरती पर हर चीज़ भुला दी जाती है।"

एक गहरी सास लेकर बुढ़िया चुप हो गई। उसकी चरचराती आवाज़ ऐसे मालूम होती थी मानो उसके हृदय की गहराइयो में संचित विस्मृत युग की स्मृतिया बड़बड़ा रही हों। समुद्र धीमे स्वरों में, सम्भवतः

इन्हीं तटों पर जन्म लेनेवाली इस प्राचीन दंत-कथा को प्रतिध्वनित कर रहा था।

"लेकिन बीस वर्ष बाद वह अपने आप लौट आई, क्षीण और मुरझाई हुई। उसके साथ एक युवक था, उतना ही मज़बूत और सुन्दर, जितनी कि वह ख़ुद बीस साल पहले थी। जब उससे यह पूछा गया कि वह इतने लम्बे अरसे तक कहां रही तो उसने जवाब दिया कि बाज़ उसे उठाकर पहाड़ों में ले गया और वह उसकी पत्नी के रूप में वहीं रही। यह युवक उसका पुत्र है। युवक का पिता यानी बाज़ अब इस दुनिया में नहीं रहा। जब वह समझ गया कि उसकी शक्ति जवाब दे रही है, तो वह आख़िरी बार आकाश में ख़ूब ऊंचा उड़ा और फिर अपने पंखो को समेटकर ज़ोर से नीचे गिरा तथा नुकीली चट्टानो से टकराकर टुकड़े-टुकडे हो गया . .

"बाज़ के पुत्र को सभी आश्चर्य से देख रहे थे और उन्होंने देखा कि वह उनसे किसी भी तरह बेहतर नही है, सिवा इसके कि उसकी आंखें पक्षियों के राजा की भाति ठंडे गर्व से चमक रही हैं। लोगों ने उससे बाते कीं, उसने मन होने पर जवाब दिया या फिर चुप रहा और जब बडे बूढे आये तो वह उनसे इस तरह बातें करने लगा मानो वह उनके ही समान हो। इसे उन्होने अपना अपमान समझा और उसे बेअक्ल तथा दुधमुंहा कहकर यह बताया कि उसके हमउम्र और उससे दुगनी आयुवाले हज़ारों लोग उनका आदर करते और उनका हुक्म मानते है। लेकिन उसने उद्धतपन से उनकी आखों में आंखे डालकर देखा और कहा कि उस जैसा अन्य कोई नही है; अगर अन्य उनका आदर करते है तो करे, लेकिन उसका ऐसा करने का कोई इरादा नही है। ओह .. यह सुनकर बडे बूढ़े सचमुच ख़ूब बिगड़े और बोले –

"'हमारे बीच इसके लिये जगह नही है। जहां इसके सीग समायें, चला जाये।'

"वह हंसा और जिधर उसका मन हुआ, उधर ही चल दिया – वह एक सुन्दर लडकी के पास पहुंचा जो टकटकी बांधकर उसे देख रही थी। वह उसके पास गया और उसने उसे अपनी बांहों में भर लिया। वह उसे दुतकारनेवाले उन बड़े बूढों में से ही एक की बेटी थी। हालांकि वह ख़ूबसूरत था, फिर भी लडकी ने उसे धकेलकर अलग कर दिया, क्योंकि वह अपने बाप से डरती थी। उसने उसे धक्का दिया और चल

दी। तभी उसने लड़की पर प्रहार किया और जब वह गिर पड़ी तो उसके सीने को अपने पैरों से ऐसे रौंदा कि उसके मुह से खून का फ़ौवारा ऊपर उठा। लड़की ने आह भरी, सांप की भांति बल खाया और मर गई।

"जो यह देख रहे थे, भय से स्तम्भित रह गये – पहली बार इस तरह स्त्री की हत्या की गई थी। काफी देर तक वे अपने सामने पड़ी लडकी को, जिसकी आखें फटी हुई थी और मुह रक्त से सना हुआ था, अवाक खड़े देखते रहे। वे देख रहे थे उस युवक को, जो अन्य सब से अलग, अपने सिर को इस तरह ऊंचा उठाये लड़की के पास गर्व से खड़ा था मानो आकाश को क़हर बरपा करने के लिये ललकार रहा हो। आख़िर लोगों को जब कुछ चेत हुआ तो उन्होंने उसे पकड़ लिया और यह सोचकर कि उसे अभी मार डालना तो एक मामूली बात होगी, जिससे उनके हृदय की जलन नही मिट सकेगी, उसे बांधकर वही छोड़ दिया।"

रात अधिक गहरी और अधिक काली हो चली और विचित्र, धीमी-धीमी आवाज़ें सुनाई देने लगी। स्तेपी मे धानीमूष की उदास सी-सी छा गई, अगूरी बेलो में झींगुरो की झकार व्याप्त हो गई, पत्ते उमासे छोड़ने और कानाफूसी करने लगे, गोल चाद, जो पहले रक्ताभ था, धरती से दूर होता हुआ फीका पड़ता जा रहा था और स्तेपी पर अधिकाधिक नीला धुनधलका-सा फैलता जाता था।

"और तब बड़े बूढ़े अपराध की माक़ूल सज़ा सोचने के लिये जमा हुए। उन्होंने सोचा कि घोड़ो से उसकी बोटी-बोटी रौंदवाई जाये, लेकिन यह सज़ा उन्हें काफी मालूम नही हुई। फिर उन्होंने सोचा कि वे सब एक-एक तीर से उसका शरीर बीध डाले, लेकिन यह सज़ा भी कुछ जंची नही। फिर यह सुझाव आया कि उसे ज़िन्दा जला दिया जाये, लेकिन ऐसा करने से वे धुएं के कारण उसे तड़पता हुआ नही देख सकेंगे। उन्हें कुछ भी ऐसा नही सूझा जो सभी को पसन्द आता। इस बीच युवक की मां उनके सामने घुटने टेके चुपचाप बैठी रही। उसे न तो उनके हृदयों में दया उपजानेवाले शब्द मिल रहे थे और न आंसू ही उसकी आंखों में आ रहे थे। बहुत देर तक वे बातें करते रहे, अन्त में बुद्धिमानों में से एक ने काफ़ी सोच-विचार के बाद कहा –

"'उससे यह तो पूछें कि उसने ऐसा क्यों किया?'

"और उन्होंने उससे पूछा। युवक ने जवाब दिया –

"'मुझे खोलो! जब तक मैं बंधा हुआ हूं, एक शब्द भी मुह में नहीं निकालूंगा!'

"और जब उन्होंने उसे खोल दिया तो उसने पूछा –

"'तुम लोग क्या चाहते हो?' और उसका लहजा ऐसा था जैसे वे उसके गुलाम हों...

"'यह तुम जानते हो ..' उस बुद्धिमान ने कहा।

"'मैं आप लोगों के सामने अपने कृत्यो की सफ़ाई किसलिये पेश करू?'

"'इसलिये कि हम तुम्हें समझ सकें। सुनो, गर्वीले, तुम्हारी मौत तो निश्चित है... हमे यह समझने में मदद दो कि तुमने ऐसा काम क्यों किया। हम जीवित रहेगे और जितना कुछ हम जानते है, उसमे वृद्धि करने से हमे लाभ होगा.. '

"'अच्छी बात है, मैं बताता हूं, हालांकि मै खुद भी शायद पूरी तरह नही समझता कि मैने ऐसा क्यो किया। मुझे ऐसा लगता है कि मैंने इसलिये उसकी हत्या की कि उसने मेरी अवहेलना की . और मैं उसे चाहता था।'

"'लेकिन वह तुम्हारी नहीं थी,' उन्होने उससे कहा।

"'क्या तुम केवल उन्ही चीज़ों से काम लेते हो जो तुम्हारी होती है? मैं देखता हूं कि हर आदमी के पास हाथ, पांव और बोलने के लिये एक ज़बान के सिवा और कुछ अपना नही होता . फिर भी वह ढोर-डंगरों, स्त्रियों, ज़मीन . . और अन्य कितनी ही चीज़ों का स्वामी होता है.. '

"इसका उन्होंने यह जवाब दिया कि मानव जिस भी चीज़ का स्वामी बनता है, उसका मूल्य चुकाता है – अपनी बुद्धि से, अपनी शक्ति से, कभी अपनी जान तक से। उसने कहा कि वह कोई मूल्य नहीं चुकाना चाहता।

"देर तक उससे बाते करने के बाद उन्होने देखा कि वह अपने आपको अन्य सब से ऊपर समझता है, अपने सिवा अन्य किसी को खातिर में नही लाता। जब उन्होंने अनुभव किया कि वह खुद अपने को कैसे एकाकीपन का शिकार बन रहा है, तो वे सभी भयग्रस्त हो उठे। उसकी न तो कोई जाति थी, उसका न कोई अपना था, न ढोर-

डंगर थे, न पत्नी थी और न वह ऐसा कुछ चाहता ही था।

"यह सब जानने के बाद लोगों ने फिर से यह विचार करना शुरू किया कि उसके लिये कौनसी सज़ा उपयुक्त होगी, लेकिन उन्हें बहुत देर तक आपस में सलाह-मशविरा नही करना पड़ा। उसी बुद्धिमान ने, जो अब तक चुप बैठा था, उनसे कहा –

"'ठहरो! एक माक़ूल सज़ा है। यह बहुत ही भयानक है। हज़ारों साल तक सिर खपाने के बाद भी तुम ऐसी सज़ा नही सोच सकते। वह खुद ही अपनी सज़ा है। उसे छोड़ दो, उसे आज़ाद घूमने दो। यही उसकी सज़ा है!'

"और तब एक अद्‌भुत बात हुई। मेघहीन आकाश में बिजली कड़की। इस प्रकार दैवी-शक्तियों ने उस बुद्धिमान के निर्णय का समर्थन किया। सब लोगों ने बुज़ुर्ग के सम्मुख सिर झुका दिया और अपने-अपने घर चले गये। और वह युवक, जिसका लारा नाम रख दिया गया था – लारा, अर्थात् लांछित और बहिष्कृत – उन लोगो पर हंसा, जिन्होंने उसे छोड दिया था, – वह हसा, अपने आपको अकेला और उतना ही आज़ाद देखकर, जितना कि उसका पिता था। लेकिन उसका पिता मानव नही था, जबकि वह था। और वह बाज़ की भाति आज़ादी से रहने लगा। वह लोगो की बस्तियों मे जाता, ढोर-डंगर, लड़किया और अन्य जो कुछ चाहता, उठा ले जाता। वे उसे अपने तीरो का निशाना बनाते, लेकिन तीर उसके शरीर को न बीध पाते – दैवीदंड का अदृश्य कवच उसके शरीर की रक्षा जो करता था। वह बहुत ही फुर्तीला, रक्त का प्यासा, शक्तिशाली और क्रूर था। लोगो के सामने वह कभी नही आता था। वे हमेशा दूर से ही उसे देखते थे। इस प्रकार, एक लम्बे अरसे तक – दसेक सालो तक – वह लोगों के आसपास ही मंडराता रहा, सर्वथा एकाकी। फिर एक दिन, वह लोगों के निकट आया और जब लोग उसपर झपटे, तो वह हिला-डुला नही और उसने अपने बचाव का भी कोई प्रयत्न नही किया। तभी एक आदमी ने उसके इरादे को भाप लिया और चिल्लाकर कहा –

"'उसे हाथ नही लगाना! वह मरना चाहता है!'

"और लोग रुक गये, वे नही चाहते थे कि वह व्यक्ति, जिसने उन्हें इतने कष्ट दिये थे, उनके हाथों मरकर अपनी यंत्रणा से निजात पा जाये। वे रुक गये और उसपर हंसने लगे। उनकी हंसी सुन वह

कांप उठा और दोनों हाथों से अपने सीने को ऐसे टटोलने लगा मानो कोई चीज़ खोज रहा हो। फिर, पत्थर लेकर वह एकाएक लोगों पर टूट पड़ा। लेकिन उन्होंने उसके पत्थरों से अपने को बचाया और पलटकर उसे एक भी पत्थर नही मारा। अन्त में, जब वह थक गया और निराशा से चीखकर धरती पर गिर पड़ा, तो वे एक तरफ़ को खड़े रहकर उसे देखने लगे। वह खड़ा हुआ, ज़मीन पर पड़े एक चाकू को उसने उठाया, जो भभ्भड़ में किसी के हाथ से गिर गया था और अपने सीने पर उससे वार किया। लेकिन चाकू के दो टुकड़े हो गये, मानो वह किसी पत्थर से टकरा गया हो। तब वह ज़मीन पर गिर पड़ा और उसपर अपना सिर पटकने लगा, लेकिन ज़मीन भी, जहा उसका सिर टकराता, नीचे धसक जाती और इस तरह उससे दूर खिसकती गई।

"'यह तो मर भी नही सकता!' लोग खुशी से चिल्लाये।

"और वे उसे वहीं छोडकर चले गये। वह चित पड़ा हुआ आकाश को ताक रहा था और उसने देखा कि दूर, बहुत दूर, शक्तिशाली बाज़ काले धब्बो की भाति उड रहे है। उसकी आखो में इतना दु:ख, इतनी वेदना तैर रही थी कि समूची दुनिया उसमे डूब सकती थी। तब से वह अकेला और एकदम आज़ाद मौत की प्रतीक्षा कर रहा है। वह बस, इस धरती पर मंडराता रहता है... देख रहे हो न, वह एक परछाई भर रह गया हैं और अनन्तकाल तक इसी रूप मे भटकता रहेगा! न वह मानव की बोली, न उनका काम-काज समझता है। वह बस चलता ही जांता है, किसी चीज़ की खोज में, हर क्षण और हर घड़ी... न तो वह जीवित है और न उसे मौत ही आती है। और न मानवो के बीच ही उसके लिये कोई जगह है.. तो घमड के लिये ऐसे बुरा हाल किया गया था मानव का!"

बुढ़िया ने आह भरी, चुप हो गई और सीने पर लुढ़क जानेवाला उसका सिर कई बार अजीब ढंग से हिला।

मैंने उसकी ओर देखा। ऐसा मालूम होता था कि नीद उसपर हावी हो रही है। जाने क्यो, मेरा हृदय उसके लिये वेदना से भर गया। एक ऊंचे और धमकी के स्वर मे उसने अपनी कहानी का अन्त किया था, फिर भी मुझे ऐसा लगा मानो उसमें भय और दयनीयता का पुट मिला हो।

समुद्र-तट पर लोग गाने लगे – अजीब ढंग से गाने लगे। स्त्री के

गहरे स्वर ने गीत शुरू किया और दो या तीन स्वरो के बाद एक दूसरी आवाज़ ने उसे फिर आरम्भ मे उठाया, जबकि पहलेवाली आवाज़ अगले स्वरों पर बढती गयी। इसी प्रकार तीसरी, चौथी और पाचवी आवाज़ ने उसे उठाया और फिर, एकाएक, पुरुष-कठो ने उसे मिलकर गाना शुरू कर दिया।

स्त्रियो की आवाज़ो मे से प्रत्येक अलग सुनाई दे रही थी – ऐसा मालूम होता था मानो वे विभिन्न रंगों की धाराए हो, जो चट्टानो को पार करती, उछलती और चमचमाती, पुरुष-कठो की उमडती-घुमड़ती मोटी धारा की ओर लपक रही हो, – उसमे डूब गई हो, बल खाकर फिर बाहर निकल आई हों और इस बार पुरुष-कठो को उन्होने डुबा दिया हो और फिर एक-एक करके – मोटी धारा से अलग होकर, सबल और सुस्पष्ट रूप मे ऊंची उठती चली गई हो।

लहरो का शोर इन स्वरो मे खो गया था।

२

"क्या तुमने ऐसा गाना इससे पहले भी कभी सुना है न?" सिर उठाते हुए इज़रगिल ने पूछा और उसका दन्तहीन मुह पोपली मुस्कराहट मे खिल उठा।

"नही, कभी नही सुना "

"और कही तुम्हे सुनने को मिलेगा भी नही। गाना हम लोगो की जान है। केवल सुन्दर लोग, जीवन के प्रेम मे पगे लोग ही इतना अच्छा गा सकते है। हम लोग जीवन के प्रेम मे पगे हुए है। जरा सोचो तो कि क्या ये लोग, जो अब गा रहे है, दिन भर के काम के बाद थककर चूर नही हो गये? सूरज निकलने से लेकर दिन ढलने तक उन्होने हाड़ तोड़े, लेकिन चाद निकला ही है कि वे गा रहे है। जो लोग जीवन बिताना नहीं जानते, बिस्तरो पर जा लेटते है और वे, जो जीवन मे रस लेना जानते है, गा रहे है।"

"लेकिन स्वास्थ्य .." मैने कहना शुरू किया।

"स्वास्थ्य तो जीवन भर के लिये हमेशा ही काफी रहता है। स्वास्थ्य की क्या बात करते हो! धन होने पर क्या तुम उसे खर्च

नहीं करोगे? स्वास्थ्य भी सोना ही है। जानते हो कि जब मैं जवान थी तो क्या करती थी? सुबह से सांझ तक क़ालीन बुनती थी। बैठे-बैठे कमर अकड़ जाती थी। मैं जो सूरज की किरण की तरह चंचल थी, हिले-डुले बिना पत्थर की भांति बैठी रहती। कभी-कभी, इतनी देर बैठे रहने के कारण मेरी हड्डियां तक दुःखने लगती। लेकिन रात होते ही मैं उस आदमी को चूमने के लिये हवा हो जाती, जिसे प्यार करती थी। तीन महीने तक मेरा वह प्रेम चला और मेरी हर रात उसके साथ बीती। फिर भी, देखो तो, मैं अब तक – इतनी बड़ी उमर तक – ज़िन्दा हूं। ख़ून की कमी नही पड़ी! न जाने कितनी बार मैं प्रेम में डूबी-उतराई, न जाने कितने चुम्बनो की मैंने बौछार की और बौछार ली!"

मैंने उसके चेहरे पर नज़र डाली। उसकी काली आंखे वैसी ही धुंधली थी – उसकी ये स्मृतियां तक उनमें चमक नहीं ला सकी थी। उसके सूखे, फटे हुए होठ, उसकी नुकीली ठोड़ी, जिसपर सफ़ेद बालो के गुच्छे उगे थे और उल्लू की चोंच जैसी उसकी झुर्रियोंदार नाक चांदनी में चमक रही थी। गालों की जगह काले गड्ढे थे और उनमें से एक पर उसके सफ़ेद बालों की एक लट पड़ी हुई थी जो लाल रंग के उस चिथड़े से बाहर निकल आई थी जिसे उसने अपने सिर पर लपेट रखा था। उसके चेहरे, गरदन और हाथों पर झुर्रियों का जाल बिछा था और जब भी वह हिलती-डुलती थी तो ऐसा लगता था कि उसकी यह झुर्रियोंदार सूखी खाल अभी तड़ककर अलग जा गिरेगी और धुंधली काली आखोंवाला हड्डियो का एक ढाचा मात्र यहा बैठा रह जायेगा।

अपनी चरचराती आवाज़ में उसने अब फिर बोलना शुरू कर दिया था –

"मैं अपनी मा के साथ फ़ाल्मी के निकट, बिरलात नदी के किनारे रहती थी। मैं तब पन्द्रह वर्ष की थी, जब वह हमारे यहां आया। लम्बा क़द, काली मूंछें, सुहावना और बहुत ही ख़ुशमिजाज। हमारी खिड़की के नीचे उसने अपनी नाव रोक दी और गूंजती आवाज़ में पुकार उठा – 'अरे, क्या, कुछ खाने-पीने को मिल सकता है?' मैंने खिड़की में से ऐश वृक्ष की टहनियों के बीच से देखा कि नदी नीली चांदनी में चमक रही है और वह सफ़ेद क़मीज़ पर पटका कसे, जिसके सिरे खुले थे, वहां खड़ा है। उसका एक पांव नाव में था और दूसरा तट पर। वह

हिलता-डुलता हुआ कुछ गा रहा था। जब उसकी नज़र मुझपर पड़ी तो बोला – ‘ओह, कैसी सुन्दरी रहती है यहां और मुझे पता तक नही!’ – मानो वह दुनिया भर की सुन्दरियों का हिसाब रखता हो! मैंने उसको कुछ शराब और कुछ गोश्त दे दिया... इसके चार दिन बाद मैं खुद भी उसकी हो गई... हर रात हम एकसाथ नाव पर घूमने जाते। वह आता और गिलहरी की भांति धीमे-से सीटी बजाता और मैं खिड़की में से मछली की भांति कूद पड़ती। और हम दोनों नाव में चल देते... वह प्रूत नदी के तटवर्ती प्रदेश का मछियारा था। जब मेरी मां को हम दोनो की करतूत का पता चला और उसने मेरी मरम्मत की तो उसने मुझसे दोब्रूजा, और फिर इससे भी दूर डेन्यूब की उपनदियों की ओर भाग चलने को कहा। लेकिन तब तक मै उससे ऊब चली थी – वह बस, गाता और चूमता ही रहता था। मैं इससे उकता गई थी। उन दिनों हुत्सूलो का एक गिरोह घूमता-घामता इधर के इलाक़ों में आ निकला। उन्होंने इस देश की लड़कियो पर डोरे डालना शुरू किया। उन लड़कियो ने खूब मौज की। कभी-कभी ऐसा होता कि प्रेमी ग़ायब हो जाता और उसकी प्रेमिका उसकी याद में घुलने लगती। सोचती, हो न हो, या तो वह जेल में डाल दिया गया है, या लड़ाई में मारा गया। और इसके बाद, एकाएक, वह अकेला ही या फिर अपने दो-तीन साथियो के साथ इस तरह प्रकट हो जाता, जैसे आसमान से टपक पड़ा हो। बहुमूल्य उपहारों का वह ढेर लगा देता – माल चुरा लेना तो उनके लिये बायें हाथ का खेल था! वह अपनी प्रेमिका के साथ दावतें उड़ाता, अपने साथियों के सामने उसे लेकर खूब शेखी बघारता। इस सब से वह खिल उठती। एक बार एक लड़की से, जिसका प्रेमी इसी तरह का था, मैंने कहा कि मेरा भी किसी हुत्सूल से परिचय करा दे... भला क्या नाम था उसका? ओह, भूल गयी। मेरी याददाश्त अब अच्छी नही रही। फिर यह बात इतनी पुरानी है कि उसे कोई भी भूल सकता है। उस लड़की ने एक जवान हुत्सूल से मेरी जान-पहचान करा दी। बहुत खूबसूरत था वह... लाल मूछें और लाल घुंघराले बाल! दहकते हुए लाल। था वह उदास-सा। कभी प्यार की तरंग में बहता तो कभी खूब गरजता और मरने-मारने पर उतर आता। एक बार उसने मेरे मुंह पर थप्पड़ दे मारा... बिल्ली की भांति उछलकर मैं उसकी छाती पर सवार हो गई और मैंने अपने दांत उसके गाल में गड़ा दिये... तब

से उसके गाल में एक छोटा-सा गढ़ा पड़ गया और जब मैं उस गढ़े को चूमती तो. उसे बहुत अच्छा लगता।"

"लेकिन उस मछियारे का क्या हुआ?" मैंने पूछा।

"वह मछियारा? वह .. यहीं बना रहा। वह भी उनमें – हुत्सूलों में – शामिल हो गया। शुरू में उसने मिन्नतें की कि मैं उसके पास लौट जाऊं, फिर धमकियां दीं कि अगर मैंने ऐसा नही किया तो वह मुझे नदी में पटक देगा, लेकिन उसके दिल का वह घाव जल्दी ही भर गया। वह उन लोगों में शामिल हो गया और उसने एक नयी प्रेमिका खोज ली ... वे दोनों – वह मछियारा और मेरा वह हुत्सूल प्रेमी – एकसाथ फांसी पर लटका दिये गये। मैं उन्हें फांसी लगते देखने गई थी। दोब्रूजा में उन्हें फासी लगी। मछियारे को जब लटकाने के लिये ले जाया गया तो उसके चेहरे पर मुर्दनी छाई थी और वह रो रहा था, लेकिन हुत्सूल पाइप पीता रहा। वह मज़े से चला जा रहा था, पाइप पीता हुआ, जेबों में हाथ डाले, – उसकी मूंछों का एक सिरा उसके कंधे पर लटक रहा था और दूसरा उसके सीने पर। जब उसकी नज़र मुझपर पड़ी तो उसने अपने मुंह से पाइप निकाला और चिल्लाकर कहा – 'अलविदा!' उसके लिये मैंने पूरे एक साल तक आंसू बहाये। वे ठीक उस वक्त पकडे गये, जब अपने यहां – कार्पेथिया पहाड़ों – में वापिस लौटनेवाले थे। किसी रूमानियावासी के घर उनकी विदाई की दावत हो रही थी। तभी उन्हें पकड़ लिया गया। केवल वे दो ही पकड़े गये। कई वहीं के वहीं मारे गये और बाकी बचकर भाग निकले . लेकिन रूमानियावासी को अपनी करनी का फल भुगतना पड़ा। उसका घर और खेत-खलिहान, उसकी पनचक्की और अनाज – सब जलाकर राख कर दिये गये। भिखारी बनकर रह गया वह।"

"क्या यह तुम्हारी करतूत थी?" मैंने यो ही पूछा।

"हुत्सूलों के अनेक मित्र थे – अकेली मैं ही नही ... उनके सबसे पक्के मित्र ने ही उनकी याद में यह बदला लिया था .."

समुद्र-तट पर गाना अब बन्द हो गया था और लहरों की हरहर ध्वनि ही बुढ़िया की इस कहानी का साथ दे रही थी। लहरों की यह चिंतापूर्ण और बेचैन ध्वनि विद्रोही-जीवन की इस कहानी के सर्वथा अनुकूल थी। रात की मृदुता जितनी बढ़ती थी, चादनी की नीलिमा उतनी ही घनी होती जाती थी। हवा तेज़ होने के कारण समुद्र का गर्जन

बढ़ता जा रहा था जिससे रात के अदृश्य जीवों की अस्पष्ट आवाज़ों का शोर धीमा पड़ता जा रहा था।

"मैंने एक तुर्क से भी प्रेम किया। मैं उसके हरम में दाखिल हो गई जो स्कूतारी में था। पूरे एक हफ़्ते तक वहा रही – कुछ बुरा नही था.. लेकिन फिर मैं वहां के जीवन से ऊब गई – जिधर नज़र डालो, औरतें ही औरतें... पूरी आठ थी... दिन भर वे चरती रहती, सोती, बेमतलब चिचियाती... या फिर कुड़क मुर्ग़ियों की तरह लड़ती। वह तुर्क जवान नही था। उसके बाल क़रीब-क़रीब पक गये थे। बहुत ही अमीर और बहुत ही बड़ा आदमी था वह। शाहों की भांति बोलता था... उसकी आंखें काली थी.. बड़ी पैनी थी .. वे सीधे आत्मा की टोह लेती थी। खुदा को बहुत याद करता रहता था वह। बुकुरेश्ती में मेरी उससे पहली भेट हुई . शाह की तरह बड़ी शान से वह बाज़ार में से चला जा रहा था। मैने मुस्कराकर उसकी ओर देखा। उसी रात मुझे पकडकर उसके सामने पेश किया गया। वह चन्दन और ताड़ की लकड़ी का व्यापार करता था और कुछ माल खरीदने बुकुरेश्ती आया था।

"'बोलो, मेरे साथ चलोगी?' उसने पूछा। 'ओह, हा, चलूंगी', – 'तो ठीक है।' और मै उसके साथ चल दी। बहुत अमीर था वह तुर्क। उसके एक लडका था – दुबला-पतला, काले बालोवाला... सोलह वर्ष का। उसी के साथ मै तुर्क के यहा से भागी – बल्गारिया, लोम-पलान्का... वहा एक बल्गार स्त्री ने मेरी छाती में चाकू भोक दिया। उसे वहम था कि कही मै उसके पति या प्रेमी को – मुझे ठीक याद नहीं रहा – न भगा ले जाऊं।

"इसके बाद, एक लम्बे अरसे तक, मै एक मठ में बीमार पड़ी रही। स्त्रियो का मठ था। एक पोलिश लड़की मेरी देख-भाल करती थी और उसका भाई, जो आर्त्सेर-पलान्का के निकट एक मठ में साधु था, उससे मिलने आया करता था... वह कीड़े की भांति मेरे चारो ओर बिलबिलाया करता... जब मै अच्छी हो गई तो उसके साथ पोलैंड चली गई।"

"जरा रुको तो, उस तुर्क के लड़के का क्या हुआ?"

"लड़का? वह मर गया। घर की याद मे या शायद प्रेम में घुल-कर .. वह वैसे ही मुरझाने लगा जैसे ज्यादा धूप खाकर पौधा मुरझा जाता है... बस, मुरझाता चला गया... वह बिस्तर से लग गया,

नीला-सा और बर्फ़ की भांति पारदर्शी हो गया था, लेकिन प्रेम की आग अब भी 'उसके अन्दर जल रही थी... वह बार-बार मुझे अपने बिस्तर पर बुलाता, अनुरोध करता कि मैं झुककर उसको चुम्बन दूं... मैं उसे बहुत चाहती थी और खूब मैंने उसे चुम्बन दिये... तिल-तिल करके वह गलता गया, हिल-डुल तक न पाता। वह बस वैसे ही पड़ा रहता और मेरी मिन्नत करता – भिखारियों की भांति गिड़गिड़ाता – कि मैं उसके पास लेटकर उसे गर्मा दूं। और मैं ऐसा ही करती। जैसे ही मैं उसके पास लेटती, उसका रोम-रोम सिहर उठता। एक दिन, जब मैं जागी, तो देखा कि वह पत्थर की भांति ठंडा पड़ा है... वह मर गया था... मैं खूब रोई। कौन जाने, शायद मेरी वजह से ही उसकी मृत्यु हुई थी? मैं उम्र में उससे दुगनी बड़ी थी, मज़बूत और रसीली थी... लेकिन वह? वह निरा बच्चा था!.."

बुढ़िया ने एक लम्बी सांस छोड़ी और अपने सूखे होंठो से कुछ बुदबुदाते हुए तीन बार सलीब का निशान बनाया – इससे पहले मैंने कभी उसे ऐसा करते नहीं देखा था।

"फिर तुम पोलैंड चली गईं .." मैंने कहानी का सूत्र पकड़ते हुए कहा।

"हां... उस नन्हे पोल के साथ। वह नीच और कुत्सित व्यक्ति था। जब उसे स्त्री की ज़रूरत होती, तो वह बिल्ले की भांति मेरे चारों ओर मंडराता, उसके होंठों से शहद टपकता। जब उसकी भूख मिट जाती, तो उसके तीखे शब्द मेरे दिल पर कोड़े की तरह चोट करते। एक दिन, जब हम नदी-तट पर घूम रहे थे, उसने दम्भ में भरकर कोई अपमानजनक बात कही। ओह, मैं बुरी तरह झुंझला उठी! गुस्से से उबलने लगी। बच्चे की भांति – वह बहुत छोटा जो था – मैंने उसे ऊपर उठा लिया और इतने ज़ोर से दबोचा कि उसका मुंह नीला पड़ गया। इसके बाद मैंने उसे नदी में फेंक दिया। वह ऐसे चीख़ने-चिल्लाने लगा कि हंसी आये। तट की ऊंचाई से मैंने उसे पानी में हाथ-पांव मारते देखा। फिर मैं वहां से चली गई और इसके बाद हम कभी नहीं मिले। इस मामले में मैं भाग्यवान रही – जिस प्रेमी को मैंने छोड़ा, उससे फिर कभी भेंट नही हुई। कितना बुरा मालूम होता है छोड़े हुए प्रेमियों से मिलना, जैसे मुर्दों से मिल रहे हों।"

बुढ़िया आह भरते हुए चुप हो गई। मेरी कल्पना में उन लोगों

के चित्र घूमने लगे जिन्हें उसकी कहानी ने उभारा था। वह रहा धधकते लाल बालों और लाल मूंछोंवाला हुत्सूल प्रेमी जो फांसी की ओर जाते समय भी शांत भाव से पाइप पीता रहा था। ऐसा मालूम हुआ कि उसकी आंखें ठंडे नीले रंग की थीं और उनकी नज़र दृढ़ और गहरी थी। उसके साथ-साथ प्रूत नदी के तटवर्ती प्रदेश का वासी, काली मूंछोंवाला मछियारा चला जा रहा था। मौत से त्रस्त वह रो रहा था और मौत के भय से पीले पड़ गये चेहरे पर उसकी आंखें, जिनमें कभी प्रसन्नता नाचती थी, अब पथराई-सी ताक रही थी। आसुओं से भीगी तथा शोक में डूबी मूंछें उसके ऐंठे हुए होंठों के छोरों पर लटक आई थी। और वह रहा रोब-दाबवाला बूढ़ा तुर्क जो शायद भाग्यवादी और पूरा स्वेच्छाचारी था। पास ही में था उसका पुत्र – पूर्व का वह कोमल बूटा – चुम्बनों के विष का मारा हुआ। और वह रहा पोलैंडवासी, वह दम्भी युवक, बांका और क्रूर, अत्यन्त वाकपटु और भावनाहीन ... वे सब क्षीण छायाओं के सिवा अब और कुछ नही रह गये थे। और जिसे उन्होने चूमा था, वह मेरे पास बैठी थी – जीवित, लेकिन उम्र की मार से चुरमुर, रक्तहीन, तनहीन, इच्छाहीन हृदय और चमकहीन आंखोवाली – वह भी तो लगभग छाया ही थी।

उसने अपनी बात आगे बढ़ायी –

"पोलैंड में मैं बड़ी मुसीबत से गुज़री। वहां के लोग झूठे और हृदयहीन है। मैं उनकी सांपों जैसी भाषा नही बोल सकती थी। वे जब बोलते तो लगता जैसे फुंकार मार रहे हों . जाने क्या फुंकारते हैं? झूठ उनको घुट्टी में मिला है, इसीलिये ख़ुदा ने उन्हें सांपों जैसी ज़बान दी है। सो मै चल पडी – किधर और क्यों, नही जानती थी। मैंने देखा कि पोलैडवासी तुम रूसियों के ख़िलाफ़ विद्रोह की तैयारी कर रहे हैं। मैं बोहनिया नगर में पहुंची। वहां एक यहूदी ने मुझे ख़रीद लिया, अपने लिये नही, बल्कि मेरे शरीर से पैसा कमाने के लिये। मैं इसके लिये राज़ी हो गई। जीने के लिये कोई हुनर ज़रूर आना चाहिये। मैं कुछ नहीं जानती थी। सो अपने शरीर से मैंने उसका मूल्य चुकाया। लेकिन मैंने सोचा कि जब मेरे पास अपने बिरलात लौटने लायक़ पैसा हो जायेगा, तो अपने बंधनों को, चाहे वे कितने ही मज़बूत क्यों न हों, तोड़कर फेंक दूंगी। और मैं वहां रही। एक से एक बढ़कर धनी आदमी मेरे पास आता,

मेरे साथ खाता-पीता। इन लोगों को इसकी भारी क़ीमत चुकानी पड़ती। मुझे लेकर वे एक दूसरे से लड़ते और बरबाद होते। उनमे से एक मेरा हृदय जीतने के लिये बहुत दिनो तक मेरे पीछे पड़ा रहा। एक दिन वह आया और उसका नौकर उसके पीछे-पीछे बहुत बडा थैला उठाये दाख़िल हुआ। वह भला आदमी थैला लेकर मेरे सिर पर उलटने लगा। सोने की मुद्राए मेरे सिर पर लगती, लेकिन जब वे फ़र्श पर गिरकर खन्न से बोलती, तो मेरा हृदय नाच उठता। लेकिन फिर भी उस महानुभाव को मैंने बाहर निकाल दिया। उसका चेहरा चर्बी-चढा और चीकट था और उसकी तोद ऐसी थी जैसे बडा तकिया। वह मोटे-ताज़े सुअर-सा लगता था। हां, मैंने उसे बाहर निकाल दिया। चाहे वह कहता रहा कि तुम्हे सोने से लाद देने के लिये ही मैंने अपनी सारी ज़मीन, घर-बार और घोड़े बेच डाले है। उस समय मै एक अन्य बढ़िया आदमी से प्रेम करने लगी थी। उसके चेहरे पर घाव के निशान थे – एक जाल-सा बिछा था निशानो का उसके चेहरे पर। ये निशान तुर्को की तलवारो की यादगार थे। यूनानियो की खातिर तुर्को के खिलाफ लडकर वह उन्ही दिनो लौटा था। क्या आदमी था वह भी! पोलैड का रहनेवाला – भला क्या लेना-देना था उसे यूनानियो से? फिर भी वह उनके साथ उनके दुश्मन से जूझा। तुर्को ने बडी बेरहमी से उसके अग-भग किये – उनकी मार से उसकी एक आख और बाये हाथ की दो उगलिया गायब हो गई यूनानियो से उसका – एक पोल का – क्या वास्ता? बात यह थी कि वह बहादुरी के कारनामो के लिये छटपटाता रहता था और आदमी का हृदय जब वीर-कृत्यो के लिये छटपटाता हो, तो इसके लिये वह सदा अवसर भी ढूढ लेता है। जीवन मे ऐसे अवसरो की कुछ कमी नही है और अगर किसी को ऐसे अवसर नही मिलते, तो समझ लो कि वह काहिल है या फिर कायर या यह कि वह जीवन को नही समझता। अगर वह समझता होता, तो निश्चय ही वह अपनी छाप छोड जाना चाहता। और तब जीवन उन्हे इस तरह न निगल पाता कि उनका कोई नाम-निशान तक बाकी न रहे . वह घावोवाला बहुत ही बढिया आदमी था! कुछ न कुछ करने के लिये वह दुनिया के छोर पर भी जाने को तैयार था। शायद तुम्हारे लोगो ने विद्रोह के दौरान उसका काम तमाम कर डाला है। तुम मगयारो से लडने क्यो गये? बस, चुप रहना!"

मुझे मुंह बंद रखने का आदेश देकर बुढ़िया इज़रगिल ख़ुद चुप हो गयी और विचारों में खो गयी।

"मेरी जान-पहचान का एक मगयार था। एक दिन वह मुझे छोडकर चला गया – जाडो के दिन थे – वसत के दिनों में बर्फ़ पिघलने पर ही एक खेत में उसकी लाश मिली। उसके सिर में गोली लगने का निशान था। देखा तुमने, प्रेम से इतने ही लोग मरते है, जितने प्लेग मे। अगर गिनती की जाये, तो कम नही निकलेगे .. लेकिन हा, मै कह क्या रही थी? पोलैड की बात थी अपना आखिरी खेल मैने वही खेला। एक बडे अमीर से वहा मेरी मुलाकात हुई .. बहुत खूबसूरत था वह – बेहद खूबसूरत! लेकिन तब मै बूढी हो चली थी। उफ़. काफी बूढी हो चली थी! चालीस वर्ष की? हा, शायद चालीस वर्ष की. और वह दम्भी तथा स्त्रियों के मुह चढा था। बहुत महंगा पडा वह मुझे . हा उसने समझा कि उसका इशारा पाते ही मैं उसके सामने बिछ जाऊगी। लेकिन मै इतनी आसानी से झुकनेवाली नही थी। किसी की गुलाम बनकर रहना मेरे लिये मुमकिन नही था। उस वक्त तक मैने यहूदी से नाता तोड लिया था, बहुत पैसे कमाकर दिये थे उसे मै तब क्राकोव मे थी। मेरे पास सब कुछ था – घोडे थे, सोना, नौकर-चाकर वह मुझसे मिलने आता – दम्भी शैतान – और यह चाहता कि मै खुद उसके सामने बिछ जाऊ। जमकर खीच-तान चली। इतना अधिक तनाव बढा कि अजर-पजर और भी ढीले हो गये। काफी समय तक ऐसी ही स्थिति रही . लेकिन अत मे विजय मैंने ही प्राप्त की – उसने मेरे सामने घुटने टेके, तभी वह मुझे पा सका . लेकिन जैसे ही मै उसकी हुई, फटे लत्ते की भाति उसने मुझे दूर फेक दिया। तब मैंने अनुभव किया कि मै बूढी हो गयी हू बडी कटु अनुभूति थी वह! बहुत ही कटु! मै उसे चाहती थी – उस शैतान को – और वह मेरे मुह पर ही मेरी हसी उड़ाता था .. नीच था वह! दूसरो के सामने भी मेरा मज़ाक़ उडाने मे न चूकता – मुझसे यह छिपा नही था। ओह, कितना असह्य था यह सब! लेकिन वह मेरी आखो के सामने रहता था और मै उसे देख-देखकर ख़ुश होती रहती थी। और जब वह तुम रूसियों से लडने चला गया, तो मेरे लिये यह सहन करना मुश्किल हो गया। मैंने अपने को बहुत सभाला, लेकिन दिल पर क़ाबू न पा सकी... मैंने उसके पास जाने का निश्चय कर लिया। वार्सा के निकट

एक जंगल में वह तैनात था।

"लेकिन जब मैं वहां पहुंची, तो मालूम हुआ कि वे तुम्हारे रूसी सैनिकों के सामने टिक नही सके... वह युद्ध-बंदी बना लिया गया था थोड़ी ही दूर एक गांव में उसे क़ैद में रखा जा रहा था।

"'इसका मतलब यह कि अब मैं उससे कभी नही मिल सकूंगी, मैंने मन में सोचा। लेकिन मैं उससे मिले बिना रह नही सकती थी। सो मै इसके लिये कोशिश करने लगी – मैंने भिखारिन का भेस बनाया, लंगड़ी होने का ढोंग किया, अपने मुह को ढक लिया और उस गांव की ओर चल दी, जहा वह बंदी था। सब कहीं सैनिक और कज़्ज़ाक थे... वहां जाना मुझे बहुत महगा पड़ा। मैंने पोलैंडी क़ैदियों का पता लगाया और देखा कि उन तक पहुंचना अत्यंत कठिन है। लेकिन पहुंचे बिना मैं रह भी नही सकती थी। सो एक रात मै रेंगती हुई उस जगह के पास पहुंची, जहा वे बंदी थे। तरकारियों की क्यारियों में रेंगती हुई मैं बढ़ रही थी, मैंने देखा कि एक संतरी मेरे रास्ते में खड़ा है... पोलों के गाने और बतियाने की ऊंची आवाज़ आ रही थी। वे मा मरियम के बारे में एक गीत गा रहे थे . मेरा आरकाडेक भी उनके साथ गा रहा था। और यह सोचकर मेरे दिल को बड़ा दुःख हुआ कि एक वह भी ज़माना था, जब लोग मेरे लिये रेंगते थे और एक यह भी ज़माना आया है कि मै एक आदमी के लिये – शायद अपनी मौत को गले लगाने के लिये सांप की भांति रेंग रही हूं। सतरी के कान खडे हो गये और वह आगे की ओर झुक आया। अब मै क्या करूं? मैं खड़ी हो गई और उसकी ओर बढ चली। मेरे पास न तो छुरी थी, न कुछ और ही, बस, हाथ और ज़बान ही थी। मुझे अफसोस हुआ कि मैं अपने साथ छुरी लेकर क्यों नही चली। संतरी ने मेरी गरदन की सीध में अपनी संगीन तान ली। मैं फुसफुसायी – 'ठहरो! अगर तुम्हारी छाती में हृदय है तो जो मैं कहना चाहती हूं, पहले उसे सुन लो! तुम्हें देने के लिये मेरे पास कुछ नही है, मै तुमसे दया की भीख मांगती हूं...' उसने अपनी संगीन झुका ली और मेरी ही तरह फुसफुसाकर बोला – 'दफ़ा हो जाओ, जाओ यहां से! किसलिये आयी हो यहां?' और मैंने उसे बताया कि मेरा बेटा यहां बदी है... 'मेरा बेटा है यहां, समझते हो न, सैनिक? आखिर, तुम्हारे भी मां है, तुम भी किसी के बेटे हो! मेरी ओर देखो और सोचो कि मेरा भी तुम्हारे जैसा

ही बेटा है और वह यहां बंदी है! मुझे नज़र भर उसे देख लेने दो। कौन जाने उसके भाग्य में मौत बदी हो... और यह भी हो सकता है कि कल तुम ही मारे जाओ... क्या तुम्हारी मां आसू नहीं बहायेगी? और अपनी मां को देखे बिना मरना क्या तुम्हारे लिये महज होगा? मेरे बेटे के लिये भी यह सहज नही होगा। खुद पर, उसपर और मुझपर – उसकी मां पर – दया करो!'

"ओह, जाने कितनी देर तक मैं उसे मनाती रही! पानी पडने लगा और हम भीग गये। हवा सनसना रही थी। वह कभी पीठ पर थपेड़े मारती थी, कभी छाती पर। और मैं कांपती हुई उस पत्थर-हृदय सैनिक के सामने खड़ी थी। वह 'नही!' की रट लगाये था। और हर बार, जब मैं इस संवेदनहीन शब्द को सुनती, तो आरकाडेक को देखने की इच्छा मेरे हृदय मे और भी तीव्र हो उठती.. बात करते-करते मैंने सैनिक को आखों ही आंखों में तौला। वह दुबला-पतला और नाटा आदमी था। खांमी ने उसे जकड़ रखा था। चुनांचे मैं उसके सामने ज़मीन पर गिर गयी, मिन्नत-समाजत करते-करते मैने उसके घुटनों को बांहों में कसकर उसे ज़मीन पर पटक दिया। वह कीचड मे जा गिरा। तब मैंने उसे औंधा कर दिया और कीचड़ में उसका मुह ठूंस दिया, जिससे वह चिल्ला न सके। वह चिल्लाया नही, लेकिन मुझे अपनी पीठ पर से धकेलने की कोशिश में हाथ-पांव पटकता रहा। मैंने दोनों हाथों से उसका सिर पकडा और उसे कीचड में और भी गहरा धंसा दिया। उसका दम निकल गया.. तब मैं बाड़े की ओर लपकी, जहां पोल गा रहे थे। 'आरकाडेक!' बाड़े की दरारों में से मैंने धीमी आवाज में पुकारा। बड़े समझदार होते है ये पोल, सो मेरी आवाज़ सुनकर उन्होंने गाना बद नही किया! ठीक अपनी सीध में मुझे उसकी आंखें दिखाई दी। 'क्या तुम बाहर आ सकते हो?' मैंने पूछा। 'हां, नीचे से रेंगकर आ सकता हूं,' उसने कहा। 'तो आओ।' और उनमें मे चार बाहर रेंग आये। मेरा आरकाडेक भी उनमें था। 'संतरी कहां है?' आरकाडेक ने पूछा। 'वह पड़ा है!' मैंने कहा। और तब, एकदम दोहरे होकर, चुपचाप, वे खिसक चले। पानी अभी भी पड़ रहा था और हवा ज़ोरों से फुंकार रही थी। हम गांव के छोर पर पहुंचे और चुपचाप जंगल में बढते गये। हम तेज़ी से डग भर रहे थे। आरकाडेक मेरा हाथ अपने हाथ में थामे था। उसका हाथ गर्म था और

कांप रहा था। ओह!.. तब तक, जब तक वह चुप रहा, उसके साथ.. चलना कितना अच्छा लग रहा था! वे मेरे आखिरी क्षण थे – कभी न तृप्त होनेवाले मेरे जीवन के आखिरी सुखद क्षण! अत मे हम एक चरागाह में पहुचे और वहां रुक गये। मैने जो किया था, उसके लिये चारों ने मुझे धन्यवाद दिया। ओह! बहुत देर तक और बहुत कुछ कहा उन्होंने मुझे। मै सुन रही थी और अपने प्यारे की ओर देख रही थी। अब वह मेरे साथ कैसे पेश आयेगा? उसने मुझे अपनी बांहो मे कस लिया और बडे प्रभावपूर्ण शब्दो मे कुछ कहा शब्द तो मुझे याद नही आ रहे, लेकिन उनका आशय यह था कि अब वह मुझे – जिसने उसे कैद से छुड़ाया था – प्यार करेगा .. और उसने मेरे सामने घुटनों के बल बैठ होकर, मुस्कराते हुए कहा – 'मेरी रानी!' उफ, कितना फ़रेबी था वह, घिनौना कुत्ता! तब मैने उसे एक ठोकर मारी और उसके मुंह पर भी एक तमाचा जड़ा होता, लेकिन वह उछलकर पीछे हटा और बच गया। वह मेरे सामने खड़ा था – बहुत ही भयावह और एकदम फक .. अन्य तीनों भी वहां खड़े थे, नाक-भौंह सिकोड़े और निर्वाक्। मैंने उन्हें देखा.. और मुझे याद है कि एक भारी ऊब और उपेक्षा ने मुझे घेर लिया... मैंने उनसे कहा – 'जाओ यहा से!' और उन्होने – कुत्ते कही के – मुझमे कहा – 'क्या तुम वापिस जाकर उन्हें यह ख़बर दोगी कि हम किस दिशा मे भागे है?' देखा, कितने नीच थे वे! ख़ैर, वे चले गये। और मै भी चली आयी .. दूसरे दिन तुम्हारे सैनिको ने मुझे पकड़ लिया, लेकिन उन्होने मुझे अधिक नही रोका। तब मैने अनुभव किया कि अब कही घोंसला बनाकर बैठना चाहिये। पक्षी का जीवन अतीत की वस्तु बन गया था। मेरा बदन भारी हो चला था, डैने कमज़ोर पड गये थे, पर झड़ने लगे थे... हा, घोसला बनाने का वक़्त आ गया था! वक़्त आ गया था! सो मै गालीशिया चली गयी और वहा से दोब्रूजा। पिछले तीस साल से मै यहा रह रही हूं। मेरा एक पति था – मोल्दावी। उमे मरे क़रीब एक माल हो गया। और मैं जी रही हूं! एकदम अकेली... नही, अकेली नही, उनके माथ .."

बुढ़िया ने लहरों की ओर हाथ हिलाया। अब वहां सब कुछ शात था। जब-तब कोई सक्षिप्त और धोखा देनेवाली ध्वनि सुनाई देती और तुरंत ही खो जाती।

"वे मुझसे प्रेम करते है। मै उन्हें तरह-तरह की कहानियां सुनाती हूं। उन्हें इसकी ज़रूरत है। वे अभी नौउम्र है... उनके साथ रहना मुझे भी अच्छा लगता है। मै उन्हें देखती और सोचती हूं – एक समय था जब मैं भी उन्हीं जैसी थी... लेकिन मेरे दिनो में लोगों में ज़्यादा ताक़त और जोश था और इसी कारण जीवन अधिक आनन्दपूर्ण और अधिक अच्छा होता था.. हां! ."

वह चुप हो गयी। उसके पास बैठा हुआ मै उदासी अनुभव करने लगा। वह ऊंघ रही थी, सिर हिलाकर कुछ बुदबुदा रही थी.. शायद वह प्रार्थना कर रही थी।

समुद्र की ओर से एक बादल उठा – खूब घना और काला, पर्वत-शृखला की भाति कटावदार। यह शृंखला स्तेपी की ओर बढ़ रही थी। उसके छोर से बादलों के गोले टूटकर अलग हो जाते, तेज़ी से उससे आगे बढते और एक के बाद एक सितारे की रोशनी छीनते जाते। समुद्र फिर से गरजने लगा था। हमसे कुछ ही दूर अगूरो के बगीचे मे चुम्बन, फुसफुसाहट और गहरी सासें सुनाई दे रही थी। स्तेपी मे कोई कुत्ता रो रहा था हवा में एक अजीब गध भरी थी, जो नथुनो और रगो मे एक गुदगुदी-सी पैदा करती थी। बादलो की ढेरे, घनी परछाइया धरती पर रेग रही थी कभी वे धुधली पड़ जाती और कभी खूब साफ दिखाई देने लगती चाद अब धुंधली दूधिया आभा का एक गोल धब्बा मात्र रह गया था, जिसे बादल का एक छोटा-सा भूरा टुकड़ा कभी-कभी पूर्णतया ओझल कर देता था। स्तेपी-विस्तार में, जो मानो अपने आंचल मे कुछ छिपाकर अब काली और भयानक हो उठा था, खूब दूर छोटी-छोटी, नीली लपटें थरथरा रही थी। वे इस तरह चमक उठती जैसे लोग किसी चीज़ की खोज में स्तेपी में घूमते हुए दियासला-इया जलाते हों, जिन्हें हवा तुरत बुझा देती हो। बहुत ही अजीब थीं ये नीली रोशनियां, परी-कथा की झलक दिखाती-सी।

"तुम ये चिंगारियां देख रहे हो न?" इजरगिल ने पूछा।

"वे छोटी-छोटी नीली रोशनिया?" स्तेपी की ओर इशारा करते हुए मैंने जानना चाहा।

"नीली? हां, ये वही है.. सो वे अब भी उड़ती रहती है! ठीक... मैं तो अब उन्हें देख नही पाती। बहुत कुछ नही दिखाई देता अब मुझे।"

"कहां से निकल रही हैं ये?" मैंने बुढ़िया से पूछा।

उनके बारे में पहले भी मैं कुछ सुन चुका था, लेकिन बुढ़िया इज़रगिल क्या कहेगी, मैं यह सुनना चाहता था।

"ये दान्को के जलते दिल से निकल रही हैं। बहुत दिन पहले एक हृदय मशाल की भांति जल उठा था... उसी से अब ये चिंगारियां निकलती हैं। मैं तुम्हें उसकी कहानी सुनाऊंगी... यह भी बहुत पुरानी कथा है... पुराना, सब कुछ पुराना है! देख रहे हो न, कितना कुछ था पुराने दिनों में?.. आजकल तो कुछ भी नहीं है – न वे आदमी है, न वे कारनामे है, न वे क़िस्से है – कुछ भी तो ऐसा नही है जिसकी उन पुराने दिनों से तुलना की जा सके... ऐसा क्यो है?.. बताओ तो! नहीं बता सकते... क्या जानते हो तुम? नयी पीढ़ी के तुम सभी लोग क्या जानते हो? ओह-हो!.. अगर तुम अतीत की खोज-बीन करो, तो जीवन की सभी पहेलियों का जवाब मिल जाये... लेकिन तुम लोग ऐसा नही करते और इसीलिये जीने का ढग नही जानते... क्या मैं जीवन का रंग-ढंग नहीं देखती? बेशक मेरी आखे कमज़ोर हो गयी हैं, फिर भी सब कुछ देखती हूं! और मैं देखती हूं कि जीने के बजाय लोग अपना समूचा जीवन जीने की तैयारी करने में गंवा देते है। और जब इतना सारा समय हाथ से निकल जाने के बाद वे अपने को लुटा हुआ देखते हैं, तो भाग्य को कोसने लगते है। भाग्य भला इसमें क्या कर सकता है? हर आदमी खुद ही अपना भाग्य है! आज दुनिया में हर तरह के लोग है, लेकिन मुझे उनमें शक्तिशाली नज़र नही आते! वे कहा गये? और सुन्दर लोग भी दिन-दिन कम होते जा रहे है।"

बुढ़िया रुककर इस चिंता मे डूब गयी कि शक्तिशाली और सुन्दर लोग कहा गये। वह यह सोच रही थी और उसकी आखें स्तेपी के अंधकार में एकटक जमी थी, मानो वे वहां इस प्रश्न के उत्तर की खोज कर रही हों।

उसके कहानी शुरू करने तक मैं चुपचाप प्रतीक्षा करता रहा। मुझे डर था कि मेरे कुछ कहने से कही उसका ध्यान न भटक जाये।

और उसने कहानी सुनानी शुरू कर दी।

३

"बहुत, बहुत पहले एक जाति थी। वह जिस जगह रहती थी उसके तीन ओर अगम्य जंगल छाये थे और चौथी ओर घास के मैदान फैले थे। इस जाति के लोग तगड़े, बहादुर और खुशमिज़ाज थे। लेकिन बुरे दिनों ने उन्हें आ घेरा। अन्य जातियों का वहां धावा हुआ और उन्होंने उनको जंगल की गहराइयो में खदेड़ दिया। जंगल अंधकार में डूबा हुआ और दलदली था। कारण कि वह बहुत पुराना था और पेड़ो की शाखाएं ऐसे कसकर एक दूसरी के साथ गुथी थी कि आकाश की शक्ल तक नज़र नही आती थी और घनी हरियाली को चीरकर दलदल तक पहुंचने मे सूरज की किरणों की सारी शक्ति चुक जाती थी। लेकिन जब वे उस पानी तक पहुचती थी, तो विषैली गंध उठने लगती थी, जिससे लोग मरने लगते थे।

"तब उस जाति की स्त्रियां और बच्चे रोने-पीटने लगे और पुरुष चिता में घुलने लगे। जगल से निकल जाने के सिवा कोई चारा न रहा, लेकिन बाहर निकलने के दो ही रास्ते थे – एक पीछे की ओर, जहा सशक्त और जानी दुश्मन थे, दूसरा आगे की ओर, जहा दैत्याकार पेड उनका रास्ता रोके खड़े थे, जिनकी मज़बूत शाखाएं एक-दूसरी के साथ मजबूती मे गुथी थी और जिनकी टेढी-मेढ़ी तथा गांठ-गठीली जडे दलदली कीचड में बहुत गहरी चली गयी थी। ये पत्थरनुमा पेड़ दिन के धूसर अंधेरे में निर्वाक और निश्चल खडे रहते और रात को जब अलाव जलते, तो लोगों के गिर्द अपना घेरा और भी कस लेते तथा स्तेपी की उन्मुक्त गोद के अभ्यस्त लोग दिन-रात अंधेरे की दीवारो मे बंद रहते जो मानो उन्हें कुचलने की क़सम खाये बैठी थी। इस सबमे भी भयानक थी हवा, जो पेड़ो की चोटियो पर से सनसनाती और फुफकारती हुई गुज़रती और ऐसा मालूम होता मानो समूचा जगल उन लोगों के लिये किसी भयंकर शोक-गीत से गूंज उठा हो। वे एक बहादुर जाति के लोग थे और मृत्यु-पर्यन्त उन लोगों से लडते, जिन्होंने उन्हें एक बार हरा दिया था। लेकिन वे लड़ाइयों में अपने"को मरने नही दे सकते थे, क्योंकि उनके अपने जीवन-आदर्श थे और अगर वे मर जाते तो उनके जीवन-आदर्श भी उनके साथ ही नष्ट हो जाते। इसीलिये वे दलदल की ज़हरीली गंध और जंगल

के घुटे-घुटे शोर वाली लम्बी रातो में बैठे हुए अपने भाग्य के बारे में सोचते रहते थे। वे सोच में डूबे बैठे होते, आग की लपटो की परछाइयां उनके इर्द-गिर्द मूक नृत्य में उछलती-कूदती और उन सबको ऐसा लगता कि ये निरी परछाइयां ही नृत्य नही कर रही है, बल्कि जंगल और दलदल की प्रेतात्माए अपनी विजय का उत्सव मना रही है . लोग ऐसे बैठे-बैठे सोचते रहते। मगर परेशान करनेवाले विचार आदमी को जितना निचोडते है, उतना और कोई चीज़ नही, न श्रम. न स्त्रिया। लोग चिंता से दुबलाने लगे .. उनके हृदयों मे भय उत्पन्न हुआ और उसने उनकी मज़बूत बांहो को जकड लिया। विषैली गध के कारण मरे लोगो के शवो पर स्त्रियो का विलाप और भय मे नि:-शक्त हुए जीवितों पर उनका रोना-कलपना आतक पैदा करता। और इस तरह जगल मे कायरतापूर्ण शब्द भनभनाने लगे – पहले धीमे और दबे-दबे और फिर निरतर अधिक खुलकर .. अत मे वे दुश्मन के पास जाकर उसे अपनी आज़ादी भेंट करने की सोचने लगे। मृत्यु के भय ने उन्हे इतना डरा दिया था कि हर कोई गुलाम की भाति जीवन बिताने को तैयार हो गया था . . लेकिन तभी दान्को आया और उसने उन सबकी रक्षा की।

"दान्को उन्ही मे से एक सुन्दर जवान था। सुन्दर लोग हमेशा साहसी होते है। और उसने अपने साथियो से कहा –

"'केवल सोचने से राह की चट्टाने नही हट जाती। जो कुछ करते नही, वे कुछ पाते नही। सोच और परेशानी में हम अपनी शक्तियां क्यों बरबाद कर रहे हैं? उठो, जंगल को चीरते हुए हम आगे बढ चलें – कही न कही तो इसका अत होगा ही – हर चीज का अत होता है! चलो, आगे बढें!'

"लोगों की आखें उसकी ओर उठी और उन्होंने देखा कि वह उनमें सबसे श्रेष्ठ है, क्योकि उसकी आंखें शक्ति और जीवन से दमक रही थी।

"'हमारी अगुवाई करो!' उन्होने कहा।

"और उसने उनकी अगुवाई की ...

"सो दान्को उन्हे ले चला। वे उत्साह से उसके साथ चले, क्योकि उसमें उनका विश्वास था। रास्ता बड़ा विकट था! अंधेरा था, कदम-क़दम पर दलदल अपना सड़ा हुआ लालची मुंह बाए थी। वह लोगो

को निगल जाती थी और पेड़ मज़बूत दीवारों की भांति राह रोक लेते थे। उनकी शाखाएं कसकर एक-दूसरी के साथ गुंथी थीं और सांपों की भांति हर तरफ़ फैली हुई थी उनकी जड़ें। हर कदम आगे बढ़ने के लिये उन्हें अपने रक्त और पसीने से क़ीमत चुकानी पड़ती। देर तक वे चलते रहे... जंगल अधिक घना होता गया और लोगो की शक्ति क्षीण पड़ती गयी! और तब वे दान्को के ख़िलाफ़ भुनभुनाने लगे। कहने लगे कि वह निरा लड़का और अनुभवहीन है और जाने हमें कहां ले आया है। लेकिन वह उनके आगे-आगे चलता रहा। उसके मन में किसी तरह की शंका और चेहरे पर कोई शिकन नही थी।

"लेकिन एक दिन तूफ़ान ने जंगल को घेर लिया और पेड़ों में आतंकपूर्ण सनसनाहट दौड़ गयी। और तब इतना घना अंधेरा छा गया कि लगता था जैसे वे तमाम रातें एकसाथ वहा जमा हो गयी हों जो जगल के जन्म से लेकर अब तक बीती थी। और वे छोटे-छोटे लोग भीमाकार पेड़ो तथा तूफ़ानी गरज के बीच चलते रहे। वे चलते जाते, भीमाकार पेड चरचराते, भयंकर गीत-से गाते और पेड़ों की फुनगियों के ऊपर बिजली चमकती, क्षण भर के लिये एक ठंडी नीली रोशनी जंगल को जगमगा देती और फिर उतनी ही तेजी से ग़ायब हो जाती। लोगों के हृदय भय से काप उठते। बिजली की ठंडी रोशनी में पेड जीते-जागते मालूम होते – अपनी गठीली लम्बी बांहों को फैलाते और उन्हें गूंथकर घना जाल बिछाते-से, ताकि ये लोग, जो अंधकार की क़ैद से छूटने की कोशिश कर रहे थे, उसमें फंसकर रह जायें। शाखाओं के घटाटोप में से भी कोई ठंडी, काली और भयानक चीज़ उनकी ओर घूर रही थी। बड़ा ही बीहड़ मार्ग था वह। और लोग, जो थककर चूर-चूर हो गये थे, हिम्मत हार बैठे। लेकिन शर्म के मारे वे अपनी कमज़ोरी स्वीकार न करते और अपना ग़ुस्सा तथा खीझ दान्को पर उतारते जो उनके आगे-आगे चल रहा था। वे उसपर आरोप लगाते कि वह उनकी अगुवाई करने की योग्यता नही रखता – तो ऐसी हालत थी!

"वे रुक गये और उस कांपते हुए अंधेरे और जंगल की विजयोन्मत्त गरज के बीच थकान तथा ग़ुस्से से बेहाल उन लोगों ने दान्को को भला-बुरा कहना शुरू किया।

"'तुम कमीने और दुष्ट हो! तुम्ही ने हमें इस मुसीबत में फंसाया

है,' वे कह उठे, 'इसके लिये तुम्हें अब अपनी जान से हाथ धोने पड़ेंगे!'

"दान्को उनके सामने छाती तानकर खड़ा हो गया और चिल्लाकर बोला –

"'तुमने कहा – "हमारी अगुवाई करो!" और मैंने तुम्हारी अगुवाई की। मुझमें तुम्हारी अगुवाई करने की हिम्मत है और इसीलिये मैंने इसका बीड़ा उठाया। लेकिन तुम? तुमने अपनी मदद के लिये क्या किया? चलते ही रहे और अधिक लम्बे रास्ते के लिये अपनी शक्ति सुरक्षित नही रख पाये! भेड़ों के रेवड़ की भाति तुम केवल चलते ही रहे!'

"उसके इन शब्दो ने उन्हें और भी ज़्यादा भड़का दिया।

"'हम तुम्हारी जान ले लेगे! तुम्हारी जान ले लेंगे!' वे चीख़ उठे।

"जंगल गूंज रहा था, गूज रहा था, उनकी चीख़ो को प्रतिध्वनित कर रहा था। बिजली अंधेरे की चिंदियां बिखेर रही थी। दान्को की नज़र उनपर टिकी थी, जिनके लिये उसने इतना कष्ट उठाया था और उसने देखा कि वे दरिन्दे बने हुए है। एक अच्छी-खासी भीड़ उसे घेरे थी, लेकिन उनके चेहरों पर सद्भावना का कोई चिह्न नज़र नही रहा था और उनसे किसी तरह की दया की उम्मीद नही की जा सकती थी। तब उसके हृदय में गुस्से की एक आग-सी धधकी, लेकिन लोगो के प्रति दयाभाव ने उसे शान्त कर दिया। वह लोगो को चाहता था और उसे डर था कि उसके बिना वे नष्ट हो जायेंगे। उन्हें बचाने और सुगम पथ पर ले जाने की एक महती आकाक्षा की ज्योति उसके हृदय में जल उठी और इस महान ज्योति की तेज लपटे उसकी आखो मे नाचने लगी... और यह देखकर लोगों ने सोचा कि वह आपे से बाहर हो गया है और इसी कारण उसकी आंखो में आग की प्रखर लौ थिरक रही है। वे भेड़ियों की भाति चौकस हो गये – इस आशका से कि वह अब उनपर टूट पड़ेगा और उसके इर्द-गिर्द और भी निकट आ गये ताकि उसको दबोच ले और मार डाले। उसने उनके इस इरादे को भांप लिया, जिससे उसके हृदय की ज्योति और भी प्रखर हो उठी, क्योंकि उनके इस विचार से उसका दिल तड़प उठा था।

"और जंगल अपना शोकपूर्ण गीत गाता जा रहा था, बादल

गरजते जा रहे थे और पानी ज़ोर से बरसता जा रहा था...

"'लोगों के लिये मैं क्या करूं!?' दान्को की आवाज़ बादलों की गरज को बेधती हुई गूंज उठी।

"और सहसा उसने अपना वक्ष चीर डाला, अपने हृदय को नोचकर बाहर निकाला और उसे अपने सिर से ऊंचा उठा लिया।

"वह सूरज की भाति दमक रहा था, उसका प्रकाश सूरज से भी ज़्यादा तेज़ था। जंगल की गरज शान्त हो गयी और इस मशाल का – मानवजाति के प्रति महान प्रेम की इस मशाल का – आलोक फैल चला। प्रकाश से अधकार के पाव उखड़ गये और वह कापता-थरथराता हुआ दलदल के सडे-गले गर्त्त मे कूदकर जंगल की अतल गहराइयो मे समा गया। और लोग आश्चर्य के मारे बुत बने वही खड़े रह गये।

"'बढ़ चलो!' दान्को ने चिल्लाकर कहा और अपने जलते हुए हृदय को खूब ऊंचा उठाकर लोगों का पथ जगमगाता हुआ तेज़ी से आगे बढ़ चला।

"मत्रमुग्ध-से लोग उसके पीछे हो लिये। तब जगल एक बार फिर भुनभुनाने और अपनी फुनगियो को अचरज से हिलाने लगा। लेकिन उसकी यह भुनभुनाहट दौड़ते हुए लोगो के पावो की आवाज़ मे खो गयी। लोग अब साहस और तेज़ी के साथ भागते हुए आगे बढ़ रहे थे – जलते हुए हृदय का अद्भुत आलोक उन्हे अनुप्राणित कर रहा था। लोग मरते तो अब भी थे, लेकिन आसुओं और शिकवे-शिकायत के बिना। दान्को सबसे आगे बढा जा रहा था और उसका हृदय दहकता ही जा रहा था, दहकता ही जा रहा था!

"सहसा जंगल ने उनके लिये रास्ता बना दिया, रास्ता बना दिया और खुद पीछे रह गया – मूक और घना। और दान्को तथा वे सभी लोग सूरज की धूप और बारिश से धुली हवा के सागर में हिलोरें लेने लगे। तूफ़ान अब उनके पीछे, जगल के ऊपर था, जबकि यहा सूरज सोना बिखेर रहा था, स्तेपी राहत की सांस ले रही थी, वर्षा के मोतियो में घास चमक रही थी और नदी सोने की तरह चमचमा रही थी... सांझ का समय था और छिपते हुए सूरज की किरणों में नदी वैसी ही लाल लग रही थी जैसी लाल थी गर्म खून की वह धारा जो दान्को की फटी छाती से बह रही थी।

"वीर दान्को ने अन्तहीन स्तेपी के विस्तार पर नज़र डाली, स्वाधीन धरती पर आनन्द से छलछलाती नज़र, और गर्व से हंसा। फिर ज़मीन पर गिरा और मर गया।

"लोग तो खुशी में मस्त और आशा से ओतप्रोत थे। वे उसे मरते हुए नही देख पाये और न यह कि उसका वीर हृदय उसके मृत शरीर के पास पड़ा अभी तक जल रहा था। सिर्फ़ एक सतर्क आदमी की ही दृष्टि उसकी ओर गयी और उसने डरकर उस गर्वीले हृदय को रौंद डाला.. चिंगारियों की एक फुहार-सी उसमें से निकली और वह बुझ गया..."

"यही वजह है कि स्तेपी में तुफ़ान के पहले नीली चिंगारिया दिखाई देती हैं।"

चेल्काश

नीला दक्षिणी आकाश धूल के कारण धुंधलाया हुआ था, दहकता सूरज मानो झीने से भूरे नक़ाब के भीतर से हरे सागर की ओर झांक रहा था। वह पानी मे लगभग प्रतिबिम्बित नही हो रहा था, क्योंकि उसे चप्पुओं की चोटों, स्टीमरों के पंखो, दो-मस्तूली तुर्की जहाज़ों की पैनी बल्लियों और बहुत ही तंग बन्दरगाह पर सभी दिशाओं से आते-जाते अन्य प्रकार के जहाज़ों ने मथ डाला था। ग्रेनाइट पत्थर के बांध में जकड़ी, भारी बोझों से दबी-दबायी और तरह-तरह के कूड़े-करकट से गन्दी हुई सागर की लहरें तट और जहाज़ों के पहलुओं से टकरा रही थी, फनफनाती और झाग उगलती हुई।

लंगरों की ज़ंजीरों की खनखनाहट, मालगाड़ियों के शिकंजों की खड़खड़, लोहे की चादरों की विलाप-ध्वनि, जिन्हें उतारकर रास्ते के पत्थरों पर पटका जा रहा था, लकडी की धीमी, मंद ठकठक, घोड़ा-गाड़ियों की खड़खड़, जहाज़ों के भोंपुओं की घुटी-घुटी और कर्कश आवाज़ें, घाट-मज़दूरों, जहाज़ियों और चुंगीघर के सिपाहियों की चीख-चिल्लाहट – इन सब ध्वनियो के सम्मिश्रण से कार्यरत दिन के उस रौद्र संगीत की सृष्टि हो रही थी जो बन्दरगाह के ऊपर वातावरण में उमड़-घुमड़ रहा था। और नीचे धरती पर से आवाज़ों की नयी लहरें उसमें शामिल होने के लिये निरन्तर आकाश की ओर बढती रहती – कभी धरती को कंपा देनेवाली गड़गड़ाहट के रूप में और कभी उमस भरी वायु को तार-तार कर देनेवाले धमाके के रूप में, जैसे कोई भारी चीज़ टूटकर चकनाचूर हो गई हो।

ग्रेनाइट पत्थर, लोहा, लकड़ी, रास्ते के पत्थर, जहाज़ और लोगबाग – हर चीज़ मरकरी* की वन्दना के सबल स्वरों में डूबी

---

* प्राचीन रोमनो का वाणिज्य देवता। – सं०

हुई थी। इसमें मानवीय आवाज़ें मुश्किल से ही सुनाई देती थी, वे क्षीण और हास्यास्पद थीं। और खुद लोग भी – जिन्होंने इस कोलाहल को जन्म दिया था, निरीह और हास्यास्पद थे। धूल से लथपथ तथा चिथड़ों में लिपटे उनके फुरतीले शरीर कमर पर लदे बोझ से दोहरे होते हुए धूल, तपन और कोलाहल के बीच इधर से उधर आ-जा रहे थे और अजगरों से भी बड़े लौह-भीमों, मालों के अम्बारों, खड़खड करते रेल के डिब्बों तथा अन्य तमाम चीज़ों की तुलना में – जिनका खुद उन्होंने ही निर्माण किया था – वे नगण्य मालूम होते थे। उन्ही के हाथों से बनी चीज़ों ने उन्हें अपना गुलाम बना लिया था और उन्हें व्यक्तित्वहीन कर दिया था।

भाप गरमाते हुए भारी-भरकम और लम्बे-चौड़े जहाज़ सीटियों की सिसकार और फुंकार छोड़ रहे थे, भारी उसांसे ले रहे थे और उनसे निकलनेवाली प्रत्येक ध्वनि उन गंदे और मटमैले जीवो का घृणा से उपहास करती प्रतीत होती थी जो उनके गहरे तहखानों में दास्य श्रम से तैयार हुआ माल लादने के लिये उनके डेको पर रेंग रहे थे। अपने पेट मे डालने के लिये दो मुट्ठी अनाज पाने की खातिर घाट-मजदूरों की ये लम्बी क़तारें जब जहाज़ का लौह-पेट भरने की खातिर हज़ारों मन अनाज अपनी कमर पर लादकर चलती तो ऐमी हास्यास्पद लगती कि हंसते-हंसते आखों में आंसू आ जायें। चिथडों में लिपटे, पसीने से तर और गर्मी, शोर तथा हाड़तोड़ मेहनत के कारण मूढ़ बने लोग और उन्ही द्वारा निर्मित शक्तिशाली एवं सूर्य की किरणों में चमकती हुई बढ़िया मशीनें – जिन्हें भाप ने नही, बल्कि उनके बनानेवालों के रक्त और मांसपेशियों ने ही चालू किया था – मानो एक अत्यधिक कटु व्यगपूर्ण कविता की तुलना प्रस्तुत करते थे।

आवाज़ों का यह ऊहापोह बड़ा बोझिल मालूम होता था, धूल नाक और आंखों में घुसी जाती थी, तपन इतनी थी कि शरीर झुलसा और बेदम हुआ जाता था तथा हर चीज़ मे एक कसाव और तनाव था, मानो धीरज का बांध टूटना चाहता हो, कोई प्रलयंकर घटना सिर पर मंडरा रही हो – एक भीषण विस्फोट होनेवाला हो जो इस समूचे दमघोट वातावरण को खत्म कर देगा और लोग उन्मुक्त और सहज भाव से सांस ले मकेंगे। तब दुनिया पर एक शात निस्तब्धता छा जायेगी और लोगों को बहरा, चिड़चिड़ा तथा पागल बना देनेवाली

यह धूल-धूसरित चिल्ल-पो सदा के लिये विदा हो जायेगी तथा यह नगर, सागर और आकाश शान्त, ताज़ा और सुन्दर हो उठेंगे...

एक के बाद एक गूंजदार और लयबद्ध बारह घण्टे बजे। जब घण्टों की गूंज विलीन हो गयी तो श्रम के बनैले सगीत ने भी विराम ग्रहण किया और अगले ही क्षण केवल असन्तोष की भुनभुनाहट बनकर रह गया। अब लोगो की आवाजें और सागर की मर्मर-ध्वनि अधिक स्पष्टता मे सुनाई देने लगी। भोजन करने का समय हो गया था।

१

अपना काम बन्द करने के बाद जब घाट-मज़दूर शोर मचाती छोटी-छोटी टोलियो मे घाट पर इधर-उधर फैलकर और खोमचेवालों से खाने की चीजें ख़रीदकर ऐसे छायादार ओनो-कोनों की खोज कर रहे थे जहा आराम मे बैठकर वे अपना भोजन कर सकें, तब पुराने घाघ ग्रीश्का चेल्काश ने वहां अपनी सूरत दिखाई। सभी घाट-मज़दूर उसे अच्छी तरह से जानते थे। वह पक्का पियक्कड़, साहसी और बहुत ही दक्ष चोर था। वह नगे पाव और नगे सिर था। वह तार-तार हुआ मखमली पतलून और छीट की मैली-कुचैली क़मीज़ पहने था जिसका कालर फटा हुआ था और जिसके भीतर से सावली चमडी चढी उसकी हडियल छाती दिखाई दे रही थी। उसके काले और पके अस्त-व्यस्त बालों, अलसाये, लम्बोतरे तथा लुटेरो जैसे चेहरे से यह पता चल रहा था कि वह अभी-अभी सोकर उठा है। एक तिनका उसकी भूरी मूछो मे और दूसरा बायें गाल पर उगी खूटी में उलझा हुआ था तथा अपने कान के ऊपर उसने लिंडन वृक्ष की एक छोटी-सी टहनी तोड़कर खोस ली थी। दुबला-पतला और लम्बा, कंधे कुछ झुके हुए, ऐसा चेल्काश पत्थर-जड़ी सड़क पर आ रहा था – अलस गति से झूमता-झामता, हुकदार नाक से वायु को सूघता और अपनी भावनाहीन भूरी आखो को चमकाता हुआ घाट-मजदूरो की टोह लेता, मानो वह उनमें से किसी को खोज रहा हो। उसकी भूरी लम्बी और घनी मूंछें लगातार बिल्ले की मूंछों की भांति फरफरा रही थी, अपने हाथों को वह कमर के पीछे बाधे था और उन्हें बराबर ऐंठता हुआ अपनी लम्बी टेढी-मेढी, फुर्तीली उंगलियों

को चटखा रहा था। यहां भी, जहां उसके जैसे अन्य सैकड़ों तलछटी लोग मौजूद थे, वह तुरंत ध्यान आकर्षित करता था, क्योंकि अपने बहुत ही दुबले-पतले शरीर और घात में लगी चाल के कारण वह स्तेपी के बाज़ जैसा लगता था। उसकी चाल में बाज़ की उड़ान की भांति सधी हुई शांति के चोले में झपट्टा मारने की सन्नद्धता छिपी थी।

जब वह कोयले की टोकरियों के ढेर की छाया मे बैठे मजदूरों के एक दल के पास पहुंचा तो मज़बूत काठी का एक युवक, जिसके बुद्धू-से चेहरे पर लाल चकत्ते उभर आये थे और गर्दन की खरोंचें यह बता रही थी कि हाल ही में उसकी खूब मरम्मत की गई है, उससे मिलने के लिये उठ खड़ा हुआ। चेल्काश के साथ-साथ चलते हुए उसने धीमी आवाज में कहा –

"जहाजियों को पता चला है कि कपड़े की दो गांठें ग़ायब हैं.. वे खोज कर रहे हैं।"

"तो?" शांत भाव से ऊपर से नीचे तक उसका जायज़ा लेते हुए चेल्काश ने कहा।

"तो क्या? बस खोज कर रहे हैं और कुछ नही।"

"क्या मुझे भी उनका हाथ बटाना चाहिये इस खोज मे?" गोदाम की ओर देखते हुए चेल्काश ने मुस्कराकर कहा।

"भाड़ में जाओ!"

और वह लौट चला।

"रुको! यह तो बताओ कि तुम्हारे चेहरे का यह सिंगार किसने किया है? क्या हुलिया बना डाला है .. मीश्का को तो यहा कही नहीं देखा?"

"नहीं, उसे काफ़ी देर से नही देखा!" युवक ने अपने साथियों के निकट पहुंचते हुए मुड़कर कहा।

चेल्काश को जो भी देखता, पुराने परिचित की भाति उसका अभिनन्दन करता। लेकिन वह, जो हमेशा बहुत खुशमिज़ाज रहता था और शब्दों के तीखे बाण चलाता था, आज अपने रंग में नही था और नपे-तुले तथा झल्लाये हुए जवाब देता था।

सहसा माल के एक अम्बार के पीछे से चुंगी-गारद का एक सिपाही नमूदार हो गया – गहरे हरे रंग की वर्दी पहने, धूल-धूसरित,

सीधा-सतर, झपटने के लिये तैयार। वह चेल्काश की राह रोककर चुनौती की मुद्रा में खड़ा हो गया। उसका एक हाथ कटार की मूठ पर था और दूसरा चेल्काश की गर्दन की ओर बढ़ रहा था।

"ठहरो, कहां जा रहे हो?"

चेल्काश एक डग पीछे हटा, नजर उठाकर उसने गारद के इस सिपाही की ओर देखा और उसके होंठों पर एक फीकी-सी मुस्कान दौड़ गई।

सिपाही के लाल, धूर्त्त-दयालु चेहरे ने भयानक मुद्रा धारण करने का प्रयत्न किया। इसके लिये उसने अपने गालों को फुलाया और सुर्ख कर लिया, भौंहों को सिकोड़ा और आंखो को तरेरा—लेकिन इससे, कुल मिलाकर, उसका चेहरा अत्यन्त हास्यास्पद हो उठा।

"तुम्हें आगाह किया जा चुका है कि अगर अपनी हड्डी-पसलियों की ख़ैर चाहते हो तो घाट के पास तक न फटकना, लेकिन तुम फिर यहा चले आये?" उसने गरजकर कहा।

"कहो, सेम्योनिच! मज़े में तो हो?" चेल्काश ने शांत भाव से अपना हाथ बढाते हुए कहा, "आज बहुत दिनों के बाद दिखाई दिये।"

"अच्छा होता कि तुम कभी भी दिखाई न देते! जाओ, जाओ यहां से!.." लेकिन फिर भी उसने बढे हुए हाथ से हाथ मिलाया।

"मैं तुमसे पूछना चाहता था," गारद के सिपाही के हाथ को अपनी इस्पाती उंगलियो मे थामे और एक मित्र की तरह बेतकल्लुफ़ी से उसे हिलाते हुए चेल्काश ने कहा, "मीश्का को तो कही नही देखा?"

"कौन मीश्का? मै किसी मीश्का-वीश्का को नही जानता! यहा से चलते बनो, भाई, अगर गोदामघर के सिपाही ने तुम्हें देख लिया तो..."

"वही लाल बालोंवाला, जिसके साथ पिछली बार मैं 'कोस्त्रोमा' जहाज़ पर काम करता था," चेल्काश ने अपनी ही बात आगे बढायी।

"जिसके साथ मिलकर तुम चोरी करते हो, वही न? वह अस्पताल में है, तुम्हारा वह मीश्का। उसके ऊपर लोहे का ढांचा आ गिरा और उसकी टांग कुचली गई। लेकिन मैं तुमसे शराफ़त से कह रहा हूं कि भाई यहां से चलते बनो, नहीं तो मुझे गर्दन पकड़कर तुम्हें धकियाना पड़ेगा!.."

"अरे, वाह! और तुम कहते थे कि मीश्का को नही जानते... जानते तो हो। तुम इतने नाराज़ क्यों हो, सेम्योनिच?.."

"बहुत बक-बक नही करो! जाओ यहां से!.."

गारद का सिपाही झुझला उठा। उसने अपने चारों ओर देखा और हाथ छुड़ाने की कोशिश करने लगा। लेकिन चेल्काश ने उसका हाथ नही छोड़ा, शान्त भाव से अपनी घनी भौंहों के नीचे से उसे देखा और कहता गया –

"तुम मुझे ऐसे खदेडो नही। मै तुम्हारे साथ अच्छी तरह गपशप करके चल दूगा। हा, तो कैसा हाल-चाल है?.. तुम्हारी बीवी और बच्चे तो मज़े मे हैं न?" और फिर, अपनी आखों को मिचमिचाते तथा व्यंगपूर्ण हसी में अपनी बत्तीसी झलकाते हुए उसने कहा, "बहुत दिनों से तुमसे मिलने को जी चाह रहा था, लेकिन आ ही नही सका। इस कमबख़्त शराब के मारे..."

"बस, बस, रहने दो! मजाक-वजाक़ से काम नही चलेगा, हड़ीले शैतान! मै बहुत सजीदगी से कह रहा हू.. या फिर तुमने अब घरों में सेंध लगाना और राहगीरों को लूटना शुरू कर दिया है?"

"इसकी क्या ज़रूरत है? यहा घाट पर ही इतनी दौलत है कि हम और तुम ज़िन्दगी भर व्यस्त रह सकते है। सच, सेम्योनिच, बड़ी दौलत है यहा! हां.. सुना है कि तुमने कपड़े की दो और गाठे तिडी कर दी है? ज़रा संभलकर चलो, नही तो मुसीबत मे फसे नजर आओगे!..'

गुस्से से आग-बबूला होकर सेम्योनिच कांपने लगा और लारें गिराते हुए कुछ कहने की कोशिश करने लगा। चेल्काश ने उसका हाथ छोड दिया और शांत भाव से लम्बे डग भरता घाट के फाटक की ओर चल दिया। गारद का सिपाही भी खूब गालिया देता हुआ उसके पीछे-पीछे हो लिया।

चेल्काश अब चहक उठा था। अपने दातों के बीच से वह धीमे-धीमे सीटी बजाने लगा, दोनो हाथ पतलून की जेबो में डालकर धीरे-धीरे चला जा रहा था, दायें-बाये लोगो से चुटकिया लेता और हंसी-मज़ाक़ भी करता जाता था। जवाब भी उसे उतने ही करारे मिलते थे।

"तुम्हारे भी खूब ठाठ हैं, ग्रीश्का! मालिकों ने एक टहलुवा भी साथ में लगा दिया है!" एक घाट-मज़दूर ने, जो भोजन के बाद

अपने साथियों के साथ ज़मीन पर पांव पसारे सुस्ता रहा था, चिल्लाकर कहा।

"सेम्योनिच को इस बात का बडा ख्याल है कि मेरे नंगे पांवों में कही कोई कील-कांटा न गड़ जाये।" चेल्काश ने जवाब दिया।

वे दरवाज़े पर पहुच गये। दो सिपाहियो ने चेल्काश के कपड़ों को टटोल-टटोलकर उसकी तलाशी ली और फिर उमे धीरे मे बाहर सड़क पर धकेल दिया।

वह सड़क पार कर, शराबख़ाने के दरवाज़े के मामने, एक पेटी पर बैठ गया। माल मे लदी घोड़ा-गाडियो की एक पात खडखड़ करती घाट के दरवाज़े में मे बाहर निकल रही थी और दूसरी ओर से ख़ाली गाडियों की एक दूसरी पात भीतर प्रवेश कर रही थी। उनके गाड़ी-वान, अपनी गद्दियो पर बैठे, धचके खाकर उछल रहे थे। घाट से बेहद शोर-गुल सुनाई दे रहा था और दमघोट धूल के गुब्बारे दिखाई दे रहे थे

इम भयानक शोर-शराबे में चेल्काश अपने को खूब रग में महसूस कर रहा था। वह किसी भारी माल पर हाथ साफ करने की कल्पना में मगन था। इसमें उसे थोडी-सी मेहनत, लेकिन बड़ी फुर्ती की जरूरत होगी। उसे यकीन था कि चुस्ती-फुर्ती की उसमें कमी नही है। खुशी से अपनी आंखें सिकोड़ते हुए वह यह कल्पना कर रहा था कि नोटों की उन तमाम गड्डियों को वह अगली मुबह किस प्रकार खर्च करेगा उमे अपने साथी मीश्का का ख़याल आया। उसकी उसे सख़्त ज़रूरत थी, लेकिन वह अपनी टाग तोडे बैठा था। चेल्काश ने मन ही मन उसे कोसा – उसे डर था कि वह अकेला इस काम को सिरे नही चढ़ा सकेगा। रात को मौसम का जाने क्या रंग होगा? . सिर उठाकर उसने आकाश पर नज़र डाली, फिर सामने फैली सडक को नापा।

कोई छः डग दूर, एक लड़का खम्भे से कमर टिकाये पटरी पर बैठा था। वह गाढ़े की नीली क़मीज़ और पतलून, पावो में बक्कल की चप्पलें और सिर पर फटी हुई छज्जेदार भूरी टोपी पहने था। एक छोटा-सा थैला, सूखी घास मे लिपटा और ढग से रस्सी से बंधा हुआ बिना हत्थे का एक हंसिया उसकी बग़ल में पडा था। लड़का हट्टा-कट्टा और चौड़े कंधोंवाला था। उसके बाल सुनहरे थे और उसका चेहरा हवा और धूप के कारण संवलाया हुआ था। अपनी बड़ी-बड़ी

नीली आंखों से वह चेल्काश की ओर सहज विश्वास और मित्र-भाव से देख रहा॰ था।

चेल्काश ने अपनी बत्तीसी चमकाई, जीभ बाहर निकाली और मुंह बनाकर तथा दीदे निकालकर उसकी ओर ताकने लगा।

लड़के ने, अचरज में भरकर पहले तो आंखें मिचमिचाईं, फिर ज़ोरों से हंसने लगा और हसते हुए ही चिल्लाकर कहा – "ओह, बड़े मौजी हो!" और उठे बिना ही, रास्ते के पत्थरों पर से खिसकता, वह चेल्काश की ओर बढ़ चला। उसका थैला भी उसके साथ-साथ धूल में घिसट रहा था और उसके हंसिये की नोक पत्थरों से टकराकर खनखना रही थी।

"लगता है कि बहुत पी गये हो, भाई?.." चेल्काश के पतलून को ज़रा खीचते हुए उसने पूछा।

"तुमने ठीक कहा, मेरे छौने, ठीक ही कहा है तुमने!" चेल्काश ने मुस्कराते हुए स्वीकार किया। इस स्वस्थ, खुशमिज़ाज और बच्चों जैसी निश्छल आंखोंवाले लड़के ने तुरंत उसके हृदय में घर कर लिया। "और तुम क्या घास काटकर आ रहे हो?" उसने पूछा।

"कुछ न पूछो! . डेढ मील तक घास काटी और मिली कौड़ियां। बुरे दिन आ गये है। लोगो की भरमार है! अकाल के मारे ढेरो लोग चले आये है, मजूरी बहुत कम रह गयी। ज़रा सोचो तो, कुबान प्रदेश में अब साठ कोपेक मिलते है। कहते हैं कि पहले तीन या चार, यहा तक कि पांच रूबल भी मिल जाते थे!"

"पहले की बात करते हो! पहले तो किसी रूसी की शक्ल देखकर ही वे तीन-तीन रूबल तक दे डालते थे। दसेक साल पहले मैं इसी तरह रोज़ी कमाता था। किसी गांव में चला जाता और कहता – 'देखो, लोगो, मैं रूसी हूं!' मेरे चारों ओर लोग जमा हो जाते, ऊपर से नीचे तक मुझे देखते, मेरे बदन मे उंगलिया गड़ाते और चुटकिया काटते, ओह-आह करते और तीन रूबल मेरी भेंट कर देते। इसके अलावा खूब खिलाते-पिलाते और कहते कि जब तक जी चाहे गांव में रहो!"

लड़का पहले तो मुंह बाए और अपने गोल चेहरे पर अचरज तथा प्रशंसा के भाव लिये सुनता रहा, लेकिन जब उसने अनुभव किया कि चेल्काश दून की हांक रहा है तो सटाक से अपना मुंह बन्द कर लिया

और हंस पड़ा। चेल्काश अपने चेहरे पर संजीदगी बनाये रहा और मुस्कराहट को उसने मूंछों के भीतर छिपाये रखा।

"तुम भी अजीब पंछी हो, बाते ऐसे करते हो मानो सच बोल रहे हो और मैं विश्वास करता जाता हूं... लेकिन, मै तो ईमान से कहता हूं कि पहले वहा .."

"और मैं क्या कह रहा था? यही कि पहले वहां.. "

"ओह, हटाओ यह सब!.." लड़के ने हाथ झटकते हुए कहा, "यह बताओ कि तुम हो कौन – मोची या दर्ज़ी?"

"मैं?" चेल्काश ने एक क्षण कुछ सोचा और फिर बोला, "मैं मछियारा हू.."

"मछियारा? अरे, वाह! तो तुम मछलियां पकड़ते हो?.."

"मछलिया ही क्यो? यहां के मछियारे केवल मछलिया नही पकड़ते। ज़्यादातर डूबे लोगों, पुराने लगरो और डूबी हुई नावो – सभी चीज़ों को पकडते है। इसके लिये ख़ास किस्म के काटे होते है ."

"फिर बेपर की उड़ाने लगे! शायद तुम उन मछियारों मे से हो जिनका यह गीत है –

> हम डालते है अपने जाल
> सूखे-सूखे तटो पर
> बाजार की दुकानो पर
> और खुले गोदामो मे!"

"ऐसे मछियारों से कभी मिले हो?" चेल्काश ने मुस्कराकर पूछा।

"मिला तो नही, लेकिन सुना है ."

"अच्छे लगते है?"

"कौन, वे लोग? अच्छे क्यो न लगते?. भले लोग है, आज़ाद है, अपनी मौज जीते है..."

"तुम्हारे लिये आज़ादी का क्या मतलब है? क्या तुम्हें भी आज़ादी पसन्द है?"

"बेशक! इससे अच्छी बात भला और क्या होगी कि आदमी खुद ही अपना मालिक हो – जहा जी चाहे जाये, जो मन में आये करे... केवल अपना दामन बेदाग़ रखे, ऐसा न हो कि गले में चक्की के पाट बंध जायें। ख़ुदा को न भूले और ख़ूब मज़े से ज़िन्दगी बिताये..."

चेल्काश ने घिन से थूका और मुंह मोड़ लिया।

"अब मुझे ही ले लो..." लड़का कहता गया, "मेरा बाप बिना कुछ छोड़े मर गया, मेरी मां बूढ़ी है और ज़मीन में कुछ पैदा नही होता। ऐसी हालत में मै क्या करूं? जीना तो है ही। मगर कैसे? मालूम नही। भले घर की एक लडकी से मेरी शादी हो सकती है। मुझे कोई एतराज़ नही, अगर उसके घरवाले उसका हिस्सा उसके नाम कर दें। लेकिन वे नही करेगे। उसका खूसट बाप उसे एक इंच भी ज़मीन नही देगा। सो मुझे उसका दास बनकर काम करना पड़ेगा... बहुत दिनों तक... सालों तक! देखा तुमने, कैसी मुसीबत है! अधिक नही, अगर कोई डेढ़ सौ रूबल भी मेरे हाथ लग जाते तो मै अपने पैरों पर खड़ा हो जाता और उसके बाप के सामने गर्दन तानकर कह सकता – 'तुम अपनी जायदाद का हिस्सा मारफ़ा के नाम कर देना चाहते हो या नही? नही करना चाहते? तुम्हारी मर्ज़ी! गाव मे अकेली वही नही है, और लड़किया भी है, भला हो भगवान का!' और मै, देखा तुमने, आज़ाद हो जाता, जो चाहता, वही कर सकता!"

लड़के ने आह भरी और फिर कहता गया –

"लेकिन ऐसा मालूम होता है कि बन्धक घर-जमाई बनने के सिवा मेरे लिये और कोई चारा नही है। मैने सोचा था कि क़ुबान में मज़दूरी करके कोई दो सौ रूबल कमा लूंगा और बस, मै भी भला आदमी बन जाऊंगा! लेकिन वहा कुछ पल्ले नही पडा। मेरे भाग्य में तो खेत-मज़दूर बनना ही बदा है अपनी खेती करके ही अपना पेट नही भर सकूगा, देखा तुमने?"

बन्धक घर-जमाई बनने की कल्पना उसके लिये इतनी अप्रिय थी कि कहते-कहते उसका चेहरा उदास हो गया। वह बेचैनी से जमीन पर हिलने-डुलने लगा।

"अब कहा जाओगे?" चेल्काश ने पूछा।

"घर। और कहा जा सकता हू?"

"यह मैं क्या जानू? हो सकता है कि तुम तुर्की जाने की सोच रहे हो..."

"तुर्की?" वह चकित हो उठा, "क्या कोई ईसाई कभी तुर्की जाता है? तुम भी क्या बात करते हो!.."

"तुम्हारे भेजे में निरा गोबर भरा है!" चेल्काश बुदबुदाया और

उसने अपना मुंह फेर लिया। गांव के इस स्वस्थ लड़के ने उसके हृदय में एक खलबली मचा दी थी ...

भीतर ही भीतर असन्तोष की एक भावना आकार ग्रहण कर रही थी जिसकी वजह से वह रात की मुहिम पर अपना ध्यान केन्द्रित नही कर पा रहा था।

चेल्काश के शब्दो से आहत होकर लड़का मन ही मन कुछ-कुछ भुनभुनाया और उसने कनखियों से उसकी ओर देखा। उसके गाल फूलकर कुप्पा बन गये थे, उसके होठ बाहर को निकले हुए थे और वह तेज़ी से अपनी सिकुड़ी हुई आखों को विचित्र ढग से मिचमिचा रहा था। स्पष्ट ही उसे यह उम्मीद नही थी कि मूछोवाले इस आवारा जीव के साथ उसकी बातो का ऐसे अचानक और इतने असन्तोषजनक रूप में अन्त हो जायेगा।

इस आवारा आदमी ने अब उसकी ओर कोई ध्यान नही दिया। पेटी पर बैठा और सोच में डूबा हुआ वह सीटी बजा रहा था और अपने पांव के गंदे अंगूठे से ताल दे रहा था।

लडके का हृदय उससे बदला लेने के लिये कुड़मुड़ा रहा था।

"ऐ मछियारे! क्या तुम अक्सर इसी प्रकार नशे में धुत्त रहते हो?" उसने यह कहना ही चाहा था कि वह मछियारा अनायास उसकी ओर मुड़ते हुए बोला –

"सुनो, छौने, क्या आज रात मेरे साथ काम करना चाहोगे? जल्दी से तय करके बताओ!"

"कैसा काम है?" लडके ने दुविधा में पडते हुए पूछा।

"कैसा क्या! जो भी काम मै तुम्हें दूं हम मछली पकड़ने जा रहे है। तुम डांड चलाना "

"हुंह . इसमे क्या है? यह तो कर सकता हू। केवल ... ऐसा न हो, तुम किसी मुसीबत मे फसा दो। तुम बहुत अजीब जीव हो ... खतरनाक आदमी हो .. "

चेल्काश अपने हृदय में जल-भुन उठा और निर्मम झल्लाहट से बोला – "जब तुम कुछ जानते नहीं, तो यों ही बक-बक नही करो। अभी इस थूथनी पर एकाध जड़ दूं तो अक्ल ठिकाने आ जाये।"

वह उछलकर खड़ा हो गया। उसका बायां हाथ मूछ ऐठ रहा था और दायां हाथ खूब कसा हुआ गंठीला मुक्का बना हुआ था। उसकी

आंखें चिनगारियां छोड़ रही थीं।

लड़का कांप उठा। उसने जल्दी से अपने अग़ल-बग़ल देखा, फिर घबराहट से आंखें मिचमिचाता हुआ ख़ुद भी उछलकर खड़ा हो गया। दोनों चुपचाप खड़े आंखो ही आंखों में एक दूसरे को तौल रहे थे।

"हां तो?" चेल्काश ने कठोर आवाज़ में पूछा। इस ज़रा-से पिल्ले ने उसका अपमान किया था। अब तक यों ही उपेक्षा के साथ वह उससे खिलवाड़ करता रहा था, लेकिन अब उसकी समूची आत्मा घृणा से उबल रही थी, क्योंकि उसकी नीली आंखें इतनी निश्छल थीं, उसका संवलाया हुआ चेहरा इतना स्वस्थ था, उसकी छोटी-छोटी बांहें इतनी पुष्ट थी, क्योंकि उसका कहीं कोई गांव था और उस गांव में उसका एक घर था और एक धनी किसान उसे अपना घर-जमाई बनाने को तैयार था। उसे घृणा थी उसके जीवन के उस ढग से, जिसे वह अतीत में बिता चुका था और जिसे वह भविष्य में बिताना चाहता था, और सबसे अधिक घृणा थी उसे इस बात से कि उसमें – चेल्काश की तुलना में एक निरा बच्चा होते हुए भी – आज़ादी से जीवन बिताने की एक ऐसी भावना मौजूद थी जिसका न तो वह मूल्य जानता था और न ही जिसकी उसे ज़रूरत थी। यह बात कभी अच्छी नही लगती कि वह आदमी भी, जिसे हम अपने से नीचा समझते है, ठीक उन्ही चीज़ों से प्यार अथवा घृणा करे जिनसे कि हम करते है, क्योंकि ऐसा करके वह एक प्रकार से हमारे साथ अपनी समानता जताता प्रतीत होता है।

लड़के ने चेल्काश की ओर देखा और उसे अपने स्वामी के रूप में अनुभव किया।

"यों तो मुझे... कोई एतराज़ नही," उसने कहा, "आख़िर मुझे काम चाहिये। इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है कि मै तुम्हारे लिये काम करता हू अथवा अन्य किसी के लिये? मेरे मुंह से वह बात कुछ यो ही... इसलिये निकल गई कि तुम कुछ कामकाजी आदमी नहीं दिखाई पड़े – तुम... ख़ासे फटेहाल हो। लेकिन सो कुछ नहीं। मैं जानता हूं, ऐसा किसी के भी साथ हो सकता है। नशे में धुत्त लोग क्या मैंने पहले नहीं देखे? देखे हैं, बहुत देखे है! तुमसे भी बढ़-चढ़कर।"

"ठीक है, ठीक है! तो तुम राज़ी हो?" चेल्काश ने नर्म पड़ते हुए कहा।

"मैं? हां! खुशी से! बोलो, क्या दोगे?"

"यह तो काम पर निर्भर करता है। इस बात पर कि कितना हमारे हाथ लगता है। हो सकता है कि तुम पांच रूबल तक पा जाओ, समझे?"

बात अब पैसे की हो रही थी। इसलिये किसान का वह बच्चा पक्की बात कर लेना चाहता था – अपनी ओर से भी और उस आदमी की ओर से भी, जोकि उसे ठेके पर रख रहा था। सो एक बार फिर सन्देह और आशका ने उसे घेर लिया।

"नही, भाई, ऐसे काम नही चलेगा!"

चेल्काश ने भी अपना पांसा फेंका।

"अभी इस बारे मे बात न करो! आओ, शराबखाने में चलें।"

और वे साथ-साथ चल दिये। चेल्काश स्वामी के अन्दाज़ में अपनी मूछें ऐंठता हुआ और लडका हुक्म बजाने को तैयार, किन्तु फिर भी सहमा-सा और हृदय मे अविश्वास लिये।

"तुम्हारा नाम क्या है?" चेल्काश ने पूछा।

"गाव्रीला!" लडके ने जवाब दिया।

धुधले और धुएं से काले पडे शराबखाने में प्रवेश करने के बाद चेल्काश कलवार के पास पहुचा और पुराने ग्राहक के अन्दाज़ मे उसने एक बोतल वोद्का, गोभी के शोरबे, भुने मांस और चाय का आर्डर दिया। इसके बाद इतना और कह दिया – "टांक लेना!" जवाब में कलवार ने चुपचाप सिर हिला दिया। यह देखकर गाव्रीला का हृदय तुरत अपने मालिक के प्रति सम्मान से भर गया जो अपने इस आवारा रंग-ढंग के बावजूद प्रत्यक्षतः इतनी अधिक जान-पहचान और साख रखता था।

"अब कुछ खाने-पीने के साथ-साथ बातें भी कर लेगे। तुम यहीं बैठो, मैं अभी आता हूं।"

यह कहकर वह चला गया। गाव्रीला ने अपने चारो ओर नज़र डाली। शराबख़ाना तहख़ाने में था – अंधेरा और सीलन भरा। वोद्का, तम्बाकू के धुएं, राल तथा ऐसी ही अन्य किसी तेज़ गंध से दम घुटता था। नशे में धुत्त, कोयले की धूल और राल में लिथड़ा लाल दाढ़ी-वाला जहाज़ी गाव्रीला के सामनेवाली मेज़ पर बैठा था। हिचकियों के बीच वह किसी गीत के असम्बद्ध और टूटे-फूटे शब्द बड़बड़ा रहा

था, जो कभी तो सिसकारियों से मालूम होते और कभी गले की घरघर जैसे। स्पष्टतः वह रूसी नहीं था।

उसके पीछे मोल्दाविया की दो स्त्रियां बैठी थी। तपे ताम्बे-सा रंग, काले बाल, चिथड़ों में लिपटी। नशे में धुत्त वे भी कोई गीत भुनभुना रही थी।

धुंधलके में और भी शक्लें तैरती नज़र आ रही थी – सब की सब हल्ला करती हुई, बेचैन, अस्त-व्यस्त और नशे में धुत्त ...

गाव्रीला को भय ने दबोच लिया। उसने चाहा कि मालिक शीघ्र ही आ जाये। शराबख़ाने की सभी आवाज़ें मिलकर एक आवाज़ बन गई थी। ऐसा मालूम होता था जैसे बहुत-सी आवाज़ोवाला कोई भीमाकार जन्तु, पत्थरों की इस खोह से बच निकलने का प्रयत्न असफल होने पर गरज और गुर्रा रहा हो .. गाव्रीला को ऐसा मालूम हुआ जैसे एक बोझिल नशा-सा उसके बदन मे सरसरा रहा हो जिससे उसका सिर चकरा रहा था और आंखो में, जो भयभीत उत्सुकता मे शराबख़ाने मे चारों ओर देख रही थी, एक धुंध-सी छा गई थी ...

आख़िर चेल्काश आया और दोनों खाने-पीने तथा बातें करने लगे। तीसरा गिलास पीने के बाद गाव्रीला पर वोद्का का रग जम गया। वह बहुत प्रसन्न था और अपने मालिक को खुश करने के लिये – जिस भले आदमी ने उसे इतना बढिया खाना खिलाया था – कोई बहुत ही अच्छी बात कहना चाहता था। लेकिन, जाने क्यो, शब्द उसके गले मे ही उमड-घुमड़कर रह जाते थे, मुह मे बाहर न निकल पाते थे – एकाएक उसकी जीभ कुछ इतनी भारी हो गयी थी कि संभाले नही संभालती थी।

होठों पर एक व्यंगपूर्ण मुस्कराहट लिये चेल्काश उसकी ओर देख रहा था –

"चित हो गये? बिल्कुल चिथड़ा हो तुम! लगे हवा में उड़ने और केवल पाच जाम पीकर! काम कैसे करोगे? ."

"भाई!" गाव्रीला बुदबुदाया, "कोई चिन्ता न करो! तुम्हें मेरे काम से कोई शिकायत न होगी!. लाओ, तुम्हारा मुंह चूम लूं!.. लाओ न?.."

"बस-बस, रहने दो!.. लो, और चढ़ाओ!"

गाव्रीला पीता गया और आख़िर उसकी ऐसी हालत हो गयी जब

उसे अपने आस-पास की हर चीज़ लयबद्ध लहरों की भांति हिलोरें लेती और डोलती नज़र आने लगी। इससे सिर चकरा गया और जी मतलाने लगा। उसके चेहरे पर मूर्खतापूर्ण उत्साह झलक रहा था। जब भी वह कुछ कहने की कोशिश करता, उसके होंठ हास्यास्पद ढंग से एक दूसरे से जुड़ जाते और उनसे अस्पष्ट स्वर निकलने लगते। चेल्काश एकटक – मानो वह कुछ याद कर रहा हो – उसकी ओर देखता हुआ अपनी मूंछों को ऐंठ रहा था और उदासी से मुस्करा रहा था।

शराबख़ाना अब भी मदमत्त आवाज़ों से गूंज रहा था। लाल बालों-वाला जहाज़ी मेज़ पर सिर टिकाकर सो रहा था।

"चलो, अब चलें!" चेल्काश ने उठते हुए कहा।

गाव्रीला ने उसके साथ चलने का प्रयत्न किया, लेकिन सफल नही हो सका। उसके मुंह से एक बेहूदा-सी गाली निकली और वह नशे में धुत्त आदमी की तरह बेमतलब की हंसी हंसने लगा।

"ढेर हो गया!" चेल्काश बुदबुदाया और फिर अपनी जगह पर बैठ गया।

गाव्रीला हंसता हुआ चौंधियाई आंखों से अपने मालिक की ओर देखता रहा। चेल्काश ने अपनी पैनी और गम्भीर नजर से उसका जायज़ा लिया। एक ऐसे आदमी का उसने जायजा लिया जिसका भाग्य वह अपने भेड़ियों जैसे पंजो में दबोचे था। उसने अनुभव किया कि वह उसके साथ जो भी चाहे, कर सकता है। वह चाहे तो उसे ताश के पत्ते की भांति तोड-मरोड़ सकता है अथवा सहारा देकर उसे उसके ठोस किसानी जीवन में पहुंचा सकता है। उसपर अपना प्रभुत्व अनुभव करते हुए उसने सोचा कि इस लडके को वह ज़हरीला प्याला कभी न पीना पडे जो ख़ुद उसे – चेल्काश को – पीना पडा है .. लड़के से उसे ईर्ष्या भी हो रही थी और उसपर दया भी आ रही थी। वह उसका मज़ाक भी उडाता था और साथ ही यह सोचकर उसका हृदय कसकता भी था कि अगर वह उसके जैसे हाथों में पड गया तो क्या होगा... अन्त में चेल्काश के हृदय को मथनेवाले इन विभिन्न भावों ने मिलकर एक भाव का रूप धारण कर लिया – एक ऐसे भाव का, जिसमें पिता का स्नेह भी था और व्यावहारिकता भी थी। इस लडके की उसे ज़रूरत भी थी और उसे उसपर तरस भी आ रहा था। सो उसने अपनी बांह का सहारा देकर गाव्रीला को उठने में मदद दी और अपने घुटनों से

उसे धीरे-धीरे धकेलता हुआ शराबखाने से बाहर ले गया। वहां पहुंचकर लकड़ियों की एक टाल के साये में उसने उसे लेटा दिया और खुद उसके पास बैठकर पाइप पीने लगा। गाव्रीला कुछ देर छटपटाया और दो-चार बार गुर्रा-कांखकर सो गया।

२

"तैयार हो?" चेल्काश ने फुसफुसाकर गाव्रीला से कहा जो डांड़ों से उलझ रहा था।

"अभी! डाड़ों का कुन्दा ढीला है। डांड़ से उसे ठोक लू?"

"नही, आवाज़ बिल्कुल नही होनी चाहिये! उसे हाथों से दबा दो और वह अपनी जगह पर बैठ जायेगा।"

दोनों के दोनों, किसी तरह की आहट किये बिना एक नाव के साथ जूझ रहे थे जो बलूत वृक्ष के तनो से लदे मस्तूलोंवाले बजरों और खजूर, चन्दन की लकड़ी तथा सरो के मोटे लट्ठो से लदे तुर्की मस्तूली जहाज़ों के समूचे बेड़े में से एक के साथ बंधी थी।

रात अंधेरी थी। छितरे-फटे बादलों के भारी झुंड आकाश में तैर रहे थे। समुद्र शात, काला और तेल की भाति गाढा था। उसमे से नम, लोनी गंध निकल रही थी। उसकी लहरे तट और जहाज़ो के बाजुओं से टकराकर हल्की छपछप की आवाज़ें कर रही थी और चेल्काश की नाव को धीरे-धीरे डोला रही थी। तट से कुछ दूर आकाश की पृष्ठभूमि में जहाज़ों की काली रेखाएं नज़र आ रही थी और उनके मस्तूलो की चोटियां रंग-बिरंगी रोशनियों से चमक रही थी। सागर में इन रोशनियों का अक्स पड़ रहा था। पानी की काली, मख़मली सतह पर रोशनियों के अनगिनत पीले धब्बे कांपते और थिरकते हुए बड़े सुन्दर मालूम होते थे। समुद्र दिन भर काम करने के बाद थके हुए मज़दूर की भांति गहरी नीद सो रहा था।

"अब चल सकते है!" डाड़ को पानी में डालते हुए गाव्रीला ने कहा।

"चल दिये!" चेल्काश ने कहा और चालक-पहिये को ज़ोर से घुमाते हुए उसने नाव को बजरों के बीच से निकाला और वह तेज़ी से तैर चली। जब डांड़ पानी से टकराते, तो लहरों पर फ़ास्फ़ोरसी नीली

चमक की एक गोट-सी चढ़ जाती। नाव आगे निकल जाती और चमकदार फ़ीते की भांति लहराती हुई यह गोट नाव का पीछा करती मालूम होती।

"तबीयत अब कैसी है? सिर दर्द तो नही कर रहा?" चेल्काश ने हार्दिकता से पूछा।

"बुरी तरह भन्ना रहा है और सीसे की भांति भारी हो गया है... सोचता हूं, पानी से तर कर लू।"

"किसलिये? सिर नही, अपना अन्तर तर करो। उसमे जल्दी ठीक हो जाओगे," चेल्काश ने बोतल बढ़ाते हुए कहा।

"भाई वाह, भगवान भला करे! ."

गटगट की आवाज़ सुनायी दी।

"ऐ, टूट पड़े बोतल पर, बस करो!" चेल्काश ने उसे रोका।

नाव फिर आगे बढ़ चली – अन्य जहाज़ों के बीच से, बिना शब्द किये और तेज़ी से अपना रास्ता बनाती हुई... अनायास ही, सब को पीछे छोड़, वह आगे निकल आई। शक्तिशाली और सीमाहीन सागर दूर, काले-नीले क्षितिज तक उसके सामने फैला था। वहां, क्षितिज पर, बादलों के पहाड़ के पहाड़ लहरों की भांति उठ और बढ़ रहे थे – कुछ भूरे और बैगनी, जिनके किनारों पर रूई के गालों जैसी पीले रंग की गोट लगी हुई थी, कुछ समुद्र के पानी के हरे रंग जैसे और कुछ सीसे जैसे रंग के उदास बादल जो डरावनी और भारी परछाइयां डाल रहे थे। बादल धीरे-धीरे आकाश में बढ रहे थे। कभी वे एक दूसरे में विलीन हो जाते, कभी होड़ करते हुए दौड़ने लगते, उनके रूप और रग का विलय हो जाता, वे एक दूसरे को हड़प जाते और फिर से नये रूपो मे प्रकट होते – धीर-गम्भीर और बड़ी भव्यता के साथ... इन प्राणहीन पिंडों की धीमी गति एक अजीब से आतंक का संचार करती। ऐसा मालूम होता जैसे वे अनगिनत संख्या में वहां मौजूद हों और इसी प्रकार अनन्त काल तक उठकर आकाश में रेंगते रहेंगे, इस दुर्भावना से प्रेरित होकर कि आकाश अपनी असंख्य सुनहरी आंखों, जीवित और स्वप्निल ज्योति से टिमटिमाते हुए बहुरंगी सितारों के साथ, जो लोगों के हृदयों में ऊंची आकांक्षाओं का संचार करते है और जिनके लिये उनकी स्वच्छ चमक ही एकमात्र बहुमूल्य सम्बल होती है, कभी भी ऊंघते सागर के ऊपर न चमक पाये।

"सागर अद्भुत है न?" चेल्काश ने पूछा।

"है तो, लेकिन मेरे हृदय में यह भय का संचार करता है," अपने डांड़ों को पूरा ज़ोर लगाकर और समगति से चलाते हुए गाव्रीला ने कहा। जब डांड़ पानी से टकराते तो उसमें एक हल्की-सी गूंज, छनक और छपछपाहट पैदा होती और नीली फ़ास्फ़ोरसी चमक की एक गोट भी उसमें लहराने लगती।

"भय का संचार करता है? तुम भी निरे बुद्धू हो!.." चेल्काश मज़ाक़िया ढंग से बुदबुदाया।

वह – एक चोर – समुद्र को प्यार करता था। उसका प्राणवान संवेदनशील स्वभाव, जो हमेशा नये अनुभवों के लिये अकुलाता रहता था, अंधकार मे डूबे उसके विस्तारों को – उन्मुक्त, सशक्त और सीमाहीन विस्तारों को – देखते कभी नही अघाता था। तो जिस चीज़ को वह इतना प्यार करता था, उसके सौन्दर्य के प्रति उदासीन उछाह का यह प्रदर्शन उसे अच्छा नहीं लगा। नाव के पिछले भाग में बैठा वह चालक-पहिये से पानी को काट रहा था और शान्त भाव से सामने की ओर एकटक देख रहा था। उसका हृदय इस समय एक ही इच्छा से भरा था कि सागर की इस मख़मली सतह पर अनन्त काल तक वह इसी प्रकार बढ़ता रहे।

सागर उसमें सदा हार्दिकता की एक प्रशस्त भावना का सचार करता था। यह भावना उसके रोम-रोम में समा जाती और आये दिन के जीवन की कीच को धोकर साफ़ कर देती। उसे यह अच्छा लगता और यहां – लहरों के बीच और खुली हवा में, जहां जीवन सम्बन्धी विचारों का तीखापन तिरोहित हो जाता और ख़ुद जीवन का भी कोई मूल्य न रहता – वह अपने आपको एक अच्छे आदमी के रूप में देखना पसन्द करता था। रात को सोते हुए सागर की सांसों की कोमल और निर्लिप्त ध्वनि पानी की सतह पर धीमे-धीमे प्रवाहित होती है, मानव के हृदय में शान्ति का संचार करती है, उसकी कुत्सित भावनाओं को दूर भगाती है और महान सपनों को जन्म देती है...

"मछली पकड़ने का सामान कहां है?" अचानक गाव्रीला ने पूछा और व्यग्र भाव से नाव के ओनों-कोनों की टोह लेने लगा।

चेल्काश यह सुनकर चौंका।

"सामान? यहां मेरे पास है, नाव के पिछले हिस्से में।"

इस लड़के के सामने झूठ बोलने से उसे दुःख हुआ और साथ ही उसके सवाल से अपने विचारों तथा भावनाओं का ऐसे अचानक भंग हो जाना उसे अच्छा नही लगा। वह झुंझला उठा। अपने गले और हृदय में उसे फिर एक जलन की अनुभूती हुई और उसने कठोर तथा आदेशात्मक आवाज़ में गाव्रीला से कहा—

"सुनो, जहां तुम हो वही जमकर बैठे रहो और अपने काम से काम रखो! डांड चलाने के लिये मैंने तुम्हें रखा है, सो चलाये जाओ। अगर बक-बक करोगे, तो बुरा नतीजा होगा। समझ गये न?.."

क्षण भर के लिये नाव डोली और रुक गई। डांड पानी में झाग पैदा करने लगे। गाव्रीला अपनी जगह पर बेचैनी से हिला-डुला।

"डांड़ चलाओ!"

एक गंदी गाली से हवा कांप उठी। गाव्रीला ने डांडो को उठाया और नाव, मानो डरकर उछली और झटके खाती तथा पानी को छलछलाती हुई तेज़ी से बढ चली।

"ढंग से!.."

चालक-पहिया थामे हुए ही चेल्काश कुछ उठा और उसने अपनी निष्ठुर दृष्टि गाव्रीला के सफ़ेद पड़ गये चेहरे पर जमा दी। आगे की ओर झुका वह इस तरह खडा था जैसे बिल्ली अभी झपट्टा मारनेवाली हो। उसके दांत पीसने तथा भयभीत गाव्रीला के दांतो के बजने की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

"ऐ, वहां कौन चिल्ला रहा है?" समुद्र के विस्तार में से किसी की कड़ी आवाज़ सुनाई दी।

"डांड चला, हरामी पिल्ले! आवाज़ नही कर! चला डांड कमबख्त!.. चला डाड़!.. एक, दो! खबरदार, जो ज़रा भी आवाज़ की तो!.. बोटी-बोटी नोच लूंगा!.." चेल्काश फुफकार उठा।

"मा मरियम.. हे भगवान!.." गाव्रीला बुदबुदाया। वह भय और ज़ोर लगाने के कारण कांप रहा था।

नाव घूम गई और बन्दरगाह की ओर वापिस लौट चली जहां जहाज़ों की रंग-बिरंगी रोशनियों की बदनवार-सी झलक रही थी और उनके मस्तूल स्पष्ट दिखाई दे रहे थे।

"ऐ, उधर कौन चिल्ला रहा है?" वह आवाज़ फिर सुनाई दी। लेकिन अब वह पहले से अधिक दूर थी। चेल्काश का ढारस बंधा।

"तुम ख़ुद ही चिल्ला रहे हो!" उसने पलटकर जवाब दिया। फिर वह गाव्रीला की ओर मुड़ा जो अब भी मां मरियम को याद कर रहा था।

"तुम भाग्यवान हो, लड़के! अगर उन शैतानों ने पीछा किया होता तो तुम्हारा पत्ता कट जाता। समझे? मैं तुम्हें समुद्र में झोंककर मछलियों का कलेवा बना देता!.."

अब, जब चेल्काश शान्ति से और कुछ नर्मी से भी बात कर रहा था तो गाव्रीला ने, जो अभी तक कांप रहा था, उससे विनती की—

"मुझे जाने दो, भगवान के लिये मुझे जाने दो! यही कही उतार दो! ओह-ओह-ओह! मैं बुरा फंसा!.. भगवान के लिये मुझे जाने दो! भला मेरी क्या ज़रूरत हो सकती है तुम्हें? मै यह काम नही कर सकता!.. मैं कभी ऐसे काम में शामिल नही हुआ... यह पहला ही मौक़ा है... हे भगवान! मैं तो सदा के लिये मारा जाऊंगा! तुमने मेरे साथ ऐसा धोखा क्यों किया? यह गुनाह है! आत्मा का ख़ून कर रहे हो!. ओह, यह भी कोई धधा है?"

"धंधा?" चेल्काश ने पूछा, "कैसा धंधा?"

लड़के को इतना आतंकित देखकर तथा इस बात से भी उसे मज़ा आ रहा था कि वह ख़ुद किस हद तक एक भयानक जीव बन सकता है।

"यह बुरा धंधा है, भाई, बुरा धंधा मुझे जाने दो, ख़ुदा के लिये मेरी जान बख़्शो!.. भला मेरी क्या ज़रूरत हो सकती है तुम्हें?.. सुनो, मुझपर एहसान करो, भले आदमी.."

"चुप रहो! अगर मुझे तुम्हारी ज़रूरत न होती तो अपने साथ यहा लाता ही क्यों, समझे? बस, अब अपनी ज़बान बन्द रखो!"

"हे भगवान!" गाव्रीला बुदबुदाया।

"ऐ, यह बुदबुदाना बन्द करो!" चेल्काश ने उसे बीच मे ही टोक दिया।

लेकिन गाव्रीला में अब इतनी सामर्थ्य नही थी कि अपने आपको क़ाबू में रख पाता। वह दबी आवाज़ मे सिसकता, रोता, नाक साफ़ करता और बेचैनी से हिलता-डुलता रहा, मगर पूरे ज़ोर से डांड़ चलाता रहा। नाव तीर की भांति उड़ चली। वे फिर जहाज़ो के काले आकारों के बीच पहुंच गये। पानी की संकरी गलियों मे से मुड़ती और बल

खाती हुई उनकी नाव जहाज़ो के बीच खो गई।

"ऐ, कान खोलकर सुन लो! अगर तुमसे सवाल पूछे जायें तो अपना मुंह बन्द रखना! इसी में तुम्हारी जान की ख़ैर है, समझे?"

"हे भगवान!" गाव्रीला ने ऐसे दृढ़ आदेश के उत्तर में उसास छोड़ी और फिर तीखे स्वर मे कहा – "मेरी क़िस्मत फूट गई!"

"फिर बुदबुदाने लगे?" चेल्काश ने बड़े रोब से फुंकार छोड़ी।

इस फुंकार से गाव्रीला की सिट्टीपिट्टी गुम हो गयी। आमन्न मुसीबत की भयानक आशका से वह सुन्न हो गया। उसने यंत्रवत् डाड़ पानी मे डाले, अपने बदन को पीछे की ओर हटाते हुए डांड़ों को खीचा, उन्हें ऊपर उठाया, फिर पानी मे डाला और टकटकी बांधकर अपनी बक्कल की चप्पलो को देखता रहा।

लहरों की अलसायी छप-छप भय और आतंक का सचार कर रही थी। वे घाट-क्षेत्र में पहुंच गये थे पत्थर की दीवार के उधर से आदमियों के बोलने की, गाने और मीटी बजाने और लहरों के टकराने-छितराने की आवाज़ें आ रही थी।

"रुको!" चेल्काश फुसफुसाया, "डांडो को छोड दो! दीवार के सहारे हाथों से धकेलो! आवाज न करो, कमबख्त!"

फिसलने पत्थरों का हाथों से सहारा लेते हुए गाव्रीला नाव को दीवार के साथ-साथ ले चला। नाव फिसलने पत्थरों पर आवाज़ किये बिना फिसल रही थी।

"ठहरो! डाड़ मुझे दे दो! इधर दो! तुम्हारा पासपोर्ट कहा है? थैले में? थैला भी दे दो! जल्दी! यह इसलिये कि कही तुम तिडी न हो जाओ . अब कोई डर नही। डाडो के बिना तुम भाग सकते हो, लेकिन पासपोर्ट के बिना नही। बस, यही रहना! और देखो, अगर कुछ भी ज़बान से उगला तो बच नही पाओगे – समुद्र तल से भी मैं तुम्हें पकड़ लाऊंगा!. "

फिर किसी चीज़ पर हाथ टिकाकर वह दीवार पर चढा और उसके दूसरी ओर गायब हो गया।

गाव्रीला चौंका... पलक झपकते मे ही यह सब हो गया। उसने महसूस किया कि वह घबराहट और भय, जो वह उस मूंछोंवाले दुबले-पतले चोर की उपस्थिति में अनुभव कर रहा था, दूर हो रहा है... अब भागना चाहिये!.. उसने खुलकर सांस ली और अपने अग़ल-

बग़ल देखा। बाईं ओर एक मस्तूलहीन जहाज़ की काली काया उठती-उभरती जा रही थी। ऐसा मालूम होता था जैसे वह कोई भीमाकार ताबूत हो – सूना और परित्यक्त... हर बार, जब भी लहरें उससे. टकराती, उसमें से एक खोखली-सी आवाज़ निकलती और लगता, जैसे वह कराह रहा हो। दाहिनी ओर बांध की काई जमी दीवार थी जो एक ठंडे, भारी-भरकम अजगर की भांति सागर की सतह पर फैली थी। उसके पीछे अन्य काले ढांचे तैर रहे थे और आगे की ओर, दीवार और उस ताबूत के बीच खुली जगह में से, सूने, ख़ामोश सागर की झलक मिल रही थी। ऊपर काले बादल घिरे थे। बोझिल और भीमाकार, वे आकाश में धीमे-धीमे बढ़ रहे थे, अधकार में भय और आतंक का संचार करते हुए। ऐसा मालूम होता था जैसे वे अपने भारी बोझ से मानव को कुचल डालेगे। हर चीज़ भयानक, काली और डरावनी मालूम होती थी। गाव्रीला भय से काप उठा। और यह भय चेल्काश के भय से कही ज़्यादा भयानक था। उसने उसके सीने को जकड़ लिया और इतना दबोचा कि उसकी समूची प्रतिरोध-शक्ति निचोड़ ली और वह जहा का तहा जमा-सा रह गया...

हर चीज़ निस्तब्धता में डूबी थी। समुद्र की उसांसो के सिवा और कोई आवाज़ सुनाई नही पड रही थी। बादल अब भी धीमे-धीमे और उदासी में डूबे-से रेंग रहे थे और वे समुद्र से इतनी बड़ी संख्या में उठ रहे थे कि ख़ुद आकाश भी एक समुद्र की भांति मालूम होता था – मानो नीचे के चिकने और सोते हुए सागर के ऊपर एक उमड़ते-घुमड़ते सागर को उलटकर रख दिया गया हो। बादल लहरो की भांति मालूम होते थे जिनकी झागदार शिराएं नीचे धरती की ओर दौड रही थी, फिर वे उन गह्वरो जैसे लगते थे, जिनमें से हवा इन लहरों को खींच लाई थी और वे प्रतीत होते थे उन नवजात लहरों जैसे, जिन्होने अभी उबलना-उफनना और अत्यन्त विक्षुब्ध होकर हरा झाग उगलना शुरू नही किया था।

इस विषादपूर्ण निस्तब्धता और सौन्दर्य से गाव्रीला इतना अभिभूत और आतंकित हो उठा कि अपने मालिक के वापिस लौटने की चिन्ता ने उसे व्यग्र बना दिया। अगर वह नहीं लौटा तो?.. समय के पांव में जैसे बेड़ियां पड़ गई थीं, वह बहुत ही धीरे-धीरे घिसट रहा था, आकाश में बादलों की गति से भी अधिक धीरे... प्रतीक्षा की घड़ियों

के साथ-साथ निस्तब्धता भी अधिक आतंकपूर्ण होती जा रही थी... आख़िर बांध की दीवार के दूसरी ओर से छपछपाने, सरसराने और किसी के फुसफुसाने की आवाज़ सुनाई दी। गाव्रीला को लगा जैसे अगले क्षण उसकी जान ही निकल जायेगी....

"अरे, क्या ऊंघ रहे हो? यह लो!.. सावधानी से!." चेल्काश की दबी हुई आवाज़ सुनाई दी।

दीवार के ऊपर से कोई भारी और चौरस-सी चीज़ नीचे लटक आई। गाव्रीला ने उसे नाव में रख लिया। इसके बाद वैसा ही एक दूसरा बंडल आया। फिर चेल्काश की दुबली-पतली आकृति नीचे उतर आई। डांड़ दिखाई दिये और गाव्रीला का थैला उसके पांवों के पास जा गिरा। और चेल्काश, हांफता हुआ, नाव के पिछले हिस्से में अपनी जगह पर जा बैठा।

गाव्रीला के चेहरे पर प्रसन्नतापूर्ण, किन्तु आशंकित मुस्कान दौड़ गई।

"थक गये?" उसने पूछा।

"थोडा-सा! हां तो, अब अपने डांड़ो को संभालो! पूरी ताक़त से ले चलो!. अच्छी मज़दूरी पाओगे! आधा काम तो पूरा हो गया। अब इतना और करना है कि उन हरामखोरो को धता बताते हुए तेज़ी से निकल चलो–फिर अपना हिस्सा लेकर अपनी माश्का के साथ मौज करना। तुम्हारी माश्का तो है न?"

"न-ही!"

गाव्रीला अपनी पूरी शक्ति से नाव खेने में जुटा था। उसके फेफड़े धौकनी की भांति उठ-गिर रहे थे और उसकी बांहें इस्पात का स्प्रिंग बनी हुई थी। पानी नाव के नीचे सनसना रहा था और वह नीला और चमकदार फ़ीता अब अधिक चौड़ा बनकर नाव के पीछे लहरा रहा था। गाव्रीला पसीने से तर था, लेकिन उसने डाड़ो को ढीला नही पड़ने दिया। उस रात को भारी भय उसे दो बार जकड़ चुका था और अब तीसरी बार जकड़े जाने की उसकी ज़रा भी इच्छा नही थी। उसकी एक ही इच्छा थी–जैसे भी हो, इस जंजाल से जल्दी से जल्दी छुटकारा मिले, काम को ख़त्म कर वह धरती पर पांव रखे और जीते जी तथा जेल की हवा खाये बिना इस आदमी के चंगुल से छूटकर निकल भागे। उसने निश्चय किया कि उसके सामने अब

वह अपना मुंह नहीं खोलेगा, किसी भी रूप में उसका विरोध नहीं करेगा, जो कुछ भी आदेश देगा, उसे मानेगा, और सब के बाद अगर वह सही-सलामत यहां से निकल सका तो अगले ही दिन चमत्कारें की खान संत निकोलस का जाप करेगा। वह इतना अभिभूत हो उठा कि जाप के शब्द उसके होंठों पर आने को कसमसाने लगे। लेकिन उसने उन्हें प्रकट नही होने दिया और इंजन की भांति हांफते हुए कनखियों से चुपचाप चेल्काश की ओर देखा।

लम्बा और दुबला-पतला चेल्काश आगे की ओर झुका हुआ बैठा था और कही उड़ने के लिये तैयार पक्षी की भांति लग रहा था। उसकी बाज़ जैसी आंखें सामने फैले अंधकार को बीध रही थी, उसकी हुकदार नाक वायु की गंध ले रही थी। उसका एक हाथ चालक चक्र को कसकर थामे था और दूसरे से वह मूंछों को ऐंठ रहा था जो उस समय फरफराने लगती थी, जब मुस्कान में उसके पतले होंठ टेढे होते थे। चेल्काश प्रसन्न था – अपनी इस मुहिम से, खुद अपने आप और इस युवक से, जिसे उसने आतंकित किया था और अपना गुलाम बना लिया था। जब चेल्काश ने देखा कि गाव्रीला जी-जान से डांड चला रहा है, तो उसका हृदय उसके लिये तरस से भर गया। उसका मन हुआ कि उसे बढावा देने के लिये कुछ कहे।

"अरे भाई!" कुछ मुस्कराते हुए उसने धीमे से कहा, "तुम बहुत डर गये थे क्या?"

"कोई बात न-ही! . " गाव्रीला ने उसास छोडी और कांखा।

"अब इतने ज़ोर से डांड नही चलाओ। खतरा पार हो गया। केवल एक स्थल और पार करना है। कुछ सुस्ता लो . . "

गाव्रीला ने चुपचाप डांड चलाना बन्द कर दिया, पसीने से तर चेहरे को आस्तीन से पोंछा और डांडों को फिर से पानी में डाल दिया।

"धीरे-धीरे चलाओ। इस तरह कि पानी आवाज़ पैदा न करे। एक फाटक है जिसे पार करना है। धीमे, धीमे ... यहा के लोग बहुत कठोर है ... वे गोली भी चला दे सकते है। खोपड़ी बिंध जाती है और आदमी आह भी नही कर पाता।"

नाव अब लगभग किसी तरह की आवाज़ पैदा किये बिना पानी पर फिसल रही थी। केवल डांड़ों से चूनेवाली नीली बूंदों से सागर में पैदा होनेवाली नीली जगमग से ही उसकी गति का आभास होता

था। रात का अंधेरा और भी अधिक घना तथा सन्नाटा और भी अधिक गहरा होता जा रहा था। आकाश अब उमड़ते-घुमड़ते सागर की भांति नही मालूम होता था, बादलों ने फैलकर एक भारी वितान का रूप धारण कर लिया था जो पानी के ऊपर बहुत कम ऊचाई पर और एकदम थिर लटका हुआ था। समुद्र और अधिक थिर तथा काला हो गया था। उसकी गर्म, लोनी गंध और भी अधिक तेज़ थी और अब वह उतना सीमाहीन नही मालूम होता था।

"काश कि बारिश होने लगे!" चेल्काश बुदबुदाया, "तब तो हम मानो पर्दे के पीछे से निकल जायेगे।"

नाव के दाई और बाई ओर पानी की काली सतह पर भारी-भरकम आकार उभर आये। ये बजरे थे – निश्चल, डरावने और काले। उनमे से एक पर एक रोशनी हिलती-डुलती दिखाई दे रही थी – कोई लालटेन लिये उसपर चल रहा था। इन बजरो के पहलुओ को सहलाता हुआ सागर मानो उनमे धीरे-धीरे कोई विनती करता प्रतीत होता था और वे रूखी तथा खोखली आवाज़ों में ऐसे जवाब देते लगते थे, मानो सागर की विनती उन्हें मंजूर न हो।

"गार्ड!.." मुश्किल से सुनाई पड़नेवाली आवाज़ में चेल्काश ने कहा।

जब से उसने गाव्रीला से नाव को धीरे-धीरे खेने के लिये कहा था, तभी से गाव्रीला के हृदय में फिर से आशंकापूर्ण तनाव पैदा हो गया था। वह अंधकार मे आगे को झुका। उसे ऐसा अनुभव हुआ मानो वह फैल रहा है – उसकी तनी हुई हड्डियां और नसें दर्द से खिंची जा रही थी, एक ही ख्याल से जकड़ा हुआ उसका सिर दर्द कर रहा था, उसकी पीठ की चमड़ी तड़क रही थी और उसके पांवों में छोटी-छोटी, तेज़ तथा ठंडी सुइयां-सी चुभ रही थी। अंधेरे में ताकते-ताकते उसकी आंखे ऐसे टीसने लगी थी कि लगता था जैसे वे फट जायेंगी। उसे आशंका थी कि किसी भी क्षण अधेरे में से कोई प्रकट होगा और चिल्लाकर कहेगा – "ठहरो, चोरो!"

चेल्काश के मुंह से "गार्ड" शब्द सुनकर गाव्रीला कांप उठा। उसके मस्तिष्क में एक तीखा और भस्म करता विचार कौंध गया और उसने उसके तने स्नायुओं को झनझना दिया। उसने चाहा कि चिल्लाये, किसी को मदद के लिये पुकारे। उसने अपना मुंह तक खोल लिया,

ज़रा उठा, छाती फुलायी और उसमें बहुत-सी हवा भर ली तथा मुंह खोला। मगर फिर अचानक ही भय से आतंकित होकर, जिसने चाबुक की तरह उस पर चोट की, उसने अपनी आंखें बन्द कर ली और अपनी जगह से लुढ़ककर नीचे जा गिरा।

... दूर क्षितिज तक फैले समुद्र के उस काले अंधकार में से प्रकाश की एक नीली तलवार प्रकट हुई। वह ऊपर उठी और रात के अंधकार को चीरकर आकाश के बादलों को काटती हुई एक चौड़े नीले फ़ीते की भांति समुद्र के वक्ष पर आकर टिक गई। और उसमें और प्रकाश के उस फ़ीते में अब तक अदृश्य जहाज़ अंधकार में से निकल आये – काले और मूक, रात के अंधेरे की धुंधली चादर ओढ़े हुए। ऐसे मालूम होता था जैसे ये जहाज़ चिरकाल से समुद्र की अतल गहराइयों में बन्द थे, जहां तूफ़ान की शक्तियों ने उन्हें पटक दिया था और अब – समुद्र में से निकली प्रकाश की इस तलवार के इशारे पर – वे उस कैद से निकालकर बाहर लाये गये है ताकि आकाश और पानी की सतह से ऊपर की हर चीज़ को देख मकें... उनके मस्तूलो मे लिपटी रस्सियां उन ममुद्री लताओं-सी मालूम होती थी जिन्होंने ममुद्र की अतल गहराइ-यों में भारी-भरकम काले जहाज़ों को अपने जाल में जकड़ रखा था और जो अब उनके साथ ही साथ लिपटी हुई ऊपर उभर आई थी। इसके बाद वह नीली तलवार, भयावह और चमचमाती, फिर समुद्र के वक्ष पर से उठी, उसने रात के अंधकार को फिर मे चीरा और फिर समुद्र के वक्ष पर आकर टिक गई – इस बार दूसरी दिशा में। अब तक अदृश्य जहाज़ों के आकार फिर उसकी रोशनी मे उजागर हो उठे।

चेल्काश की नाव रुक गई और पानी की सतह पर डोलने लगी, मानो वह सोच रही हो कि अब क्या करे। गाव्रीला नाव के तल मे पड़ा था। अपना चेहरा उसने हाथों मे ढक रखा था और चेल्काश उसे ठोकर मारता हुआ बेहद गुस्मे से, मगर धीमी आवाज़ मे कह रहा था –

"वह चुंगीवालो का क्रूज़र है, बेवकूफ़! और वह उसकी सर्चलाइट है!.. उठो, उल्लु! किमी क्षण हम पर भी उनकी रोशनी पड़ सकती है!.. तुम मुझे, और साथ ही अपने आपको भी बरबाद करके छोड़ोगे! उठो!.."

कमर पर एक खासी करारी ठोकर लगने से गाव्रीला सकपकाकर खड़ा हो गया। उसकी आंखें डर के मारे अब भी बन्द थी। वह बेंच पर बैठ गया। टटोलकर उसने डांडों को पकड़ा और नाव खेने लगा।

"धीमे! जान निकाल लूंगा! धीमे! तुम पर शैतान की मार, घनचक्कर!.. आखिर तुम्हारी जान क्यों निकल गयी है? सूअर का बच्चा!.. क्या कभी लालटेन नही देखी? धीरे-धीरे डांड़ चला, कम-बख्त!.. वे चोरी से माल लानेवालों की खोज में हैं। हमें नही पकड़ सकते – वे बहुत दूर है। डरो नही, हमें नही पकड़ सकते। हम अब ..." विजय के भाव से चेल्काश ने इधर-उधर देखा, "खतरे से बाहर है! छी.. बहुत क़िस्मतवाले हो तुम, मिट्टी के माधो!"

गाव्रीला चुपचाप नाव खेता रहा और हांफता हुआ प्रकाश की उस तलवार की ओर कनखियो से देखता रहा जो बराबर उठ और गिर रही थी। चेल्काश ने कहा था कि यह एक लालटेन मात्र है, लेकिन उसे विश्वास नही हुआ था। यह सर्द नीली रोशनी, जो अंधेरे को चीर डालती थी और समुद्र को रुपहली आभा से जगमगा देती थी, कुछ रहस्यमयी थी और गाव्रीला का हृदय एक बार फिर कचोटते भय से जकड़ गया। वह यंत्रवत् डांड़ चला रहा था और उसकी एक-एक रग इस आशंका से तनी हुई थी कि कही ऊपर से कोई न कोई वज्रपात होकर रहेगा। अब वह कुछ भी नही चाहता था। वह एकदम रीता और भावनाशून्य हो गया था। इस रात की विह्वलता ने उसमें जो कुछ भी मानवीय था, वह सब निचोड़ लिया था।

लेकिन चेल्काश प्रसन्न था। उसके स्नायु, जो ऐसे तनावों के अभ्यस्त थे, शान्त हो चुके थे। उसकी मूछें खुशी से थिरक रही थी और उसकी आंखें चमक रही थी। वह बहुत मजे मे था, दातों के भीतर से सीटी बजा रहा था, समुद्र की नम हवा में खुलकर सांस ले रहा था, चारो ओर नज़र दौडा रहा था और जब गाव्रीला के चेहरे पर उसकी नजर टिकती, तो वह खुशमिज़ाजी से मुस्करा देता।

हवा बहने लगी। समुद्र को उसने जगा दिया और छोटी-छोटी लहरियां उसकी सतह पर नाचने लगी। बादल अधिक पतले और पारदर्शी हो गये, लेकिन आकाश अब भी उनसे ढका हुआ था। हवा के हल्के झोंके, इधर से उधर, सागर के वक्ष पर किलोल कर

रहे थे। इसके बावजूद बादल निश्चल थे – जैसे नीरस और ऊबभरे विचारो में गहरे डूबे हुए हों।

"अरे, भाई, अब तो होश में आओ! तुम तो ऐसे बैठे हो जैसे किसी ने तुम्हारी रूह ही निकाल ली हो और हड्डियों का ढांचा ही बाक़ी रह गया हो। अब तो क़िस्सा ख़त्म हो चुका है। सुना!.."

मानवीय आवाज़ सुनकर – भले ही वह चेल्काश की थी – गाव्रीला को ख़ुशी हुई।

"मैं सुन रहा हूं," वह बुदबुदाया।

"तो सुनते जाओ! बड़े कमज़ोर दिल हो... लो, तुम मेरी जगह बैठो और मैं डांड़ चलाता हूं। शायद थक गये हो!"

गाव्रीला यंत्रवत् उठा और जगह की अदला-बदली कर ली। चेल्काश ने जगह बदलते हुए लड़के पर नज़र डाली और यह देखा कि वह कापती हुई टागों पर लड़खड़ा रहा है, तो उसे उसपर और भी अधिक तरस आया। उसने उसके कंधे को थपथपाते हुए कहा –

"अरे, ऐसे डरो नही! अच्छी कमाई की है तुमने। तुम्हे अच्छा इनाम मिलेगा। पच्चीस रूबल पाना चाहोगे?"

"मुझे कुछ नही चाहिये। बस, तट पर पहुंच जाऊं."

चेल्काश ने हाथ झटका, थूका और वह अपनी लम्बी बांहों मे डांड़ों को ख़ूब पीछे तक खीचते हुए नाव खेने लगा।

समुद्र अब पूर्णतया जाग गया था। वह छोटी-छोटी लहरिया बनाने, झाग की गोटो से उन्हें सजाने, उन्हें एक दूसरी के पीछे दौडाने और आपम में टकराने का खेल खेल रहा था। झाग उसांसें भरता और सिसकारिया लेता हुआ घुल जाता था। समूचे वातावरण में संगीतमयी ध्वनियां गूज रही थी। ऐसी प्रतीत होता था मानो अंधकार सजीव हो उठा हो।

"हां तो अब," चेल्काश ने कहा, "तुम अपने गाव लौट जाओगे, शादी करके अपना घर बनाओगे, ज़मीन जोतोगे, अनाज उपजाओगे, तुम्हारी बीवी बच्चे पैदा करेगी, रोज़ी-रोटी की फ़िक्र में घुलोगे और जीवन भर ऐसे ही खटते रहोगे... तो क्या ख़्याल है? बहुत मज़ा मिलेगा तुम्हें इसमें?"

"मज़े की बात ही क्या हो सकती है!" गाव्रीला ने धीमी आवाज़ में कुछ और कांपते हुए कहा।

हवा ने बादलों को छितराकर उनमें जहां-तहां दरारें डाल दी थी। उनके बीच से नीले आकाश के टुकड़े – जिनमें एक या दो तारे जड़े थे – नज़र आ रहे थे। खिलवाड़ करते सागर में प्रतिबिम्बित होनेवाले ये तारे लहरों पर उछल रहे थे, कभी लुप्त हो जाते और कभी फिर से चमकने लगते।

"नाव को दाहिनी ओर करते जाओ!" चेल्काश ने कहा, "समझ लो कि ठिकाने पर पहुंच गये। काम पूरा हुआ। हा!.. बहुत बड़ा काम! ज़रा सोचो तो, एक ही रात में पांच सौ रूबल!"

"पांच सौ?!" गाव्रीला ने आखे फाड़ते हुए दोहराया। फिर, इन शब्दों से सहमकर, नाव में पडी गांठों को हल्की-सी ठोकर मारकर जल्दी से पूछा, "इनमें क्या चीज़ है?"

"इनमें बहुत क़ीमती चीज़ है। अगर ठीक दामों पर बेची जाये, तो हज़ार से भी अधिक पूंजी हाथ आ जाये। लेकिन मै सौदेबाज़ी के फेर मे नही पड़ूंगा... है न बढ़िया बात?"

"शायद?" अविश्वास के साथ गाव्रीला ने कहा, "अगर मुझे भी.." उसके हृदय में एक टीस-सी उठी और उसे अपने गाव, मनहूस खेत, अपनी मां और अपने से दूर उन सभी सगे-सम्बन्धियो तथा चीज़ो का ख्याल हो आया जिनकी खातिर वह घर छोड़कर काम की खोज मे निकल पड़ा था और जिनकी खातिर उसने इस रात की यत्रणाओ को सहा था। स्मृतियों की एक बाढ़-सी आई और उसमें वह बह चला – पहाडी की ढाल पर बसा उसका छोटा-सा गांव, नीचे तलहटी में, भोज, बेंत, रोवन और रसभरियों के झुरमुटों में छिपी-सी बहती हुई नदी... "ओह, कितना अच्छा होता!" उसने एक उदास-सी सांस भरते हुए कहा।

"अरे, हा! तुम तो फ़ौरन घर का टिकट कटाना चाहोगे .. वहां लड़कियां तुम पर लट्टू हो उठेगी! जिसे चाहोगे, वही तुम्हारी हो जायेगी। तुम अपने लिये एक नया घर बनाओगे, लेकिन हा, घर बनाने के लिये इतनी पूंजी कम है..."

"हां, यह ठीक है... घर बनाने के लिये यह पूजी कम है। उधर लकड़ी बहुत महंगी है।"

"तो पुराने घर की ही मरम्मत कर लेना। और घोड़ा? घोड़ा तो है, न?"

"हां, है तो, लेकिन मरियल-सा और बहुत बूढ़ा।"

"तो तुम्हें एक घोड़ा ख़रीदने की भी ज़रूरत होगी। एक बढ़िया घोड़ा और एक गाय... कुछ भेड़ें... मुर्ग़े-मुर्ग़ियां भी, क्यों?"

"बस, बस रहने दो!.. हे भगवान! मज़ा आ जाता जीने का!"

"हां, भाई! ख़ासा अच्छा जीवन होता तुम्हारा... मुझे भी इन चीज़ों का थोड़ा बहुत अनुभव है। कभी तो मेरा भी अपना एक घोंसला था... मेरा बाप गांव के सबसे धनी लोगों में से था..."

चेल्काश अब नाव को धीरे-धीरे खे रहा था। नाव लहरों के थपेड़े खाकर डोल रही थी जो शरारत से हुमकती हुई उसके पहलुओं से आ-आकर टकरा रही थीं। काली लहरों के बीच, जिनकी चंचलता अब अधिकाधिक बढ़ती जा रही थी, नाव धीरे-धीरे खिसक रही थी। दोनों, हिचकोले खाते और इधर-उधर नज़र डालते हुए अपने-अपने सपनों में खोये थे। चेल्काश ने इस ख़्याल से गाव्रीला को उसके गांव की याद दिलाई थी कि इससे उसके स्नायुओं का तनाव कम हो जायेगा और वह शान्त हो जायेगा। शुरू में उसने मूंछों में मुस्कराते हुए बातें की, लेकिन बाद में अपने साथी से बातें करते और कृषक-जीवन के सुखों का राग अलापते हुए, जिनसे वह ख़ुद कभी का निराश हो चुका था, वह उनके बारे में एकदम भूल गया था। धीरे-धीरे ख़ुद उसकी स्मृति भी ताज़ा हो गई और वह उसके साथ बह चला। अनजाने में ही गांव और उसके मामलों के बारे में लड़के से पूछताछ करने के बजाय वह ख़ुद ही इस विषय का प्रतिपादन करने लगा –

"किसान-जीवन में सबसे मुख्य बात है आज़ादी! आदमी ख़ुद अपना मालिक होता है। उसका एक अपना घर होता है, भले ही वह बहुत मामूली क्यों न हो, मगर वह उसका अपना होता है। उसकी अपनी ज़मीन होती है – बहुत थोड़ी ही सही, लेकिन उसकी अपनी होती है! अपनी ज़मीन का वह राजा होता है!.. उसका अपना व्यक्तित्व होता है... सब के सम्मान का हक़दार होता है... क्यों, ठीक है न?" उसने उत्साह से पूछा।

गाव्रीला कौतुक से उसकी ओर देख रहा था और ख़ुद भी उत्साहित हो उठा था। बात करते-करते वह यह तक भूल गया कि चेल्काश किस कैंड़े का आदमी है। वह उसे अब अपनी ही भांति केवल एक अन्य किसान के रूप में देख रहा था जो पूर्वजों की अनेक पीढ़ियों के ख़ून-पसीने

और बचपन की स्मृतियों के सूत्रो से ज़मीन के साथ मज़बूती से चिपका और बंधा रहता है – एक ऐसा किसान, जिसने ख़ुद अपनी मर्ज़ी से ज़मीन और ज़मीन पर किये जानेवाले श्रम से नाता तोड़ लिया था और जो इसके लिये माक़ूल सज़ा भी पा चुका था।

"सच भाई, तुम्हारी बात बिल्कुल सच है! अब तुम अपने को ही देखो। ज़मीन के बिना तुम क्या हो? भाई, ज़मीन तो मां की भांति है – उसे कोई बहुत समय तक नही भूल सकता।"

चेल्काश होश में आया ... अपने सीने में उसने फिर एक जलन का अनुभव किया जो उसे हमेशा उस समय परेशान करती थी जब कोई, विशेषकर वह व्यक्ति, जो उसकी दृष्टि में एकदम नगण्य हो, उसके गर्व को – दुस्साहसिक शैतान के स्वाभिमान को – चोट पहुंचाता था।

"चालू हो गये! .." उसने ग़ुस्से से फुंकारते हुए कहा, "तुम मेरी बातों को सच समझ बैठे? मुंह धो रखो!"

"तुम भी बड़े अजीब आदमी हो!" गाव्रीला फिर से सहम उठा, "मैं क्या तुम्हारी बात कर रहा था? तुम्हारे जैसे तो और भी बहुत-से हैं! दु:ख के मारों से दुनिया अटी पड़ी है! न घर, न बार, आवारगी में डूबे!"

"यह लो, डांड सभालो!" चेल्काश ने बस इतना ही आदेश दिया और गले तक उमड़ आई गालियो की बाढ को न जाने क्यों, वही का वही रोक लिया।

उन्होंने अब फिर एक दूसरे से अपनी जगह बदली और उस समय, जब चेल्काश नाव के पिछले हिस्से में जाने के लिये गाठों को लांघ रहा था, तो उसने गाव्रीला को एक ऐसा धक्का देने की तीव्र इच्छा अनुभव की कि वह लुढ़कता हुआ समुद्र की अतल गहराइयों में समा जाये।

वे अब मुह बन्द किये बैठे थे। लेकिन अब गाव्रीला की चुप्पी से भी उसे गांव की सांसों की अनुभूति हो रही थी ... चेल्काश अतीत के विचारो में इतना डूबा था कि उसे नाव-चालन का भी ध्यान नही रहा था जिसे लहरों ने फिर समुद्र की ओर मोड़ दिया। लहरो ने जैसे भांप लिया था कि यह नाव अपनी दिशा खो चुकी है और वे उसके साथ मनमाना खिलवाड़ करने में मगन थी। वे उसे उछाल रही थी और नन्ही नीली चिनगारियों के रूप में डांड़ों के इर्द-गिर्द उछल रही थी।

चेल्काश की आंखों के सामने अतीत का — उस सुदूर अतीत का चलचित्र घूम रहा था, जिसे ग्यारह साल की आवारगी की खाई ने वर्तमान से अलग कर दिया था। उसका अपना बचपन, उसका गांव, उसकी मां — लाल गालों और सदय भूरी आंखोंवाली गदरायी नारी, और उसका पिता — लाल दाढ़ी और कठोर चेहरेवाला भीम — सभी कुछ उसकी आंखों के सामने घूम गया। वह दुल्हा बना, दुलहन आई — काली आंखोंवाली गुदगुदी अनफ़ीसा, नर्म और ख़ुशमिज़ाज, पीठ पर बालों की लम्बी चोटी लहराती हुई। फिर से उसने अपने को देखा — गार्डों की सेना के एक ख़ूबसूरत गार्ड सिपाही के रूप में। फिर पिता का चेहरा दिखाई दिया जिनके बाल अब सफ़ेद हो गये थे और कंधे श्रम के बोझ से झुक गये थे। और मां, जो अब झुर्रियों का पिंड बन गई थी और जिसकी दोहरी कमर ज़मीन छूती थी। और वह दृश्य, जब वह सैनिक सेवा पूरी करके घर लौटा था और गांववालों ने उसका स्वागत किया था। उसके पिता, जो अपने इस गलमुच्छोंवाले स्वस्थ और सुन्दर सैनिक बेटे को देख गर्व से फूल उठे थे — सभी कुछ उसकी आंखों के सामने घूम गया . . स्मृतियां, वे तो भाग्यहीनो की ऐसी टीसें है जो अतीत के पत्थरों तक को सजीव कर देती है और बीते जीवन के कटुतम प्यालों मे भी शहद की एकाध बूंद घोल देती हैं .

चेल्काश को ऐसे मालूम होता था जैसे कि वह गांव की सुहानी हवा में तैर रहा हो। उसकी मां के कोमल शब्द, उसके असली किसान-पिता की धीर-गम्भीर बातें और अन्य कितनी ही आवाज़ें, जिन्हें वह भूला हुआ था, उसे सुनाई दे रही थीं। धरती की मधुर गध से उसके नथुने फरक रहे थे। धरती की यह गंध तब उठती थी, जब बर्फ़ पिघलती थी, जब उसमें नया-नया हल चलता था, जब वह हरी-हरी कोंपलों का बाना धारण करती थी... वह अपने आपको एकदम एकाकी, उखड़ा हुआ और जीवन के उस ढर्रे से सदा के लिये विच्छिन्न अनुभव कर रहा था जिस ढर्रे में पैदा हुआ रक्त उसकी रगों में दौड़ रहा था।

"ऐ, हमारी यह नाव किधर जा रही है ?" गाव्रीला सहसा चिल्लाया।

चेल्काश चौंका। शिकारी पक्षी की भांति सतर्क दृष्टि से उसने अपने चारों ओर नज़र डाली।

"अरे, यह हम कहां निकल आये ? जोर से डांड़ चलाओ ..."

"ख़्यालों में खो गये थे क्या ?" गाव्रीला ने मुस्कराते हुए पूछा।

"थक गया ..."

"अब तो इनकी बदौलत पकड़े जाने का ख़तरा नही ?" गांठों को हल्की-सी ठोकर मारते हुए गाव्रीला ने पूछा।

"नहीं ... अब कोई डर नही। मैं अभी इन्हें ठिकाने लगाकर पैसा वसूल कर लूंगा।"

"पांच सौ ?"

"इससे कम नहीं।"

"इतनी बडी रक़म ! काश, यह मुझ, क़िस्मत के मारे के हाथ लगती ! वह रंग जमता कि ..."

"देहाती का रंग न ?"

"और नही तो क्या ? मैं अभी ..."

और गाव्रीला ने अपनी कल्पना के पख फैलाये। चेल्काश चुपचाप बैठा रहा। उसकी मूछें झुक आई थी, लहरों ने उछलकर उसका दाहिना बाज़ू तर कर दिया था, उसकी आखें धंस गयी थी और उनमें अब कोई चमक नज़र नही आ रही थी। उसका समूचा शिकारीपन ग़ायब हो गया था, अपमानजनक अन्तर-मन्थन ने उसे निचोड़ लिया था जो उसकी गंदी क़मीज़ की सिलवटों तक के भीतर से झांकता दिखाई पड़ रहा था।

नाव को तेज़ी से मोड़कर वह उसे एक काले आकार की दिशा में ले चला जो पानी में से उभर रहा था।

आकाश अब फिर बादलों से घिर गया था। महीन गर्म बौछार पड़ने लगी थी। लहरो से टकराती हुई बूंदें टपाटप की नन्ही आह्लादपूर्ण ध्वनि पैदा कर रही थी।

"रोको ! सावधानी से !" चेल्काश ने आदेश दिया।

नाव का सिरा बजरे के पहलू से टकराया।

"सब लम्बी ताने है क्या, हरामी कही के !" चेल्काश गुर्राया और नाव के कुन्दे को जहाज़ के पहलू से लटकते रस्से में फंसाने लगा। "ऐ, सीढ़ी लटकाओ ! .. यह कमबख़्त बारिश भी जैसे इसी घड़ी का इन्तज़ार कर रही थी ! ऐ, घोंघा बसन्तो, बहरे पत्थरो !"

"चेल्काश ?" ऊपर से कोई बर्राया।

"सीढ़ी लटकाओ !"

"कालीमेरा, सेल्काश!"

"सीढ़ी लटकाओ, कमबख़्तो!" चेल्काश गरजा।

"बाप रे, आज पारा ख़ूब चढ़ा हुआ है, यह लो!"

"गाव्रीला, ऊपर चढ़ो!" चेल्काश ने अपने साथी से कहा।

कुछ क्षणों में वे डेक पर पहुंच गये जहां तीन काले दढ़ियल व्यग्रता के साथ किसी अजीब भाषा में एक दूसरे से बातें कर रहे थे और जहाज़ पर से नीचे चेल्काश की नाव में झांक रहे थे। लबादे में लिपटा एक चौथा आदमी बढ़कर चेल्काश के पास पहुंचा, कुछ कहे बिना उसने उससे हाथ मिलाया और फिर गाव्रीला की ओर सन्देह की दृष्टि से देखा।

"रुपया सुबह तैयार रखना," चेल्काश ने संक्षेप में कहा। "मैं अब एक झपकी लेना चाहता हूं। चलो, गाव्रीला, चलें! भूख लगी है क्या?"

"सोना चाहता हूं..." गाव्रीला ने कहा। पांच ही मिनट बाद वह ज़ोरों से खर्राटे लेने लगा और चेल्काश उसके पास बैठा किसी का बूट अपने पांव में पहनकर नापने की कोशिश करने लगा। रह-रहकर वह एक बग़ल थूकता और किसी सोच में डूब अपने दांतों के बीच से सीटी बजाता। फिर वह भी गाव्रीला के बराबर में लेट गया, अपने हाथों को उसने सिर के नीचे लगा लिया और अपनी मूंछों पर ताव देता रहा।

जहाज़ लहरों के साथ डोल रहा था। एक तख़्ता रोनी-सी आवाज़ में चरचरा उठा। बारिश की बूंदें डेक की सतह और लहरें जहाज़ के पहलुओं से टकरा रही थी... सभी कुछ भारी उदासी में डूबा था और ऐसी लोरी की याद दिलाता था जिसे कोई मां अपने बच्चे के लिये सुखी जीवन की ज़रा भी आशा न देखते हुए निराश हृदय से गाती है...

चेल्काश की बत्तीसी झलकी, उसने सिर थोड़ा उठाया, अग़ल-बग़ल एक नज़र डाली, मन ही मन कुछ बुदबुदाया और फिर लेट गया... उसने अपनी टांगें चौड़ी फैला ली और अब वह बहुत बड़ी कैंची जैसा लगता था।

३

वह सबसे पहले जागा। चौकन्नी दृष्टि से उसने इधर-उधर देखा, तुरंत आश्वस्त हो गया, फिर उसने गाव्रीला पर नज़र डाली जो मज़े से खर्राटे भर रहा था। उसके स्वस्थ, सांवले, बच्चों जैसे चेहरे का रोम रोम मुस्करा रहा था। चेल्काश ने एक उसांस ली और संकरी रस्सेदार सीढ़ी से ऊपर चढ़ गया। सुरमई रंग के आकाश का एक टुकड़ा डेक के झरोखे में से झांक रहा था। उजाला फैल चला था, लेकिन दिन उदासी और ऊब में डूबा था, जैसा कि शरद में अक्सर होता है।

चेल्काश दो-एक घंटे बाद लौटा। उसका चेहरा लाल दमक रहा था और मूंछें ऊपर को ऐंठी हुई थी। पावों में खूब मज़बूत ऊंचे बूट कसे थे। बदन पर चमड़े की जाकेट और बिर्रजिस डाटे वह एक शिकारी जैसा लगता था। उसकी यह पोशाक नयी नही, लेकिन मज़बूत थी और उसपर खूब फ़बती थी। इससे उसका बदन भरा हुआ नज़र आता था, हड्डीलापन छिप गया था और उसकी शक्ल से फ़ौजी का सा रोब टपकने लगा था।

"क्या सोते ही रहोगे, कबूतर!.." एक हल्की-सी ठोकर मारते हुए उसने गाव्रीला को जगाया।

गाव्रीला नीद में ही उछलकर खड़ा हो गया और भयभीत आंखों से चेल्काश की ओर देखने लगा। वह उसे पहचान नही सका। चेल्काश खिलखिलाकर हंसा।

"अरे वाह!" आख़िर उसके मुंह से बोल फूटा और एक प्रशस्त मुस्कान के साथ बोला, "तुम तो पूरे नवाब मालूम होते हो!"

"हमारे लिये तो यह बाएं हाथ का खेल है। लेकिन तुम बिल्कुल बुज़दिल हो! कल रात न जाने कितनी बार तुम्हारी जान निकलते निकलते बची?"

"तुम खुद ही सोचो, मैंने तो पहले कभी ऐसे काम में हाथ नही लगाया था! हमेशा के लिये आत्मा पाप की दलदल में फंस सकती थी!"

"बोलो, फिर ऐसे काम पर चलोगे?"

"फिर?.. वैसे तो... बात यह है कि मिलेगा क्या?"

"मान लो, अगर तुम्हें दो चटकदार मिलें तो?"

"मतलब यह कि सौ-सौ रूबल के दो नोट? बुरा नही है... मैं चल सकता हूं..."

"और तुम्हारी आत्मा का क्या होगा?"

"हो सकता कि उसका कुछ न बिगड़े!" बत्तीसी झलकाते हुए गाव्रीला ने कहा।

"कुछ नही बिगड़ेगा तुम्हारी आत्मा का और आदमी बनकर मज़े से अपना बाक़ी जीवन बिता सकोगे।"

चेल्काश प्रसन्नता से खिलखिला उठा।

"ख़ैर! अब मज़ाक़ ख़त्म। चलो, तट पर चलें ."

और वे अब फिर अपनी नाव मे आ गये। चेल्काश चालक-चक्र चला रहा था और गाव्रीला डांड। सिर पर भूरे बादलों का ठोस चंदोवा तना था। समुद्र धुंधला हरा था और मौज में आकर वह नाव के साथ खेल रहा था... उसे लहरों पर उछालता जो अभी छोटी-छोटी ही थी और उसके पहलुओं पर झागो की उजली बौछार करता। सामने, बहुत दूर, पीली रेत की एक पट्टी-सी झिलमिला रही थी और पीछे, झागदार लहरों से कटा-फटा, समुद्र फैला था। पीछे की ओर ही जहाज़ भी थे; दूर बायीं ओर मस्तूलों का एक समूचा जंगल नज़र आ रहा था और इससे भी पीछे, पृष्ठभूमि में नगर की सफ़ेद इमारतें दिखाई पड़ रही थी। वहां मे गड़गड़ाहट की एक अस्पष्ट ध्वनि समुद्र की सतह पर तैरती हुई आ रही थी और लहरों के गर्जन के साथ मिलकर बहुत ही प्रबल संगीत की रचना कर रही थी हर चीज़ धुध की एक पतली-सी चादर में लिपटी थी जिससे वे सभी एक दूसरी से दूर, बहुत दूर, मालूम होती थी...

"ज़रा रात होने दो, तब देखना, यह क्या रंग लाता है!" समुद्र की ओर सिर से इशारा करते हुए चेल्काश ने कहा।

"कौन, तूफ़ान?" लहरों को चीरकर पूरी शक्ति से डाड़ चलाते हुए गाव्रीला ने पूछा। वह हवा द्वारा समुद्र पर उड़ायी जानेवाली फुहारो से सिर से पांव तक भीग चुका था।

"हां!.." चेल्काश ने हामी भरी।

गाव्रीला ने थाह लेनेवाली नज़र से उसे देखा...

"हां तो उन्होंने तुम्हें क्या दिया है?" आख़िर वह पूछ ही बैठा।

चेल्काश के अन्दाज़ से उसने समझ लिया था कि वह अपने आप इस बारे में कुछ बतानेवाला नही है।

"यह देखो!" चेल्काश ने कहा और अपनी जेब मे से कोई चीज़ निकालकर उसकी ओर बढ़ायी।

रंगीन नोटों की इतनी बड़ी गड्डियां देखकर गाव्रीला की आंखें चौंधिया गईं।

"और मैं समझा था कि तुम यो ही गप्प मार रहे हो! कितने हैं?"

"पांच सौ चालीस!"

"मज़ा आ गया!" गाव्रीला फुसफुसाया और ललचाई हुई आंखों से नोटों की गड्डियो को फिर से उसकी जेब मे समाते हुए देखता रहा। "ओह... काश कि मेरे पास इतना धन होता!.." और उसने बड़े दुखी मन से आह भरी।

"अब हम दोनों ख़ूब मौज करेंगे, मित्र!" चेल्काश ने उछाह से कहा, "जी भरकर पियेंगे... फ़िक्र नही करो, तुम्हें तुम्हारा हिस्सा मिल जायेगा. तुम्हें चालीस दूगा! क्यों, ठीक है न? चाहो तो अभी, हाथ के हाथ, ले सकते हो।"

"ठीक है। अगर देना चाहते हो, तो ले सकता हूं!"

गाव्रीला का समूचा बदन प्रत्याशा मे, जो उसकी छाती को ज़ोर से कचोट रही थी, फड़फड़ा रहा था।

"छछूंदर की दुम! 'ले सकता हूं!' मेहरबानी करके ले लो, मेरे भाई! तुम्हारी मिन्नत करता हूं, ले लो! मैं नही जानता कि इतने धन का क्या करूं? कृपा करके कुछ ले लो और मेरा बोझ हल्का करो!"

चेल्काश ने गाव्रीला की ओर कुछ नोट बढ़ा दिये। डांड़ो को छोड़कर उसने उन्हें अपनी कापती हुई उंगलियो से पकड़ा और लालच से अपनी आंखें सिकोड़कर और ज़ोर से अपने अन्दर ऐसे हवा खीचते हुए मानो जलती चीज़ पी रहा हो, क़मीज़ के भीतर खोंस लिया। चेल्काश उसे देख रहा था और उसके होंठो पर उपहासभरी मुस्कान रेंग रही थी। गाव्रीला ने फिर डाड़ो को संभाला और विचलित-सा जल्दी-जल्दी नाव खेने लगा मानो किसी चीज़ से भयभीत हो। उसकी आंखे नीचे झुकी थी। उसके कंधे और कान सिहर रहे थे।

"तुम लालची हो! .. यह बुरी बात है ... लेकिन ... आखिर तो तुम किसान हो न ..." चेल्काश ने सोच में डूबते हुए कहा।

"पैसे से आदमी कुछ भी कर सकता है! .." आकस्मिक उमंग और उत्साह में गाव्रीला के मुंह से निकला और फिर बड़ी तेजी से, और असम्बद्ध रूप में, अपने विचारों के पीछे लपकते और शब्दों को झपटते हुए वह यह बताने लगा कि धन होने पर गांव का जीवन कैसा होता है, और धन न होने पर कैसा। पैसा हो तो सम्मान, आराम, सुख – सब कुछ मिलता है! .

चेल्काश चेहरे को गम्भीर बनाये और किसी विचार से आंखों को सिकोड़े हुए ध्यान से उसकी बात सुनता रहा। कभी-कभी उसके होंठों पर संतोषभरी मुस्कान झलक उठती।

"यह लो, हम किनारे से आ लगे!" गाव्रीला के शब्दों की बाढ़ को उसने काट दिया।

नाव एक लहर की लपेट में आकर रेत में धसक गई थी।

"हां तो, हमारी मंज़िल अब पूरी हुई। नाव को खीचकर काफ़ी दूर ले जाना होगा जिससे लहरें उसे बहा न ले जायें। कुछ लोग इसे ले जायेंगे। और हम विदा लेंगे। नगर से हम कोई आठ किलोमीटर दूर हैं। तुम क्या फिर नगर ही लौट जाओगे?"

चेल्काश का चेहरा एक चंचल और खुशमिज़ाजीभरी मुस्कराहट से चमक रहा था, मानो वह अपने लिये बहुत ही मज़ेदार और गाव्रीला के लिये किसी बहुत ही अप्रत्याशित चीज़ की कल्पना कर रहा हो। हाथ को जेब में खोंसे हुए वह उसमें पड़े नोटो को सरसरा रहा था।

"नहीं ... मैं ... नगर नहीं जा रहा हूं ... मैं ..." गाव्रीला हकलाने लगा, जैसे उसका दम घुट रहा हो।

चेल्काश ने उसकी ओर देखा।

"क्यों, क्या बात है?"

"कुछ नही ..." लेकिन गाव्रीला का चेहरा पहले लाल हुआ और फिर स्याह पड़ गया, वह वही खड़ा-खड़ा पांव बदलता रहा मानो या तो चेल्काश पर टूट पड़ना चाहता हो या अन्य कोई अत्यन्त दुस्सह काम करने के लिये उतावला हो रहा हो।

चेल्काश इस लड़के को इतना विचलित देख परेशान हो उठा। वह इसके अन्त की प्रतीक्षा करने लगा।

गाव्रीला एकाएक इस तरह हंसने लगा जैसे सुबकियां भर रहा हो। उसका सिर झुका था और इसलिये चेल्काश उसके चेहरे के भावों को नहीं देख सका, लेकिन उसने उसके कानों को लाल से सफ़ेद होते देखा।

"जहन्नुम में जाओ!" हाथ हिलाते हुए चेल्काश ने कहा। "तुम मुझसे प्रेम करने लगे हो, क्या? लड़की की तरह खड़े बुड़बुड़ा रहे हो!.. या फिर तुम मुझसे जुदा नही होना चाहते? बोलो, कबूतर की दुम, नहीं तो मैं तुम्हें यहीं छोड़कर चल दूंगा!.."

"तुम चले जाओगे?" गाव्रीला ज़ोर से चीखा।

निर्जन रेतीला तट इस चीख से कांप उठा और समुद्र की लहरों से घुली रेत की पीली लहरों ने जैसे एक उसास भरी। खुद चेल्काश भी सहम गया। एकाएक गाव्रीला चेल्काश की ओर झपटा, उसके पांव पर जा गिरा और उसके घुटनों को अपनी बांहों में भरकर एक झटका दिया। चेल्काश लड़खड़ाया और धम से रेत में बैठ गया। दांत पीसकर उसने कसकर मुट्ठी बंधी अपनी लम्बी बांह हवा में लहराई। लेकिन गाव्रीला की भिनभिनाती फुसफुसाहट और मिन्नतों ने उसके प्रहार को रोक दिया।

"प्यारे! . यह धन मुझे दे दो! भगवान के नाम पर! मुझे दे दो यह धन! तुम उसका क्या करोगे? . देखो न, एक रात में... केवल एक रात में . . और मुझे सालों तक... जाने कितने सालों तक... यह धन मुझे दे दो – मैं तुम्हारे लिये दुआ करूंगा! सारी उम्र दुआ करूगा – तीनों गिरजों में! तुम्हारी आत्मा की मुक्ति के लिये दुआ करूंगा!.. तुम इसे यों ही उड़ा दोगे... जबकि मैं? मै इसे ज़मीन में लगाऊंगा! मुझे दे दो! तुम्हारे लिये यह क्या मानी रखता है?.. कुछ भी तो नही। एक रात, और तुम फिर धनी के धनी! मेरे ऊपर एहसान कर दो! तुम तो अपने को बरबाद कर चुके हो... तुम्हारे आगे तो कुछ भी नही है... और मैं – ओह! मुझे दे दो!"

चेल्काश रेत में हथेलियां टेके बैठा था सहमा-सा, हत्बुद्धि, क्षुब्ध और मौन। उसकी आंखें इस लड़के को, जो उसके घुटनों से अपना सिर सटाये और बेदम होता तथा मिन्नत करता हुआ भिनभिना रहा था, बींध रही थी। आखिर चेल्काश ने उसे धकेलकर पीछे हटाया, उछलकर खड़ा हुआ, अपना हाथ जेब में डाला और नोटों का बंडल निकालकर

गाव्रीला की ओर फेंक दिया।

"यह लो! अब चाटो इन्हें लेकर..." वह चिल्लाया। उसका समूचा बदन कांप रहा था उद्वेग से, तरस से और लालच के इस गुलाम के प्रति घृणा से। उसके सामने सारे नोट फेंककर चेल्काश अपने को बहुत ऊंचा अनुभव कर रहा था।

"मैं तो खुद ही तुम्हें ज़्यादा देने जा रहा था। पिछली रात अपने गांव की याद आने पर मेरा हृदय पिघल गया था... मैंने मन में सोचा: लड़के की मदद करूंगा। लेकिन मैं देख रहा था कि तुम खुद क्या करोगे, हाथ फैलाते हो या नहीं। और तुम... भिखारी!. धन क्या ऐसी चीज़ है जिसके लिये इस तरह जान दी जाये? बेवक़ूफ़! लालची शैतान!.. आत्मसम्मान का नाम तक नही... पांच-पांच कोपेक के लिये अपने आपको बेचने के लिये तैयार!.."

"प्यारे!.. खुदा तुमपर अपनी मेहर की नज़र रखे! अब मैं क्या हूं? अब... मैं धनी हूं!" खुशी से कापते और नोटों को क़मीज़ के नीचे छिपाते हुए गाव्रीला चिल्लाया। "ओह, कितने अच्छे हो तुम!.. मैं कभी नहीं भूलूंगा तुम्हें!.. नही, कभी नही! . अपनी पत्नी और बच्चों से कहूंगा कि वे भी तुम्हारे लिये दुआ करे..."

खुशी के उद्‌गारों को सुन और लालच के इस उभार से विकृत उसके चमकते चेहरे को देखकर चेल्काश ने अनुभव किया कि वह – चोर, पियक्कड़ और आवारा, जिसका अपने पूरे परिवेश से नाता टूट चुका है – कभी भी इतना नीचे नही गिरेगा, कभी भी इस प्रकार, इस हद तक अपना आत्मसम्मान खोकर पैसे के फेर में नही पड़ेगा। नही, वह कभी ऐसा नहीं करेगा, कभी इतना नीचे नही गिरेगा!.. और इस विचार तथा इस भावना ने उसके हृदय को खुद अपनी आज़ादी की चेतना मे सराबोर करके उसे वहीं, समुद्र के उस तट पर गाव्रीला की बग़ल में रोके रखा।

"तुमने मुझे सुख का दान दिया है!" गाव्रीला ने चिल्लाकर कहा और चेल्काश का हाथ अपने हाथ में लेकर उसे अपने चेहरे से सटा लिया।

चेल्काश भेड़िये की भांति अपने दांतों को झलकाता रहा, लेकिन बोला कुछ नही।

"और ज़रा सोचो तो, मैं क्या करने पर उतर आया था!"

गाव्रीला कहता गया, "यहा आते समय, रास्ते में, मैंने सोचा... मन ही मन... मैं इसे – तुम्हें, यानी... तुम्हारे सिर पर... डांड़ से... खटाक! धन निकाल लूंगा... और इसे, यानी तुम्हें फेंक दूंगा... समुद्र में। कौन है इसका नामलेवा? और अगर इसकी लाश उनके हाथ लग भी गई... तो कोई यह खोज करने में सिर नही खपायेगा कि यह किसने किया और कैसे किया? इसके लिये कोई इतनी हाय-तोबा नही मचायेगा!.. किसी को इसकी ज़रूरत नही! कोई इसके लिये परेशान नही होगा!"

"वापिस करो सारे नोट!.." गाव्रीला की गरदन दबोचते हुए चेल्काश गरज उठा।

छिटककर जान छुड़ाने के लिये गाव्रीला ने ज़ोर लगाया – एक बार, दो बार, लेकिन चेल्काश की बांह माप की भांति उसकी गरदन को जकडे थी... चर्र से क़मीज़ फटी और गाव्रीला चारों खाने चित रेत पर जा गिरा। उसकी आखें बाहर निकल आई। उसकी उगलिया जैसे हवा को झपट रही थी और टागें निराशा से छटपटा रही थी। चेल्काश उसके ऊपर खडा था छड़-सा, सीधा-सतर, शिकारी पक्षी के समान। वह हंस रहा था टूटती हुई तीखी हंसी। उसकी बत्तीसी चमक रही थी और उसके पैने, लम्बोतरे चेहरे पर मूंछे आवेग से फड़क रही थीं। उसके समूचे जीवन में पहले कभी किसी ने इतनी क्रूरता से उसके दिल को घायल नही किया था, न कभी उसे इस हद तक गुस्सा आया था।

"क्यों, अब तो सुखी हो न?" वह हसा और फिर, पलटकर, नगर की दिशा में चल दिया। वह पांचेक डग भी न गया होगा कि गाव्रीला, बिल्ली की भांति आगे को झुका, उछलकर खडा हुआ और उसने ज़ोर से बांह घुमाकर एक बड़ा-सा पत्थर फेंका।

"यह लो!.."

चेल्काश कराह उठा, उसने हाथों से सिर थामा, लडखड़ाकर कुछ आगे बढा, गाव्रीला की ओर घूमा और मुंह के बल रेत पर गिर पड़ा। गाव्रीला भय से सुन्न हो गया। चेल्काश की एक टांग हिली, उसने अपना सिर उठाने की कोशिश की और फिर कांपकर, तार की भांति पसर गया। गाव्रीला अब भाग खड़ा हुआ इस अंधेरे शून्य में, जहां, कोहरे में लिपटी स्तेपी के ऊपर, एक बड़ा-सा, बेढंगा

और झबरीला काला बादल लटका हुआ था। लहरें सरसरा रही थी। वे बल खाती हुई आतीं, रेत से गले मिलती, और बल खाती हुई फिर भाग जातीं। झाग फुंकारें छोड़ रहे थे और हवा में फुहारें उड़ रही थीं।

बूंदें पड़ने लगी। पहले इक्की-दुक्की, फिर धुआंधार। लगता था जैसे आकाश ने अपने झरनों के मुंह खोल दिये हों। स्तेपी और समुद्र के समूचे विस्तार में, इन झरनों का एक जाल-सा बुन गया। गाव्रीला उसमें ओझल हो गया। बारिश और समुद्र के किनारे रेत पर पड़े मानव की एक लम्बी आकृति के सिवा और कुछ नज़र नही आता था। आखिर, अंधकार को चीरकर, पक्षी की भांति उड़ता हुआ, गाव्रीला प्रकट हुआ। वह चेल्काश के पास पहुंचा, घुटनों के बल उसकी बग़ल में बैठ गया और उसे इधर-उधर हिलाने-डुलाने लगा। उसके हाथ ने किसी गर्म, लाल और चिपचिपी चीज़ को अनुभव किया... वह कांप उठा और चौंककर पीछे हट गया। उसका चेहरा फक हो गया, उसपर हवाइयां उड़ने लगी।

"उठो, भाई, उठो!" बारिश की आवाज़ को बेधते हुए उसने चेल्काश के कान में फुसफुसाकर कहा।

चेल्काश ने अपनी आखें खोली और गाव्रीला को परे धकेल दिया।

"दफ़ा हो जाओ!.." खरखरी आवाज़ में वह फुसफुसाया।

"भाई मेरे, मुझे माफ़ करो! मेरे सिर पर शैतान सवार था..." गाव्रीला कांपते और चेल्काश के हाथ को होंठों से लगाते हुए फुसफुसाया।

"चले, जाओ यहां से..." चेल्काश बुदबुदाया।

"मुझे माफ़ कर दो, भाई, मुझे माफ़ कर दो!.. पाप का यह बोझ मेरे सीने से उतार दो! ."

"जाओ... चले जाओ... जहन्नुम रसीद हो जाओ!" एकाएक चीखकर चेल्काश उठ बैठा। उसका चेहरा पीला था, उसपर गुस्सा झलक रहा था, उसकी आंखों में धुध-सी छाई थी और वे इस प्रकार मुंदी जा रही थीं जैसे उनमें नींद घिरी हो। "अब और क्या इरादा है? तुमने अपनी करनी कर ली... अब जाओ, दफ़ा हो जाओ यहां से!" उसने कहा और दुःख से आहत गाव्रीला को ठोकर मारने की कोशिश की, लेकिन ताक़त ने साथ नही दिया और अगर गाव्रीला उसके कंधों में बांह डालकर उसे संभाल न लेता, तो वह फिर ढह जाता।

चेल्काश का चेहरा अब गाव्रीला के चेहरे के बिल्कुल पास था और दोनों ही चेहरे पीले तथा भयावह नज़र आ रहे थे।

"थू!" चेल्काश ने अपने इस नौकर की फैली-फैली आंखों में थूक दिया।

गाव्रीला ने आस्तीन से चेहरा पोंछा।

"तुम मेरे साथ जो भी चाहो कर सकते हो . ." वह फुसफुसाया, "मैं एक शब्द भी नही कहूंगा। बस, खुदा के लिये मुझे माफ़ कर दो!"

"मरदूद! .. बुरा काम करने के लिये भी चौड़ी छाती चाहिये! .." चेल्काश ने घृणा से कहा। अपनी जाकेट के नीचे से उसने अपनी क़मीज़ का एक हिस्सा फाड़कर बाहर निकाला और कभी-कभी दांतों को पीसते हुए चुपचाप उससे अपना सिर बांधने लगा। "धन ले लिया?" उसने दांतो को भींचते हुए पूछा।

"मेरे भाई, मैंने नहीं लिया! और मैं लूगा भी नहीं! .. वह मुसीबत की जड़ है! .."

चेल्काश ने अपनी जाकेट की जेब मे हाथ डाला, नोटो का बडल खीचकर बाहर निकाला, उसमें से सौ रूबल का एक नोट अपनी जेब मे वापिम डालकर बाक़ी नोट गाव्रीला के मामने फेंक दिये।

"उठा लो और यहा से दफ़ा हो जाओ!"

"नही, भाई ... मैं नही ले सकता! मुझसे जो हुआ, उसके लिये माफ़ करो!"

"मैं कहता हूं, इसे उठा लो!" चेल्काश गरज उठा। उसकी आखें भयकर हो उठी।

"मुझे माफ़ कर दो – तब लूंगा .." गाव्रीला ने विनीत भाव से कहा और बारिश से भीगी रेत में चेल्काश के पावों पर गिर गया।

"झूठ! तुम इसे लोगे, कमबख़्त!" चेल्काश ने विश्वास के साथ कहा। गाव्रीला के बाल पकड़कर उसने उसका सिर ऊपर किया और नोट उसके मुंह के सामने करते हुए बोला –

"यह लो! ले लो! तुमने कोई मुफ़्त में थोडे ही काम किया था! डरो नही, ले लो! इस बात की शर्म न करो कि तुमने एक आदमी की जान लेने में कोई कसर नही छोड़ी। मेरे जैसे के लिये कोई तुम्हारा पीछा नहीं करेगा। पता लगने पर वे तुम्हें धन्यवाद ही देंगे। लो, इन्हें ले लो!"

यह देखकर कि चेल्काश हंस रहा है, गाव्रीला के हृदय का बोझ कम हो गया। उसने नोट अपने हाथ में दबोच लिये।

"भाई! तुम मुझे माफ़ कर दोगे न? क्या नही करोगे?" डबडबाई आवाज़ में उसने पूछा।

"मेरे प्यारे!" खड़े होते और अपने पावो पर डगमगाते हुए चेल्काश ने भी उसी अन्दाज़ में जवाब दिया, "किस चीज़ के लिये माफ़ करूं? माफ़ करने की कोई बात भी तो हो! आज तुमने मुझपर चोट की, कल मैं तुमपर..."

"आह भाई, मेरे भाई!.." विक्षुब्ध भाव से सिर हिलाते हुए गाव्रीला ने आह भरी।

चेल्काश उसके सामने खड़ा था। उसके होठों पर एक अजीब मुस्कान थिरक रही थी। उसके सिर की पट्टी जो धीरे-धीरे लाल होती जा रही थी, तुर्की टोपी की भांति मालूम होती थी।

मूसलधार बारिश हो रही थी। सागर दबी हुई आवाज़ में गरज रहा था, अत्यन्त विक्षुब्ध लहरें तट से टकरा रही थी।

ये दोनों चुप थे।

"अच्छा तो, अब विदा!" चेल्काश ने चलने के लिये मुड़ते हुए कहा। उसकी आवाज़ में उपहास का पुट था।

वह लड़खड़ा रहा था, उसकी टांगें कांप रही थी और वह ऐसे अजीब ढंग से अपने सिर को थामे था, मानो डर रहा हो कि कही वह गिर न पड़े।

"मुझे माफ़ कर दो, भाई!.." गाव्रीला ने फिर मिन्नत की।

"सब ठीक है!" चलते हुए चेल्काश ने रुखाई से कहा।

वह लड़खड़ाता हुआ चल दिया। बाएं हाथ से वह अपना सिर पकड़े था और दाहिने से अपनी भूरी मूंछों को हल्के-हल्के ऐंठ रहा था।

गाव्रीला वही खड़ा उसे तब तक देखता रहा, जब तक कि वह पानी के पर्दे में ओझल नही हो गया। बारिश की अन्तहीन धाराओं ने, जो अभी भी गिर रही थी, समूची स्तेपी को स्लेटी रंग की अबेध चादर में लपेट लिया था।

कुछ देर बाद गाव्रीला ने अपनी भीगी हुई टोपी उतारी, अपने ऊपर सलीब का चिह्न बनाया, हाथ में भिंचे नोटों पर नज़र डाली, सन्तोष की गहरी सांस ली, नोटों को अपनी क़मीज़ के भीतर छिपाया

और चेल्काश की उलटी दिशा में समुद्र के किनारे-किनारे मज़बूती से डग भरता हुआ चल दिया।

समुद्र गरजकर अपनी भीमाकार लहरो को तट पर फेंक रहा था और वे चूर-चूर होकर झाग उगल रही थी, बौछारो में फूटी पड़ रही थी। बारिश जल और थल दोनो पर कोड़े बरसा रही थी... हवा चीख और चिल्ला रही थी .. गरज, चीख़ और भनभनाहट से वायुमंडल गूज रहा था .. बारिश ने समुद्र और आकाश दोनो को ओझल कर दिया था।

शीघ्र ही बारिश की बौछारो और लहरो की फुहारो ने रेत पर उस लाल धब्बे को उस जगह मे धो डाला जहां चेल्काश पड़ा रहा था, उसके पदचिह्नों को मिटा दिया और उस युवक के पांव के निशानों को भी माफ कर दिया और समुद्र के इस निर्जन तट पर इन दो व्यक्तियों के बीच खेले गये इस छोटे मे दुखान्त नाटक की याद दिलानेवाला एक भी तो चिन्ह बाकी नही रह गया।

बाज़ का गीत

सीमाहीन सागर तट-रेखा के निकट अलस भाव से छलछलाता और तट से दूर निश्चल, नींद में डूबा, नीली चांदनी में सराबोर था। क्षितिज के निकट दक्षिणी आकाश की मुलायम और रुपहली नीलिमा में विलीन होता हुआ वह मीठी नीद सो रहा था—रूई जैसे बादलों के पारदर्शी ताने-बाने को प्रतिबिम्बित करता हुआ जो उसकी ही भांति आकाश में निश्चल लटके थे—तारों के सुनहरे बेल-बूटों पर अपना आवरण डाले, लेकिन उन्हें छिपाये हुए नही। ऐसा लगता था, मानो आकाश सागर पर झुका पड़ रहा हो, मानो वह कान लगाकर यह सुनने को उत्सुक हो कि उसकी बेचैन लहरे, जो अलस भाव से तट को पखार रही थीं, फुसफुसाकर क्या कह रही है।

आंधी से झुके पेड़ों से आच्छादित पहाड़, अपनी खुरदरी कगारदार चोटियों से ऊपर के नीले शून्य को छू रहे थे, जहां दक्खिनी रात का सुहाना और दुलार-भरा अंधेरा अपने स्पर्श से उनके खुरदरे, कठोर कगारों को मुलायम बना रहा था।

पहाड़ गम्भीर चिन्तन में लीन थे। उनके काले साये उमडती हुई हरी लहरों पर अवरोधी आवरणों की भाति पड़ रहे थे, मानो वे ज्वार को रोकना चाहते हों। पानी की निरन्तर छलछलाहट, झागों की सिसकारियो और उन तमाम आवाज़ों को शांत करना चाहते हों जो अभी तक पहाड़ की चोटियों के पीछे छिपे चांद की रुपहली-नीली आभा की भांति समूचे दृश्यपट को प्लावित करनेवाली रहस्यमयी निस्तब्धता का उल्लंघन कर रही थी।

"अल्लाह हो अकबर!" नादिर रहीम ओगली ने धीमे से आह भरते हुए कहा। वह क्रीमिया का रहनेवाला एक वृद्ध गड़रिया था—लम्बा क़द, सफ़ेद बाल, दक्षिणी धूप में तपा, दुबला-पतला, समझदार बुज़ुर्ग।

हम रेत पर पड़े थे – साये में लिपटी और काई से ढकी एक भीमाकार, उदास और खिन्न चट्टान की बग़ल में जो अपने मूल-पहाड़ से टूटकर अलग हो गई थी। उसके समुद्रवाले पहलू पर समुद्री सरकंडों और जल-पौधों की बन्दनवार थी जो उसे सागर तथा पहाड़ों के बीच रेत की संकरी पट्टी से जकड़े मालूम होती थी। हमारे अलाव की लपटें पहाड़ोंवाले पहलू को आलोकित कर रही थी और उनकी कांपती हुई लौ की परछाइयां उसकी प्राचीन सतह पर, जो गहरी दरारों से क्षत-विक्षत हो गई थी, नाच रही थी।

रहीम और मैं मछलियों का शोरबा पका रहे थे जिन्हें हमने अभी पकडा था और हम दोनों ऐसे मूड में थे जिसमे हर चीज़ स्पष्ट, अनुप्राणित और बोधगम्य मालूम होती है, जब हृदय बेहद हल्का और निर्मल होता है – और चिन्तन में डूबने के सिवा मन में और कोई इच्छा नही होती।

सागर तट पर छपछपा रहा था। लहरो की आवाज़ ऐसी प्यार-भरी थी मानो वे हमारे अलाव से अपने आपको गरमाने की याचना कर रही हों। लहरो के एकरस गुंजन में रह-रहकर एक अधिक ऊंचा और अधिक आह्लादपूर्ण स्वर सुनाई दे जाता – यह अधिक साहसी लहरों में से किसी एक का स्वर होता जो हमारे पांवों के अधिक निकट रेंग आती थी।

रहीम सागर की ओर मुंह किये पड़ा था। उसकी कोहनिया रेत में धंसी थी, उसका सिर उसके हाथो पर टिका था और वह विचारों में डूबा दूर धुधलके को ताक रहा था। उसकी भेड़ की खाल की टोपी खिसककर उसकी गुद्दी पर आ गई थी और समुद्र की ताज़ा हवा झुर्रियों की महीन रेखाओं मे ढके उसके ऊंचे मस्तक पर पंखा झल रही थी। उसके मुंह से दार्शनिकी उद्‌गार प्रकट हो रहे थे – इस बात की चिन्ता किये बिना कि मै उन्हें सुन भी रहा हूं या नही। ऐसा लगता था जैसे वह समुद्र से बातें कर रहा हो।

"जो आदमी ख़ुदा में अपना ईमान बनाये रखता है, उसे बहिश्त नसीब होती है। और वह, जो ख़ुदा या पैग़म्बर को याद नही करता? शायद वह वहां है, इस झाग में ... पानी की सतह पर वे रुपहले धब्बे शायद उसी के हों, कौन जाने!"

विस्तारहीन काला सागर अधिक उजला हो चला था और उसकी

सतह पर लापरवाही से जहा-तहां बिखेर दिये गये चांदनी के धब्बे दिखाई दे रहे थे। चांद पहाड़ों की कगारदार झबरीली चोटियों के पीछे से बाहर खिसक आया था और तट पर, उस चट्टान पर, जिसकी बग़ल में हम लेटे हुए थे, और सागर पर, जो उमसे मिलने के लिये हल्की उसांसें भर रहा था, उनीदा-सा अपनी आभा बिखेर रहा था।

"रहीम, कोई क़िस्सा सुनाओ," मैने वृद्ध से कहा।

"किसलिये?" अपने सिर को मेरी ओर मोड़े बिना ही उसने पूछा।

"यों ही! तुम्हारे क़िस्से मुझे बहुत अच्छे लगते हैं।"

"मै तुम्हे सब सुना चुका। और याद नही . " वह चाहता था कि उसकी खुशामद की जाये और मैंने उसकी खुशामद की।

"अगर तुम चाहो तो मै तुम्हें एक गीत सुना सकता हूं," उसने राज़ी होते हुए कहा।

मैं खुशी से कोई पुराना गीत सुनना चाहता था और उसने मौलिक धुन को कायम रखते हुए एकरस स्वर में गीत सुनाना शुरू कर दिया।

१

"ऊचे पहाडो पर एक साप रेंग रहा था, एक सीलन भरे दर्रे में जाकर उसने कुडली मारी और समुद्र की ओर देखने लगा।

"ऊंचे आसमान में सूरज चमक रहा था, पहाडो की गर्म सास आसमान मे उठ रही थी और नीचे लहरें चट्टानो मे टकरा रही थी ..

"दर्रे के बीच से, अंधेरे और धुध मे लिपटी एक नदी तेज़ी से बह रही थी—समुद्र से मिलने की उतावली मे राह के पत्थरो को उलटती-पलटती ..

"झागों का ताज पहने, सफ़ेद और शक्तिशाली, वह चट्टानो को काटती, गुस्से में उबलती-उफनती, गरज के साथ समुद्र में छलाग मार रही थी।

"अचानक उसी दर्रे मे, जहां साप कुडली मारे पडा था, एक बाज़, जिसके पंख खून से लथपथ थे और जिसके सीने में एक घाव था, आकाश से वहा आ गिरा...

"धरती से टकराते ही उसके मुंह से एक चीख़ निकली और

वह हताशापूर्ण क्रोध में चट्टान पर छाती पटकने लगा . .

"सांप डर गया, तेज़ी से रेंगता हुआ भागा, लेकिन शीघ्र ही समझ गया कि पक्षी पल-दो पल का मेहमान है।

"सो रेंगकर वह घायल पक्षी के पास लौटा और उसने उसके मुंह के पास फुंकार छोड़ी—

"'मर रहे हो क्या?'

"'हां, मर रहा हूं!' गहरी उसांस लेते हुए बाज़ ने जवाब दिया। 'खूब जीवन बिताया है मैने! बहुत सुख देखा है मैने! . जमकर लड़ाइयां लडी है! .. आकाश की ऊंचाइयां नापी है मैने . तुम उसे कभी इतने निकट से नही देख सकोगे! तुम बेचारे!'

"'आकाश? वह क्या है? निरा शून्य . मै वहा कैसे रेंग सकता हू? मै यहा बहुत मजे मे हूं गरमाहट भी है और नमी भी!'

"इस प्रकार सांप ने आज़ाद पंछी को जवाब दिया और मन ही मन बाज़ की बेतुकी बात पर हसा।

"और उसने अपने मन मे सोचा—'चाहे रेंगो, चाहे उडो, अन्त सब का एक ही है—सब को इसी धरती पर मरना है, धूल बनना है।'

"मगर निर्भीक बाज ने एकाएक पंख फडफडाये और दर्रे पर नज़र डाली।

"भूरी चट्टानो से पानी रिस रहा था और अंधेरे दर्रे मे घुटन और सडाध थी।

"बाज ने अपनी समूची शक्ति बटोरी और तडप तथा वेदना मे चीख़ उठा—

"'काश, एक बार फिर आकाश मे उड सकता! दुश्मन को भीच लेता अपने सीने के घावो के साथ मेरे रक्त की धारा से उसका दम घुट जाता! ओह, कितना सुख है संघर्ष में! ..'

"साप ने अब सोचा—'अगर वह इतनी वेदना से चीख रहा है, तो आकाश में रहना वास्तव मे ही इतना अच्छा होगा!'

"और उसने आज़ादी के प्रेमी बाज़ से कहा—'रेंगकर चोटी के सिरे पर आ जाओ और लुढककर नीचे गिरो। शायद तुम्हारे पख अब भी काम दे जाये और तुम अपने अभ्यस्त आकाश मे कुछ क्षण और जी लो।'

"बाज़ सिहरा, उसके मुंह से गर्व भरी हुंकार निकली और काई जमी चट्टान पर पंजों के बल फिसलते हुए वह कगार की ओर बढ़ा।

"कगार पर पहुंचकर उसने अपने पंख फैला दिये, गहरी सांस ली और आंखों से एक चमक-सी छोड़ता हुआ शून्य मे कूद गया।

"और खुद भी पत्थर-सा बना बाज चट्टानों पर लुढ़कता हुआ तेज़ी से नीचे गिरने लगा, उसके पंख टूट रहे थे, रोयें बिखर रहे थे...

"नदी ने उसे लपक लिया, उसका रक्त धोकर झागों में उसे लपेटा और उसे दूर समुद्र में बहा ले गई।

"और समुद्र की लहरें, शोक से सिर धुनती, चट्टान की सतह से टकरा रही थी.. पक्षी की लाश समुद्र के व्यापक विस्तारो में ओझल हो गयी थी...

२

"कुंडली मारे साप, बहुत देर तक दर्रे में पड़ा हुआ सोचता रहा — पक्षी की मौत के बारे में, आकाश के प्रति उसके प्रेम के बारे में।

"उसने उस विस्तार मे आंखें जमा दी जो निरन्तर सुख के सपने से आंखो को सहलाता है।

"'क्या देखा उसने — उस मृत बाज़ ने — इस शून्य में, इस अन्तहीन आकाश में? क्यों उसके जैसे आकाश मे उड़ान भरने के अपने प्रेम से दूसरों की आत्मा को परेशान करते हैं? क्या पाते है वे आकाश मे? मैं भी तो, बेशक थोड़ा-सा उडकर ही, यह जान सकता हू।'

"उसने ऐसा सोचा और कर डाला। कसकर कुंडली मारी, हवा मे उछला और सूरज की धूप मे एक काली धारी-सी कौंध गई।

"जो धरती पर रेंगने के लिये जन्मे हैं, वे उड़ नही सकते!. इसे भूलकर सांप नीचे चट्टानों पर जा गिरा, लेकिन गिरकर मरा नही और हंसा —

"'सो यही है आकाश में उड़ने का आनन्द! नीचे गिरने मे!.. हास्यास्पद पक्षी! जिस धरती को वे नही जानते, उसपर ऊबकर आकाश में चढ़ते है और उसके स्पन्दित विस्तारों में खुशी खोजते है। लेकिन वहा तो केवल शून्य है। प्रकाश तो बहुत है, लेकिन वहां न तो खाने को कुछ है और न शरीर को सहारा देने के लिये ही कोई चीज़। तब फिर इतना गर्व किसलिये? धिक्कार-तिरस्कार क्यों? दुनिया की नज़रो

से अपनी पागल आकांक्षाओं को छिपाने के लिये, जीवन के व्यापार में अपनी विफलता पर पर्दा डालने के लिये ही न? हास्यास्पद पक्षी!.. तुम्हारे शब्द मुझे फिर कभी धोखा नही दे सकते! अब मुझे सारा भेद मालूम है! मैंने आकाश को देख लिया है.. उसमें उड़ लिया, मैंने उसको नाप लिया और गिरकर भी देख लिया, हालांकि मैं गिरकर मरा नही, उल्टे अपने मे मेरा विश्वास अब और भी दृढ़ हो गया है। बेशक वे अपने भ्रमों में डूबे रहें, वे, जो धरती को प्यार नही करते। मैंने सत्य का पता लगा लिया है। पक्षियों की ललकार अब कभी मुझपर असर नहीं करेगी। मैं धरती से जन्मा हूं और धरती का ही हूं।'

"ऐसा कहकर, वह एक पत्थर पर गर्व से कुंडली मारकर जम गया।

"सागर, चौंधिया देनेवाले प्रकाश का पुंज बना चमचमा रहा था और लहरें पूरे ज़ोर-शोर से तट से टकरा रही थीं।

"उनकी सिंह जैसी गर्ज में गर्वीले पक्षी का गीत गूंज रहा था। चट्टानें काप रही थी समुद्र के आघातों से और आसमान काप रहा था दिलेरी के गीत से–

"'साहस के उन्मादियो की हम गौरव-गाथा गाते है! गाते है उनके यश का गीत!'

"'साहस का उन्माद–यही है जीवन का मूलमत्र! ओह, दिलेर बाज़! दुश्मन से लड़कर तूने रक्त बहाया . लेकिन वह समय आयेगा जब तेरा यह रक्त जीवन के अंधकार में चिनगारी बनकर चमकेगा और अनेक साहसी हृदयो को आज़ादी तथा प्रकाश के उन्माद से अनुप्राणित करेगा!'

"'बेशक तू मर गया! लेकिन दिल के दिलेरों और बहादुरो के गीतों में तू सदा जीवित रहेगा, आज़ादी और प्रकाश के लिये संघर्ष की गर्वीली ललकार बनकर गूंजता रहेगा!'

"'हम साहस के उन्मादियों का गौरव-गान गाते है!'"

...सागर के पारदर्शी विस्तार निस्तब्ध हैं, तट से छलछलाती लहरें धीमे स्वरों में गुनगुना रही हैं और दूर समुद्र के विस्तार को

देखता हुआ मैं भी चुप हूं। पानी की सतह पर चादनी के रुपहले धब्बे अब पहले से कही अधिक हो गये हैं... हमारी केतली धीमे से भुनभुना रही है।

एक लहर खिलवाड़ करती आगे बढ़ आई और मानो चुनौती का शोर मचाती हुई रहीम के सिर को छूने का प्रयत्न करने लगी।

"भाग यहां से! क्या सिर पर चढ़ेगी?" हाथ हिलाकर उसे दूर करते हुए रहीम चिल्लाया और वह, मानो उसका कहना मानकर तुरंत लौट गई।

लहर को सजीव मानकर रहीम के इस तरह उसे भिड़कने में, मुझे हसने या चौंक उठनेवाली कोई बात नही मालूम हुई। हमारे चारों ओर की हर चीज़ असाधारण रूप से सजीव, कोमल और सुहावनी थी। समुद्र शान्त था और उसकी शीतल सांसों में, जिन्हें वह दिन की तपन से अभी तक तप्त पहाडो की चोटियों की ओर प्रवाहित कर रहा था, संयत शक्ति निहित प्रतीत होती थी। आकाश की गहरी नीली पृष्ठभूमि पर सुनहरे बेल-बूटो के रूप में तारों ने कुछ ऐसा गम्भीर चित्र अंकित कर दिया था जो आत्मा को मत्र-मुग्ध करता था और हृदय को किसी नये आत्मबोध की मधुर आशा मे विचलित करता प्रतीत होता था।

हर चीज़ उनीदी थी, लेकिन जागरूकता की गहरी चेतना अपने हृदय मे सहेजे, मानो अगले ही क्षण वे सभी नीद की अपनी चादर उतारकर अवर्णनीय मधुर स्वर में समवेत गान शुरू कर देंगी। उनका यह समवेत गान जीवन के रहस्यों को प्रकट करेगा, उन्हे मस्तिष्क को समझायेगा, फिर उसे छलावे की अग्नि-शिखा की भाति ठडा कर देगा और आत्मा को गहरे नीले विस्तारो में उडा ले जायेगा, जहा तारों के कोमल बेल-बूटे भी आत्मबोध का दिव्य-गीत गाते होगे..

लेव तोलस्तोय

शब्द-चित्र

लेव तोलस्तोय

इस पुस्तक मे लेव तोलस्तोय के उन असम्बद्ध विचारो को स्थान दिया गया है जिन्हे मै ओलेइज मे रहते हुए जब-तब लिखता रहा था। लेव तोलस्तोय इसी वक्त गास्प्रा मे रह रहे थे – शुरू मे बहुत बीमार और बाद मे धीरे-धीरे स्वस्थ होते हुए। कागज के भिन्न-भिन्न टुकडो पर लापरवाही से लिखे गये इन विचारो को मै गुम हो चुके मानता था, किन्तु कुछ ही समय पहले इनका एक भाग मुझे मिल गया। इन विचारो के अतिरिक्त इस पुस्तक मे वह अधूरा पत्र भी शामिल है जो मैने लेव तोलस्तोय के यास्नाया पोल्याना "छोड़ने" और उनकी मृत्यु से प्रभावित होकर लिखा था। इस पत्र का एक भी शब्द बदले बिना, इसे ज्यो का त्यो यहा छाप रहा हू। मै इसे समाप्त भी नही कर रहा हू, क्योकि, न जाने क्यो, ऐसा करना सम्भव नही।

संस्मरण

१

स्पष्टत. जो विचार उनके मन का सबसे अधिक मन्थन करता है, वह भगवान के बारे में है। कभी-कभी ऐसा लगता है कि यह विचार नही, बल्कि किसी उस चीज़ का तनावपूर्ण विरोध है जिसे वह अपने मन पर हावी होता अनुभव करते है। वह जितना चाहते है, उससे कही कम इसकी चर्चा करते है, मगर इसके बारे में सोचते हमेशा है। यह बुढ़ापे का लक्षण, मृत्यु की पूर्वानुभूति तो शायद ही हो, नही, मेरे ख़्याल में तो उनके अद्भुत मानवीय गर्व के कारण ही ऐसा है। कुछ हद तक मन को लगनेवाली इस ठेस के कारण भी कि उनके लिये, लेव तोलस्तोय के लिये, अपनी इच्छा को किसी कीटाणु के अधीन बनाना – यह अपमानजनक बात है। यदि वह प्रकृति-वैज्ञानिक होते तो प्रतिभापूर्ण परिकल्पनाओ को जन्म देते, महान खोजें-अविष्कार करते।

२

उनके हाथ अद्भुत है – असुन्दर, नसों के फूल जाने के कारण गठीले, फिर भी अत्यधिक अभिव्यक्तिपूर्ण और सृजनात्मक शक्ति से ओत-प्रोत। सम्भवत लिओनार्दो द विची के हाथ भी ऐसे ही थे। ऐसे हाथों से सभी कुछ किया जा सकता है। कभी-कभी वह बातें करते हुए अपनी उंगलियों को हिलाते-डुलाते है, धीरे-धीरे उन्हें मुट्ठी के रूप में बन्द कर लेते है, फिर अचानक बहुत बढ़िया और बडे वज़नी शब्द कहते-कहते उसे खोल देते है। वह देवता जैसे लगते है, किन्तु मावाओथ या ओलिम्पस के देवता जैसे नही, बल्कि "सुनहरे लिंडन वृक्ष के नीचे मेपल की लकड़ी के सिंहासन पर बैठे" रूसी देवता के समान जो बहुत भव्य तो नही, किन्तु जो सम्भवत अन्य सभी देवताओ से अधिक चतुर है।

३

सुलेरजीत्स्की* के प्रति तो वह नारी जैसी कोमल भावना रखते है। चेखोव को वह पिता की तरह प्यार करते है, इस प्यार मे स्रष्टा के गर्व की अनुभूति होती है, किन्तु सुलेर के प्रति कोमल भावना, स्थायी रुचि और प्रशंसा अनुभव करते है, जिससे, लगता है, कि यह जादूगर कभी तृप्त नही होते। सम्भवत इस भावना में कुछ ऐसा ही हास्यास्पद है, जैसा कि तोते, कुत्ते या बिल्ले के प्रति किसी बूढ़ी चिर कुमारी के प्यार में होता है। सुलेर तो मानो किसी अजनबी, अनजानी-अनदेखी दुनिया के अद्भुत, आज़ाद पक्षी है। उनके जैसे सौ आदमी किसी प्रान्तीय नगर के रंग-रूप और उसकी आत्मा का कायाकल्प कर देते। उसके रग-रूप को ये लोग बिगाड डालेंगे, मगर उसकी आत्मा को प्रचंड और प्रतिभापूर्ण उत्पात के तीव्रानुराग से भर देंगे। सुलेर को प्यार करना सुगम और सुखद है, किन्तु जब मै यह देखता हूं कि स्त्रिया कैसे उनकी उपेक्षा करती हैं तो मुझे आश्चर्य भी होता है

* सुलेरजीत्स्की ल० अ० (१८७२–१९१६) – रूसी सार्वजनिक कार्यकर्त्ता, नाटक निर्देशक। आगे गोर्की उनका सुलेर के नाम से उल्लेख करते है। – स०

और क्रोध भी आता है। वैसे, सम्भव है कि इस उपेक्षाभाव के पीछे बड़ी चतुराई से कोई सावधानी छिपी रहती है। सुलेर पर भरोसा नही किया जा सकता। कल वह क्या करेंगे? शायद बम फेंक दें, शायद भटियारख़ाने की सहगान-मण्डली मे जाकर शामिल हो जायें। शक्ति उनमें इतनी है कि तीन शताब्दियो के लिये भी काफ़ी होगी। उनमें जीवन की आग इतनी अधिक है कि वह अत्यधिक गर्म हुए लोहे की भांति चिंगारियो के कारण पसीने मे भीगते प्रतीत होते है।

किन्तु एक बार वह सुलेर पर बहुत बुरी तरह बिगड़ उठे। हमेशा अराजकता की ओर झुकाव रखनेवाले सुलेर अक्सर और बड़े जोश से व्यक्ति की स्वतन्त्रता के बारे में तर्क-वितर्क करते थे और ऐसे अवसरो पर लेव तोलस्तोय हमेशा उनकी खिल्ली उडाते थे।

मुझे याद है कि सुलेरजीत्स्की ने कही से प्रिस क्रोपोत्किन द्वारा लिखी गयी पतली-सी पुस्तिका हासिल कर ली, उसे पढकर बेहद जोश मे आकर वह बडे भयानक ढग से फलसफा बघारते हुए दिन भर हर किसी के सामने अराजकतावाद की बुद्धिमत्ता की चर्चा करते रहे।

"ओह, अब बस भी करो, जी ऊब गया है," लेव तोलस्तोय ने खीझते हुए कहा। तोते की तरह एक ही शब्द – आज़ादी, आज़ादी की रट लगाये जा रहे हो, लेकिन कहा और क्या अर्थ है इसका? अगर तुम्हारे अर्थ में, तुम्हारी कल्पना के अनुसार तुम्हे आज़ादी मिल जाती है – तो क्या होगा? दार्शनिक अर्थ मे – तलहीन शून्य और जीवन में, व्यावहारिक रूप में तुम काहिल और भिखारी बनकर रह जाओगे। अगर तुम्हारी धारणा के अनुसार तुम आज़ाद हो जाते हो तो कौन-सी चीज़ जीवन और लोगो के साथ तुम्हारा नाता बनाये रखेगी? देखो, परिन्दे आज़ाद है, फिर भी अपना घोंसला बनाते है। तुम तो घोसला नही बनाओगे, बिल्ले की तरह कही भी अपनी वासना को तृप्त कर लोगे। गम्भीरता से सोच-विचार करो और तब तुम यह देखोगे, यह महसूस करोगे कि अपने अन्तिम रूप मे स्वतन्त्रता – शून्य है, असीम शून्य है।"

लेव तोलस्तोय ने गुस्से से नाक-भौंह सिकोडी, एक क्षण चुप रहे और फिर कुछ धीमे स्वर मे बोले –

"ईसा मसीह स्वतन्त्र थे, बुद्ध भी, लेकिन दोनो ने ही दुनिया के गुनाह अपने ऊपर ले लिये, वे अपनी इच्छा से ही सासारिक जीवन

के बन्दी बन गये। इससे आगे कोई नही गया, कोई भी नही। तुम्हारी-हमारी तो चर्चा ही क्या हो सकती है! हम सब अपने मित्रों-रिश्तेदारों के प्रति अपने कर्त्तव्य से मुक्ति पाना चाहते हैं, जबकि इन्हीं कर्त्तव्यों की चेतना ने हमें मानव बनाया है। यदि हमें ऐसी अनुभूति, ऐसी चेतना न होती तो हम जानवरों जैसी ज़िन्दगी बिताते होते..."

वह ज़रा मुस्कराये –

"फिर भी हम इस बात पर सोच-विचार करते हैं कि किस तरह अधिक अच्छा जीवन बितायें। इससे बहुत नही, किन्तु कुछ कम लाभ भी नही। तुम मेरे साथ बहस करते हो और ग़ुस्से से लाल-पीला होने की हद तक झल्ला उठते हो, किन्तु मेरी पिटाई नही करते हो, यहां तक कि बुरा-भला भी नही कहते हो। अगर तुम वास्तव मे ही अपने को स्वतन्त्र अनुभव करते तो मुझे मार डालते – बस, किस्सा ख़त्म।"

फिर से थोड़ी देर तक ख़ामोश रहने के बाद उन्होंने इतना और जोड़ दिया –

"स्वतन्त्रता – इसका अर्थ है कि सब कुछ और हर कोई मेरे साथ सहमत है, किन्तु तब मेरा अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है, क्योंकि हम सब टकरावों और अंतर्विरोधों में ही अपने अस्तित्व को अनुभव करते है।

४

गोल्देनवेइज़ेर* महान स्वरकार शोपेन की संगीत-रचना बजा रहे थे। इसे सुनते हुए लेव तोलस्तोय के मन में ये विचार आये –

"किसी छोटे-से जर्मन प्रिंस ने कहा था – 'जहां लोग दास रखना चाहते हैं, वहां यथासम्भव अधिक संगीत-रचना करनी चाहिये।' यह विचार बिल्कुल सही है, बिल्कुल ठीक कथन है – संगीत बुद्धि को जड़ बनाता है। कैथोलिक इस बात को सबसे अधिक अच्छी तरह से समझते हैं – ज़ाहिर है कि हमारे बड़े पादरी गिरजे में मेंडेलसोन के साथ कभी सुलह नहीं करेंगे। तूला नगर के एक बड़े पादरी ने मुझे

* गोल्देनवेइज़ेर अ० ब० (१८७५–१९६१) - सोवियत पियानोवादक और संगीतकार। – सं०

विश्वास दिलाया कि ईसा मसीह भी यहूदी नही था, यद्यपि वह यहूदी देवता का बेटा था और उसकी मां भी यहूदी थी। उसने यह स्वीकार कर लिया, फिर भी बोला – 'ऐसा नही हो सकता।' मैंने पूछा – 'तब नतीजा क्या निकलता है?' उन्होंने कंधे झटके और बोले – 'मेरे लिये यह रहस्य है!'"

५

"अगर कोई बुद्धिजीवी था तो वह गालिच का. प्रिंस व्लादीमिरको ही था। उसने १२वीं शताब्दी मे ही बड़ी दिलेरी दिखाते हुए यह कहा था – 'हमारे ज़माने में चमत्कार नही होते।' तब से छः सदियां बीत चुकी हैं और हमारे सभी बुद्धिजीवी एक-दूसरे के सामने यह रटते रहते है – 'अजूबे नहीं होते, चमत्कार नही होते।' लेकिन जनसाधारण तो १२वीं शताब्दी की भांति आज भी चमत्कारों में ही विश्वास करते हैं।"

६

"अल्पसख्यकों को इसलिये भगवान की आवश्यकता है कि उनके पास और सब कुछ है, किन्तु बहुसंख्यकों को इसलिये कि उनके पास कुछ भी नहीं है।"

मैं इस तरह से कहूंगा – अधिकांश कायरता के कारण भगवान में विश्वास करते है और केवल थोड़े से लोग ही आत्मा की समृद्धि के कारण।*

"आपको अंडर्सन के किस्से-कहानियां अच्छे लगते है?" लेव तोल-स्तोय ने कुछ सोचते हुए पूछा। "जब वे मार्को वोवचक द्वारा अनूदित होकर छपे थे, तब मेरी समझ में नही आये थे। दस साल बाद मैंने फिर से यह किताब हाथ में ली और तब अचानक बहुत ही स्पष्टता से यह अनुभव किया कि अंडर्सन बहुत ही एकाकी व्यक्ति थे। बहुत

* मेरे शब्दो का गलत अर्थ न लगाया जाये, इसके लिये मैं यह कहना चाहूगा कि धार्मिक साहित्य को मै ललित साहित्य के रूप में ही देखता हू। बुद्ध, ईसा और मुहम्मद की जीवनियो को मैं काल्पनिक उपन्यास मानता हू।

ही। मैं उनकी जीवनी नही जानता – लगता है कि वह फक्कड़ क़िस्म के आदमी थे, उन्होंने बहुत यात्रायें कीं, किन्तु इससे तो मेरी इसी भावना की पुष्टि होती है कि वह एकाकी थे। इसीलिये उन्होंने अपनी लेखनी बच्चों को समर्पित की, यद्यपि यह भूल थी मानो बच्चे बड़ों की तुलना में किसी पर अधिक तरस खाते है। बच्चे तो किसी पर तरस नही खाते, वे तरस खाना जानते ही नही।"

७

लेव तोलस्तोय ने मुझे बुद्ध धर्म की शिक्षा से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी पढ़ने का परामर्श दिया। बुद्ध धर्म और ईसा मसीह के बारे में वह हमेशा बहुत भावुक होकर बात करते है। ईसा मसीह की विशेषत: बुरे ढग से चर्चा करते है – उनके शब्दों में उत्साह, जोश और उनके हृदय की आग की एक चिंगारी तक नही होती। मेरे ख्याल में वह ईसा मसीह को भोला-भाला और दया के योग्य मानते है और यद्यपि कभी-कभी उनकी प्रशंसा करते हैं, तथापि प्यार नही करते। उन्हे तो मानो यह शंका रहती है कि यदि ईसा मसीह किसी रूसी गाव मे आ जायें तो गांव की लडकियां उनकी खिल्ली उडायेंगी।

८

आज यहां बडे ड्यूक निकोलाई मिखाइलोविच आये थे। वह सम्भवत. बुद्धिमान व्यक्ति है। बहुत विनम्र है, मितभाषी है। उनकी आंखें प्यारी और आकृति सुन्दर है। हाव-भाव सयत है। लेव तोलस्तोय उनकी ओर देखकर स्नेहपूर्वक मुस्कराते हुए कभी फ़ांसीसी तो कभी अंग्रेज़ी में बाते करते रहे। उन्होंने रूसी में कहा –

"काराम्ज़ीन* ने ज़ार के लिये लिखा, सोलोव्योव** ने बहुत लम्बे और उबाऊ ढंग मे लिखा और क्ल्युचेव्स्की*** ने अपने मनोरंजन

* काराम्ज़ीन न० म० (१७६६–१८२६) – रूसी लेखक तथा इतिहासज्ञ। – स०

** सोलोव्योव स० म० (१८२०–१८७६) – रूसी इतिहासज्ञ। – स०

*** क्ल्युचेव्स्की व० ओ० (१८४१–१९११) – रूसी इतिहासज्ञ। – स०

के लिये। बड़े ही चतुर हैं वह – पढ़ने पर लगता है कि प्रशंसा कर रहे हैं, लेकिन गहराई में जाने से पता चलता है कि कोस रहे है।"

किसी ने ज़ाबेलिन* का ज़िक्र कर दिया।

"बड़े प्यारे आदमी हैं। छोटे-से सरकारी कर्मचारी जैसे। पुराने वक्तो की चीज़ें जमा करने के शौक़ीन हैं – आवश्यक, अनावश्यक – सभी तरह की प्राचीन सामग्री का संग्रह करते रहते है। भोजन का ऐसे वर्णन करते है मानो कभी भरपेट खाने को न मिला हो। लेकिन बहुत, बहुत ही दिलचस्प है।

९

वह ऐसे तीर्थ-यात्री की याद दिलाते है जो हाथ में डंडा लिये जीवन भर धरती को मापते रहते हैं, एक मठ से दूसरे मठ तक, एक समाधि से दूसरी समाधि तक जाते हुए हज़ारों किलोमीटरों की यात्रा कर डालते हैं, एकदम बेघरवार, सभी कुछ और सभी के लिये पराये। इस दुनिया और भगवान से भी उन्हें कुछ लेना-देना नही होता। आदत के तौर पर वह उसे जपते है, मगर दिल की गहराई में उससे घृणा करते है – किसलिये भगवान उन्हें पृथ्वी के एक कोने मे दूसरे कोने तक दौड़ाता रहता है। वे लोगों को रास्ते में आनेवाले ठूंठ, जड़ें और पत्थर मानते है जिनसे आदमी ठोकर खा सकता है और कभी-कभी उनके कारण दर्द महसूस होता है। उनके बिना भी काम चल सकता है, किन्तु कभी-कभी दूसरे व्यक्ति को अपनी भिन्नता से चकित करना, उसके साथ असहमति प्रकट करना अच्छा लगता है।

१०

"प्रशा के फ़्रेड्रिक महान ने बहुत ही अच्छी बात कही थी – 'हर किसी को अपने ढंग से अपनी आत्मा की रक्षा करनी चाहिये।' उन्ही ने यह भी कहा था – 'तर्क-वितर्क चाहे कैसे ही क्यों न करें, लेकिन

* ज़ाबेलिन इ० ये० (१८२०–१९०८-०९) – रूसी इतिहासज्ञ, पुरातत्ववेत्ता, १६-१८ शताब्दियो के रूसी लोगो के रहन-सहन का वर्णन किया। – स०

हुक्म मानिये।' किन्तु मरते वक्त उन्होंने स्वीकार किया – 'दासों पर शासन करते हुए मैं ऊब गया हूं।' तथाकथित महान लोग हमेशा असंगत होते हैं। उनकी दूसरी बेवक़ूफ़ियों के साथ उन्हें इसके लिये माफ़ कर दिया जाता है। यद्यपि असंगति – मूर्खता नही है। मूर्ख – ज़िद्दी होता है, किन्तु अपनी बात का खुद ही मण्डन करने में समर्थ नहीं होता। हां, फ़ेड्रिक बड़े अजीब आदमी थे – जर्मन उन्हें अपना सर्वश्रेष्ठ सम्राट मानते है, किन्तु वे उन्हें फूटी आंखों नही सुहाते थे, वह तो गेटे और वाइलैंड को भी पसन्द नहीं करते थे ..."

११

"रोमांसवाद – यह सचाई से आखें मिलाने का साहस न करना है," लेव तोलस्तोय ने कल शाम को बालमोन्त* की कविताओं के बारे में कहा। सुलेर उनके साथ सहमत नही हुए और उत्तेजना से हकलाते हुए उन्होंने बड़े मार्मिक ढंग से कुछ और कवितायें सुनायीं।

"मेरे प्यारे, ये तो कवितायें नही, तिकड़मबाजी है, बकवास है, शब्दो का अर्थहीन जोड़-तोड़ है। कविता तो बनावट के बिना होती है। जब फ़ेत ने ये पंक्तिया लिखी –

" नही जानता स्वय कि
मै क्या गाऊगा
लेकिन गीत पनपता मेरे अन्तर मे

तो उन्होंने कविता के बारे मे वास्तविक, जन-भावना को अभिव्यक्ति दी थी। किसान भी यह नही जानता कि वह क्या गा रहा है – ओह, आह, ओहो, अहा – किन्तु एक वास्तविक गीत बन जाता है जो पक्षी के तराने की भांति सीधे दिल से निकलता है। तुम्हारे ये नये कवि सब कुछ अपने मन से गढ़ते हैं। पेरिस की चीज़ों जैसी कुछ बेहूदा चीज़ें भी हैं। तुम्हारे इन तुकबन्दों के बारे में भी यही सही है। नेक्रासोव ने भी अत्यधिक मनगढ़न्त कवितायें रची हैं।"

* बालमोन्त क० द० (१८६७–१९४२) – रूसी प्रतिकवादी कवि। – स०

"बेरांजेर के बारे में आप क्या कहेंगे?" सुलेर ने पूछा।

"बेरांजेर की बात दूसरी है! हमारे और फ़्रांसीसियों के बीच एक जैसा है ही क्या? वे भोगवादी हैं – उनके लिये आत्मिक जीवन उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है, जितना शारीरिक। फ़्रांसीसियों के लिये औरत ही प्रमुख है। वे तो जीर्ण-शीर्ण और जर्जर लोग है। डाक्टरों का कहना है कि तपेदिक के सभी मरीज़ बहुत कामुक होते हैं।

सुलेर सोचे-समझे बिना बहुत-से शब्दों का उपयोग करते हुए अपने स्वभाव के अनुसार बड़ी निष्कपटता से बहस करने लगे। लेव तोलस्तोय ने ग़ौर से उनकी तरफ़ देखा और ख़ूब मुस्कराते हुए कहा –

"तुम तो आज ऐसी युवती की तरह चिड़चिड़े हो रहे हो जिसके शादी करने का वक़्त हो गया हो, मगर कोई वर न मिल रहा हो..."

१२

बीमारी ने उन्हें और अधिक सुखा डाला है, उनमें किसी चीज़ को भस्म कर डाला है, वह आन्तरिक रूप से मानो हल्के-फुल्के, पारदर्शी और जीवन के अधिक अनुरूप हो गये है। आंखें – पहले से अधिक पैनी, दृष्टि – अधिक बीधनेवाली हो गयी है। बहुत ध्यान से बात सुनते है और मानो कुछ भूले हुए को याद करते है या विश्वासपूर्वक कुछ नये और अभी तक अज्ञात की प्रतीक्षा करते है। यास्नाया पोल्याना में वह मुझे ऐसे व्यक्ति प्रतीत हुए थे जिसे सब कुछ मालूम हो, जिसे और कुछ भी न जानना हो, जिसे सभी प्रश्नों के उत्तर मिल गये हों।

१३

अगर वह मछली होते तो निश्चय ही केवल महासागर में तैरते, कभी भी समुद्रों, ख़ास तौर पर मीठे पानी की नदियों में कभी न तैरते। यहां उनके इर्द-गिर्द कोई छोटी-छोटी मछलियां रह रही हैं, तेज़ी से इधर-उधर तैर रही हैं। वह जो कुछ कहते हैं, उन्हें उसमें कोई दिलचस्पी नहीं, उन्हें उसकी कोई ज़रूरत नहीं, उनकी ख़ामोशी से उनमें

भय और विह्वलता पैदा नहीं होती। वह बहुत ही प्रभावपूर्ण और उपयुक्त ढंग से मौन रह सकते हैं, बिल्कुल एक तपस्वी, एक संन्यासी की तरह। बेशक वह उन विषयों की बहुत अधिक चर्चा करते हैं जो उनके मन पर छाये हुए हैं, किन्तु ऐसा अनुभव होता है कि उनके बारे में वह चुप और भी अधिक रहते हैं। कुछ ऐसी बातें हैं जो वह किसी से भी नही कह सकते। सम्भवतः उनके मन में कुछ ऐसे विचार हैं जिनसे वह डरते हैं।

१४

किसी ने उन्हें ईसा मसीह के धर्म-पुत्र के क़िस्से का एक बहुत ही बढ़िया रूपान्तर भेजा। उन्होंने बड़ा रस लेते हुए सुलेर और चेखोव को यह क़िस्सा पढ़कर सुनाया – बहुत ही अद्भुत ढंग से पढ़ा! उन्हें विशेष रूप से यह बहुत मनोरंजक लगा कि शैतान किस तरह से ज़मींदारों को सताते हैं, लेकिन इसमें कुछ ऐसा था जो मुझे पसन्द नही आया। वह कपट से काम नही ले सकते और अगर यह निष्कपट था तो और भी बुरा है।

बाद मे उन्होंने कहा –

"देखो तो, किसान लोग कितने बढ़िया ढंग से क़िस्से-कहानियां गढते हैं। सब कुछ कितना सीधा-सरल है – शब्द थोड़े-से, किन्तु भावनायें बहुत अधिक। सच्ची बुद्धिमत्ता कुछ ही शब्दों में होती है, जैसे कि – हे भगवान दया करो।

मगर क़िस्सा – बड़ा क्रूरतापूर्ण था।

१५

मुझमें उनकी दिलचस्पी – नृजातीय दिलचस्पी है। उनकी दृष्टि में मैं एक खास क़बीले का आदमी हूं – ऐसे क़बीले का जिसका उन्हें बहुत कम ज्ञान है, बस – इतना ही।

१६

मैंने उन्हें अपनी 'सांड़' कहानी सुनायी। वह बहुत हंसे और इस चीज़ के लिये मेरी तारीफ़ की कि मैं "भाषा की बाज़ीगरी" जानता हूं।

"किन्तु आप शब्दों का दक्षता मे उपयोग नही करते – आपके सभी किसान बड़ी बुद्धिमानी से बातें करते है जबकि वास्तविक जीवन में वे मूर्खतापूर्ण और अटपटे ढग से बात करते हैं, फ़ौरन यह समझना कठिन होता है कि वे क्या चाहते है। वे जान-बूझकर ऐसा करते हैं, उनके शब्दों की मूर्खता के पीछे हमेशा यह इच्छा छिपी रहती है कि दूसरे आदमी को अपने दिल की बात कहने दे। समझदार किसान कभी भी अपनी अक्ल फ़ौरन नही दिखायेगा, ऐसा करना उसके हित में नहीं होता। वह जानता है कि बुद्धू आदमी के साथ दूसरे लोग सीधे-सादे ढंग से, किसी तरह की चालाकी के बिना पेश आते हैं और उसे यही तो चाहिये! दूसरा आदमी उसके सामने पूरी तरह से बेपरदा हो जाता है और वह उसी क्षण उसकी सारी कमज़ोरियां देख लेता है। किसान किसी पर भरोसा नही करता, बीवी तक को अपने दिल की बात बताते हुए डरता है। किन्तु आपकी कहानियों में सब कुछ साफ़-साफ़ प्रस्तुत किया गया है और आपकी हर कहानी में बुद्धिमानों का जमघट है। वे सभी सूक्तियों मे बात करते है और यह भी सही नही है – सूक्तियां रूसी भाषा की प्रकृति के अनुरूप नही हैं।"

"लेकिन कहावते और लोकोक्तियां?"

"उनकी दूसरी बात है। उनका सृजन आज तो नहीं हुआ।"

"किन्तु आप खुद भी तो अक्सर सूक्तियों में बातें करते हैं।"

"कभी नही! इसके अलावा आप सभी कुछ को रंग-चुन देते है – लोगों और प्रकृति को, ख़ास तौर पर लोगो को! लेस्कोव ऐसा ही करते थे, वह आडम्बरपूर्ण और अटपटी शैली में लिखते थे, उन्हें बहुत अरसे से कोई नही पढ़ता। किसी के प्रभाव में नही आइये, किसी से नहीं डरिये – तब सब कुछ ठीक हो जायेगा ...

१७

उनकी दैनिकी की कापी में, जो उन्होंने मुझे पढ़ने को दी, मैं एक अजीब-सी सूक्ति से आश्चर्यचकित रह गया – "भगवान मेरी अभिलाषा है।"

आज कापी लौटाते हुए मैंने उनसे पूछा – "इसका क्या अर्थ है?"

"अधूरा विचार है," उन्होंने आंखें सिकोड़कर इस पृष्ठ को ध्यान से देखते हुए उत्तर दिया। "मैंने यही कहना चाहा होगा – भगवान को जानना ही मेरी अभिलाषा है .. नहीं, यह बात नही है ..." वह हंस पड़े और उन्होंने कापी को रोल करके अपने कुरते की बड़ी जेब में डाल लिया। भगवान के साथ उनके बड़े अस्पष्ट-से सम्बन्ध हैं, किन्तु कभी-कभी वे मुझे एक मांद में दो भालुओं के सम्बन्धों की याद दिलाते है।

१८

विज्ञान के बारे में।

"विज्ञान – यह धोखेबाज़ कीमियागर द्वारा तैयार की गयी सोने की सिल्ली है। आंप इसे सरल-सुबोध बनाना चाहते है, हर किसी की समझ में आनेवाला बनाना चाहते हैं, मतलब यह कि ढेरों जाली सिक्के बनाना चाहंते है। जब जनसाधारण को इस सिक्के का असली मूल्य मालूम हो जायेगा तो इसके लिये वे हमें धन्यवाद नही देंगे।"

१९

हम युसूपोव पार्क में घूम रहे थे। वह मास्को के कुलीनो-रईसों के रीति-रिवाजो का बहुत ही सुन्दर ढंग से वर्णन कर रहे थे। एक लम्बी-तड़ंगी रूसी औरत लगभग दोहरी होकर एक क्यारी में काम कर रही थी और ऐसा करते समय उसकी हथनी जैसी मोटी-मोटी टागें नंगी हो रही थीं और बहुत ही भारी-भारी छातियां हिल-डुल रही थी। लेव तोलस्तोय बहुत ग़ौर से उसे देखते रहे।

"रईसों की सारी शान-शौकत और उनकी सभी तरह की सनकों का आधार इसी ढंग के नारी-स्तम्भ थे। किसान और उनकी औरतों का श्रम ही नहीं, उनके द्वारा दिया जानेवाला लगान ही नहीं, बल्कि शब्दशः आम जनता का रक्त ही यह आधार था। अगर कुलीन समय-समय पर इस तरह की घोड़ियों के साथ रक्त-विनिमय न करते तो वे कभी के नष्ट हो गये होते। यदि शक्ति को वैसे ही नष्ट किया जाये, जैसे कि मेरे समय के युवा लोग करते रहे है तो वे इसका दण्ड पाये बिना नही रह सकते थे। किन्तु अपनी रंगरेलियां करने के बाद उनमें से बहुतों ने अपने किसानो की लड़कियों से शादियां कर लीं और उनकी बहुत अच्छी सन्तानें हुईं। तो इस मामले में भी किसान की ताक़त ने उन्हें बचाया। हर जगह ही वह हमारे काम आती है। ज़रूरत इस चीज़ की है कि आधे कुलीन अपने लिये अपनी ताक़त ख़र्च करें और बाक़ी आधे गांव के गाढे ख़ून में अपना ख़ून मिलायें और उसे भी कुछ पतला करे। यह फायदेमन्द होगा।"

२०

फ्रांसीसी उपन्यासकारों की भाति वह औरतो की बडे चाव से और बहुत अधिक चर्चा करते है, किन्तु रूसी किसान के ऐसे अश्लील ढंग से जो पहले मुझे बहुत बुरा लगता था। आज मिन्दाल्नाया रोश्चा * में घूमते हुए उन्होने चेख़ोव से पूछा –

"अपनी जवानी में आप क्या बहुत ज़्यादा लम्पट रहे थे?"

चेख़ोव झेंपते-झेंपते मुस्कराये और अपनी दाढ़ी को खीचते हुए वह अस्पष्टता से कुछ बुदबुदा दिये। किन्तु तोलस्तोय ने सागर की ओर देखते हुए यह स्वीकार किया – "मैं तो बेहद . "

उन्होंने वाक्य के अन्त में एक गन्दे देहाती शब्द का उपयोग करते हुए दुखी मन से ऐसा कहा। इस वक़्त इस बात की ओर पहली बार मेरा ध्यान गया कि उन्होंने कितनी सरलता से यह शब्द कहा था मानो इसकी जगह कोई अधिक उचित शब्द जानते ही न हों। घनी दाढ़ी से घिरे उनके होंठों से इस तरह के शब्द बहुत आम और मामूली-से

---

* बादामो के पेडों का कुंज। – अनु०

प्रतीत होते हैं, वे फ़ौजियों के अन्दाज़ की अपनी अश्लीलता और गन्दगी मानों बीच में ही खो देते हैं। मुझे उनके साथ अपनी पहली भेंट और 'वारेन्का ओलेसोवा' तथा 'छब्बीस मर्द तथा एक लड़की' कहानियों के बारे में उस समय हुई चर्चा की याद आती है। साधारण दृष्टि से उनकी वह सारी चर्चा "अश्लील शब्द-प्रवाह" था। मुझे बड़ी झेंप महसूस हुई थी, यहां तक कि बुरा भी लगा था। मुझे लगा था कि वह मुझे कोई दूसरी भाषा समझने के लायक़ ही नहीं मानते। अब मैं यह समझ गया हूं कि मेरे बुरा मानने में कोई तुक नहीं थी।

२१

वह सरो के वृक्षों के नीचे पत्थर की बेंच पर बैठे थे, दुबले-पतले, छोटे-से, पीले-से, फिर भी सावाओफ़ देवता के समान प्रतीत होते हुए। वह कुछ थके-से लग रहे थे और तूती चिड़िया के ढंग से सीटी बजाने की कोशिश करते हुए अपना मन बहला रहे थे। यह चिड़िया घनी हरियाली में अपना तराना छेड़ रही थी, वह अपनी पैनी आंखों को सिकोड़कर उधर देख रहे थे और बालक की भाति अपने होठों को गोल करके अटपटे ढग से उसकी नक़ल कर रहे थे।

"कितना ज़ोर लगा रही है यह छोटी-सी चिड़िया! आपे से बाहर हुई जा रही है। कौन-सी चिड़िया है यह?"

मैंने उन्हें तूती के बारे में और यह बताया कि इस चिड़िया में ईर्ष्या की भावना कितनी तीव्र होती है और यह उसके स्वभाव का एक विशेष लक्षण है।

"जीवन भर एक ही तराना और फिर भी ईर्ष्यालु। मानव की आत्मा में सैकड़ों तराने है और फिर भी ईर्ष्या करने के लिये उसकी भर्त्सना की जाती है – क्या यह न्यायसंगत है?" उन्होंने सोच में डूबते हुए और मानो अपने आपसे पूछा। "ऐसे क्षण भी होते है जब पुरुष स्त्री से अपने बारे में उससे कही अधिक कह देता है, जितना उसे उसके सम्बन्ध में जानना चाहिये। वह तो कहकर भूल जाता है, मगर औरत को याद रहता है। शायद ईर्ष्या आत्मा के तिरस्कार के भय, अपमानित होने और हास्यास्पद बनने के भय से पैदा होती है? वह

औरत खतरनाक नही जो... को पकड़े रहती है, बल्कि जो आत्मा को अपनी पकड़ में लिये रहती है।"

जब मैंने यह कहा कि उनके उक्त कथन में 'क्रुत्ज़ेर सोनाटा' की तुलना में कुछ असंगति प्रतीत होती है तो उनकी पूरी दाढ़ी पर चमकती-सी मुस्कान फैल गयी और उन्होने उत्तर दिया—

"मैं तूती चिडिया नही हू।"

शाम को घूमते हुए उन्होंने अचानक यह कहा—

"आदमी भूकम्पों, महामारियों, बीमारियों की मुसीबतें और आत्मा की व्यथायें सह लेता है, किन्तु उसके लिये सबसे अधिक यातनाप्रद त्रासदी थी, है और रहेगी—शयन कक्ष की त्रासदी।"

यह कहते हुए वह विजेता की भांति मुस्करा दिये—उनके चेहरे पर कभी-कभी ऐसे व्यक्ति जैसी व्यापक और शान्त मुस्कान आ जाती है जो किसी बड़ी कठिनाई पर विजय पा लेता है या जिसे बड़ा तेज़ दर्द बहुत देर तक यातना देता रहा हो और फिर अचानक ग़ायब हो गया हो। उनकी आत्मा में हर विचार चिचडी की भांति चिपका रहता है। वह या तो इस विचार रूपी को फ़ौरन निकाल फेंकते है या फिर उसे इतना अधिक रक्त पीने देते है कि वह पूरी तरह से तृप्त होकर अपने आप ही उस जगह से हट जाती है।

एक बार स्टोइक-दर्शन की चर्चा मे पूरी तरह खोये हुए उन्होंने सहसा त्योरी चढायी, चटखारा भरा और कडाई से बोले—

"तागना, न कि तगना ऐसे कहना ठीक नही..."

उस वाक्य का स्टोइक-दर्शन से स्पष्टतः कोई सम्बन्ध नही था। यह देखकर कि मै चकरा गया हूं, उन्होंने बग़लवाले कमरे की ओर सिर से इशारा करते हुए कहा—

"वहां वे लोग रज़ाई को तागना कहने के बजाय तगना कहते रहते है!"

और फिर कहते गये—

"और बडी मीठी-मीठी बातें करनेवाले रेनान..."

वह मुझसे अक्सर कहते—

"आप अच्छे ढंग से वर्णन करते हैं—अपने शब्दो में, बडे प्रभावपूर्वक अन्दाज़ में, किताबी ढंग से नही।"

किन्तु लगभग हमेशा ही बोल-चाल में शब्दों के प्रयोग में लापर-

वाही की ओर ध्यान देते और धीरे से, मानो अपने आपसे कहते –

"अच्छे रूसी शब्द के साथ विदेशी भाषा के 'अब्सोल्यूत्नो' (Absolutely – बिल्कुल) शब्द को इस्तेमाल करते हैं, जबकि इसके लिये रूसी भाषा का 'सोवेरशेन्नो' शब्द इस्तेमाल हो सकता है।"

कभी-कभी वह भर्त्सना करते हुए पूछते –

"क्या भावना की दृष्टि से एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न शब्दो को भी पास-पास रखा जा सकता है? ऐसा करना अच्छा नही..."

भाषा के प्रयोग के बारे में उनकी संवेदनशीलता मुझे कभी-कभी रोग की अवस्था तक पहुंची हुई प्रतीत होती थी। एक दिन उन्होंने कहा –

"किसी एक लेखक के एक ही वाक्य में मुझे 'बिल्ली' और 'अतड़ी' शब्द पढ़ने को मिले। कैसी घिनौनी चीज़ है! मुझे मतली होते-होते रह गयी!"

कभी-कभी वह ऐसे तर्क-वितर्क करते थे –

"भाषाशास्त्री मुझे अच्छे नही लगते – वे वास्तविक जीवन से कटे-कटे रहते हैं, किन्तु उनके सामने भाषा-सम्बन्धी बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य है। हम ऐसे शब्दों का उपयोग करते है जिन्हें समझते नही है। उदाहरण के लिये हमें यह मालूम नही है कि हमारी बहुत-सी क्रियायें कैसे बनी है।"

दोस्तोयेव्स्की की भाषा की वह बहुत अक्सर चर्चा करते थे –

"उन्होने बेहूदा, यहा तक कि जान-बूझकर बहुत भोड़ी भाषा लिखी – मुझे यक़ींन है कि उन्होंने दिखाने के लिये जान-बूझकर ऐसा किया है। वह शब्दाडम्बर करते थे। उनके 'बौड़म' उपन्यास में यह वाक्य लिखा हुआ है – "लज्जाहीन ढंग से पीछे पडने और परिचय के 'प्रोगेंडे' के लिये।" इस वाक्य में उन्होंने प्रोपेगेंडे के लिये उपयुक्त विदेशी शब्द को इसलिये जान-बूझकर तोड़ा-मरोडा है कि वह विदेशी है, पश्चिम से हमारी भाषा में आया है। उनकी रचनाओं में अक्षम्य भूलें भी मिलती हैं। बौड़म कहता है – "गधा – एक दयालु और उपयोगी व्यक्ति है," किन्तु इसे पढकर कोई भी हंसता नही; यद्यपि इन शब्दों के कारण अनिवार्य रूप से हंसी आनी चाहिये या कोई टीका-टिप्पणी होनी चाहिये। ये शब्द वह उन तीन बहनों के सामने कहता है जिन्हें उसका मज़ाक़ उड़ाना पसन्द था, खास तौर पर अग्लाया को।

इसे बुरी किताब माना जाता है, किन्तु इसमें सबसे बुरी चीज़ तो यह है कि प्रिंस मीश्किन मिरगी का रोगी है। यदि वह स्वस्थ व्यक्ति होता तो उसके हृदय के भोलेपन, उसकी हार्दिक निर्मलता ने हमारे मन को अत्यधिक छू लिया होता। किन्तु उसे स्वस्थ व्यक्ति के रूप में चित्रित करने के लिये दोस्तोयेव्स्की के पास पर्याप्त साहस नहीं था। सच तो यह है कि स्वस्थ लोग उन्हे अच्छे ही नही लगते थे। उन्हें विश्वास था कि अगर वह खुद बीमार है तो सारी दुनिया ही बीमार है।"

लेव तोलस्तोय ने सुलेर और मुझे 'फ़ादर सेर्गिय' के पतन के संदर्भ का एक रूप पढ़कर सुनाया। सुलेर ने मुंह फुला लिया और बेचैनी मे हिलने-डुलने लगे।

"क्या बात है? क्या अच्छा नही लग रहा?" लेव तोलस्तोय ने पूछा।

"यह तो बहुत ही क्रूरतापूर्ण है, दोस्तोयेव्स्की की भाति। यह सड़ी हुई युवती, उसके पूड़ो जैसे ढीले-ढाले उरोज और बाक़ी सब कुछ भी। किसी सुन्दर और स्वस्थ औरत के साथ उसने यह कुकर्म क्यो नही किया?"

"यह तो ऐसा पाप होता जिसकी सफाई नही दी जा सकती थी, लेकिन इस हालत मे इस लड़की के प्रति दयाभाव के आधार पर इसकी सफाई पेश की जा सकती है। कौन ऐसी लड़की की परवाह करेगा?"

"यह बात मेरी समझ मे नही आ रही .."

"बहुत-सी बातें तुम्हारी समझ में नही आती, तुममे चालाकी नाम की चीज़ नही है..."

इसी वक्त अन्द्रेई ल्वोविच* की पत्नी आ गयी, बातचीत अधूरी रह गयी और जब सुलेर और पुत्रवधू उप-भवन में चले गये तो लेव तोलस्तोय ने मुझसे कहा –

"मेरी जान-पहचान के लोगो में यह निर्मलतम व्यक्ति है। वह खुद भी अगर किसी के साथ कोई बुराई करता है तो उसके प्रति दया के कारण।"

---

* तोलस्तोय का सुपुत्र। – अनु०

२२

लेव तोलस्तोय सबसे अधिक तो भगवान, किसान और औरतों की चर्चा करते हैं। साहित्य-चर्चा तो कभी-कभार और बहुत थोड़ी ही करते, मानो साहित्य उनके लिये कोई परायी चीज़ हो। जहां तक मैं समझता हूं, औरत के प्रति उनका बहुत ही कठोर शत्रुता का रवैया है और अगर वह कीती या नताशा रोस्तोवा जैसी सीधी-सादी औरत न हो तो उसे दण्डित करना उन्हें अच्छा लगता है। यह – ऐसे पुरुष की शत्रुता है जिसे उतना सुख नही मिला जितना मिल सकता था या फिर यह "शरीर के अपमानजनक आवेशो" के विरुद्ध आत्मा का शत्रु-भाव है? किन्तु यह शत्रुता है और बहुत ही कटु शत्रुता है, जैसे कि 'आन्ना कारेनिना' में। "शरीर के अपमानजनक आवेशों" के बारे में उन्होंने रूसो की 'स्वीकारोक्ति' के आधार पर चेख़ोव और येल्पातेव्स्की से बातचीत करते हुए इतवार के दिन बहुत ही अच्छे ढंग से विचार किया। सुलेर ने उनके शब्दो को लिख लिया, मगर बाद में कॉफी बनाते हुए स्पिरिट-लैम्प पर इस कागज़ को जला दिया। कुछ दिन पहले उन्होंने इबसन* के बारे में लेव तोलस्तोय के कुछ कथनों को जला दिया था और विवाह की रस्मों की प्रतीकात्मकता से सम्बन्धित रुक्के को खो दिया था जिनके बारे में लेव तोलस्तोय ने व० व० रोजानोव** के विचारों से मिलती-जुलती कुछ बहुत ही विधर्मी बातें कही थी।

२३

सुबह को फ़ेओदोसिया से श्टूनडिस्ट*** आये और आज दिन भर वह बड़े उत्साह से किसानों की चर्चा करते रहे।

नाश्ते के वक्त –

* इबसन हेनरिक (१८२८–१९०६) – नार्वे के नाटककार। – सं०

** रोज़ानोव व० व० (१८५६–१९१९) – रूसी लेखक, पत्रकार तथा दार्शनिक। – सं०

*** १९वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे उक्रइन तथा रूस में प्रोटेस्टैंट धर्म के प्रभाव के कारण पनपनेवाले एक सम्प्रदायवादी आन्दोलन के अनुयायी। – सं०

"वे आये – दोनों बहुत तगड़े, हट्टे-कट्टे। एक ने कहा – 'हम तो हैं बिन बुलाये मेहमान', और दूसरे ने जोड़ दिया – 'खाली हाथ न जायें, यदि चाहें भगवान।' और वह बालक की भांति खिलखिलाकर हंसने लगे तथा सिर से पांव तक हिलते रहे।"

नाश्ते के बाद बरामदे में –

"जल्द ही हम जनता की भाषा समझने में बिल्कुल असमर्थ हो जायेंगे। हम कहते है – 'प्रगति का सिद्धान्त', 'इतिहास में हस्ती की भूमिका', 'विज्ञान का क्रमिक विकास', 'पेचिश', लेकिन किसान कहता है – 'दाई से पेट नहीं छिपता' और हमारे सारे सिद्धान्त, इतिहास और क्रमिक विकास दयनीय तथा हास्यास्पद बनकर रह जाते है, क्योकि वे आम लोगो की न तो समझ में आते है और न उन्हें उनकी ज़रूरत है। किन्तु किसान हमसे अधिक शक्तिशाली है, उसमें हमसे अधिक प्राणवत्ता है। हमारे साथ वही कुछ हो सकता है जो अतसूरी क़बीले के लोगों के साथ हुआ जिसके बारे में एक विद्वान से यह कहा गया था – 'सभी अतसूरी तो मर-खप गये, लेकिन यहां एक तोता है जो उनकी भाषा के कुछ शब्द जानता है।'"

२४

"शारीरिक दृष्टि से नारी पुरुष की तुलना में अधिक निष्कपट है, किन्तु उसके विचार झूठे होते है। किन्तु जब वह झूठ बोलती है तो अपने पर विश्वास नही करती, किन्तु रूसो झूठ बोलते थे और अपने पर विश्वास भी करते थे।"

२५

"दोस्तोयेव्स्की ने अपने एक पागल पात्र के बारे में लिखा है कि वह अपने से तथा दूसरों से ज़िन्दगी भर इस बात का बदला लेता हुआ उस काम में जुटा रहा जिसमें उसकी आस्था नही थी। उन्होने यह अपने बारे में लिखा है, मेरा मतलब है कि वह अपने बारे में ऐसा ही कह सकते थे।"

२६

"ईसाई धर्म के कुछ शब्द तो आश्चर्य की सीमा तक अस्पष्ट हैं। उदाहरण के लिये इन शब्दों का क्या अर्थ है – 'भगवान की पृथ्वी और उसकी परिपूर्त्ति।' ये तो धर्म-ग्रन्थ के नहीं, बल्कि सुबोध-वैज्ञानिक भौतिकवाद के शब्द लगते हैं।"

"आपने किसी जगह पर इन शब्दों का अर्थ स्पष्ट किया है," सुलेर ने कहा।

"तो क्या हुआ... 'इनका अर्थ तो है, मगर मै उनकी तह तक नही पहुचा।'"

और, वह धूर्त्ततापूर्वक मुस्करा दिये।

२७

लेव तोलस्तोय को कठिन और चालाकी भरे प्रश्न पूछना अच्छा लगता है –

"अपने बारे मे आपकी क्या राय है?"

"आप अपनी बीवी को प्यार करते है?"

"आपकी राय में मेरा बेटा लेव प्रतिभाशाली है?"

"सोफ़िया अन्द्रेयेव्ना* आपको अच्छी लगती है?"

उनके सामने झूठ बोलना सम्भव नही।

एक बार उन्होंने मुझसे पूछा –

"अलेक्सेई मक्सिमोविच, आप मुझे चाहते है?"

यह विनोदशीलता तो अपनी शक्ति के बारे मे सचेत व्यक्ति के अनुरूप है। नोव्गोरोद नगर का सूरमा वसीली बुसलायेव अपनी जवानी के दिनो में ऐसे खिलवाड़ किया करता था। वह तो हर चीज़ को मानो "आज़माते" है, उसकी हल्की-सी परीक्षा लेते हैं मानो अखाड़े में उतरने की तैयारी कर रहे हों। यह दिलचस्प है, मगर मुझे बहुत अच्छा नही लगता। वह तो शैतान हैं, लेकिन मैं अभी दुधमुंहा हूं, वह मुझपर तो रहम ही किया करें।

* तोलस्तोय की पत्नी। – अनु०

२८

मुमकिन है कि किसान उनके लिये बदबू के समान ही है, वह हमेशा उसे महसूस करते है और बरबस उसकी चर्चा करते हैं।

कल शाम को मैंने उन्हे जनरल की विधवा कोर्ने के साथ हुई अपनी झडप का किस्सा सुनाया। वह ठहाके लगाते हुए इतना हंसे कि उनकी आंखों में आंसू आ गये, उनकी छाती में दर्द होने लगा और पतली-सी आवाज़ में लगातार ओह-ओह कहते रहे।

"बेलचे मे! उसके नितम्बो पर .. बेलचे से? सच .. इसी जगह पर और बेलचा चौड़ा था?"

इसके बाद कुछ देर तक दम लेकर गम्भीरतापूर्वक बोले –

"आपने तो बड़ी दयाल्तुता दिखाते हुए चोट की, कोई दूसरा होता तो सिर पर ही मारता। बड़ी दयालुता दिखाई आपने। आप यह समझते थे कि वह आपको चाहती थी?"

"याद नही। मेरे ख़्याल में तो मैं यह बात नही समझता था ..."

"कैसे नही समझते थे! यह तो साफ था। बेशक ऐसा ही था।"

"तब इस चीज़ में मेरी बहुत दिलचस्पी नही थी ..."

"दिलचस्पी थी या नही – इससे कोई फ़र्क़ नही पड़ता! यह साफ़ है कि आप औरतों के बहुत चटोरे नही है। कोई दूसरा तो अपने हाथ रंग लेता, घर का मालिक और उसके साथ पियक्कड़ बन जाता।"

कुछ देर चुप रहने के बाद –

"आप हास्यास्पद है। बुरा नही मानिये – बहुत हास्यास्पद है! और बडी अजीब बात यह है कि क्रूर होने का अधिकार रखते हुए भी आप बहुत दयालु हैं। हां, आप क्रूर हो सकते थे। आप मज़बूत हैं, यह अच्छी बात है ."

फिर थोडी देर और चुप रहने के बाद उन्होंने कुछ सोचते हुए इतना और कह दिया –

"आपका दिमाग़ मेरी समझ में नही आता – बहुत उलझा हुआ है दिमाग़ आपका, लेकिन आपका दिल सुलझा हुआ हैं ... हां, दिल सुलझा हुआ है!"

नोट: कज़ान में रहने के समय मैं एक जनरल की विधवा कोर्ने के यहां चौकीदार और बाग़बान की नौकरी करता था। यह जवान, मोटी और किशोरी जैसी छोटी-छोटी टांगोंवाली फ़ांसीसी औरत थी। उसकी आंखें अद्भुत रूप से सुन्दर तथा चंचल थी और हमेशा जिज्ञासा से फैली हुई इधर-उधर देखती रहती थीं। मेरा ख़्याल है कि शादी से पहले वह किसी दुकान पर विक्रेत्री या बावर्चिन या शायद "दिल बहलानेवाली लड़की" रही होगी। वह सुबह से ही शराब पी लेती और सिर्फ़ क़मीज़ तथा उसपर नारंगी रंग का ड्रेसिंग-गाउन तथा लाल रंग के तातारी सेंडल पहने अहाते या बगीचे में आ जाती। उसके सिर पर घने बाल थे, जिन्हे वह ढंग से संवारती नही थी। ये बाल उसके लाल-लाल गालों और कंधो पर गिरते रहते। वह जवान डायन थी। वह फ़ांसीसी गाने गाती हुई बगीचे मे घूमती, मुझे काम करते देखती रहती और जब-तब रसोईघर की खिड़की के पास जाकर कहती–

"पोलीन, मुझे कुछ दीजिये ..."

"कुछ" हमेशा एक ही चीज़ होती थी–बर्फ के साथ शराब का गिलास।

उसके घर की नीचेवाली मज़िल पर तीन यतीम, द० ग० प्रिंमेसें रहती थीं। उनका पिता, जो कमिसरी जनरल था, कही चला गया था और मां मर गयी थी। जनरल की विधवा कोर्ने को ये लड़कियां अच्छी नही लगती थीं और वह सभी तरह की घटिया-कमीनी हरकतो से उनका इस घर मे रहना दूभर बनाने की कोशिश करती थी। वह ग़लत-सलत रूसी बोलती थी, मगर गालिया किसी गाड़ीवान की तरह खूब अच्छी तरह जानती थी। इन मासूम लड़कियों के प्रति उसका रवैया मुझे बिल्कुल अच्छा नही लगता था–वे बहुत उदास, सहमी-सहमी रहती थी, उनकी हिमायत करनेवाला कोई नही था। एक दिन ये दो लड़कियां दोपहर के वक्त बगीचे में घूम रही थी कि अचानक वहा जनरल की विधवा आ गयी। वह हमेशा की तरह नशे में थी और इन लड़कियो को बगीचे से निकालते हुए इनपर चीख़ने-चिल्लाने लगी। लड़कियां चुपचाप बगीचे मे चल दीं, किन्तु जनरल की विधवा ने फाटक के सामने खड़े होकर बोतल मे लगे कार्क की तरह रास्ता बन्द कर दिया और ऐसी भारी-भरकम रूसी गालियां बकने लगी जिन्हें सुनकर तो कोई घोड़ा भी परेशान हो उठे। मैंने उससे विनती की

कि वह गालियां देना बन्द कर दे और लड़कियों को जाने दे। इसपर वह चिल्ला उठी –

"मैं टुम को जानटी! तुम रात को इनकी खिड़की में चढ़ता ..."

मुझे गुस्सा आ गया, कंधो से पकड़कर मैंने उसे फाटक से हटा दिया, लेकिन वह मेरे हाथों से निकल गयी, उसने मेरी ओर मुंह किया और जल्दी से ड्रेसिंग-गाउन के बटन खोलकर तथा क़मीज़ ऊपर उठाकर चिल्लाई –

"हम इन चुहियों से अच्छा होटा!"

तब मै पूरी तरह से आग-बबूला हो उठा, मैने उसका मुंह दूसरी ओर किया, उसके नितम्ब पर ऐसे बेलचा मारा कि वह बेहद हैरान होती तथा तीन बार "ओ! ओ! ओ!" चिल्लाती हुई फाटक से अहाते के पार भाग गयी।

इसके बाद मैंने उसकी विश्वासपात्री पोलीना से, जो मालकिन की तरह ही पियक्कड़, किन्तु बहुत चालाक औरत थी, अपना पासपोर्ट लिया, अपने सामान की गठरी बग़ल मे दबायी और अहाते मे बाहर चल दिया। जनरल की विधवा हाथ मे लाल रूमाल लिये खिडकी के पास खड़ी होकर ऊची आवाज़ में मुझसे न जाने का अनुरोध करती हुई कहती रही –

"हम पुलिस नहीं बुलाटा – कोई बाट नही – मेरी सुनटा! वापस आ जाटा हम नही डराता ."

२६

मैंने उनसे पूछा –

"आप पोज़्निशेव से तब सहमत होते है, जब वह कहते है कि डाक्टरो ने लाखों लोगो की जाने ले ली है और अब भी ले रहे हैं?"

"आपकी यह जानने में बहुत ज़्यादा दिलचस्पी है?"

"बहुत ज़्यादा।"

"तब मैं नही बताऊंगा!"

और वे अपने दोनों अंगूठे दिखाते हुए मुस्करा दिये।

मुझे याद आ रहा है कि उनकी एक कहानी में गांव के घोड़ों

के एक नीम-हकीम की एक डाक्टर से तुलना करते हुए नीम-हकीम के ऐसे शब्दों का उल्लेख करके डाक्टर की खिल्ली उड़ायी गयी है जिनके लिये डाक्टर वैज्ञानिक शब्दावली का उपयोग करता है।

और यह सब जेन्नेर, बेरिंग और पास्तेर जैसे चिकित्सकों-वैज्ञानिकों के बाद कहा गया है। ओह, कैसे शरारती हैं वह!

३०

कैसी अजीब बात है कि उन्हें ताश खेलना पसन्द है। वह गम्भीरतापूर्वक और जोश में आकर ताश खेलते हैं। जब वे पत्ते हाथ मे लिये होते हैं तो उनके हाथों में ऐसी उत्तेजना होती है मानो वे उंगलियो के बीच गत्ते के टुकड़े नही, जीवित पक्षी पकड़े हों।

३१

"डिकन्स ने बहुत ही समझदारी की बात कही है–'हमें इस अनिवार्य शर्त के साथ ज़िन्दगी दी गयी है कि हम अन्तिम क्षण तक बड़ी वीरता से इसकी रक्षा करेंगे।' वैसे तो वह जज़्बाती और बातूनी आदमी तथा बहुत समझदार लेखक नही थे। किन्तु उपन्यास के रचना-शिल्प मे बेजोड़ थे, निश्चय ही बाल्ज़ाक से तो बेहतर ही थे। किसी ने कहा है–'पुस्तकें लिखने की तीव्राकाक्षा तो बहुतों मे होती है, किन्तु उन्हे लिखने के बाद बहुत कम ही उनके लिये लज्जा अनुभव करते है।' बाल्ज़ाक लज्जित नही हुए और डिकन्स भी नही, यद्यपि दोनों ने ही कुछ कम बुरा नही लिखा है। इसके बावजूद बाल्ज़ाक–प्रतिभा हैं, यानी वही है जिसे प्रतिभा के अतिरिक्त कोई दूसरा नाम नही दिया जा सकता..."

किसी ने लेव तिख़ोमीरोव* की पुस्तक 'मैं क्रांतिकारी क्यों नही रहा?' उन्हें ला दी। लेव तोलस्तोय ने उसे मेज़ से उठाकर हवा में लहराते हुए कहा–

* तिखोमीरोव ल० अ० (१८५२–१९२३)–क्रान्तिकारी-नरोदवादी, पत्रकार, बाद में क्रान्तिकारी कार्रवाई से हट गये।–सं०

"इस पुस्तक में राजनीतिक हत्याओं और इस बारे में सब कुछ बहुत अच्छी तरह से बताया गया है कि संघर्ष के इस तरीक़े का कोई स्पष्ट उद्देश्य नही है। इस सुधरे हुए हत्यारे का कहना है कि ऐसा विचार किसी व्यक्ति की अराजकतावादी निरंकुशता और समाज तथा मानवजाति के प्रति घृणा के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता। यह विचार सही है, किन्तु अराजकतावादी निरंकुशता – छापे की भूल है – इसकी जगह उसे राजतन्त्रीय निरंकुशता कहना चाहिये था। यह अच्छा और सही विचार है, सभी आतंकवादी, मैं ईमानदार आतंकवादियों की बात कर रहा हूं, इसपर विचार करेंगे। जिसे अपने स्वभाव से ही हत्या करना पसन्द है – उसे कोई फर्क़ नही पडेगा। उसे कोई भी चीज़ सोचने के लिये विवश नही कर सकती। वह तो बस, हत्यारा है और संयोग से ही आतंकवादियों में आ घुसा है..."

३२

कभी-कभी वह आत्मतुष्ट और वोल्गा-पार के साम्प्रदायिक जनूनी की तरह असह्य हो जाते है। चूंकि वह ऐसे घण्टे के समान है जिसकी आवाज़ सारी दुनिया में गूजती है तो उनका ऐसा करना बहुत बुरा है। कल उन्होने मुझसे कहा –

"मैं आपसे कही ज्यादा देहाती हू और अपने को देहातियो की तरह कही ज्यादा अनुभव करता हूं।"

हे भगवान! उन्हें इस बात की डीग नही हाकनी चाहिये, नही हाकनी चाहिये!

३३

मैंने अपने नाटक 'रसातल' के कुछ दृश्य उन्हें पढ़कर सुनाये। बहुत ध्यान से सुनने के बाद उन्होंने पूछा –

"किसलिये आप यह लिख रहे है?"

मुझसे जैसे सम्भव हुआ, मैंने स्पष्ट किया।

"आप हर जगह ही और हर चीज़ पर मुर्गे की तरह झपटते दिखाई देते हैं। इसके अलावा – आप सभी छेदों-दरारों को अपने ही

रंग से भरना चाहते हैं। एंडरसन ने एक जगह पर लिखा है – 'सुनहरा पानी उतर जायेगा, चमड़ा रह जायेगा।' हमारे किसान कहते है – 'हर चीज़ गुज़र जाती है, सिर्फ़ सचाई बाक़ी रह जाती है।' रंग न लगाना ही बेहतर रहेगा, वरना बाद में यह आपके लिये ही बुरा होगा। फिर आपकी भाषा भी बहुत भडकीली है, बाज़ीगरी के करतबों से भरी हुई। यह नही चलेगा। सीधे-सरल ढंग से लिखना चाहिये, साधारण लोग ऐसे ही बोलते है, कभी-कभी असम्बद्ध से लगते हैं, मगर कितने अच्छे ढंग से अपने को अभिव्यक्त करते है। अगर चार का अंक हमेशा ही तीन से अधिक होता है तो किसान यह नहीं पूछेगा – 'एक तिहाई एक चौथाई से क्यों अधिक है?' जैसे कि एक विदुषी महिला ने पूछा था। बाज़ीगरी की ज़रूरत नही।"

वह खीझे-खीझे-से बोल रहे थे, सम्भवतः उन्हे मेरे द्वारा पढ़े गये दृश्य अच्छे नही लगे थे। कुछ देर तक चुप रहने के बाद मेरी ओर न देखते हुए उन्होने रुखाई से कहा –

"आपके नाटक का बूढ़ा (लुका से अभिप्राय है – अनु०) अच्छा नही लगता, उसकी दयालुता पर विश्वास नही होता। आपका अभिनेता बुरा नहीं, अच्छा है। आपने मेरी रचना 'शिक्षा के फल' पढ़ी है? उसमें बावर्ची आपके अभिनेता जैसा ही है। नाटक लिखना टेढ़ी खीर है। आपकी वेश्या भी ठीक बनी है, ज़रूर कुछ ऐसी होंगी। आपने ऐसी वेश्यायें देखी है?"

"हां, देखी है।"

"हां, यह नज़र आ रहा है। सचाई तो हर जगह ही सामने आ जाती है। आप अपनी ओर से बहुत अधिक कहते है, इसलिये आपके पात्रों का अलग व्यक्तित्व नही है – सब एक जैसे है। शायद औरतों को आप समझते ही नही। आपके सभी नारी-पात्र असफल है। वे मन पर अंकित होकर नही रह जाते ..."

अन्द्रेई ल्वोविच की पत्नी हमें चाय के लिये बुलाने को कमरे में आ गयी। वह उठे और ऐसे जल्दी-जल्दी चल दिये मानो बातचीत के समाप्त होने से खुश हुए हों।

३४

"आपने आज तक सबसे भयानक सपना कौन-सा देखा है?"

मैं सपने बहुत कम देखता हूं और वे मुझे याद भी बहुत कम रहते हैं। किन्तु दो सपने तो शायद ज़िन्दगी भर मुझे याद रहेंगे।

एक बार मैंने सपने में भद्दा-सा, हरे-पीले रंग का सड़ा-सा आकाश देखा। उसमें गोल-गोल, चपटे, रश्मिहीन, ज्योतिहीन सितारे थे, किसी रोगी के शरीर पर फोड़ों-फुंसियों जैसे। सितारों के बीच नागिन से बहुत मिलती-जुलती कुछ लाल-सी बिजली सड़े हुए आकाश में धीरे-धीरे रेंग रही थी। जब वह किसी सितारे को छूती, सितारा फ़ौरन फूल जाता, गुब्बारा बन जाता और आवाज़ पैदा किये बिना फट् जाता। उसकी जगह पर धुएं के छोटे-से टुकड़े जैसा काला धब्बा रह जाता जो सड़े और चिपचिपे-तरल आकाश में जल्दी से लुप्त हो जाता। इस तरह एक के बाद एक – सभी सितारे फूलकर फट गये, नष्ट हो गये, आकाश अधिक अन्धकारमय, अधिक भयानक हो गया, इसके बाद ज़ोर से हिलने और खुदबुदाने लगा, टुकडे-टुकड़े होकर तरल जेली के रूप में मेरे सिर पर गिरने लगा और टुकड़ों के बीच लोहे की छत की चमकती, काली सतह नज़र आने लगी। लेव तोलस्तोय बोले –

"यह तो किसी वैज्ञानिक पुस्तक के पढ़ने का नतीजा था, आपने नक्षत्रशास्त्र से संबंधित कोई पुस्तक पढ़ी होगी और इसीलिये ऐसा भयानक सपना देखा। दूसरा सपना क्या था?"

दूसरा सपना – बर्फ़ से ढका हुआ मैदान, कागज़ की तरह समतल-सपाट, न कहीं कोई टीला-उभार, न वृक्ष, न झाड़ी, केवल बर्फ़ के नीचे से ज़रा-ज़रा बाहर निकली हुई विरली टहनियां दिखाई दे रही थी। इस निर्जीव, सुनसान मैदान में क्षितिज से क्षितिज तक बड़ी मुश्किल से दिखाई देनेवाली रास्ते की पीली रेखा फैली हुई थी और उस-पर नमदे के सलेटी रंग के दो बूट अपने आप ही धीरे-धीरे चलते जा रहे थे।

उन्होंने अपनी घनी, भुतने जैसी भौंहें ऊपर उठायीं, बहुत ग़ौर से मेरी तरफ़ देखा और कुछ सोचते रहे।

"यह – भयानक है! आपने सचमुच ऐसा सपना देखा था या मन से गढ़ लिया है? इसमें भी कुछ किताबी-सा है।"

और अचानक मानो ग़ुस्से में आकर झल्लाते, अपने घुटने पर उंगली मारते हुए कड़ाई से बोलने लगे –

"आप तो पियक्कड़ नही हैं, न? ऐसा भी नही लगता कि कभी बहुत पीते रहे हों। लेकिन आपके इन सपनों में शराबी जैसा कुछ है। होफ़मन नाम के एक जर्मन लेखक थे। उनके यहां जुआ खेलने की मेज़ें सड़कों पर इधर-उधर भागती दिखाई गयी थी और दूसरी बहुत-सी चीज़ें ऐसी ही थी। वह तो शराबी थे – जैसे कि आजकल के पढ़े-लिखे कोचवान कहते हैं 'केलकोहलिक' (ऐलकोहलिक) थे। बूट अपने आप चलते जा रहे है – यह तो सचमुच भयानक है! अगर आपने अपने दिमाग़ से ही यह बात बनायी है तो भी अच्छी है! बहुत भयानक है!"

अप्रत्याशित ही उनकी पूरी दाढ़ी पर, यहां तक कि गालों की हड्डियों तक पर, मुस्कान फैल गयी।

"आप कल्पना तो करें – त्वेरस्काया सड़क पर ताश या जुआ खेलने की मेज़ भागी आ रही है – टेढी-मेढ़ी टागें, उसके तख़्ते बज रहे है और चाक को उछाल रहे है, उसकी हरी बनात पर लिखे हुए आंकड़े भी नज़र आ रहे है – इसी मेज़ पर आबकारी विभाग के कुछ कर्मचारी तीन दिन-रातों में लगातार ताश खेलते रहे हैं, बेचारी मेज़ से और ज्यादा बर्दाश्त नही हुआ और भाग खड़ी हुई।"

वह खिलखिलाकर हंस पड़े। शायद उन्होंने यह देख लिया कि मेरे प्रति उनके अविश्वास के कारण मैं कुछ क्षुब्ध हू –

"आपको यह बुरा लगा है कि आपके सपने मुझे किताबी प्रतीत हुए है? बुरा नही मानिये, मै जानता हूं कि कभी-कभी हम अनजाने ही कुछ ऐसी अजीब बात सोच लेते हैं कि हमें उसपर विश्वास नही होता, किसी तरह भी विश्वास नहीं होता और हमें ऐसा प्रतीत होने लगता है कि हमने इसे सपना में देखा है, अपने मन से नही गढ़ा है। एक बूढ़े ज़मींदार ने मुझे बताया कि वह सपने में जंगल में से जा रहा था, स्तेपी-मैदान में निकला और देखा कि मैदान में दो टीले है, अचानक वे औरत की छातियों में बदल गये, उनके बीच एक काला चेहरा उभरा जिसपर आंखों के बजाय चिट्टे जैसे दो चांद थे, ख़ुद वह औरत की टागों के बीच खड़ा था, उसके सामने गहरा काला गड्ढा था जो उसे अपनी ओर खींचता जा रहा था। इसके बाद उसके बाल सफ़ेद होने लगे, हाथ कांपने लगे और वह खनिज जल का इलाज करवाने के लिये डाक्टर

क्नैप के पास विदेश चला गया। उसके जैसे आदमी के लिये इस तरह का सपना देखना – अजीब नहीं था – वह व्यभिचारी जो था।"

उन्होंने मेरा कन्धा थपथपाया।

"लेकिन आप तो न शराबी हैं और न व्यभिचारी – आपको ऐसे सपने क्यों आते है?"

"मालूम नही।"

"हम अपने बारे में कुछ भी नही जानते!"

उन्होंने गहरी सास ली, आंखें सिकोड़ी, कुछ सोचा और फिर से धीमे स्वर में बोले –

"कुछ भी नही जानते!"

आज शाम को सैर करते हुए उन्होंने मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर कहा –

"बूट चले जा रहे हैं – भयानक बात है न? अपने आप चले जा रहे है – धप, धप – और उनके नीचे बर्फ कचर-कचर कर रही है! सच, बहुत खूब! फिर भी आप बहुत किताबी है, बहुत ही! बुरा नही मानिये – यह अच्छा नही और यह चीज़ आपके आड़े आयेगी।"

मैं शायद ही उनसे ज्यादा किताबी हूं और उनकी सारी बातो के बावजूद इस बार वह मुझे बहुत ही ज्यादा बुद्धिवादी लगे।

३५

कभी-कभी ऐसा लगता है कि वह अभी-अभी कही बहुत दूर से आये है जहां लोग दूसरे ही ढंग से सोचते है, अनुभव करते है, एक-दूसरे के साथ दूसरी ही तरह पेश आते है, यहां तक कि हिलते-डुलते भी भिन्न ढंग से है और भाषा भी भिन्न बोलते है। वह थके-हारे-से, भूरे-से, मानो किसी दूसरी दुनिया की धूल से ढके हों, एक कोने में बैठे हुए सभी को परायी-परायी तथा गूंगे की सी आंखों से घूरते रहते हैं।

कल, दोपहर के भोजन के पहले वह इसी रूप में, अपनी ही दुनिया में खोये हुए ड्राइंगरूम में आये, सोफ़े पर बैठ गये और क्षण भर चुप रहने के बाद, दायें-बायें डोलते, हथेलियों से घुटनों को मलते तथा चेहरे को सिकोड़ते हुए अचानक कह उठे –

"क़िस्सा यहीं ख़त्म नहीं हो जाता, नही–यहीं नही।"

हमेशा बुद्धू और लोहे की इस्तरी जैसे शान्त एक व्यक्ति ने पूछा–

"आप किस चीज़ के बारे में ऐसा कह रहे हैं?"

वह इस व्यक्ति को एकटक देखते रहे, नीचे झुके, उन्होंने बरामदे की तरफ़ नज़र दौड़ाई जहां डाक्टर निकीतिन, येल्पातेव्स्की के साथ मै बैठा था और पूछा–

"आप लोग किसके बारे मे बातचीत कर रहे है?"

"प्लेवे के बारे में।"

"प्लेवे के बारे में.. प्लेवे..." उन्होंने सोचते हुए और थोडा रुककर दोहराया मानो पहली बार यह नाम सुना हो, इसके बाद एक पक्षी की तरह अपने को झकझोरा और ज़रा मुस्कराकर बोले–

"मेरे दिमाग़ में आज सुबह से ही कुछ बेवक़ूफी भरी हुई है। किसी ने मुझे यह बताया कि उसने क़ब्रिस्तान में एक क़ब्र पर निम्न पक्तिया पढ़ी है–

सोया हुआ इवान येगोर्येव, इस पत्थर के नीचे
धन्धा सदा किया चमड़े का, चमडा रहा कमाता
था ईमानदार काम में, दिल का बडा भला था
सौप काम-धन्धा पत्नी को, तोडा जग से नाता।
अभी नही था बूढा, शायद, अभी बहुत कुछ करता
पर स्वर्गिक जीवन की ख़ातिर, प्रभु ने उसे बुलाया
शुक्रवार की रात, सनीचर जब पावन दिन आया

इसी तरह का कुछ और ."

वह चुप हो गये, इसके बाद सिर हिलाते और ज़रा मुस्कराते हुए उन्होंने इतना और जोड़ दिया–

"इन्सान की मूर्खता में, जब वह दुर्भावनापूर्ण न हो, कुछ बहुत ही मर्मस्पर्शी, यहां तक कि कुछ मधुर भी होता है . हां, हमेशा होता है . ."

हमें भोजन करने के लिये बुला लिया गया।

३६

"मुझे शराबी अच्छे नही लगते, किन्तु ऐसे लोगों को जानता हूं जो थोड़ी शराब पीने के बाद दिलचस्प हो जाते है, उनमें ऐसी हाज़िरजवाबी, विचार-सौन्दर्य, ऐसी चतुराई और शब्दों की वह विपुलता आ जाती है जो उस वक्त उनमे नही होती जब वे पिये बिना होते है। तब मै शराब को आशीर्वाद देने को तैयार हो जाता हूं।"

सुलेर ने बताया – वह और लेव तोलस्तोय त्वेर्स्काया मड़क पर जा रहे थे। रसाले के दो कवचधारी मैनिकों पर तोलस्तोय की दूर मे ही नज़र पड़ी। धूप में कांसे के कवच की लौ देते हुए वे ऐसे क़दम मिलाकर चल रहे थे मानो एकाकार हो गये हों और उनके चेहरों पर भी शक्ति और जवानी की आत्म-तुष्टि चमक रही थी।

तोलस्तोय ने उनकी भर्त्सना करते हुए कहा –.

"कैसी भव्य मूर्खता है! डंडे से मधाये गये दो जानवर, एकदम जानवर. "

किन्तु जब ये कवचधारी मैनिक उनके क़रीब आ गये तो वह रुके और स्नेहपूर्ण दृष्टि से उन्हे जाते देखकर प्रशसापूर्वक बोले –

"क्या बाकपन है! प्राचीन रोम के सैनिकों जैसे लगते है न? शक्ति, मौन्दर्य – हे भगवान! कितना अच्छा लगता है जब आदमी सुन्दर होता है, कितना अच्छा!"

३७

एक बहुत गर्म दिन वह नीचेवाली सड़क पर मेरे बराबर आ पहुंचे। छोटे-से, शान्त तातारी घोड़े पर सवार वह लिवादिया की तरफ़ जा रहे थे। कुकुरमुत्ते की शक्लवाला, नमदे का हल्का-सा टोप ओढे, भूरे और झबरीले-से तोलस्तोय एक बौने जैसे लग रहे थे।

घोड़े की चाल धीमी करके वह मुझसे बातचीत करने लगे। मै उनकी रक़ाब के साथ-साथ चल रहा था। बातों ही बातो मे मैंने यह ज़िक्र कर दिया कि मेरे पास व० ग० कोरोलेन्को* का पत्र आया है।

* कोरोलेन्को व० ग० (१८५३–१९२१) – रूसी लेखक तथा पत्रकार। – स०

तोलस्तोय ने झल्लाहट से अपनी दाढ़ी को हिलाया –

"वह भगवान में विश्वास करते है ?"

"मुझे मालूम नहीं।"

"सबसे महत्त्वपूर्ण बात तो आपको मालूम नहीं। वह विश्वास करते हैं, केवल नास्तिकों के सामने यह स्वीकार करते हुए शर्माते हैं।"

वह बड़बडाते, झल्लाते और गुस्से से अपनी आंखें सिकोड़ते हुए बोल रहे थे। साफ़ था कि मैं उनके लिये बाधा बन रहा हूं, किन्तु जब मैंने जाना चाहा, तो उन्होने मुझे रोक लिया।

"किधर चल दिये ? मैं तो धीरे-धीरे घोड़ा बढ़ा रहा हूं।"

और फिर से बड़बड़ाये –

"आपके अन्द्रेयेव * भी नास्तिकों से शर्माते हैं, भगवान में विश्वास करते हैं और भगवान से डरते भी है।"

बड़े ड्यूक अ० म० रोमानोव की जागीर के क़रीब तीन रोमानोव – आई-तोदोर जागीर के मालिक, गेओर्गी और शायद द्यूल्बेर से आये हुए प्योत्र निकोलायेविच एक-दूसरे से सटे हुए सडक पर खडे बातें कर रहे थे – वे तीनों तगड़े, हट्टे-कट्टे व्यक्ति थे। एक घोड़ेवाली टमटम तथा घुड़सवारी के एक घोड़े ने सारी सड़क रोक रखी थी। लेव तोल-स्तोय अपने घोड़े को आगे नही ले जा सकते थे। उन्होंने रोमानोव परिवार के इन तीनों व्यक्तियों को कड़ी, मांग करती नज़र से देखा। किन्तु इन तीनों ने तो पहले ही अपने मुंह दूसरी ओर कर लिये थे। घुड़सवारी का घोड़ा ज़रा हिला-डुला, थोड़ा एक तरफ़ को हट गया और इस तरह उसने तोलस्तोय के घोड़े को जाने का रास्ता दे दिया।

अपने घोड़े को आगे बढ़ाकर तथा दो मिनट तक चुप रहने के बाद बोले –

"उल्लुओं ने मुझे पहचान लिया था।"

एक मिनट बाद फिर बोले –

"घोड़ा यह समझ गया था कि तोलस्तोय को तो रास्ता देना ही चाहिये।"

* अन्द्रेयेव ल० न० (१८७१–१९१९) – रूसी लेखक। – स०

३८

"सबसे पहले तो अपने लिये ही अपने को सहेजो, फिर लोगों को भी बहुत कुछ दे सकोगे।"

३९

"जानने का क्या मतलब है? मै जानता हू कि मैं तोलस्तोय हूं, मेरी पत्नी है, बच्चे हैं, सफ़ेद बाल है, असुन्दर चेहरा है, दाढ़ी है– यह सब तो पासपोर्टों में लिखा रहता है। लेकिन आत्मा के बारे में पासपोर्टों में कुछ नहीं लिखा जाता और आत्मा के बारे में मैं केवल इतना ही जानता हूं कि वह भगवान के निकट होना चाहती है। और भगवान क्या है? भगवान वह है जिसका मेरी आत्मा एक अंश है। बस, इतना ही। जिस किसी ने सोचना-विचारना सीख लिया है, उसके लिये आस्था रखना कठिन है और भगवान तो केवल आस्था की ही बात है। तेर्तुलिआन* ने कहा है–"विचार–एक बुराई है।"

४०

अपने उपदेशों की एकरसता के बावजूद यह अद्भुत व्यक्ति इतने विविधतापूर्ण है कि कुछ न पूछिये।

आज पार्क में गास्प्रा के मुल्ला से बातें करते हुए उन्होंने अपने को ऐसे भोले-भाले साधारण देहाती की तरह ज़ाहिर किया जिसके लिये अपने जीवन के अन्तिम दिनों के बारे में सोचने की घड़ी निकट आ गयी हो। छोटे-से, और मानो जान-बूझकर बहुत सिकुड़े-सिमटे हुए वह हट्टे-कट्टे और तगड़े तातार मुल्ला की बग़ल में खड़े ऐसे बूढ़े जैसे लग रहे थे जिसकी आत्मा ने पहली बार जीवन के अर्थ के बारे में सोचा हो और जो उसके द्वारा प्रस्तुत प्रश्नों से घबराता हो। अपनी घनी भौंहों को हैरानी से ऊपर चढ़ाते और पैनी आंखों को भय से मिचमिचाते हुए उन्होंने उनकी असह्य, बेधती लौ को बुझा दिया।

* तेर्तुलिआन (लगभग १६०-२२०) – ईसाई धर्म के धर्मविज्ञानी तथा लेखक। –स०

उनकी खोजती दृष्टि मुल्ला के चौड़े चेहरे पर अपलक जमी हुई थी और पुतलियों में वह तीखापन नही था जिससे लोगों को घबराहट होने लगती थी। वह जीवन के अर्थ, आत्मा और भगवान के बारे में "बचकाना" प्रश्न पूछ रहे थे और असाधारण चतुराई से कुरान के पदों की जगह इंजील के पदों और पैग़म्बरों को प्रस्तुत कर रहे थे। वास्तव में वह खिलवाड़ कर रहे थे और वह भी ऐसे अद्भुत कलात्मक ढग से जो किसी श्रेष्ठ कलाकार और ज्ञानी-मनीषी के लिये ही सम्भव हो सकता है।

कुछ दिन पहले तानेयेव * और सुलेर से संगीत की चर्चा करते हुए उन्होंने बच्चे की तरह उसके सौन्दर्य पर अपना उल्लास प्रकट किया और उस समय यह स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि उन्हें अपना यह उल्लास– अधिक सही तौर पर कहा जाये तो उल्लसित होने की यह क्षमता अच्छी लग रही थी। उन्होंने कहा कि संगीत के बारे में शोपेनहाउर ने ** ही सबसे अच्छे और गम्भीर ढंग से लिखा है। यही चर्चा करते-करते फ़ेत *** के बारे में एक मजेदार चुटकला भी सुना दिया और उन्होंने सगीत को "आत्मा की मूक आराधना" की संज्ञा दी।

"मूक कैसे?" सुलेर ने पूछा।

"इसलिये कि संगीत शब्दहीन है। विचार की तुलना में ध्वनि में अधिक आत्मा होती है। विचार तो बटुए के समान है जिसमें सिक्के खनकते है, मगर ध्वनि किसी चीज़ से भ्रष्ट नही होती, वह भीतर से निर्मल होती है।"

वह स्पष्टतः आनन्द-विभोर होते हुए बडे प्यारे-प्यारे, बच्चों जैसे शब्दों में, सर्वश्रेष्ठ और कोमलतम शब्दों को स्मरण करते हुए संगीत की चर्चा कर रहे थे। अचानक अपनी दाढ़ी में ही मुस्कराकर उन्होने बड़ी कोमलता से मानो दुलार करते हुए कहा–

"सभी संगीतज्ञ बुद्धू होते है। संगीतज्ञ जितना अधिक प्रतिभाशाली होता है, उतना ही अधिक संकीर्ण होता है। अजीब बात है कि लगभग वे सभी के सभी धार्मिक होते है।"

* तानेयेव स० इ० (१८५६–१९१५)–रूसी सगीतकार, पियानोवादक।–स०

** शोपेनहाउर आर्थर (१७८८–१८६०)–जर्मन दार्शनिक-भाववादी।–स०

*** फेत अ० अ० (१८२०–१८९२)–रूसी कवि।–स०

४१

टेलीफ़ोन पर चेख़ोव से –

"आज का दिन मेरे लिये इतना अधिक अच्छा है, मन इतना अधिक खुश है कि मैं चाहता हूं कि आपको भी खुशी महसूस हो। ख़ास तौर पर – आपको! आप इतने अच्छे हैं, बेहद अच्छे है!"

४२

लोग जब कोई ग़लत बात कहते है तो तोलस्तोय उसे न तो सुनते हैं और न उसपर विश्वास करते है। वास्तव में वह पूछ-ताछ नही, जिरह करते है। विरली वस्तुओ के संग्रहकर्त्ता की भांति वह केवल वही स्वीकार करते है जो उनके संग्रह के सामंजस्य मे किसी तरह की गडबड़ी न पैदा करे।

४३

पत्रों पर नजर डालते हुए – "ये लोग बहुत शोर मचाते है, ख़त लिखने रहते है, लेकिन जब मर जाऊंगा तो साल भर बाद यह पूछेगे – कौन था यह तोलस्तोय? अच्छा, वही काउट जो जूते बनाया करता था और फिर उसके साथ कुछ हो गया – वही न?"

४४

अनेक बार मैंने उनके चेहरे पर और उनकी नज़र में ऐसे व्यक्ति की चालाकी और खुशीभरी मुस्कान देखी है जिसे उसके द्वारा छिपायी गयी कोई चीज़ अप्रत्याशित ही मिल जाती है। उसने कोई चीज़ छिपायी और – भूल गया कि कहा छिपायी है। बहुत दिनो तक वह मन ही मन परेशान होता और यह सोचता रहता है – कहां रख दी मैंने यह चीज़ जिसकी मुझे इतनी अधिक ज़रूरत है? वह मन ही मन डरता रहता है कि लोग उसकी इस चिन्ता, उसकी इस खोयी हुई चीज़ के बारे में जान जायेंगे, जान जायेंगे – और वे उसके दिल को ठेस लगानेवाली कोई बुरी बात कह देंगे। अचानक उसे यह याद आ जाता है कि उसने वह चीज़ कहा रखी थी और वह उसे मिल जाती है। वह खुशी

से फूला नहीं समाता और अब ख़ुशी को न छिपाते हुए सभी को ऐसी चालाकीभरी नज़र से देखता है मानो कह रहा हो –

"आप लोग अब मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते।"

किन्तु वह यह नहीं कहता कि उसे वह चीज़ मिल गयी है और कहां मिली है।

इनके बारे में आदमी कभी भी आश्चर्यचकित होते नही थकता। किन्तु ऐसा होते हुए भी इनके साथ अक्सर मिलना-जुलना ख़ासा टेढा मामला है। एक ही कमरे की बात तो दूर, मैं तो इनके साथ एक ही घर में भी न रह पाता। इनके साथ होना तो ऐसे मरुस्थल में होने के समान है जहां सूरज ने सब कुछ झुलस डाला है और जहां अन्तहीन काली रात का भय पैदा करता हुआ ख़ुद सूरज भी झुलसता जा रहा है।

ख़त*

अभी-अभी आपको पत्र भेजा है – इसी समय "तोलस्तोय के भागने" की सूचना देनेवाले तार मिले है। तो लीजिये – मन ही मन आपके साथ अभी तक सम्पर्क बनाये हुए मैं आपको फिर से लिखने बैठ रहा हूं।

इस समाचार के बारे मे मैं जो कुछ कहना चाहता हू, शायद वह सब उलझा-उलझाया, सम्भव है कि तीखा और कटु भी प्रतीत हो – आप मुझे क्षमा करें – मै अपने आपको ऐसे अनुभव कर रहा हूं मानो किसी ने मुझे गले से पकड़ लिया हो और मेरा गला घोंट रहा हो।

उन्होंने अनेक बार और बहुत देर-देर तक मेरे साथ बातचीत की है। जब वह क्रीमिया में, गास्प्रा में रहते थे तो मैं अक्सर उनके यहां जाता था और वह भी बड़ी ख़ुशी से मेरे पास आते थे। मैं बहुत ध्यान और बड़े प्यार से उनकी किताबें पढ़ता था। मुझे लगता है कि उनके बारे में मैं जो कुछ सोचता हूं, उसे कहने का पूरा अधिकार रखता हूं, बेशक मेरा ऐसा करना दुस्साहस ही हो और उनके प्रति लोगों के

* गोर्की ने यह पत्र नवम्बर १९१० मे लेव तोलस्तोय के यास्नाया पोल्याना छोड़ने और उनकी मृत्यु के सम्बन्ध में कोरोलेन्को को लिखा था। किन्तु उन्होंने न तो इस पत्र को समाप्त किया और न ही कोरोलेन्को को भेजा। – सं०

आम रवैये से बिल्कुल भिन्न हो। दूसरों की तुलना में मैं कुछ कम यह नहीं जानता हूं कि प्रतिभा की संज्ञा पाने का उनसे अधिक सुयोग्य कोई अन्य पात्र नही है, कि उनसे ज़्यादा जटिल, आत्मविरोधी और सभी चीज़ों में, हा, हां, सभी चीज़ों में विलक्षण कोई अन्य व्यक्ति नही है। वह किसी विशेष, ऐसे व्यापक अर्थ में विलक्षण हैं जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। उनमें कुछ ऐसा है जो मुझमें हमेशा सभी तथा हर किसी के सामने चीख़-चीख़कर यह कहने की इच्छा पैदा करता है – देखिये हमारी इस धरती पर कैसा अद्भुत व्यक्ति जी रहा है! कारण कि, यो कहना चाहिये, वह बहुत व्यापक रूप में तथा सर्वप्रथम तो मानव हैं – सारी मानवजाति के महामानव है।

किन्तु काउट लेव निकोलायेविच तोलस्तोय के जीवन को "सन्त पिता लेव" में बदलने की हठपूर्वक और तानाशाही कोशिश मुझे अच्छी नही लगती। वह बहुत समय से "दुख भोगने" की सोच रहे थे। उन्होंने येव्गेनी सोलोव्योव और सुलेर के सामने इस बात के लिये अफसोस ज़ाहिर किया था कि वह ऐसा नही कर पाये थे। किन्तु वह यों ही, अपनी आत्मशक्ति की दृढता को जांचने-परखने की स्वाभाविक इच्छा से दुख नही भोगना चाहते थे, बल्कि स्पष्टतः और – दोहराता हूं – इस तानाशाही इरादे से कि अपनी शिक्षा को ज़्यादा वज़नदार बना सकें, अपने उपदेश को अकाट्यता प्रदान कर सकें, अपने दुखभोग से उसे लोगो की दृष्टि मे पावन बना सकें और उन्हें इसे ग्रहण करने के लिये विवश कर सकें, आप समझते है न – विवश कर सके! कारण कि वह जानते है कि उनकी शिक्षा क़ायल करनेवाली नही है। कुछ समय बाद आप उनकी दैनिकी में अपनी शिक्षा तथा अपने व्यक्तित्व के बारे में व्यक्त किये गये सशयवाद के कुछ बढिया नमूने पढ सकेंगे। वह जानते है कि "शहीद और दुख भोगनेवाले बहुधा निरंकुश तथा सन्तापक होते है", – वह सब कुछ जानते है! फिर भी यह कहते है – "यदि मैंने अपने विचारों के लिये दुख-दर्द सहा होता तो वे दूसरा ही प्रभाव उत्पन्न करते।" यह चीज़ मुझे हमेशा उनसे दूर हटाती रही है, क्योंकि ऐसी स्थिति में मैं अपने पर ज़ोर-ज़बर्दस्ती किये जाने, अपनी आत्मा पर हावी होने, उसे शहीदी रक्त की चमक से चकाचौंध कर देने, अपनी गर्दन पर कठसूत्र का जुआ रख देने की कोशिश अनुभव किये बिना नहीं रह सकता।

लेव तोलस्तोय ने हमेशा दूसरी दुनिया में अमरता का खूब बढ़-चढ़कर स्तुतिगान किया है, किन्तु उन्हें वह इस दुनिया में ही अधिक अच्छी लगती है। बिल्कुल सही अर्थ में राष्ट्रीय लेखक के नाते उन्होंने अपनी विशाल आत्मा में हमारी जाति के सभी दोषों-त्रुटियों, हमारे इतिहास की यातनाओ द्वारा हमें दिये गये सभी विकारों को मूर्त्त रूप दिया है... उनमें सभी कुछ राष्ट्रीय है और उनकी सारी शिक्षा वह प्रति-क्रिया और पूर्वजानुरूपता है जिससे हम मुक्ति पाने लगे थे, जिसपर विजयी होने लगे थे।

सन् १९०५ में लिखा गया उनका 'बुद्धिजीवी, राज्य, जनता' पत्र याद कीजिये – कैसा अप्रिय और दुर्भावनापूर्ण पत्र था वह! उसमे मताग्रही की यही गूंज सुनायी देती है – "अच्छा, तो मेरी बात न मानने का मज़ा मिल गया!" तब मैंने अपने प्रति कहे गये उनके शब्दों के आधार पर ही उन्हे उत्तर लिखा था, जिसमें कहा कि वह "बहुत अरसे से ही रूसी जनता के बारे में तथा उसकी ओर से कुछ कहने का अधिकार खो चुके है," क्योंकि मै इस चीज का साक्षी रहा था कि कैसे वह दिल खोलकर उनके साथ बात करने के लिये उनके पास आने-वाले साधारण लोगो की बात सुनना और समझना नही चाहते थे। मेरा पत्र बहुत ही उग्र था और इसलिये मैने वह उन्हें नही भेजा था।

अपने विचारों को अधिकतम महत्त्व देने के लिये अब वह शायद आखिरी छलांग लगा रहे है। वसीली बुसलायेव की भांति वह हमेशा ही ऐसी छलांगों के शौक़ीन रहे है, किन्तु हमेशा ही अपनी पवित्रता-पावनता की पुष्टि और अपने लिये प्रभामण्डल की खोज के हेतु। यह निर्मम धर्म-परीक्षण है, यद्यपि रूस के प्राचीन इतिहास और प्रतिभावान व्यक्ति की व्यक्तिगत यातनाओं ने उनकी शिक्षा को उचित सिद्ध किया है। पापों के अवलोकन, जीवन की इच्छा को अपने अधीन बनाने के द्वारा ही पावनता प्राप्त की जाती है ..

लेव निकोलायेविच तोलस्तोय में बहुत कुछ ऐसा है जो कभी-कभी मेरे मन में उनके प्रति लगभग घृणा जैसी भावना पैदा करता है और मेरी आत्मा पर बहुत भारी बोझ बना रहता है। उनका अत्यधिक विकसित अहंभाव – एक भयानक, लगभग घृणित चीज़ हैं, उसमें स्व्यातोगोर-बोगातीर जैसा कुछ है जिसका भार धरती सहन नही कर सकती थी। हां, वह महान हैं! मुझे पूरा विश्वास है कि जो कुछ वह

कहते हैं, उसके अलावा बहुत कुछ ऐसा है जिसके बारे में वह हमेशा चुप रहते हैं – यहां तक कि अपनी दैनिकी में भी उसकी चर्चा नहीं करते और सम्भवतः कभी किसी से नहीं कहेंगे। यह "कुछ" तो केवल कभी-कभी बातचीत के वक़्त संकेतों के रूप में ही उनकी ज़बान पर आ जाता है, संकेतों के रूप में ही उनकी दैनिकी की उन दो कापियों में भी, जो उन्होंने मुझे और ल० अ० सुलेरजीत्स्की को पढ़ने को दी थीं, हमारे सामने आता है। मुझे यह "सभी पुष्टियों से इन्कार", गहनतम और क्रूरतम नाशवाद जैसा लगता है जिसका सम्भवतः स्थायी, असीम हताशा और एकाकीपन के आधार पर विकास हुआ है तथा जिसे इस व्यक्ति के सिवा किसी ने भी इतनी भयानक स्पष्टता से अनुभव नही किया है। मुझे अक्सर ऐसे लगा है कि अपनी आत्मा की गहराई में वह लोगो के प्रति एकदम उदासीन हैं, उनकी तुलना में वह इतने ऊंचे और इतने अधिक महान हैं कि वे उन्हें कीड़े-मकोड़ों जैसे लगते है और उनकी दौड़-धूप उन्हें हास्यास्पद और दयनीय प्रतीत होती है। वह लोगों से बहुत दूर किसी रेगिस्तान में चले गये हैं और वहां अपनी आत्मा की सारी शक्ति को सकेन्द्रित करके एकान्त में "सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण" यानी मृत्यु के बारे में सोचते रहते है।

वह जीवन भर मृत्यु से डरते और घृणा करते रहे, ज़िन्दगी भर उनकी आत्मा पर यह भय हावी रहा कि उन्हें, तोलस्तोय को मरना होगा? सारी दुनिया, पूरे भूमण्डल की दृष्टि उनपर केन्द्रित है। चीन, भारत, अमरीका – सभी दिशाओं से उनके साथ सजीव, स्पन्दित सूत्रो से जुड़े हुए हैं, उनकी आत्मा सभी के लिये और हमेशा के लिये है! अपने नियमों में अपवाद स्वरूप प्रकृति भला एक व्यक्ति को शारीरिक अमरता क्यों न प्रदान कर दे? ज़ाहिर है कि वह इतने समझदार और बुद्धिमान है कि चमत्कारों-करिश्मों में विश्वास नही कर सकते, किन्तु, दूसरी ओर, वह विद्रोही और खोजी हैं तथा अनजानी बैरकों के ख़्याल से भयभीत और बुरी तरह घबरानेवाले जवान रगरूट की भांति बेहद डरते-घबराते हैं, ऊधम मचाते हैं। मुझे याद है कि एक दिन गास्प्रा मे, जब वह स्वस्थ हो चुके थे, उन्होंने लेव शेस्तोव* की पुस्तक 'नीत्शे

* शेस्तोव लेव (१८६६–१९३८) – भाववादी दार्शनिक तथा लेखक। अस्तित्ववाद के प्रतिनिधि। – स०

तथा काउंट तोलस्तोय की शिक्षा में नेकी और बदी' पढ़ने के बाद अ० प० चेख़ोव के यह कहने पर कि "मुझे यह पुस्तक अच्छी नहीं लगी", लेव तोलस्तोय ने जवाब दिया –

"लेकिन मुझे दिलचस्प लगी। बनावटी ढंग से लिखी गयी है, लेकिन बुरी नहीं, दिलचस्प है। दोषदर्शी अगर ईमानदार हों तो मुझे अच्छे लगते हैं। वह लिखते हैं कि "सचाई की जरूरत नही", और ठीक लिखते हैं। क्या करना है उन्हें सचाई का? हर हालत में वह मर जायेंगे।"

यह देखकर कि उनकी बात समझ में नहीं आई, उन्होंने व्यंग्यपूर्वक हंसते हुए इतना और जोड़ दिया –

"अगर आदमी सोच-विचार करना सीख जाता है तो वह चाहे कुछ भी क्यों न सोचे, हमेशा अपनी मौत के बारे में सोचता है। सभी दार्शनिक ऐसा ही करते है। अगर आदमी को हर हालत में मर ही जाना है तो उसे सचाइयों से क्या लेना-देना है?"

इसके बाद उन्होंने यह कहना शुरू किया कि सभी के लिये सचाई एक ही है – ईश्वर-प्रेम। किन्तु इस विषय की उन्होंने उदासीनता और थके-थके ढंग से चर्चा की। नाश्ते के बाद बरामदे में बैठे हुए उन्होंने फिर से पुस्तक हाथ में ले ली और वह जगह ढूंढ़कर, जहा लेखक ने यह लिखा था – "तोलस्तोय, दोस्तोयेव्स्की और नीत्शे अपने प्रश्नों के उत्तर पाये बिना जीवित नही रह सकते थे और उनके लिये किसी तरह का उत्तर न पाने के बजाय कोई भी उत्तर पाना बेहतर था," – वह हंसे और बोले –

"वाह, कैसा दिलेर नाई है, सीधे-सीधे ही लिख दिया कि मैंने अपने को धोखा दिया है, मतलब यह कि दूसरों को भो धोखा दिया है। इससे तो यही साफ़-साफ़ नतीजा निकलता है..."

मुलेर ने पूछा – "लेकिन नाई क्यों?"

"ऐसे ही दिमाग़ में आ गया," उन्होंने सोचते हुए जवाब दिया, "बड़ा फ़ैशनपरस्त और बांका-छैला है वह – और मुझे मास्को का एक नाई याद आ गया जो अपने देहात में रहनेवाले मामा की शादी पर गांव गया था। बहुत अच्छे तौर-तरीक़े थे उसके, खूब बढ़िया नाच सकता था और इसलिये वह हर किसी को तिरस्कार की दृष्टि से देखता था।"

यह बातचीत मैंने लगभग शब्दशः उद्धृत की है, मेरे मन पर अंकित है तथा चकित करनेवाली अन्य चीज़ों की भांति मैंने इसे भी लिख लिया था। मैं और सुलेरजीत्स्की बहुत कुछ लिखा करते थे, किन्तु सुलेर ने मेरे पास अर्ज़ामास आते हुए रास्ते में अपनी टिप्पणियां खो दीं। वह तो यों भी लापरवाह क़िस्म के आदमी थे और यद्यपि लेव तोलस्तोय को एक औरत की तरह प्यार करते थे, तथापि उनके प्रति उनका अजीब-सा, कुछ घमण्डी जैसा रवैया था। मैंने भी अपनी टिप्पणिया कही रख दी और वे मुझे मिल नही रही। वे रूस में ही किसी के पास होंगी। मैं बहुत ग़ौर से तोलस्तोय की हर गति-विधि को देखा करता था, क्योंकि सजीव, सच्ची आस्थावाले व्यक्ति की खोज में रहता था, अभी तक इस खोज में हू और ज़िन्दगी भर रहूंगा। मैं इस कारण भी ऐसा करता था कि हमारी असभ्यता की चर्चा करते हुए अ० प० चेख़ोव ने एक बार यह शिकायत की थी –

"गेटे का एक-एक शब्द लिखा जाता था, मगर तोलस्तोय के विचार हवा में ही खो जाते है। भैया, यह तो भयानक रूसी ढंग है। बाद मे लोगों को होश आयेगा, अपने संस्मरण लिखने लगेंगे और बेपर की उडा देंगे।"

लेकिन मै फिर से शेस्तोव की चर्चा आगे बढ़ाता हू –

"भयानक कल्पना-दृश्य बनाते हुए नही जिया सकता," उसने लिखा है। "वह यह कैसे जानता है कि आदमी क्या कर सकता है और क्या नहीं कर सकता? अगर वह खुद जानता होता, भयानक दृश्य देखता तो ऊल-जलूल चीज़ें न लिखता, किसी गम्भीर काम में अपने को लगाता जैसा कि बुद्ध ने जीवन भर किया।"

किसी ने कहा कि शेस्तोव यहूदी हैं।

"शायद ही ऐसा हो," लेव तोलस्तोय ने यक़ीन न करते हुए कहा। "नहीं, वह यहूदी जैसा नही लगते है। नास्तिक यहूदी नहीं होते – आप लोग किसी एक का नाम तो लीजिये ... नही ले सकते!"

कभी-कभी मुझे ऐसा लगता कि यह बूढ़ा जादूगर मौत के साथ खिलवाड़ कर रहा है, उसके साथ आंख-मिचौनी खेलता है और किसी तरह उसकी आखों में धूल झोंकना चाहता है – मैं तुझसे नहीं डरता, तुझे प्यार करता हूं, तेरी राह देख रहा हूं। किन्तु स्वयं पैनी दृष्टि से यह देख रहा है – कैसी है तू? तेरे पीछे, वहां, आगे क्या है? क्या तू मुझे

पूरी तरह से नष्ट कर डालेगी या मेरा कुछ बच जायेगा?

उनके इन शब्दों ने – "मैं सुखी हूं, बहुत सुखी हूं, बेहद सुखी हूं" – मन पर अजीब प्रभाव छोड़ा। और इन शब्दों के फ़ौरन बाद ही यह कहा – "काश, कुछ दुख भोग लूं।" उनकी दुख भोगने की इच्छा – यह भी बिल्कुल सच्ची है। एक क्षण को भी मुझे इस बात का सन्देह नहीं है कि अभी पूरी तरह स्वस्थ न होते हुए भी उन्हें इस चीज़ से सच्ची ख़ुशी होती अगर वह जेल चले जाते, निर्वासित हो जाते, संक्षेप में यह कि अगर अपने सिर पर शहीदी का सेहरा बांध पाते। शायद शहादत मौत की कुछ सफ़ाई हो सकती है, उसे बाहरी, औपचारिक पक्ष की दृष्टि से अधिक समझ में आनेवाली और स्वीकार्य बना सकती है। किन्तु मुझे विश्वास है कि उन्हें कभी और कही भी ख़ुशी नही मिली – न तो "बुद्धिमत्तापूर्ण पुस्तकों में", "न घोड़े की पीठ पर" और "न औरत के आलिंगन में"। वह "पृथ्वी के स्वर्ग" का पूरा सुख अनुभव नहीं करते। वह इसके लिये कही अधिक बुद्धिवादी है और जीवन तथा लोगों को बहुत अधिक अच्छी तरह जानते है। उन्ही के कुछ और शब्द –

"ख़लीफ़ा अब्दुर्रहमान को पूरी ज़िन्दगी में चौदह सुखी दिन मिले थे, लेकिन मुझे तो शायद इतने भी नही मिले। वह इस कारण कि मैं कभी जिया ही नही, मैं अपने लिये, अपनी आत्मा के लिये जीना नहीं जानता, बल्कि दिखावे के लिये, लोगो के लिये जीता हू।"

अ० प० चेख़ोव ने उनके यहा से जाते हुए मुझसे कहा – "मै यह विश्वाम नहीं करता कि वह कभी सुखी नही थे।" लेकिन मैं इस बात का विश्वाम करता हूं। वह सुखी नही रहे थे। किन्तु यह सच नही कि वह "दिखावे" के लिये जीते रहे। हा, वह लोगो को अपने पास फ़ालतू बच रहनेवाला अंश उमी तरह दे देते थे, जैसे भिखारियो को कुछ दिया जाता है, उन्हें लोगों को कुछ करने को विवश करना, पढ़ने, सैर करने, केवल सब्ज़ियां खाने, किसान को प्यार करने और लेव तोलस्तोय के तर्कपूर्ण धार्मिक विचारों की अचूकता में विश्वास करने को "विवश करना" अच्छा लगता था। लोगों को कुछ न कुछ दे देना चाहिये जिससे या तो उन्हें सन्तोष हो जाये या वे उसमें व्यस्त हो जायें और आपका पिंड छोड़ दें! वे आपको आपके अभ्यस्त, यातनापूर्ण और कभी-कभी "महान" के प्रश्न से सम्बन्धित तलहीन भंवर के

सुखद एकाकीपन में खोया रहने दें।

अव्वाकूम और शायद तीखोन ज़ादोन्स्की को छोड़कर बाक़ी सभी रूसी धर्म-प्रचारक उदासीन लोग थे, क्योंकि उनका कोई सजीव और सक्रिय विश्वास नही था। जब मैंने 'रसातल' नाटक में लुका नामक पात्र की रचना की तो मैंने इसी तरह के बूढ़े को चित्रित करना चाहा था – उसे लोगों में नहीं, "सभी तरह के उत्तरो" में दिलचस्पी थी। लोगो से तो अनिवार्य रूप से उसकी भेंट होती थी, वह उन्हें केवल इसलिये तसल्ली-दिलासा देता था कि वे उसके जीने में बाधा न डाले। ऐसे लोगो का सारा फ़लसफ़ा, सारा उपदेश भी भीख ही होता है जो वे छिपी हुई घृणा मे दूसरो को देते है और इस उपदेश की तह मे भी भीख जैसे और दयनीय शब्द छिपे रहते हैं –

"मेरा पिंड छोड़ दीजिये! भगवान या अपने बन्धु-मानव को प्यार कीजिये, मगर मुझे परेशान नही करे! भगवान पर लानत भेजिये, परायों को प्यार कीजिये, मगर मुझे परेशान नहीं करें! मेरा पिंड छोड़ दीजिये, क्योंकि मै इन्सान हू और मृत्यु ही मेरी नियति है!"

हाय, स्थिति ऐसी है, बहुत समय तक ऐसी ही रहेगी! वह इससे भिन्न हो भी नही सकती थी और इसके लिये भिन्न होना सम्भव भी नही, क्योंकि लोग व्यथित हैं, थके हुए है, बुरी तरह से बिखरे-बिखराये है और सब एकाकीपन के शिकजे मे कसे हुए है जो आत्मा का सारा रस निचोड लेता है। लेव तोलस्तोय अगर चर्च के साथ सुलह कर लेंगे तो मुझे इससे ज़रा भी हैरानी नही होगी। इसमे भी अपना ही एक तर्क होगा – सभी लोग, बेशक वे बिशप ही क्यों न हों, समान रूप मे तुच्छ हैं। वास्तव में यह सुलह न होती, उनके लिये तो यह सिर्फ़ तर्कसगत क़दम होता – "मै उनको क्षमा कर रहा हूं जो मुझसे घृणा करते है।" यह ईसाई धर्म के अनुरूप कार्य होता और इसकी तह में एक हल्का, तीखा व्यंग्य छिपा रहता जिसे बुद्धिमान व्यक्ति द्वारा मूर्खों से लिया गया बदला समझा जा सकता था।

मैं वही, वैसे और उसी के बारे में नही लिख रहा हूं जिसके बारे मे लिखना चाहता था। मेरी आत्मा में कुत्ता हूंक रहा है और मैं अपने सामने किसी मुसीबत के आसार देख रहा हूं। अख़बार आ गये है और अभी यह स्पष्ट हो गया है कि हमारे देश में एक किस्सा रचा जाने लगा है – कभी कही काहिल और निकम्मे लोग रहते थे और उनके

यहां एक सन्त-महात्मा का जन्म हुआ। आप ज़रा ख़्याल तो करें कि हमारे देश के लिये इस वक़्त यह क़िस्सा ख़ास तौर पर कितना हानिकारक है जब निराशा से लोगों के सिर नीचे झुके हुए हैं, अधिकांश की आत्मायें रिक्त हैं और श्रेष्ठ लोगों की आत्मायें शोक से परिपूर्ण हैं। भूखे और पीड़ित लोग कोई मनगढ़न्त क़िस्सा, कोई मिथक चाहते हैं। इस तरह वे अपनी पीड़ा से मुक्ति पाना, अपनी व्यथा को शान्त करना चाहते हैं! वे उसी की रचना करेंगे जो तोलस्तोय चाहते थे, किन्तु जिसकी ज़रूरत नहीं है—एक महात्मा और सन्त की जीवनी की, जबकि वह इसलिये महान और पावन हैं कि इन्सान हैं—पागलपन तथा यातना की सीमा तक सुन्दर इन्सान हैं, इस शब्द के सही अर्थ में इन्सान हैं। मैं यहां ख़ुद अपना खण्डन करता प्रतीत हो रहा हूं—लेकिन इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। वह—इन्सान, अपने लिये नहीं, बल्कि लोगों के लिये भगवान को खोज रहा है ताकि वह ख़ुद अपने द्वारा चुने गये रेगिस्तान में चैन अनुभव कर सके। उन्होंने हमें एक नयी इंजील दे दी है ताकि हम ईसा मसीह की असंगतियों को भूल जायें, उन्होंने ईसा मसीह के बिम्ब को सीधा-सरल बना दिया है, उसके जुझारू तत्त्वो को मुलायम कर दिया है और हमारे लिये पृथ्वी पर भेजनेवाले की इच्छा के सम्मुख नतमस्तक होने का सिद्धान्त प्रस्तुत कर दिया है। इसमें कोई सन्देह नही कि तोलस्तोय की इंजील को स्वीकार करना अधिक आसान है, क्योंकि वह रूसी लोगों के "स्वभाव" के अधिक अनुरूप है। लोगों को कुछ देना चाहिये था, क्योंकि वे शिकवा-शिकायत करते हैं, अपनी आहों से धरती को कम्पित करते है और "मुख्य ध्येय" की ओर से दूसरी तरफ़ ध्यान हटाते हैं। 'युद्ध और शान्ति' और इसी तरह की दूसरी चीजें शोकाकुल रूसी धरती के दुख-दर्द और निराशा-हताशा को दूर करने में असमर्थ है।

'युद्ध और शान्ति' के बारे में उन्होंने ख़ुद यह कहा था—"झूठी नम्रता को एक तरफ हटाते हुए कह सकता हू कि यह एक अन्य 'इल्याद' है।" म० इ० चाइकोव्स्की* ने 'बचपन' और 'किशोरावस्था' के बारे में उन्हीं के मुंह से इस तरह का उच्च मूल्यांकन सुना था।

---

* चाइकोव्स्की म० इ० (१८५०-१९१६)—रूसी नाटककार, ऑपेरा, बैले के संक्षिप्त कथावस्तु लेखक, साहित्यालोचक, प्रसिद्ध रूसी संगीतज्ञ प० इ० चाइकोव्स्की के भाई।—सं०

अभी-अभी नेपल्ज़ के पत्रकार मेरे पास आये थे – उनमें से एक रोम से भी यहां पहुंच गया था। वे मुझसे यह बताने का अनुरोध कर रहे थे कि तोलस्तोय के "पलायन" के बारे में मेरा क्या मत है, वे इसे "पलायन" ही कह रहे थे। मैंने उनसे बातचीत करने से इन्कार कर दिया। निश्चय ही आप इस चीज़ को समझ रहे होंगे कि मेरी आत्मा में भयानक उथल-पुथल मची हुई है – मै तोलस्तोय को सन्त-महात्मा के रूप में नही देखना चाहता। मेरी तो यही कामना है कि वह एक पापी के रूप में पापयुक्त संसार के हृदय के निकट रहें, सदा-सर्वदा के लिये हम सभी के हृदय के निकट बने रहें। पुश्किन और तोलस्तोय – हमारे लिये इनसे अधिक न तो कुछ महान है, न मूल्यवान है...

लेव तोलस्तोय नहीं रहे।

तार आ गया है और उसमें साधारण शब्दों में लिखा हुआ है – देहान्त हो गया।

दिल पर आघात हुआ, मैं दुख और पीड़ा से रो पडा और अब, कुछ-कुछ पागल की सी हालत में मैं उनकी उस रूप में कल्पना करता हूं जिसमें उन्हें जानता था, उन्हें देखता था – बहुत ही मन हो रहा है उनकी चर्चा करने को। मैं अब ताबूत में उनकी कल्पना कर रहा हूं – नदिया के तल के चिकने पत्थर की तरह वह लेटे हुए हैं और सम्भवतः उनकी धोखा देनेवाली, सभी के लिये अनबूझ मुस्कान उनकी सफ़ेद दाढी में चुपके से छिपी हुई है। आख़िर तो उनके हाथों को भी चैन से टिका दिया गया है – वे अपनी कडी मेहनत ख़त्म कर चुके है।

मुझे उनकी पैनी दृष्टिवाली आंखें याद आ रही है – वे सब कुछ आर-पार देख लेती थी, उनकी उंगलियो की गति-विधियां याद आ रही है जो हवा में हमेशा मानो कोई आकृति-सी बनाती रहती थी, उनके साथ हुई बातें, उनके मज़ाक़, उनके मनपसन्द देहाती शब्द और अस्पष्ट-अनिश्चित-सी आवाज़ – यह सभी कुछ याद आ रहा है। और मैं देख रहा हूं कि कितने अधिक जीवन को इस व्यक्ति ने अपनी बांहों में भर रखा था, वह कितने अधिक बुद्धिमान और – भयानक थे।

एक बार मैंने उन्हें ऐसे रूप में देखा जैसे शायद किसी ने भी न देखा हो। मैं सागर-तट के साथ-साथ इनके पास गास्प्रा जा रहा था

कि युसूपोव की जागीर के क़रीब, ठीक सागर-तट पर चट्टानों के बीच मुझे इनकी छोटी और अटपटी-सी आकृति दिखाई दी। वह मुसा-मुसाया भूरा सूट और खस्ताहाल-सा टोप पहने थे। वह गालों को हाथों पर टिकाये बैठे थे, उनकी दाढ़ी के रुपहले बाल उंगलियों के बीच से लहरा रहे थे, वह दूर सागर की ओर देख रहे थे और छोटी-छोटी, हरी लहरें चुपचाप तथा स्नेहपूर्वक उनके पांवों के क़रीब आ रही थी मानो इस बूढ़े जादूगर को अपनी दास्तान सुना रही हों। धूप-छांव का दिन था, चट्टानों पर बादलों की परछाइयां रेंग रही थी और पत्थरों के साथ-साथ बुज़ुर्ग कभी तो चमक उठते और कभी छाया की लपेट में आ जाते। गहरी दरारोंवाली बड़ी-बड़ी चट्टानें तेज़ गन्धवाले जल-पौधों से ढकी हुई थी – एक दिन पहले ज़ोर की लहरें उठी थी। वह भी मुझे सजीव हो उठी प्राचीन चट्टान जैसे लगे जिसे हर चीज़ का आरम्भ और उद्देश्य मालूम है और जो यह सोच रही है कि चट्टानों तथा पृथ्वी की घास, सागर के पानी, मानव और चट्टानों से सूरज तक सारी दुनिया का कब और क्या अन्त होगा। सागर भी इसी चट्टान जैसी आत्मा का अंश था, इर्द-गिर्द की हर चीज़ उन्ही से उत्पन्न हुई थी, उन्ही का अंग थी। चिन्तन की मुद्रा में निश्चेष्ट बुज़ुर्ग चट्टान के नीचे फैले अन्धेरे में भविष्यवक्ता और जादूगर-से लग रहे थे, किसी चीज़ की खोज में नीले शून्य में ऐसे खो गये थे मानो उन्ही की सकेन्द्रित इच्छा-शक्ति लहरों को निकट बुलाती और दूर भगाती थी, बादलों तथा परछाइयो का संचालन करती थी जो मानो चट्टानो को हिलाते-डुलाते थे, उन्हें जगाते थे। अचानक, पागलपन के एक क्षण में मैंने यह अनुभव किया कि – शायद! – वह उठकर खड़े हो जायेंगे, हाथ हिलायेंगे – और सागर गतिहीन हो जायेगा, शीशे जैसा बन जायेगा, चट्टानें हिलने-डुलने लगेंगी, चिल्ला उठेंगी, इर्द-गिर्द हर चीज़ सजीव हो जायेगी, शोर मचाने लगेगी, विभिन्न आवाज़ों में अपने बारे में, उनके बारे में, उनके विरुद्ध बोलने लगेगी। इस समय मैंने क्या अनुभव किया था, उसे शब्दों में व्यक्त करना सम्भव नही। मेरी आत्मा में उल्लास और भय भी था और फिर सब कुछ एक सुखद विचार में घुल-मिल गया –

"जब तक यह व्यक्ति इस धरती पर विद्यमान है, मैं यतीम नहीं हूं!"

तब मैं बहुत सावधानी से, ताकि मेरे पांवों के नीचे कंकड़ों की आवाज़ न हो और उनके चिन्तन में कोई बाधा न पड़े, वापस चला गया। लेकिन अब मैं अपने को यतीम महसूस कर रहा हूं, लिख रहा हूं और रो रहा हूं – जीवन में कभी भी ऐसे हताश, ऐसे दुखी होकर, ऐसे टीसते हृदय से नही रोया था। मुझे मालूम नही कि मैं उन्हें प्यार करता था या नही – किन्तु इस चीज़ का क्या महत्व है कि मैं उन्हें प्यार करता था या घृणा? वह हमेशा ही मेरी आत्मा में विराट, गहन अनुभूतियां और उथल-पुथल पैदा करते थे। यहां तक कि उनके द्वारा पैदा की जानेवाली अप्रिय और शत्रुतापूर्ण भावनायें भी ऐसे रूप धारण करती थी जो मन पर बोझ नही बनती थी, बल्कि मानो आत्मा मे विस्फोट करके उसे अधिक संवेदनशील और अधिक ग्रहण करने की क्षमतावाली बनाती थी। उस समय तो वह बहुत ही अच्छे लगते थे, जब तलों को इस तरह घसीटते हुए मानो ऊबड़-खाबड़ रास्ते को ज़बर्दस्ती समतल कर रहे हों, किसी दरवाज़े या किसी कोने के पीछे से ऐसे व्यक्ति की भांति जो इस धरती पर बेहद चलने का अभ्यस्त हो, छोटे-छोटे, हल्के-हल्के और तेज़ क़दम बढ़ाते हुए सामने आते, पेटी में अपनी उंगलियां खोंस लेते, क्षण भर को रुकते, पैनी नज़र से देखते जो फौरन हर नयी चीज़ को ताड़ लेती थी तथा फ़ौरन हर चीज़ का भाव समझ जाती थी।

"नमस्ते!"

उनके इस अभिवादन-शब्द का मैं हमेशा यह अर्थ लगाता था कि मुझे कोई खास खुशी नही हो रही और आपके लिये उसमें कोई खास तुक नही, फिर भी नमस्ते!

वह, छोटे-से तोलस्तोय बाहर आते और तत्काल सभी उनसे छोटे हो जाते। किसानो जैसी दाढ़ी, खुरदरे, मगर असाधारण हाथ, मामूली-से कपड़े। उनका यह बाहरी, सुविधाजनक जनवाद बहुत-से लोगों को धोखे मे डाल देता था। अक्सर यह देखने को मिलता कि "कपड़ो के अनुसार" लोगो का स्वागत-सत्कार करनेवाले रूसी – एक पुरानी दासवृत्ति! – महकती "सहजता-सरलता" की वह धारा बहाने लगते जिसे बेतकल्लुफ़ी कहना कही अधिक सही होगा।

"अरे, तुम, हमारे प्यारे! तो ऐसे हो तुम! आखिर तो मुझे अपनी मातृभूमि के महानतम सपूत को जी भरकर देखने का सौभाग्य

प्राप्त हुआ। अभिवादन, चिर अभिवादन, स्वीकार करो मेरा हार्दिक प्रणाम!"

यह है मास्को का, रूसी व्यक्ति का, सीधा-सरल और हार्दिक ढंग, किन्तु एक अन्य "मुक्त-चिन्तकों" का ढंग भी है–

"लेव निकोलायेविच! आपके धार्मिक-दार्शनिक विचारों से सहमत न होते हुए भी आपके रूप में एक महान कलाकार के प्रति मैं गहरी श्रद्धा रखता हूं.."

अचानक किसानों जैसी दाढ़ी, मुसे-मुसाये, जनवादी कुरतेवाले व्यक्ति के भीतर से एक बूढ़ा कुलीन, एक भव्य अभिजात सामने आ जाता था और तब सीधे-सरल, पढ़े-लिखे तथा अन्य सभी लोगों को ठण्डे पसीने आने लगते थे। शुद्ध रक्त के इस व्यक्ति को देखना, उनकी उदात्तता और हाव-भाव के सजीलेपन को देखना, बातचीत की गर्वीली संयतता और शब्दों की घातक, सुन्दर अचूकता को सुनना भला लगता था। उनमें कुलीन तो उससे कुछ कम नहीं था जितना कि भूदासो के लिये ज़रूरी हो सकता है। जब कभी इन लोगो ने तोलस्तोय को कुलीन के रूप में सामने आने को मजबूर किया तो वह किसी बाधा के बिना बड़ी आसानी से सामने आ जाते थे और इनपर ऐसे चोट करते थे कि ये घिघियाते तथा किकियाते ही रह जाते थे।

इसी तरह के एक रूसी आदमी की "सहजता-सरलता", एक मास्कोवासी के साथ मुझे एक बार यास्नाया पोल्याना से मास्को तक सफ़र करना पडा। वह बहुत देर तक अपना मानसिक सन्तुलन नही लौटा पाया। वह दयंनीय ढंग से मुस्कराता और चकराया-चकराया-सा लगातार यही रट लगाये रहा–

"मैं तो जैसे भट्ठी मे से निकलकर आया हूं। किनने कठोर है छि!"

और फिर स्पष्ट रूप से अफसोस जाहिर करते हुए बोला–

"मैंने तो सोचा था कि वह वास्तव में ही अराजकतावादी है। सभी यह कहते हैं कि वह अराजकतावादी हैं, अराजकतावादी है और मैंने विश्वास कर लिया .."

यह व्यक्ति बहुत धनी, एक बड़ा कारख़ानेदार था, उसकी बहुत बड़ी तोंद और मांस के रंग का चर्बी चढ़ा चेहरा था– उसे किसलिये इस चीज़ की ज़रूरत थी कि तोलस्तोय अराजकतावादी हों? यह

रूसी आत्मा का एक "गहरा राज़" है।

लेव तोलस्तोय जब यह चाहते थे कि वह किसी को अच्छे लगें तो किसी समझदार और सुन्दर नारी की तुलना में भी अधिक आसानी से इसमें सफल हो जाते थे। उनके यहां भिन्न लोग बैठे थे – बड़े ड्यूक निकोलाई मिखाइलोविच, रंगसाज़ इल्या, याल्टा से आया हुआ सामाजिक-जनवादी, कोई जर्मन संगीतज्ञ, श्टूनडिस्ट पात्सूक, काउंटेस क्लेनमीख़ेल का कारिन्दा, कवि बुल्गाकोव – और सभी मुग्ध भाव से उनको देख रहे थे। वह उन्हें लाओ-त्से की शिक्षा का अर्थ समझा रहे थे और मुझे ऐसे लग रहा था मानो वह एक अद्भुत व्यक्तिवाला आर्केस्ट्रा हैं – ऐसे व्यक्तिवाला आर्केस्ट्रा जो एकसाथ कई साज़ – तुर्ही, ढोल, हार्मोनियम और बांसुरी – बजा सकता है। मैं भी उन्हें वैसे ही देख रहा था, जैसे अन्य सभी। अब मैं उन्हें एक बार फिर देखना चाहता हू, मगर कभी नही देख पाऊंगा।

पत्रकार यहां आये थे, ज़ोर देकर यह कह रहे थे कि रोम में एक ऐसा तार पहुंचा है जो "लेव तोलस्तोय की मृत्यु का खण्डन" करता है। वे बात का बतंगड़ बनाते और बोलते रहे, रूस के प्रति सहानुभूति प्रकट करने के लिये शब्दों की बौछार करते रहे। मगर रूसी अख़बार किसी तरह के सन्देह की कोई गुंजाइश नही छोड़ते।

तरस खाते हुए भी उनके सामने झूठ बोलना सम्भव नहीं था। सख़्त बीमारी की हालत मे भी वह अपने प्रति तरस की भावना पैदा नहीं करते थे। उनके समान लोगो पर तरस खाना नीचता है। उनकी चिन्ता करनी चाहिये, उन्हें सहेजना चाहिये, यह नही कि उन पर घिसे-पिटे और भावनाहीन शब्दों की धूल बिखरायी जाये।

वह पूछते –

"मैं आपको अच्छा नही लगता न?"

यही जवाब देना ज़रूरी था – "हां, नही अच्छे लगते।"

"आप मुझे नही चाहते?" – "हां, आज मैं आपको नही चाहता।"

प्रश्न करने के मामले में वह निर्मम थे और उत्तर देने में संयत, जैसा कि किसी मनीषी को शोभा देता है।

वह अद्भुत सुन्दर ढंग से अतीत की चर्चा करते और सबसे बढ़-चढ़कर तो तुर्गेनेव की। फ़ेत का ख़ुशमिज़ाजी से मुस्कराते हुए उल्लेख करते और हमेशा ही उनके बारे में कोई हास्यजनक बात सुनाते। नेक्रासोव का रुखाई और संशयात्मक ढंग से ज़िक्र करते, मगर सभी लेखकों की ऐसे चर्चा करते मानो वे उनके बच्चे हों और वह पिता के रूप में उनकी सारी त्रुटियो से परिचित हों और लीजिये! – उनके गुणों की तुलना मे उनके अवगुणों पर पहले ज़ोर देते हो। जब कभी वह किसी के बारे में बुरी टीका-टिप्पणी करते तो मुझे ऐसे लगता कि श्रोताओं को भीख दे रहे है, ऐसी टीका-टिप्पणी सुनना अटपटा-सा लगता, उनकी पैनी मुस्कान के सामने बरबस आखें झुक जाती और कुछ भी याद न रहता।

एक बार उन्होंने बहुत ज़ोर देते हुए यह प्रमाणित किया कि ग० इ० उस्पेन्स्की तूला-प्रदेश की बोली मे लिखनेवाले लेखक थे और उनमे प्रतिभा नाम की कोई चीज़ नही थी। किन्तु मेरे सामने उन्होंने अ० प० चेखोव से यह कहा –

"यह है लेखक! अपनी निष्कपटता की शक्ति से वह दोस्तोयेव्स्की की याद दिलाते है, मगर दोस्तोयेव्स्की राजनीति को अपनी रचनाओं में घसीटते रहे और दिखावा करते रहे, जबकि यह सीधे-सरल तथा अधिक निष्कपट-निश्छल है। अगर उनकी ईश्वर में आस्था होती तो वह कोई धर्म-प्रवर्त्तक बन गये होते।"

"लेकिन आपने तो कहा था कि वह तूला-प्रदेश के लेखक थे और उनमें प्रतिभा नही थी?"

उन्होने घनी भौहों के नीचे अपनी आखें छिपा ली और उत्तर दिया –

"उन्होने बुरा लिखा। क्या भाषा है उनकी? शब्दो की तुलना में विराम चिह्न अधिक हैं। प्रतिभा – यह तो प्यार है। जो प्यार करता है, वही प्रतिभावान है। प्रेमियो को देखिये – वे सभी प्रतिभाशाली है!"

वह मन मारकर, अपने को मजबूर करते हुए, कुछ बचते-बचते और किसी चीज़ पर हावी होते-से दोस्तोयेव्स्की की चर्चा करते।

"उन्हें कोन्फ्यूशियस या बुद्ध धर्म की शिक्षा का अध्ययन करना

चाहिये था। इससे उन्हें शान्ति मिलती। यह मुख्य चीज़ है जिसे सभी और हर किसी को जानना चाहिये। वह बहुत ही उद्दंड स्वभाव के आदमी थे। जब गुस्से में आते तो उनकी चांद पर गुमटे उभर आते और कान ऐंठने लगते थे। वह अनुभव बहुत करते थे, मगर ढंग से सोचना नही जानते थे। उन्होंने फ़ुर्येवादियों और बुताशेविच* जैसों से सोचना सीखा। बाद में ज़िन्दगी भर उनसे नफ़रत करते रहे। उनके खून में ज़रूर कहीं कुछ यहूदियों जैसा था। वह बड़े शक्की-वहमी, घमंडी, चिड़चिड़े और अभागे थे। अजीब बात है कि उन्हें इतना अधिक पढा जाता है, किसलिये – यह मेरी समझ के बाहर है! आख़िर तो उन्हें पढ़ना मुश्किल है और उससे कोई फायदा भी नहीं, क्योंकि उनके वे बौडम, किशोर पात्र, रस्कोल्निकोव तथा अन्य वास्तव में वैसे नही थे, सभी कुछ कही सरल और समझ में आनेवाला था। किन्तु लेस्कोव को लोग क्यों नही पढते? वह असली लेखक थे। आपने उन्हे पढा है?"

"हा, बहुत पसन्द है वह मुझे। खास तौर पर उनकी भाषा।"

"भाषा तो वह बहुत ही बढ़िया जानते थे, उसकी बारीकियों से खूब परिचित थे। अजीब बात है कि आपको वह पसन्द है, आपमें ग़ैररूसी जैसा कुछ है, आपके विचार रूसी नही है – आपको मेरा यह कहना कुछ बुरा तो नही लगा? मैं – बूढा आदमी हूं और शायद आधुनिक साहित्य को समझ नही सकता, किन्तु मुझे तो ऐसे ही लगता है कि वह रूसी नही है। कुछ ख़ास क़िस्म की कवितायें लिखी जा रही है, किन्तु मैं नही समझ पाता कि किसलिये और किसके लिये वे लिखी जा रही है। कविता रचना तो पुश्किन, तूत्चेव और शेनशिन (फ़ेत) से सीखना चाहिये। "हां, आप," उन्होंने चेखोव को सम्बोधित किया, "आप रूसी है! हां, बेहद, बेहद रूसी हैं।"

और उन्होने बड़े स्नेह से चेखोव के कन्धे के गिर्द अपनी बांह डाल दी। चेख़ोव झेंप गये और भारी-भरकम आवाज़ में अपने उपनगरीय बंगले और तातारों की चर्चा करने लगे।

चेख़ोव को वह प्यार करते थे और उनकी ओर देखते हुए अपनी

* बुताशेविच-पेत्राशेव्स्की म० व० (१८२१–१८६६) – रूसी क्रान्तिकारी, काल्पनिक समाजवादी। – सं०

दृष्टि से, जो उस क्षण स्नेहपूर्ण होती थी हमेशा मानो उनके चेहरे को सहलाते थे। एक बार चेख़ोव अलेक्सान्द्रा ल्वोव्ना के साथ पार्क के संकरे मार्ग पर चले जा रहे थे और उस समय तक बीमार तोलस्तोय बरामदे में आरामकुर्सी पर बैठे तथा धीरे-धीरे यह कहते हुए पूरी तरह मानो उनकी ओर खिंच रहे थे–

"ओह, कितना प्यारा, कितना अच्छा आदमी है–विनम्र, शान्त, किसी युवती की भांति! और चाल भी युवती जैसी है। एकदम लाजवाब आदमी है!"

एक शाम के झुटपुटे में आंखो को सिकोडते और भौंहो को चढ़ाते हुए उन्होने 'फादर सेर्गिय' कहानी का वह दृश्य पढा जिसमे एक नारी मठवासी साधु को अपने रूप-जाल में फसाने को जाती है। इस दृश्य को अन्त तक पढने के बाद उन्होने सिर ऊपर उठाया और आखें मूदकर साफ-साफ़ ही कह दिया–

"अच्छा लिखा है बूढे ने, अच्छा लिखा है!"

इतनी अद्भुत सरलता से उन्होंने ये शब्द कहे, कला-सौन्दर्य की यह प्रशंसा इतनी हार्दिक थी कि मै उस क्षण अनुभूत उल्लास को जीवन भर नही भूल सकूगा–उस उल्लास को जिसे मै शब्दो मे व्यक्त नही कर सकता था, यह नही जानता था कि किस तरह इसे व्यक्त किया जाये, जिसे दबाने के लिये मुझे बहुत ही यत्न करना पड़ा था। मेरे तो दिल की धडकन ही जैसे बन्द हो गयी थी और बाद में मेरे इर्द-गिर्द सभी कुछ जीवनप्रद, ताज़ा और नवीन हो गया था।

उनकी बोली के विशेष, अवर्णनीय सौन्दर्य को समझने के लिये, जो मानो ग़लत होती थी, जिसमें कुछेक शब्दों को बार-बार दोहराया जाता था और जो देहाती सरलता से ओतप्रोत होती थी, उन्हे बोलते हुए देखना ज़रूरी थी। उनके शब्दो की शक्ति शब्दों के उतार-चढ़ाव, उनके चेहरे की सजीवता में ही नही, बल्कि उनकी आंखो की गति-विधि और चमक में भी निहित थी। उनकी आंखो के समान अभि-व्यक्तिपूर्ण आखें मैंने आज तक नही देखी। उनकी दो आखो मे हज़ार आंखें थी।

एक दिन सुलेर, चेखोव, सेर्गेई ल्वोविच और एक अन्य व्यक्ति पार्क में बैठे हुए औरतों की चर्चा कर रहे थे। तोलस्तोय देर तक चुपचाप सुनते रहे और फिर अचानक कह उठे–

"औरतों के बारे में मैं उसी दिन सचाई बताऊंगा, जब मेरा एक पांव क़ब्र में होगा। मैं कह दूंगा, ताबूत में कूद जाऊंगा और उसके ढक्कन से अपने को ढंक लूंगा – अब कर लो मेरा क्या करते हो!" और उनकी दृष्टि ऐसे शरारती और भय पैदा करते ढंग से चमक उठी कि क्षण भर को सभी ख़ामोश बैठे रह गये।

मुझे ऐसा लगता है कि उनमें वसीली बुसलायेव की धृष्ट और जिज्ञासु साहसिकता थी, पादरी अव्वाकूम की हठी आत्मा का कोई अंश भी था और इनके ऊपर या कही बग़ल में चाआदायेव* का संशयवाद भी छिपा हुआ था। अव्वाकूमी तत्त्व उपदेश देता था और कलाकार की आत्मा को व्यथित करता था, नोव्गोरोद का शरारती वसीली बुसलायेव शेक्सपीयर तथा दांते की भर्त्सना करता था और चाआदायेव का तत्त्व उनकी आत्मा के इन मनोरंजनो तथा उसकी यातनाओ पर भी व्यंग्यात्मकता से मुस्कराता था।

उनमें निहित प्राचीन रूसी मानव, जो अधिक मानवीय ढंग के जीवन-निर्माण के उनके असफल प्रयासों के फलस्वरूप निष्क्रिय अराजकतावाद की स्थिति तक पहुच गया था, विज्ञान तथा राज्य-सिद्धान्त की भर्त्सना करता था।

यह एक अजीब बात है! किन्तु 'Simplicissimus' के कार्टूनिस्ट ओलाफ गुल्ब्रान्सोन ने किसी रहस्यपूर्ण सहज ज्ञान से तोलस्तोय में बुसलायेव के इस लक्षण को समझ लिया है। उसके रेखाचित्र को ध्यान मे देखिये और तब आप उसमें तथा लेव तोलस्तोय में कितनी अधिक समानता और यह देख सकेगे कि इन छिपी-छिपी आखोवाले चेहरे मे कितनी साहसपूर्ण बुद्धि आपकी ओर ताक रही है। ऐसी बुद्धि जिसके लिये कुछ भी पावन-पवित्र नही है और जो किसी भी तरह के अन्ध-विश्वासों, सपनों, जादू-टोनों और इसी तरह की दूसरी चीज़ों को नहीं मानती।

यह बूढा जादूगर, सभी के लिये अनबूझ पहेली रहनेवाला व्यक्ति मेरी आंखों के सामने खडा है जो सर्वव्यापी सत्य की असफल खोज में चिन्तन के सभी मरुस्थलों में अकेला चलता जा रहा है। मैं इसकी ओर देखता हूं और यद्यपि क्षति का शोक अपार है, तथापि इस गर्व से मेरी पीड़ा तथा दुख हल्का हो जाता है कि मैंने इसे अपनी आंखो से देखा है।

---

* चाआदायेव प० य० (१७९४–१८५६) – रूसी धार्मिक दार्शनिक। – सं०

लेव तोलस्तोय को "तोलस्तोयवादियों" के बीच देखना बड़ा अजीब लगता था। वह तो एक शानदार घंटाघर की तरह थे जिसका घण्टा सारी दुनिया में अथक रूप से गूजता रहता था तथा जिसके गिर्द छोटे-छोटे सावधान-सतर्क कुत्ते दौड़ते रहते थे, वे घण्टे की आवाज़ के साथ भूंकते और एक-दूसरे की ओर कनखियों से सन्देहपूर्वक देखते थे कि उनमें कौन ज्यादा अच्छी तरह से भूंका है? मुझे हमेशा ऐसा लगा है कि इन लोगों ने यास्नाया पोल्याना के घर और काउंटेस पानिना के महल को ढोंग, कायरता, टुटपुंजिया सौदेबाज़ी और उत्तराधिकार की प्रत्याशा की भावना से ओतप्रोत कर दिया है। "तोलस्तोयवादियों" और उन तीर्थ-यात्रियों में कुछ समान है जो रूस के एक छोर से दूसरे छोर तक घूमते रहते है, अपने साथ कुत्तों की हड्डियां उठाये फिरते है जिन्हें सन्त-महात्माओं के अवशेष बताते हैं और जो "मिस्री अन्धकार" तथा पवित्र मरियम के "आसुओ" की तिजारत करते है। मुझे याद है कि इसी तरह के एक धर्मानुयायी ने कैसे यास्नाया पोल्याना में अण्डा खाने मे इन्कार कर दिया था, ताकि मुर्ग़ी के दिल को ठेस न लगे, मगर जो तूला के स्टेशन पर बड़े मज़े से मास खाता और यह कहता रहा था –

"बड़े मियां अतिशयोक्ति से काम लेते है।"

इन सभी को आहे भरना, एक-दूसरे को चूमना पसन्द है, इन सभी के अस्थिहीन और पसीने मे तर रहनेवाले हाथ हैं तथा कपटी आंखें है। फिर भी ये सभी व्यावहारिक व्यक्ति है, अपने सासारिक काम-धन्धों को बड़ा· चतुराई से सिरे चढाते हैं।

लेव तोलस्तोय निश्चय ही इन "तोलस्तोयवादियो" की असलियत जानते थे। मुलेरजीत्स्की भी, जिन्हें वह बहुत चाहते थे और जिनकी हमेशा नौजवानो जैसे उत्साह से प्रशसा करते थे, इन लोगों की हक़ीक़त खूब अच्छी तरह समझते थे। यास्नाया पोल्याना में एक बार कोई बड़ी वाक्पटुता दिखाते हुए यह बता रहा था कि तोलस्तोय के सिद्धान्तों को ग्रहण करने के बाद उसका जीवन कितना अच्छा हो गया है और उसकी आत्मा कितनी स्वच्छ-निर्मल हो गयी है। लेव तोलस्तोय ने मेरी ओर झुककर धीरे से कहा –

"बदमाश, सब कुछ झूठ बोल रहा है, लेकिन इसलिये कि मेरा दिल खुश हो .."

बहुत-से लोग उन्हें खुश करने की कोशिश करते थे, किन्तु मुझे

ऐसा देखने को नही मिला कि कोई भी इसे अच्छे और कुशल ढग से करता हो। अपने सामान्य विषयो – सभी को क्षमा और बन्धु-मानव को प्यार करने, इंजील और बुद्ध धर्म के बारे में वह मुझसे लगभग कभी कोई बात नही करते थे, सम्भवत फ़ौरन समझ गये थे कि ये बाते "मेरे जैसो के लिये" नही है। इसके लिये मै उनका बहुत आभार मानता था।

जब वह चाहते तो विशेष रूप मे मधुर, सवेदनशील और नर्म हो जाते थे, उनके शब्दो मे मनमोहक सरलता और सजीलापन आ जाता, किन्तु कभी-कभी उनकी बाते सुनना कष्टकर और अप्रिय होता। औरतो के बारे में उनकी चर्चा मुझे कभी भी अच्छी नही लगी थी, उसमे ज़रूरत से ज़्यादा ही "बाजारूपन" होता था, उनके शब्दो में कुछ अस्वाभाविक-कृत्रिम, कुछ कपटपूर्ण, किन्तु साथ ही अत्यधिक व्यक्तिगत होता था। ऐसे प्रतीत होता था मानो एक बार उनके दिल को ठेस पहुंचायी गयी थी और वह अपने उस अपमान को न तो भूल सकते थे, न क्षमा कर सकते थे। उनके साथ अपने प्रथम परिचय की शाम को वह मुझे अपने अध्ययन-कक्ष में ले गये – यह खामोव्निकी* की बात है – मुझे अपने सामने बैठा लिया और मेरी कहानियो 'वारेन्का ओलेसोवा' तथा 'छब्बीस मर्द और एक लडकी' की चर्चा करने लगे। उनके अन्दाज से मै दुखी, यहा तक कि बुरी तरह परेशान भी हो उठा – ऐसे नग्न और उग्र ढग से उन्होंने यह प्रमाणित करने की कोशिश की कि शर्म-हया एक स्वस्थ लड़की का स्वाभाविक लक्षण नही है।

"अगर लडकी पन्द्रह साल की हो चुकी है और स्वस्थ है तो वह चाहती है कि उसका आलिगन किया जाये, उसके साथ छेड-छाड़ की जाये। उसका मस्तिष्क अभी उस चीज़ मे डरता है जो उसके लिये अनजानी और अबोध्य होती है – इसी को शील और लज्जा कहा जाता है। किन्तु उसका तन यह जानता है कि अबोध्य – अनिवार्य और वैध है तथा वह मस्तिष्क या बुद्धि की अवहेलना करते हुए वैध की पूर्ति की मांग करता है। आपने वारेन्का ओलेसोवा को स्वस्थ लडकी के रूप में चित्रित किया है, किन्तु उसकी भावनायें रुग्ण जैसी है। यह सचाई के अनुरूप नही है।

* पुराने मास्को का एक हलका। – अनु०

इसके बाद वह 'छब्बीस मर्द और एक लड़की' कहानी पर अपने विचार प्रकट करने लगे और ऐसी सरलता से एक के बाद एक अश्लील शब्द बोलने लगे कि मुझे यह बेहयाई जैसा प्रतीत हुआ और मैं कुछ बुरा भी मान गया। बाद में मैं यह समझ गया कि उन्होंने "निषिद्ध" शब्दों का इसलिये उपयोग किया था कि वे उन्हें अधिक उपयुक्त और निशाने पर ठीक बैठनेवाले लगते थे। किन्तु उस समय उनकी बातें मुझे बहुत अप्रिय लगी थी। मैंने किसी तरह की कोई आपत्ति नही की। अचानक वह बहुत दयालु और स्नेहशील हो उठे और मुझसे यह पूछने लगे कि मेरी ज़िन्दगी कैसी है, मैंने कैसी शिक्षा पायी है और क्या कुछ पढ़ा है।

"सुनने में आया है कि आपने बहुत ज्यादा पढ़ा-पढाया है – क्या यह सच है? क्या कोरोलेन्को संगीतज्ञ है?"

"मेरे ख़्याल में तो वह संगीतज्ञ नही है। मुझे मालूम नही।"

"आपको मालूम नही? आपको उनकी कहानिया अच्छी लगती हैं?"

"हां, बेहद।"

"यह वैषम्य या तुलना के कारण है। उनमें कवित्व है और आपमें वह नही है। आपने वेल्तमान को पढ़ा है?"

"हां।"

"अच्छे लेखक है न? बड़े तेज़, नपे-तुले, अतिशयोक्ति के बिना। कभी-कभी तो वह गोगोल से बेहतर लगते है। वह बाल्ज़ाक को जानते थे। गोगोल तो मारलीन्स्की* की नकल करते थे।"

जब मैंने यह कहा कि गोगोल को सम्भवत: होफ़मन,** स्टेर्न*** और शायद डिकेन्स ने प्रभावित किया तो उन्होंने मेरी ओर देखकर पूछा – "आपने यह कही पढ़ा है? नही पढ़ा? यह ठीक नही है। डिकेन्स को तो गोगोल ने शायद ही पढ़ा हो। आपने सचमुच ही बहुत कुछ पढ़ा

* मारलीन्स्की अ० अ० (असली नाम बेस्तूझेव) (१७९७–१८३७) – रूसी लेखक। – सं०

** होफमन एर्न्स्ट थियोडोर अमादेय (१७७६–१८२२) – जर्मन रोमासवादी लेखक, संगीतज्ञ, चित्रकार। – स०

*** स्टेर्न लौरेन्स (१७१३–१७६८) – अंग्रेज़ी लेखक, भाववादी साहित्य के प्रवर्त्तक। – सं०

है – सावधान रहिये – यह ख़तरनाक चीज़ है! कोल्त्सोव* ने अपने को इसी से तबाह कर लिया।"

विदा करते हुए उन्होंने मुझे गले लगाया, चूमा और बोले –

"आप – असली मर्द हैं! लेखकों के बीच आपको मुश्किल का सामना करना पड़ेगा, लेकिन आप किसी बात से भी नहीं डरियेगा। जो महसूस करते हैं, वही कहिये, कोई अटपटी बात मुंह से निकल जाये तो भी परवाह न कीजिये। बुद्धिमान लोग समझ जायेंगे।"

मेरी इस पहली भेंट ने मेरे मन पर दो तरह का प्रभाव छोड़ा – मुझे इस चीज़ की ख़ुशी और गर्व हुआ कि मैं तोलस्तोय से मिला हूं, किन्तु उनके साथ हुई मेरी बातचीत मुझे परीक्षा-सी प्रतीत हुई थी और ऐसे लगता था कि मैं 'कज़्ज़ाकी', 'एक घोडे की कहानी, उसी की जबानी', 'युद्ध और शान्ति' के लेखक से नही, बल्कि किसी रईस से मिला हूं जिसने मेरे प्रति कृपाभाव दिखाते हुए मेरे साथ "लोगों की शैली", बाज़ारू भाषा में बातचीत करना उचित समझा और इस चीज़ ने उनके बारे में मेरी धारणा को – उस धारणा को कुछ गड़बड़ कर दिया जिसे मै अपने अन्तर में सजोये रहा था और जो मुझे प्रिय थी।

दूसरी बार मैं यास्नाया पोल्याना में उनसे मिला। बुरे मौसमवाला पतझर का दिन था, हल्की बूंदा-बादी हो रहीं थी और वह ऊनी कपडे का भारी ओवरकोट तथा वाटरप्रूफ गमबूट पहनकर मुझे भोजवृक्षो के झुरमुट में अपने साथ घुमाने ले गये। वह जवान व्यक्ति की भाति खाइयो, गड्ढों पर से छलांग लगाते, शाखाओं से सिर पर पडनेवाली पानी की बूंदो को झाड़ते और बहुत ही अच्छे ढंग से यह बताते रहे कि शेनशिन (फ़ेत) ने इसी कुंज में उन्हें शोपेनहाउर समझाया था। वह स्नेहपूर्ण हाथ से भोजवृक्षो के कुछ नम, रेशमी तनों को बडे प्यार से सहलाते जाते थे।

"हाल ही में मैंने कहीं कविता की ये पंक्तियां पढ़ी थीं –

> खुमिया नही रही, गड्ढो-खड्डो मे,
> अब तक गध बसी,
> लेकिन, खुमियो की

बहुत खूब, बिल्कुल सही है!"

---

* कोल्त्सोव अ० व० (१८०६–१८४२) – रूसी कवि। – स०

अचानक हमारे पांवों के क़रीब से एक ख़रगोश भागता हुआ निकला। तोलस्तोय उछले, बेहद उत्तेजित हो उठे, उनके चेहरे पर लाली दौड गयी और उन्होंने अनुभवी शिकारी की तरह ज़ोर से हुंकार भरी। इसके बाद ऐसी मुस्कान के साथ, जिसका वर्णन नही किया जा सकता, मेरी ओर देखा तथा बहुत ही बुद्धिमत्तापूर्ण और मानवीय ढग से खिलखिलाकर हस दिये। इस क्षण तो वह लाजवाब थे!

दूसरी बार, वही पार्क में, वह एक चील की तरफ़ देखने लगे। चील पशुओं-जानवरों के अहाते के ऊपर मडरा रही थी। वह चक्कर काटती, फिर पंखो को ज़रा-ज़रा हिलाते हुए हवा मे ठहर जाती और यह तय न कर पाती कि शिकार पर झपट्टा मारे या नही? लेव तोलस्तोय पूरी तरह मे चौकस हो गये, उन्होंने आखों पर हथेली मे ओट कर ली और घबराहट से फुसफुसाये –

"कमबख्त, हमारे चूजो पर झपटने की सोच रही है। बस, अभी अभी झपटने ही वाली है.. अभी ओह, डरती है! हमारा कोचवान वहां है या नही? कोचवान को बुलाना चाहिये ."

और उन्होंने कोचवान को पुकारा। जब वह चिल्लाये तो चील डर गयी, ज़ोर मे ऊपर को उठी और एक तरफ को उडते हुए नजर से ओझल हो गयी। लेव तोलस्तोय ने राहत की सास ली और स्पष्टत अपनी भर्त्सना-सी करते हुए बोले – "मुझे चिल्लाना नही चाहिये था, वह तो वैसे भी चली गयी होती .."

एक बार तिफ्लिस की चर्चा करते हुए मैंने व० व० फ्लेरोव्स्की-बेर्वी* का उल्लेख किया।

"आप उन्हे जानते थे?" लेव तोलस्तोय ने बडी उत्सुकता से पूछा। "मुझे उनके बारे मे कुछ बताइये।"

मैं उन्हें बताने लगा कि कैसे लम्बे, लम्बी दाढ़ी तथा बड़ी-बडी आंखोंवाले और दुबले-पतले फ्लेरोव्स्की किरमिची कपड़े का लम्बा चोग़ा पहने, कमरबन्द के साथ लाल शराब में उबले चावलों की पोटली बाधे और हाथ मे किरमिची कपडे की बहुत बडी छतरी लिये मेरे साथ काकेशिया-पार की पहाड़ी पगडंडियो पर घूमते रहे थे, कि कैसे एक बार एक

* फ्लेरोव्स्की-बेर्वी व० व० (१८२६-१६१८) – रूसी समाजशास्त्री, पत्रकार तथा अर्थशास्त्री। – स०

सकरी पगडंडी पर एक जंगली भैंसा हमारे सामने आ गया था, कैसे खुली छतरी से उस क्रोधी जानवर को डराते और खड्ड में गिरने का खतरा मोल लेते हुए हमने पीछे हटकर अपने को उससे बचाया था। अचानक मुझे लेव तोलस्तोय की आंखों में आंसू दिखाई दिये, मैं सकपकाकर चुप हो गया।

"मेरे आंसुओं की ओर ध्यान न दीजिये, कहते जाइये, कहते जाइये! ये तो एक अच्छे आदमी की चर्चा सुनते हुए खुशी से छलक आनेवाले आंसू हैं। कितने दिलचस्प थे वह! मैंने दूसरे लोगों से भिन्न, इसी रूप में उनकी कल्पना की थी। उग्र सुधारवादी लेखकों में वह सबसे ज्यादा सुलझे दिमाग वाले, सबसे अधिक समझदार हैं। उनके 'ककहरा' में बहुत ही अच्छी तरह से यह दिखाया गया है कि हमारी सारी सभ्यता बर्बर है, कि संस्कृति शान्तिपूर्ण कबीलों का, शक्तिशालियों का नहीं, दुर्बलों का ध्येय है और अस्तित्व का संघर्ष एक झूठी कपोल-कल्पना है जिससे बुराई की सफ़ाई पेश करने की कोशिश की जाती है। आप तो निश्चय ही मेरे साथ सहमत नहीं होंगे? लेकिन दादेत* सहमत है, उनकी पॉल आस्टियर की याद है न?"

"लेकिन तब हम, मिसाल के तौर पर यूरोप के इतिहास में नार्मनों की भूमिका का फ्लेरोव्स्की के सिद्धान्त के साथ कैसे ताल-मेल बैठा सकते हैं?"

"नार्मन – यह दूसरी बात है!"

जब वह उत्तर नहीं देना चाहते थे तो हमेशा यही कहते थे – "यह दूसरी बात है"।

मुझे हमेशा ऐसा लगा है – और मेरे ख्याल में मैं गलत भी नहीं हूं – कि लेव तोलस्तोय को साहित्य-चर्चा करना बहुत पसन्द नहीं था, किन्तु लेखक के व्यक्तित्व में वह बहुत दिलचस्पी लेते थे। "आप उसे जानते हैं? वह कैसा है? उसका जन्म कहां हुआ था?" – इस तरह के सवाल मैंने उनके मुंह से बहुत अक्सर सुने थे। और उनकी राय लगभग हमेशा ही उस व्यक्ति का कोई खास पहलू उभार देती थी।

व० ग० कोरोलेन्को के बारे में उन्होंने सोचते हुए कहा –

"वह उक्रइनी है, इसलिये हमारी तुलना में उन्हें हम रूसियों

* दादेत अल्फोन्स (१८४०–१८९७) – फ्रांसीसी लेखक। – सं०

का जीवन अधिक सही और ज़्यादा अच्छे ढंग से देखने में समर्थ होना चाहिये।"

चेख़ोव के सम्बन्ध में, जिन्हें बहुत ही कोमल भावनाओं से प्यार करते थे, उन्होंने कहा – "डाक्टरी उनके आड़े आती है, अगर वह डाक्टर न होते तो और भी ज़्यादा अच्छा लिखते।"

किसी एक जवान लेखक के बारे में – "वह अंग्रेज़ बनने का ढोंग करता है जिसमें मास्कोवासी को बहुत ही कम सफलता मिलती है।"

मुझसे उन्होंने अनेक बार कहा – "आप – मन से बातें बनाते हैं। कुवाल्दा जैसे आपके सभी पात्र मनगढ़न्त हैं।"

मैंने कहा कि कुवाल्दा तो जीता-जागता आदमी है।

"तो बताइये, आप उससे कहां मिले थे?"

कज़ान शहर की छोटी कचहरी के न्यायाधीश कोलोनतायेव के कार्यालय में घटी घटना की चर्चा सुनकर, जहां मेरे द्वारा कुवाल्दा नाम से चित्रित पात्र के साथ मेरी पहली भेंट हुई थी, वह बहुत हसे।

"कुलीन!" वह हंसते और अपने आंसू पोंछते हुए कहते रहे। "हां, सच्चा कुलीन! लेकिन कितना प्यारा, कितना दिलचस्प आदमी था! आप लिखने की तुलना में सुनाते कही अधिक अच्छी तरह से है। आप हैं रोमाटिक, मन से गढ़नेवाले, आप यह मान ही लें!"

मैंने कहा कि लोगों को उस रूप मे प्रस्तुत करते हुए, जैसे वे उन्हें जीवन में देखना चाहेंगे, सभी लेखक कुछ हद तक अपने मन मे कुछ जोड़ते है। मैंने यह भी कहा कि मुझे ऐसे सक्रिय लोग अच्छे लगते है जो सभी उपायो से, यहा तक कि हिसा मे भी जीवन में बुराई का विरोध करते है।

"लेकिन हिंसा तो ख़ुद सबसे बड़ी बुराई है!" मेरी बांह में बाह डालते हुए वह ऊंची आवाज़ में कह उठे। "आप इस असंगति से कैसे पार पायेंगे, मन से गढ़नेवाले महानुभाव? आपकी 'मेरा साथी' कहानी है – वह मन से गढ़ी नही गयी, वह अच्छी है, क्योंकि मनगढ़न्त नही है। किन्तु जब आप अपने मन से पात्र गढ़ते है तो आपके यहां सभी सूरमा जन्म लेते है, अमादिस और सेगफ़रेद जैसे..."

मैंने कहा कि जब तक हम अनिवार्य रूप से ऐसे "साथियों" के साथ घनिष्ठ सम्पर्क में रहते हुए जियेंगे, हम कच्ची नीव पर और शत्रुतापूर्ण वातावरण में ही अपना सारा निर्माण करेंगे।

वह व्यंग्यपूर्वक मुस्कराये और उन्होंने मुझे ज़रा कोहनी मारी।

"इससे तो बहुत ही, बहुत ही खतरनाक निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। आप सच्चे समाजवादी नही है। आप – रोमांटिक हैं और रोमांटिकों को राजतन्त्रवादी होना चाहिये, जैसे कि वे हमेशा रहे हैं।"

"लेकिन ह्यूगो?"

"ह्यूगो की दूसरी बात है। मुझे वह पसन्द नहीं – बहुत हो-हल्ला मचाते हैं।"

वह अक्सर मुझसे यह पूछते कि मैं क्या पढ़ रहा हू और हमेशा किताबो के बुरे चुनाव के लिये (उनके मतानुसार) मेरी भर्त्सना करते।

"गिब्बन* – वह तो कोस्तोमारोव** से भी गये-बीते लेखक है। आपको मोमसेन*** को पढ़ना चाहिये – बहुत उबाऊ, मगर बड़े ही ठोस लेखक है।

यह जानकर कि मैंने जो पहली पुस्तक पढी थी, वह 'ज़ेमगानो बन्धु' थी, वह भड़क उठे।

"यह तो सचमुच ही मूर्खतापूर्ण उपन्यास है। इसी ने आपकी रुचि बिगाड़ दी। फ्रांसीसियो के तीन ही लेखक है – स्टेडल, बाल्ज़ाक, फ्लोबेर, हां – मोपासां को भी इनमें जोड़ा जा सकता है, किन्तु चेखोव उनसे बेहतर हैं। गोनकोर्ट**** तो निरे विदूषक है, गम्भीर होने का ढोंग ही करते हैं। उन्होंने अपने समान मन से गढ़नेवालों द्वारा लिखी गयी किताबो से ही ज़िन्दगी को समझा और यह मान लिया कि कोई गम्भीर काम कर रहे है। मगर किसी को भी इसकी ज़रूरत नही।"

मैं उनके मूल्याकन से सहमत नही हुआ और लेव तोलस्तोय इससे झल्ला उठे। वे अपनी बात के खण्डन को बडी मुश्किल से सहन कर पाते थे और कभी-कभी उनका तर्क-वितर्क बड़ा अजीब तथा सनकभरा रूप धारण कर लेता था।

* गिब्बन एडवर्ड (१७३७–१७९४) – अंग्रेज़ी इतिहासज्ञ। – स०

** कोस्तोमारोव न० इ० (१८१७–१८७५) – रूसी तथा उक्रइनी इतिहासज्ञ और लेखक। – स०

*** मोमसेन थियोडोर (१८१७–१९०३) – जर्मन इतिहासज्ञ। – सं०

**** गोनकोर्ट – फ्रासीसी बन्धु-लेखक – एडमन (१८२२–१८९६) तथा जूल (१८३०–१८७०)। – स०

"अध:पतन जैसी कोई चीज़ नही है," उन्होंने कहा, "इतालवी लोम्ब्रोज़ो ने इसे अपने मन से गढ लिया और यहूदी नोरडाऊ उसके पीछे-पीछे तोते की तरह इसकी रट लगाये जा रहा है। इटली धूर्त्तों तथा जोखिमबाज़ों का देश है – वहां अरेतीनो, काज़ानोवा, कालिओस्त्रो जैसे ही लोग पैदा होते है।"

"और गारीबाल्डी?"

"वह राजनीति है, वह दूसरी बात है!"

रूस के व्यापारी-परिवारो के इतिहास के आधार पर प्रस्तुत किये गये अनेक तथ्यों को सुनने के बाद उन्होंने कहा –

"यह सब झूठ है, बुद्धिमत्तापूर्ण पुस्तको में ही यह मब कुछ लिखा जाता है .."

मैंने अपनी पहचान के एक व्यापारी-परिवार की तीन पीढियों की कहानी मुनायी, ऐसी कहानी जिसमें अध पतन का नियम बडी निर्ममता से अपना रंग दिखाता था। तब वह बहुत विह्वल होकर मेरी आस्तीन को खीचते हुए मुझमे आग्रहपूर्वक बोले –

"हा, यह – सच है! यह मै जानता हू, तूला मे ऐमे दो परिवार हैं। इसे लिखना चाहिये। संक्षेप में बडा उपन्याम लिखना चाहिये, समझते है न? अवश्य लिखना चाहिये!"

और उनकी आखे उत्माह मे चमक रही थी।

"लेकिन उनमें कुछ सूरमा भी होगे, लेव निकोलायेविच।"

"इस बात को हटाइये! यह बडा गम्भीर मामला है। वह जो मारे परिवार के लिये प्रार्थना करने को माधु बनकर मठ मे जाता है – वह तो अद्भुत है! यह असली चीज़ है: आप लोग पाप करते है और मै आपके पापों का प्रायश्चित करने जाऊगा। दूसरा – ऊबने और लूटनेवाला निर्माता – वह भी एक हकीकत है! वह पियक्कड़ है, वहशी है, व्यभिचारी है, मभी को प्यार करता है और अचानक – किमी की हत्या कर डालता है – ओह, यह भी बढिया है! इमे लिखना चाहिये और चोर-उचक्को तथा भिखारियों-कगालो में नायक ढूंढने में कोई तुक नही। नायक – यह झूठ है, कपोल-कल्पना है, है मिर्फ लोग, सिर्फ लोग – इसमे अधिक कुछ नही।"

वह अक्मर उन अतिशयोक्तियो की ओर सकेत किया करते थे जो मेरी कहानियों मे आ गयी थी। किन्तु एक बार 'मृत आत्माए' के

दूसरे भाग की चर्चा करते हुए उन्होंने खुशमिज़ाजी से मुस्कराकर कहा –

"उफ़, हम सभी कैसे अपने मन से बाते बनाते है। मैं भी ऐसा करता हूं। कभी-कभी लिखते समय अचानक किसी पात्र पर दया आ जाती है, मै उसके चरित्र को कुछ बेहतर बना देता हूं और दूसरे को कुछ बिगाड़ देता हू ताकि उसकी तुलना मे दूसरा बहुत घटिया न लगे।"

और अगले ही क्षण एक दृढ न्यायाधीश के कठोर अन्दाज में बोले –

"इसीलिये तो मै यह कहता हू कि कला – एक झूठ, धोखा, मनमानी और लोगो के लिये हानिकारक है। जीवन वास्तव मे जैसा है, उसके बारे मे नही, बल्कि हम वह लिखते है जो जीवन के सम्बन्ध मे हम खुद सोचते है। किसके लिये यह जानना उपयोगी है कि मै इस मीनार, सागर या तातार को किस रूप में देखता हू? किसको इसमे दिलचस्पी हो सकती है, इसकी क्या जरूरत है?"

कभी-कभी मुझे उनकी भावनाये, उनके विचार कोरी सनके या जान-बूझकर विकृत किये गये प्रतीत होते। किन्तु बहुधा वह क्रूर ईश्वर के निडर प्रश्नकर्त्ता जांव की भाति लोगों को अपने विचारो की कठोर स्पष्टवादिता मे चकित और अभिभूत कर देते।

उन्होने यह घटना सुनायी –

"मई महीने के अन्त मे एक बार मै कीयेव सडक पर चला जा रहा था। पृथ्वी स्वर्ग जैसी लग रही थी, हर चीज़ पर उल्लास का रग छाया था, आकाश निर्मल था, पक्षी चहचहा रहे थे, मधुमक्खिया भिनभिना रही थी, धूप बडी प्यारी थी और इर्द-गिर्द सभी कुछ समा-रोही, मानवीय और अद्भुत था। सब कुछ मन को इतना अच्छा लग रहा था कि खुशी से आखे नम हुई जा रही थी। मै भी अपने को एक ऐसी मधुमक्खी की तरह महसूस कर रहा था जिसे पृथ्वी के सर्वश्रेष्ठ पुष्पो का उपहार मिला हो। भगवान को भी मै अपनी आत्मा के निकट अनुभव कर रहा था। अचानक मैने क्या देखा – सडक से कुछ हटकर झाडियो के नीचे एक पुरुष और एक नारी तीर्थयात्री एक-दूसरे के साथ चिपके हुए लेटे है, दोनो भूरे-भूरे, गन्दे-मन्दे, बूढे – दोनों कीड़ो की तरह कुलबुला रहे है, फुसफुसा और बुदबुदा रहे है, और सूरज बड़ी निर्दयता से उनके नगे, नीले-नीले पैरो और ढीले-ढाले शरीरों को रोशन कर रहा था। मेरी आत्मा टीस उठी। हे भगवान – सौन्दर्य के स्रष्टा – तुम्हें शर्म नहीं आती? बहुत ही बुरा लगा मुझे ..

"तो आप देखते हैं न, कैसी-कैसी बातें हो जाती हैं। बोगोमील* प्रकृति को शैतान की रचना मानते थे जो मानव को बड़ी क्रूरता से और उसका मज़ाक़ उड़ाते हुए यातना देती है – उसकी शक्ति हर लेती है और उसमें इच्छा बनी रहने देती है। यह बात सभी प्राणियों के बारे में सही है। केवल मानव ही इस यातना की सारी लज्जा और भयानकता को अनुभव करता है – यह उसके ख़ून में है। हम एक अनिवार्य दण्ड के रूप में इसे अपने भीतर लिये रहते है – लेकिन किस पाप के लिये ?"

यह सब बताते हुए उनकी आखों में अजीब ढंग से परिवर्तन होता रहा – वे कभी तो बालक की तरह विषादपूर्ण हो जाती और कभी उनमें भावनाहीन, कठोर चमक दिखाई देती। उनके होंठ कांपते और मूंछों के बाल तन जाते। यह बताने के बाद उन्होंने कुरते की जेब से रूमाल निकाला और ज़ोर से अपना मुंह पोंछा, यद्यपि वह बिल्कुल सूखा था। इसके बाद किसान जैसे मज़बूत हाथ की हुक जैसी उंगलियो से दाढी को सवारते हुए धीरे से यह दोहराया –

"लेकिन – किस पाप के लिये ?"

एक दिन मैं उनके साथ नीचेवाली सड़क पर द्यूल्बेर से आई-तोदोर जा रहा था। वह किसी जवान आदमी की तरह बड़ी फुर्ती से चलते हुए हमेशा की तुलना में कुछ अधिक उत्तेजना के साथ बोल रहे थे – "शरीर को आत्मा का आज्ञाकारी कुत्ता होना चाहिये, जहा वह उसे भेजे, वह वही भागा जाये। लेकिन हम कैसे जीते है ? शरीर उद्दंडता और चंचलता दिखाता है और आत्मा असहाय तथा दयनीय ढंग से उसका अनुकरण करती रहती है।"

उन्होंने दिल के नज़दीक छाती को ज़ोर से मला, भौंहें चढायीं और कुछ याद करते हुए कहते गये –

"पतझर के दिनों में मैंने मास्को मे सूखारेव बुर्ज के करीब एक सूनी गली में नशे में धुत्त एक औरत देखी। वह नाली के क़रीब पड़ी हुई थी। अहाते से बहती आ रही गन्दे पानी की धारा सीधी इस औरत की गुद्दी और पीठ के नीचे पहुंच रही थी। वह इस ठण्डे, गन्दे पानी

* बोगोमील – १०–१४वी शताब्दी के बाल्कान के एक धार्मिक सम्प्रदाय के अनुयायी। – स०

में पड़ी हुई कुछ बुड़बुड़ा रही थी, छटपटाती थी, पानी में छप-छप करती थी, मगर उठ नही पाती थी।"

वह सिहरे, उन्होंने आखें मिकोड़ी, सिर को झटका दिया और धीरे से यह प्रस्ताव किया –

"आइये, हम यहां बैठ जायें . नशे मे धुत्त औरत – यह सबसे भयानक, सबसे जघन्य चीज़ है। मैंने चाहा कि उठने में उसकी मदद करूं – लेकिन यह कर नही पाया, घिन आ गयी – वह सारी की सारी ऐसी चिपचिपी, पानी से ऐसे तर थी कि उसे छू लेने से ही महीने भर तक हाथ साफ़ नही किये जा सकेंगे – भयानक मामला था! सड़क किनारे के पत्थर पर सुनहरे बालो और भूरी आंखोंवाला एक बालक बैठा था, उसके गालो पर आसू बह रहे थे, वह नाक मे सूं-सूं कर रहा था और निराश तथा थकी-थकी आवाज़ में चिल्ला रहा था –

"'म... ां.. अम्मा .. ां उठो भी...'

"वह हाथ हिलाती, नथने फरफराती, सिर ऊपर उठाती और फिर गुद्दी के बल गन्दे पानी मे गिर जाती।"

वह चुप हो गये, उन्होंने अपने इर्द-गिर्द देखा और बडी बेचैनी-से, लगभग फुसफुसाते हुए दोहराया –

"हा, हा – बहुत भयानक था यह! क्या आपने बहुत पियक्कड औरते देखी है? बहुत – हे भगवान! आप – इसके बारे में लिखिये नही, इसकी ज़रूरत नही है!"

"क्यो?"

उन्होंने मेरी आखों में ग़ौर से देखा, मुस्कराये और दोहराया –

"क्यों?"

इसके बाद उन्होंने कुछ सोचते हुए धीरे-धीरे कहा –

"मुझे मालूम नही। यह तो मैंने यो ही कह दिया . घिनौनी चीज़ो के बारे में लिखते हुए शर्म महसूस होती है। लेकिन – लिखा क्यो न जाये? सब कुछ, हर चीज़ के बारे मे लिखना चाहिये .."

उनकी आखे छलछला आयी। उन्होंने आसू पोछ लिये और लगातार मुस्कराते हुए रूमाल पर नजर डाली। किन्तु आंसू फिर से उनके चेहरे की झुर्रियों पर बह आये।

"मैं रो रहा हूं," वह बोले। "मै बूढ़ा आदमी हू, जब किसी भयानक बात को याद करता हू तो मेरा दिल छटपटाने लगता है।"

मुझे हल्के-से कोहनियाकर कहते गये –

"आप भी अपनी ज़िन्दगी जी लेंगे, सब कुछ वैसे ही रह जायेगा, जैसे था, और तब आप भी रोयेंगे, मुझसे ज़्यादा बुरी तरह – 'आंसू की नदी' बहाते हुए, जैसे कि किसान औरतें कहती है... मगर लिखना सब कुछ चाहिये, सभी चीज़ो के बारे में, वरना मुनहरे बालोंवाला बालक बुरा मान जायेगा, ताना देगा – यह कहेगा कि मच नही है, पूरी तरह सच नहीं है। वह सच की मांग करता है।"

अचानक उन्होंने अपने आपको झकझोरा और मुझे फुसलाते हुए से बोले – "कोई बात सुनाइये, आप अच्छे ढंग से बातें सुनाते है। अपने बारे मे, जब आप बालक थे, तब की कोई बात मुनाइये। यह विश्वास ही नही होता कि आप भी कभी बच्चे थे – ऐसे अजीब-मे है आप। लगता है, मानो वयस्क ही पैदा हुए थे। आपके विचारों मे बहुत कुछ बच्चे जैसा है, अपरिपक्व है, मगर जीवन का ज्ञान आपको बहुत काफ़ी है – अधिक की ज़रूरत नही। तो कोई बात मुनाइये"

इतना कहकर वह चीड़ की भूरी मूइयो में इधर-उधर आती-जाती और दौड-धूप करती चीटियो को देखते हुए चीड़ के नीचे, उसकी उभरी जडों पर आराम मे बैठ गये।

दक्षिण की इतनी विविधतापूर्ण प्रकृति, इतनी विपुल और अपनी डीग-सी हाकती, असंयत वनस्पति के बीच, जो उत्तर में रहनेवालों के लिये नयी और अजीब-मी होती है, वह, लेव तोल्स्तोय* – यहा तक कि उनका नाम भी उनकी आन्तरिक शक्ति को व्यक्त करता है – एक छोटे-मे व्यक्ति, ऐसे गठीले मानो बहुत मजबूत और ज़मीन मे गहरी उतरी हुई जड़ों से बने हों, ऐसी, दोहराता हूं, क्रोमिया की डीग हांकती-मी प्रकृति के बीच एकसाथ ही अपनी ठीक और गलत जगह पर भी लग रहे थे। ऐसे प्रतीत होता था मानो कोई प्राचीन व्यक्ति और मानो इर्द-गिर्द की मारी सम्पत्ति का मालिक और उसका स्रष्टा कोई सौ बरस के बाद अपने हाथों द्वारा रची गयी जागीर पर आया हो। वह बहुत कुछ भूल चुका है, उसके लिये बहुत कुछ नया है, सब कुछ वैसे है, जैसे होना चाहिये, फिर भी पूरी तरह से वैसे नहीं है और

---

* लेव – बबर। – अनु०

मानो उसे फ़ौरन यह जानना चाहिये कि क्या कुछ वैसे ही नही है और क्यो नही है।

वह पृथ्वी के अनुभवी और कुशल पथिक की भाति तेज़ और द्रुत चाल मे राहों और पगडडियो पर चलते रहते थे और अपनी पैनी नज़रों से, जिनसे एक भी पत्थर और एक भी विचार छिपा नही रहता था हर चीज़ को बहुत गौर से देखते, उसे मापते-तौलते थे, छूते और उसकी तुलना करते थे तथा अपने गिर्द अदम्य विचार के जीवन्त बीज बिखराते रहते थे। उन्होंने एक दिन सुलेर से कहा –

"मेरे प्यारे, तुम कुछ भी नही पढते, यह अच्छा नही, क्योंकि यह घमण्ड है। गोर्की बहुत ज्यादा पढते है, यह भी – अच्छा नही, यह अपने पर भरोसे की कमी है। मै – बहुत ज्यादा लिखता हूं – यह भी अच्छा नही, क्योंकि यह मेरे बुढापे का अहभाव है, मेरी इस इच्छा का परिणाम है कि सभी मेरी तरह सोचे। जाहिर है कि मेरा सोचने का ढग मेरे लिये तो ठीक है, किन्तु गोर्की समझते है कि उनके लिये वह ठीक नही, जबकि तुम कुछ भी नही सोचते – बस, आखे झपकाया करते हो, यह देखा करते हो कि किस चीज के साथ चिपक जाओ। और उन चीजो के साथ चिपक जाते हो जिनसे तुम्हे कुछ भी मतलब नही होता। तुम्हारे साथ ऐसा हो चुका है। तुम चिपक जाते हो, उसे थामे रहते हो और जब वह चीज खुद ही तुम्हारे हाथो से खिसकने लगती है तो तुम उसे खिसक जाने देते हो। चेखोव की एक बहुत बढिया कहानी है – 'मेरी प्यारी' – तुम लगभग उसकी नायिका जैसे हो।"

"वह किस तरह?" सुलेर ने हसते हुए पूछा।

"इस तरह कि प्यार करने को हमेशा तैयार, मगर प्रेम-पात्र चुनना नही जानते और व्यर्थ की चीज़ो पर अपनी शक्ति बरबाद करते रहते हो।"

"क्या सभी ऐसा करते है?"

"सभी?" लेव तोलस्तोय ने सुलेर का प्रश्न दोहराया। "नही, सभी नही।"

अचानक, मानो प्रहार-सा करते हुए उन्होने मुझसे पूछा –

"आप भगवान को क्यो नही मानते?"

"क्योंकि उसमें मेरी आस्था नही है।"

"यह – झूठ है। आप स्वभाव से आस्थावान है और भगवान

के बिना आपका काम नही चलेगा। बहुत जल्द ही आप यह अनुभव कर लेंगे। आप हठधर्मी से, इस झल्लाहट के कारण विश्वास नही करते कि दुनिया वैसी नही बनी है, जैसी आप चाहते है। इसी प्रकार सकोच के कारण भी विश्वास नहीं करते। ऐसा तरुणों-किशोरों के साथ होता है – किसी नारी को पूजने लगते हैं, मगर यह प्रकट नही करना चाहते, डरते है कि वह उनकी भावना को नही समझेगी और फिर साहस भी नही होता उनमें। प्यार की तरह आस्था के लिये भी साहस और दिलेरी की ज़रूरत होती है। अपने आपसे यह कहना चाहिये कि मैं विश्वास करता हूं – और तब सब कुछ ठीक हो जायेगा, सब कुछ उसी रूप में सामने आ जायेगा जैसा आप चाहते है, स्वयं ही अपने आपको आपके सामने स्पष्ट कर देगा और अपनी ओर खीच लेगा। आप बहुत-सी चीज़ों को प्यार करते है और विश्वास – यह प्यार का उग्र रूप है, और अधिक प्यार करना चाहिये – तब प्यार विश्वास में बदल जायेगा। जब हम किसी औरत को प्यार करते है तो अवश्य ही दुनिया की सबसे अच्छी औरत को। हर कोई और अनिवार्य रूप से सबसे अच्छी को ही प्यार करता है और यह विश्वास ही तो है। अविश्वासी प्यार नही कर सकता। वह एक को आज प्यार करता है और साल भर बाद – दूसरी को। ऐसे लोगो की आत्मा आवारा होती है, फलहीन होती है, यह – अच्छा नही। आप जन्म से आस्थावान है और अपने स्वभाव के विरुद्ध जाने में कोई तुक नही। आप सुन्दरता की रट लगाये रहते है न? सुन्दरता क्या है? भगवान ही उच्चतम और पूर्णतम सुन्दरता है।"

इसके पहले उन्होने इस विषय पर मेरे साथ लगभग कभी बात नहीं की थी। इस विषय की महत्ता, इसकी आकस्मिकता से मैं चकरा-सा गया, यह मुझ पर हावी-सा हो गया। मै खामोश रहा। पांवो को अपने नीचे दबाकर सोफे पर बैठे हुए तोलस्तोय की दाढ़ी मे एक विजेता की सी मुस्कान छिप गयी और वह मुझे उगली दिखाकर धमकाते हुए से कह उठे –

"इस मामले मे खामोश रहने मे आपकी जान नही बचेगी, नही बचेगी!"

और मैंने, भगवान में विश्वास न करनेवाले ने, न जाने क्यों, बहुत सावधानी से, कुछ-कुछ डरते हुए उनकी तरफ़ देखा और सोचा –

"यह आदमी तो खुद भगवान जैसा है!"

टूटती कड़ियां

उपन्यास

व्यक्ति और कवि रोमेन रोलां को समर्पित

१*

भूदाम-प्रथा के उन्मूलन के लगभग दो वर्ष बाद की बात है। सन्त निकोला के गिरजाघर में एक बड़े धार्मिक पर्व की प्रार्थना के समय लोगो ने एक अजनबी को देखा। घनी भीड में मे लोगों को उजड्डपन मे धकियाते हुए उसने द्रयोमोव नगर की सबसे अधिक पूज्य देव-प्रतिमाओ के सामने भारी-भरकम मोमबत्तिया रख दी। वह हृष्ट-पुष्ट काठी का आदमी था। उसकी बहुत बडी घुघराली दाढी में जगह-जगह सफ़ेदी थी और सिर पर घने, जिप्सियों की तरह घुंघराले बाल थे। नाक बड़ी थी, उसकी घनी भौंहो के नीचे मे नीली-भूरी आंखें ढिठाई मे घूरती थी। जब वह अपनी बाहें नीचे लटका लेता तो उसकी चौड़ी-चौडी हथेलियां उसके घुटनों को छूती।

नगर के जाने-माने लोगो के साथ ही वह क्रॉस के पास पहुच गया। इन लोगो को यह बात सबसे अधिक अखरी और प्रार्थना के बाद द्रयोमोव के प्रमुख लोग इस अजनबी के बारे में विचार-विनिमय करने के लिये गिरजाघर के बाहर ही रुक गये। कुछ लोगों ने उसे ढोर-डगरों का व्यापारी माना, दूसरो ने गाव का मुखिया और बुरे स्वास्थ्यवाले, किन्तु नेकदिल मेयर येव्मेय बैसाकोव ने आहिस्ता में खासते हुए कहा —

"शायद वह किसी जागीरदार का आदमी रहा होगा, शिकारी या कोई ऐसा ही आदमी जो बड़े लोगो के मनबहलाव का इन्तज़ाम करता है।"

बज़ाज़ पोम्यलोव, जिसे लोग "रंडवा तिलचटा" के नाम से पुकारते थे, और जो चचल, कामुक, ज़बान का बहुत कड़ुवा, कुरूप और चेचकरू आदमी था, द्वेष-भाव से बोला —

"उसकी बांहें देखी – कितनी लम्बी हैं? और चलता ऐसे है, मानो गिरजाघर के सारे घण्टे उसी के लिये बज रहे हों।"

चौड़े-चकले कंधों और बड़ी नाकवाला यह आदमी ऐसी दृढ़ता से सडक पर डग भरता जा रहा था जैसे यह उसकी अपनी ही ज़मीन हो। वह बढ़िया बनात का नीला कोट और चमडे के बूट पहने था। उसके हाथ जेबो में थे और कोहनिया बदन से सटी हुई थी। धार्मिक अनुष्ठान की रोटियां बनानेवाली येरदान्स्काया को इस आदमी का ठीक-ठीक पता लगाने का काम सौंपा गया। गिरजे की घण्टिया टनटना रही थी और वे लोग चाय-पान के लिये पोम्यलोव के बगीचे मे गये, जिसने उन्हें निमंत्रित किया था।

खाने के बाद नगर के और लोगो ने उस अजनबी को नदी के उस पार प्रिंस रात्स्की की ज़मीन पर अन्तरीप या "गोजिह्वा" कहलानेवाले स्थान के पास देखा। वह बेदवृक्षो के कुजो में लम्बे और सधे डग भरता रेतीली भूमि पर टहल रहा था। आखो पर हथेली की ओट करके उसने नगर, फिर ओका नदी और उसकी दलदली, चक्करदार सहायक नदी वतरक्षा की ओर देखा। द्र्योमोव मे बड़ी सावधानी बरतनेवाले लोग रहते है – किसी ने भी उससे यह पूछने की हिम्मत नही की कि वह कौन है और यहा क्या कर रहा है। अन्त में उन्होंने यह काम पुलिस के सिपाही मीश्का स्तूप के सुपुर्द किया। वह नगर का विदूषक और मशहूर पियक्कड़ था। औरतो की उपस्थिति मे भी न शर्माते हुए स्तूप ने सब लोगों के सामने निर्लज्जतापूर्वक अपनी वर्दी उतारकर फेंक दी, पर अपनी मुड़ी-मुडाई फौजी टोपी सिर पर रहने दी। उसने पंकिल वतरक्षा नदी पार की, अपना पेट फुला लिया और बत्तख की सी भोंडी चाल मे उस अजनबी के पास जा पहुचा। अपने को बडा दिलेर दिखाने के लिये उसने बड़े ऊंचे स्वर मे पूछा –

"तुम कौन हो?"

उस अजनबी का जवाब तो सुनायी नही पडा, पर स्तूप ने तुरन्त लौटकर यह बताया –

"उसने मुझसे यह पूछा कि तुम ऐसा बेहूदा हुलिया क्यो बनाये हो? उसकी नज़रें डाकुओं-उचक्कों की तरह गुस्से से दहकती-सी है।"

घेघे की रोगी, बुद्धिमत्ता और लोगों के भाग्य बताने के लिये प्रसिद्ध येरदान्स्काया ने शाम को पोम्यलोव के बगीचे में नगर के प्रमुखतम

लोगों से बड़ी बुरी तरह अपनी भयानक आंखें मटकाते हुए कहा –

"उसका नाम इल्या और कुलनाम अर्तामोनोव है। कहता है कि वह यहां धंधा शुरू करने आया है, पर पता नही चल सका कि यह धधा कैसा होगा। वह वोर्गोरोद की राह आया और अभी तीमरे पहर उमी रास्ते वापस चला गया।"

बस, उस आदमी के बारे में वे लोग कोई मतलब की बात न जान मके। यह बात उन्हे बुरी लग रही थी, मानो रात को खिडकी पर दस्तक देकर कोई गायब हो गया हो और आनेवाली मुमीबत की मूक चेतावनी दे गया हो।

लगभग तीन हफ्ते बीत गये। बस्ती के लोग इस घटना को लगभग भूल गये कि अचानक एक दिन यह अर्तामोनोव अन्य तीन लोगों के माथ यहां फिर दिखायी दिया। उमने सीधे मेयर बैमाकोव के पास जाकर मानो लट्ठ मारते अन्दाज़ में कहा –

"सुनो, येव्सेय मीत्रिच, ये नये निवासी तुम्हारी छत्रछाया में रहने के लिये आये है। कृपया यहा जड जमाकर अच्छी ज़िन्दगी शुरू करने मे मुझे मदद दो।"

किसी तरह के घुमाव-फिराव के बिना उसने मक्षेप में बताया कि वह पहले रात नदी के किनारे कूर्स्क नगर के पास प्रिस रात्स्की की जागीर पर भूदास था। वहा वह प्रिंस गेओर्गी के लिये कारिन्दे का काम करता था। भूदास-प्रथा के खत्म होने पर अच्छी सेवा के लिये एक मोटी रक़म लेकर उमने वह काम छोड दिया। अब उमने लिनेन के कारखाने का अपना कारोबार शुरू करने का निश्चय किया है। स्वय विधुर है और उसके सबसे बड़े बेटे का नाम प्योत्र, कुबड़े का निकीता और तीसरे का अल्योशा है – वह भतीजा है, लेकिन उसने उसे कानूनी तौर पर गोद लिया है।

"हमारे किसान तो सन बहुत कम उगाते हैं," बैमाकोव ने मोचकर कहा।

"हम उन्हे अधिक उगाने को मजबूर करेगे।"

अर्तामोनोव का स्वर भारी और रूखा था और जब वह बोलता तो ऐसा लगता मानो कोई बडा ढोल बज रहा हो। बैमाकोव ने अपनी सारी ज़िन्दगी फूंक-फूंककर क़दम रखते काटी थी, इतना धीमे बोलता था मानो डरता हो कि कही किसी हौवे को न जगा दे। अपनी उदास,

बकाइनी रंग की दयालु आखों को झपकाते हुए उसने अर्तामोनोव के लड़कों की ओर देखा जो दरवाज़े पर मूर्त्तिवत खड़े थे। शक्ल-सूरत में वे एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न थे। सबसे बड़ा लड़का अपने पिता से मिलता-जुलता था – चौड़ी छाती, घनी भौंहें और भालू जैसी छोटी-छोटी आंखें। निकीता की आखें किसी लड़की जैसी बड़ी-बडी और उमकी क़मीज़ की तरह नीली थी। अल्योशा बहुत सुन्दर था – लाल-लाल गाल, गोरा रंग, घुंघराले बाल और निश्छल, प्रफुल्ल मुद्रा।

"इनमें से एक तो फ़ौज में भर्ती होगा?" बैमाकोव ने पूछा।

"नही, मुझे लड़कों की खुद ज़रूरत है। मैंने पैसे देकर इनके लिये फ़ौज से छुटकारा पा लिया है।"

अर्तामोनोव ने लड़को को इशारा किया –

"बाहर जाओ।"

अपनी उमर के हिसाब से ये लड़के जब एक-दूसरे के पीछे चुपचाप कमरे से बाहर चले गये तो अर्तामोनोव ने बैमाकोव के घुटने पर अपना भारी हाथ रखकर कहा –

"येव्सेय मीत्रिच, काम-काज के अलावा मै तुम्हारे माथ एक रिश्ते की बात भी करने आया हू। मेरे बड़े बेटे के लिये अपनी बेटी दे दो।"

यह सुनकर बैमाकोव तो डर भी गया, बेंच पर उछला और उसने अपने हाथ लहराये।

"कैमी बात कर रहे हो, भगवान तुम्हारा भला करे! तुम्हे पहली बार देख रहा हू। तुम्हारे बारे मे कुछ भी नही जानता और तुम हो कि इस तरह का प्रस्ताव लेकर आये हो! मेरे एक ही तो बेटी है और वह भी अभी शादी के लायक़ नही। फिर तुमने उमे कभी देखा भी नही, यह भी नही जानते कि वह कैसी है तुम भी कमाल कर रहे हो!"

लेकिन अर्तामोनोव अपनी घुंघराली दाढी मे ही मुस्कराया और बोला –

"मेरे बारे में तुम पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट मे पूछ-ताछ कर लो। उम पर मेरे प्रिंस के बहुत से अहसान हैं और प्रिंस ने उसको लिख भी दिया है कि वह हर काम में मेरी मदद करे। पवित्र देव-प्रतिमाओ की क़सम खाकर कह सकता हूं कि तुम्हें मेरे बारे में कोई बुरी चीज़

सुनने को नही मिलेगी। मैं तुम्हारी बेटी को भी जानता हूं। तुम्हारे इस नगर की कोई भी बात मुझसे छिपी नही है। मैं यहां चुपके मे चार बार आ चुका हूं और मैंने सब चीज़ों का पता कर लिया है। मेरा बड़ा लड़का भी यहां आ चुका है। उसने तुम्हारी बेटी को भी देखा है – तुम निश्चिंत रहो!"

भालू की जकड़ में आये हुए आदमी की तरह अनुभव करते हुए बैमाकोव ने कहा –

"कुछ वक्त तक इन्तज़ार करो ."

"मैं इन्तज़ार कर सकता हू, लेकिन बहुत दिनो तक नही। मेरी ढलती उमर है," अपनी धुन के पक्के इस आदमी ने कडाई मे कहा। खिड़की से भाकते हुए उसने अहाते में आवाज़ दी –

"अन्दर आकर इन्हे प्रणाम करो।"

जब ये लोग चले गये तो बैमाकोव ने घबराहट से देव-प्रतिमाओ की ओर देखते हुए अपने ऊपर तीन बार क्रॉस का चिह्न बनाया और फुसफुसाया –

"भगवान हमारी रक्षा करो! न जाने, कैसे लोग है ये? विपत्ति मे बचाओ।"

डंडे के सहारे मुश्किल मे चलता हुआ वह बाहर बगीचे में पहुचा जहा उसकी पत्नी और बेटी पेड़ के नीचे मुरब्बे बना रही थी। उसकी मोटी-ताज़ी सुन्दर पत्नी ने पूछा –

"मीत्रिच, अहाते मे ये कौन लडके थे?"

"पता नही। नतालिया कहा है?"

"भडारे से चीनी लाने गयी है।"

"चीनी लाने," घास पर बैठते हुए बैमाकोव ने उदासीनता से दोहराया। "चीनी लाने। हा, लोग ठीक ही कहते है कि भूदासो की मुक्ति से लोगों की मुसीबतें बढ जायेगी।"

उसकी पत्नी ने ध्यान मे उसकी ओर देखकर घबराते हुए पूछा –

"क्या हुआ? क्या फिर तबीयत ख़राब है?"

"मेरा मन परेशान है, मुझे लगता है कि वह आदमी इस दुनिया में मेरी जगह लेने आया है।"

उसकी पत्नी ने सान्त्वना देने की कोशिश की –

"फ़िज़ूल की बात न करो! आजकल तो कितने ही लोग देहात

से शहर में बसने के लिये आते रहते हैं।"

"यही तो मुसीबत है कि वे आते हैं। अभी मैं तुम्हें कुछ नही बताऊंगा। मुझे ज़रा सोच लेने दो .."

पांच दिन बाद बैमाकोव ने खाट पकड ली और बारह दिन बाद वह चल बसा। उसकी मौत ने अर्तामोनोव और उसके लड़को पर एक और भी घनी छाया डाल दी। बीमारी के दिनों में अर्तामोनोव दो बार मेयर को देखने आया और वे दोनों बड़ी देर तक एकान्त में बातचीत करते रहे। दूसरी बार बैमाकोव ने अपनी पत्नी को भी अन्दर बुला लिया और थका हुआ-मा अपने मीने पर हाथ रखकर बोला –

"लो, यह आ गयी। इससे बात कर लो। लगता है कि अब दुनिया के मामलो से मेरा नाता टूट गया है। मुझे आराम करने दो।"

"उल्याना इवानोव्ना, मेरे साथ आओ," अर्तामोनोव ने मानो आदेश दिया और मुड़कर यह देखे बिना ही कि वह उमके पीछे आ रही है या नही, वह कमरे से बाहर चला गया।

"जाओ, उल्याना, लगता है कि भाग्य मे यही बदा है," अपनी पत्नी को आगन्तुक के पीछे-पीछे जाने से हिचकिचाते हुए देखकर मेयर ने धीमे स्वर मे सलाह दी। वह दृढ़ चरित्रवाली चतुर स्त्री थी, ऐमी, जो अच्छी तरह सोचे-समझे बिना किमी काम में हाथ नही डालती। फिर भी कुछ ऐसा हुआ कि एक घण्टे बाद पति के पास लौटकर वह अपनी सुन्दर और लम्बी बरौनियों मे आसू पोछते हुए बोली –

"हां, मीत्रिच,.भाग्य में यही बदा लगता है। बेटी को आशीर्वाद दो।"

उमी शाम को वह अपनी बेटी को बढ़िया वस्त्राभूषणों से खूब सजाकर पिता के पाम लायी। अर्तामोनोव ने अपने बेटे को आगे धकेल दिया और लड़के और लड़की ने एक दूसरे से आंखें चुराते हुए हाथ मिला लिये और दोनो घुटनों के बल हो गये। उन्होंने अपने सिर झुका दिये और बैमाकोव ने हांफते हुए अपने घराने की मोतियों मे जड़ी प्राचीन देव-प्रतिमा को उनके सिर पर टिकाकर कहा –

"पिता और पुत्र के नाम पर हे भगवान, मेरी इकलौती बच्ची पर अपनी कृपादृष्टि बनाये रखना!"

इसके बाद उमने कठोर मुद्रा में अर्तामोनोव से कहा –

"याद रखो, मेरी बेटी के लिये तुम भगवान के सम्मुख उत्तरदायी हो!"

अर्तामोनोव हाथ से फर्श को छूते हुए उसके आगे झुका और बोला –

"जानता हूं।"

अपनी भावी पुत्र-वधू से एक भी स्नेह-शब्द कहे बिना, उसकी तथा अपने बेटे की ओर लगभग देखे बिना ही उसने दरवाज़े की ओर इशारा करते हुए कहा –

"जाओ।"

जब लडका-लड़की कमरे मे बाहर चले गये तो उसने खाट के एक सिरे पर बैठते हुए दृढ स्वर मे कहा –

"कोई फ़िक्र नही करो, सब कुछ ठीक हो जायेगा। सैंतीस साल तक मैंने प्रिंमो की सेवा की और कभी भी किमी बात के लिये मेरी डांट-डपट नही हुई। लेकिन आदमी तो ईश्वर नहीं है, वह भगवान जैसा दयालु नही होता – उसे खुश करना मुश्किल होता है। समधिन उल्याना, तुम्हारे लिये भी यही अच्छा होगा कि तुम मेरे लडको की मां की जगह ले लो और उन्हें तुम्हारा सम्मान करने का आदेश दिया जायेगा।"

बैमाकोव कोने में रखी देव-प्रतिमा की ओर अपलक दृष्टि से देखता हुआ चुपचाप सुनता रहा। उसकी आखो से आंसू बहते रहे, उल्याना भी रोती रही और यह आदमी दुखी होते हुए कहता गया –

"हाय! येव्मेय मीत्रिच! तुम बड़ी जल्दी हमें छोड़े जा रहे हो। तुमने अपनी चिन्ता नही की। ठीक ऐसे वक्त जा रहे हो, जब मुझे तुम्हारी बेहद ज़रूरत है – यह तो जैसे मेरे गले पर छुरी चल रही है।"

उसने छुरी फेरने की सी भंगिमा से अपना हाथ दाढ़ी पर चलाया और ज़ोर मे आह भरकर कहा –

"मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ जानता हूं। तुम ईमानदार और खासे समझदार भी हो। कोई पाचेक साल मेरे साथ रहते तो हमने क्या कुछ न कर डाला होता? हाय! भगवान की यही इच्छा है!"

उल्याना उद्विग्नता मे चिल्ला उठी –

"मुंह से ऐसे बुरे शब्द क्यों निकाल रहे हो? हमें डरा क्यों रहे हो? कौन जाने . "

लेकिन अर्तामोनोव उठ खडा हुआ और बैमाकोव के आगे इस तरह झुका मानो मुर्दे के आगे झुक रहा हो।

"आपके विश्वास के लिये धन्यवाद, नमस्कार। मुझे नदी पर जाना है – बजरा मेरा सामान लेकर आ गया है।"

उसके चले जाने पर बैमाकोव की पत्नी ने बुरा मानते हुए चीखकर कहा –

"देहाती गंवार! अपने बेटे की मंगेतर से स्नेह का एक शब्द भी नही कहा!"

पर उसके पति ने रोका –

"शिकवा-शिकायत रहने दो, मुझे परेशान न करो।"

कुछ सोचकर वह बोला –

"इसका दामन थामे रहना। मुझे लगता है कि वह यहा के लोगों से बेहतर है।"

बैमाकोव के प्रति सम्मान दिखाते हुए सारा नगर ही उसे दफ़नाने के लिये उमड़ पड़ा और पाचो गिरजाघरो के पादरियो ने प्रार्थना मे भाग लिया। बैमाकोव की पत्नी और बेटी के ठीक पीछे-पीछे अर्तामोनोव और उसके लडकों का ताबूत के साथ चलना नगर के लोगों को नागवार गुज़रा। अपने पिता और भाइयों के पीछे चल रहे कुबड़े निकीता ने भीड़ मे लोगो को बड़बडाते सुना –

"अजब आदमी है, न किसी से जान, न पहचान, लेकिन सबके आगे-आगे चल रहा है।"

पोम्यलोव ने अपनी गोल, भूरी आंखो को मटकाते हुए फुसफुसाकर कहा –

"भगवान येव्मेय की आत्मा को शान्ति दे, वह सोच-विचारकर चलनेवाले आदमी थे और उल्याना भी होशियार औरत है। ये लोग सोचे-समझे बिना कोई बात नही करते। इसमें कोई न कोई राज़ ज़रूर है। इस शैतान ने इन लोगो को ज़रूर किसी न किसी लालच मे फास लिया होगा। नही तो ये लोग इसे अपना रिश्तेदार क्यो बनाते?"

"हां .. ज़रूर दाल में कुछ काला है।"

"मैं भी तो यही कहता हूं – दाल में कुछ काला है। शायद जाली रुपयों का मामला है। ख़्याल तो करो कि बैमाकोव कैसा सन्त बनता था!"

निकीता सिर झुकाये ये बातें सुन रहा था और इस आशंका से कि अब घूंसे पड़ने ही वाले है, उसने अपने कूबड़ को भीतर की ओर

सिकोड़ लिया। हवा उस दिन तेज़ थी। उसके झोंके लोगों की पीठ से टकराते थे और सैकड़ों क़दमों से उडाई जानेवाली धूल जुलूस के पीछे-पीछे एक धुंधले बादल की तरह उड़ती हुई लोगो के तेल लगे नंगे सिरो पर घनी परत जमाती जा रही थी।

"जरा अर्तामोनोव को तो देखो, हमारी धूल मे एकदम अंट गया है। एकदम भूरी शक्ल हो गयी है जिप्सी की..."

अन्त्येष्टि के दस दिन बाद उल्याना बैमाकोवा और उसकी बेटी मठ मे चली गयी और उन्होंने अपना घर अर्तामोनोव को किराये पर दे दिया। वह और उसके बेटे एक क्षण को भी चैन मे न बैठते। सुबह से रात तक वे नगर की तमाम सड़को पर इधर से उधर दौड-धूप करते दिखायी देते, सिर्फ़ गिरजाघर के सामने रुककर ही अपने ऊपर क्रॉस का चिह्न बनाते और लम्बे-लम्बे डग भरते हुए आगे बढ़ जाते। बाप बडा शोर मचाता और उसके अन्दर मानो उग्र शक्ति का अक्षय भण्डार था। बड़ा लड़का उदास और चुप्पा था और शायद भीरु या झेपू भी। सुन्दर अल्योशा नगर के लड़कों के साथ उद्दंडता मे पेश आता और लडकियों को खुल्लमखुल्ला आख मारता। कूबड़वाला निकीता सूर्योदय होते ही नदी के पार "गोजिह्वा" जा पहुंचता, जहा कौवो के दल-बादलो की तरह ढेरो बढई और राजगीर हर रोज काम करने आते। वहा वे ईटो की एक लम्बी बारक और उसमे थोड़ा हटकर, ओका नदी के पास आध मीटर मोटे शहतीरों से क़ैदख़ाने जैसा एक विशाल दुमज़िला मकान बनाते। शामो को वतरक्षा नदी के किनारे जमा होने-वाले द्रयोमोव नगर के निवासी कद्दू और सूरजमुखी के बीज कुतरते हुए आरों की घर्र-घर्र, रन्दो की घस-घस, तेज़ कुल्हाडो की ज़ोरदार ठक-ठक सुनते रहते। वे बाबुल की मीनार के व्यर्थ निर्माण की कहानी का स्मरण करते और खिल्ली उड़ाते। पोम्यलोव बडे इतमीनान से इन अजनबी लोगों पर भारी आफ़तें टूटने की भविष्यवाणी करते हुए कहता –

"बसन्त में ये बेहूदा इमारतें बह जायेंगी, इन्हें आग भी लग सकती है, क्योंकि बढ़ई लोग तम्बाकू-सिगरेटें पीते रहते हैं और चारों तरफ़ छीलन बिखरी पडी है।"

दिक़ का बीमार पादरी वासीली बात आगे बढ़ाता –

"बालू की भीत खड़ी कर रहे है।"

"जब ये अपनी मिल में मज़दूर भर लेगे तो शराबियो, चोर-

उचक्कों और दुराचारियों का बोल-बाला हो जायेगा।"

इस पर चक्की और ढाबे का थलथल तथा भीमकाय मालिक, लूका बास्की अपने कर्कश, भारी स्वर में कहता –

"जितने ज़्यादा आदमी, उतने ही ज़्यादा गाहक भी। यह तो अच्छी बात है – लोगो को काम करने दो।"

निकीता अर्तामोनोव नगर के लोगों के लिये काफी मनोरंजन का विषय बन गया। बेदवृक्षो के कुंजों को काटकर और उखाड़कर उसने एक बड़ी चौकोर ज़मीन साफ की, वह सारा-सारा दिन वतरक्षा की तली में से गाढा कीच निकालता रहा। दलदल में से पीट काटता, अपने कुबड को आसमान की तरफ उठाये इन्हें ढोता और उसने उस सारी बलुई चौकोर धरती पर कीच और पीट के छोटे-छोटे काले ढेर लगा दिये।

"यह सब्ज़ियों का खेत बनाना चाहता है," नगर के लोग अनुमान लगाते हुए कहते, "कैसा मूर्ख है! कोई बालू को भी उपजाऊ बना सकता है?"

सूर्यास्त होने पर अर्तामोनोव और उसके बेटे एक-दूसरे के पीछे क़तार में चलते हुए फिर नदी पार करते। बाप सबसे आगे रहता। उनकी छायाएं हरे रग के पानी पर पडती। पोम्यलोव इशारा करते हुए फुसफुसाता –

"देखो, देखो! ज़रा कुबडे की परछाई तो देखो!"

और सब लोग देखते कि तीसरी यानी निकीता की परछाई पानी पर हिलती और कापती-सी तथा दूसरे भाइयो की लम्बी परछाइयो से ज़्यादा भारी-भरकम प्रतीत होती थी। एक दिन ज़ोर की बारिश के बाद नदी का पानी चढ़ा हुआ था और पांव के कही फस जाने या किसी गड्ढे में फिसल जाने से कुबडा पानी में जा गिरा। किनारे पर खड़े सभी लोग खुशी से ठहाके लगाते रहे। सिर्फ शराबी घडीसाज की तेरह साल की लडकी ओलगा ओर्लोवा करुणा से चीख उठी –

"हाय-हाय, वह डूब जायेगा!"

उसकी गुद्दी पर धप्पा मारकर कहा गया –

"बेकार चीख नही!"

सबसे पीछे चल रहे अल्योशा ने डुबकी लगाई और भाई को पकड़कर ऊपर उठाया। सिर से पांव तक भीगे और कीचड़ से लथ-पथ ये दोनों

जब किनारे पर आये तो अल्योशा नगर के लोगों की ओर ऐसे सीधा बढ़ा कि उन्होंने उसके लिये रास्ता छोड दिया और उनमें से एक ने डरते-डरते कहा –

"देखो तो इस छोटे से दरिन्दे को .."

"हम लोग इन्हें अच्छे नही लगते," प्योत्र ने कहा। उसके बाप ने चलते-चलते उसकी ओर मुड़कर देखा और बोला –

"थोडा सब्र करो, हम इन्हे अच्छे लगने लगेंगे।"

उसने निकीता को डाटा –

"सुन बे, उल्लू! आंखें खोलकर चला कर और अपने को सबके हसने की चीज़ न बनाया कर। हम लोग भाड नही है, बुद्धू!"

अर्तामोनोव-परिवार अपने ही आप में सिमटा रहता, किसी से जान-पहचान न बढाता। काले वेश में रहनेवाली एक मोटी और बूढी औरत उनके घर का प्रबन्ध करती थी। वह अपने सिर के चारों ओर एक काला दुपट्टा इस तरह बाधती कि उसके सिरे सीगो की तरह ऊपर को उठ जाते। वह बहुत कम बोलती और शब्दों को भीच-भीचकर ऐसे अजब ढग से मुह से निकालती कि कोई उसकी बात ही समझ न पाता। लगता मानो वह रूसी न हो। अर्तामोनोव-परिवार के बारे मे उससे कुछ भी मालूम करना सम्भव नही था।

नगर के लोग कहते –

"वे तो सन्त होने का ढोंग कर रहे है, लुटेरे कही के!"

कुछ दिनो में लोगों को पता लग गया कि बाप और सबसे बडा लड़का आस-पास के गावो में अक्सर चक्कर लगाते है और किसानों को सन की खेती करने के लिये उकसाते है। इसी तरह के एक दौरे के वक्त फ़ौज से भागे हुए फ़ौजियो ने इल्या अर्तामोनोव पर आक्रमण कर दिया। उसके पास चमडे की पेटी से बधा एक सेर का बाट था। उसी को घुमाकर मारने से उसने एक सिपाही को तो वही ठण्डा कर दिया, दूसरे का सिर फोड दिया और तीसरा अपनी जान लेकर भागा। पुलिस के बड़े अफ़सर ने अर्तामोनोव को खूब शाबाशी दी, पर इल्यीन्स्क गाव के मामूली-से गिरजे के युवा पादरी ने हत्या के पाप का यह प्रायश्चित निश्चित किया कि वह चालीस रातो तक गिरजे में प्रार्थना करे।

पतझर की शामों को निकीता अपने पिता और भाइयों को ज़ोर-

ज़ोर से सन्तों की जीवनियां और पादरियो के उपदेश पढ़कर सुनाता। लेकिन उसका बाप अक्सर उसे टोककर कहता –

"ये बड़ी ऊंची बातें है, हमारी समझ के बाहर है। हम तो सीधे-सादे मज़दूर लोग है। इन चीजों के बारे मे हमे नही सोचना है, हम तो सीधे-सादे काम करने के लिये पैदा हुए है। प्रिंस यूरी ने – भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दे – सात हज़ार पुस्तकें पढ डाली थी, इनके विचारों में इतने गहरे डूब गये थे कि भगवान पर से उनका विश्वास ही उठ गया। वह सारी दुनिया मे घूमे थे, सभी राजा उनसे भेंट करते थे, बड़े मशहूर आदमी थे! लेकिन जब उन्होने कपड़ा बनाने का कारखाना खोला तो उसको चला न पाये। यही क्यो, वह जिस काम में भी हाथ डालते, उसे ही आगे न बढ़ा पाते। अपनी सारी ज़िन्दगी किसानों की मेहनत पर ही काटी।"

वह एक-एक शब्द पर ज़ोर देते हुए बोलता, सोचने और अपने शब्दों की गूंज सुनते हुए बीच-बीच मे रुकता और फिर अपना उपदेश जारी रखता –

"तुम लोगो के लिये ज़िन्दगी बडी कठिन होगी। तुम्हे ही अपना क़ानून और अपनी रक्षा का साधन बनना पडेगा। मेरी और बात थी, मैंने अपनी इच्छा से जीवन नही बिताया – मैं तो सिर्फ़ हुक्म बजाता था। कोई बात अगर मुझे बिगड़ती भी दिखायी पड़ती थी, तो मैं उसे ठीक न कर पाता। मामले को ठीक करना, मेरा नही, बड़े लोगों का काम था। न सिर्फ़ अपनी मर्ज़ी के मुताबिक कोई काम करते डरता था, बल्कि सोचने तक मे घबराता था कि कही ऐसा न हो कि मेरे विचार बड़े लोगो के विचारों के साथ उलझ-उलझा जायें। सुन रहे हो न, प्योत्र ?"

"हा, सुन रहा हू।"

"ठीक है। मेरी बात को समझो। लेकिन ऐसे जीना और न जीना एक-सा है। ज़ाहिर है कि ऐसी हालत में आदमी पर ज़िम्मेदारी भी बहुत कम आती है, वह अपनी राह नही चलता, चलाया जाता है। ज़िम्मेदारी बिना जीना आसान, मगर बेमानी होता है।"

कभी-कभी वह घण्टे, दो घण्टे तक बातें करता रहता और बीच-बीच में रुककर लड़कों से पूछता जाता कि वे सुन रहे है या नही? वह छतवाले बड़े तन्दूर के ऊपर पांव लटकाकर बैठ जाता, उगलिया

घुंघराली दाढी में खोंस लेता और फिर किसी तरह की जल्दबाज़ी के बिना शब्दों की एक-एक कड़ी को धीरे-धीरे जोड़कर बातो की बड़ी शृंखला बनाता रहता। साफ़-सुथरे और चौड़े रसोईघर में गरम-गरम धुंध-सी छायी होती, जबकि बाहर तूफ़ानी हवा सीटिया मारती और खिड़की के शीशों से टकराकर रेशम की तरह फिसल-फिसल जाती। भयानक ठण्ड में ज़ोर का पाला कटता। प्योत्र एक मोमबत्ती अपने सामने रखकर मेज़ के पास बैठ जाता, कागज-पत्रो को उलटता-पुलटता रहता और गिनतारे की गोटियों को धीरे-धीरे हिलाकर हिसाब जोड़ता रहता और अल्योशा उसकी सहायता करता। निकीता उस समय अलग बैठा झाऊ की कमचियो से टोकरिया बुनता रहता।

"अब ज़ार-महाराज ने हमें आज़ादी दे दी है। इस बात को समझने की ज़रूरत है कि उसने ऐसा क्यों किया है? किसी वजह के बिना तो कोई अपनी भेड़ तक को बाडे से बाहर नही जाने देता। और यहां लाखो आदमियों को आज़ादी दे दी गयी। इसका मतलब यह है कि ज़ार यह भली-भाति जान गये हैं कि अब बडे लोगो से उन्हे कुछ मिलने का नही, कि वे तो खुद ही खा-पीकर सब कुछ उड़ा देते है। प्रिंस गेओर्गी हमारी आज़ादी के पहले ही इस बात को भाप गये थे। उन्होंने मुझसे कहा था कि दासो का श्रम फलप्रद नही है। इसलिये अब हमारे ऊपर ही छोड़ दिया गया कि हम आज़ाद आदमियो की तरह काम करे। अब तो किसी फौजी को भी पच्चीस साल तक कंधे पर बन्दूक नही ढोनी पडेगी। मैदान मे निकलो और काम करो! कौन किस काम के लायक़ है, खुद ही यह दिखाओ। बड़े लोगो के भाग्य पर तो अब ताला पड़ गया। अब तुम लोग ही बडे हो। सुन रहे हो?"

उल्याना बैसाकोवा लगभग तीन महीने तक मठ मे रही। जब घर लौटी तो अर्तामोनोव ने अगले ही दिन उससे पूछा—

"शादी जल्दी ही कर दी जाये?"

उल्याना ने क्रोध से आखें तरेरकर उसकी ओर देखा—

"कैसी बात करते हो? बाप को मरे अभी छ: महीने भी नही हुए और तुम क्या इतना भी नही जानते कि यह पाप है?"

लेकिन अर्तामोनोव ने कठोरता से उसकी बात काट दी—

"मुझे तो इसमें कोई पाप दिखायी नही देता। बड़े लोग तो न जाने इससे कैसे बुरे-बुरे काम करते है, फिर भी भगवान उन्हें बर्दाश्त

करता है। मेरे लिये यह ज़रूरत का सवाल है: प्योत्र को गृहिणी चाहिये।"

फिर उसने उल्याना से यह पूछा कि उसके पास कितना धन है? वह बोली –

"मैं अपनी लड़की के दहेज में पाच सौ से अधिक नही दूंगी!"

"इससे अधिक ही दोगी," उसकी आखो में सीधे घूरते हुए उस भारी-भरकम आदमी ने बड़े विश्वास और लापरवाही से कहा। वे मेज़ के क़रीब एक-दूसरे के सामने बैठे थे। अर्तामोनोव मेज़ पर अपनी कोहनिया टिकाये और दाढ़ी के घने बालो में दोनो हाथ उलझाये हुए था, उल्याना की अचानक त्योरी चढ गयी और वह आशंका से भरकर तनकर बैठ गयी। वह चालीस के लगभग थी, लेकिन देखने में बहुत कमउम्र लगती थी। उसके भरे-भरे गालोवाले गुलाबी मुख पर उसकी बुद्धिमत्तापूर्ण भूरी आंखें कठोरता का भाव लिये थी।

अर्तामोनोव उठ खड़ा हुआ।

"तुम सुन्दर हो, उल्याना इवानोव्ना।"

"और कुछ?" उल्याना ने तीखे स्वर में पूछा जिसमे एक साथ ही क्रोध और व्यग का पुट भी था।

"और कुछ नही कहूगा।"

वह जोर से पाव रखता हुआ अनिच्छापूर्वक कमरे से बाहर चला गया। बैमाकोवा ने मुड़कर उसकी ओर देखा और एक क्षण के लिये उसकी नज़र दर्पण के ठण्डे शीशे पर अटक गई। उसने खीझ मे फुस-फुसाकर कहा –

"दढियल शैतान, नाक में दम किये दे रहा है!"

इस आदमी की ओर से किसी अस्पष्ट खतरे की आशका से चिन्ता-कुल बैमाकोवा उठकर ऊपर की मंजिल मे अपनी बेटी के कमरे मे चली गयी। लेकिन नतालिया वहां न थी। उसने खिड़की से बाहर अहाते की ओर झांककर देखा। उसकी बेटी वहा, फाटक के पास प्योत्र के निकट खडी थी। वह लपककर नीचे उतरी और दहलीज़ मे ही पुकारकर बोली –

"नतालिया, अन्दर आओ!"

प्योत्र ने झुककर उसे नमस्कार किया।

"भले नौजवान, मा की ग़ैरहाज़िरी में लड़की से बातें करना कोई अच्छी बात नहीं है, अब फिर कभी ऐसा न होना चाहिये!"

"हमारी तो मंगनी हो चुकी है," प्योत्र ने उसे याद दिलाया।

"तो क्या हुआ? हमारे यहा के अपने रीति-रिवाज है," बैमाकोवा ने उत्तर दिया, किन्तु मन ही मन उसे आश्चर्य हुआ –

"किसलिये मैं बिगड़ उठी हूं? दोनो की चढ़ती जवानी की उम्र है – क्यो न वे एक दूसरे के समीप होना चाहेगे? मैंने यह अच्छी बात नही की। लगता है जैसे मैं खुद अपनी बेटी से ईर्ष्या करने लगी हूं।"

फिर भी अन्दर जाकर उसने अपनी बेटी की चोटी पकड़कर ज़ोर से खीची और अकेले में प्योत्र से फिर कभी बात न करने की ताक़ीद की।

"तुम दोनो की चाहे मंगनी हो गयी है, लेकिन बारिश हो या बर्फ़ पडे – कौन जाने, शादी हो या न हो!" उसने कठोरतापूर्वक कहा।

एक गहरी चिन्ता ने उसके विचार उलझा दिये। कुछ दिनो बाद भविष्य के बारे में पूछने के लिये वह येरदान्स्काया के पास पहुची। बस्ती की तमाम स्त्रिया इस मोटी, घण्टे जैसी आकृतिवाली, घेघा की रोगिन इस नीमहकीम और नजूमी औरत के पास अपने पाप, अपने डर और दुःखो की मारी जाती थीं।

"इसके लिये ताश के पत्तो मे नजूम लगाने की ज़रूरत नही है," येरदान्स्काया ने कहा। "मैं तुम्हे दो टूक बात बताये देती हू कि तुम उस आदमी का दामन पकडे रहो। मेरे माथे पर यू ही तो ऐसे बडे-बड़े दीदे नही है – मै लोगो को खूब पहचानती हू। मैं उनके मन की बात उसी तरह से जानती हूं, जैसे मेरे ताश के पत्ते उनके बारे मे बता सकते है। देखो वह कितना भाग्यवान है। जो काम शुरू करता है, वह धडल्ले से आगे बढ़ता जाता है और हमारे यहा के मर्दो की तो सिर्फ ईर्ष्या के मारे लार टपकती रहती है। उससे तुम डरती ही क्यो हो! वह लोमडी की तरह नही, बल्कि भालू की तरह जीता है।"

"यही तो बात है, वह निरा भालू है," विधवा ने सहमति प्रकट की और आह भरी। फिर बोली –

"मुझे डर लगता है। पहली बार ही जब वह मेरी बेटी की मंगनी के लिये आया था, मै उससे डर गयी थी। वह तो अचानक जैसे आसमान से टपक पड़ा, सभी के लिये अजनबी और आन की आन में सम्बन्धी बन बैठा। भला कही ऐसा भी होता है? मुझे याद है कि

वह बातें कर रहा था और मैं, बस, उसकी ढिठाईभरी आंखों को एकटक देखती और हर बात के लिये हामी भरती गयी, उसकी हर बात मानती गयी, जैसे उसने मेरा गला दबा रखा हो।"

"इसका मतलब है कि उमे अपनी शक्ति पर पूरा भरोसा है," चतुर स्त्री ने कहा।

लेकिन इन सब बातों से बैमाकोवा के मन को चैन नही मिला, यद्यपि सूखती जड़ी-बूटियो की तेज़ गंध मे भरे कमरे से उसके बाहर जाने के समय येरदान्स्काया ने उससे एक बार फिर यह कहा –

"याद रखो, सिर्फ़ परियों की कहानियों में ही मूर्ख लोग क़िस्मत-वाले होते है।"

अर्तामोनोव की उसने इतनी अधिक प्रशसा की थी कि सन्देह होता था, मानो उसे रिश्वत दी गयी हो। लम्बी, काली सूरतवाली और नमक लगी मछली की तरह सूखी हुई मत्र्योना बार्स्काया ने दूसरे ही ढंग की बात कही –

"उल्याना, तुम्हारे लिये सारा नगर दुखी और परेशान हो रहा है। तुम्हे इन बाहरी लोगों मे डर कैसे नही लगता? सावधान रहना! यह कोई मयोग की बात नही है कि उनमें मे एक लडका कुबडा है। मा-बाप के किसी बहुत बडे पाप का ही यह फल है कि उनके घर में ऐसा राक्षस जन्मा "

विधवा बैमाकोवा के लिये यह सब असह्य हो गया। वह अक्सर अपनी बेटी की कसकर पिटाई करती, यद्यपि यह महसूस किये बिना न रहती कि बेटी पर अकारण ही बिगडती है। वह अपने किरायेदारों से कम से कम मिलने की कोशिश करती, लेकिन ये लोग बार-बार उसके सामने पड जाते और उसके जीवन को आतंक की परछाई मे घेरे रहते।

अनजाने ही सरदी का मौसम चुपके से आ गया और हुंकारते तूफ़ानों और काटते पाले के साथ नगर पर छा गया, उसने गलियो में और घरों के ऊपर रवादार चीनी जैसे बर्फ के ढेर लगा दिये, पक्षियो के घोंसलों व गिरजाघरो के गुम्बजो को रूई के गालो जैसे मुकुट पहना दिये और नदियों तथा दलदलो के ज़र्द पानी को सफेद लोहे की बेडियों मे जकड दिया। छुट्टी के दिनो नगर के लोग आस-पास के गांव के किसानो के साथ मुक्केबाज़ी करने के लिये बर्फ़ से ढंकी ओका नदी पर जमा होते। अल्योशा ऐसे हर दंगल मे शामिल होता

और हर बार चुटीला होकर तथा ग़ुस्से से तमतमाया हुआ घर लौटता।

"अल्योशा, क्या मामला है, क्या हमारी तरफ़ के लोगों की तुलना में यहां के लोग ज़्यादा अच्छी घूंसेबाज़ी करते हैं?" अर्तामोनोव पूछता।

अल्योशा अपने गुमटों पर तांबे के सिक्के या बर्फ़ मलता हुआ उदासी-भरी ख़ामोशी बनाये रहता। उस समय उसकी बाज़ जैसी आंखें चमकती रहती। लेकिन एक दिन प्योत्र ने कहा—

"अल्योशा ख़ूब लडता तो है, ये तो हमारी अपनी ओर के लोग, यानी नगरवाले ही उसे घायल कर देते है।"

मेज पर घूंसा मारते हुए इल्या अर्तामोनोव ने पूछा—

"किसलिये?"

"इसलिये कि नफ़रत करते हैं।"

"वे इससे नफरत करते हैं?"

"हम सभी से।"

बाप ने मेज पर घूसा दे मारा। मोमबत्ती उलटकर बुझ गयी। अंधेरे मे से एक गुर्राहट-सी सुनायी दी—

"नफरत और प्यार—यह तुम लडकियों जैसी बात क्यों करते रहते हो! ख़बरदार, जो फिर कभी यह राग अलापा!"

मोमबत्ती को जलाते हुए निकीता ने धीमे से कहा—

"अल्योशा को दंगल लडने नहीं जाना चाहिये।"

"ताकि लोग हंसें और कहें—अर्तामोनोव का दम ख़ुश्क हो गया! चुप रह, पादरी, गीदड कही का।"

बाप ने अपने लडकों की ख़ूब भर्त्सना की। कुछ दिनो बाद रात को भोजन करते समय उसने बड़बडाते और कुछ स्नेह से कहा—

"तुम लोगों को भालू के शिकार के लिये जाना चाहिये—बड़ा बढ़िया शिकार होता है! मैं प्रिंस गेओर्गी के साथ रियाज़ान के जंगलों मे जाया करता था। हम लोग भाले से शिकार खेलते थे, बड़ा मज़ा आता था!"

उत्साहित होकर वह कुछेक सफल शिकारो के किस्से सुनाता रहा। एक सप्ताह बाद वह प्योत्र और अल्योशा को अपने साथ लेकर जंगल में शिकार खेलने गया और एक बड़ा, बूढ़ा भालू मार लाया। इसके बाद दोनो भाई अकेले ही गये और उन्होंने एक रीछनी को छेड़ दिया।

उसने भेड़ की खालवाली अल्योशा की जाकेट फाड़कर उसका कूल्हा खरोंच डाला। लेकिन अन्त में भाइयो की विजय हुई। वह रीछनी के दो बच्चों को नगर में ले आया और शव को जंगल में ही भेड़ियों के लिये छोड़ दिया।

"कहो, तुम्हारे अर्तामोनोवो का कैसा हालचाल है?" नगर के लोग बैमाकोवा से पूछते।

"अच्छा हालचाल है।"

"सर्दियों में सूअर शान्त रहते है।" पोम्यलोव ने टिप्पणी की।

बैमाकोवा अपने पर विश्वास न करते हुए भी यह अनुभव करने लगी थी कि कुछ समय से अर्तामोनोव के प्रति लोगो के विरोधी रुख से वह स्वयं चिढने लगी थी, कि उनकी घृणा में उसके प्रति भी उपेक्षा का भाव होता था। वह देखती थी कि अर्तामोनोव-परिवार के लोग बड़ी संजीदा और आपसी प्यार-मुहब्बत की ज़िन्दगी बिताते है, अपने काम मे पूरी लगन से जुटे रहते है और उनमें किसी तरह की कोई बुराई नज़र नही आती। अपनी बेटी और प्योत्र पर लगातार कडी नज़र रखने के बाद उसे इस बात का विश्वास हो गया कि यह गठीला, मितभाषी नवयुवक अपनी उमर के हिसाब मे कही ज़्यादा गम्भीर है। उसने शहरी लड़कों की तरह नतालिया को कोने में ठेल ले जाने, उससे छेड-छाड़ करने और उसके कान में अनुचित शब्द फुसफुसाने की कभी कोशिश नही की। बैमाकोवा को अपनी पुत्री के प्रति प्योत्र के इस विचित्र, रूखे, संरक्षात्मक तथा मानो ईर्ष्यालु रवैया से कभी-कभी थोड़ी चिन्ता भी होती।

"यह लड़का स्नेहशील पति न बन सकेगा।"

लेकिन एक दिन जब वह सीढियों से नीचे उतर रही थी तो उसने ड्योढ़ी में अपनी बेटी को प्योत्र से यह कहते सुना –

"क्या आज फिर भालू के शिकार के लिये जा रहे हो?"

"इरादा तो कुछ ऐसा ही है। क्यो?"

"ख़तरनाक मामला है। पिछली दफा अल्योशा को चोट आ गयी थी।"

"यह तो उसकी ही ग़लती थी। उसने जल्दबाज़ी से काम लिया। क्या मेरी चिन्ता हो रही है तुम्हें?"

"मैंने तुम्हारे बारे में तो कुछ कहा ही नही।"

"अरी शैतान छोकरी!" मां ने मन ही मन कहा, मुस्करायी और आह भरी। "लेकिन यह लड़का बड़ा सीधा-सादा है।"

इल्या अर्तामोनोव उससे अक्सर अधिकाधिक ज़ोर देकर कहता –

"जल्दी से शादी कर दो, नही तो ये लोग ख़ुद ही जल्दी कर लेंगे।"

बैमाकोवा अनुभव करने लगी कि सचमुच जल्दी करनी चाहिये, लडकी नीद-भर सो नही पाती और न अपनी शारीरिक बेचैनी को ही छिपा पाती है। ईस्टर के त्योहार से पहले मा उसे फिर मठ में ले गयी। एक महीने बाद उसने लौटकर देखा कि उसके लापरवाही से छोड़े गये बगीचे की बडी अच्छी देखभाल की गयी है। उसकी रौस-पट्टियों की घास साफ़ कर दी गयी और पेडो के इर्द-गिर्द जंगली पौधे काट दिये गये हैं। जंगली फलों की झाड़ियो को क़रीने से काटकर होशियारी से बांध दिया गया है। सब कुछ अनुभवी ढंग से किया गया था। नदी की ओर जानेवाली पगडंडी की ओर मुडते ही उसे निकीता दिखायी दिया। वह बाड की उन लकडियो को दुरुस्त कर रहा था जिन्हें बसन्त की बाढ ने तोडकर गिरा दिया था। उसके घुटनों तक के लम्बे लिनन के कुरते में से स्पष्ट रेखाएं बनाता हुआ उसका कूबड़ ऊपर को दयनीय ढग से उठा हुआ था और उसके भारी सिर और सुनहरे, सीधे बालों को नजर नही आने दे रहा था। बालो को अपने मुह पर गिरने से रोकने के लिए निकीता ने उन्हे बर्च की एक मुलायम टहनी से बाध रखा था। सुन्दर हरियाली के बीच उसे खड़ा देख मन में एक ऐसे योगी का चित्र उभरता था जो अपने अस्तित्व को पूरी तरह भूलकर एकाग्रता से अपने काम मे लगा हुआ हो। वह बडी चतुराई से एक खूंटे की नोक तेज कर रहा था और सूरज की किरणो में उसका हथौड़ा चादी की तरह चमक रहा था। लडकियों जैसी पतली आवाज़ में वह धीमे-धीमे कोई भजन गुनगुना रहा था। बाड के उस पार हरिताभ, रेशमी पानी चमचमा रहा था और उस पर सूर्य-रश्मियों के नन्हे-नन्हे बिम्ब सुनहरी मछलियो की तरह फुदकते दिखायी दे रहे थे।

"भगवान तुम्हारे काम में मदद करे," बैमाकोवा ने ऐसे स्नेह से कहा कि उसे स्वय अपने ऊपर अचरज हुआ। अपनी नीली आंखों की हल्की-सी चमक को उसकी ओर घुमाते हुए निकीता ने कोमल स्वर में उत्तर दिया –

"भगवान कल्याण करे।"

"क्या तुमने ही बगीचे को ठीक-ठाक किया है?"

"हां।"

"बहुत अच्छी तरह से ठीक किया है। क्या तुम्हें बाग़-बगीचे अच्छे लगते हैं?"

घुटनों के बल खड़े होकर उसने संक्षेप में बताया कि नौ साल की उमर में ही उसे प्रिंस के बाग़बान का शागिर्द बना दिया गया था और अब उसकी उमर उन्नीस साल की है।

"कुबड़ा है, लेकिन स्वभाव का अच्छा लगता है," बैमाकोवा ने मन ही मन सोचा।

शाम को जब वह अपनी बेटी के साथ ऊपर के कमरे में बैठकर चाय पी रही थी, तो निकीता फूलो का एक गुलदस्ता लिये अपने पीले, कुरूप, उल्लासहीन मुख से मुस्कराता हुआ दरवाज़े पर आ खडा हुआ।

"गुलदस्ता भेट करने की अनुमति चाहता हू।"

"किसलिये?" बैमाकोवा ने सुन्दर ढग मे सजाये फूलो और पत्तियों के गुलदस्ते की ओर सन्देहपूर्ण दृष्टि से देखते हुए हैरान होकर पूछा। निकीता ने उसे बताया कि जब वह बड़े लोगो के यहा रहता था तो सुबह प्रिंसेस के लिये फूलों का गुलदस्ता बनाकर ले जाने का काम उसके ही ज़िम्मे था।

"तो यह बात है," बैमाकोवा बोली। किंचित शरमाकर उसने गर्व से सिर ऊपर उठाया, "क्या, मैं प्रिंसेस जैसी हूं? वह तो शायद बहुत ही सुन्दर होगी!"

"आप भी तो बहुत सुन्दर है।"

बैमाकोवा और भी शरमा गयी। उसने अपने मन में सोचा –

"कही इसके बाप ने तो इसे यह पट्टी नही पढ़ायी?"

"अच्छा, तो इस सम्मान के लिये धन्यवाद," उसने कहा, पर निकीता को अपने साथ चाय पीने को नही बुलाया। जब वह चला गया तो वह सोचती हुई बोली –

"इस लड़के की आंखें प्यारी है, अपने बाप जैसी नही; शायद मां पर पड़ी है।"

उसने आह भरी – "लगता है कि हमारी क़िस्मत में इन लोगों के साथ ही रहना लिखा है।"

उसने अर्तामोनोव के सामने विवाह को पतझड के दिनों तक यानी अपने पति की पहली बरसी तक टालने के लिये ज़ोर नही दिया, लेकिन दृढ़तापूर्वक यह कहा –

"इल्या वसील्येविच, बस तुम इस काम में टांग न अड़ाना। मुझे अपने पुराने ढंग से इसका सारा इन्तज़ाम करने दो। इसमें तुम्हारा भी फ़ायदा है – यहां के सबसे अच्छे लोगों में तुम्हारी गिनती होने लगेगी, फ़ौरन ही नज़रों में आ जाओगे।"

अर्तामोनोव ने घमण्ड से गुर्राते हुए कहा – "हु, मैं तो यो भी दूर से सबको नज़र आता हू।"

उसके अहंकार से चिढ़कर बैमाकोवा ने उत्तर दिया –

"यहा के लोग तुम्हें पसन्द नही करते।"

"तो वे मुझसे डरेंगे।"

उसने चटखारा भरा और कधे झटके –

"प्योत्र भी हमेशा लोगो की पसन्दगी और नापसन्दगी का राग अलापता रहता है। अजीब हैं आप लोग भी "

"लोगों की इस नापसन्दगी की मुझ पर भी छाया पड़ती है।"

"तुम कुछ फिक्र नही करो, ममधिन!"

अर्तामोनोव ने अपनी लम्बी बाह उठायी और अपनी मुट्ठी इतने ज़ोर से भीची कि तनी हुई खाल लाल पड़ गयी।

"लोगो की अक्ल ठीक करना मुझे खूब आता है। मेरे सामने बहुत दिनों तक उनकी दाल नही गलेगी। उनके प्यार के बिना भी मेरा काम चल जायेगा ."

बैमाकोवा चुप रही। भयभीत होते हुए उसने सोचा –

"कैसा जगली है।"

और आख़िर वह शुभ दिन आया, जब उसका सुखद घर नतालिया की सखियो, नगर के सबसे ऊचे घरानो की लड़कियो से भर गया। सब पुराने ढंग के किमख़ाब के क़ीमती गाउन पहने थी, जिनकी बड़ी-बड़ी और फूली-फूली आस्तीनें श्वेत लिनन तथा मलमल की थी, और उन पर रेशम के रंगीन धागों की क़सीदाकारी थी तथा कफ़ों पर लेस लगी थी। वे सब बढिया चमड़े के जूते पहने थी और अपनी लम्बी वेणियों में फ़ीते बांधे थी। चांदी के किमख़ाब के कामवाले और चमकीले बटन लगे भारी गाउन में गर्दन से लेकर पांवों तक लिपटी

वधू का बुरा हाल हो रहा था। उसके कधो पर सुनहरे किमख़ाब की जाकेट थी और बालों में सफ़ेद और नीले फ़ीते बंधे थे। वह देव-प्रतिमाओं के नीचे हिम-प्रतिमा-सी एक कोने में बैठी थी और रेशमी रूमाल से अपने मुंह का पसीना पोंछती हुई ज़ोर से गुनगुना रही थी –

चरागाह मे, हरे-भरे मैदानो मे
नीले फूल जहा पर, उन मैदानो मे
आयी बाढ बसन्ती, है पानी फैला
ठण्डा-ठण्डा, रे, पानी गदला-गदला।

उसकी सहेलियों ने उसके दर्द-भरे गीत की धीमी-धीमी लय को ज़ोर से एकसाथ गाना शुरू किया –

मुझ युवती को पानी लाने को भेजे
जाओ, पानी लाओ, मुझसे यही कहे,
मै जो नगे पाव, न कपडा है तन पर
कैसे जाऊ मै पानी लाने बाहर

लड़कियों की भीड़ में नज़र न आनेवाला अल्योशा जोर से हसता हुआ चिल्लाया –

"अजीब गाना है यह! लडकी को किमख्वाब के कपडों से इस तरह लाद दिया जैसे मुर्ग़ी को टीन की बालटी में बन्द कर दिया हो और फिर गाया जाता है कि वह नंगे पांव और निर्वसना है!"

निकीता नीले कपडे की एक नयी जाकेट पहने वधू के पास बैठा था। उसके कूबड पर उठी हुई जाकेट की ढेर सारी सिलवटे भद्दी और बेढगी लग रही थी। वह अपनी नीली आखें फाडे नतालिया की ओर ऐसे विचित्र भाव से टकटकी बाधे देख रहा था, मानो उसे डर हो कि लड़की पिघलकर ग़ायब हो जायगी। दरवाजे को अपनी लम्बी-चौड़ी देह से पूरी तरह घेरकर मत्र्योना बास्र्काया खड़ी हुई थी और अपनी आंखो को घुमा-घुमाकर भारी स्वर से कह रही थी –

"लड़कियो, तुम्हारे गीत में दर्द नही है।"

घोड़े जैसे लम्बे-लम्बे डग भरती हुई वह आगे बढी और कठोर भाव से उन्हें पुरानी प्रथा के अनुसार गाना और यह सिखाने लगी कि किस तरह विवाह की तैयारी के समय एक कुमारी का हृदय कम्पन से भरा होना चाहिये।

"कहते है कि 'पति पत्थर की दीवार जैसा है।' तो समझ लो कि यह दीवार मज़बूत होती है, तोड़ी नही जा सकती और यह दीवार ऊंची है, इसके ऊपर से कूदा नही जा सकता।"

लेकिन लडकियां उसकी बात पर कान देने को तैयार न थी। कमरे में घिचपिच और घुटन थी। बुढिया को धकियाते हुए लड़किया बाहर बगीचे मे भाग गयीं। सुनहरी रेशमी कमीज़ और मखमल का चौडा पतलून पहने अल्योशा उनके बीच ऐसे मंडरा रहा था जैसे फूलो के बीच भौंरा और इस तरह शोरगुल मचा रहा था तथा इतना खुश लग रहा था जैसे उसने पी रखी हो।

आखे फाडे, गुस्से मे ओठ फुलाये, अपने रेशमी घाघरे को समेटती तथा धुएं के भारी बादल की तरह उमड़ती-घुमडती बार्स्काया सीढ़िया चढकर ऊपर गयी और एक भविष्यवक्ता के अन्दाज में उसने उल्याना से कहा –

"तुम्हारी बेटी आज बहुत खुश है, यह अच्छी बात नही। यह रीति-रिवाज के खिलाफ है। खुशी-भरे आरम्भ का अन्त दुखद होता है।"

घुटनो के बल बैठी बैमाकोवा लोहे के एक बडे सन्दूक की चीज़ो को उलट-पुलट रही थी। पलग और फर्श पर उसके चारो ओर रेशम, ताफ़ता, मास्को के बने हुए चटक लाल कपड़े, कश्मीरी शाले, फीते और कसीदा कढे तौलिये इस तरह फैले थे, जैसे किसी मेले की दुकान हो। सूरज की किरणो की एक चौडी पट्टी चटकीले कपडो पर पड रही थी और उन्हे सूर्यास्त के समय के बादलो की तरह रग-बिरंगा बना रही थी।

"यह भी कोई तरीक़ा है कि दुलहा शादी के पहले ही दुलहन के मकान मे रहने लगे? अर्तामोनोव-परिवार के लोगो को कही और जा टिकना चाहिये था "

"यह तुमने पहले क्यो नही बताया? अब कहने मे क्या फ़ायदा?" उल्याना अपने चिन्ताकुल मुख को छिपाने के लिये सन्दूक़ पर झुकते हुए बड़बड़ायी। जवाब मे बार्स्काया की भारी-भरकम आवाज़ सुनायी दी –

"लोग हमेशा तुम्हें समझदार कहते रहे है। इसीलिये मैं चुप रही। मैंने सोचा कि तुममें इतनी समझ होगी। मुझे इससे क्या? मेरा

काम तो बस, सच कह देना है। अगर लोग उसे अनसुनी कर देंगे, तो भगवान तो जानेगा कि मैंने ठीक कहा था।"

एक विशाल स्मारक की तरह खड़ी बास्कीया अपने सिर को ऐसे स्थिरता से साधे हुए थी, जैसे कि वह बुद्धिमानी से लबालब भरा हुआ कोई प्याला हो। कोई उत्तर न मिलने पर वह झपटकर बाहर चली गयी। कपड़ों के कौंधते रंगों के बीच घुटनों के बल झुकी हुई उल्याना ने भय और वेदना से दबे स्वर में कहा –

"हे भगवान, मेरी सहायता करो! मेरी अक्ल ठिकाने रहे।"

द्वार पर फिर सरसराहट-सी हुई और वह इस भय से कि कोई उसके आंसुओं को न देख ले, जल्दी से सन्दूक मे अपना सिर छिपाकर चीज़ों को उलटने-पुलटने लगी। इस बार निकीता आया था।

"नतालिया येव्सेयेव्ना ने मुझे आपसे यह पूछने के लिये भेजा है कि आपको किसी तरह की मदद की ज़रूरत तो नही।"

"शुक्रिया, बेटे ..."

"नीचे रसोईघर में ओलगा ओर्लोवा ने अपने कपड़ो पर चाशनी गिरा ली है।"

"यह तुम क्या कह रहे हो? बड़ी प्यारी बच्ची है, तुम्हारी दुलहन बनने लायक़ ."

"मुझसे कौन ब्याह करेगा?"

बाहर बगीचे में, लिंडन पेड़ की छाया में गोल मेज़ के गिर्द बैठे हुए इल्या अर्तामोनोव, दुलहन का धर्म-पिता गव्रीला बास्की, पोम्यलोव, जितेइकिन, जिसकी दृष्टि भावशून्य थी और छकड़े बनानेवाला वोरोपोनोव घर की बनी शराब पी रहे थे। प्योत्र पेड के सहारे पास ही में खड़ा था। अपने काले बालों में वह इतना अधिक तेल लगाये था कि उसका सिर धातु की तरह चमचमा रहा था। वह सम्मानपूर्वक बुजुर्गों की बातचीत सुन रहा था –

"तुम लोगों के रीति-रिवाज अलग ढंग के हैं," अर्तामोनोव ने विचारमग्न मुद्रा में कहा। पोम्यलोव ने डीग मारी –

"हम ही तो देश के असली निवासी हैं, बहुत बड़ा है रूस देश।"

"हम भी कोई विदेशी नही है।"

"हमारे रीति-रिवाज बहुत प्राचीन हैं ..."

"मोर्दोवी और चुवाश लोग बहुत हैं आपके यहां ."

किलकिलाती, हसती और धक्कम-धक्का करती हुई लड़कियां बगीचे में भाग आयी और मेज़ के गिर्द चटक रगो की पोशाकों का घेरा डालकर दूल्हे के पिता के लिये मुबारकबादी का गीत गाने लगी –

इल्या वसील्येविच को आज बधाई
जो बेटे की करे सगाई,
पहली पैडी पर पग रखो – वह टूटे,
दूजी पैडी पर पग रखो – वह टूटे,
चढ़ो तीसरी पैडी पर तो – सिर फूटे।

"तो ऐसी ही मुबारकवादियां दी जाती है!" अर्तामोनोव ने अपने पुत्र की ओर मुडते हुए आश्चर्य से चिल्लाकर कहा।

प्योत्र अगल-बगल खड़ी लड़कियो की ओर कनखियो से देखते और अपना कान खीचते हुए दबे-दबे मुस्करा दिया।

"तुम सुनते जाओ!" बास्की ने सलाह दी और ज़ोर से हस पड़ा।

लूट ले चला जो लड़की को
और सुनाये उसको कुछ तो।

"क्या इतना ही कम है?" अर्तामोनोव उत्तेजित होकर मेज पर अपनी उगलियां बजाते हुए बोला।

लड़किया उसी जोश से गाती गयी –

बुरा तुम्हारा हो, हेगे
के नीचे तुम पिस जाओ
बुरा तुम्हारा हो, पर्वत से तुम नीचे गिर जाओ,
ताकि न हमको सब्ज बाग दिखलाकर तुम छल पाओ
तारीफे कर दूर देश की, हमें नही फुसलाओ,
वे निर्जन, सुनसान दिशाये, दुख ही दुख उपजाये
और वहा पर बहती रहती आसू की धाराये।

"तो यह बात है!" अर्तामोनोव ने बुरा मानते हुए कहा। "तो सुनो, लड़कियो, मैं तुम्हे नाराज़ नही करना चाहता, लेकिन फिर भी मै अपने प्रदेश की तारीफ ज़रूर करूगा। यहा की अपेक्षा हमारे यहा के रीति-रिवाज अधिक अच्छे हैं और लोग अधिक नेकदिल है। हमारे यहां एक कहावत भी है – स्वापा और उसोजा नदियां सीम नदी में गिरती, शुक्र भगवान का कि ओका नदी से नही मिलती!"

"ठहरो, तुम अभी हम लोगो को नहीं जानते," बास्कीं ने कहा। उसके कहने के ढंग से यह पता नही चल सकता था कि वह डीग हांक रहा था या धमकी दे रहा था। "अरे भाई, तुम इन लड़कियों को इनाम दो!"

"कितना इनाम दूं?"

"जितना देने मे अफसोस न हो।"

लेकिन जब अर्तामोनोव ने लड़कियों को चादी के दो रूबल दिये तो पोम्यलोव झुंझलाकर बोला –

"तुम तो पैसे लुटा रहे हो, अपनी शान दिखाना चाहते हो?"

"तुम लोगों को खुश करना टेढ़ी खीर है!" अर्तामोनोव भी क्रोध से चिल्लाया। बास्कीं ने ज़ोर से ठहाका लगाया और जितेइकिन तीखी आवाज़ में धीरे-धीरे हंसने लगा।

अपनी बचपन की सखी-सहेलियों से दुलहन ने प्रभात की बेला में विदा ली। मेहमान चले गये और सारा घर नीद की गोद मे चला गया। प्योत्र और निकीता के साथ बगीचे मे बैठे अर्तामोनोव ने अपने इर्द-गिर्द के पेड़-पौधों और ऊपर बादलों में खेलती हुई उषा की लालिमा को देखते और अपनी दाढी पर हाथ फेरते हुए धीमे स्वर मे कहा –

"यहां के लोग तेज स्वभाव के है, स्नेहशील नही हैं। बेटा प्योत्र, तुम्हारी सास तुमसे जो कुछ भी करने को कहे, वही करते जाना। वैसे है सब औरतों की उलटी-सीधी बातें, लेकिन इन्हें करना ही पडेगा! अल्योशा क्या लडकियो को उनके घरो तक छोड़ने गया है? लडकिया उसे पसन्द करती है, लेकिन लड़के उसे नही चाहते। बास्कीं का लड़का उससे जलता है. हां! निकीता, तुम लोगो के साथ प्यार-मुहब्बत से पेश आया करो, तुम इस कला मे होशियार भी हो। मरहम की तरह अपने बाप की मदद करो, जहां मैं खरोच मार दू, वहा मरहम लगा देना।"

उसने पास में पड़े हुए लकडी के एक बडे पीपे मे झांककर उदास मुद्रा में अपनी बात जारी रखी –

"उन्होंने नदीदों की तरह इसकी सारी शराब गटागट पी डाली। ये लोग घोड़ों की तरह पीते है। क्या सोच रहे हो, प्योत्र?"

अपनी मंगेतर के दिये हुए रेशमी कमरबंद को छूते हुए बेटे ने धीरे से उत्तर दिया –

"देहात में ज़िन्दगी कही ज़्यादा सीधी-सादी और आसान है।"

"क्यो नही... दिनभर सोते रहने से अधिक आसान और क्या हो सकता है!"

"ये लोग शादी की रस्म को व्यर्थ ही लम्बा खींच रहे है।"

"सब्र से काम लो।"

आखिर दिन शुरू हुआ, प्योत्र के लिये एक लम्बा और कठिन दिन। देव-प्रतिमाओं के नीचे बैठे हुए उसे यह चेतना हो रही थी कि उसकी भृकुटि चढ़ी हुई है, वह अनुभव कर रहा था कि यह ठीक नही है, कि उसकी वाग्दत्ता को उसका यह रूप अच्छा नही लगेगा। लेकिन यह उसके बस की बात न थी। उसे लगा जैसे उसकी भौंहें किसी धागे से कसकर एकसाथ सी दी गयी है। भौंहें चढ़ाकर मेहमानों की ओर देखते हुए उसने अपने बाल पीछे की ओर झटके, हॉपस के बीज मेज़ और नतालिया के अवगुण्ठन पर बिखर गये। वह भी अपना सिर नीचा किये बैठी थी, थकान से उसकी पलके झुकी जा रही थी, उसके चेहरे का रग पीला था, वह बच्चे की तरह डरी हुई थी और शर्म मे कांप रही थी।

"कडवी है!"* लगातार शराब पीने के कारण लाल चेहरो और अस्त-व्यस्त बालोवाले लोगो ने दांत निपोरते हुए बीसवी बार चिल्लाकर कहा।

अपनी गर्दन झुकाये बिना ही प्योत्र ने भेड़िये की तरह मुडकर अवगुण्ठन उठाया और नतालिया के गाल पर फूहड़ ढग से अपने सूखे ओंठ लगा दिये। उसने नतालिया की त्वचा की साटिन जैसी कोमल शीतलता और उसके कधों का भीत कम्पन अनुभव किया। उसे नतालिया पर दया आयी और साथ ही लज्जा अनुभव हुई। शराब के नशे मे धुत्त मेहमानों का घेरा चीख़-चिल्ला रहा था –

"इस लड़के को तो चूमना भी नही आता!"

"ओठों पर निशाना लगाओ!"

"अगर मै होता तो दिखाता कि कैसे चूमा जाता है..."

* विवाह के समय रूसी लोग 'कडवी है' चिल्लाते है जिसका अभिप्राय यह होता है कि शराब और खाने की चीज़ें कडवी है और उन्हें मीठा बनाने के लिये दूल्हे-दुलहन को चुम्बन लेना चाहिये। – स०

नशे में चूर एक औरत चिल्लायी—

"कोशिश करके देखो!"

"कड़वी है!" बास्कीं चिल्लाया।

अपने दांत पीसकर प्योत्र ने अपने ओठों से लड़की के कांपते, गीले ओठ छुये। सर्वथा रक्तहीन-सी सफेद वह मानो सफ़ेद बादल की तरह सूरज की किरणो में पिघली जा रही थी। दोनो भूखे थे, क्योंकि पिछले दिन से उन्हें खाने को कुछ नही दिया गया था। सारे समारोह की तीव्र उत्तेजना, शराब की तेज़ गन्ध और शेम्पेन के दो गिलासों ने प्योत्र को नशे में चूर कर दिया था। उसे डर लग रहा था कि उसकी दुलहन उसकी इस अवस्था को कही भांप न ले। उसे लगता था जैसे चारों ओर की चीज़ें झूल रही हैं और अपने स्थान से इधर-उधर भाग रही है। कभी वे एक मतरंगी इकाई बनकर मूर्तिमान हो जाती और कभी भद्दी शक्ल के लाल बुलबुले बनकर बिखर जाती। बेटे ने अपने बाप की ओर विनय और क्रोध-भरी दृष्टि से देखा, लेकिन उत्तेजित और अस्त-व्यस्त दशा में बैठा इल्या अर्तामोनोव बैमाकोवा के लाल गालोंवाले चेहरे को घूर रहा था और चिल्लाकर कह रहा था—

"समधिन, आओ, हम दोनों शहद की शराब पिये! यह शराब इतनी ही मीठी है, जितनी इसे बनानेवाली ..."

बैमाकोवा ने अपनी गोल, गोरी बांह उसकी तरफ़ बढ़ाई और सूरज की रोशनी उसके सुनहले कंगन पर, जिसमें रग-बिरंगे हीरे-जवाहिरात जड़े थे, खेल गयी। उसके वक्ष पर पडी मोतियों की माला तारों-सी चमकने लगी। औरो की तरह वह भी शराब पीती रही थी। उसकी आंखों में एक अलस मुसकान चमक रही थी और उसके खुले हुए ओंठों में लुभाना कम्पन हो रहा था। उन्होंने जाम पिये और बैमा-कोवा ने पीकर अपने समधी के आगे कोरनिश की। हर्षातिरेक से चीखते हुए अर्तामोनोव ने अपना झबरीला सिर ऊपर को झटका—

"समधिन, क्या कहने है तुम्हारे अदब-क़ायदे के, राजकुमारियों जैसा अदब-क़ायदा है! क़सम भगवान की!"

प्योत्र को इस बात का अस्पष्ट-सा आभास हो रहा था कि उसका पिता ठीक व्यवहार नही कर रहा है। मेहमानों की मदोन्मत्त चीख-पुकार के बीच उसे पोम्यलोव के द्वेषपूर्ण शब्द, बास्कीया की जली-कटी बाते और जिनेइकिन के तीखे उपहास साफ़ सुनायी दे रहे थे।

"यह शादी नही, मुसीबत है," वह सोच और सुन रहा था।

"देखो तो, उल्याना की ओर कैसा घूर रहा है, शैतान! बाप रे बाप!"

"एक और शादी होनेवाली है, लेकिन पादरी के बिना..."

ये शब्द क्षण भर को प्योत्र के कानो मे टीस उठे। लेकिन नतालिया के घुटने या कोहनी का स्पर्श होते ही वह तुरन्त इन बातों को भूल गया और उसने अपने अंग-अग में एक उन्मादकारी बेचैनी अनुभव की। वह उसकी ओर न देखने की कोशिश करता, अपने सिर को स्थिर रखता, लेकिन उसकी आखे बस में ही न रहती थी। रह-रहकर वह उसकी दिशा मे घूम जाती।

"यह सब कब तक चलता रहेगा?" उसने फुसफुसाकर पूछा और नतालिया ने भी वैसे ही फुसफुसाकर उत्तर दिया—

"पता नही।"

"मुझे शर्म आ रही है..."

"मुझे भी," उत्तर मिला और प्योत्र को इस बात मे खुशी हुई कि नतालिया भी उसकी ही तरह अनुभव कर रही है।

अल्योशा लड़कियों के साथ था, वे बगीचे मे दावत उडा रही थी। निकीता गीली दाढ़ी, पीली-ताम्र आंखोवाले चेचकरू तथा लम्बे-तड़ंगे पादरी के पास कमरे मे बैठा था। आगन और सडक की ओर खुलनेवाली खिड़कियों मे नगर के लोग झाककर देख रहे थे। नीले आकाश की पृष्ठ-भूमि मे दर्जनों आदमियो के सिर एक अटूट क्रम में नज़र के सामने आते और गायब हो जाते; इनके मुह खुलते, वे कानाफूसी करते, सिसकारते या चीखते-चिल्लाते। खिड़कियां खुले मुंह की बोरियों की तरह दिखायी देती थी जिनमें से ये शोर मचाते सिर किसी भी समय तरबूज़ों की तरह कमरे में गिर पड़ सकते थे। कुदाल-मज़दूर तीख़ोन व्यालोव के चेहरे की ओर, जिस पर लाल झांइयां थी और जिसके गाल की ऊंची हड्डियां मानो ऊन की एक ललछौंहीं मोटी गद्दी में जड़ी थी, निकीता का विशेष ध्यान गया। उसकी आंखें जो पहली नज़र में वर्णहीन लगती थी, इस अजब ढंग से झपझपाती थी जैसे टिमटिमा रही हों। लेकिन ये निःस्पन्द बरौनियां नहीं, बल्कि उसकी पुतलियां रह-रहकर झपझपा रही थीं। उसके पतले, ज़ोर से भिंचे हुए ओठ भी, जिन्हें घुंघराली मूंछ ने ढंक रखा था, निःस्पन्द थे।

उसके कान भद्दे ढंग से उसकी खोपड़ी के साथ चिपके हुए थे। व्यालोव खिड़की के दासे से छाती टिकाये खड़ा था। लोग जब उसे धक्का देते तो वह न तो उन पर चीखता-चिल्लाता, न गाली देता, बल्कि अपने कंधों और कोहनियों को ज़रा हिलाकर उन्हें दूर हटा देता। उसके गोल कंधे पहाड़ की चोटियों की तरह ऊपर की ओर उठे हुए थे। उसकी गर्दन उनके बीच में धंसी हुई थी, जिससे यह लगता था मानो उसका सिर सीधे उसके वक्ष में से निकला हो और वह भी कुबड़ा-सा दिखायी देता था। निकीता को उसके चेहरे में कोई चीज़ अत्यन्त स्नेहमयी और चित्ताकर्षक लगी।

एक काने लड़के ने अचानक खंजडी पर ज़ोर की थाप दी और उसके चमड़े पर जोर से अपनी उंगलिया दौड़ायी। खजडी कराह-सी उठी और गूजने लगी। किसी ने सीटी बजायी और हथबाजे पर तान छेड़ी। दुलहन का सहचर स्त्योपा बास्कीं, जो गोल-मटोल शरीर और घुंघराले बालोंवाला लडका था, कमरे के बीच मे फिरकी की तरह घूमता और पांव पटकता हुआ सगीत की लय-ताल के साथ चिल्लाने लगा –

अरी लड़कियो, यदि हिम्मत है, आ जाओ मैदान में
होड करें तो देखें हम भी, रहो न अपनी शान में।
मेरी जेब भरी सिक्कों से, खनक रहे हैं वे खनखन
कला दिखाओ अपनी, देखें, किसका है बढ़िया नर्तन।

उसका भीमकाय बाप उठकर गरजा –

"अरे नगर की नाक न कटने देना! इन चूज़ों को दिखाओ कि नाच किसे कहते है।"

यह सुनते ही इल्या अर्तामोनोव उछलकर खड़ा हो गया। उसका मुंह गुस्से से तमतमा उठा और उसकी नाक जलते हुए अगारे की तरह लाल हो रही थी। उसने अपने अस्त-व्यस्त बालोंवाले सिर को झटकते हुए बास्कीं की ओर चिल्लाकर कहा –

"हम चूज़े नही, उक़ाब है! हम भी देखेंगे कि किसको नाचना आता है! अल्योशा!"

अल्योशा एक क्षण भर द्र्योमोव के नाचनेवाले को प्रफुल्लित और सस्मित दृष्टि से देखता रहा। तब अचानक पीला पडकर और एक

लड़की की तरह कूककर वह वृत्त के चारों ओर आश्चर्यजनक गति से चक्कर काटकर नाचने लगा।

"इसे तो गीत के बोल ही नही आते!" द्रयोमोव के लोग चिल्लाये और अर्तामोनोव क्रोध से गरज उठा –

"अल्योशा! मैं तेरी जान ले लूगा!"

बिना रुके अपने पांव से थाप देते हुए अल्योशा ने अपने ओठों के बीच दो उंगलियां डालकर एक बार तेज़ सीटी बजायी और उसके बाद साफ़ सधे स्वर मे गाना शुरू किया –

थे रईस मोकी के घर मे
पात्र जने, नौकर-चाकर,
लेकिन अब तो स्वय बना है
मोकी ही वैसा नौकर आखिर।

"अब सुन रहे हो!" अर्तामोनोव ने जैसे विजय के उल्लास में गरजकर कहा।

"अहा!" पादरी ने बहुत ही अर्थपूर्ण मुद्रा मे चिल्लाकर कहा और अपनी एक उगली उठाकर सिर हिलाया।

"तुम्हारे यहा के लडके को तो अल्योशा नाच मे पछाड़ देगा," प्योत्र ने नतालिया से कहा। उसने सहमी आवाज़ में उत्तर दिया –

"बहुत फुरतीला है।"

दोनो के बाप अपने-अपने बेटो को इस तरह बढावा दे रहे थे जैसे मुर्ग़े लड़ा रहे हो। शराब के नशे मे दोनो कधे मे कंधा मिलाये खडे थे। उनमे से एक विशालकाय और बेढगा था, जैसे जई के दानों से भरा हुआ बोरा। उसकी भौहो के नीचे आखो की छोटी-छोटी लाल दरारो से मदहोशी के, उल्लास के आंसू बह रहे थे। दूसरा व्यक्ति अपनी लम्बी बांहों को ऐंठता, हाथों से जाघें सहलाता और उन्माद-भरी आंखो से देखता हुआ ऐसी तनी मुद्रा में खडा था, जैसे किसी पर झपटने ही वाला हो। अपने बाप की जबड़ों पर हिलती दाढ़ी देखकर प्योत्र ने सोचा – "दांत पीस रहा है.. अभी किसी को मार बैठेगा..."

"यह भोंडा नाच है, अर्तामोनोव!" मत्र्योना बास्कोया की भारी आवाज़ सुनायी दी। "पाव क़ायदे से उठते ही नही! बहुत बुरा नाच है!"

इल्या अर्तामोनोव ने उसके कड़ाही जैसे गोल और सांवले चेहरे तथा मोटी नाक की तरफ़ देखते हुए ठहाका लगाया। अल्योशा जीत गया था। बास्कीं का लड़का लड़खड़ाता हुआ दरवाज़े की ओर जा रहा था। इल्या ने झपाटे से बैमाकोवा की बांह पकडकर आदेश दिया –

"समधिन, अब तुम मैदान में आओ!"

वह एकदम पीली पड़ गयी। अपने मुक्त हाथ से इल्या को दूर हटाने की कोशिश करते हुए वह परेशानी और क्रोध से चीख़ उठी –

"क्या पागल हो गये हो? यह नही समझते कि मेरे लिए यह बुरी बात है?"

मेहमान धूर्त्तता से खीसे निपोरते हुए यकायक ख़ामोश हो गये। पोम्यलोव ने बास्कीया पर एक उडती नज़र डाली और चिकने-चुपडे अन्दाज़ में बोला – "कोई बात नही, नाचो, उल्याना, नाचो! मन-बहलाव के लिये ही सही! भगवान क्षमा कर देगा"

"इसका पाप तो मुझे लगेगा!" अर्तामोनोव चिल्लाया।

उसका नशा उतरता-सा दिखायी दिया। भौहें चढाये वह आगे बढा, जैसे अपनी मर्जी के ख़िलाफ जग के मैदान में उतर रहा हो। किसी ने बैमाकोवा को आगे की ओर ढकेल दिया। यह मदहोश औरत एक ओर को लड़खडायी, ठोकर खायी, सम्भलकर सीधी हुई और सिर को पीछे की ओर झटककर लोगों के घेरे में फिरकी की तरह नाचने लगी। प्योत्र को स्तम्भित लोगो की कानाफूसी सुनायी दी –

"हे भगवान! इसके पति को कब्र में गये अभी एक साल भी नही हुआ और यह है कि अपनी लडकी का ब्याह रचाकर खुद भी नाच रही है!"

दुलहन की ओर देखे बिना, लेकिन यह समझते हुए कि वह अपनी मा के कारण शर्म से गड़ी जा रही है, वह बडबड़ाया –

"मेरे बापू को नहीं नाचना चाहिये।"

"न मेरी मां को ही," नतालिया ने धीमी और व्यथित आवाज में उत्तर दिया। एक बेंच पर खड़ी वह लोगो के सिरों के ऊपर से नाच के तंग घेरे की ओर देख रही थी। अचानक उसे चक्कर-सा आ गया और उसने प्योत्र का कंधा पकडकर अपने को सभाला।

"संभलकर!" प्योत्र ने उसकी कोहनी को थामते हुए प्यार से कहा।

खुली हुई खिड़कियों से बाहर खड़े दर्शकों के सिरों के ऊपर से होकर अस्त होते हुए सूरज की लालिमा भीतर आ रही थी और इस लाल रोशनी में औरत और मर्द अन्धे की तरह नाच रहे थे। बाहर बगीचे और अहाते में तथा सड़क पर लोग शोर-गुल मचा रहे थे, ठहाके लगा रहे थे, लेकिन इस उमस-भरे कमरे में अधिकाधिक निस्तब्धता छाती जा रही थी। खंजड़ी के कसे हुए चमड़े पर धीमी-धीमी थाप पड़ रही थी और हथबाजा चीख़ रहा था। ये दोनो जवान लडकोलड़कियो के घेरे में अभी तक उन्मत्त होकर नाच रहे थे। जवान लड़केलडकियां ख़ामोशी और संजीदगी से इन्हें देख रहे थे, जैसे यह नाच उनके लिये असाधारण महत्त्व का हो। अधिकतर बड़े-बूढ़े अहाते में चले गये थे और यहां सिर्फ वही रह गये थे जो शराब के नशे की वजह से चल भी नही सकते थे।

अर्तामोनोव पाव से थाप देकर जहां का तहा खडा हो गया—

"तुम मुझसे जीत गयी, उल्याना इवानोव्ना!"

वह सिहरी और फिर अचानक ऐसे रुक गयी जैसे दीवार के सामने पड गयी हो। सब के सामने कोरनिश बजाते हुए उसने कहा—

"मेरे बारे में बुरा न सोचियेगा।"

वह अपने रूमाल से हवा करती हुई फ़ौरन कमरे से बाहर चली गयी। अब बास्कीया सामने आयी—

"दूल्हे-दुलहन को एक-दूसरे से अलग कर दो! प्योत्र, तुम मेरे साथ आओ। दूल्हे के पक्षवालो, इसकी बाह थामकर इसे मेरे पीछे-पीछे लाओ!"

प्योत्र के पास खडे लड़को को एक तरफ़ हटाते और बेटे के कंधे पर अपने भारी हाथ रखते हुए बाप ने कहा—

"जाओ, भगवान तुम्हे सुखी रखे!" उसने बेटे को छाती से लगाया, फिर आगे को ढकेल दिया। साथियों ने उसकी बाहें पकड़कर उसे ले चले। दाये-बाये थूकती और बडबड़ाती हुई बास्कीया आगे-आगे जा रही थी—

"थू-थू! थू-थू! रोग भाग, दुःख भाग, बैर-द्वेष भाग, दुर्दिन भाग, थू! आग और पानी वक्त पर मिलें, मुसीबतें ढाने के लिये नहीं, सुखी बनाने के लिये!"

जब बूढ़ी औरत के पीछे-पीछे प्योत्र नतालिया के कमरे में पहुंचा,

13-1176

जहां एक ऊंचा और मुलायम बिस्तर लगा था, तो यह औरत कमरे के बीचोंबीच कुर्सी खीचकर धम से उस पर बैठ गयी –

"सुनो और याद करो!" वह गम्भीरता से बोली। "ये रहे दो-दो आधे रूबल। इन्हें अपने जूते की एड़ी में रख लो। जब नतालिया आयेगी, तो वह तुम्हारे जूते उतारने के लिये झुकेगी, उसे मत उतारने देना ..."

"आखिर क्यों?" प्योत्र ने मलिन भाव से पूछा।

"यह तुम्हारे समझने की बात नही है। तीन बार तुम इन्कार कर देना और चौथी बार उसे उतारने देना। तब वह तीन बार तुम्हारा चुम्बन लेगी और तुम उसे उन दोनों आधे रूबल देकर कहना – 'ये मैं तुम्हें देता हूं, मेरी दासी, मेरी क़िस्मत!' भूलना मत! फिर कपड़े उतारकर उसकी ओर पीठ करके लेट जाना। वह तुमसे प्रार्थना करेगी – रात भर को मुझे भी बिस्तर पर आ जाने दो, लेकिन तुम चुप रहना। जब वह तीसरी बार ऐसे अनुरोध करे तब तुम उसकी ओर अपना हाथ बढ़ा देना – समझे? और फिर ..."

उपदेश देनेवाली काले बालों और चौडे मुंह की इस औरत को प्योत्र आश्चर्य से घूरता रहा। वह अपने ओठो को चाटती, नथुनो को फुलाती, रूमाल से अपनी चर्बी चढी गर्दन और ठोड़ी का पसीना पोछ-ती हुई, बड़े रोब से भद्दे और शर्मनाक शब्द बोलती जा रही थी। चलते-चलते उसने दोहराकर कहा –

"चीखों और आंसुओं पर विश्वास न करना," और वह लडखड़ाती तथा अपने पीछे शराब की गन्ध छोड़ती हुई कमरे से बाहर निकल गयी। प्योत्र के तन-बदन में आग लग गयी। उसने अपने जूते उतारकर पलंग के नीचे फेक दिये और जल्दी से कपड़े उतारकर पलंग पर ऐसे कूदकर चढा, जैसे कि घोड़े पर सवार हो रहा हो। इस डर से कि उसके हृदय में जो क्रोध उमड-घुमड रहा था, वह कही रुदन बनकर न फूट पड़े, उसने अपने दांत भींच लिये – "नाली के कीड़े ..."

रोयोंवाले बिस्तर में उसे गर्मी महसूस हुई। वह उसमें से बाहर निकला और खिड़की के पास गया। खिड़की खोलते ही उसे बगीचे की ओर से नशे में धुत्त लोगों का शोर-गुल, अट्टहास और लड़कियों की ऊंची चीख़-पुकार सुनायी दी। नीले-नीले झुटपुटे में पेड़ों के नीचे लोगों की काली छायायें घूम रही थीं। सन्त निकोला के गिरजाघर की मीनार

अपनी तांबे की सी उंगली से आकाश को बेध रही थी। उस पर क्रॉस नहीं था – सोने का पानी चढ़ाने के लिये उसे नीचे उतार लिया गया था। बस्ती की छतों के पार शोकाकुल-सी ओका नदी चमक रही थी, चांद का टुकड़ा उसके ऊपर पिघल रहा था और आगे सीमाहीन जंगलों के काले-काले ढेर-से थे। प्योत्र को किसी दूसरे ही प्रदेश की याद आयी – एक ऐसे बड़े विस्तारवाले प्रदेश की जिसके खेत अनाज की सुनहली बालों से चमकते रहते है – और उसने एक आह भरी। सीढ़ियों पर से पांवों की चाप और हसी-ठट्ठे की आवाजें सुनायी दी। वह फिर से कूदकर बिस्तर पर चला गया। दरवाज़ा खुला, रेशमी फ़ीतों की सरसराहट और जूतों की चरमर सुनायी दी। कोई सिसकिया भरता हुआ रो रहा था। दरवाज़ा बन्द होने और चटख़नी चढाने की आवाज़ आयी। प्योत्र ने बड़ी सावधानी से अपना सिर उठाया। कमरे की धुधली रोशनी में एक श्वेत आकृति दरवाज़े के पास खड़ी पृथ्वी तक झुककर धीरे-धीरे क्रॉस का चिह्न बना रही थी।

"वह तो प्रार्थना कर रही है। मैंने तो नही की।"

लेकिन उसका प्रार्थना करने को मन नही हुआ।

"नतालिया येव्सेयेव्ना!" वह धीमे स्वर में बोला, "डरो मत। मैं ख़ुद सहमा हुआ हू और थकान से चूर हूं।"

दोनों हाथों से अपने सिर के बाल सवारने और अपना कान खीचने के बाद वह बुदबुदाया –

"मेरे जूते-ऊते उतारने और इसी तरह की दूसरी सभी चीज़ें करने की ज़रूरत नही। यह सब निरी मूर्खता है। मेरा दिल टीस रहा था और वह अपनी बेहूदा बकवास करती जा रही थी। रोओ मत।"

सहमी-सी नतालिया एक बग़ल से कमरे को पार करके खिड़की पर पहुची। बाहर झांककर उसने कोमल स्वर में कहा –

"लोग अभी तक जशन मना रहे है।"

"हां।"

दोनों थके और किसी कारण डरे-सहमे हुए बड़ी देर तक इसी तरह इधर-उधर की निरर्थक बातें करते रहे तथा एक-दूसरे के निकट आने का साहस न जुटा पाये। पौ फटते ही सीढ़ियां चरमरायीं और किसी का हाथ दीवार टटोलने लगा। नतालिया दरवाज़े की तरफ़ बढ़ी।

"अगर बास्कीया हो तो उसको अन्दर मत आने देना," प्योत्र ने

फुसफुसाते हुए कहा।

"मां है," नतालिया ने दरवाज़ा खोलते हुए कहा। प्योत्र टांगें नीचे लटकाकर पलंग पर बैठ गया। वह खुद अपने से असन्तुष्ट था और दुखी मन से सोच रहा था—

"मैं किसी क़ाबिल नहीं, मेरी हिम्मत ही नही बंधी। वह मुझ पर हंसती होगी .."

दरवाज़ा खुला और नतालिया ने धीरे से कहा—

"मा तुम्हें बुला रही है।"

वह अंगीठी की सफ़ेद टाइलों के महारे लगभग अदृश्य-सी खडी रही और प्योत्र बाहर चला गया। अंधेरे मे बैमाकोवा की शंका और क्रोध से भरी फुसफुसाहट सुनायी दी—

"तुम यह क्या कर रहे हो, प्योत्र इल्यीच? क्या मुझे और मेरी बेटी को बदनाम करना चाहते हो? सुबह होने को आयी और कुछ ही देर मे लोग तुम्हे जगाने के लिये यहां आ जायेंगे। लोगों को अपनी बेटी का उतारा पेटीकोट दिखाना पड़ेगा, ताकि वे जान जाये कि वह अब तक कुमारी थी!"

अपना एक हाथ प्योत्र के कंधे पर रखे और दूसरे हाथ मे उसे गुस्से में झकझोरते हुए वह पूछ रही थी—

"आखिर बात क्या है? क्या चाह ही नही या नपुंसक हो? जवाब दो. मुझे डराओ मत!"

प्योत्र ने दबी-घुटी आवाज़ में जवाब दिया—

"मुझे उस पर दया आती है। डर भी लगता है।"

वह अपनी साम का चेहरा न देख पाया, लेकिन उसे लगा कि वह हंस रही है।

"तुम जाओ और एक मर्द की तरह अपना काम करो! सन्त क्रिस्टोफ़र का नाम लो, जाओ! अच्छा ठहरो, मै तुम्हे प्यार कर लूं..."

प्योत्र की गर्दन को बांहों में साधकर उसने अपने मीठे, चिप-चिपाते ओठों से, जिनमे शराब की गरम-गरम गन्ध उठ रही थी, उसे चूम लिया। इसके पहले कि वह उसके चुम्बन का जवाब देता, वह वहा से जा चुकी थी और प्योत्र का सस्वर चुम्बन हवा में गूंज गया। वह लौटकर कमरे में आया और दरवाज़े पर चटखनी चढाकर उसने दृढ़ता से अपनी भुजाये फैलायीं। लड़की आगे बढ़ी और उसके

आलिंगन में बंध गयी। कांपती हुई वह बोली–

"मां नशे में चूर है..."

प्योत्र कुछ दूसरे ही शब्द सुनने की अपेक्षा कर रहा था। पलंग की ओर पीछे हटते हुए वह अस्फुट स्वर में बोला–

"डरो मत, मैं सुन्दर तो नहीं, लेकिन स्नेहशील हूं..."

नतालिया उसके और अधिक सटती हुई दबे स्वर मे बोली–

"टागें जवाब दे रही हैं .."

...द्र्योमोव मे लोग दावतें उडाने के बहुत शौक़ीन थे। शादी का जशन पांच दिन तक चलता रहा। सुबह से लेकर आधी रात तक लोग सडकों पर, एक घर से दूसरे घर तक शराब के नशे मे लडखडाते आते-जाते रहे। बास्कीं परिवार ने सबसे शानदार और तड़क-भड़क की दावत खिलायी। लेकिन अल्योशा ने ओलगा ओर्लोवा का अपमान करने के लिये उनके लड़के की खूब मरम्मत की और जब उसके मा-बाप ने इसकी शिकायत की तो अर्तामोनोव ने हैरान होते हुए कहा–

"यह तो कभी नही सुना कि लडके आपस मे लडते-झगड़ते न हो!"

उसने लड़कियो पर फ़ीते और मिठाइया बरसायी और लड़कों को पैसे लुटाये। उनके मा-बापो को छककर शराब पिलायी। हर आने-जानेवाले को यह कहकर गले लगाया–

"क्यो भाई, शादी इसे कहते है न!"

अर्तामोनोव के सारे व्यवहार में प्रचण्ड आवेग था, बेहिसाब शराब पीता था, मानो अपने अन्दर की किसी आग को बुझाना चाहता हो। वह बेहद पीता था, लेकिन मदहोश नही होता था और इन दिनों मे काफ़ी दुबला हो गया था। यद्यपि वह उल्याना बैमाकोवा से अपने को दूर रखने की कोशिश करता था, फिर भी उसके लडको ने यह ताड़ लिया कि वह बैमाकोवा की ओर माग करती और रोष-भरी निगाह से देखता है। अपने बल की डींग हाकते हुए उसने नगर की गारद के सैनिकों को ललकारकर सोटा खीचे हुए अपना ज़ोर दिखाया और एक फ़ायरमैन तथा तीन राजगीरो को कुश्ती मे पछाड़ दिया। तब कुदाल-मज़दूर तीखोन व्यालोव उसके सामने आया और प्रस्ताव करने के बजाय यह मांग की–"अब मेरे साथ कुश्ती करो।"

उसके स्वर के कड़ेपन से आश्चर्यचकित हो अर्तामोनोव ने इस

मोटे-तगड़े व्यालोव को सिर से पांव तक देखा।

"तुम क्या हो – बहुत ताक़तवर या डीगिया?"

"मैं यह नही जानता," उसने गम्भीरता से उत्तर दिया।

एक-दूसरे की पेटियां पकड़कर वे कुछ देर तक एक-दूसरे से गुंथे रहे। व्यालोव के कंधों के ऊपर औरतों की ओर देखते हुए इल्या बेशर्मी से उन्हें आख मारता रहा। कुदाल-मज़दूर की अपेक्षा वह अधिक लम्बा, पर पतला और गठे बदन का था। व्यालोव ने अपना कंधा इल्या के सीने से भिड़ाकर उसे ऊपर उठाना और ज़मीन पर पटक देना चाहा। लेकिन उसके पैंतरे को भांपकर इल्या चिल्लाया –

"तुम बहुत चालाक नही बनो!"

यकायक एक हुंकार भरकर उसने व्यालोव को अपने सिर के ऊपर मे उछालकर इतने ज़ोर से नीचे पटका कि उसकी टागें गिरने की चोट खाकर अवसन्न रह गयी। उठकर घास पर बैठते, चेहरे का पसीना पोछते हुए व्यालोव ने झेंपकर कहा –

"तगड़ा आदमी है!"

"यह तो हम भी देख सकते है," दर्शको ने खिल्ली उडायी।

"कड़ी जान है," व्यालोव ने दोहराया।

इल्या ने उसकी ओर अपना हाथ बढाया –

"उठो!"

बढ़े हुए हाथ की उपेक्षा करके कुदाल-मजदूर ने अपने आप उठने की कोशिश की, लेक़िन उठ न मका। वह फिर मे पांव फैलाकर अपनी विचित्र और पिघलती-मी आखो मे भीड़ की ओर देखता रहा। निकीता ने उमके पास जाकर हमदर्दी से पूछा –

"दर्द होता है? मैं मदद करू?"

कुदाल-मज़दूर ने एक रूखी हंसी हसते हुए कहा –

"मेरी हड्डिया दर्द कर रही है। मैं तुम्हारे बापू से कही ज़्यादा मज़बूत हूं, लेकिन उतना फुर्तीला नही। आओ चले, भोले-भाले निकीता इल्यीच! आओ चलें!"

मैत्रीपूर्ण ढंग से कूबड़े की बांह थामकर वह भीड़ के साथ-साथ पीछे-पीछे चल दिया। व्यालोव अपनी टागों के दर्द को कम करने की आशा से रह-रहकर ज़ोर से पांव पटकता जाता था।

थकान और रातों में जागरण से चूर नवदम्पती प्रसन्न, शोर

मचानेवाली, नशे में धुत्त भीड़ के साथ निरन्तर प्रदर्शन के लिये सड़कों पर चुपचाप इधर से उधर घूमते रहते, खाते-पीते वक्त उन दोनों पर चारों ओर से कसी जानेवाली निर्लज्ज फब्तियों से उनका मुंह लज्जा से लाल हो जाता, वे एक-दूसरे की ओर न देखने तथा बात न करने की कोशिश करते, बांह में बांह डालकर साथ-साथ चलते, सदा पास-पास बैठते और अजनबियो की तरह ख़ामोश रहते। उनके इस व्यवहार से मत्र्योना बार्स्कोया बेहद खुश हुई और उसने इल्या और उल्याना के सामने अपनी डीग मारते हुए कहा –

"मैंने तुम्हारे बेटे को ठीक नसीहत की थी न? मैं तो यही मोचती हू! देखो उल्याना, मैंने तुम्हारी बेटी को कैसी मीख दी! और अपने दामाद के बारे में तुम्हारी क्या राय है? पूरा मोर है, मोर!"

लेकिन अपने कमरे में पहुचकर प्योत्र और नतालिया अपने कपडो के साथ-साथ वह मब कुछ उतार फेकते जो उन पर लादा जाता था और जिसे उन्हे कर्त्तव्य मानकर स्वीकार करना पडता था। अकेले में वे दिन भर की घटनाओं के बारे में बातें करते।

"पीने के मामले में तो तुम्हारे शहर के लोगों का जवाब नही!" प्योत्र आश्चर्य प्रकट करता।

"तुम्हारी तरफ क्या लोग कम पीते है?" उसकी पत्नी पूछती।

"किसान लोग भला इस तरह कब पी मकते है?"

"तुम किसानों जैसे तो नही लगते।"

"हम जागीरदार के यहा रहनेवाले लोग हैं – एक तरह से कुलीन लोग।"

कभी-कभी वे एक दूसरे के आलिगन मे बधकर खिडकी के क़रीब ख़ामोश बैठे रहते और बगीचे से आनेवाली सुगन्ध का आनन्द लेते रहते।

"तुम कुछ बोलते क्यों नही हो?" पत्नी धीमे स्वर में पूछती और पति भी धीमे स्वर में ही उत्तर देता –

"रोज़-रोज़ के मामूली शब्द बोलने को मन नहीं हो रहा।"

वह असाधारण शब्द सुनने के लिये लालायित रहता, लेकिन नतालिया ऐसे शब्द नही जानती थी। जब वह सुनहले स्तेपी मैदानो के सीमाहीन विस्तार और व्यापकता का वर्णन करता तो नतालिया पूछती –

"वहां न जंगल हैं, न कुछ और? ओह, कितनी डरावनी जगह होगी!"

"डर तो जंगल में रहता है," प्योत्र ने बेमन से उत्तर दिया। "स्तेपी के मैदानों में डर का क्या काम? वहा तो सिर्फ़ ज़मीन होती है, आसमान होता है और मैं होता हूं।"

एक दिन जब वे खिड़की पर बैठे चुपचाप तारों-भरी रात का आनन्द ले रहे थे, उन्हें ग़ुसलख़ाने के निकट बगीचे में पैरो की आहट सुनायी दी। कोई रस-भरी की झाड़ियों को कुचलता हुआ भाग रहा था और फिर दबी-दबी रोष-भरी आवाज़ सुनायी दी –

"यह तुम क्या कर रहे हो, शैतान!"

नतालिया घबराकर उछल पडी –

"यह तो मां है!"

प्योत्र ने खिड़की से बाहर झाककर देखा। उसकी चौड़ी पीठ ने सारी खिडकी घेर ली। उसने देखा कि ग़ुसलख़ाने के पास उसका बाप उसकी सास को बाहो मे भरे हुए दीवार से सटाकर उसे गिराने की कोशिश कर रहा था। औरत उसके सिर पर धक्के मार-मारकर बच निकलने के लिये छटपटा रही थी और हाफते हुए फुसफुसाती जाती थी –

"मुझे छोडो, नही तो चिल्लाऊगी।"

फिर वह पागलो की तरह चिल्लायी –

"समधी, मुझे छोड दो! मुझ पर दया करो. "

प्योत्र ने धीरे से खिडकी बन्द कर दी और पत्नी को अपनी बांहों मे भरकर घुटनों पर बैठा लिया – "बाहर मत देखो।"

वह उसके आलिंगन में छटपटाती हुई चिल्लायी –

"बात क्या है? यह कौन आदमी है?"

"मेरा बाप," प्योत्र ने उसे और कसते हुए कहा, "क्या तुम नही समझती ..."

"हाय, यह कैसे हो सकता है?" उसने शर्म और डर से अस्फुट स्वर में कहा। उसका पति उसे उठाकर बिस्तर पर ले गया और धीमे से बोला –

"अपने मां-बाप के कार्यों को भला-बुरा कहने का हमें अधिकार नही है।"

नतालिया अपना सिर थामकर विक्षोभ से तडपती और कराहती रही –

"पाप है, यह पाप है!"

"यह पाप हमारा नहीं," प्योत्र ने कहा और अपने पिता के शब्दों को याद करते हुए कहा, "बड़े आदमी इससे बड़े-बड़े पाप करते है," फिर जोड़ दिया, "और फिर यह अच्छा ही हुआ – वह अब तुम्हें तग नहीं करेगा। बडे-बूढ़े परेशान हुए बिना आमानी से ऐसा काम कर डालते है। वे पतोहू से बलात्कार करना पाप नही मानते। रोओ मत।"

रोते हुए पत्नी बोली –

"उस दिन जब वे नाच रहे थे, तभी मेरे दिमाग मे यह ख्याल आया था अगर तुम्हारे पिता ने मा के साथ ज़बरदस्ती की तो हम क्या करेंगे!"

लेकिन अपने तीव्र भावोद्रेक मे थककर वह कपड़े उतारे बिना जल्द ही सो गयी। प्योत्र ने खिडकी खोली और बगीचे में झाककर देखा। वहा कोई नही था। केवल पौ फटने के पहले वायु की सास ले रही थी और महकते अन्धकार मे झूमते हुए पेड खडे थे। खिड़की को खुला ही छोड़कर वह अपनी पत्नी की बगल मे जा लेटा और आखें खोले हुए कुछ ही देर पहले की घटना पर सोचता रहा। कितना अच्छा होता अगर वह किसी गाव मे जा बसते, जहा बस वह और नतालिया ही होते

नतालिया तडके ही जाग गयी। उसे लगा जैसे मा के लिये दया और उसके प्रति किये गये अन्याय-अपमान की भावना ने उसे जगा दिया है। नंगे पाव, सिर्फ शमीज़ पहने ही वह तेजी से सीढियां उतरकर नीचे आयी। रोज उसकी मा का कमरा अन्दर से बन्द रहता था, लेकिन आज उसके दरवाज़े खुले पडे थे। इससे वह और भी डर गयी। लेकिन अन्दर झांकने पर उसने देखा कि कोने में सफ़ेद चादर के नीचे एक सफेद ढूह-सा उठा हुआ है और तकिये पर काले बाल बिखरे हुए हैं।

"सो रही है, बिचारी कितनी रोई, दुखी हुई होगी . ."

मर्माहत मा को सान्त्वना देने के लिये उसे कुछ करना चाहिये, यह सोचकर नतालिया बाहर बगीचे में चली गई। ओस से भीगी घास

उसके नंगे पांवों पर ठण्डी-ठण्डी गुदगुदी कर रही थी। सूरज अभी जंगल के पीछे से ऊपर उठा था और उसकी तिरछी किरणों से नतालिया की आंखें चौंधिया गयी। उसने ओसकणों से चांदी-सी चमकती बर्डोक की पत्ती तोड़कर पहले एक और फिर दूसरे गाल पर फेरी। इस तरह ताज़गी महसूस करते हुए उसने लाल झरबेरी के गुच्छे तोड़कर उस पत्ती में रख लिये और किसी प्रकार के आक्रोश के बिना अपने ससुर के बारे में सोचने लगी। भारी हाथ से उसकी पीठ को ज़ोर से थपथपाते हुए वह चटख़ारा लेकर पूछता था—

"ज़िन्दा हो? मांस क़ायम है? बहुत ख़ूब, जियो!"

सम्भवतः उससे कहने के लिये उसके पास और कोई शब्द न थे। वह उसकी इन स्नेहपूर्ण थपकियो से—घोड़ो को दुलारने जैसी इन थपकियो से—किंचित रुष्ट भी थी।

"जानवर!" ससुर के प्रति जबरन अपने को भड़काने के लिये उसने सोचा।

चिड़ियां चहचहा रही थी और ऊपर पत्तियों में रेशमी सरसराहट हो रहा था। नगर के दूर छोर से किसी गड़रिये ने बांसुरी पर तान छेड़ी। वतरक्षा के तट से, जहां कारख़ाने की इमारत बन रही थी, प्रभात की उज्ज्वल निस्तब्धता मे लोगो की धीमी-धीमी आवाज़े तैरती आ रही थी। इसी समय कुछ खट-सी हुई और नतालिया ने कुछ चौंककर सिर ऊपर उठाया। सेब के एक पेड़ पर जाल में फंसी एक चिड़िया छटपटा रही थी।

"यह जाल किसने लगाया? निकीता ने?"

बगीचे में कही एक सूखी टहनी चटखकर टूटी।

घर लौटकर जब उसने मा के कमरे में झांका, तो देखा कि मा जाग गयी है और सिर के नीचे एक हाथ रखे, मुंह ऊपर को किये और हैरानी से भौंहें ऊंची उठाये लेटी है।

"कौन है.. क्या बात है?" उसने घबराकर कोहनी के बल थोड़ा उठते हुए पूछा।

"कुछ नहीं, तुम्हारी चाय के लिये मैं झरबेरी के कुछ गुच्छे तोड़ लायी हूं।"

शीशे की एक बड़ी सुराही पलंग के पास मेज़ पर रखी थी। इसमें क्वास पेय भरा जाता था; सुराही लगभग ख़ाली थी, उसका ढक्कन

फ़र्श पर पड़ा था। मेज़पोश पर क्वास के दाग़ थे। मां की चमकीली कठोर आंखों के इर्द-गिर्द एक नीली झांई-सी थी। लेकिन जैसी कि नतालिया ने आशा की थी, वे रोने से सूजी हुई नही थी। वे कुछ अधिक काली और गहरी दिखायी देती थीं और सदा कुछ घमंड की झलक लिये रहनेवाली उसकी दृष्टि इस समय विचित्र रूप से खोयी-खोयी और निःसंग लग रही थी।

"मच्छर तो यहां सोने नही देते, अब खत्ती मे सोया करूंगी," मां ने अपने गले तक चादर खीचते हुए कहा, "मच्छरों ने काट-काटकर बुरा हाल कर दिया है। तुम इतनी जल्दी क्यो उठ गयी और नंगे पाव ओस पर क्यों घूम रही हो? तुम्हारे कपड़े गीले हो गये है। ठण्ड लग जायेगी .."

मां ने अपने ही विचारों की उधेड़-बुन में स्नेह के बिना और अनिच्छा मे यह सब कहा। बेटी की चिन्ताएं अब धीरे-धीरे एक स्त्री के मन में दूसरी स्त्री के प्रति पैदा होनेवाली उत्सुक द्वेषपूर्ण जिज्ञासा का रूप धारण कर रही थी।

"मेरी नीद जल्दी ही खुल गयी और मुझे तुम्हारा ख़्याल हो आ-या मैने सपने में तुम्हें देखा था।"

"क्या ख़्याल आया तुम्हें मेरे बारे में?" मां ने छत को ताकते हुए पूछा।

"यही कि अब तुम मेरे बिना अकेली ही सोती हो ."

नतालिया को ऐसा लगा, जैसे उसकी मा के गालो पर शर्म की लाली दौड गयी। "मैं डरपोक नही हू," कहते समय की उसकी मुस्कराहट बनावटी लगी।

"तुम अब जाओ, तुम्हारा पति जग गया है—उसके चलने-फिरने की आहट सुन रही हो न?" मा ने अपनी आखें बन्द करते हुए कहा।

धीरे-धीरे सीढिया चढते हुए नतालिया ने घिन, लगभग द्वेष-भाव से सोचा—

"उसने मां के साथ ही रात गुज़ारी है। क्वास उसके लिये ही रखी गयी थी। मां की सारी गरदन पर निशान है—मच्छरों के काटने के नही, चुम्बनों के। मै प्योत्र से इसके बारे में कुछ भी न कहूंगी। देखो इसे, अब वह खत्ती में सोना चाहती है, फिर चीख़ क्यों रही थी..."

"तुम कहां थी?" प्योत्र ने अपनी पत्नी की ओर ध्यान से देखते

हुए पूछा – उसने किसी कारण अपने को अपराधी-सी अनुभव करते हुए आंखें नीची कर ली।

"मैंने कुछ झरबेरियां बटोरी और मां को देखने गयी।"

"तो कैसी है वह ?"

"ठीक ही लगती है .."

"तो यह बात है," प्योत्र ने अपना कान खींचते हुए कहा, "यह बात है!"

व्यंग्यपूर्वक मुस्कराते, ठोड़ी के गहरे लाल बालों पर हाथ फेरते हुए उसने एक आह भरी और बोला –

"लगता है कि बास्कीया नाम की वह बेवकूफ़ औरत सच ही कहती थी चीखों पर विश्वास न करना, आंसुओं का विश्वास न करना।"

फिर उसने कठोर स्वर में पूछा – "तुमने निकीता को देखा ?"

"नहीं।"

"नही का क्या मतलब ? वह देखो – वह बगीचे में चिड़िया फसा रहा है।"

"ऊई मा!" नतालिया घबराकर चिल्ला उठी। "और मै बाहर ऐसे ही गयी थी, सिर्फ शमीज पहने!"

"यही तो मैं कह रहा हू .."

"तो फिर वह सोता कब है ?"

प्योत्र अपने बूट चढ़ाते हुए ज़ोर से घुरघुराया। उसकी पत्नी ने उसकी ओर कनखियों से देखते हुए मुस्कराकर कहा –

"कुबड़ा होते हुए भी बहुत अच्छा है अल्योशा से भी अच्छा .."

पति एक बार फिर घुरघुराया, लेकिन उतने ज़ोर से नही।

..प्रतिदिन सूरज निकलने के समय जब गडग्यिा अपनी भेडो को एकत्र करने के लिये लम्बी बांसुरी पर करुण तान छेड़ता तो नदी के उस पार कुल्हाड़ियो की आवाज सुनायी देने लगती और नगर के लोग अपनी गायो-भेडो को घर से बाहर निकालते हुए एक दूसरे से मज़ाक़ के अन्दाज़ में कहते –

"अभी सूरज भी नही निकला, मगर उन्होने ठक-ठक कर दी "

"यह लालच है। लालच – शान्ति का सबसे बड़ा दुश्मन।"

कभी-कभी इल्या अर्तामोनोव को यह लगता कि नगर के निष्क्रिय

द्वेष पर उसने क़ाबू पा लिया है। द्र्योमोव के लोग उसको देखकर आदरपूर्वक अपने टोप उठाते और गत्स्की प्रिंसो के बारे में बड़े ध्यान से उसके क़िस्से-कहानिया सुनते। किन्तु फिर भी उनमें कोई न कोई किंचित गर्वीले ढंग से जरूर ही कह उठता –

"हमारे यहां के बड़े लोग कम धनी और सीधे-सादे हैं, लेकिन तुम्हारे रईसज़ादो से नियम के कही ज्यादा पक्के हैं।"

छुट्टियो की शामों को ओका नदी के किनारे बास्र्की के ढाबे के छायादार बगीचे मे बैठा हुआ अर्तामोनोव द्र्योमोव के धनी और प्रभावशाली लोगो के सामने कहता –

"मेरे व्यापार मे तुम सबको लाभ होगा।"

"भगवान ऐसा ही करे," पोम्यलोव अपने ओठो को कुत्ते की सी हल्की मुस्कान के रूप मे मरोड़ते हुए उत्तर देता और इस वक्त यह कहना असम्भव हो जाता कि वह प्यार से चाटना चाहता है या काट खाना। सन जैसे बालोवाली उसकी पतली दाढ़ी में उसका झुर्रीदार चेहरा अटपटे ढग से छिपा था। वह हर चीज पर सन्देह से अपनी भूरी नाक सिकोडता और उसकी कजी आखो में द्वेष और कपट झलकता रहता।

"भगवान ऐसा ही करे," उसने दोहराया। "सच तो यह है कि तुम्हारे बिना भी हमारे दिन अच्छे ही बीत रहे थे। हो सकता है कि तुम्हारे साथ भी ऐसे ही बीते।"

अर्तामोनोव के मुख पर क्रोध की रेखा दौड गयी –

"तुम दोमानी बात कहते हो, दोस्त की तरह नही।"

बास्र्की ज़ोर से हसते हुए चिल्लाया –

"यह ऐसा ही आदमी है!"

बास्र्की के मुख की जगह मानो मास के कुछ लाल लोथड़े असावधानी से एक-दूसरे पर टिका भर दिये गये थे। उसके भारी-भरकम सिर, गरदन, गालों और बाहो पर रीछ के से घने रूखे बाल थे। उसके कान नजर नही आते थे और चर्बी की मोटी तहों के पीछे छिपी उसकी आंखें अनावश्यक प्रतीत होती थीं।

"मेरी सारी शक्ति तो चर्बी में चली गयी," वह कहता और खूब मुंह खोलकर ज़ोर से हंसता, जिससे उसके सड़े दातों की झलक मिलती।

छकड़े बनानेवाला वोरोपोनोव अपनी भूरी आंखों से अर्तामोनोव को ग़ौर से देखते हुए धीमे, रूखे स्वर में सलाह देता –

"काम तो करना ही है, लेकिन भगवान के काम को भुला नही देना चाहिये। कहा भी तो गया है – मार्फ़ा-मार्फ़ा, तुम्हें बहुत-सी बातों की फ़िक्र रहती है, लेकिन अपने को भी नही भूलती।"

उसकी वर्णहीन निष्प्रभ आंखें ऐसे देखतीं, मानो वोरोपोनोव किसी गुप्त रहस्य का अनुमान लगा रहा हो और बस, अभी कोई अद्भुत घोषणा करके सब लोगो को स्तम्भित कर देगा। कभी-कभी वह इस तरह बात करता, मानो उसे अन्तर्ज्ञान होने ही वाला है –

"यह सच है कि ईसा मसीह ने भी उस रोटी में हिस्सा लगाया सो मार्फ़ा की तो बात ही क्या..."

"बस, बस," चमड़ा कमानेवाला गिरजाघर का सरक्षक जितेइकिन बोल उठता। "तुम बात को किधर बढाये जा रहे हो!"

वोरोपोनोव अपने भूरे कानों को हिलाते हुए ख़ामोश हो जाता। इल्या ने चमडा कमानेवाले से पूछा –

"क्या तुम मेरे व्यापार को समझते हो?"

"मैं क्यों समझू!" जितेइकिन ने सचमुच ही आश्चर्यचकित होते हुए उत्तर दिया। "काम तुम्हारा है, उसको समझने का काम भी तुम्हारा है! अजीब आदमी हो! तुम्हारा काम तुम्हारा है, मेरा काम – मेरा है।"

अर्तामोनोव गाढ़ी बियर पीता और पेड़ों के बीच से ओका नदी की मटमैली रेखा और आगे बायी तरफ़, वतरक्षा के सर्पाकार घुमावो की ओर देखता रहा, जहां से वह बड़ी नदी में मिलने के लिये दलदलो और फ़रवृक्षों के कुंजों से बाहर निकलती थी। वहां बालू पर छितरी हुई लकड़ी की छीलन और छिपटियां तेल की तरह चमक रही थी, लाल-लाल ईंटें नज़र आ रही थी, बेद की रौंदी हुई झाड़ियो के बीच एक खुले ताबूत जैसी गहरे लाल रंग की कारख़ाने की लम्बी इमारत फैली हुई थी। गोदाम की छत के बिना रंगे लोहे पर डूबते सूरज की किरणों के पड़ने से ऐसा लगता था, जैसे उसमें आग लग रही हो। दुमंज़िले रिहायशी मकान की पीली दीवारें, जिन पर तपते आसमान की ओर उठे हुए सुनहले रग के मज़बूत ऊंचे शहतीर ऐसे लगते थे जैसे पिघले हुए मोम की बनी हों... अल्योशा ने ठीक ही कहा था कि दूर से देखने

पर यह मकान गूसली* बाजे जैसा नज़र आता है। नगर के लड़कों और लड़कियों से दूर अल्योशा यही रहता था। उसे सम्भालना बड़ा मुश्किल है – वह गुस्सैल और उद्दण्ड है। प्योत्र अधिक उलझे हुए स्वभाव का है। उसके मन की बात जानना कठिन है। वह अभी तक यह नही समझ पाया कि साहसी आदमी कितना कुछ कर सकता है।

अर्तामोनोव के मुख पर छाया-सी आ गयी। उसने अपनी घनी भौंहे चढ़ाकर लोगो की ओर देखा और उपेक्षा से मुस्करा दिया। ये उसे हल्के क़िस्म के लोग लगे जिनमें काम-धन्धे के प्रति उत्साह और दृढ़ता नही थी।

रात को जब नगर के लोग गहरी नीद में सो जाते, अर्तामोनोव एक चोर की तरह छिपकर नदी के किनारे-किनारे चलता और पिछवाड़ों से होता हुआ विधवा बैमाकोवा के बगीचे मे दाखिल होता। गुनगुनी हवा मे मच्छर भिनभिनाते रहते और ऐसे लगता मानो खीरों, सेबों और मधुरिका लता की सुखद गन्ध वे ही फैलाते फिर रहे हों। धुआंरे बादलों के बीच चन्द्रमा तैरता जाता और बादलो की कोमल छायाए नदी को स्नेह से थपकिया देती। बाड़ को पार करके अर्तामोनोव आहिस्ता-आहिस्ता बगीचे में होकर आंगन में पहुचता। अंधेरी खत्ती में घुसते ही कोने में से चिन्ताकुल फुसफुसाहट सुनायी देती –

"तुम्हें किसी ने देखा तो नही?"

अपने कपडे उतार फेंकते हुए वह कटुतापूर्वक बड़बड़ाता –

"इस तरह छिप-छिपकर एक छोकरे की तरह आने से मै तो तंग आ गया!"

"तो प्रेमिका के चक्कर में न पड़ो।"

"मै तो खुशी से न पड़ता, लेकिन भगवान की ऐसी ही इच्छा थी।"

"अरे, कैसी बात कर रहे हो, नास्तिक! हम दोनों भगवान की इच्छा के विरुद्ध काम कर रहे है..."

"बस, बस, रहने दो! ये बातें फिर कभी करना। उफ़, उल्याना! तुम्हारे इस नगर में लोग तो..."

"तुम अपने को परेशान न करो," स्त्री दबे स्वर में कहती

* गूसली – तारोवाला एक पुराना रूसी बाजा। – स०

और फिर उन्मादपूर्ण थपकियों से उसको सान्त्वना देने लगती। कुछ आराम कर लेने के बाद उसको नगर के लोगो के बारे में सविस्तार बताती – किनसे डरना चाहिये, कौन समझदार और कौन बेईमान है और किस के पास ज़्यादा धन है।

"पोम्यलोव तथा वोरोपोनोव को पता है कि तुम्हें बहुत-सी लकड़ी की ज़रूरत पड़ेगी, इसलिये पास-पड़ोस के सारे जंगल ख़रीदने की सोच रहे है, जिससे तुम्हारा काम मुश्किल हो जाये।"

"उनके हाथ से मौक़ा निकल गया। प्रिंस ने अपने जंगल मुझे बेच दिये है।"

उन पर और उनके चारो ओर अभेद्य अंधकार छाया होता था। वे एक-दूसरे की आंखे भी नही देख पाते, फुसफुसाकर बातें करते। उस खत्ती में भूसे और बर्च की टहनियों की गन्ध फैली होती और तहखाने से नम शीतलता आती। नगर एक बोझिल, गहरी शान्ति में डूबा रहता। कभी-कभी कोई बडा चूहा तेज़ी से भागता हुआ जाता, चुहिया चूं-चू करती और प्रति घण्टे सन्त निकोला के घण्टाघर का टूटा हुआ घण्टा अंधेरे को उदास और मन को कचोटनेवाली थरथराती ध्वनियों से भर देता।

"अरी! गठी, सुघड देहवाली!" अर्तामोनोव प्रेमोन्माद मे भरकर उसके गरम, गुदगुदे शरीर पर हाथ फेरते हुए कहता। "कितनी शक्ति है तुममे! तुम्हारे और बच्चे क्यो नही हुए?"

"नतालिया के अलावा दो और हुए थे, वे दुर्बल थे और मर गये।"

"तो तुम्हारे पति में दम नही था..."

"तुम विश्वास नही करोगे," वह फुसफुसाती, "लेकिन तुम्हारे आने से पहले मै जानती ही न थी कि प्रेम क्या होता है। औरते, मेरी सहेलियां इसके बारे मे कभी-कभी बातें करती, लेकिन मुझे यक़ीन न होता। मैं सोचती कि वे शर्म के मारे झूठ बोलती है। बात यह है कि अपने पति के साथ तो मुझे शर्म ही उठानी पड़ती थी। उसके साथ सोना तो फांसी पर चढने के बराबर था। मै भगवान से मनाती रहती कि वह सो जाये और मुझे तग न करे! वह भला आदमी था, शान्तिप्रिय और समझदार, पर प्रेम करने का गुण उसे भगवान ने नही दिया था..."

उसकी बातों से अर्तामोनोव उद्दीप्त और साथ ही चकित भी होता। उसके उन्नत उरोजों को ज़ोर से सहलाते हुए वह बड़बड़ाता –

"तो ऐसा भी होता है! मैं न जानता था। मेरा ख्याल "ा कि हर मर्द औरत को प्यारा लगता है।"

इस औरत का सामीप्य पाकर जिसे वह दिन में एक गम्भीर स्वभाव की विवेकशील गृहिणी के रूप में ही देखता था और नगर के लोग बुद्धि और शिक्षा के कारण जिसका आदर करते थे, वह अपने को अधिक दृढ और बुद्धिमान अनुभव करता।

एक बार उसके लाड़-दुलार से भावुक होकर उसने कहा –

"मै जानता हू कि इससे तुम्हारे दिल पर क्या बीतती है। हमें बच्चो की नही अपनी शादी करनी चाहिये थी .."

"तुम्हारे लडके भले हैं। अगर उन्हें हमारे बारे में पता भी चल जायेगा, तो कोई हर्ज नही। पर अगर नगरवालो को पता चल गया तो . "

उसके मारे शरीर मे एक कपकंपी-सी दौड गयी।

"तुम चिन्ता न करो," इल्या ने आहिस्ते मे कहा।

एक दिन उल्याना ने जिज्ञामापूर्वक पूछा –

"बताओ तो, तुमने जिस आदमी की हत्या की थी – क्या वह तुम्हे मपनो मे दिखायी नही देता?"

अन्यमनस्कता से अपनी दाढ़ी सहलाते हुए इल्या ने उत्तर दिया –

"नही, मै गहरी नींद सोता हूं। सपने-वपने कुछ नही देखता और फिर उसे सपने में देखने का सवाल ही क्या हो सकता है? मैंने तो उसे देखा भी नही था। किमी ने मुझ पर वार किया और मैं गिरते-गिरते बचा। मैंने झटका दिया, किसी के सर पर मेरा डंडा लगा, फिर किसी दूसरे को मारा और तीसरा भाग गया।"

उसने एक आह भरी और खिन्न होकर बड़बडाया –

"बेवकूफ़ो से वास्ता पड़ जाता है और फिर उनके लिये भगवान के मामने उत्तरदायी होना पडता है..."

कुछ देर तक ये दोनो खामोश रहे।

"क्या सो गये?"

"नही।"

"अब तुम जाओ, पौ फटनेवाली है। मिल में जाओगे? ओह!

मेरे साथ तुम्हें चैन नहीं मिल पायेगा..."

"तुम कुछ फ़िक्र नहीं करो, नीरस दिनों में मेरा कुछ नहीं बिगड़ा, तो अब तो सरस दिन हैं," उसने कपड़े पहनते हुए डींग हांकी।

वह प्रातःकाल के शीतल झुटपुटे में कोट के नीचे अपनी पीठ पर हाथ बांधे, जिससे कोट मुर्गे की पूंछ-सा ऊंचा उठ जाता, अपनी ज़मीन पर पहुंचता। भारी क़दमों से चिप्पड़ और छीलन को रौंदते हुए वह सोचता –

"अल्योशा को कुछ मौज करने की छूट देनी चाहिये ताकि वह उफनना बन्द कर दे। वह टेढा, मगर अच्छा लडका है।"

बालू पर या छीलन के ढेर पर लेटकर वह तुरन्त गहरी नीद सो जाता। हरिताभ आसमान पर धीरे-धीरे उषा की लाली छाने लगती। गर्वीला सूरज अपनी मोरपंखी किरणों का वितान फैला देता और फिर प्राची से उसका सुनहला बिम्ब उदित होता। राजगीर और मज़दूर जागते, अर्तामोनोव के भीमकाय शरीर को पृथ्वी पर फैला पाते और एक-दूसरे को चेतावनी-सी देते हुए कहते –

"वह यहां है!"

कंधे पर लोहे की कुदाल रखे गालों की उभरी हड्डियोवाला तीख़ोन व्यालोव आंखे मिचमिचाता हुआ अर्तामोनोव को ऐसे देखता रहता, मानो उसके ऊपर से गुज़र जाना चाहता हो, लेकिन निश्चय न कर पाता हो।

यह भीमकाय मनुष्य मज़दूरों की चहल-पहल, शोर-गुल और हथौड़ों की घन-घन से न जागता। वह आकाश की ओर मुंह किये पडा सोता रहता और कुंठित आरे की आवाज़ जैसे खर्राटे भरता रहता। कुदाल-मज़दूर मुड़-मुड़कर देखता और इस तरह अपनी आखें झपकाता हुआ चला जाता जैसे किसी ने उसके सिर पर चोट मार दी हो। सफ़ेद सूती क़मीज़ और नीला पायजामा पहने अल्योशा घर से बाहर निकलता। वह नहाने के लिये ऐसे हल्के-हल्के क़दमों से नदी की ओर बढ़ता, जैसे हवा पर चल रहा हो। मामा के गिर्द सावधानी से चक्कर काटकर वह आगे निकल जाता, ताकि छीलन की धीमी आवाज़ से उसकी नींद न टूट जाये। निकीता पौ फटने के पहले ही अपना छकड़ा लेकर जंगल चला जाता। प्रायः प्रतिदिन ही वह वहा से एक या दो छकड़े भरकर बगीचे के लिये साफ़ की हुई ज़मीन पर डालने के लिये

सड़ी पत्तियों की खाद ले आता। उसने बगीचे में बर्च, मेपल, रोवन और बर्डचेरी के वृक्ष लगा दिये थे और अब वह फलों के वृक्ष लगाने के लिये बालू में गहरे गड्ढे खोदकर उन्हें खाद और नदी की दलदली मिट्टी से भर रहा था। पर्व के दिन तीखोन व्यालोव भी उसके काम में हाथ बंटाता।

"बाग़ लगाना तो पर्व के दिन भी, कोई पाप नही है," वह कहता।

प्योत्र अर्तामोनोव अपने कान की ललरी ऐंठता हुआ काम की देख-भाल करता रहता। आरा प्यारी आवाज़ पैदा करता हुआ लकड़ी चीरता रहता, रन्दों की शपाशप और कुल्हाडियो की ऊची ठक-ठक, गीला चूना लगाने की आवाज़ सुनाई देती रहती और कुल्हाडी की कुन्द धार को तेज़ करता हुआ सान का पत्थर मानो सुबकता रहता। भारी कुन्दे उठाते हुए बढ़ई 'दुबीनुश्का' ('प्यारी लाठी') गीत गाते, कोई दूसरा तरुण स्वर गूंज उठता –

मार्या के पास, दोस्न ज़खारी आया
उसके सिर पर उसने, घूसा एक जमाया

"यह भोंडा गाना है," प्योत्र ने व्यालोव से कहा। घुटनों तक बालू मे खड़े ही उसने उत्तर दिया –

"कोई कुछ गाये, इससे कुछ फ़र्क़ नही पडता .."

"यह कैसे?"

"यह ऐसे कि शब्दों में आत्मा नही होती।"

"अजब आदमी है!" प्योत्र ने वहां से हटते हुए सोचा। उसे याद आया कि उसके पिता ने जब व्यालोव को निगरानी के काम के लिये नियुक्त करना चाहा, तो इस आदमी ने ज़मीन ताकते हुए उत्तर दिया था –

"ना-ना, मै इस काम के लायक़ नही। मैं लोगो से काम नही करा सकता। मुझे तो तुम बस, चौकीदार रख लो.."

तब अर्तामोनोव ने उसे खूब भला-बुरा कहा था।

...पतझड आयी, शीत और वर्षा लेकर। पत्ते लाल-पीले होने लगे, बगीचे पर लाली-सी छा गयी और काले लोहे जैसे दिखनेवाले जंगलों पर भी उसके कत्थई धब्बे नजर आने लगे। सीलन-भरी वायु सी-सी कर बहने लगी और पीली रौंदी हुई छीलन को उडाकर नदी में

फेंकने लगी। हर सुबह अनेक घोड़ा-गाड़ियां, जिनमें खुरदरे बालोंवाले घोड़े जुते होते, गोदाम के सामने आकर रुकतीं। गाड़ियां सन से भरी होतीं। प्योत्र माल की जांच करता और ग़ौर से देखता कि यह घुन्ने, दढ़ियल किसान कहीं सन का वज़न बढ़ाने के लिये उसको गीला करके तो नहीं लाये और यह देखता कि लम्बे रेशेवाले सन की जगह कहीं मामूली क़िस्म का तो नही दे रहे। किसानों से निपटना उसके लिये काफ़ी मुश्किल काम था, जल्दी से गुस्से में आ जानेवाला अल्योशा उनसे बात-बात पर उलझ पड़ता। बाप मास्को चला गया और फिर उसकी सास भी मानो मठ मे प्रार्थना करने चली गयी। शाम को चाय पीते या खाना खाते समय अल्योशा अक्सर शिकायत करता-सा कहता –

"बड़ी ऊब की ज़िन्दगी है यहां। मुझे ये लोग कतई पसन्द नही है ..."

इस पर प्योत्र हमेशा ही खीझ उठता।

"खुद तो अच्छे हो! हर किसी से झगड़ा मोल लेते फिरते हो। बड़ी-बडी डींगें हाकते हो।"

"मुझमे डीगे हाकने लायक कुछ है तो!"

घुंघराले बालो को पीछे की ओर झटकने, कधों को सीधा करते, सीना फुलाते और आंखे सिकोडते हुए वह अपने भाइयो और भाभी को उद्दण्ड दृष्टि से देखता। नतालिया उससे कतराती और मानो किसी कारण उससे डरती हुई उसके साथ रुखाई से पेश आती।

खाने के बाद जब उसका पति और अल्योशा फिर से काम पर चले जाते, तब वह निकीता के साधुओं जैसे छोटे-से कमरे में चली जाती और सिलाई लेकर खिडकी के पास उस आराम कुर्सी पर बैठ जाती जो कुबड़े ने बर्च की लकड़ी से चतुराई से उसके लिये खुद बनायी थी। मुनीम का काम उसके ज़िम्मे था, इसलिये वह सुबह से रात तक मेज के सामने बैठा हुआ हिसाब-किताब लिखता रहता। लेकिन जब नतालिया आती, तो वह कुछ देर के लिये अपना काम छोड़कर उससे प्रिमों के बारे मे बाते करता, यह बताता कि वे कैसे रहते थे और उनके गर्म पौधाघरों में कैसे-कैसे फूल उगाये जाते थे। उसकी ऊंची, लड़कियों जैसी आवाज़ कुछ खिंची हुई, लेकिन स्नेहपूर्ण थी और भाभी के चेहरे की ओर देखने से कतराती हुई उसकी नीली आंखें खिड़की के बाहर घूरती रहती। सिलाई पर झुकी हुई नतालिया

ऐमे विचारमग्न ख़ामोशी के भाव से बैठी रहती, जैसे कोई एकान्त में बैठा हो। इस तरह एक-दूसरे की ओर देखे बिना वे एक या कभी-कभी दो-दो घण्टे बैठे रहते। कभी-कभी निकीता बहुत सावधानी से अपनी नीली आंखों की स्नेहमयी ऊष्मा बरबस अपनी भाभी की ओर फेर देता और तब उसके कुत्ते जैसे बड़े-बड़े कान लाल हो जाते। कभी-कभी उसकी नजर उठने पर नतालिया भी उसकी ओर देखकर स्नेह मे मुस्करा देती। यह एक विचित्र मुस्कान होती। कभी-कभी निकीता को लगता मानो इसके पीछे उसके हृदय के भाव की एक अस्पष्ट स्वीकृति छिपी है और कभी उसे यह मुस्कराहट कोचती तथा तिरस्कारपूर्ण लगती और वह एक अपराधी की तरह अपनी दृष्टि नीची कर लेता।

खिड़की के बाहर मेंह की बूंदें रिम-झिम बरस रही थी और गर्मियों के धुधले पड गये रंगों को धो रही थी। उन्होने सुना कि अल्योशा कही चिल्ला रहा है। एक रीछ का बच्चा, जिसे हाल ही मे ज़ंजीर डालकर आगन के कोने मे बांध दिया गया था, ज़ोर से गुर्रा रहा था, पीट-पीटकर मन के रेशे अलग करनेवाली औरते फट-फट की आवाज़ पैदा कर रही थी। सिर मे पांव तक भीगा और कीचड मे लथपथ अल्योशा तेज़ी मे भागता हुआ अन्दर आया। उसकी टोपी गुद्दी पर खिसकी हुई थी, किन्तु ऐसी हालत मे भी वह बसन्त के ताज़ा दिनो की याद कर रहा था। उसने व्यंग्यपूर्वक हंसते हुए बताया कि तीखोन व्यालोव ने कुल्हाड़े मे अपनी एक उंगली काट डाली है।

"वह कहता तो यही है कि ऐसा संयोग से हो गया। लेकिन बात बिल्कुल साफ है। वह फ़ौज में जाने से डरता है। और मैं? मै तो यहां से जान छुड़ाने के लिये बड़ी ख़ुशी से ऐसा करता "

वह रीछ के बच्चे की तरह गुर्राया और बड़बडाया –

"यहां सुनसान-बियाबान में आ पडे है ."

फिर उसने आदेश-सा देते हुए अपना हाथ बढाकर कहा –

"मुझे पन्द्रह कोपेक दो। मै शहर जा रहा हू।"

"किसलिये?"

"तुम्हें इससे मतलब?"

जाते-जाते उसने गुनगुनाना शुरू किया –

पगडडी पर युवती भागी जाये
ताकि गोटिया प्रियतम तक पहुचाये

"हाय! यह किसी रोज़ अपने को मुसीबत में डाल लेगा!" नतालिया ने कहा। "मेरी सखियों ने इसे अक्सर ओलगा ओर्लोवा के साथ देखा है। उसे तो अभी पन्द्रहवां साल लगा है। उसकी मां मर चुकी है और बाप पियक्कड़ है..."

उसकी बात से निकीता घबडा गया। उसके शब्दों में उसे आवश्यकता से अधिक अफ़सोस, घबराहट और मानो ईर्ष्या का भी स्वर सुनायी दिया।

वह चुपचाप खिड़की से बाहर देखता रहा। भीगी हवा में देवदार की शाखायें झूम रही थी और पारे-सी मेंह की बूंदों को अपनी हरी नुकीली पत्तियों की नोको पर से नीचे गिरा रही थी। देवदार के ये वृक्ष उसी ने लगाये थे। घर के चारों ओर खड़े हुए सभी वृक्ष उसी ने रोपे थे...

उदास और थका-सा प्योत्र अन्दर आया।

"चाय पीने का समय हो गया है, नतालिया।"

"नहीं, अभी जल्दी है।"

"मैं कहता हूं, समय हो गया!" वह चिल्लाया। पत्नी जब कमरे से बाहर चली गयी, तो वह उसकी जगह पर बैठ गया। वह भी बड़बड़ाने लगा –

"पिता जी ने सारे कारोबार का बोझ मेरे कंधों पर डाल दिया है। मै चक्कर-घिन्नी की तरह घूमता रहता हूं और इतना भी होश नही रहता कि खुद कहां हूं। अगर काम ढंग से नही होगा तो वह मेरी खबर लेंगे..."

निकीता ने सावधानी से दबी जबान में उससे अल्योशा और ओर्लोवा का जिक्र किया। लेकिन प्योत्र ने ऐसे हाथ झटक दिया, मानो इस सम्बन्ध में कुछ सुनने को तैयार न हो।

"मेरे पास लड़कियों की तरफ़ ध्यान देने का वक्त नही है! मैं तो अपनी पत्नी को भी रात को ही देखता हूं और दिन के वक्त तो उल्लू की तरह अन्धा रहता हूं। तुम्हारे दिमाग में तो बेसिर-पैर की बातें भरी हैं.."

अपना कान ऐंठते हुए उसने सावधानी से कहना शुरू किया –

"यह मिल का काम हम जैसे लोगों के लायक़ नही है। हमें तो कही स्तेपी में जाकर ज़मीन खरीदना और उसे जोतना-बोना चाहिये।

शोर कम, फ़ायदा ज्यादा..."

अपनी यात्रा से लौटने पर इल्या अर्तामोनोव अत्यन्त प्रसन्न और पहले से जवान दिखायी दिया। उसने अपनी दाढ़ी कुछ छंटवा दी थी, उसके कंधे पहले मे अधिक चौड़े और उसकी आंखें अधिक चमकीली हो गयी थी। वह फिर से ढाले गये हल की तरह लगता था। सोफ़े पर सहज ढंग से बैठते हुए उसने कहा –

"हमारे कारोबार को फ़ौज की तरह आगे बढ़ना चाहिये। तुम्हारे लिये, तुम्हारे बेटो और नाती-पोतो के लिये तीन सौ साल तक के लिये काम ही काम रहेगा। हम अर्तामोनोव-परिवार के लोग देश के व्यापार में एक नयी ज़िन्दगी ला देंगे!"

उसने अपनी पुत्र-वधू को जिज्ञासु दृष्टि से देखा और चिल्लाया –

"गोल-मटोल हो रही हो, नतालिया? अगर लड़का हुआ, तो मै तुम्हें बढ़िया तोहफ़ा दूंगा।"

रात को सोने की तैयारी करते समय नतालिया ने अपने पति से कहा –

"पिता जी जब मौज में होते है, तो बड़े स्नेहशील हो जाते है।"

उसके पति ने कनखियों से देखते हुए उदासीन भाव से उत्तर दिया –

"क्यो नही! वह स्नेहशील कैसे न होंगे – उन्होंने तुम्हें बढ़िया तोहफ़ा देने का वायदा जो किया है।"

लेकिन दो-तीन सप्ताह के बाद अर्तामोनोव की प्रसन्नता काफ़ूर हो गयी और वह किसी सोच मे डूबा-डूबा नज़र आने लगा। नतालिया ने निकीता से पूछा –

"पिता जी किस कारण नाराज़ हैं?"

"मालूम नही। उन्हें समझना बहुत मुश्किल है।"

उसी दिन शाम को चाय पीते-पीते अल्योशा ने अचानक बहुत ऊचे और बहुत साफ़ शब्दों में कहा –

"बापू! मुझे फ़ौज में भर्ती हो जाने दो।"

"क्या-आ?" इल्या चिल्लाया।

"मैं यहां नही रहना चाहता .."

"जाओ यहां से!" अर्तामोनोव ने सबको बाहर जाने का आदेश दिया, किन्तु जब अल्योशा सबके साथ बाहर दरवाज़े तक पहुंचा तो उसने पुकारा –

"रुको, अल्योशा!"

हाथ पीछे बांधे और भौंहें सिकोड़े हुए वह देर तक उसे घूरता रहा। फिर बोला –

"और मैंने तुमसे इतनी आशायें बांधी थी!"

"मैं यहां नही रह सकता।"

"बको मत! तुम्हें यहां रहना है। तुम्हारी मां तुम्हे मेरे हाथो में सौंप गयी थी, जाओ!"

अल्योशा ने हिचकिचाते हुए एक क़दम उठाया, लेकिन उसके मामा ने उसे फिर रोक दिया और उसके कंधो को ज़ोर से पकड़कर कहा –

"मैं तुम्हारे साथ बहुत नर्मी से पेश आता हूं। मेरे बाप होते तो घूंसों से ख़बर लेते। जाओ।"

एक बार फिर उसने लड़के को रोका और समझाते हुए कहा –

"तुम्हें बड़ा आदमी बनना है – समझे? आइन्दा मैं कभी यह सब बक-बक नही सुनना चाहूंगा ."

अकेला रह जाने पर अपनी दाढ़ी को मुट्ठी में भरकर वह देर तक खिडकी के पास खड़ा रहा और गीले-भूरे बरफ़ के फाहों को ज़मीन पर गिरते हुए देखता रहा। जब बाहर रात तहख़ाने जैसी अंधेरी हो गयी, तो वह शहर की ओर चल पडा। बैमाकोवा का फाटक पहले से ही बन्द हो चुका था। उसने खिड़की पर दस्तक दी और उल्याना ने स्वय दरवाज़ा खोला। नाराज़ होकर उसने पूछा –

"इतनी देर मे क्यों आये हो?"

जवाब दिये या कोट उतारे बिना ही वह कमरे में चला गया। अपनी टोपी उसने फ़र्श पर फेंक दी, मेज़ पर अपनी कोहनियां टिकाकर कुर्सी पर बैठ गया और दाढ़ी में उंगलिया खोंमते हुए उसने उल्याना को अल्योशा के बारे में बताया –

"वह पराया है, मेरी बहन मालिक के साथ रंग-रलियां मनाती रही। अब उसी ख़ून का असर रंग दिखा रहा है।"

उल्याना ने यह जांच करने के बाद कि खिड़कियों के सभी शटर अच्छी तरह से बन्द हैं या नही, मोमबत्ती बुझा दी। कोने मे देव-प्रतिमाओं के नीचे चांदी के दीवट पर रखे एक दीये की मद्धिम नीली रोशनी फैल रही थी।

"उसकी शादी कर दो। तब वह खूटे से बंध जायेगा," वह बोली।

"हां, यही करना चाहिये। लेकिन सिर्फ़ इतना ही काफ़ी नही। प्योत्र में तो कोई उत्साह ही नही है। यह बहुत बुरी बात है! जिस आदमी में उत्साह न हो, वह न बन सकता है, न बिगड़ सकता है। वह इस ढग से काम करता है, जैसे किमी मालिक का काम कर रहा हो, अपना नही। मानो वह अभी भी भूदास हो। उसे अपनी आज़ादी का अहसास नही – समझी? और निकीता – उमके बारे में तो कहना ही क्या? वह अपाहिज है। पेड़ों और फूलो के अलावा वह और कोई बात सोच ही नही मकता। मेरा ख्याल था कि अल्योशा काम मे दिल लगायेगा।"

बैमाकोवा ने उसे दिलासा देने की कोशिश की –

"तुम इतनी जल्दी परेशान क्यो होते हो? धीरज रखो। जब पहिया तेज़ी से घूमने लगेगा तो मब उसमें लग जायेगे।"

आधी रात तक कमरे की गरम ख़ामोशी मे, जहां कोने में रखे दीये की सहमी टिमटिमाती नीली लौ से धुंधले बादल उठ रहे थे, वे दोनो बैठ बातें करते रहे। कारोबार और धन्धे के प्रति अपने लडको की विरक्ति का रोना रोते-रोते अर्तामोनोव नगरवासियों की नुक्ताचीनी करना भी न भूलता –

"बहुत छोटे दिल के लोग है।"

"ये लोग तुमसे इसलिये नफ़रत करते है कि भाग्य तुम्हारा साथ दे रहा है। हम औरतें तो ऐसे आदमी को चाहती है, लेकिन एक पुरुष को दूसरे की ख़ुशकिस्मती काटे की तरह चुभती है।"

उल्याना बैमाकोवा धीरज और दिलासा देना जानती थी। जब वह बोली कि "मुझे बस एक ही बात का डर है कि कही पेट न रह जाये" तो अर्तामोनोव अप्रसन्नता से केवल घुरघुराकर रह गया।

"मास्को में काम-धन्धे ख़ूब ज़ोरों पर है!" उठकर उसे आलिगन में भरते हुए वह बोला। "काश! तुम मर्द होती "

"ख़ैर, अब तुम जाओ, मेरे प्यारे!"

उसने उसको चूमा और चला गया।

...श्रोवटाइड के धार्मिक उत्सव के दिन येरदान्स्काया अल्योशा को शहर से स्लेज गाड़ी में डालकर घर लायी। अल्योशा पर इतनी मार पड़ी थी कि वह मूर्छित हो गया था और उसके कपड़े फटकर

तार-तार हो गये थे। येरदान्स्काया और निकीता देर तक उसके शरीर पर अश्वमूला के साथ वोद्का मलते रहे, लेकिन वह कुछ भी बोले बिना सिर्फ़ कराहता रहा। अर्तामोनोव अपनी क़मीज़ की आस्तीनें चढ़ाते और उतारते तथा दांत किटकिटाते हुए हिंस्र जन्तु की तरह कमरे में इधर से उधर आता-जाता रहा। जब अल्योशा को होश आया तो हवा में अपना घूंसा तानते हुए वह गरजा –

"वह कौन था, बोलो!"

अपनी एक सूजी हुई आंख खोलते, हांफते, खून थूकते हुए दर्द और क्रोध से स्याह पड़कर अल्योशा ने केवल मन्द करुण स्वर में कहा –

"मेरा काम तमाम कर दो . ."

डर के मारे नतालिया ने ज़ोर-ज़ोर से सुबकना शुरू कर दिया। अर्तामोनोव ने क्रोध से पांव पटककर उसको डांटा –

"चुप रह, भाग यहां से!"

अल्योशा ने अपने हाथों से सिर को ऐसे ज़ोर से थाम लिया, मानो खींचकर उसे अलग कर देगा और कराह उठा।

फिर अपनी बांहें फैलाकर तथा निःस्पन्द होकर एक करवट पड़ गया। खून से लथपथ उसका मुंह खुला हुआ था और उसकी सांस मुश्किल से घरघराहट के साथ चल रही थी। बिस्तर के पास रखी मेज़ पर एक मोमबत्ती टिमटिमा रही थी और उसके बुरी तरह घायल शरीर पर छायाएं रेंग रही थी, जिससे लगता था कि उसका शरीर अधिकाधिक सूजता और स्याह पड़ता जा रहा है। उसके भाई मलिन मुद्रा में पैताने की ओर चुपचाप खडे थे और बाप कमरे में इधर से उधर आता-जाता हुआ किसी से पूछ रहा था –

"क्या यह बचेगा नही?"

लेकिन आठ दिनो के बाद अल्योशा बिस्तर से उठ खड़ा हुआ, यद्यपि वह अब भी तर खांसी खांसता और उसके खखार से खून आता था। वह अक्सर हमामघर में जाता, बफारे लेता और काली मिर्च मिलाकर वोद्का पीता। उसकी आंखों में एक आक्रोश-भरी भयानक आग जलती रहती। इससे वे और भी अधिक सुन्दर लगने लगी। उसने यह नही बताया कि उसे किसने पीटा था, लेकिन येरदान्स्काया ने पता लगाकर खबर दी कि स्तेपान बास्कीं, दो फ़ायरमैन और वोरोपोनोव के मोर्दोवी चौकीदार ने उसकी पिटाई की है। अर्तामोनोव

ने जब अल्योशा से पूछा कि क्या यह सच है, तो उसने उत्तर दिया –

"मैं नहीं जानता।"

"तुम झूठ बोलते हो!"

"मैंने उन्हें नहीं देखा। उन्होंने पीछे से मेरे सिर पर कुछ डालकर – शायद कोट – मुझे कुछ भी देखने नही दिया।"

"तुम कुछ छिपा रहे हो," अर्तामोनोव ने कहा। अल्योशा ने कुटिलता से चमकती आखो से उसकी ओर सीधे घूरकर देखा और कहा –

"मैं अच्छा हो जाऊंगा।"

"तुमको खूब खाना-पीना चाहिये!" अर्तामोनोव ने सलाह दी और फिर आहिस्ता-आहिस्ता बड़बड़ाया –

"इसके लिये उन सबके घरों को आग लगा देनी चाहिये, ज़रा उन्हें भी सेंक महसूस हो .."

अब वह अल्योशा की ओर अधिक ध्यान देने लगा, रूखा-सा स्नेह दिखाने लगा। अपने बेटों में श्रम के प्रति उत्साह जगाने के अपने लक्ष्य पर किसी तरह का पर्दा डाले बिना वह काम के प्रति अपने उत्साह का और अधिक प्रदर्शन करने लगा।

"किसी भी तरह के काम से नफ़रत नही करो!" वह उन्हें सीख देता और स्वय बहुत-से ऐसे काम करता रहता जिन्हें उसके लिये करना ज़रूरी नही था। वह जिस काम में हाथ लगाता, उसी मे जानवरों जैसी ऐसी चुस्ती-फुर्ती दिखाता कि बिल्कुल ठीक-ठीक यह पता लगा लेता कि किस जगह सबसे अधिक बाधा है और किस तरह उस पर आसानी से काबू पाया जा सकता है।

उसकी पुत्र-वधू की गर्भावस्था के दिन बहुत अधिक बढ़ते गये। अन्त में जब दो दिन की यातना के बाद नतालिया ने एक लडकी को जन्म दिया तो वह खेद से विक्षुब्ध होकर बोला –

"यह क्या हुआ .."

"भगवान को उसकी दया के लिये धन्यवाद दो," उल्याना ने कठोर स्वर में उससे कहा, "जानते हो आज किसका दिन है, सनवाली येलेना का।"

"सच?"

उसने पंचाग उठाकर तारीख निकाली और एक बालक की तरह प्रसन्न होकर कहा –

"मुझे नतालिया के पास ले चलो!"

लालों से जड़ी झुमको की जोड़ी और पचास रूबल नतालिया के वक्ष पर रखते हुए वह चिल्लाया –

"खुश रहो! शाबाश, यद्यपि लड़का नही है, फिर भी ठीक है।"

इसके बाद प्योत्र की ओर मुड़कर उसने पूछा –

"कहो, खुश हो? जब तुम पैदा हुए थे, तब मुझे तो खुशी हुई थी!"

प्योत्र अपनी पत्नी के रक्तहीन, यन्त्रणाग्रस्त, कठिनाई मे पहचान में आनेवाले चेहरे को चिन्तित दृष्टि से देख रहा था। उसकी थकी आखें स्याह गढ़ों में धस गई थी, जहा से वह लोगों और चीज़ों की ओर इस तरह देखती थी, जैसे किसी पुरानी भूली हुई याद को ताज़ा कर रही हों। उसने आहिस्ता से अपने काटे हुए होठों पर जीभ फेरी।

"यह कुछ बोलती क्यो नही है?" प्योत्र ने अपनी सास मे पूछा।

"चीख़-चीख़कर थक गयी है," उल्याना ने उत्तर दिया और उसे कमरे मे बाहर ढकेल दिया।

दो दिन और दो रातो तक वह लगातार अपनी पत्नी की चीखें सुनता रहा था। पहले-पहल तो उसे उस पर दया आयी, मन में यह डर पैदा हुआ कि वह अब नही बचेगी। बाद मे उसकी चीखों और घर में लोगों की दौड़-धूप मे वह इतना स्तम्भित-सा हो गया, थकान के मारे डर या दया भी भूल गया। उसने कोशिश की कि वह यहां से कही इतनी दूर चला जाये, जहां उसे ये चीखें न सुनायी दे। लेकिन इनसे कही भी चैन नही मिला क्योकि वे उसके मस्तिष्क मे गूज रही थी और वहां विचित्र-विचित्र विचारो के ताने-बाने बुन रही थी। वह जहां कहीं भी जाता था, वही निकीता कुदाल या फावडा उठाये हुए लकडी काटता, छीलता, कुछ खोदता, छछूदर की ध्वनिहीन चाल से इधर-उधर दौड़ता-भागता उसके सामने पड ही जाता। लगता था, जैसे वह कुबड़ा चक्कर काटता-सा दौड़ रहा था और इसीलिये हर जगह सामने आ जाता था।

"लगता है कि वह इस मुसीबत से छुटकारा न पा सकेगी," प्योत्र ने भाई से कहा। बालू मे अपना फावड़ा गड़ाते हुए कुबड़े ने पूछा –

"दाई क्या कहती है?"

"वह तो तसल्ली देती है, कहती है कि सब ठीक हो जायेगा। तुम इस तरह कांप क्यों रहे हो?"

"दातों में दर्द है।"

बच्ची के पैदा होने के दिन शाम को निकीता और तीख़ोन के साथ बारजे में बैठे प्योत्र ने एक विचारमग्न मुस्कान के साथ कहा –

"सास ने बच्ची को मेरी गोद में रख दिया और मैं इतना ख़ुश था कि मुझे उसका वज़न ही न महसूस हुआ। मै उसे छत तक उछालते-उछालते ही रह गया। कितने ताज्जुब की बात है कि ऐसी नन्ही-सी जान और उसके कारण इतनी भयानक पीडा .."

तीख़ोन व्यालोव ने सोचने की मुद्रा में जबड़ा मलते हुए सदा की भांति शान्त स्वर में कहा –

"छोटी-छोटी चीज़ें ही मानव की सारी मुसीबतो का कारण होती है।"

"तुम्हारा मतलब?" निकीता ने कठोर स्वर में पूछा। चौकीदार ने जम्हाई लेते हुए उदासीनता मे उत्तर दिया –

"बस, यो ही कुछ कह दिया ."

इन्हें खाने के लिये अन्दर बुलाया गया।

बच्ची ख़ूब मोटी-ताज़ी और स्वस्थ थी। लेकिन पाच महीने बाद वह अगीठी की ज़हरीली गैस मे मर गयी। मा पर भी इम ज़हरीली गैम का असर हुआ था, पर किसी तरह उमकी जान बच गयी।

"क्या हो सकता है?" अर्तामोनोव ने कब्रिस्तान में प्योत्र से कहा। "उसके और बच्चे हो जायेंगे और अब यहा हमारी अपनी एक क़ब्र हो गयी। मतलब यह कि बहुत गहरा लगर डाल दिया गया है। जब किसी के साथ भी कोई अपना हो, उसके अधीन भी अपना हो, ज़मीन पर भी अपना हो, जमीन के नीचे भी अपनी जगह हो, तभी उसकी जडें मजबूत होती है!"

प्योत्र ने पत्नी की ओर देखते हुए सिर झुकाकर सहमति प्रकट की। नतालिया अजीब ढग से झुकी हुई अपने पांवों के समीप उस छोटी-सी उभरी हुई जगह पर नज़र गड़ाये थी, जिसे निकीता बड़ी साव-धानी मे अपने फावड़े से ठीक कर रहा था। ऐसी विक्षिप्त शीघ्रता से अपने गालो पर बह रहे आसुओं को पोंछते हुए, मानो उसे डर

हो कि लाल सूजी हुई नाक से छू जाने पर उसकी उंगलियां जल जायेंगी, वह फुसफुसाती जा रही थी –

"हे भगवान, हे भगवान ..."

अल्योशा क़ब्रों पर के लेखों को पढ़ता हुआ क्रॉस-चिह्नों के बीच घूमता रहा। वह पहले से दुबला हो गया था और कुछ अधिक उम्र का भी नज़र आने लगा था। उसके गालों और ठुड्डी के बढ़े हुए बालों के कारण उसका किसानों से भिन्न चेहरा धूप और धुएं से झुलसा हुआ सा लग रहा था। काली भौंहों के नीचे उसकी गहरी, उद्दण्ड आंखें सारी दुनिया को नफ़रत की निगाह से देखती थी। वह दबी-घुटी आवाज़ और दम्भपूर्ण अन्दाज़ में और मानो जान-बूझकर अस्पष्ट ढंग से बात करता और जब लोगों को उसकी बात समझ में न आती तो वह चीख़ उठता –

"समझे नही?" और उन्हें भला-बुरा कहता। अपने भाइयो के प्रति उसके व्यवहार में एक अप्रिय विद्रूप और उपहास की भावना रहती थी। वह नतालिया से ऐसे बातें करता, जैसे वह नौकरानी हो। निकीता ने जब झिडकी देकर उससे कहा कि – "व्यर्थ ही तुम नतालिया के साथ ऐसे बुरे ढंग से पेश आते हो!" तो उसने उत्तर दिया –

"मैं एक बीमार आदमी हूं।"

"वह तो बड़ी विनम्र है।"

"तो बर्दाश्त करे।"

अल्योशा अपनी बीमारी की अक्सर और बड़े गर्व मे बात करता, मानो यह ऐसा गुण हो जो उसे अन्य लोगों से अलग करता हो।

क़ब्रिस्तान मे अपने मामा के साथ घर की तरफ़ आते हुए उसने कहा –

"हमारा अपना, अलग क़ब्रिस्तान होना चाहिये। इन नत्थू-बुद्धू लोगों के साथ दफ़नाया जाना अपमान की बात है।"

अर्तामोनोव ने मुस्कराकर उत्तर दिया –

"बनायेंगे! हर चीज़ अपनी होगी। गिरजाघर, क़ब्रिस्तान, स्कूल और अस्पताल। थोड़ा सब्र करो!"

वतरक्षा के पुल को पार करते समय वे एक भिखारी जैसे आदमी के पास से निकले जो लाल-से रंग का फटा-पुराना मैला चोग़ा पहने

रेलिंग के सहारे झुका खड़ा था। वह शराब के कारण तबाह हो जाने-वाला कर्मचारी-सा लगता था। कडे सफ़ेद बालों की खूंटियों से भरे उसके थलथल चेहरे पर बालों से ढके और हिलते ओठों के नीचे से काले दांतों की उखड़ी-पुखड़ी पांत नज़र आ रही थी और उसकी पनीली आंखों में एक धुंधली-सी रोशनी थी। अर्तामोनोव ने दूसरी ओर मुंह फेरकर थूक दिया। लेकिन यह देखकर कि अल्योशा ने इस फटेहाल आदमी का असामान्य आदर के साथ सिर झुकाकर अभिवादन किया है, उसने पूछा –

"यह कौन है?"

"यह घड़ीसाज़ ओर्लोव है।"

"ओर्लोव है तो क्या हुआ?"

"यह समझदार आदमी है," अल्योशा ने अपनी बात पर दृढ़ रहते हुए कहा, "उसे अनुचित रूप से सताया गया है..."

अर्तामोनोव ने अपने भानजे पर एक तीखी नज़र डाली और चुप्पी लगा गया।

फिर ग्रीष्म का मौसम आया, गरम और खुश्क। ओका नदी के पार जंगल जलते रहते। दिन में दूधिया रंग के कड़वे धुएं के बादल ज़मीन के ऊपर मडराते रहते। रात को गंजा-सा, लाल चांद बड़ा अप्रिय लगता, निष्प्रभ तारे तांबे की कीलों की टोपियों की तरह लटके रहते और धुधले आकाश को प्रतिबिम्बित करनेवाली नदी पृथ्वी के नीचे से उठनेवाले ठण्डे और घने धुएं के प्रवाह जैसी लगती।

एक शाम को खाने के बाद गर्मी से बेहाल होते हुए अर्तामोनोव परिवार के लोग बगीचे में मेपल वृक्षों के अर्धचक्र में बैठकर चाय पी रहे थे। ये वृक्ष उस भूमि में अच्छी तरह उगे थे, पर शाम के धुंधलके में उनके नक्काशीदार पत्तों से लदी चोटियां अपनी छाया न डाल पा रही थी। झींगुर झीं-झीं और गुबरैले भी-भी कर रहे थे, समोवार सूं-सू कर रहा था। नतालिया चुपचाप चाय ढाल रही थी। उसने अपने ब्लाउज़ के ऊपरी बटन खोल रखे थे और खुली जगह में से उसकी मक्खन जैसी मुलायम, गर्म त्वचा नज़र आ रही थी। कुबड़ा सिर झुकाये बैठा चिड़ियों का पिंजड़ा बनाने के लिये लकड़ी की सलाखें छील रहा था। प्योत्र अपने कान की ललरी ऐंठते हुए धीमे स्वर में बोला –

"लोगों को व्यर्थ चिढ़ाने में कोई तुक नही, किन्तु हमारे पिता यही करते हैं।"

अल्योशा सूखी खांसी खांसता और गरदन आगे को बढ़ाये बस्ती की ओर देख रहा था, मानो किसी की प्रतीक्षा में हो।

नगर में उदासीन स्वर से एक घण्टा टनटनाया।

"आग के ख़तरे का घण्टा?" अल्योशा ने माथे पर हथेली रखते और उछलते हुए पूछा।

"कैसी बात कह रहे हो? अरे, यह तो समय बतानेवाला गिरजाघर का घण्टा है।"

अल्योशा उठकर चला गया। निकीता ने कुछ देर चुप रहने के बाद आहिस्ता से कहा –

"उसके मन में आग का ही ख्याल बना रहता है।"

"हर वक़्त जला-भुना रहता है," नतालिया ने सावधानी से कहा। "और यह कितना ख़ुशमिज़ाज होता था.."

बड़प्पन के अन्दाज़ में अपनी पत्नी और भाई की भर्त्सना करते हुए प्योत्र ने कहा –

"तुम दोनो बुद्धुओ की तरह उसकी ओर देखा करते हो। तुम्हारी दया दिखाने से उसे ठेस लगती है। नतालिया, चलो, सोने चले।"

वे उठकर चले गये। कुबडा उन्हें जाते देखता रहा, फिर वह भी उठा और ग्रीष्म-कुटी में चला गया, जहा उसने अपने लिये पुआल का बिस्तर बना रखा था। वह उसकी दहलीज़ पर बैठ गया। यह ग्रीष्म-कुटी घास मे ढंके हुए एक छोटे टीले पर बनी थी। वहा से बाड़ के ऊपर मे बस्ती के मकानों का काला झुंड नजर आता था, गिरजे का घण्टाघर और आग से रक्षा करनेवालों की ऊंची मीनार दिखायी दे रही थी। वृक्षो के नीचे मे प्यालों-तश्तरियो की खनखनाहट की आवाज़ आ रही थी। वहां नौकर-चाकर मेज़ पर से चाय का सामान हटा रहे थे। बाड़ के पास मे बुनकरों का एक गिरोह निकला। एक के हाथ में मछली फसानेवाला जाल और दूसरे के हाथ मे एक बालटी थी और तीसरा चकमक से चिनगारियां निकालकर पलीता जलाने की कोशिश कर रहा था ताकि उससे अपना पाइप सुलगा ले। एक कुत्ता चीख़ उठा और रात के सन्नाटे में तीख़ोन व्यालोव की शान्त आवाज़ गूज गयी –

"कौन है?"

पृथ्वी पर नगाड़े के कसे चमड़े की भांति तनी हुई ख़ामोशी छाई थी। यहां तक कि बुनकरों के पांवों के नीचे बालू की मन्द ध्वनि भी अप्रिय रूप से स्पष्ट सुनायी दी। निकीता को ऐसी रातों की निःस्तब्धता बहुत अच्छी लगती थी। ख़ामोशी जितनी ही गहरी होती, उसकी कल्पना की तमाम शक्तिया उतने ही अधिक आवेग से नतालिया के चारों ओर केन्द्रित हो जाती और सदैव किंचित भयभीत या विस्मित रहनेवाली उसकी प्यारी-सी आंखें उतनी ही अधिक तीव्रता से चमक उठतीं। और ऐसे में तरह-तरह की सुखद सम्भावनाओं की कल्पना कर लेना उसके लिये बहुत सरल होता। कभी उसे एक बहुत बड़ा ख़जाना मिल जाता, जिसे वह प्योत्र को दे देता और उसके बदले में वह उसे नतालिया सौप देता। या फिर डाकू हमला कर देते और वह ऐसे साहसी कारनामे कर दिखाता कि उसका बाप और भाई अपनी इच्छा से उसे पुरस्कारस्वरूप नतालिया भेंट कर देते। या फिर कोई ऐसी बीमारी आती कि उन दोनों को – उसे और नतालिया को – छोड़कर बाकी सबको उठा ले जाती और तब वह नतालिया को विश्वास दिलाता कि उसका सुख निकीता की आत्मा मे ही निहित है।

आधी रात गुज़र चुकी थी, जब उसने आकाश के स्याह-भूरे धुंधलके मे से शहर के घरों के झुंड के ऊपर से और बगीचे की निःस्पन्द छायाओं के बीच एक नया बादल आहिस्ता-आहिस्ता उठते देखा। एक क्षण बाद ही इस बादल के निचले सिरे पर एक लाल आभा फैल गई और उसे लगा कि यह आग लगने का निशान है। घर की ओर भागते समय उसने अल्योशा को गोदाम की छत पर एक सीढ़ी से चढते हुए देखा।

"आग!" निकीता चिल्लाया। उसके भाई ने चढते-चढते उत्तर दिया –

"मालूम है, तो क्या हुआ?"

"तुम तो इसकी प्रतीक्षा में थे, न," कुबड़े ने अहाते के बीच रुककर अचानक पूछा।

"था भी तो इससे क्या? ऐसे सूखे मौसम में आगें लगा ही करती हैं।"

"बुनकरो को जगाना चाहिये...

15 1176

लेकिन तीखोन उन्हें पहले ही जगा चुका था और वे प्रसन्नतापूर्वक शोर मचाते हुए नदी की ओर भागे जा रहे थे।

"मेरे पास ऊपर आ जाओ," अल्योशा ने कहा जो इस समय छत की मुंडेर पर दोनों तरफ़ टांगें लटकाकर बैठा था। कुबड़ा कोई आपत्ति किये बिना यह कहता हुआ ऊपर चढ़ गया –

"कहीं नतालिया न डर जाये।"

"तुम्हें यह डर नहीं लगता कि प्योत्र मार-मारकर तुम्हारी पीठ पर एक और कूबड़ उठा देगा?"

"किसलिये?" निकीता ने आहिस्ते से पूछा और उसे उत्तर मिला –

"इसलिये कि उसकी बीवी पर अपनी नज़रें गड़ाये रहते हो।"

कुबड़ा बड़ी देर तक कोई उत्तर न दे पाया। उसे लगा, जैसे वह छत से नीचे फिसल रहा है और अभी गिरकर ज़मीन से टकरा जायेगा।

"तुम कैसी बात कह रहे हो? कहने से पहले ज़रा सोच लेते," उसने बड़बड़ाते हुए कहा।

"ख़ैर ठीक है, ठीक है! मै कोई अन्धा तो नही हूं.. मगर तुम कोई चिन्ता मत करो," अल्योशा ने ऐसे ख़ुशमिज़ाजी से कहा जैसे बहुत दिनों से न बोला था। आखो पर हथेली से ओट करके वह आग की बड़ी-बड़ी डोलती लपटों को देखता रहा जो निःस्तब्धता को चीरकर उसमें एक घुटा-घुटा-सा गर्जन भर रही थी और प्रसन्नतापूर्वक कहता गया –

"यह आग बास्कीं के घर में लगी है। उनके आगन में तारकोल के कोई बीम पीपे रखे हुए है। आग पड़ोसियो तक न पहुंचेगी – बगीचे उसको बीच में ही रोक लेगे।"

"भाग जाना चाहिये," निकीता आग से विक्षत अंधकार की ओर देखते हुए सोच रहा था। लाली में खड़े पेड़ ऐसे लगते थे, जैसे लोहे को ढालकर बनाये गये हों। ललछौहीं ज़मीन पर आदमियों की खिलौनों जैसी छोटी-छोटी आकृतियां इधर-उधर दौड़ रही थी। वह उन लम्बे और पतले क़ुलाबों को भी देख सकता था, जिन्हें लोग आग में धंसा रहे थे।

"आग ख़ूब जल रही है," अल्योशा ने प्रशंसा करते हुए कहा।

"मैं किसी मठ में चला जाऊंगा," कुबड़े ने मन ही मन सोचा।

अहाते में से इन्हें प्योत्र की उनींदी-सी चिड़चिड़ी आवाज़ और फिर तीखोन व्यालोव का अनमना-सा उत्तर भी सुनायी दिया। नतालिया खिड़की में खड़ी अपने ऊपर क्रॉस का चिह्न बना रही थी। वह चौखटे में जड़ी तस्वीर-सी लगती थी।

निकीता छत पर तब तक बैठा रहा, जब तक आग लगनेवाली जगह पर धुआंलों के काले स्तम्भों के इर्द-गिर्द सुनहरे अंगारे नहीं चमकने लगे। इसके बाद वह नीचे उतरकर फाटक से बाहर चला गया। वहां अचानक अपने बाप से उसकी भेंट हो गयी। अर्तामोनोव पानी से तर-ब-तर था, उस पर ऊपर से नीचे तक कालिख पुती हुई थी, उसकी टोपी ग़ायब थी और उसका कोट चिथड़े-चिथडे हो रहा था।

"कहां जा रहे हो?" निकीता को फिर अहाते में धकेलते हुए अर्तामोनोव ने असाधारण गुस्से से चिल्लाकर कहा। छत पर अल्योशा की सफेद आकृति देखते ही वह और अधिक गुस्से से चिल्लाया –

"तुम वहां ऊपर क्या कर रहे हो? नीचे उतरो। तुम्हें उल्लू को अपनी सेहत का ख़्याल रखना चाहिये।"

निकीता बगीचे में चला गया और अपने पिता के कमरे की खिड़की के नीचे पड़ी बेंच पर बैठ गया। जल्द ही ज़ोर से दरवाज़ा बन्द होने की आवाज़ और यह सुनायी दिया कि कैसे अर्तामोनोव ने आक्रोश से भरी दबी-घुटी आवाज़ में पूछा –

"तुम क्या अपने को बरबाद करने पर तुले हो? मेरे मुंह पर कालिख पोतना चाहते हो? मार डालूगा ..."

अल्योशा ने चीखकर कहा –

"तुमने ही तो मेरे दिमाग़ में यह विचार भरा था।"

"चुप रहो! ख़ुदा का शुक्र करो कि वह बदमाश बोल नही सकता ..."

निकीता उठा और दबे क़दमों से जल्दी-जल्दी बगीचे के कोने में अपनी ग्रीष्म-कुटी की ओर चला गया।

अगली सुबह को चाय पीते समय बाप ने कहा –

"यह आग लगायी गयी थी। उस शराबी घड़ीसाज़ ने लगायी थी। उन्होंने उसकी बहुत बुरी तरह पिटायी की, लगता है शायद

बचेगा नहीं। लोग कहते हैं कि बास्कीं ने उसे तबाह किया था और स्तेपान के खिलाफ़ भी उसके मन में अदावत है। दाल में कुछ काला है।"

अल्योशा शान्त भाव से बैठा दूध पीता रहा। निकीता के हाथ कांप रहे थे। उसने उनको अपने घुटनों के बीच ज़ोर से दबा रखा था। बाप ने यह देखकर पूछा–

"तुम्हें क्या हो गया है?"

"मेरी तबीयत अच्छी नहीं है।"

"तुम सबकी तबीयत ख़राब है, सिर्फ़ मैं ही अच्छा हूं..."

चाय के गिलास को समाप्त किये बिना ही उसे ग़ुस्से से आगे सरकाकर वह उठकर चला गया।

अर्तामोनोव के कारोबार से सम्बन्ध रखनेवाले लोगों की संख्या तेज़ी से बढ़ती जा रही थी। मिल से दो किलोमीटर से कुछ अधिक दूर झाड़ियों से ढंकी टीलियों पर विरले फ़र-वृक्षों के बीच मज़दूरों के लिये छोटे-छोटे झोंपड़े बनाये गये थे, जिनमें न अहाते थे, न बाड़ें ही। दूर से देखने पर वे शहद की मक्खियों की छत्ता-पेटियो की तरह नज़र आते थे। एक उथले खड्ड के किनारे पर, जहां कभी किसी नदी का पाट था जिसका नाम भी अब लोग भूल चुके थे, अर्तामोनोव ने परिवार के बिना और छड़े-छांड मज़दूरो के लिये एक लम्बी बैरक बनवा दी। इस एकमंज़िली इमारत की छत पर तीन धुंआरे बने हुए थे और अन्दर की गर्मी को बाहर जाने से रोकने के लिये छोटी-छोटी खिड़कियां लगी हुई थी। खिड़कियों की शक्ल ऐसी थी कि यह जगह घोड़ों का अस्तबल दिखाई पड़ती थी। और मज़दूर इसे 'घोडो का महल' कहकर पुकारते भी थे।

इल्या अर्तामोनोव अधिक शोर मचाने और डींग मारनेवाला हो गया। लेकिन उसमें अमीरों जैसा घमण्ड नही आया – मज़दूरों के साथ वह सहज ही घुल-मिल जाता – उनकी शादियों में जाकर दावत खाता, उनके बच्चों का धर्म-पिता बन जाता और छुट्टी के दिन पुराने बुनकरों के पास बैठकर बातें करना उसे अच्छा लगता। उन्होंने उसे सुझाया कि वह किसानों को अरसे से न जोती-बोयी जानेवाली ज़मीन और जंगल की आग से जले हुए स्थानों पर सन बोने की सलाह दे। इसके नतीजे बहुत अच्छे निकले। पुराने बुनकर अपने विनम्र मालिक

की तारीफ़ के गीत गाते। वे समझते कि वह उनके जैसा ही एक साधारण किसान है, जिस पर बस भाग्य मुस्करा दिया है। वे नौजवानों को सलाह देते –

"कारोबार करना उससे सीखो!"

इधर इल्या अर्तामोनोव ने अपने बेटों से कहा –

"किसानों, मज़दूरों में शहरी लोगों से कहीं ज़्यादा समझ होती है। शहरी लोगों की हड्डियां कमज़ोर और उनके दिमाग़ उखड़े-पुखड़े होते है। शहरी आदमी लालची होता है, लेकिन हिम्मत से काम लेते डरता है। उसके सभी कार्य-कलाप छिछले और ढीले-ढाले होते हैं। शहर के लोग उचित-अनुचित का विचार नहीं करते, लेकिन किसान सचाई की हद से बाहर नही जाता और न वह इधर-उधर फुदकता-फिरता है। उसकी सचाई बहुत सरल है – भगवान, अनाज और ज़ार, बस। किसान अन्दर-बाहर सब ओर से सीधा-सरल होता है, उसका दामन थामे रहो। प्योत्र, तुम मज़दूरों के साथ रुखाई से पेश आते हो, सिर्फ़ काम-काज की बात करते हो, यह अच्छा नही है। ज़रूरत इस बात की भी है कि तुम उनके साथ इधर-उधर की बाते और हंसी-मज़ाक़ भी करो – खुशमिज़ाज आदमी की बाते ज़्यादा आसानी से समझ में आ जाती है।"

"मुझे हंसी-मज़ाक़ करना नही आता," प्योत्र ने आदत के मुताबिक अपना कान ऐंठते हुए कहा।

"नही आता, तो सीखो। एक मिनट का हंसी-मज़ाक़ घण्टे भर तक काम करने की स्फूर्त्ति देता है। लोगों के साथ अल्योशा का बर्ताव भी खास अच्छा नही है। यह उन पर ज़रूरत से ज़्यादा चिल्लाता है और मीन-मेख निकालता रहता है।"

"ये सारे के सारे लोग धोखेबाज़ और काहिल है," अल्योशा ने दबंगता से कहा।

अर्तामोनोव ने उसे कठोरता से फटकारा –

"तुम उनके बारे मे जानते ही क्या हो?" लेकिम वह अपनी दाढ़ी में ही मुस्करा दिया और उसने अपनी मुस्कान दाढ़ी पर हाथ रखकर छिपा ली ताकि वे देख न सकें। उसे इस बात की याद आ गयी कि क़ब्रिस्तान के मामले में अल्योशा ने शहर के लोगों के साथ कितने साहस और विवेक से तर्क-वितर्क किया था। द्र्योमोव नगर के लोगों

ने क़ब्रिस्तान में मिल के मज़दूरों को दफ़नाने से इन्कार कर दिया था और अन्त में हारकर अर्तामोनोव को अलदर वृक्षों के झुरमुटवाली ज़मीन के एक बड़े टुकड़े को पोम्यलोव से ख़रीदकर अपना अलग क़ब्रिस्तान बनाना पड़ा था।

"क़ब्रिस्तान," तीख़ोन व्यालोव निकीता के साथ पतले-पतले और कमज़ोर वृक्षों को काटते हुए रूसी भाषा के क़ब्रिस्तान के पर्यायवाची एक शब्द पोगोस्त' (निवास-स्थान) पर विचार कर रहा था। यह तो इस शब्द का सही उपयोग नही है। कहा तो जाता है इसे मेहमानख़ाना, लेकिन इसमें रहते है हमेशा को गहरी नीद सोनेवाले मुर्दे। निवास-स्थान तो हैं भवन और नगर।

निकीता जानता था कि व्यालोव अपने काम में निपुण है और वह अपने दुरूह और अप्रत्याशित वक्तव्यो की अपेक्षा अपने काम में अधिक तर्कसंगत दीखता है। अर्तामोनोव की तरह वह भी जल्दी से हर काम के न्यूनतम विरोध-बिन्दु को खोज लेता था, अपनी शक्ति को सहेजते हुए चालाकी और होशियारी से काम सर कर लेता है। लेकिन दोनो में एक फ़र्क़ भी बहुत साफ़ था। अर्तामोनोव हर काम में पूरे उत्साह से हाथ डालता, लेकिन व्यालोव के बारे में लगता, जैसे वह मन मारकर काम कर रहा हो, किसी पर कृपा कर रहा हो और ऐसे आदमी की तरह जो यह जानता है कि उसमें इससे कहीं अच्छा काम करने की क्षमता है। उसका बोलने का ढंग भी ऐसा ही होता— वह इने-गिने, कृपाभाव दिखाते, बड़े अर्थपूर्ण-से शब्दों में अपनी बात कहता जिनमें लापरवाही और इस चीज़ का पुट-सा रहता मानो कह रहा हो—

"मैं और भी बहुत कुछ जानता हू, और बहुत कुछ कह सकता हू।"

निकीता को उसके प्रत्येक शब्द में अस्पष्ट संकेत छिपे दिखाई देते जिससे उसके मन में इस व्यक्ति के प्रति बेचैनी से भरी भयमिश्रित जिज्ञासा और खीझ की भावना पैदा होती।

"तुम तो बहुत कुछ जानते हो," उसने व्यालोव से कहा। चौकीदार ने आराम के लहजे में उत्तर दिया—

"इसीलिये तो जीता हूं। अगर मैं बहुत कुछ जानता हूं तो इसमें कोई मुसीबत नही। मैं अपने लिये सब कुछ जानना चाहता हूं

और मैं जो कुछ जानता हूं, वह एक कंजूस की तिजोरी में ताले के अन्दर बन्द है। उसे कोई नहीं देख सकता, तुम चिंता मत करो..."

ऐसा नही लगता था कि लोग किसके बारे में क्या सोचते है, तीख़ोन इसमें कोई दिलचस्पी ज़ाहिर करता हो। वह तो बस अपनी चिड़ियों जैसी मिचमिचाती आखो से लोगो को घूरता रहता, मानो उनके सारे विचारों को पढ़ रहा हो और फिर अचानक कोई ऐसी बात कह देता जिसे उसे न जानना चाहिये। निकीता कभी-कभी यह चाहने लगता कि व्यालोव अपनी जीभ भी उसी तरह काट ले जिस तरह उसने अपनी उगली काट ली थी, यद्यपि यह काम भी उसने ढंग से नही किया था, यानी दाहिने हाथ के बजाय बाये हाथ की अनामिका काटी थी। अर्तामोनोव, प्योत्र और दूसरे सभी लोग व्यालोव को मूर्ख समझते थे। लेकिन निकीता को वह मूर्ख न लगता। चौडे चेहरेवाले इस विचित्र व्यक्ति के प्रति उसकी भयमिश्रित जिज्ञासा की भावना दृढ होती गयी। एक दिन जब वह और निकीता जगल से घर आ रहे थे, तो व्यालोव ने अचानक एक बात कही जिससे भय की यह भावना और भी अधिक तीव्र हो गयी। उसने कहा –

"तुम अन्दर ही अन्दर घुलते रहते हो। तुम बुढ्ढू उससे अपने दिल की बात कह क्यो नही देते? शायद उसे तुम पर दया आ जाये। वह दयालु लगती है।"

कुबडा यकायक जहा का तहा खडा रह गया। डर से उसका दिल बैठ गया और पाव एक-एक मन के भारी हो गये। वह चकराया-सा बडबड़ाया –

"क्या कह दूं, किससे कह दूं?"

व्यालोव उसकी ओर एक बार देखकर आगे बढ़ चला। निकीता ने उसकी आस्तीन पकड़ ली, लेकिन तीख़ोन ने उपेक्षा से उसकी बाह झटककर हटाते हुए कहा –

"ढोंग करने से क्या फ़ायदा?"

अपने कंधे से जगल मे खोदे गये बर्च के पेड़ को नीचे फेककर निकीता ने चारों ओर नज़र दौड़ाई। उसके जी में आया कि वह तीख़ोन के खुरदरे-से चेहरे पर एक तमाचा जड दे और उसकी ज़बान बन्द कर दे। लेकिन तीख़ोन ने अपनी आंखों को सिकोड़कर दूर क्षितिज की

ओर देखते हुए अपने स्वाभाविक, शान्त लहजे में कहा –

"और अगर वह दयालु नहीं भी तो कम से कम वैसा दिखावा तो करेगी। औरतें बड़ी जिज्ञासु होती हैं। कोई औरत ऐसी नही होती जो किसी दूसरे आदमी को चखना न चाहे, यह न देखना चाहे कि शक्कर से भी कोई मीठी चीज़ होती है या नहीं। जहां तक हम मर्दों की बात है, तो हमें बहुत नही चाहिये। मामला पटा और हम सन्तुष्ट तथा सुखी हो जाते है। लेकिन तुम घुलते जा रहे हो। अपनी किस्मत आज़माओ। उससे कह दो, कौन जाने वह राज़ी हो जाये।"

निकीता को इन शब्दों मे जीवन में पहली बार एक दोस्त की सहानुभूति की अनुभूति हुई, उसने गले में कडवाहट-सी अनुभव की, पर साथ ही उसे लगा जैसे तीख़ोन उसको नगा कर रहा है।

"तुम व्यर्थ की बकवास कर रहे हो," उसने कहा।

लोगों को शाम की प्रार्थना को बुलाने के लिये गिरजे के घटे बज रहे थे। तीख़ोन ने अपने कधे पर रखे पेडो के बोझ को एक बार संभाला और अपने फावड़े से ज़मीन पर टेक देता हुआ आगे बढ़ता तथा शान्त स्वर मे कहता गया –

"मुझसे डरो मत। मुझे तुम्हारे साथ पूरी सहानुभूति है। तुम भले और दिलचस्प आदमी हो। तुम्ही क्या, अर्तामोनोव परिवार के सभी लोग बेहद दिलचस्प हो. तुम्हारा स्वभाव भी कुबडे जैसा नही है, बेशक तुम कुबड़े हो।"

तीव्र होते दुख की गर्मी में निकीता का भय घुल गया। उसकी आंखों मे धुन्ध-सी छा गयी और वह एक शराबी की तरह लडखड़ाने लगा, उसका मन हुआ कि ज़मीन पर लेटकर आराम करे। उसने धीरे से अनुरोध किया –

"तुम इस बात के बारे में मुंह नही खोलना।"

"कह तो चुका हूं – जैसे तिजोरी मे बन्द है।"

"इस बात को भूल जाओ। नतालिया से कुछ न कहना।"

"मैं तो उससे बात ही नही करता. मुझे उससे बात करके लेना ही क्या है?"

बाक़ी रास्ते वे चुपचाप चलते आये। कुबडे की नीली आंखें मानो अधिक बड़ी-बडी, गोल-गोल और उदास-उदास हो गयी थी। वह लोगों के कंधों के ऊपर से और आख चुराता हुआ-सा देखता तथा अधिक

खामोश रहने लगा, अपने में अधिक सिमट गया। लेकिन नतालिया ने इसे भांप लिया।

"इधर कुछ दिनों से तुम उदास-उदास क्यों रहते हो?" उसने पूछा। निकीता ने उत्तर दिया–

"काम बहुत अधिक है," और वहां से फ़ौरन चलता बना। नतालिया के दिल को चोट-सी लगी। उसने पहली बार यह अनुभव नही किया था कि उसके प्रति देवर के स्नेह में कमी आ गयी है। उसकी ज़िन्दगी भी एकरस और उदास थी। चार वर्षो मे उसके दो और लडकियां हुई थी और अब फिर उसके पैर भारी हो रहे थे।

"तुम्हारे लड़किया ही क्यो होती है? उनसे क्या फायदा?" दूसरी लडकी के पैदा होने पर उसके ससुर ने बडबड़ाते हुए कहा था। उसने उसको कोई उपहार नही दिया और प्योत्र से कहा–

"मुझे पोते चाहिये, दामाद नही! मैने अपना कारोबार क्या पराये लोगों के लिए शुरू किया है?"

उसके प्रत्येक शब्द से नतालिया अपने को अपराधी-सी अनुभव करने लगती। वह जानती थी कि उसका पति भी उससे नाखुश है। रात को उसके साथ लेटे हुए और खिड़की से बाहर दूर के सितारों पर आंखे जमाये वह अपने पेट को सहलाती हुई मन ही मन प्रार्थना करती–

"हे भगवान, एक बेटा दो "

लेकिन कभी-कभी उसका मन होता कि वह अपने पति और ससुर से झल्लाकर कहे–

"मै जान-बूझकर, तुम लोगो का मुह चिढ़ाने के लिये ही लड़कियों को जन्म दूगी!"

उसकी इच्छा होती कि वह कोई असाधारण काम कर डाले। कोई ऐसा काम, जिस पर सारे के सारे लोग आश्चर्यचकित रह जायें– कोई ऐसी अद्भुत चीज़ जिससे ये लोग उससे अधिक स्नेह करने लगें या फिर वह कोई ऐसा बुरा काम कर डाले जिससे ये लोग डर जायें। किन्तु वह किसी अच्छी या बुरी बात की कल्पना ही न कर पाती।

पौ फटते ही वह उठकर रसोईघर में चली जाती और नाश्ता बनाने में बावरचिन की मदद करती, फिर बच्चियों को खिलाने-पिलाने

के लिये ऊपर भागती, इसके बाद ससुर, पति और देवरों को चाय देती, फिर से बच्चियों को खिलाती-पिलाती, कपड़े सीती-सिलाती या उनकी मरम्मत करती, दोपहर के भोजन के बाद बच्चियों को लेकर बगीचे में चली जाती और शाम की चाय का वक़्त होने तक वही बैठी रहती। मिल में काम करनेवाली दबंग लड़कियां बगीचे में झांक-झांककर देखतीं और इन बच्चियों की सुन्दरता की तारीफ़ करती। नतालिया मुस्करा देती, लेकिन उनकी तारीफ़ का यक़ीन न करती। उसे अपनी बच्चियां सुन्दर न लगती।

कभी-कभी पेड़ों के बीच उसे निकीता की झलक मिल जाती। घर में अकेला वही था, जो उसके साथ स्नेहपूर्वक पेश आता था। लेकिन आजकल जब कभी वह उससे अपने पास बैठने का आग्रह करती, तो वह एक अपराधी की भांति उत्तर देता –

"माफ़ी चाहता हूं, मुझे फ़ुरसत नही है।"

नतालिया के मन में अनजाने ही एक कटु विचार बनता जा रहा था। उसे लगता कि कुबड़े का सारा स्नेह बनावटी था। उसे तो केवल उसके पति ने उस पर और अल्योशा पर जासूस की नज़र रखने को तैनात किया था। वह अल्योशा से डरती थी, क्योंकि वह उसे अच्छा लगता था। वह जानती थी कि उसका यह सुन्दर देवर अगर कभी उसे पाना चाहेगा, तो वह इन्कार नही कर पायेगी। लेकिन उसने ऐसा चाहा ही नही था। इतना ही नही, वह उसको नजर भरकर देखता भी नही था। इससे उसके दिल को ठेस लगती थी और यह चीज़ उसके अन्दर अपने इस साहसी और निडर देवर के प्रति एक वैमनस्य की भावना पैदा करती थी।

शाम को पाच बजे चाय पी जाती और रात के आठ बजे खाना खाया जाता। इसके बाद नतालिया बच्चियों को नहलाती, उन्हे खिलाती-पिलाती, घुटनों के बल होकर प्रार्थना करती और फिर यह आशा लेकर अपने पति के पास जा लेटती कि वह एक पुत्र को जन्म दे सकेगी। उसके पति को जब उसकी ज़रूरत महसूस होती, तब वह बिस्तर से ही बड़बड़ाता –

"बस, बहुत हो गया, अब आ जाओ।"

वह जल्दी से प्रार्थना को बीच में ही छोड़कर अपने ऊपर क्रॉस का चिह्न बनाती और आज्ञाकारी की तरह आकर पति के निकट

लेट जाती। कभी-कभी, पर बहुत कम ही, प्योत्र उससे मज़ाक़ करता –

"तुम इतनी प्रार्थना क्यों करती हो? तुम जो कुछ मांगती हो, वह सब तो मिल नही सकता, तब बाक़ी दुनिया के लिये काफ़ी न बचेगा।"

रात को किसी बच्ची के रोने के कारण जाग जाने पर वह उसे दूध पिलाकर तथा फिर से सुलाने के बाद खिड़की के पास जाकर खड़ी हो जाती और बाहर बगीचे और आसमान की ओर देखती रहती, अपने बारे में, अपनी मा, ससुर और पति तथा बीत जानेवाले कठिन दिन के बारे में चुपचाप सोचती रहती। काम करनेवाली लड़कियों के कभी उल्लास, कभी विषाद-भरे गीत और मिल से आनेवाली दूसरी खट-खट और घर्र-घर्र की आवाज़ें, जो सब मिलकर मधुमक्खी के एक विशाल छत्ते की ऊंची भिनभिनाहट-सी बन जाती थी, इस सारे शोर-गुल को इस समय न सुन पाना, जिसे सुनने के उसके कान आदी हो चुके थे, कुछ अजब-सा लगता। यह दौड-धूप और शोर-गुल, दिन भर लगातार बना रहता। इसकी प्रतिध्वनिया कमरों में गूंजती, बगीचे के झुरमुटो में मरमर-मरमर करती और खिडकी के शीशों को प्यार से सहलाती। काम का शोर-शराबा, जो अपनी ओर ध्यान खीच लेता, सोचने में बाधा डालता।

लेकिन रात के सन्नाटे मे, जब समस्त प्राणि-जगत निद्रा की गोद में चुपचाप पड़ा सोता होता, वह तातारो द्वारा बन्दी बनायी गयी औरतो की उन भयानक कहानियों और सन्त-साधुओ और शहीदो की जीवनियो को याद करती जो निकीता ने उसे सुनायी थी। कभी-कभी वह सुखी और उल्लासपूर्ण जीवन की कहानियो का स्मरण करती, परन्तु बहुधा उसकी स्मृति में बार-बार करुण विचार ही आते।

उसका ससुर उसकी ओर से ऐसे रहता, जैसे वह वहां हो ही नही। यह तो फिर भी खैरियत थी। लेकिन यदि कभी किसी कमरे या ड्योढी में वह अकेली उसके सामने आ जाती तो वह बड़ी निर्लज्जता से उसे ऊपर से नीचे तक, वक्ष के उभार से लेकर घुटनों तक तीखी नज़र से घूरकर देखता और घृणा प्रगट कर देता।

पति रुखाई और उदासीनता का व्यवहार करता, कभी-कभी उसे ऐसा लगता मानो वह उसके मार्ग में आ रही हो, अपने पीछे रखी किसी चीज़ की ओर देखने में बाधा बन रही हो। अक्सर वह रात

को कपड़े बदलने के बाद लेटने के बजाय एक हाथ रोयों की रज़ाई में डाले और दूसरे हाथ से अपने कान की ललरी को इस तरह ऐंठता या अपने गाल पर दाढ़ी को इस तरह मलता हुआ पलंग के सिरे पर देर तक ऐसे बैठा रहता, मानो उसके दांत में दर्द हो रहा हो। उसका भद्दा चेहरा कभी व्यथा और कभी क्रोध से विकृत हो जाता और ऐसे क्षणों में नतालिया को बिस्तर के निकट तक जाने का साहस न होता। वह बहुत कम और सो भी घरेलू मामलों के बारे में ही बातचीत करता, किसानो और जमींदारों के जीवन की उन स्मृतियो को कभी-कभार ही दोहराता जो नतालिया की समझ के एकदम बाहर थी। सर्दियों में पर्व के दिनों, श्रोवटाइड और दूसरे धार्मिक पर्वों के अवसर पर वह उसे स्लेज-गाड़ी में बिठाकर नगर में घुमाता। गाडी में एक मोटा-ताज़ा मुश्की घोड़ा जुता होता। घोडे की आंखें पीलापन लिये रक्तिम-सी थीं और वह जैसे क्रोध-भरे दर्प से अपना सिर झटकारता और ज़ोर से नथने फरफराता। नतालिया को इस जानवर से डर लगता था और उसका डर उस समय और भी बढ़ गया, जब तीखोन व्यालोव ने कहा –

"यह तो बड़े आदमियों का घोडा है, दूसरो के काबू का नही है।"

नतालिया की मां अक्सर आती। बेटी को अपनी मा का स्वच्छन्द जीवन और उसकी आंखों में रहनेवाली उन्माद-भरी खुशी की चमक से ईर्ष्या होती। यह ईर्ष्या उस समय और भी तीव्र और पीड़ाजनक हो जाती, जब नतालिया देखती कि अर्तामोनोव कैसे जवानों जैसे उत्साह से उसकी मां के साथ हंसी-मज़ाक करता है और कैसे आत्मतुष्ट होकर अपनी प्रेमिका को मुग्ध भाव से देखते हुए अपनी दाढ़ी सहलाता है और उसकी मां अर्तामोनोव के सामने गर्व से अपने नितम्बो को मट-काती और निर्लज्जता से अपने सौन्दर्य का प्रदर्शन करती हुई मोरनी की तरह चलती। नगरवालों को बहुत पहले ही अर्तामोनोव के साथ बैमाकोवा के इस प्रणय-सम्बन्ध का पता चल गया था और उन्होंने कड़े शब्दों में इसकी निन्दा की थी। सब लोग अब उससे कन्नी काटते थे। नतालिया की पुरानी सहेलियां भी, जो नगर के उच्च परिवारो की बेटियां थीं, अब उससे विमुख हो गयीं। उनके मां-बाप ने उन्हें बदचलन स्त्री की बेटी और एक अजनबी तथा उजड्डु किसान की बहू

तथा घमंडी और अक्खड़ पति की पत्नी से मिलने-जुलने से मना कर दिया था। नतालिया को अब विवाह के पहले के अपने जीवन की छोटी-मोटी खुशियां भी अधिक सारपूर्ण और सजीव प्रतीत होती थी।

अपनी मां को, जिसके व्यवहार मे पहले हमेशा निश्छलता-निष्कपटता होती थी, अब चालाकी और बहानेबाज़ी से काम लेते देखकर उसको दुःख होता। उसे लगता जैसे उसकी मा प्योत्र से डरती है और इस डर को छिपाने के लिये उसकी लल्लो-चप्पो करती है, उसकी निपुणता की तारीफ़ करती है। उसे अल्योशा की व्यंग-भरी आंखों मे भी डर लगता था। वह दोस्ताना, हंसी-मज़ाक़ और रहस्यमय ढंग से उसके साथ कानाफूसी करती रहती और अक्सर उसे उपहार देती रहती। उसके नामदिवस के पर्व पर वह उसके लिये पोर्सलेन की एक घडी लायी जिस पर भेड़ों और फूलो से सजी एक युवती की आकृति बनी थी। बहुत सुन्दर और अत्यन्त कलात्मक ढग से बनायी गयी इस चीज़ को देखकर सभी दग रह गये।

"यह किसी ने मेरे पास गिरवी रखी थी," उसने बताया। "बस, तीन रूबल के बदले मे। पुरानी है और अब चलती नही। अल्योशा के शादी करने पर उसका घर सजाने के काम आ सकेगी . ."

"मैं भी इससे अपना घर सजा सकती थी," नतालिया ने सोचा।

मा घरेलू मामलो के बारे मे तफसील से पूछ-ताछ करती और नीरसता से सीख भी देती।

"हर रोज़ मेज़ पर नेपकिन मत रखा करो। मर्द लोग उनसे दाढ़ी-मूंछें पोछकर उन्हे फौरन गन्दा कर देते है।"

निकीता को देखते ही, जो पहले उसे अच्छा लगता था, वह अब मुंह बना लेती और उससे उस कारिन्दे की तरह बात करती जिस पर बेईमानी का सन्देह हो और अपनी बेटी को सावधान करते हुए कहती –

"देखो, तुम उसके साथ ज़्यादा हेलमेल नही रखो। कुबड़े बड़े चालाक होते है।"

नतालिया ने कई बार अपनी मा से यह शिकायत करनी चाही कि उसका पति उस पर विश्वास नही करता और उसने कुबड़े को उस पर जासूसी करने के लिये तैनात कर रखा है। लेकिन कोई न कोई

ऐसी बात हो जाती कि वह यह न कह पाती।

और सबसे बुरा तो तब लगता जब पुत्र न होने के कारण परेशान उसकी मां भी शर्म छोड़कर अपनी नम आंखों को सिकोड़ते और मुस्कराते हुए कोमल, मन्द स्वर में उससे रात को अपने पति के साथ सोने के बारे में बिल्कुल साफ़ शब्दों में ही तरह-तरह के प्रश्न पूछने लगती। मां की यह जिज्ञासा बड़ी अखरती और ऐसे समय नतालिया को अपने ससुर की यह आवाज़ सुनकर बड़ी ख़ुशी होती –

"समधिन, क्या गाड़ी से वापस जाओगी?"

"मैं पैदल जाना अधिक पसन्द करूंगी।"

"अच्छी बात है। तो मैं तुम्हें घर तक छोड़ आता हूं।"

ऐसे ही एक मौक़े पर नतालिया के पति ने सोचते हुए कहा –

"तुम्हारी मां बहुत होशियार औरत है। मेरे पिता को अपनी मुट्ठी में रखती है। वह जब यहां होती है, तब हमारे प्रति पिता का व्यवहार उतना कठोर नहीं होता। अच्छा हो कि तुम्हारी मां अपना घर बेचकर यही आ जाये।"

"मैं यह नही चाहती," नतालिया ने कहना चाहा, लेकिन उसका साहस नही हुआ। मां के सुखी और किसी की प्रेमपात्री होने के कारण वह उससे पहले से कही अधिक उखड़ी-उखडी रहने लगी थी।

अपने हाथ में सिलाई लेकर बगीचे की ओर खुलनेवाली खिडकी के पास, या फिर बगीचे में बैठे हुए वह झाड़ियो के परे स्नानघर के निकट तीखोन और निकीता की बातचीत सुनती रहती। कारख़ाने के धीमे शोर के बीच चौकीदार का शान्त स्वर सुनायी देता।

"लोगों की बहुतायत से ही परेशानी पैदा होती है। सब एक जगह इकट्ठे हो जाते है और उनकी रेल-पेल से ही सब परेशान हो उठते हैं!"

"कितनी सच्ची बात है!" नतालिया ने सोचा। लेकिन निकीता ने अपने मधुर स्वर में प्रतिवाद किया –

"तुम बेतुकी बात कह रहे हो। खेल-तमाशे और नाच-गाने का क्या होगा? लोगो के बिना तो हंसी और मनोरंजन ही असम्भव हो जायेगा।"

"बात तो यह भी सही है," नतालिया आश्चर्य करते हुए मन ही मन सहमत हो गयी।

अपने इर्द-गिर्द के सभी लोगों को वह बड़े विश्वास से बात करते देखती, सभी कुछ न कुछ जानते थे। वह देखती कि कैसे दृढ़ और सरल शब्द आपस में जुड़े रहकर हर आदमी के लिए मानो दृढ़ सत्य को व्यक्त करने के हेतु घेरे का काम देते है। अलग-अलग लोगों की विशेषताएं उनके शब्दों से ही निर्धारित की जाती हैं। लोग अपने को शब्दों से विभूषित करते है और घड़ी की सोने या चांदी की ज़ंजीर की तरह उनको खनकाते रहते है। पर नतालिया के पास ऐसे शब्द नही थे, उसके पास अपने विचारों को आच्छादित करने के लिये कुछ न था। पतझर के धोखा देनेवाले और धुध-भरे कोहरे की भांति उसके विचार भी उसे केवल परेशान करते थे और उसकी वृत्तियों को मन्द बना देते थे। वह बार-बार आत्म-ग्लानि और दुराशा से भरकर सोचती –

"मै निरी मूर्ख हूं, न कुछ जानती हूं, न कुछ समझती हूं..."

"मतलब यह है कि भालू भी जानकार होता है। वह जानता है कि शहद कहा मिलेगा," तीख़ोन ने रसभरी की झाड़ियों मे से बुदबुदाते हुए कहा।

"बिल्कुल ठीक बात है!" नतालिया ने सोचा। कांपते हुए उसे याद आयी कि कैसे अल्योशा ने उसके पालतू जानवर को मार डाला था। तेरह महीनें की उमर तक तो भालू का वह बच्चा आंगन में एक पालतू और स्नेही कुत्ते की तरह खेलता-कूदता रहा था। वह रसोईघर में घुस आता था और अपनी पिछली टागो के बल बैठकर मन्द-मन्द गुर्राता और प्यारी नन्ही-नन्ही आखो को झपकाते हुए रोटी मांगता था – ऐसा हास्यास्पद, दयालु और दयालुता को समझनेवाला जीव था वह। सब लोग उसे प्यार करते थे। निकीता उसके घने गुच्छेदार बालो में कघी करता और उसे नहलाने के लिये नदी पर ले जाता। रीछ का यह बच्चा निकीता से इतना हिल-मिल गया था कि जब कभी निकीता घर पर न होता तो वह व्याकुल होकर अपनी थूथनी ऊपर को उठाये हुए हवा को सूंघता फिरता और गुर्राते हुए आगन पार करके उसके दफ्तर की खिड़की पर झपटता। उसने कई बार खिड़की के शीशे और यहां तक कि खिड़की का चौखटा भी तोड़ डाला था। नतालिया उसे सफ़ेद रोटी और शीरा खिलाया करती थी। कुछ ही दिनों में उसने अपने आप शीरे की कटोरी में रोटी डुबो-डुबोकर खाना सीख

लिया था। खुशी से हुंकार भरते और अपनी पिछली बालदार टांगों पर दायें-बायें हिलते-डुलते हुए वह शीरे में डूबी रोटी को अपने गुलाबी और तेज़ दांतोंवाले मुंह में ठूंस लेता और फिर अपने चिपचिपे तथा मीठे पंजे को चाटता रहता। उसकी नन्ही-नन्ही, भोली-भाली आखें खुशी से चमकती रहती और वह नतालिया के घुटनों पर अपना सिर रगड़कर उससे अपने साथ खेलने का आग्रह करता। इस प्यारे-से जन्तु से बातचीत भी की जा सकती थी – वह कुछ न कुछ तो समझता ही था।

लेकिन एक दिन अल्योशा ने उसे थोड़ी-सी वोद्का पिला दी। मदोन्मत्त होकर रीछ लोटने-पोटने और उछलने-कूदने लगा। वह स्नान-गृह की छत पर चढ़ गया और चिमनी तोड़कर उसकी एक-एक ईंट नीचे फेंकने लगा। इस जानवर के खिलवाड़ पर मज़दूरों की भीड़ जमा हो गयी और ठहाके लगाने लगी। उस दिन के बाद लोगों के मनोरंजन के लिये अल्योशा रीछ को हर पर्व-त्योहार पर शराब पिलाता। इस जानवर को नशे की ऐसी आदत पड गयी कि अगर किसी मज़दूर से वोद्का की तनिक गन्ध भी आ जाती तो वह उसका पीछा न छोड़-ता, और अल्योशा को तो एक क्षण को भी चैन न लेने देता। वह जब-जब आंगन में मे निकलता, रीछ एक झपाटे में उसके पास जा पहुचता। उसे ज़ंजीर से बांध दिया गया, लेकिन उसने अपना बाडा तोड़-फोड़ डाला, और वह दायें-बायें अपनी सिर और पंजे हिलाता और जंजीर बंधे खूंटे को अपने साथ खींचता हुआ अहाते मे चक्कर काटने लगा। उसे पकड़ने की कोशिश की गयी। उसने तीख़ोन की टांग खरोंच ली, मोरोज़ोव नाम के एक युवा मज़दूर को पटक दिया और ज़ोर से पंजा मारकर निकीता की जांघ घायल कर दी। इस पर अल्योशा भाला उठाकर दौड़ा उसके पेट में झोंक दिया। नतालिया ने खिड़की मे से देखा कि कैसे रीछ पिछली टांगों पर बैठ गया और अगले पंजे हिलाने-डुलाने लगा मानो अपने इर्द-गिर्द गुस्से से चिल्लाते हुए लोगों से माफ़ी माग रहा हो। किसी ने बड़ी तत्परता से अल्योशा के हाथ मे एक तेज़ कुल्हाड़ी पकडा दी और नुकीली दाढ़ी-वाले देवर ने उछल-उछलकर पहले एक और फिर भालू के दूसरे पंजे पर कुल्हाड़ी से वार किया। ज़ोर से दहाड़कर रीछ अपने ज़ख्मी पंजों के बल गिर पड़ा। दाएं-बाएं चारों ओर खून के फव्वारे बह

निकले और कड़ी धरती पर गहरे लाल धब्बे पड़ते गये। एक दयनीय गुर्राहट के साथ रीछ ने अपना सिर नीचे झुका दिया, मानो नये वार की प्रतीक्षा कर रहा हो। तब अल्योशा ने मज़बूती से अपने दोनों पांव जमाकर रीछ की खोपड़ी पर कुल्हाड़ी से इस तरह वार किया, मानो वह लकड़ी का कुन्दा हो। जानवर की थूथनी अपने ही रक्त के कुण्ड मे डूब गयी। कुल्हाड़ी हड्डियो में इतनी गहरी गड गयी थी कि अल्योशा को उसके बालदार शव पर पाव जमाकर अपनी पूरी ताक़त से उसे बाहर निकालना पड़ा था। रीछ के लिये बहुत अफ़सोस हुआ था। रीछवाली घटना बहुत अप्रिय थी। लेकिन इससे भी ज्यादा अप्रिय यह बात थी कि उसका यह खुशमिज़ाज, निडर, चुस्त-फुरतीला और नटखट देवर किसी ऐरी-ग़ैरी लडकी के साथ तो घूमता-फिरता था, और उसकी तरफ – नतालिया की तरफ़ – ज़रा भी ध्यान नहीं देता था।

हर किसी ने अल्योशा को उसके साहस और कौशल के लिये बधाई दी। बाप ने उसके कन्धो को थपथपाते हुए चिल्लाकर कहा –

"और तुम कहते हो कि बीमार हो, कामचोर कही के!"

निकीता आगन में से उठकर भाग गया और नतालिया ऐसे फूट-फूटकर रोती रही कि उसके पति ने खीझ-भरे आश्चर्य से डांटकर पूछा –

"मान लो कि तुम्हारे सामने ही आदमी की हत्या हो जाये, तब तुम क्या करोगी?"

वह उस पर इस तरह चिल्लाया, जैसे कि वह निरी बच्ची हो –

"रोना बन्द कर, बेवक़ूफ़!"

नतालिया को लगा कि वह उसकी पिटाई कर डालेगा। अपने आसुओ को आखो मे ही पीते हुए उसने अपने सुहाग की पहली रात की याद की – वह कितने मृदु स्नेह से भरा था, कितना सहमा-सहमा-सा। उसे याद आया कि अन्य पतियो की तरह उसने आज तक उस पर कभी हाथ नही उठाया था और अपनी सुबकियों को दबाते हुए कहा –

"मुझे माफ़ कर दो, बहुत अफ़सोस हो रहा है रीछ के लिये।"

"तुम्हें रीछ के लिये नही, मेरे लिये अफ़सोस होना चाहिये," उसने कुछ नरम पड़ते हुए कहा।

16-1176

उसे याद आया कि जब उसने पहली बार अपने पति की कठोरता के बारे में अपनी मां से शिकायत की थी, तो मां ने कहा था –

"मर्द – मधु-मक्खियां हैं और उनके लिये हम फूल हैं। वे हमारे पास मधु लेने आते हैं। तुम्हें यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये और इसे बरदाश्त करना सीखना होगा। आदमी सब चीज़ो के मालिक है। उनकी चिन्ताएं भी हमसे अधिक हैं। वे गिरजे भी बनाते हैं, कारखाने भी। यही देखो, तुम्हारे ससुर ने जहा कुछ नही था, वहां क्या बनाकर खड़ा कर दिया है..."

इल्या अर्तामोनोव दिन-दूने रात चौगुने उत्साह से अपना कारोबार बढ़ाने और उसे जमाने में लगा रहा। उसे जैसे पूर्वानुभूति हो रही थी कि उसके दिन गिने-गिनाये रह गये है। सन्त निकोला के दिन से कुछ पहले ही मई महीने में मिल के दूसरे ब्लॉक के लिये बॉयलर पहुंच गया था। जिस बजरे पर इसे लाया गया था, उसने ओका नदी के बलुए तट पर उस जगह लंगर डाला था, जहा वतरक्षा की हरी दल-दली धारा उसमें आकर मिलती है। आगे का काम ज़्यादा मुश्किल था। बॉयलर को उतारकर बलुआ भूमि पर से खीचते हुए लगभग तीन सौ पचास गज़ तक ले जाना था। सन्त निकोला के दिन अर्तामोनोव ने अपने मजदूरों को एक शानदार प्रीतिभोज दिया था, जिसमें वोद्का और बियर छककर पिलायी थी। आंगन में मेज़े लगायी गयी थी। औरतों ने उन्हें देवदार और बर्च की टहनियों और बसन्त के पहले फूलो के गुच्छो से सजाया था और स्वयं भी फूलों की तरह रग-बिरंगी पोशाकों में सज-धंजकर आयी थी। अपने परिवार और थोडे-से बुलाये हुए मेहमानो के साथ मिल का मालिक अनुभवी बुनकरो के बीच बैठा, मुंहफट मज़दूरिनों के साथ हसी-मज़ाक़ और खूब पीकर बड़े कौशल से मेहमानों का मनोरंजन करता रहा। उसने अपनी पकी, सफ़ेद दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए उल्लास से चिल्लाकर कहा –

"ओह दोस्तो! यह ज़िन्दगी ही असली मौज है!"

वह जानता था कि लोग उसकी प्रशंसा करते है। वह जैसा कुछ था, वैसा होने की खुशी से ही उसका नशा बढ़ता गया। बसन्त ऋतु के इस धूप खिले दिन की तरह, इस सारी धरती की तरह, जो नयी घास की हरियाली और वृक्षों के छायादार पत्तों से सजी थी तथा उन भोज-पत्रों और चीड़ के पौधों के श्वास से सुरभित थी, जो अपनी

स्वर्णिम नोकें नीले-पीले आकाश की ओर उठाये थे, इन सब की तरह वह भी चमक और खिलखिला रहा था। उस वर्ष बसन्त ऋतु समय से पहले ही आ गयी थी और बकाइन और बर्डचेरी के पेड़ बौरा चुके थे। सारी दुनिया हर्षोल्लास से ओत-प्रोत होकर मानो उत्सव मना रही थी। मनुष्यों के हृदयों में भी, जो कुछ भी उत्तम था, वह इस समय फूल-सा फूट पड़ना चाहता था।

नाटे क़द का दुबला-पतला, बूढ़ा बुनकर बोरिस मोरोज़ोव उठ खड़ा हुआ। वह नहलाई-धुलाई लाश की तरह सफेद दिखायी देता था, उसका छोटा-सा मोम का-सा मुंह बड़े आराम से सफ़ेद दाढ़ी में, जो उमर के साथ हरी पड़ती जा रही थी, छिपा हुआ था। अपने सबसे बड़े बेटे के कन्धे पर झुकते हुए, जो लगभग साठ वर्ष का था – वह पूरे उत्साह के साथ अपने मांसहीन, हड़ियल हाथ को हिलाते हुए चिल्लाया –

"देखो, मैं नब्बे साल का बूढ़ा हूं, नब्बे से भी कुछ ज़्यादा! मैं एक फौजी था – पुगाचोव से लडा था और फिर मैंने खुद भी बग़ावत की थी। हां मच, मास्को में प्लेग फैलने के साल! नेपोलियन के ख़िलाफ़ लड़ा था..."

"और किस-किसको अपने सीने से लगाया था?" अर्तामोनोव ने उसके कान के पास ज़ोर से चिल्लाकर पूछा। बुनकर ऊंचा सुनता था।

"औरों के सिवा अपनी दो बीवियो को। देखो, सात बेटे, दो बेटिया, उन्नीस नाती-पोते, पांच परपोते – यह सब मेरी कारगुज़ारी है! वे रहे ये सब, तुम्हारे यहां ही रहते है, वे बैठे है..."

"इनकी संख्या कुछ और बढ़ाओ!" इल्या ने चिल्लाकर कहा।

"हां-हां, बढ़ेंगे। मेरी ज़िन्दगी मे तीन ज़ार और एक ज़ारीना हो चुके है! जितने मालिकों के लिये मैंने काम किया, वे सब के सब मर चुके है, मगर मैं ज़िन्दा हूं! मैंने मीलों लम्बा कपड़ा बुना है। इल्या, तुम खरे और ठोस आदमी हो। तुम बहुत दिनों जियोगे। तुम सही क़िस्म के मालिक हो, अपने काम को प्यार करते हो और काम तुम्हें भी। लोगों का दिल नही दुखाते हो। तुम तो हमारे ही पेड़ की एक डाल हो, इसलिये खूब चमको! सफलता तुम्हारी असली जोरू है, कुछ देर की प्रेमिका नही जो थोड़ा मन बहलाये और फिर चलती

बने! खूब फलो-फूलो! तुम्हारा भला हो, भला हो, मेरे भाई ..."

अर्तामोनोव ने इस बुड्ढे को अपनी बांहों में उठाकर चूम लिया और भावावेश से चिल्लाते हुए कहा –

"शुक्रिया, बच्चे, शुक्रिया! मैं तुम्हें अपना मैनेजर बनाऊंगा ..."

लोगों के हो-हल्ले और हंसी-ठट्ठे के बीच शराब के नशे में चूर और अर्तामोनोव द्वारा ऊंचे उठाये गये इस बूढ़े बुनकर ने अपने ठठरीदार बांहों को हवा में लहराते हुए ऊंची, तीखी आवाज़ में कहा –

"इस आदमी का हर चीज़ के लिये अपना ही ढंग है, बिल्कुल अपना ढंग ..."

उल्याना बैमाकोवा ने किमी तरह की शर्म-लाज के बिना अपने गालों पर से खुशी के आंसू पोंछ लिये।

"कितनी खुशी हो रही है," उसकी बेटी ने कहा। बैमाकोवा ने आंसू पोंछते हुए उत्तर दिया –

"यह आदमी ही ऐसा है, भगवान ने उसे खुशी के लिये ही पैदा किया है ..."

"लड़को, लोगों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये, यह सीखो," अर्तामोनोव ने चिल्लाकर अपने बेटों से कहा। "प्योत्र, ध्यान दो!"

खाने के बाद जब मेज़ें हटा दी गयीं, तो औरतों ने गाना शुरू किया। दूसरी तरफ़ पुरुष कुश्ती और ज़ोर आज़माई के खेलों में लग गये। अर्तामोनोव हर जगह पहुंचता – नाचनेवालों के साथ नाचता और कुश्ती लड़नेवालों के साथ कुश्ती लड़ता। वे लोग पौ फटने तक आनन्द मनाते रहे और सूरज की पहली किरणों के आते ही कोई सत्तर मज़दूरों का एक जत्था, जिसके आगे-आगे उसका मालिक चल रहा था, शोर-गुल मचाता नदी के किनारे की ओर चल पड़ा, जैसे कोई लुटेरों का दल डाका डालने जा रहा हो। नशे में धुत्त लोग सीटियां बजा रहे थे, गाने गा रहे थे। अपने कन्धो पर वे मोटे-मोटे रोलर, बलूत की ढेंकलियां और रस्सों के भारी-भारी लच्छे उठाये हुए थे। और वह बूढ़ा बुनकर सबके पीछे बालू पर फुदक-फुदककर चलता हुआ निकीता से बुदबुदाता जाता था –

"वह अपना मनचाहा काम करवा लेगा! मैं जानता हूं, मैं उसे जानता हूं ..."

लोग बॉयलर को बजरे से सही-सलामत उतारकर नदी के किनारे ले आये। यह लाल दानव सिर कटे बैल जैसा दिखायी देता था। उन्होंने उसे चारों ओर से रस्सों से कस दिया और सभी मिलकर पूरा ज़ोर लगाते हुए उसे रोलरो के सहारे लट्ठों पर बालू पर बिछे तख़्तों पर सरकाने लगे। आगे की ओर घिसटता हुआ यह बॉयलर हिलकोरे खाता चलता और निकीता को लगता कि इसका मूर्खतापूर्ण, गोल मुख लोगों की उत्साह-भरी शक्ति पर मानो आश्चर्य से मुह बा रहा हो। शराब के नशे में चूर निकीता का बाप भी औरों के साथ ही उसे धकेल रहा था और उत्तेजना से चिल्ला रहा था –

"संभालकर, अरे, ज़रा संभालकर!"

लोहे के इस दानव की लाल छाती को थपथपाते हुए वह आग्रह-पूर्वक कहता जाता था –

"चल रे, बॉयलर, आगे चल!"

ये लोग मिल से अभी कोई सौ गज़ इधर थे कि बॉयलर ने ज़ोर के हिलकोरे खाये और अगले रोलर से हटकर धीरे-धीरे एक ओर बालू मे अपना मुह गड़ाकर धस गया। निकीता ने देखा कि उसके गोल मुंह से भूरी-सी धूल उडकर उसके बाप के पांवों पर जा गिरी थी। लोग इस भारी-भरकम देह के चारों ओर जमा होकर गुस्से से उफनते हुए उसके नीचे रोलर ठूसने लगे, लेकिन सब व्यर्थ। बॉयलर बालू में मज़-बूती से धस गया था और लगता था कि वे उसे निकालने की जितनी कोशिश करते थे, वह उतना ही गहरा धंसता जाता था। अर्तामोनोव भी अपने हाथ में एक ढेंकली लिये औरों के साथ ज़ोर लगा रहा था और चिल्लाता जाता था –

"सब मिलकर जोर लगाओ! एक बार फिर सब मिलकर!"

बॉयलर अनमने ढंग से एक बार कुछ हिला-डुला और फिर एक ज़ोर के झटके के साथ पीछे हटकर जहा का तहां गड़ गया। निकीता ने अपने पिता को मज़दूरों की भीड़ में से निकलकर बाहर आते देखा। उसकी चाल विचित्र और अजीब-सी हो रही थी और उसका मुख भी विचित्र और पराया-सा लगता था। दाढ़ी के नीचे से वह एक हाथ से अपना गला पकड़े हुए था, दूसरे हाथ से वह अन्धे की तरह हवा में मानो कुछ टटोलता था, बूढ़ा बुनकर उसके पीछे फुदकता हुआ-सा चिल्लाया –

"थोड़ी-सी मिट्टी खा लो, थोड़ी सी मिट्टी..."

निकीता दौड़कर अपने बाप के पास पहुंचा। उसने ज़ोर की हिचकी ली और थूका। खून का एक लोथड़ा-सा निकीता के पांवों के पास गिरा। बाप ने दबी-घुटी आवाज़ में कहा –

"खून।"

उसका मुंह सफ़ेद हो गया था, आंखें डर से झपक रही थीं, जबड़ा कांप रहा था और उसका सारा विशाल, बुद्धिमत्तापूर्ण शरीर जैसे सिकुड़ता जा रहा था।

"क्या चोट लग गयी?" निकीता ने उसकी बांह थामते हुए पूछा। बाप ने लड़खड़ाते हुए धीमे स्वर में उत्तर दिया –

"लगता है कोई नाड़ी फट गयी है..."

"तुमसे कहा न, थोड़ी मिट्टी खा लो..."

"परेशान नही करो, जाओ!"

अर्तामोनोव ने फिर ढेर सारा खून उगल दिया। व्यग्रतापूर्वक वह बड़बड़ाया –

"यह तो बहता जा रहा है। उल्याना कहां है?"

कुबड़े ने भागकर घर जाना चाहा, लेकिन बाप ने मज़बूती से उसका कन्धा पकड़कर उसे रोक लिया। वह सिर झुकाये खड़ा था और अपने पांव से बालू कुरेद रहा था, मानो उससे पैदा होनेवाली खर-खर की उस आवाज़ को सुन रहा हो जो मज़दूरों की क्रोध-भरी चिल्लाहट के बीच कठिनाई से ही सुनी जा सकती थी।

"आखिर मुझें हुआ क्या है?" उसने पूछा, और ऐसे सावधानी से क़दम रखते हुए, जैसे किसी गहरी नदी को पार करने के लिये एक पतले तख़्ते पर से गुज़र रहा हो, वह घर की ओर चल पड़ा। बैमाकोवा बाहर के दालान में खड़ी अपनी बेटी से विदा ले रही थी। निकीता ने देखा कि अर्तामोनोव पर नज़र पड़ते ही उसका सुन्दर मुख पीला पड़ गया और उसका मुंह एक विचित्र ढंग से पहिये की तरह दाईं, फिर कभी बाईं ओर घूमकर मुरझा गया।

दालान की सीढ़ियों पर जब अर्तामोनोव भद्दे ढग से ढुलक गया और हिचकियों के साथ बार-बार खून उगलने लगा, तो वह चिल्लायी –

"जल्दी से बर्फ़ लाओ!"

जैसे एक सपने में निकीता ने तीखोन को बड़बड़ाते हुए सुना –

"बर्फ़ तो पानी होता है। पानी से ख़ून नहीं बनता ..."

"इन्हें थोड़ी मिट्टी खानी चाहिये ..."

"तीख़ोन, जल्दी पादरी को बुला लाओ ..."

"इन्हें उठाकर अन्दर ले चलो," अल्योशा ने आदेश दिया। निकीता ने अपने बाप की कोहनी पकड़ी, लेकिन किसी ने उसके अंगूठे पर इतने ज़ोर से पाव रख दिया कि एक क्षण के लिये उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया। लेकिन इसके बाद वह पहले से भी अधिक तीखी दृष्टि से देखने लगा। और वह अपने दिमाग़ पर उन सारी बातों को एक कुत्सित उत्सुकता के साथ अंकित करने लगा, जिन्हें लोग उसके बाप के ठसाठस भरे कमरे में और घर के आगन में कर रहे थे। तीख़ोन एक बडे काले घोडे को अहाते मे से सरपट दौडाये जा रहा था। वह उसके क़ाबू मे बाहर हो रहा था। फाटक पर जाकर घोडा अड़ गया। वह ग़ुस्से से अपना सिर ऊपर को झटकते और हिनहिनाते हुए चक्कर काटने लगा। लोग उसके सामने मे तितर-बितर हो गये। उगते हुए सूरज ने आसमान में जो लाल लपटे-सी जला दी थी, यह घोड़ा शायद उनसे ही भड़क गया था। आख़िरकार वह एक झपाटे मे आगे बढा और सरपट दौड़ने लगा। लेकिन आगे जाकर बॉयलर के विशाल लाल आकार को देखकर वह हठात् ठिठक गया और तीख़ोन को नीचे फेककर फुंकारता और पूछ हिलाता हुआ अहाते की ओर लौट पडा।

कोई चिल्लाया –

"लड़को, भागो!"

खिडकी के दासे पर बैठा अल्योशा अपनी काली नुकीली दाढ़ी को ऐंठ रहा था। उसका विकृत मुख और भूरा हो रहा था, जैसे उस पर धूल अटी हो। आखे झपकाये बिना ही उसने लोगो के सिरो के ऊपर से कमरे के भीतर पलंग की ओर देखा, जिस पर उसका चाचा लेटा हुआ एक विचित्र और बिल्कुल बदली-सी आवाज़ से बड़बड़ा रहा था–

"तो मैने ग़लती की। भगवान की यही मर्ज़ी है। लड़को, मैं तुम्हारे पास उल्याना को तुम्हारी मा के रूप मे छोड़ रहा हू – सुनते हो? उल्याना, ईसा के नाम पर तुम इनकी मदद करना ... आह! बाहरवालों को यहां से हटा दो ..."

"चुप रहो," बैमाकोवा ने उसके मुंह में बर्फ़ के टुकड़े डालते

हुए विनय के स्वर में विह्वल होकर कहा। "यहां बाहरवाला कोई नहीं है।"

अर्तामोनोव ने बर्फ़ निगल ली और फिर एक दबी आह भरते हुए कहा –

"मैंने जो पाप किया है, मेरे बच्चो, इस पर कोई फ़ैसला देना तुम्हारा काम नही है। उल्याना का कोई दोष नही। और नतालिया, मैं तुम्हारे साथ हमेशा कड़ाई बरतता रहा, इसका बुरा न मानना। बेटे पैदा करना! प्योत्र और अल्योशा, हेल-मेल से रहना। लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करना। ये सब अच्छे लोग है, बढ़िया। अल्योशा, तू उस लड़की के साथ शादी कर लेना ... कोई बात नही!"

"बापू, हमें छोड़कर मत जाओ," प्योत्र ने घुटनो के बल गिरते हुए अनुरोध किया। लेकिन अल्योशा ने उसको कोहनी मारते हुए फुसफुसाकर कहा –

"कैसी बाते कह रहे हो तुम, मुझे तो उनपर विश्वास होता नहीं ..."

नतालिया तांबे के कटोरे मे चाकू से बर्फ़ के टुकड़े कर रही थी। बर्फ तोड़ने की आवाज़ के साथ उसकी सुबकियां घुलती-मिलती जा रही थी। निकीता देख रहा था कि उसके आसू बर्फ़ पर गिर रहे है। सूरज की एक पीली किरण कमरे मे घुस आयी और दर्पण से प्रतिबिम्बित होकर उसने दीवार पर एक आकारहीन थिरकता-सा धब्बा बना दिया, मानो वह दीवार पर चिपके हुए रात के आसमान सरीखे नीले कागजों पर बनी लम्बी मूछोवाले चीनियो की लाल आकृतियो को खुरचकर मिटाना चाहता हो।

निकीता बाप के पायंचे खड़ा इस बात की प्रतीक्षा कर रहा था कि उसका बाप उसे भी याद करेगा। बैसाकोवा इल्या के घने घुघराले बालों पर कघी फेर रही थी और तौलिया लेकर उसके मुंह की कोरो से लगातार बहता रक्त और माथे और कनपटी से पसीने की बूंदे पोंछती जाती थी। वह इल्या की धुंधली पड़ गयी आंखों में देखते हुए ऐसे भावोद्रेक मे फुसफुसाकर कुछ कह रही थी, मानो प्रार्थना कर रही हो। एक हाथ उल्याना के कन्धे और दूसरा घुटने पर रखते हुए इल्या ने बड़े यत्नपूर्वक बुदबुदाते हुए अपने अन्तिम शब्द कहे –

"मैं जानता हूं। प्रभु ईसा तुम्हारी रक्षा करें। मुझे अपने ही

क़ब्रिस्तान में दफ़नाना, शहर मे नही। मैं वहां नही सोना चाहता..."

और फिर एक बार अपार पीड़ा से आर्त्त होकर वह अस्फुट स्वर में बोला –

"ओह, यह मेरी ग़लती थी, हे भगवान... मुझसे भूल हुई..."

लम्बा, झुके कन्धों, उदास-सी आंखों और ईसा मसीह जैसी दाढ़ीवाला पादरी आया।

"ज़रा ठहरो, पिता पादरी!" अर्तामोनोव ने कहा और एक बार फिर अपने बेटों की ओर उन्मुख होकर बोला –

"साथ-साथ रहना, जायदाद का बटवारा नही करना! आपस की दुश्मनी से कारोबार तबाह हो जायेगा। प्योत्र, तुम सबसे बड़े हो। तुम्ही सब चीज़ों के लिये उत्तरदायी हो – सुनते हो? अब जाओ..."

"निकीता," बैमाकोवा ने उसे निकीता की याद दिलायी।

"निकीता को प्यार करना। वह कहा है? जाओ .. बाद में.. नतालिया तुम भी .."

दोपहर के बाद, जब सूरज अभी ख़ूब चमक रहा था, वह ख़ून की कमी से मर गया। कुछ ऊपर को उठा हुआ उसका सिर तकिये पर टिका था, पीले मुह पर आक्रोश और चिन्ता के भाव अकित थे तथा उसकी अधमुदी आखें छाती पर विनयपूर्वक बधे चौड़े हाथो की ओर मानो विचारमग्न मुद्रा में घूर रही थी।

निकीता को ऐसा लगा, मानो पिता की मृत्यु से सारे परिवार को शोक और भय की तुलना मे आश्चर्य कही अधिक हुआ था। बैमा-कोवा को छोड़कर वह सब के अन्दर इस दबे-दबे आश्चर्य की भावना को अनुभव कर रहा था। बैमाकोवा दिवंगत की बग़ल में मूक और अश्रुहीन, स्तम्भित और बधिर प्रतिमा-सी बनी बैठी थी। उसके हाथ उसके घुटनो पर टिके हुए थे और उसकी आंखें बर्फ़ीली दाढी से सुसज्जित पत्थर जैसे कठोर मुख पर अविचल गडी हुई थी।

कमरे मे घुसते हुए, जहा उसका बाप लेटा था, और जहा निकीता और एक मोटी-सी साधुनी बारी-बारी से प्रार्थना-पुस्तक में से प्रार्थनाएं पढ़कर सुना रहे थे, प्योत्र कठोर और सीधी मुद्रा में अनुचित रूप से कुछ अधिक ज़ोर से बोलता रहा। वह कभी जिज्ञासु भाव से अपने बाप के मुख की ओर देखता, कभी अपने ऊपर क्रॉस का चिह्न बनाता, फिर पलंग के पास दो-तीन मिनट तक खड़ा हो जाता और सावधानी

से कमरे से बाहर निकल जाता। फिर उसका भारी-भरकम शरीर आंगन में और बगीचे के पेड़ों के बीच चलता-फिरता दिखायी देता, लगता जैसे वह किसी चीज़ की तलाश में हो।

अल्योशा जनाज़े की तैयारी के लिये दौड़-धूप कर रहा था। वह कभी घोड़ागाड़ी को दौडाता हुआ शहर जाता, वहां से लौटकर भागता हुआ अपने बाप के कमरे मे जाकर उल्याना से कफ़न-दफ़न और मृत्यु-भोज के सम्बन्ध में रीति-रिवाजों और परम्पराओं की पूछ-ताछ करता।

"कुछ देर बाद," वह उत्तर देती और थका-हरा तथा पसीने से तर अल्योशा वहां से ग़ायब हो जाता। सहमी हुई और सहानुभूति का भाव लिये नतालिया अन्दर आती और अपनी मां से कुछ खाने या एक प्याला चाय ही पी लेने का आग्रह करती। मां चुपचाप सुनकर उत्तर देती –

"कुछ देर बाद।"

जब तक अर्तामोनोव जीवित था, उस समय तक निकीता को कभी यह पता नही चला था कि वह अपने पिता से प्रेम करता है या नही। वह केवल भयभीत ही रहता था, यद्यपि यह भय इस व्यक्ति के, जिसने निकीता के प्रति कभी स्नेह नहीं दिखाया था और इतना ध्यान भी नहीं दिया था कि कुबड़ा बेटा ज़िन्दा है या नही, उत्साहपूर्ण, कर्मठ जीवन मे गहरी दिलचस्पी लेने में बाधक नहीं होता था। लेकिन अब निकीता को ऐसा लगा, जैसे केवल वह ही सच्चे हृदय और मन की गहराई मे अपने पिता से प्रेम करता था। इस बलवान पुरुष की अचानक हो जानेवाली मृत्यु ने उसके हृदय को कचोटनेवाली पीडा और निर्मम आघात की भावना मे परिपूर्ण कर दिया था। इस दुख-दर्द से उसके लिये सांस लेना भी दूभर हो रहा था। वह एक कोने में सन्दूक़ पर बैठा प्रार्थनाएं पढ़ने के लिये अपनी बारी का इन्तज़ार करता हुआ प्रार्थना के परिचित शब्दों को मन ही मन दोहरा रहा था और उसकी आंखें कमरे मे छायी गुनगुनी धुध के बीच मे उन सजीव, कम्पित पीले फूल के गुच्छों जैसी जलती हुई मोमबत्तियों को घूर रही थीं। लम्बी मूंछोंवाले चीनियों की आकृतियां कन्धों पर रखी बहंगियों में चाय की पेटियों को सन्तुलित करते हुए दीवार से चिपकी थीं। दीवारी काग़ज़ की हर पट्टी पर दो-दो की पांत में अठारह चीनी थे। एक पंक्ति में वे ऊपर छत की ओर तथा दूसरी में नीचे फ़र्श की तरफ़ क़दम बढ़ाते

प्रतीत हो रहे थे। दीवार पर एक जगह चांदनी का स्निग्ध धब्बा-सा पड़ रहा था और वहां ये चीनी लोग तेज़ी से ऊपर-नीचे क़दम बढ़ाते दिखायी दे रहे थे।

प्रार्थना के एकरस स्वर के बीच निकीता को अचानक एक धीमा, पर आकुल प्रश्न सुनायी दिया –

"क्या यह सचमुच अब नहीं रहे? हे भगवान!"

यह उल्याना की आवाज़ थी, जिसमें इतनी मार्मिक वेदना और पीड़ा थी कि साधुनी ने पढ़ना छोड़कर जैसे माफ़ी मांगते हुए उत्तर दिया–

"वे अब नही रहे, बहन, वे अब नही रहे। भगवान की ऐसी ही इच्छा थी.."

इन शब्दों से वातावरण असह्य हो गया, निकीता उठा और अपने हृदय में साधुनी के प्रति एक गहरे आक्रोश का भाव लिये कमरे से बाहर चला गया।

तीख़ोन फाटक के पास एक बेंच पर बैठा था। वह एक लकड़ी के चिप्पड़ काट रहा था। एक-एक करके इन टुकड़ों को बालू में गाड़ता और पाव से तब तक पीटता जाता था जब तक कि वे ग़ायब न हो जाते। निकीता चुपचाप उसके इस काम को देखता हुआ पास मे बैठ गया। तीख़ोन के इस काम ने उसे बस्ती के एक डरावनी आकृतिवाले मूर्ख अन्तोनुश्का की याद दिला दी। सांवला, अस्त-व्यस्त बालों, टेढ़े घुटनों और उल्लू जैसी गोल आंखोंवाला यह छोकरा एक छड़ी से बालू में घेरे बनाता और उन घेरों के अन्दर टहनियो और खपच्चियों के छोटे-छोटे चौख़ाने बनाता, बनाने के तुरन्त बाद उन्हें अपने पांव से कुचल देता और उन पर बालू फैलाते हुए नकियाती आवाज़ में गाता जाता –

ईसा फिर मे जिन्दा हो गया
गाडी का पहिया खो गया।
बुतिरमा, लोरी, बुस्तरमा,
सो जा ईसा, सो जा।

"कैसी बात हो गयी, न?" तीख़ोन ने कहा। उसने अपनी गर्दन पर एक थप्पड़ जमाकर मच्छर मार डाला और घुटने से अपनी हथेली पोंछते हुए नदी किनारे के विलो वृक्ष की एक डाली में उलझे चांद

पर एक दृष्टि डालने के बाद दैत्याकार बॉयलर पर आंखें जमा दी।

"इस साल मच्छर जल्दी पैदा हो गये," वह शान्त भाव से कहता गया। "हां, मच्छर ज़िन्दा हैं और ..."

बात पूरी होने के पहले ही कुबड़े ने बाद की बात से आशंकित होकर उसे कठोर स्वर में स्मरण दिलाया –

"हां, लेकिन तुमने तो मच्छर को मार डाला।"

वह तेज़ी से उठकर चौकीदार के पास से चला गया। यह न समझ पाते हुए कि क्या करे, वह कुछ मिनटों के बाद ही फिर अपने बाप के कमरे में लौट आया और साधुनी की जगह ख़ुद पाठ करने लगा। प्रार्थनाओं के शब्दों में अपने हृदय की समस्त व्यथा को उडेलने के प्रयास में उसे नतालिया के कमरे में आने की आहट नही सुनायी दी। अचानक नतालिया के स्वर की कोमल लहरी उसके पीछे गूज उठी। नतालिया जब कभी उसके निकट होती, तो वह हमेशा यह अनुभव करता कि वह कोई असाधारण बात कह या कर बैठेगा – शायद कोई भयानक बात। और इस अवसर पर भी उसे डर लगा कि कही उसकी इच्छा के विरुद्ध उसके मुंह से कुछ ऐसे शब्द न निकल जाये। उसने कूबड़ को ऊपर उठाते हुए अपना सिर झुका लिया और स्वर को दबाकर मन्द कर दिया। और तब उसे नौवी प्रार्थना के पाठ के समय दो अश्रु-मिश्रित कण्ठों के स्वर सुनायी दिये –

"यह देखो, मैंने उनका क्रॉस उतार लिया है। अब स्वयं इसे धारण करूंगी।"

"मां, मेरी प्यांरी मां, मै भी तो एकदम अकेली हूं।"

निकीता इन मन्द, करुण स्वरों को डुबाने के लिये प्रार्थनाओ का ज़ोर-ज़ोर से पाठ करने लगा, लेकिन फिर भी वे उसे सुनायी देते रहे।

"भगवान ने हमारे पापों का बहुत शीघ्र दण्ड दिया ..."

"मैं एक पराये नीड़ में नितान्त एकाकी हूं .."

"मैं तुम्हारी दिव्य आत्मा से दूर कहां जाऊं और तुम्हारे क्रोध मे भागकर कहा छिपूं?" निकीता यत्नपूर्वक पढ़ता गया और भय और निराशा की इस पुकार के बीच उसकी स्मृति ने एक विषादपूर्ण कहावत याद दिला दी: "प्रेम के बिना जीवन दुःखी, सूना, प्रेम करो, दुःख होता दूना।" किंचित शर्माते हुए उसे लगा कि नतालिया का दुःख

उसके लिये सुख की आशा बन सकता है।

अगली सुबह को बास्कीं और नगर का मेयर, भावशून्य आंखोंवाला याकोव जितेइकिन बग्घी में उनके यहां आये। लोगों ने याकोव जितेइकिन का नाम "अधपका" रख दिया था। वह गोल-मटोल और ऐसा मुलायम-मुलायम-सा आदमी था जैसे सचमुच अधपके आटे का बना हो। उन लोगों ने अर्तामोनोव के शव के सामने अपने सिर झुकाये और उसके स्याह पड़ गये मुंह की ओर एक भयपूर्ण शंका की दृष्टि डाली। स्पष्टतः उन्हें भी अर्तामोनोव की मृत्यु पर अचम्भा था। तब जितेइकिन ने अपने कटु, तीखे स्वर मे प्योत्र से कहा –

"लोग कहते हैं कि तुम अपने बाप को अपने क़ब्रिस्तान में दफ़नाने की सोच रहे हो – क्या यह सच है? इससे समूची बस्ती का अपमान होगा, गोया तुम हम लोगो से कोई सरोकार ही नही रखना चाहते, या हमारे साथ दोस्तों की तरह नही रहना चाहते, क्यों?"

दात पीसते हुए अल्योशा ने अपने भाई के कान में कहा –

"इन लोगो को यहां से दफ़ा कर दो!"

"देखो, बहन," बास्कीं ने उल्याना की ओर मुडते हुए कहा। "यह भी कोई तरीक़ा है? यह तो अफसोस की बात है!"

जितेइकिन ने प्योत्र से प्रश्न पूछने शुरू कर दिये –

"पादरी ग्लेब ने तो तुम्हें ऐसी सलाह नही दी? नही-नही, इस बारे में अपना विचार बदल लो। तुम्हारे बाप इस इलाक़े के सबसे बड़े व्यवसायी थे। उन्होंने एक नये ढंग के उद्योग की नीव डाली है, जिस पर आज सारी बस्ती को गर्व है। तुम्हारे फैसले मे तो ज़िले का पुलिस अफसर तक भी चकित हो गया, पूछ रहा था कि क्या तुम ईसाई भी हो या नही?" वह प्योत्र को अपनी बात कहने का कोई मौका दिये बिना लगातार बोलता गया। अन्त मे जब प्योत्र ने किसी तरह अवसर पाकर उसे बताया कि उसके बाप की ऐसी ही अन्तिम इच्छा थी, तो जितेइकिन एकदम शान्त हो गया।

"जो भी हो, दफ़नाने के वक्त हम सभी लोग रहेंगे।"

और फिर सब लोगों को यह स्पष्ट हो गया कि वह जो बातें कर रहा था, उनके लिये नहीं, बल्कि किसी और उद्देश्य से यहां आया था। वह कमरे के उस कोने की ओर जा पहुंचा, जहां उल्याना को दीवार की ओर धकेलते हुए बास्कीं उसके कान में कुछ कह रहा था।

लेकिन जितेइकिन के वहां पहुंचने से पहले ही उल्याना चिल्ला उठी –

"अरे भाई, तुम निरे अहमक़ हो! हटो, जाओ!"

उसके होंठ कांप रहे थे और उसकी भौंहें सिकुड़ रही थीं। गर्व से अपना सिर उठाकर वह प्योत्र से बोली –

"देखो, ये दोनों और पोम्यलोव तथा वोरोपोनोव चाहते हैं कि मैं बात करके तुम भाइयों को इनके हाथ मिल बेचने के लिये राज़ी करूं। इस मदद के लिये ये मुझे रिश्वत देने को तैयार हैं..."

"जाइये यहां से, महानुभावो!" अल्योशा ने दरवाज़े की ओर इशारा करते हुए कहा।

खांसता और मुस्कराता जितेइकिन बास्कीं को कोहनियाते हुए दरवाजे से बाहर चला गया। बैमाकोवा सन्दूक़ पर बैठकर रो पड़ी:

"ये लोग उनकी याद की निशानी को मिटा देना चाहते हैं..."

अल्योशा ने अपने बाप के मुख की ओर देखते हुए एक कटु गम्भीर स्वर में घोषणा की –

"मैं इन लोगो जैसा कभी नही बनूगा! इससे तो मर जाना ही अच्छा है।"

"सौदा पटाने का भी बड़ा अच्छा वक्त ढूंढा है," प्योत्र बड़बड़ाया और उसने भी अपने बाप की ओर देखा।

नतालिया ने निकीता के पास आकर धीमे स्वर में पूछा –

"और तुम क्यो कुछ नही कहते?"

नतालिया ने उसकी तरफ़ ध्यान दिया था, इस चीज़ ने उसके मन को छू लिया, उसे इससे खुशी हुई और अपनी मृदु मुस्कान को दबाते हुए उसने भी धीमे स्वर में उत्तर दिया –

"मैं क्या कहू... हम दोनों तो..."

लेकिन विचारों में डूबी हुई उससे दूर हट गयी।

इल्या अर्तामोनोव के जनाज़े में नगर के लगभग सारे प्रमुख लोगों ने भाग लिया। दुर्बल और लम्बा, घुटी हुई ठोड़ी और सफेद कनपटियोंवाला ज़िले का पुलिस अफ़सर भी आया। वह रेतीली सड़क पर प्योत्र के साथ बड़े रोब से लंगड़ाकर चल रहा था और उसने दो बार उससे यही शब्द कहे –

"श्रीमान राजकुमार गेओर्गी रात्स्की ने तुम्हारे दिवंगत पिता की मुझसे बहुत प्रशंसा की थी और यह प्रशंसा सच्ची सिद्ध हुई।"

लेकिन कुछ क्षण बाद ही बोला –

"शव को उठाकर पहाड़ी पर ले जाना कठिन है!"

यह कहकर वह भीड़ से अलग होकर एक चीड़ की छांह में खड़ा हो गया। उसके सफ़ाचट होंठ कसकर भिंचे हुए थे। नगरवासियों और मज़दूरो के समूह पर उसने ऐसे नज़र दौड़ायी, जैसे सैनिको की परेड का निरीक्षण कर रहा हो।

दिन उजला था। चटकीली हरी और पीली भूमि और मनुष्यों के रंगारग जलूस पर, जो बालू के दो टीलों के बीच से धीरे-धीरे बढ़ता हुआ एक तीसरे टीले की ढलान पर चढ़ रहा था, सूरज बड़ी उदारता से अपनी जगमगाती किरणे बिखेर रहा था। इस जगह पहले से ही अनेक क्रॉस गड़े थे जो स्वच्छ, नीले आकाश की पृष्ठभूमि में बिल्कुल स्पष्टता से उभरे हुए थे और एक टेढ़े-मेढे पुराने चीड़ की फैलती शाखाओं के नीचे शरण ले रहे थे। लोगों के पैरो के नीचे खरखराकर बालू हीरो की तरह जगमगा रही थी और पादरियों की प्रार्थनाओ के गम्भीर स्वर लोगों के सिरों पर मंडराते हुए कांप रहे थे। उछलता और लड़खडाता हुआ मूर्ख अन्तोनुश्का सबसे पीछे चल रहा था। सफ़ाचट भौंहो के नीचे उसकी गोल-गोल आखें ज़मीन पर टकटकी बाधे थी। वह सडक पर से सूखी टहनिया उठाने के लिये बार-बार झुकता और उठाकर उन्हे अपनी क़मीज़ के नीचे रखता जाता और साथ ही तीखी आवाज़ में गाता जाता था –

ईसा फिर से जिन्दा हो गया
गाडी का पहिया खो गया

धर्मात्मा लोग उसे यह गाना गाने पर मारते-पीटते। आज भी ज़िला-पुलिस अफसर ने उगली उठाकर धमकाते हुए ज़ोर से कहा –

"चुप रह, मूर्ख!"

बस्ती के लोग अन्तोनुश्का को पसन्द नही करते थे। वह मोर्दोव या चुवाश जाति का था और इस कारण लोग उसे प्रभु का दीवाना नही मानते थे। फिर भी वे सब उससे डरते। उनका विश्वास था कि वह दुर्भाग्य और अपशकुन का सूचक है और जब मृत्यु-भोज के समय वह अचानक ही अर्तामोनोव के अहाते में आ टपका और मेज़ों के बीच कूदता हुआ अर्थहीन चीत्कार करने लगा – "कुयातीर, कुयातीर –

घण्टाघर में शैतान घुसा है। ओहो, मेंह बरसेगा, कयामास के काले आंसुओं से सब गीला हो जायेगा!" – तो कुछ बुझक्कड़ लोगो ने आपस में कानाफूसी की –

"इसका मतलब है कि भाग्य अर्तामोनोव-परिवार का साथ नही देगा!"

प्योत्र ने भी यह फुसफुसाहट सुनी। कुछ देर बाद उसने देखा कि तीख़ोन व्यालोव ने उस मूर्ख को अहाते के कोने मे पकड़ लिया है। उसने चौकीदार को शान्त स्वर में उससे यह पूछते सुना –

"कयामास क्या होता है? नही जानते? अच्छा, तो निकल जाओ यहा से! जाओ, जाओ..."

...जिस तरह पहाड़ की ढलानों पर से पतझड़ की मटियाली धारा तेज़ी से बहती हुई चली जाती है, वैसे ही एक वर्ष बीत गया। इस बीच कोई ख़ास बात नही हुई, केवल उल्याना बैमाकोवा के बाल सफ़ेद हो गये और उसकी कनपटियो पर बुढ़ापे की अप्रिय झुर्रिया उभर आयी। अल्योशा में बहुत प्रत्यक्ष परिवर्त्तन हो गया था। पहले की तुलना में उसके स्वभाव में कही अधिक मृदुता और कोमलता, पर साथ ही उसके आचरण में एक अप्रिय ढग की जल्दबाज़ी आ गयी थी। वह लोगो को अपने उच्छृखल परिहास और चुभते शब्दों से बीध देता। व्यापार के प्रति उसके मुक्त और लापरवाही के रवैये मे प्योत्र को विशेष चिन्ता रहती। लगता, जैसे वह कारख़ाने के साथ उसी तरह खिलवाड़ कर रहा है, जैसे कभी वह रीछ के साथ खिलवाड़ करता रहा था जिसे बाद में उसने ख़ुद ही मार डाला था। उसके हृदय मे ऐसी वस्तुओ के प्रति एक विचित्र अनुराग पैदा होने लगा जिनसे उच्च वर्ग के लोग अपने जीवन के रहन-सहन के ढग को अलकृत करते थे। बैमाकोवा ने उसे जो घड़ी दी थी, उसके अतिरिक्त उसने अपने कमरे में और अनेक बेकार की, पर देखने मे आकर्षक, सजावटी चीज़े जमा कर ली थी। दीवार पर मनकों की कसीदाकारीवाली एक तस्वीर टगी थी जिसमें एक घेरे में नाचती हुई लड़कियो का दृश्य था। अल्योशा स्वभाव से मितव्ययी था, फिर भी वह ऐसी बेकार की चीज़ो पर क्यों पैसे बरबाद करता था? इधर वह अधिक क़ीमती और फ़ैशनदार पोशाकें पहनने लगा था। वह अब अपनी काली नुकीली दाढ़ी की भी विशेष देख-भाल करता था और अपने गालो को उस्तरे से साफ़ करता था

जिससे दिन पर दिन उसमें साधारण किसान का रंग-ढंग कम होता जाता था। प्योत्र को अपने ममेरे भाई में कुछ परायापन और अस्पष्टता-सी अनुभव होने लगी थी। वह चुपचाप और अविश्वास से उसकी गति-विधि को देखता रहता और उसका यह अविश्वास बढ़ता जाता था।

व्यापार के मामले में भी प्योत्र उसी तरह सावधानी से फूंक-फूककर क़दम उठाता, जैसे लोगों के साथ व्यवहार के मामले में। उसने अपनी चाल मे जल्दबाज़ी की आदत छोड़ दी और वह अपनी भालू जैसी आखो को सिकोड़ता हुआ इस तरह दबे पांव मिल में जाता मानो उसे यह आशका हो कि वह जहां जा रहा है, वह जगह ग़ायब हो जायेगी। कभी-कभी व्यापार की चिन्ताओं से थककर उसे महसूस होने लगता कि वह एक विचित्र और उद्विग्न करनेवाले उतावलेपन के उत्साहहीन बादल से घिर गया है। ऐसे क्षणों में उसे अपनी मिल पाषाणी, किन्तु ज़िन्दा जानवर-सी दिखायी पड़ती। लगता कि यह जानवर धरती के साथ चिपका-चिमटा हुआ है। उमकी छाया ऐसी पड़ रही थी मानो वह उसके डैने हो और धुए के बादल उसकी झबरीली पूंछ हो। उमकी थूथनी भोदू-सी और डरावनी लगती। दिन में उमकी खिड़किया बर्फ़ीले दातो की तरह चमकती, जाड़ो की संध्या मे ये दात तप्त लोहे के-से जान पड़ते, जो क्रोध से लाल पड़ गये हो और तब लगता कि इसका असली मन्तव्य और गुप्त उद्देश्य मीलों लम्बा लिनेन बुनना नही, बल्कि कुछ और है, जो प्योत्र अर्तामोनोव के प्रति शत्रुतापूर्ण है।

पिता की बरसी के दिन क़ब्र पर फूल चढ़ाने के बाद सारा परिवार अल्योशा के रोशन, सुन्दर कमरे में एकत्र हुआ। कुछ विह्वल होते हुए उसने बोलना शुरू किया –

"पिता जी की यह इच्छा थी कि हम लोग आपस मे कभी लड़ें-झगड़ें नहीं। ऐसा ही होना भी चाहिये – यहा हम बन्दियो की तरह है।"

निकीता ने देखा कि उसके पास बैठी नतालिया चौंक पड़ी है और उसने अल्योशा पर आश्चर्य-भरी दृष्टि डाली है। अल्योशा मृदु स्वर में कहता गया –

"किन्तु हेल-मेल रखते हुए हमें एक-दूसरे के आड़े तो नही आना चाहिये। यह काम-धन्धा हम सबके लिये एक है, पर ज़िन्दगी हर किसी

की अपनी-अपनी है। ठीक है न?"

"तुम कहना क्या चाहते हो?" प्योत्र ने अपने भाई के सिर के ऊपर से किसी चीज़ की ओर घूरते हुए सावधानी से पूछा।

"तुम सभी जानते हो कि ओलगा ओर्लोवा के साथ मेरे बड़े घनिष्ठ सम्बन्ध है। अब मैं उससे शादी करना चाहता हूं। निकीता तुम्हें याद है न कि जब तुम पानी में गिरे थे, तो उस समय केवल उसी को तुम पर दया आयी थी?"

निकीता ने सिर झुकाकर हामी भरी। वह आज तक कभी नतालिया के इतने निकट नहीं बैठा था। उसे यह इतना सुखद लग रहा था कि वह न तो वहां से हिलना, न कुछ बोलना और न दूसरों की बात ही सुनना चाहता था। और नतालिया के जब किसी बात पर सिहर उठने से उसकी कोहनी उसके साथ छू गयी थी तो वह मेज़ के नीचे नतालिया के घुटनों की ओर देखता हुआ मुस्करा दिया था।

"मैं सोचता हू कि भाग्य ने उसे मेरे लिये ही बनाया है," अल्योशा ने कहा, "उसके साथ रहकर मै अपने जीवन को कुछ और ही बना सकता हूं। मैं उसे इस घर में नही लाना चाहता। मुझे डर है कि तुम सब हिल-मिलकर नही रह सकोगे।"

अपनी दुःख-भरी दृष्टि को ऊपर उठाते हुए उल्याना बैमाकोवा ने अल्योशा का समर्थन किया—

"मैं उसे भली-भांति जानती हूं। क़सीदा काढ़ने में वह अपना सानी नही रखती और फिर पढ़ी-लिखी भी है। बचपन से ही वह अपना और अपने शराबी बाप का पेट पालती आयी है। पर वह अपनी ही मर्ज़ी के मुताबिक़ जीना पसन्द करती है। मैं भी सोचती हूं कि नतालिया से उसकी निभ न सकेगी।"

"मैं तो सबके साथ निभा लेती हूं," नतालिया बुरा मानकर बोली। उसके पति ने उसकी ओर कनखियों से देखकर अपने भाई से कहा—

"हां, यह तुम्हारा निजी मामला है।"

अल्योशा ने बैमाकोवा से उसे अपना मकान बेच देने को कहा—

"तुम उसका क्या करोगे?"

प्योत्र ने अपने भाई का समर्थन करते हुए बैमाकोवा से कहा—

"तुमको तो अब हमारे साथ रहना चाहिये।"

"अच्छा तो, मैं जाकर ओलगा को यह खुशखबरी मुनाता हूं," अल्योशा ने कहा।

जब वह चला गया तो प्योत्र ने निकीता का कन्धा हिलाते हुए पूछा – "क्या, सो रहे हो? किस सोच में डूबे हो?"

"अल्योशा ठीक कर रहा है।"

"अच्छा? देखेंगे! मां, तुम क्या सोचती हो?"

"उसके साथ उसका शादी करना तो बेशक उचित ही होगा। उनकी आपस में कैसी निभेगी – यह कौन जाने? वह अजीब तरह की लड़की है – बुद्धू-सी।"

"ऐसी रिश्तेदार पाने के लिये धन्यवाद," प्योत्र ने व्यंग्यपूर्वक हसकर उत्तर दिया।

"हो सकता है कि मैंने गलत शब्द का प्रयोग किया हो," उल्याना ने धीमे से कहा, मानो वह अंधेरे में घूर रही हो, जहा हर चीज़ गड्ड-मड्ड होकर हिलती-डुलती है और साफ़ नज़र नही आती। "वह बड़ी चालाक है। उसके बाप के पास बहुत-सी चीज़ें थी और वह उन्हें छिपाकर मेरे पास रख जाती थी ताकि उसका बाप उन्हें बेचकर शराब न पी डाले। रातो को अल्योशा भी इन चीज़ों को मेरे पास ले आता और कुछ समय बाद मै मानो उन्हें उसे देती। यहां पर यह जो चीजें है, सब ओलगा की ही है, उसी का दहेज है। इनमें से कुछ चीजें क़ीमती भी है। वैसे मुझे वह बहुत अच्छी नही लगती – वह ज़रूरत से ज्यादा हठी लड़की है।"

प्योत्र अपनी सास की ओर पीठ किये खिडकी के पास खड़ा था। बाहर बगीचे में हर किसी की नकल उतारनेवाली स्टार्लिंग चिड़ियां चहचहा रही थी। उसे तीख़ोन के ये शब्द याद हो आये –

"मुझे स्टार्लिंग चिड़ियां अच्छी नही लगती – इनकी सूरत शैतान जैसी है।" यह तीखोन बड़ा ही मूर्ख है। इसीलिये उसकी ओर ध्यान जाये बिना नही रह सकता कि बहुत ही मूर्ख है।

उसी धीमे, उदासीन स्वर में तथा शायद अपने विचारो में डूबी बैमाकोवा ने ओलगा ओर्लोवा की मां की कहानी कह सुनायी। वह एक जमीदार की पत्नी थी – बेशर्म औरत, जो अपने पति के रहते ओर्लोव के साथ भाग आयी थी और उसके साथ कोई पांच साल तक रही थी।

"ओर्लोव कारीगर था। वह मेज़-कुर्सी बनाता था, घड़ियों की मरम्मत करता था और लकड़ी पर आकृतियां खोदता था। उनमें से एक मेरे घर भी रखी है – नंगी औरत की आकृति। ओलगा का विचार है कि यह उसकी मां की मूर्त्ति है। वे दोनों ही शराबी थे और जब ओलगा की मां का पहला पति मर गया तो इन दोनों ने शादी कर ली और उसी साल वह शराब के नशे में चूर नहाते हुए डूब गयी..."

"तो लोग ऐसे भी प्रेम कर सकते हैं," नतालिया अचानक कह उठी।

इन बेमौक़ा शब्दों को सुनकर उल्याना ने अपनी पुत्री की ओर धिक्कार-भरी दृष्टि से देखा और प्योत्र ने ज़रा हंसकर कहा –

"प्रेम की नही, नशाखोरी की बात चल रही थी।"

खामोशी छा गयी। निकीता ने देखा कि मा की कहानी ने नतालिया को उत्तेजित कर दिया है। वह बेचैनी से मेज़पोश की झालर को नोच रही थी। उसके सरल, दयालु मुख पर लाली दौड गयी थी और उसकी मुद्रा से ऐसा आक्रोश टपक रहा था जैसा उसने पहले कभी न देखा था।

रात को खाने के बाद नतालिया की खिडकी के नीचे लाइलक की झाड़ियों के बीच बैठे निकीता ने ऊपर के कमरे से आती हुई आवाज़ें सुनी। प्योत्र गम्भीर स्वर में कह रहा था –

"अल्योशा तेज़ आदमी है। अक़्लमन्द है।"

इसी क्षण नतालिया हृदयविदारक स्वर में चीख़ते हुए कह उठी और रो पड़ी –

"तुम सब अक़्लमन्द हो। अकेली मैं ही बेवकूफ़ हूं। उसने ठीक ही कहा था – हम यहां बन्दियो की तरह है! मै ही तुम्हारे घर में बन्दी हू.."

भय और करुणा से निकीता स्तम्भित रह गया। उसने दोनों हाथो से बेंच पकड़ ली क्योंकि कोई अज्ञात शक्ति उसे उकसा रही थी, किसी अज्ञात दिशा में खीचे लिये जा रही थी और वहा ऊपर से उसे प्रिय नारी का अधिकाधिक तेज़ होता हुआ स्वर सुनायी दे रहा था जो उसके हृदय में आशाओं के तूफ़ान उठा रहा था।

नतालिया उस समय अपनी चोटी गूंथ रही थी, जब उसके पति के शब्दों ने अचानक उसके अन्दर आग की लपट भडका दी थी। वह

अपने हाथों को, जो मारने और नोचने के लिये खुजला रहे थे, पीठ पीछे दबाकर दीवार के सहारे खड़ी थी और अश्रुहीन सुबकियों के साथ शब्द उमड़ते आ रहे थे। उसे होश नही था कि वह क्या कह रही थी और हतबुद्धि हो गये पति की चीख़-चिल्लाहट की ओर ध्यान दिये बिना कहती जा रही थी कि वह इस घर में एकदम परायी-सी है, कोई उसे प्यार नही करता, वह घर में बंदी-सी है।

"तुम मुझे प्यार नहीं करते, मुझसे कभी किसी बात की चर्चा नही करते, मुझ पर बस, पत्थर की तरह बरस ही पड़ते हो! तुम मुझे प्यार क्यों नही करते? मैं तुम्हारी पत्नी हूं या नही? मुझमें कौन-सी बुराई है? मां तुम्हारे बाप को कैसे प्यार करती थी! कभी-कभी मेरा दिल ईर्ष्या से फटने लगता था.. "

"तुम भी मुझे उसी तरह से प्यार करो," प्योत्र ने कहा। वह खिडकी के दासे पर बैठा कमरे के अधेरे कोने में खड़ी अपनी पत्नी की विकृत मुख-मुद्रा को देख रहा था। उसने सोचा कि नतालिया की बातें मूर्खतापूर्ण है, पर उसने चकित होते हुए यह अनुभव किया कि उसका दु:ख उचित है – उसकी समझ में आ गया कि नतालिया की व्यथा मूर्खतापूर्ण नहीं है। और इस व्यथा मे सबसे ख़राब बात यह थी कि इसमे यह डर छिपा हुआ था कि मनमुटाव की आग निरन्तर सुलगती रहेगी और उसे नयी-नयी चिन्ताओं और परेशानियो का सामना करना पड़ेगा, जबकि इस समय भी उसके सिर पर ढेर सारी चिन्ताएं सवार थी।

रात की शमीज़ में उसकी पत्नी की श्वेत आकृति इस प्रकार हिल-डुल और काप रही थी कि उसे लगा कि वह पिघलकर कही बह न जाये। उसका स्वर कभी ऊपर उठता, कभी नीचे गिरता; वह कभी अस्फुट बड़बड़ाने लगती तो कभी ज़ोर-ज़ोर से चीख़ने लगती, मानो वह झूले पर चढ़ी पैंगे मार रही हो – कभी ऊपर चली जाती हो और फिर नीचे आ जाती हो।

"देखो तो अल्योशा अपनी प्रेमिका से कितना प्यार करता है... और फिर ख़ुद उसे प्यार करने को भी कैसे मन होता है – वह हसमुख है, रईसों की तरह ठाटदार कपडे पहनता है, और तुम? कभी मुंह से प्यार का एक शब्द नहीं निकालते, हंसने का नाम नही जानते। अल्योशा के साथ मैं घी-खिचड़ी हो जाती, लेकिन उससे कुछ कहने का

मुझे कभी साहस ही नहीं हुआ ; तुमने जान-बूझकर उस बेहूदा, चालाक कुबड़े को मेरे ऊपर जासूस बनाकर छोड़ रखा था ..."

निकीता उठा और सिर झुकाये तथा वृक्षों की टहनियों को यन्त्रवत हटाता हुआ बगीचे में आगे बढ़ता चला गया।

प्योत्र भी उठकर पत्नी के पास गया, उसके बाल पकड़कर एक झटके से उसका सिर पीछे हटाकर वह उसकी आंखों में घूरने लगा।

"अल्योशा के साथ घी-खिचडी?" उसने धीमे, पर भारी स्वर में पूछा। अपनी पत्नी की बातें सुनकर वह इतना स्तम्भित हो गया था कि न तो उस पर क्रुद्ध हो सकता था और न उसे पीटने की इच्छा ही हो रही थी। उसके मन में यह बात स्पष्ट होती जा रही थी कि उसकी पत्नी के कहने में सचाई है – उसका जीवन सचमुच नीरस है। उसे भली-भांति मालूम था कि नीरस जीवन कैसा होता है। किन्तु इस समय तो नतालिया को किसी न किसी तरह शान्त करना था और उसे चुप कराने के लिये उसने उसका सिर दीवार से टकराते हुए धीमे स्वर में पूछा –

"क्या कहा तुमने, मूर्ख? अल्योशा के साथ घी-खिचडी?"

"छोड़ दो मुझे, छोड़ दो, नही तो चीख पड़ूंगी ..."

प्योत्र ने दूसरे हाथ से नतालिया का गला पकड़ लिया और उसे दबाने लगा। नतालिया का चेहरा सुर्ख पड़ गया और उसका दम घुटने लगा।

"कमीनी कहीं की," कहते हुए उसे दीवार की ओर धकेलकर प्योत्र पीछे हट गया। नतालिया भी दीवार से हटकर तथा उसके आगे से निकलती हुई पालने की ओर बढ़ी जहां उसकी बच्ची बड़ी देर से पड़ी रिरिया रही थी। प्योत्र को लगा जैसे वह उसकी छाती पर पाव धरकर निकल गयी हो। उसकी आंखों के आगे घने नीले आकाश का टुकड़ा थरथराने लगा और तारे उछलने-कूदने लगे। पत्नी पास में, उसकी बग़ल में बैठी थी, अपनी जगह से हिले-डुले बिना ही वह उसके मुंह पर तमाचा मार सकता था। वह जड़वत गुमसुम बैठी थी, लेकिन आंखों से धीरे-धीरे बहते आंसू उसके गालों को भिगो रहे थे। अपनी नन्ही बच्ची को दूध पिलाते हुए वह आंसुओं की झिल्ली में से कोने की ओर टकटकी बांधे देख रही थी। इस बात की ओर उसका ध्यान ही नही गया कि बच्ची को दूध पीने में कठिनाई हो रही है। उसके

मुंह में से स्तन बार-बार निकल जाता था और वह हवा में होंठ चला रही थी और निरुपाय रिरिया रही थी। प्योत्र ने जैसे एक दुःस्वप्न से जागकर कहा –

"देखती नही, बच्ची अच्छी तरह से दूध नहीं पी रही है।"

"मैं घर में एक मक्खी की तरह हूं," नतालिया बड़बड़ायी। "पंख-हीन मक्खी की तरह..."

"वैसे मैं भी तो अकेला हूं। दो प्योत्र अर्तामोनोव तो नही हैं।"

उसे धुंधला-सा आभास हुआ कि वह यह नही कहना चाहता था। इतना ही नही, उसके इस कथन में कुछ असत्य भी था। अपनी पत्नी को शान्त करने के लिये और अपने ऊपर छाये ख़तरे से बचने के लिये उसे चाहिये कि वह सत्य को उसके सामने रख दे – सरल, स्पष्ट, निर्विवाद सत्य को ताकि वह उसे तुरन्त समझ जाये और उसे स्वीकार कर ले, उसे अपनी मूर्खता-पूर्ण शिकायतों और आंसुओं से तग न किया करे, औरतों की उन सनकों से जो इसके पहले उसमें कभी नही थी। पालने में बच्ची को सुलाती हुई नतालिया की लापरवाह भोंडी हरकतो को देखते हुए प्योत्र ने कहा –

"मुझे अपने कारोबार की चिन्ता करनी पड़ती है! कारख़ाना – नाज उगाना या आलू बोना नही है, बडी चीज़ है। पर तुम्हें किस बात की परेशानी है?"

शुरू में तो इस मायावी सत्य को पकड लेने का प्रयास करते हुए उसने कठोर तथा प्रभावपूर्ण स्वर में ये शब्द कहे, किन्तु वह उसके हाथ न आया और अन्त में उसका स्वर क्षीण, विनयपूर्ण हो गया।

"कारख़ाना कोई साधारण चीज़ नही है," उसने फिर कहा। उसे लगा कि उसका शब्द-भण्डार चुक गया है और अब उसके पास कहने को कुछ नही रहा। उसकी पत्नी पालने को झुलाती हुई उसकी ओर पीठ किये शान्त खड़ी थी। तीख़ोन व्यालोव के धीमे, शान्त स्वर ने उसे इस स्थिति से मुक्ति दिलायी –

"प्योत्र इल्यीच! सुनो तो!"

"क्यो, क्या बात है?" उसने खिड़की के पास जाकर पूछा।

"ज़रा बाहर आओ," चौकीदार ने माग करते हुए कहा।

"जाहिल!" प्योत्र बड़बड़ाया और अपनी पत्नी की ओर मुड़कर ताना देते हुए बोला: "देखा! रात को भी चैन नही मिलता और

तुम यहां खड़ी बिसूर रही हो..."

नंगे सिर और जल्दी-जल्दी आंखें झपकाते हुए तीखोन से उसकी बरामदे में भेंट हुई। चांदनी में नहाये अहाते में चारों ओर एक नज़र डालकर उसने धीमे स्वर में कहा–

"निकीता इल्यीच ने अभी-अभी अपने को फांसी लगाने की कोशिश की थी..."

"क्या ? क्या कहा तुमने ?"

और प्योत्र बरामदे की सीढ़ी पर धम से बैठ गया, मानो उसके नीचे से ज़मीन खिसक गयी हो।

"तुम बैठो नही, आ, उसके पास चलो, वह तुम्हें बुला रहा है..."

प्योत्र उठा नही, उसने केवल अस्फुट स्वर में पूछा–

"उसने ऐसा क्यों किया ?"

"अब उसे होश आ गया है। मैने उस पर पानी छिड़का था। चलो, चलें..."

तीखोन ने मालिक की बांह पकडकर उसे उठाया और बगीचे में खीच ले गया।

"गुसलखाने से सटे हुए कपड़े बदलने के कमरे मे उसने अटारी के शहतीर से रस्सी बांधकर फांसी लगायी थी।"

प्योत्र ने यकायक रुककर फिर पूछा–

"ऐसा क्यों किया उसने ? क्या उसे बाप की याद सता रही थी ?"

तीखोन भी रुक गया।

"उसका तो यह हाल हो चुका था कि उसके कपडों को चूमता रहता था..."

"कौन-से कपड़े ? क्या बक रहे हो ?"

अपने नंगे पावों से ज़मीन कुरेदते हुए प्योत्र ने तीखोन के कुत्ते की ओर घूरकर देखा जो झाड़ियो में से निकलकर पूछ हिलाता हुआ उसकी ओर जिज्ञासा की दृष्टि से देख रहा था। प्योत्र को अपने भाई के पास जाने से डर लग रहा था। उसे लगा जैसे उसके अन्दर शून्य ही शून्य है। और उसकी समझ में नही आ रहा था कि वह निकीता से क्या कहेगा।

"तुम तो अंधे की तरह जीते हो," तीखोन बड़बड़ाया। प्योत्र यह सुनने के लिये कि वह आगे क्या कहता है, खामोश रहा।

"उसके कपड़े, नतालिया येव्सेयेव्ना के कपड़े, जो सूखने के लिये बाहर टंगे रहते थे।"

"लेकिन किसलिये उसने ... ज़रा रुको!"

प्योत्र ने लात मारकर कुत्ते को भगा दिया। यकायक एक स्त्री के कपड़े चूमते हुए अपने भाई की कुबड़ी आकृति उसकी आंखों के सामने घूम गयी। यह कल्पना हास्यास्पद होते हुए भी वह घृणा से थूकने के लिये विवश हो गया। फिर हठात् एक तीव्र वेदना पहुंचानेवाले विचार ने उसके हृदय पर आघात करके उसे विमूढ़ बना दिया। उसने तीख़ोन के कन्धो को ज़ोर से झकझोरते हुए दात पीसकर पूछा –

"क्या तुमने उन दोनो को चूमते-चाटते देखा है? बोलो!"

"मै सब कुछ देखता हूं। नतालिया येव्सेयेव्ना को तो इसका पता भी नही।"

"तुम झूठ बोलते हो!"

"मै क्यों झूठ बोलूगा! मुझे तुमसे इनाम पाने की ख़्वाहिश नही है।"

और तब तीख़ोन ने मानो कुल्हाड़ी से अधेरे को काटकर प्रकाश के लिये रास्ता बनाते हुए सक्षेप मे अपने मालिक को उसके भाई की पूरी शोक-कथा कह सुनायी। प्योत्र जानता था कि तीख़ोन सच बोल रहा है। सचमुच में अपने भाई की नीली आखो की दीठ, नतालिया के किसी काम आने की उसकी उत्सुकता, उसके प्रति उसकी छोटी-छोटी, पर सतत उत्कण्ठा से उसे एक धुधला-सा आभास तो पहले भी हुआ था।

"तो यह बात है," सोचते हुए वह बडबडाया – "मैं इतना काम मे फंसा रहा कि इसका अनुमान भी न कर पाया।"

उसने तीख़ोन को आगे धकेलते हुए कहा –

"आओ।"

वह नही चाहता था कि निकीता की पहली नज़र उस पर ही पड़े। स्नानगृह के नीचे दरवाज़े में से घुसते हुए, अंधेरे में अपने भाई को अभी देख पाये बिना ही उसने तीख़ोन के पीछे से कांपती आवाज़ में पूछा –

"तुम्हारे सिर पर यह कैसा भूत सवार हुआ, निकीता?"

कुबड़े ने कोई उत्तर नहीं दिया। खिड़की के पास रखी बेंच पर वह

कठिनाई से ही दिखायी पड़ रहा था। उसकी टांगों और पेड़ू पर धुंधली रोशनी पड़ रही थी। कुछ देर बाद प्योत्र ने देखा कि निकीता दीवार के सहारे अपना कूबड़ लगाये और सिर झुकाये बैठा है। गरेबान से लेकर पल्लू तक उसकी क़मीज़ फटी थी, पानी से तर वह उसके शरीर से चिपकी हुई थी। उसके बाल भी गीले थे और उसके जबड़े पर नज़र आ रहे एक काले दाग़ से धारायें-सी बह रही थी।

"यह क्या है—ख़ून? क्या गिर गये थे?" प्योत्र ने आहिस्ता से पूछा।

"नहीं, हड़बड़ी में मुझसे यह चोट लग गयी," तीख़ोन ने अटपटी ऊंची आवाज़ में उत्तर दिया और एक ओर को हट गया।

निकीता के पास जाने में प्योत्र को भय लगा। वही खड़े-खडे अपने कान की ललरी ऐंठते हुए भर्त्सना और धिक्कार-भरे शब्दों मे वह बोलता और स्वयं अपने ही शब्दो को ऐसे सुनता रहा मानो कोई अजनबी बोल रहा हो—

"कितनी शर्म की बात है, भाई! यह तो पाप है! कोई ऐसे भी करता है!"

"जानता हूं," निकीता ने खरखरे स्वर में कहा। उसकी आवाज़ भी अजनबी की सी थी। "मै अपने को वश में नही कर सका। मुझे किसी मठ में चले जाने दो। मै वहां साधना करूंगा। सच्चे हृदय से तुमसे आग्रह करता हूं..."

ज़ोर-ज़ोर से खांसने के बाद वह चुप हो गया।

कुछ द्रवित होकर प्योत्र उसे फिर धीमे-धीमे और स्नेहपूर्ण स्वर में धिक्कारने लगा और अन्त में बोला—

"रही नतालिया की बात, तो यह तो शैतान ने तुम्हें गुमराह कर दिया .."

"ओह, तीख़ोन!" निकीता चिल्ला उठा। "मैंने तुम्हारे मिहोरे किये थे, कि अपना मुंह बन्द रखना! अब ईसा के नाम पर कम से कम नतालिया को तो यह न बताना! वह मेरे ऊपर हंसेगी या शायद बुरा मान जायेगी। मुझ पर इतनी तो दया करो! ज़िन्दगी भर मै तुम्हारे लिये भगवान मे दुआएं मांगता रहूंगा। उससे न कहना! कभी नहीं कहना! तीख़ोन, यह सब तुम्हारी करनी है, क्या आदमी हो तुम भी..."

वह प्रलाप करता गया। उसका निश्चल सिर अस्वाभाविक रूप से सीधा उठा हुआ था और यह दृश्य भी भयानक था। तीखोन ने कहा –

"अगर आज की यह घटना न होती तो मैं अपना मुंह बन्द ही रखता। नतालिया को मैं कुछ नहीं बताऊंगा ..."

और अधिक द्रवित होकर तथा अपनी ही भावना से किंचित झेंपकर प्योत्र ने दृढ़तापूर्वक वचन दिया –

"क्रॉस की शपथ लेकर वायदा करता हूं कि वह कुछ न जान पायेगी।"

"धन्यवाद! और मैं अब मठ मे चला जाऊंगा।"

और निकीता ऐसे मौन हो गया, मानो ऊंघ गया हो।

"क्या दर्द हो रहा है?" उसके भाई ने पूछा। कोई उत्तर न पाने पर उसने फिर कहा – "गर्दन तो दुख रही है न?"

"कोई बात नही," निकीता ने भारी स्वर मे उत्तर दिया। "अब तुम जाओ ..."

"तुम यही रहना," द्वार की ओर जाते हुए प्योत्र ने तीख़ोन के कान मे कहा।

किन्तु बगीचे में पहुचकर जब उसने पसीजती धरती की गर्म, सोधी गन्ध में गहरी सास ली तो उद्विग्न करनेवाले विचार की बाढ उसके कोमल भावों को अपने वेग के साथ बहा ले गयी। वह संभाल-संभालकर पांव रख रहा था ताकि पगडंडी की कंकरियां खरखर न करे। उसे अत्यधिक शान्ति की ज़रूरत थी, नही तो वह अपने इन विचारों को व्यवस्थित नही कर सकता था। ये शत्रुतापूर्ण विचार, जो अपनी अतिशयता के कारण ही भयावह लग रहे थे, उसके अन्तर से नहीं उठे थे, किन्तु रात्रि के उदासी-भरे अन्धकार में उडते हुए चमगादड़ों की तरह बाहर से आक्रमण कर रहे थे। एक के बाद एक वे इतनी तेज़ी से बदलते जा रहे थे कि प्योत्र उन्हें पकड नही पाता था, शब्दों मे बांध नही पाता था, केवल उनकी जटिल शृंखला के फन्दों, गांठों और रूपरेखाओं की झलक ही ले पाता था जो उसे, नतालिया, अल्योशा, निकीता, तीख़ोन – इन सबको ऐसी तेज़ी से एक चक्कर में घुमा रहे थे कि किसी को भी पहचान लेना दुष्कर था। और वह स्वयं इस आवर्त्त के केन्द्र में अकेला फंसा हुआ था। शब्दो में तो उसने अत्यन्त सरल रूप में ही सोचा –

"नतालिया की मां को मुझे जल्द से घर में बुला लेना चाहिये और अल्योशा को बाहर कर देना चाहिये। नतालिया के प्रति थोड़ा-सा मृदु होना पड़ेगा। 'देखो तो लोग कैसे प्रेम करते हैं।' लेकिन उसने प्रेम के कारण नही, कूबड़ के कारण अपने को फांसी लगायी थी। बड़ी अच्छी बात है कि वह मठ में जाना चाहता है, लोगों में उसे क्या लेना-देना है। तीखोन निरा मूर्ख है। उसे पहले ही मुझे बता देना चाहिये था।"

किन्तु ये वे मूक और पकड़ में न आनेवाले विचार नही थे जिन्होंने उसे इतना उद्विग्न और भयभीत कर दिया था कि वह रात्रि के घने, नम अंधेरे में आंखें फाड़-फाड़कर देख रहा था। दूरी पर, मिल-मजदूरों की बस्ती के ऊपर करुण गीत की क्षीण स्वर-लहरी बह रही थी। मच्छर भिनभिना रहे थे। प्योत्र अर्तामोनोव साफ़-साफ यह महसूस कर रहा था कि उसे जल्दी से जल्दी अपनी उद्विग्नता पर क़ाबू पा लेना चाहिये। उसे पता भी नही चला कि कब वह अपने शयन-कक्ष की खिडकी के नीचे बकायन के कुंज तक पहुंच गया है। वहां वह बड़ी देर तक अपने घुटनों पर कोहनी टेके, हाथों में मुंह छिपाये और टकटकी बाधकर ज़मीन की काली मिट्टी को देखते हुए बेंच पर बैठा रहा। उसे लगा कि ज़मीन सास ले रही है, विचलित हो रही है, मानो धसने ही वाली है।

"सचमुच बड़े आश्चर्य की बात है कि निकीता ने बालू को वश में करके उसे ऐसे सरसब्ज़ बना दिया। वह मठ में चला जायेगा, वहां बाग़बानी करेगा। उसके लिये यह अच्छा ही होगा।"

उसने अपनी पत्नी को आते हुए नही देखा और इसलिये जब उसकी श्वेत आकृति यकायक, मानो पृथ्वी के गर्भ से निकलकर उसके सामने आ गयी तो वह घबराकर उछल पड़ा। लेकिन नतालिया के परिचित स्वर ने उसकी घबराहट कुछ दूर कर दी –

"मैं तुम पर बिगड उठी थी, भगवान के लिये मुझे माफ़ कर दो ..."

"कोई बात नही, भगवान माफ कर देगा, मै भी तो तुम पर बिगड़ा था," उसने उदारतापूर्वक उत्तर दिया। यह देखकर उसे ख़ुशी हुई कि उसकी पत्नी स्वयं उसके पास आ गयी थी और अब उसे कुछ देर पहले हुए झगड़े से पैदा होनेवाली खाई को पाटने के लिये कोमल शब्दावली नही ढूंढनी पड़ेगी।

वह बैठ गया और नतालिया कुछ झिझकती-सी उसकी बग़ल मैं बैठ गयी। हां, उसे अब नतालिया को आश्वस्त करने के लिये कुछ कहना ही पड़ेगा। वह बोला –

"मैं अच्छी तरह समझता हूं कि तुम ऊब महसूस करती रहती हो। हमारे घर में ख़ुशी के लिये कुछ भी नहीं है। ख़ुशी आये भी तो कहां से? पिता को अपने काम से ही ख़ुशी मिलती थी। उनका विचार था कि लोग नाम की कोई चीज़ नही होती, भिखमंगो और रईसों को छोड़कर बाक़ी सब कर्मी है। हम सब काम के लिये ही जीते हैं और काम की ओट में लोग नज़र नहीं आते।"

उसने बडी सावधानी से चुन-चुनकर शब्दो का प्रयोग किया ताकि कोई फालतू शब्द न कह दे। और अपने ही शब्दों को सुनते हुए उसे लगा कि इस समय उसने एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति, एक व्यवसायी और वास्तविक स्वामी की-मी बात की है। फिर भी उसने अनुभव किया कि ये सारे शब्द अवास्तविक थे, उसके विचारो के ऊपरी तल को छूकर ही फिसल रहे थे और उनको उद्घाटित करने या उनकी गहराई में प्रवेश करने में असमर्थ थे। और उसे लगा जैसे वह एक कगार पर बैठा है, जहां से किसी भी क्षण कोई अन्य व्यक्ति उसे धक्का देकर ढकेल सकता है – कोई ऐसा व्यक्ति जो उसकी बातें सुन रहा है और उसके कान में कह रहा है –

"यह सत्य नही है।"

बहुत ही ठीक समय पर उसकी पत्नी ने उसके कन्धे पर सिर रखकर अस्फुट स्वर में कहा –

"तुम्हे तो आजीवन मेरे साथ ही रहना है। तुम यह क्यों नही समझ पाते?"

उसने तुरन्त नतालिया को अपने आलिगन में बाधकर अपने हृदय से चिपका लिया और उसके भावनापूर्ण अस्फुट शब्दो को सुनने लगा –

"यह न समझना पाप है। तुम मुझे एक लड़की को ले आये, मै तुम्हारे बच्चे जनती हूं और फिर मुझे यह भी लगता है जैसे तुम मेरे पास हो ही नही – मेरे लिये तुम्हारे हृदय में स्थान ही नही है। यह पाप है, प्योत्र! क्या मुझसे भी अधिक कोई तुम्हारे निकट है? दुर्दिन में तुम्हारा दुःख कौन बंटायेगा?"

प्योत्र को लगा जैसे उसकी पत्नी ने उसे उठाकर हवा में उछाल

दिया है, अपनी शीतलता से सराबोर करके उसके अंगों में एक सुखद प्रमाद भर दिया है। कृतज्ञता की भावना से ओतप्रोत हो वह बड़बड़ाया –

"मैंने उसे वचन दिया है कि मौन रहूंगा, पर अब मुझसे नहीं रहा जाता!"

और उसने शीघ्र ही वह सारी बातें कह सुनायी जो निकीता के बारे में तीखोन ने उसे बतायी थीं।

"उसने आंगन में सूखते हुए तुम्हारे कपड़े चूमे – इस हद तक चला गया है वह! तुम्हें मालूम नही? उसकी स्थिति का क्या तुम्हें कभी अनुमान भी नही हुआ?"

उसे लगा कि उसकी पत्नी ज़ोर से कांप उठी है।

"इसे उस पर दया आ रही है?" प्योत्र ने सोचा, किन्तु नतालिया ने तुरत गुस्से से कहा –

"मुझे तो इसका कभी कोई आभास नही हुआ! उफ़, कितना घुन्ना है! लोग सच कहते है कि कुबडे बडे चालाक होते है।"

"सचमुच घृणा से कह रही है या यह केवल नाटक है?" प्योत्र ने अपने आप से पूछा। पर पत्नी से यह कहा –

"लेकिन तुम्हारे प्रति उसका बरताव तो सदा ही स्नेहशील रहा है "

"तो इससे क्या हुआ?" नतालिया ने अकडकर कहा। "तुलुन भी तो मेरे प्रति स्नेहशील है।"

"हां, लेकिन ... तुलुन तो कुत्ता है।"

"और वह? तुमने उसे मेरे ऊपर जासूसी करने के लिये कुत्ते की तरह ही छोड़ रखा था ताकि वह ससुर और अल्योशा से मेरी रखवाली कर सके। मै सब समझती थी! ओह! मेरे प्रति उसका व्यवहार कितना नीच और घृणित रहा है .."

निश्चय ही नतालिया अपने को अपमानित और क्रुद्ध अनुभव कर रही थी। शरीर के कम्पन और उगलियों की ऐंठन से, जिनसे वह अपने गाउन को झटक और नोच रही थी, यह प्रत्यक्ष था। लेकिन प्योत्र को उसका इतना कुपित होना अतिरंजित लगा और उस पर सन्देह करते हुए उसने अन्तिम प्रहार किया –

"उसने फांसी लगाने की कोशिश की थी। तीखोन ने उसे बचा लिया। इस समय वह ग़ुसलख़ाने में पड़ा है।"

उसकी पत्नी को जैसे काठ मार गया और वह भयभीत होकर चीख उठी –

"नहीं तो... क्या कह रहे हो? हे भगवान..."

"तो यह झूठ बोल रही थी," प्योत्र ने सोचा; किन्तु नतालिया ने इतने झटके से अपना सिर उठाया कि मानो किसी ने उसके माथे पर प्रहार किया हो और क्रोध-भरे आंसुओ के बीच अस्फुट स्वर में बोली –

"अब क्या होगा? पिता की मौत ने लोगो का मुह कुछ देर के लिये बन्द कर दिया था, पर अब फिर कानाफूसिया शुरू हो जायेंगी और लोगों की ज़बान खुल जायेगी – भगवान जाने किन पापों के लिये? एक भाई फांसी लगाने की कोशिश करता है, दूसरा न जाने, कैसी लडकी, अपनी रखेल मे ही शादी कर रहा है। यह भी कोई बात है? हाय रे, निकीता इल्यीच! कोई शर्म-हया नही रही तुम्हें? धन्यवाद है तुम्हें! खूब रंग दिखाया है यह, हृदयहीन ."

प्योत्र के हृदय पर से जैसे बोझ उतर गया और वह सन्तोष की सांस लेते हुए नतालिया के कन्धे सहलाने लगा –

"चिन्ता न करो। इस बात की किसी के कान में भनक भी नही पडेगी। तीख़ोन किसी से न कहेगा। निकीता से उसकी दोस्ती है और फिर हमारा ही दिया तो खाता है। निकीता मठ में जाना चाहता है..."

"कब?"

"मुझे मालूम नही।"

"अच्छा हो कि वह शीघ्र ही चला जाये! मैं अब उसके सामने कैसे जाऊंगी?"

कुछ देर की ख़ामोशी के बाद प्योत्र ने कहा –

"अच्छा हो, तुम जाकर उसे देख आओ .."

लेकिन वह चौंककर ऐसे पीछे हटी जैसे प्योत्र ने उसे मारा हो और लगभग चिल्ला उठी –

"न, न, मुझसे जाने को मत कहो – मैं नही जाऊगी! मै नहीं जा सकती! मुझे डर लगता है..."

"किस बात का?" प्योत्र ने तुरंत पूछा।

. "आत्महत्याओं से। मेरे साथ तुम चाहे कुछ भी करो, मैं नही जाऊंगी। मुझे डर लगता है।"

"ख़ैर, तो आओ सोने चलें!" खड़े होते हुए प्योत्र ने कहा। "मुसीबतों का सारा दिन रहा है आज।"

अपनी पत्नी की बग़ल में चलते हुए उसने अनुभव किया कि परेशानी के साथ-साथ आज के दिन ने उसे बहुत कुछ अच्छा भी दिया है; मानो आज तक उसे इसका ज्ञान ही नहीं था कि वह, प्योत्र अर्तामोनोव बहुत चालाक और समझदार आदमी है। और उसने उस व्यक्ति को बेवक़ूफ़ बना दिया है जो इतनी देर से लगातार उसकी आत्मा को बुरे-बुरे विचारों से परेशान कर रहा था।

"निश्चय ही तुम मेरे सबसे अधिक निकट हो," उसने अपनी पत्नी से कहा। "तुमसे अधिक निकट और कौन हो सकता है? बस, इस बात को मन में गाठ बांध लो कि तुम्हीं मेरे सबसे ज़्यादा निकट हो। तब सब कुछ ठीक हो जायेगा..."

इस रात के बारह दिन बाद जब प्रभात की किरण फूटी तो निकीता अर्तामोनोव हाथ में सोटा लिये और कूबड पर चमड़े का बडा थैला लादे बालू की पगडंडी पर, जो बहुत ओस गिरने से मलिन हो गयी थी, लम्बे-लम्बे डग भरता जल्दी-जल्दी चला जा रहा था, मानो अपने परिवार से विदा होते ममय की स्मृतियों से जल्द पिण्ड छुड़ाकर आगे निकल जाना चाहता हो। रसोईघर की बग़ल में भोजन करने के कमरे में परिवार के सारे लोग तन्द्रिल अवस्था में ही जमा हुए थे। वे सभी बुत बने बैठे थे, बातें भी नपी-तुली ही कर रहे थे और यह स्पष्ट था कि किसी के पास भी निकीता से कहने को हार्दिक सहानुभूति का एक शब्द भी नही था। प्योत्र उस व्यक्ति की तरह स्नेहपूर्ण और लगभग प्रमन्न था जिसने अभी-अभी अपना उल्लू मीधा किया हो। उसने दो-तीन बार कहा – "अब हमारे घर में भी हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिये अपना एक भक्त हो गया..."

नतालिया अन्यमनस्कता और बहुत ध्यान से चाय बनाती रही। उसके नन्हे-नन्हे, चूहे जैसे कान अत्यधिक लाल हो रहे थे और मुड़े-मसले हुए से लग रहे थे। वह उद्विग्न-सी दिखायी देती थी और बार-बार कमरे से बाहर चली जाती थी। उसकी मां विचारमग्न तथा चुप्पी साधे बैठी थी और कभी-कभी जीभ से उंगली गीली करके अपनी कनपटी के सफ़ेद बालों को चिकना कर लेती थी। केवल अल्योशा ही विचलित हो रहा था, जो उसके लिये एक अस्वाभाविक सी बात थी। वह

बार-बार कन्धे झटकते हुए पूछता जाता था –

"तुमने किसलिये यह किया, निकीता? बिल्कुल अचानक ही? यह बात मेरी समझ में नही आ रही है ..."

उसकी बग़ल में दुबली-पतली-सी, तीखी नाकवाली ओर्लोवा बैठी थी। अपनी काली भौंहें ऊपर को उठाये वह निर्लज्ज भाव से सभी को घूर रही थी। निकीता को उसकी आंखें अच्छी नही लग रही थी। उसके चेहरे के हिसाब से वे बहुत बड़ी थी, एक लड़की के नाते ज़्यादा ही पैनी थी और अत्यधिक झपकती रहती थी।

इन लोगों के बीच बैठे रहना उसे बोझल लग रहा था और भयभीत करनेवाला यह विचार बार-बार उसके मन मे उठ रहा था –

"कही प्योत्र सबको सब कुछ बता ही न दे? काश, यह सब जल्द समाप्त हो जाये .."

प्योत्र ने विदाई का प्रारंभ किया। निकीता के पास जाकर उसे गले लगाते हुए उसने कापते स्वर में ज़ोर से कहा –

"तो प्यारे भाई, विदा ."

लेकिन बैमाकोवा ने उसे बीच मे ही रोक दिया –

"यह तुम क्या कर रहे हो? विदा करने के पहले कुछ देर बैठना, चुप रहना, उसके बाद प्रार्थना करना और फिर विदा करना चाहिये।"

यह सब शीघ्र ही समाप्त हो गया और प्योत्र यह कहते हुए एक बार पुन: उठकर निकीता के पास गया –

"भूल-चूक के लिये माफ़ करना। कितना चन्दा देना होगा, यह बता देना, हम तुरंत भेज देंगे। कठोर प्रायश्चित्त के लिये राज़ी न होना। अच्छा, विदा। हमारे लिये प्रार्थना करते रहना।"

बैमाकोवा ने निकीता पर क्रॉस का चिन्ह बनाकर तीन बार उसका माथा और गाल चूमे। न जाने किस कारण वह रो पडी। अल्योशा ने निकीता को ज़ोर से गले लगाया और उसकी आंखों में देखते हुए कहा –

"भगवान तुम्हारा भला करे। हर व्यक्ति अपना रास्ता स्वय चुनता है। फिर भी मैं यह नही समझ पा रहा हू कि तुमने यकायक यह फैसला किस कारण किया .."

सबसे बाद में नतालिया उसके पास गयी, लेकिन उससे कुछ दूर रहते हुए ही अपना एक हाथ वक्ष पर रखते हुए उसने क्षीण स्वर में कहा –

"विदा, निकीता इल्यीच..."

उसके उरोज अब भी एक कुमारी जैसे उन्नत थे, यद्यपि वह तीन बच्चों को दूध पिला चुकी थी।

तो ऐसे क़िस्सा समाप्त हो गया। हां, अभी ओर्लोवा बाक़ी रह गयी थी। उसने अपना गरम-गरम, नन्हा-सा, काठ जैसा कड़ा हाथ निकीता के हाथो में डाल दिया। निकट से उसका मुंह और अधिक भद्दा लग रहा था। उसने मूर्खतापूर्वक पूछा –

"क्या आप सचमुच भिक्षु बनने जा रहे हैं?"

बाहर अहाते में कोई तीसेक बूढे बुनकर विदा कहने के लिये जमा हो गये थे। बूढ़े और बहरे बोरिस मोरोज़ोव ने ज़ोर से सिर हिलाते हुए चिल्लाकर कहा –

"सैनिक और भिक्षु – ये समाज के सबमे बडे सेवक होते है, हा!"

पिता की क़ब्र से विदा लेने के लिये निकीता क़ब्रिस्तान गया। उस पर घुटने टेककर प्रार्थना न करते हुए वह विचारमग्न हो गया। जीवन ने कैसा मोड़ ले लिया! उसके पीछे से उदित होकर जब सूरज ने क़ब्र की ओस से गीली ढेरी पर एक चौड़ी वक्र छाया अंकित कर दी, जिसकी आकृति गुस्सैल तुलुन कुत्ते के कुत्ताघर से मिलती-जुलती थी, तो निकीता ने धरती पर सिर झुकाकर कहा –

"मुझे क्षमा कर देना, पिता जी।"

प्रभात के कोमल स्निग्ध वातावरण में उसका स्वर दबा-घुटा और खरखरा-सा लगा। कुछ देर ठहरकर उसने फिर ज़ोर से कहा –

"मुझे क्षमा कर देना, पिता जी।"

और वह रो पडा, एक स्त्री की तरह सुबक-सुबककर, अपने पहले के स्पष्ट और गूंजते स्वर के खो जाने के असह्य दुःख से।

क़ब्रिस्तान से निकलकर वह अभी एक-दो किलोमीटर ही आगे गया होगा कि उसे अचानक तीखोन दिखायी दिया। कन्धे पर फावड़ा रखे और कमर की पेटी में कुल्हाड़ी खोंसे हुए वह सड़क के किनारे की झाड़ियो में एक सन्तरी की तरह खडा था।

"जा रहे हो?" तीखोन ने पूछा।

"हां, जा रहा हू। तुम यहां क्या कर रहे हो?"

"मैंने सोचा कि अपनी खिड़की के नीचे लगाने के लिये रोवन का पौधा खोद ले जाऊं।"

एक क्षण तक वे मौन खड़े हुए एक-दूसरे की ओर देखते रहे। तीखोन ने अपनी डबडबायी आंखें फेर ली।

"चलो, मैं तुम्हें कुछ दूर तक छोड़ आऊं।"

वे चुपचाप चलते गये। तीखोन ने ही मौन भग किया।

"बहुत ज़ोर की ओस पड़ रही है आजकल। यह बुरा लक्षण है। ऐसी ओम सूखे मौसम और बुरी फ़सल की निशानी है।"

"भगवान न करे।"

तीख़ोन व्यालोव ने मुंह ही मुंह भुनभुनाकर कुछ उत्तर दिया।

"तुमने क्या कहा?" निकीता ने किंचित् भयभीत होकर पूछा। इस व्यक्ति मे वह सदा आत्मा को कुछ ख़ास कचोटनेवाले शब्द मुनने की आशा करता रहता था।

"मैने कहा, शायद वह ऐमा न करे।"

लेकिन निकीता को विश्वास था कि चौकीदार ने कुछ और कहा था, जिमे वह अब दुहराना नही चाहता था।

"तुम क्या भगवान की दया पर विश्वास नही करते?" उसने भर्त्स-ना के स्वर मे पूछा।

"मै क्यो करू?" तीख़ोन ने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया। "इस समय हमे वर्षा चाहिये। यह ओस तो कुकुरमुत्तो के लिये भी बुरी है। अच्छा मालिक मब काम वक़्त पर करता है।"

निकीता ने ठण्डी साम लेकर मिर झुका लिया।

"तुम्हारा सोचने का यह ढग ठीक नही है, तीख़ोन ..."

"मेरे ख़्याल में तो ठीक है। मैं अपनी आखो से नही सोचता हू।"

पचासेक क़दम और ख़ामोशी से गुज़र गये। निकीता की नज़रे जमीन पर अपनी चौडी छाया का पीछा करती रही। व्यालोव की उंग-लियां कदमो के साथ कुल्हाड़ी की मूठ पर ताल देती रही।

"कोई एक वर्ष बाद मैं तुमसे मिलने आऊंगा, निकीता इल्यीच। ठीक है?"

"आ जाना। जिज्ञासु हो तुम।"

"यह तो सच है।"

रुककर उसने अपना टोप उतारा –

"अच्छा तो, विदा, निकीता इल्यीच!" और उसने गाल को सहलाते तथा विचारमग्न होते हुए इतना और जोड़ दिया –

"अपने विनयशील हृदय के कारण मुझे तुम पसन्द हो। तुम्हारे पिता के गुण उनके शरीर में थे, लेकिन तुम्हारे गुण तुम्हारे हृदय, तुम्हारी आत्मा में हैं..."

निकीता ने अपना सोटा रख दिया, झटका देकर उसने अपनी पीठ का थैला संभाला। फिर ख़ामोशी से तीख़ोन को गले लगाया। तीख़ोन ने निकीता को कसकर अपनी बांहों में भीच लिया और साथ ही ज़ोर-ज़ोर से दुहराता गया –

"तो मैं ज़रूर आऊंगा।"

"धन्यवाद।"

उस मोड़ पर जहां से सडक चीड के जगल में खो जाती थी, निकीता रुका और उसने मुडकर देखा। तीख़ोन अब भी बग़ल मे टोप दबाये और फावड़े का सहारा लिये सड़क के बीचोंबीच ऐसे खड़ा था मानो किसी को भी वहां से गुज़रने नही देगा। प्रातःकालीन समीर उसके अरुचिकर सिर के बालो को अस्त-व्यस्त कर रहा था।

दूर से तीख़ोन को देखकर निकीता को न जाने क्यो मूर्ख अन्तोनुश्का की याद आ गयी। निकीता ने अपने क़दम तेज़ कर दिये। उसके विचार घूम-फिरकर इस रहस्यमय व्यक्ति पर जा टिकते और लगता जैसे रह-रहकर उसे सुनायी दे रहा हो –

ईसा फिर से जिन्दा हो गया
गाडी का पहिया खो गया

२

अपने बाप की नवी बरसी तक अर्तामोनोव-परिवार के लोग गिरजा-घर की इमारत को मुश्किल से पूरा कर पाये। जब गिरजा बनकर तैयार हो गया तो उसे सन्त इल्या का पावन नाम दिया गया। इसके बनने मे सात वर्ष लगे थे। इतनी देर के लिये अल्योशा ही ज़िम्मेदार था।

"ख़ुदा इन्तज़ार कर सकता है, उसे जल्दी किस बात की है?" वह अश्रद्धा से चिल्लाकर कहता और दो बार उसने गिरजे के लिये तैयार की गयी ईंटों को दूसरे कामो में लगा दिया। एक बार कारख़ाने की तीसरी इमारत और दूसरी बार एक अस्पताल बनाने के लिये।

उद्‌घाटन-समारोह की समाप्ति और अपने बाप और बच्चों की क़ब्रों पर प्रार्थना के बाद अर्तामोनोव-परिवार के लोग भीड़ के छंट जाने तक क़ब्रिस्तान में ठहरे रहे, फिर शिष्टता मे उल्याना बैमाकोवा को वही छोड़कर, जो उस समय परिवार के लोगों के लिये बने हुए बाड़े में एक बर्च के नीचे बेंच पर बैठी थी, वे सब धीरे-धीरे घर की ओर चल पड़े। घर पहुंचने की उन्हें कोई विशेष जल्दी नही थी, क्योकि पादरियों, परिचितों, कर्मचारियों और मज़दूरो को दिन के तीन बजे दावत के लिये बुलाया गया था।

उस दिन बदली छायी थी, आसमान के रंग-ढंग पतझर के बुरे मौसम जैसे थे और बारिश की उम्मीद दिलानेवाली सीली हवा फर-वृक्षो की झूमती हुई फुनगियों में थके हुए घोडों की तरह हिनहिना रही थी। लाल रग की बालू की सड़क पर लोगो की डोलती हुई काली आकृतिया मिल की ओर सरक रही थीं, एक वृत्त के तीन अर्ध-व्यासो पर ईटो से बनी कारखाने की तीन बारकें ऐसे दिखायी देती थी जैसे तीन लाल उंगलियां जमीन को दबोचे हुए हों।

अपना बेंत हिलाकर अल्योशा ने कहा –

"हमने अपने काम मे कितनी उन्नति की है, यह देखकर पिता जी बहुत खुश होते!"

"जार की हत्या का समाचार सुनकर उन्हें दुःख हुआ होता," प्योत्र ने कुछ सोचकर कहा। वह अपने भाई की हा मे हां नही मिलाना चाहता था।

"उन्हे दुःखी होना तो कोई खास पसन्द नही था। और वह ज़ार की अक़्ल से नही, अपनी अक़्ल से जीते थे।"

टोपी को अपने माथे पर खीचते हुए अल्योशा एक क्षण रुका और मुडकर उसने औरतों की ओर देखा; उसकी नाटी और सुडौल पत्नी सादी-सी काली पोशाक मे बालू पर हल्के-फुल्के कदम रखती और रूमाल से अपने चश्मे को पोछती हुई आ रही थी तथा लम्बी और गोल-मटोल नतालिया की बग़ल मे, जो कन्धों पर कढ़ा हुआ काले रेशम का लबादा ओढे थी और घने, ललछौंहे बालो पर गहरे बैंगनी रंग की टोपी पहने थी, स्कूली मास्टरनी जैसी दिखायी देती थी।

"तुम्हारी पत्नी की सुन्दरता तो दिन दूनी रात चौगुनी बढती जाती है।"

प्योत्र चुप रहा।

"निकीता तो इस बरसी के मौक़े पर भी नही आया। वह हम से नाराज़ है क्या?"

बरखा-बूंदी के दिनों में अल्योशा की छाती और एक टांग में दर्द होने लगता था। इसीलिये वह बेंत के सहारे किंचित लंगड़ाकर चल रहा था। वह क़ब्रों पर की हुई प्रार्थना के नीरस प्रभाव और इस मेघाच्छादित दिन की उदासीनता से किसी तरह छुटकारा पाना चाहता था; अपनी दुराग्रही प्रवृत्ति के अनुसार इस समय भी वह अपने भाई को हठपूर्वक बातचीत में घसीटने की कोशिश में लगा रहा।

"तुम्हारी सास तो शोक मनाने के लिये पीछे ही रह गयी। वह पिता जी को भुला नही पाती। अच्छी वृद्धा है। मैं तीख़ोन के कान मे कह आया था कि वह वही रुका रहे और उसे घर पहुंचा आये। उसकी सांस फूल जाती है और चलने में मुश्किल होती है।"

धीमे स्वर में जैसे मजबूर होकर बड़े भाई ने दोहराया –

"मुश्किल होती है।"

"क्या सो रहे हो? किस मुश्किल की बात कर रहे हो?"

"तीख़ोन को नौकरी मे अलग कर देना चाहिये," प्योत्र ने पहाडी ढलानों पर उगे फर-वृक्षो की ओर देखते हुए उत्तर दिया।

"वह किसलिये?" भाई ने आश्चर्य मे पूछा, "वह आदमी तो बडा ईमानदार, काम में मुस्तैद, मेहनती..."

"और मूर्ख है," प्योत्र ने जोडा।

तब तक औरते भी आ गयीं। ओलगा ने अपने पति मे मधुर, किन्तु उमके छोटे क़द को देखते हुए बहुत ही ऊचे स्वर में कहा –

"मैं नतालिया को इल्या को स्कूल भेजने के लिये मना रही हू, लेकिन वह ऐसा करने मे डरती है।"

गर्भवती नतालिया हर क़दम पर झोक-मी खाती मोटी बत्तख़ की तरह चल रही थी। वह बड़ी-बूढ़ियों के अन्दाज में धीमी और नकियाती आवाज़ में बोली –

"मुझे तो लगता है कि इन स्कूलो से सिर्फ नुकसान ही होता है। येलेना अपने पत्रों में ऐसे-ऐसे शब्द लिखती है कि कुछ भी पल्ले नहीं पड़ता।"

"मबको, मबको पढना चाहिये!" अल्योशा ने अपने माथे का

पसीना पोंछने के लिये टोपी उतारते हुए कड़ाई से कहा। समय से पहले ही उसकी चांद निकल आयी थी। वह कनपटियों से तीखे-तीखे कोण बनाती चली गयी थी जिससे उसका चेहरा बहुत लम्बा लगने लगा था।

नतालिया ने अपने पति को प्रश्नसूचक दृष्टि से देखते हुए पूछा –

"पोम्यलोव ठीक कहता है न कि पढ़-लिखकर लोग सिरफिरे हो जाते है।"

"हां," प्योत्र ने कहा।

"देखा न!" नतालिया ख़ुशी से चिल्लायी। लेकिन उसके पति ने सोचते हुए यह भी कह दिया –

"पढाई ज़रूरी है।"

उसका भाई और ओलगा एकाएक हस पडे और नतालिया ने उन्हे झिड़कते हुए कहा –

"हसते हुए शर्म नही आती? यह भी भूल गये कि हम लोग कहां से लौट रहे है।"

उसकी बाहो मे बाहें डालकर ये लोग तेज़ी से चलने लगे। लेकिन प्योत्र ने चाल धीमी करते हुए कहा –

"मैं मां की प्रतीक्षा करूंगा।"

उस कमबख्त तीख़ोन व्यालोव ने उसे उद्विग्न कर दिया था। प्रार्थना से कुछ ही पहले क़ब्रिस्तान में खडे रहकर कारख़ाने की ओर देखते हुए प्योत्र ने किसी गर्वोक्ति के रूप मे नही, बल्कि जो दिखायी दिया था, उसी के आधार पर अपने आप से ऊची आवाज़ में कहा था –

"धन्धा तो ख़ूब बढ गया है।"

और उसी समय उसे अपने पीछे से शान्त स्वर सुनायी पड़ा –

"तहख़ाने की फफूंद की तरह धन्धा भी अपने आप ही बढता जाता है।"

प्योत्र ने कोई जवाब नही दिया, सिर घुमाकर पीछे देखा भी नही। लेकिन तीख़ोन के शब्दों की स्पष्ट, गुस्ताखी से भरी मूर्खता ने उसका मन खट्टा कर दिया था। एक आदमी काम करता है, सैकड़ों को रोज़ी देता है, दिन-रात अपने कारोबार की चिन्ताओं में डूबा रहता है, उसके कारण ख़ुद अपने आप को भूल जाता है और तभी अचानक कोई अज्ञान, मूर्ख आकर यह घोषित करता है कि कारोबार

तो मालिक के दिमाग़ से नही, अपने बूते से चलता है। और फिर यह व्यक्ति हर वक़्त ही आत्मा और पाप जैसी चीजों के बारे में बड़बड़ाता रहता है।

प्योत्र अर्तामोनोव सड़क के किनारे एक पुराने, कटे हुए चीड के ठूंठ पर बैठ गया और अपने कान की ललरी को ऐठने तथा यह याद करने लगा कि किस तरह एक दिन उसने ओलगा से कहा था –

"अपनी आत्मा के बारे में सोचने का अवकाश ही नही मिलता।"

और तब ओलगा ने उससे एक विचित्र प्रश्न पूछा था –

"क्यों, क्या तुम्हारी आत्मा तुमसे अलग रहती है?"

पहले तो उसने इन शब्दो को एक स्त्री का मज़ाक़ समझा, लेकिन ओलगा का चिड़ियों जैसा मुख गम्भीर था और ऐनक के पीछे से उसकी काली आंखें स्नेहपूर्वक चमक रही थी।

"मैं समझा नही," वह बोला।

"और जब लोग अपनी आत्मा को अपने से अलग करके ऐसे बात करते है, मानो वह कोई गोद लिया गया यतीम बच्चा हो, तो यह बात मैं भी नही समझ पाती।"

"मैं समझा नहीं," प्योत्र ने दुहराया और इस स्त्री के साथ वार्तालाप जारी रखने की उसकी इच्छा एकदम जाती रही। एकदम परायी, अनबूझ पहेली-सी होते हुए भी अपनी सरलता के कारण वह उसे अच्छी लगती थी, यद्यपि उसके मन में यह भय बना रहता था कि इस सरलता की आड़ मे कही चालाकी न छिपी हो।

रही तीख़ोन व्यांलोव की बात, सो प्योत्र उससे हमेशा नफ़रत करता आया था। उसे तो इस आदमी की सूरत से ही चिढ थी। गालो की उभरी हड्डियोवाला उसका धब्बेदार चेहरा, विचित्र आंखे, खोपडी से चिपके और लाल बालो से अधढंके कान, उसकी छितरी दाढी, धीमी, किन्तु चुस्त चाल और उसका भोड़ा और हट्टा-कट्टा शरीर – प्योत्र को इस सबसे चिढ थी। तीख़ोन की शान्त मुद्रा से प्योत्र को चिढ़ के साथ-साथ स्पर्द्धा भी होती थी, यहां तक कि काम के मामले मे उसका अच्छा तौर-तरीक़ा भी प्योत्र को पसन्द नही था। तीख़ोन मशीन की तरह काम करता और शिकायत का मौक़ा बहुत कम देता। प्योत्र को इस बात मे भी चिढ़ होती और उसकी खीझ का एक बड़ा कारण इस बात की चेतना थी कि हर साल के बीतने के साथ-साथ

यह व्यक्ति अपने आपको अर्तामोनोव-परिवार के पहिये का एक अनिवार्य और अभिन्न अंग समझने लगा था। यह विचित्र बात थी कि बच्चे भी उसको वैसे ही प्यार करते थे, जैसे कुत्ते और घोड़े। भेड़िये का शिकार करनेवाला बूढ़ा कुत्ता तुलुन जो ज़ंजीर से बंधा रहने के कारण बहुत गुस्से में रहता था, तीख़ोन के सिवा किसी और को नज़दीक नही फटकने देता था; और प्योत्र का सबसे बड़ा लडका इल्या, जो अत्यन्त उद्दण्ड प्रकृति का बालक था, अपने मां-बाप की तुलना मे उसकी बात कही अधिक मानता था।

व्यालोव को अपनी आंखों मे दूर हटाने के लिये प्योत्र अर्तामोनोव ने उसे गिरजे की चौकीदारी या जगल की देख-भाल के काम पर लगाना चाहा। लेकिन तीख़ोन ने अपना भारी-सा मिर हिलाकर इन्कार कर दिया।

"ये काम मेरे बस के बाहर है। अगर तुम मुझसे तग आ गये हो, तो कुछ दिन मेरे बिना चैन ले लो, मुझे एक महीने की छुट्टी दे दो ताकि मैं जाकर निकीता इल्यीच मे मिल आऊं।"

उसने ठीक यही कहा था, "कुछ दिन मेरे बिना चैन ले लो।" इस बेवक़ूफ़ी और गुस्ताख़ी-भरे वाक्य के साथ-साथ ग़रीब भाई की याद के कारण जो दलदल के पार के जंगल में बहुत दूरी पर एक मामूली-से मठ मे रहता था, प्योत्र का मन एक सन्देह-भरी व्याकुलता से भर गया। तीख़ोन ने निकीता की आत्महत्या के विषय में जो कुछ कहा था, उसे इसके अलावा ज़रूर कोई लज्जाजनक रहस्य मालूम है। ऐसा लगता मानो वह किसी नयी दुर्घटना की प्रतीक्षा कर रहा हो और उसकी मिचमिचाती आंखें प्योत्र को सलाह देती प्रतीत होती –

"मेरे साथ मत उलझो, तुम्हे मेरी जरूरत है।"

तीख़ोन पहले भी तीन बार मठ में हो आया था। अपनी पीठ पर गठरी लटकाकर और हाथ मे लाठी लिये जब वह बड़े इतमीनान से बाहर निकलता, तो ऐसा लगता जैसे वह ज़मीन पर दया करता हुआ चल रहा है। वह तो मानो सभी कुछ दया के रूप मे ही करता था।

लौटने पर निकीता के सम्बन्ध में पूछे गये प्रश्नों के वह मन मारकर उलटे-सीधे उत्तर देता। हमेशा ऐसा लगता कि वह जो कुछ जानता है, सब बताता नहीं है।

"सकुशल है। सम्मान से रहता है। सन्देशों और उपहारों के लिये धन्यवाद दिया है।"

"उसने क्या बातें की?" प्योत्र कुछ और जानने का प्रयत्न करते हुए पूछता।

"एक संन्यासी क्या बातें कर सकता है?"

"फिर भी?" अल्योशा अधीरता से पूछता।

"ईश्वर के सम्बन्ध मे बातें कीं। मौसम में दिलचस्पी रखता है। कहता है कि वर्षा ठीक समय पर नही हो रही। मच्छरों के बारे में शिकायत करता रहा, मच्छर तो वहां बहुत ही ज़्यादा है। आप सबके विषय में पूछता रहा।"

"क्या?"

"आप लोगों के बारे में चिन्तित है, उसे आप लोगो के लिये अफ़सोस होता है।"

"हम लोगो के लिये? किस कारण?"

"सभी कारणो से। आप लोग दौड-धूप करते है और वह इससे मुक्त हो गया है। अतः आपकी चिन्ताओ के कारण उसे आपके लिये अफ़सोस होता है।"

अल्योशा ठहाका मारकर कहता –

"क्या बकवास है!"

तीख़ोन की पुतलियों की चमक ग़ायब हो जाती, आखे खाली-खाली हो जाती।

"मैं यह तो नहीं जानता कि वह क्या सोचता है। मै तो वही बता रहा हू जो उसने कहा था। मैं तो सीधा-सादा आदमी हू।"

"सचमुच तुम बहुत सीधे हो!" अल्योशा व्यग्यपूर्वक सहमति प्रकट करता। "ठीक मूर्ख अन्तोनुश्का की तरह।"

उसी समय हवा का एक झोंका आया जिसने प्योत्र अर्तामोनोव को एक सुवासित गरमाहट से ढंक दिया। दिन और भी उज्ज्वल हो गया। बादलो में नीला गड्ढा-सा बन गया जिसमें से सूरज झांकने लगा। प्योत्र ने सूरज की ओर नज़र दौडायी, उसकी आंखें चौंधिया गयी और वह फिर विचारों की गहराई मे डूब गया।

यह बात एक तरह से मन को कचोटती थी कि निकीता ने मठ को एक हज़ार रूबल देने, और अपने लिये जीवनपर्यन्त एक

सौ अस्सी रूबल की वार्षिक आय की शर्त लगाकर अपने हिस्से की सारी पैतृक जायदाद अपने भाइयो को दे दी थी।

"कौन ऐसी सम्पत्ति छोड़ता है?" प्योत्र बडबड़ाया, लेकिन अल्योशा खुश हुआ था –

"आखिर वह पैसे का करेगा भी क्या? उन निठल्ले पादरियों को मोटा करने के लिये पैसा लेता? उसने ठीक ही किया। हम लोगो का कारबार है, बच्चे है।"

नतालिया तो सचमुच द्रवित हो उठी थी।

"तो वह हमारे सामने अपने अपराध को भूला नही है," उसने सन्तोषजनक स्वर में अपने गुलाबी गालो पर ढलकते आमुओ को पोछते हुए कहा। "इसे येलेना का दहेज समझ लो।"

भाई की यह हरकत प्योत्र के मन पर एक बोझ-सा बन गयी थी, क्योकि निकीता के मठ मे जाने के बारे में नगरवासियो ने एक विद्वेष-भरी कहानी गढ ली थी, जिमसे अर्तामोनोव-परिवार पर काली छाया-मी पड़ती थी।

रहा अल्योशा, सो उमके माथ प्योत्र अच्छी तरह निभाता रहा, यद्यपि वह यह जानता था कि उमके तेज़ भाई ने अपने लिये कारोबार का मबसे आमान काम चुन रखा था: वह निज्नी-नोवगोरोद के मेले में जाता और माल मे दो-एक बार माम्को का चक्कर लगा आता। इन यात्राओं मे लौटकर अल्योशा मास्को के उद्योगपतियो के ठाट-बाट की लम्बी-चौड़ी कहानियां मुनाता।

"वे लोग कुलीनों-रईमो जैसी शान-शौकत मे रहते है।"

"कुलीनों-रईसो की तरह रहना तो कुछ मुश्किल नही," प्योत्र संकेत करता, लेकिन उसका भाई इस सकेत को न पकड़कर अपने ही आवेश मे कहता जाता –

"जब कोई व्यापारी अपना मकान बनवाता है तो महल की टक्कर का। वे अपने बच्चो को पढाते भी हैं।"

यद्यपि वह बहुत ढल गया था, तथापि उसमें यौवन मुलभ चपलता लौट आयी थी और उसकी बाज़ जैसी आखें सदा चमकती रहती थी।

"आख़िर तुम हर वक़्त भौहें क्यों चढ़ाये रहते हो?" वह अपने भाई मे पूछता और फिर उसे उपदेश देता – "कारोबार खुशमिज़ाजी मे करना चाहिये, उसमे तुनकमिज़ाजी और कुढ़न से काम नही चलता।"

प्योत्र समझता था कि अल्योशा का स्वभाव बहुत कुछ उनके पिता से मिलता-जुलता है, लेकिन वह उसके लिये अधिकाधिक पहेली बनता जाता था।

"मैं तो एक बीमार आदमी हूं," अल्योशा अब भी याद दिलाता रहता, किन्तु वह अपने स्वास्थ्य की तनिक परवाह नही करता था। डटकर शराब पीता था, रात-रात भर जमकर जुआ खेलता और औरतों के मामले में भी संयम नही जानता था। आखिर उसके जीवन में मुख्य चीज़ क्या थी? मानो न तो वह स्वयं और न उसका घर। बहुत दिनों से बैमाकोवा के मकान की मरम्मत करवाने की सख्त ज़रूरत थी, लेकिन अल्योशा इस ओर कोई ध्यान ही नही देता था। उसके बच्चे बहुत कमज़ोर पैदा होते और पांच माल के होने मे पहले ही मर जाते। केवल मिरोन ही जिन्दा बचा था, जो हड्डियो का ढाचा मात्र था और इल्या मे तीन बरम बडा था। अल्योशा और उसकी पत्नी को व्यर्थ की चीज़ें जमा करने का हास्यास्पद ख़ब्त था। रईमो के फर्नीचर से उनके कमरे गोदाम बने हुए थे और दोनों ही उसे उपहार देकर बहुत खुश होते थे। उन्होने नतालिया को एक विचित्र अलमारी दी थी जो चीनी मिट्टी से मढ़ी हुई थी और उसकी मा को चमडे की एक विशाल आरामकुर्सी और करेली बर्च का बना हुआ कांमे के काम मे अलंकृत एक शानदार पलंग भेंट किया था। ओलगा मनको के चित्र बनाने मे सिद्धहस्त थी, फिर भी उमका पति अपनी यात्राओ मे ठीक वैसे ही चित्र ख़रीद लाने मे बाज़ न आता।

"तुम पर सनक सवार है," प्योत्र ने कहा जब उसके भाई ने उसे एक विशाल डेस्क भेंट की, जिम पर बेहद जटिल नक़्क़ाशी का काम था और जिसमें असंख्य दराज़ें थी। लेकिन अल्योशा ने डेम्क पर हाथ फेरते हुए बड़े जोश मे कहा –

"ग़ज़ब की खूबसूरत है! अब ऐसी चीज़ें कहा बनती है? मास्को-वाले इम बात को ममझ गये हैं!"

"तुम्हें चांदी की चीज़ें ख़रीदनी चाहिये। रईसों के पास ढेरो चांदी है..."

"देखते चलो, धीरे-धीरे मैं मब ख़रीद लूंगा! माम्को मैं तो.."

अगर अल्योशा पर विश्वाम किया जाता तो लगता जैसे मास्को में मनकियों की ही भरमार है जो अपने व्यापार पर उतना ध्यान नहीं

देते जितना कि शान-शौकत की ज़िन्दगी पर और इसके लिये वे कुलीनों की हवेलियों से लेकर चाय के प्यालों तक हर चीज़ ख़रीद डालते है।

प्योत्र जब भी अपने भाई से मिलने जाता तो उसे सदा एक पीड़ा-जनक स्पर्द्धा की अनुभूति होती। भाई के घर में उसे अपने घर से भी अधिक आराम मिलता। इस बात को समझना कठिन था और न वह यही समझ पाता कि उसे ओलगा क्यों पसन्द है। नतालिया के मुक़ाबले में वह नौकरानी-सी लगती ; लेकिन उसे मिट्टी के तेल के लैम्पों से बेवक़ूफ़ों जैसा डर नही लगता था और न वह यही मानती थी कि विद्यार्थीगण आत्महत्या करनेवाले लोगो की चरबी से मिट्टी का तेल बनाते है। उसकी आवाज़ धीमी और मधुर थी और चश्मे के बावजूद उसकी सुन्दर आंखो की दयार्द्र ज्योति भी ज्यो की त्यो बनी रहती थी। लेकिन जब वह लोगो के विषय में या इधर-उधर की बाते करती तो ऐसा लगता मानो वह बच्चो जैसी उन्हें कही दूर से ही बड़े बचकाना ढंग से देख-सुन रही हो। इस बात से प्योत्र चकरा जाता और खीझ उठता।

"क्या तुम्हारे विचार में सभी निर्दोष है?" प्योत्र व्यंग्यपूर्वक पूछता और वह जवाब देती –

"दोषी तो है, लेकिन मुझे उनकी भर्त्सना करना अच्छा नही लगता!"

प्योत्र उस पर विश्वास न करता।

अपने पति के साथ वह ऐसे व्यवहार करती मानो उससे बड़ी हो और अपने को अधिक अक़्लमन्द समझती हो। अल्योशा इस बात से कभी नाराज़ न होता। वह उसे मौसी कहकर पुकारता और कभी-कभी तग आकर कह उठता –

"मौसी, बस करो! मै तग आ गया हू! मै बीमार आदमी हू और मेरे लिये कुछ मौज कर लेने मे कोई हर्ज नही होगा।"

"बहुत मौज कर ली, काफ़ी है!"

वह अपने पति की ओर देखकर ऐसे मुस्कराती कि प्योत्र अपनी पत्नी के होठो पर भी ऐसी ही मुस्कान देखना चाहता। नतालिया एक आदर्श पत्नी और कुशल गृहिणी थी। खीरो और कुकुरमुत्तो का अचार डालने और मुरब्बे बनाने में उसे कमाल हासिल था। उसके घर के नौकर-चाकर घड़ी के पुर्ज़ों की तरह काम करते। नतालिया अपने पति को प्यार करते कभी न थकती और उसका प्यार मलाई की तरह गाढ़ा

और स्थिर था। वह हाथ रोककर ख़र्च करती।

"अब बैंक में हमारा कितना पैसा है?" वह पूछती और फिर आतुर होकर कहती, "तुम्हें पूरा भरोसा है न कि यह बैंक अच्छा है, कही उसका दिवाला तो नहीं निकल जायेगा?"

रुपया-पैसा संभालते समय उसके सलोने मुख की मुद्रा कठोर हो जाती, वह अपने रसीले होंठों को कसकर भीच लेती और उसकी आंखों में एक तीखी और चिकनी-सी चमक आ जाती। गन्दे और रग-बिरंगे नोटो को गिनते समय वह उन्हें अपनी गुदगुदी उंगलियो से ऐसी सतर्कता से छूती, मानो डरती हो कि कही वे मक्खियो की तरह उड़ न जायें।

"तुम और अल्योशा आमदनी का बंटवारा तो ठीक तरह से करते हो?" प्योत्र को अपने प्यार से निहाल करके वह बिस्तर मे पूछती। "वह तुम्हें धोखा नही दे रहा है? वह बड़ा चलता पुरज़ा है! वह और उसकी बीवी दोनों बेहद लालची है। हर चीज़ को हडप लेना चाहते हैं, हडपते जाते है।"

वह सोचती कि उसके चारो ओर उचक्के ही उचक्के है और कहती –

"मैं तीख़ोन के सिवा और किसी पर भी विश्वास नही करती।"

"मतलब यह कि मूर्ख पर विश्वास करती हो," प्योत्र अन्यमनस्क भाव से बुदबुदाता।

"मूर्ख, लेकिन ईमानदार है।"

जब प्योत्र पहली बार उसे निज्नी-नोवगोरोद के मेले में ले गया तो पूरे देश की इस व्यापार-मंडी की विशालता से चकित होकर उसने अपनी पत्नी से पूछा – "कहो, तुम्हें कैसा लगा?"

"बहुत अच्छा," उसकी पत्नी ने जवाब दिया। "यहां सभी कुछ ढेरो-ढेर है और सभी चीज़ें हमारे यहां से सस्ती हैं।"

और फिर उसने वे सब चीज़ें गिनानी शुरू कर दी, जो उन्हें ख़रीदनी थीं।

"बत्तीस सेर साबुन, मोमबत्तियो की एक पेटी, मिश्री और एक बोरी दानेदार ..."

सरकस में कलाकारो के अखाड़े में आने पर उसने अपनी आंखें बन्द कर लीं।

"हाय, कितने बेहया है! अरे, ये तो लगभग नंगे हैं! मेरे बच्चा होने को है—मुझे इनकी ओर नही देखना चाहिये। तुम्हें मुझे ऐसे भयानक स्थानों पर नही लाना चाहिये—मेरे पेट मे शायद बेटा है।"

ऐसे अवसरों पर प्योत्र अर्तामोनोव का ऊब के मारे दम घुटने लगता, उसी तरह की ऊब के मारे जैसी वतरक्षा नदी मे जमी हरी काई को देखकर महसूस होती है, जिसमें केवल मोटी और भद्दी टैंच मछली ही ज़िन्दा रहती थी।

नतालिया अब भी सदा की भांति उतनी ही देर तक तथा उसी तरह कर्त्तव्यपरायणता से प्रार्थना करती। प्रार्थना के बाद वह बिस्तर मे घुसकर बड़े यत्न से प्योत्र को अपने कोमल तथा गुदगुदे शरीर का उपभोग करने को उकसाती। उसकी त्वचा मे भण्डार घर की गन्ध आती, जहां अचार, दम की हुई मछलिया और गोश्त आदि रखे रहते थे। प्योत्र को बार-बार यह अनुभव होता कि उसकी पत्नी प्यार के मामले में ज़रूरत से ज़्यादा उत्साह दिखाती है, उसका प्यार उसे निचोड रहा है।

"मुझे तग नही करो, मै थक गया हू," वह कहता।

"तो तुम सो जाओ, भगवान तुम्हारा भला करे," वह नम्रता से उत्तर देती और स्वय भी सो जाती। नीद मे उसकी भौंहें मानो आश्चर्य मे ऊपर उठ जाती, उसके होंठ मुस्कराते, मानो उसकी बन्द आंखें किसी अपूर्व दृश्य की छटा देखने में मग्न हो।

ऐसे ऊब-भरे क्षणो मे जब प्योत्र को विशेष और स्पष्ट रूप से यह अनुभव होता कि नतालिया उसे अच्छी नही लगती तो वह अपने को उस भयानक दिन का स्मरण करने को विवश करता, जब उसके पहले पुत्र का जन्म हुआ था। अट्ठारह घंटो की लम्बी यन्त्रणापूर्ण प्रतीक्षा के बाद भयभीत और आसू बहाती हुई उसकी सास उसे उस कमरे में ले गयी थी जहा एक विचित्र प्रकार की घुटन थी। उसकी पत्नी एक अस्त-व्यस्त बिस्तर पर छटपटा रही थी, तीव्र पीड़ा के कारण उसकी आंखें ऊपर की ओर चढ़ी हुई और भयानक लग रही थी, उसके बाल बिखरे हुए थे, वह पसीने से तर थी और उसे पहचानना भी कठिन था। उसके भीतर आने पर वह बहुत ज़ोर से चीख़ते हुए कह उठी थी—

"प्योत्र, विदा, मैं मर रही हूं। लड़का पैदा होगा... प्योत्र, मुझे क्षमा कर देना..."

लगातार दांतों से काटने के कारण उसके सूजे हुए होंठ लगभग हिले-डुले नही थे और ऐसे लगा था, मानो उसकी आवाज़ गले से नही, बल्कि नीचे तक लटकते हुए उसके पेट से आ रही हो। उसका पेट भयानक रूप से फूला हुआ था, जैसे तुरंत फटने को हो। नीला-सा पड़ गया उसका चेहरा भी फूला हुआ था, वह थके-हारे कुत्ते की तरह हाफ रही थी और उसकी सूजी हुई जीभ बाहर लटक रही थी। वह बार-बार अपने बालो को नोचती थी, लगातार ज़ोर से चीख़ती-चिल्लाती थी मानो किसी को समझाने या किसी पर हावी होने का प्रयत्न कर रही हो जो उसकी इच्छा पूरी करने को अनिच्छुक या असमर्थ हो।

"लड़...क...ा. "

उस दिन तेज़ हवा चल रही थी। खिड़की के बाहर बर्डचेरी के वृक्ष में सरसराहट हुई और उसमे खिडकी के शीशे पर छाया पड़ी। प्योत्र विकृत छाया देखकर और पत्तो का मर्मर सुनकर बौखला उठा था और उसने चिल्लाकर कहा था –

"पर्दा गिरा दो! क्या अन्धे हो?"

और वह भयभीत होकर कमरे से बाहर भाग गया था। औरत चीख़ती जाती थी:

"आ...ा..ा...ा "

क़रीब डेढ घटे के बाद उसकी सास आयी। ख़ुशी और थकान से उसके मुह से बोली नहीं निकल रही थी, वह प्योत्र को दुबारा उसकी पत्नी के पास लिवा ले गयी। नतालिया ने प्योत्र को अलौकिक विजय की गर्व-भावना से देखा, फिर धीरे से ऐसे बोली जैसे नशे में हो –

"लड़का। बेटा।"

वह उसके ऊपर झुक गया और अपना कपोल उसके कन्धे से सटाकर बुदबुदाया –

"मैं जीवन भर इस क्षण को नही भूलूंगा, माता। विश्वास करो! धन्यवाद..."

पहली बार उसने नतालिया को माता कहा था। इस एक शब्द में उसका सारा डर, सारी ख़ुशी व्यक्त हो गयी थी। नतालिया ने

आंखे मूंदकर अपने भारी और अशक्त हो गये हाथ मे उसके सिर को सहलाया था।

"पूरा पहलवान है," बड़ी नाक और चेचकरू चेहरेवाली दाई अभिमान से बच्चे को दिखाते हुए ऐसे बोली, जैसे उसने ही उसे जना हो। लेकिन प्योत्र ने अपने लड़के को नही देखा। उसे अपनी पत्नी के मुरझाये चेहरे के अलावा, जहां आखो के स्थान पर बड़े-बड़े गढ़े थे, और कुछ नज़र नही आ रहा था।

"क्या यह नही बचेगी?"

"कैसी बात कर रहे हो!" चेचकरू दाई ने ऊचे और खुशमिजाजी से उत्तर दिया। "अगर औरते ऐसे ही मरने लगती, तो दुनिया में कोई दाई ही न होती।"

अब वह पहलवान आठ साल का हो गया था। लम्बे क़द, ऊचे माथे, थोड़ी ऊपर की ओर उठी हुई नाकवाले उसके चेहरे पर गहरे नीले रग की बड़ी और गम्भीर आखें चमकती थी। अल्योशा की मा और निकीता की ऐसी ही आखें थी। पहले लडके इल्या के पैदा होने के एक साल बाद दूसरा लड़का याकोव पैदा हुआ, लेकिन पाच साल की उम्र होते न होते चौडे मस्तकवाला इल्या सारे घर का केन्द्र-बिन्दु बन गया था। सब लोगो का लाड-प्यार पाने से वह किसी की भी बात नही मानता था, स्वच्छन्द जीवन व्यतीत करता और आश्चर्यजनक रूप मे लगातार कष्टकर और खतरनाक परिस्थितियों में पड़ता रहता था। उसकी शरारतें भी असाधारण ढंग की होती थी और इससे उसके पिता में लगभग गर्व की भावना जागृत होती थी।

एक दिन प्योत्र ने देखा कि उसका बेटा ओसारे में बैठा एक पुरानी नाद मे ठेलागाडी का पहिया जोड रहा है।

"यह क्या बनेगा?"

"जहाज़।"

"यह चलेगा नही।"

"मैं इसे चलाकर छोड़ूंगा!" उसके बेटे ने अपने दादा जैसे ओजस्वी ढग मे कहा। उसकी सारी मेहनत व्यर्थ जायेगी, लड़के को यह समझा सकने के प्रयत्न मे असफल होकर प्योत्र ने सोचा –

"दादा की तरह इरादे का पक्का है।"

इल्या अपने प्रयत्नों मे डटा रहा, लेकिन तमाम कोशिश के बाद

19 1176

भी वह नांद में दो पहिये जोड़कर जहाज़ न बना सका। तब उसने कोयले से नांद के दोनों ओर पहिये बनाये, उसे नदी की ओर घसीट ले गया और पानी में उतार दिया। उस पर सवार होते ही वह कीचड़ में फंस गया। डरने के बजाय उसने कपड़े धो रही औरतों को पुकारकर कहा –

"अरी ओ! मुझे निकालो, नही तो मैं डूबा ..."

नतालिया ने इल्या की खूब मरम्मत की और नांद के टुकड़े-टुकड़े करवा डाले। इस दिन के बाद इल्या अपनी मां की तो अपनी दो वर्ष की बहन तान्या जितनी भी परवाह न करता। वह सदा कोई न कोई नई चीज़ बनाने में व्यस्त रहता। चीज़ों को इकट्ठा करता, छीलता, तोड़ता और जोड़ता। उसको देखकर उसके पिता ने सोचा –

"यह ज़रूर कुछ न कुछ बनेगा। निर्माता।"

कभी-कभी तो इल्या लगातार कई दिनों तक अपने पिता के प्रति उदासीन बना रहता। फिर अचानक ही दफ़्तर में घुसकर वह प्योत्र के घुटनों पर चढ़ बैठता और कहता –

"मुझे कोई कहानी सुनाओ।"

"मेरे पास फ़ालतू समय नही है।"

"मेरे पास भी फ़ालतू समय नही है।"

हंसकर प्योत्र अपने काग़ज़ों को एक ओर रख देता।

"तो सुनो! कभी कही कुछ किसान रहते थे ..."

"किसानों के बारे में मुझे सब मालूम है। कोई हंसी-मज़ाक़ की कहानी सुनाओ।"

प्योत्र को हंसी-मज़ाक़ की कोई कहानी नही आती थी।

"तो तुम अपनी नानी के पास जाओ।"

"उसे जुकाम है।"

"तो मां के पास जाओ।"

"वह मुझे नहलाने लगेगी।"

प्योत्र अर्तामोनोव को हंसी आ गयी, केवल बेटा ही उसमें ऐसी मुक्त खुशी पैदा कर सकता था।

"तो फिर मैं तीख़ोन के पास जाता हूं," इल्या ने कहा और वह नीचे उतरने के लिये अपने पिता के घुटनों से सरकने लगा। प्योत्र ने उसे थाम लिया –

"तीख़ोन तुम्हें क्या बताता है?"

"सब कुछ।"

"फिर भी?"

"वह सब कुछ जानता है। वह बालाख़्ना में रह चुका है, जहां लोग किश्तियां और बजरे बनाते है..."

जब इल्या कही से गिर पड़ा और उसके चेहरे पर चोट आ गयी तो उसकी मां ने उसे ख़ूब पीटा।

"छतों के ऊपर मत चढ़ा करो, नही तो तुम अपाहिज और कुबड़े हो जाओगे!"

लड़का गुस्से से लाल-पीला हो गया, लेकिन रोया नही, उल्टे उसने मां को धमकी दी –

"अगर तुमने मुझे फिर मारा, तो मैं मर जाऊंगा!"

मां ने पिता को उसकी यह धमकी बतायी। वह हंसकर बोला –

"तुम उसे पीटो नही! मेरे पास भेज दो।"

लड़का पीठ पीछे हाथ बाधे हुए चौखट के पास आकर खड़ा हो गया। कुतूहल और वात्सल्य के अतिरिक्त और कुछ भी अनुभव न करते हुए प्योत्र ने पूछा –

"तुम अपनी मां के साथ गुस्ताख़ी क्यो करते हो?"

"मैं मूर्ख नही हू," लडके ने गुस्से से उत्तर दिया।

"अगर गुस्ताख़ी करते हो तो इसका मतलब है कि मूर्ख हो।"

"वह मुझे पीटती है। तीख़ोन का कहना है कि केवल मूर्ख को ही पीटा जाता है।"

"तीख़ोन? तीख़ोन तो स्वयं..."

परन्तु किसी कारण से प्योत्र तीख़ोन को मूर्ख कहते हुए हिचकिचा गया। वह कमरे में टहलते हुए दरवाज़े पर खड़े इल्या को ध्यान से देख रहा था, लेकिन उसकी समझ में नहीं आया कि क्या कहे।

"तुम भी तो अपने भाई याकोव को पीटते हो।"

"वह मूर्ख है और फिर उसे चोट भी नही लगती – वह मोटा है।"

"अगर वह मोटा है, तो इसका मतलब है कि तुम उसे पीटा करो?"

"वह लालची है।"

प्योत्र को लगा कि वह अपने लड़के को क़ाबू में नहीं रख सकता

और लड़का भी इस बात को जानता है। शायद उसके कान खीचने से ज़्यादा लाभ होता और यह आसान भी रहता, लेकिन वह उसके घुंघराले बालोंवाले प्यारे सिर की ओर हाथ नही उठा पाता था। उसकी नीली आंखों की स्थिर और आशा-भरी दृष्टि के सामने सज़ा देने का विचार आते ही प्योत्र को घबराहट होती। इसमें धूप का भी हाथ था, क्योंकि अक्सर जिस रोज़ धूप खिलती, इल्या की शरारतें ज़ोर पकड़ लेती। झिड़कियां देते-देते प्योत्र को उस ज़माने की याद आ जाती, जब उसे स्वयं वही शब्द सुनने पडे थे, जिनका उसके दिल-दिमाग़ पर कोई प्रभाव नही पडता था। उनसे सिर्फ़ ऊब या कुछ समय के लिये डर ही महसूस होता था। लेकिन पिटाई को, वह चाहे कितनी ही वाजिब बात के लिये क्यों न की गयी हो, आसानी से नही भुलाया जा सकता। इस बात को भी प्योत्र भली-भांति जानता था।

लाल-लाल गालोंवाला दूसरा लड़का याकोव गोल-मटोल था और उसका चेहरा-मोहरा अपनी मां से मिलता-जुलता था। याकोव अक्सर रोता रहता और उसे तो मानो इसमे आनन्द आता हो। आसू बहाने से पहले वह हाफने लगता, गाल फुला लेता और अपनी मुट्ठियो से आखो को ज़ोर से मलता। वह डरपोक और पेटू था। ठूंसकर खाने के बाद जब उसका शरीर भारी हो जाता तो या तो सोता या शिकायत करता –

"मां, मुझे ऊब महसूस हो रही है!"

बड़ी लड़की येलेना सिर्फ़ गर्मियों मे घर आती थी। वह तो मानो परायी-सी युवती हो गयी थी।

सात वर्ष की आयु में इल्या ने पादरी ग्लेब से पढ़ना शुरू किया था। पर यह देखकर कि मिल के मुंशी नीकोनोव का बेटा धर्म पुस्तक के बजाय तस्वीरोंवाली वर्णमाला की पुस्तक 'हमारी अपनी बोली' पढ़ता है, उसने अपने पिता से कहा –

"मैं अब आगे नहीं पढूंगा। मेरी जीभ दुखती है।"

बहुत देर तक और प्यार से पूछने पर ही उसने बताया –

"पाशा नीकोनोव तो हमारी अपनी बोली सीख रहा है और मैं किसी और की।"

लेकिन कभी-कभी मानो किसी बाधा से रुद्ध होकर यह तेज़-तर्रार लड़का पहाड़ी पर किसी चीड़ के पेड़ के नीचे घंटों अकेला बैठा रहता

और वतरक्षा नदी के कीचड़-भरे हरे पानी में सूखे शकुफल फेंकता रहता।

"ऊब महसूस करता है," बाप सोचता।

वह स्वयं हफ़्तों और महीनों तक अपने कारोबार के चक्कर में फसे रहने के बाद अचानक धुंधले विचारों के घने कुहासे में डूब जाता। उस पर बुरी तरह ऊब हावी हो जाती और तब वह यह न समझ पाता कि आखिर कौन-सी चीज़ उसे अधिक संज्ञाशून्य बना रही है– उसकी व्यापार की चिन्ताएं या एक ही ढर्रे की इन चिन्ताओं से उत्पन्न ऊब। अक्सर ऐसे दिन वह सामने पडनेवालों से ज़रा-ज़रा-सी बात पर घृणा करने लगता– किसी को कनखियो से देखने के कारण, तो दूसरे को कोई अटपटा शब्द बोलने के कारण। तो इस बरखा-बूंदी के दिन तीख़ोन व्यालोव से उसे लगभग नफरत हो रही थी।

प्योत्र की सास को बाह का सहारा देकर व्यालोव चला आ रहा था और यह बता रहा था–

"हम व्यालोवों का बहुत बड़ा कुटुम्ब है।"

"तो फिर तुम अपने नाते-रिश्तेदारों के साथ क्यो नही रहते?" प्योत्र ने आकर बैमाकोवा की दूसरी बाह को सहारा देते हुए पूछा। तीख़ोन चुप रहा और एक तरफ़ को हट गया। अर्तामोनोव बडे कठोर और रूखे स्वर मे इस प्रश्न को दुहराता रहा। इस पर तीख़ोन ने अपनी वर्णहीन आखों को सिकोडकर उदासीन भाव से उत्तर दिया–

"क्योंकि उनमें से अब कोई नही बचा। वे सब ख़त्म कर दिये गये।"

"ख़त्म कर दिये गये? क्या मतलब है तुम्हारा? किसने उन्हें ख़त्म कर दिया?"

"मेरे दो भाई तो सेवास्तोपोल खदेड़ दिये गये और वहां वे मार डाले गये। सबसे बडा भाई तब विद्रोहियो से जा मिला था, जब किसानो ने अपनी मुक्ति के लिये विद्रोह किया था। पिता जी भी विद्रोह मे शामिल थे। जब लोगो को ज़बरदस्ती आलू खिलाये जाने लगे तो उन्होंने उन्हें खाने से साफ़ इन्कार कर दिया और जब उन्होंने उन्हें कोड़ों से पीटना चाहा तो वे कही छिपने को भाग निकले। उनके पैरों के नीचे की बर्फ़ टूट गयी और वह डूब गये। मेरी मां ने फिर मछुए व्यालोव से शादी कर ली, जिससे मै और मेरा भाई सेर्गेई पैदा हुए..."

"और तुम्हारा भाई कहां है?" उल्याना ने आंखें झपकाते हुए पूछा। उसकी आंखें अब भी रोने के कारण सूजी हुई थीं।

"उसकी हत्या कर दी गयी।"

"यह सब ऐसे सुना रहे हो मानो तुम मरे हुओं के लिये जाप कर रहे हो," प्योत्र अर्तामोनोव ने चिढ़कर कहा।

"उल्याना इवानोव्ना मुझसे पूछ रही थी... उनका मन उदास था, इसलिये मैं..."

उसने अपनी बात पूरी नहीं की। उसने झुककर सड़क पर पड़ी एक सूखी टहनी उठाकर एक ओर को फेंक दी। एक-दो मिनट तक सब चुपचाप चलते गये।

"तुम्हारे भाई को किसने मारा?" अचानक ही अर्तामोनोव ने पूछा।

"कौन मारता है? कोई आदमी ही मारता है," व्यालोव ने शान्ति से उत्तर दिया। बैमाकोवा ने ठंडी सास लेकर कहा –

"वज्रपात भी... मार डालता है..."

...गर्मियों के मध्य में मुसीबत के दिन आ गये। धुधले पीले आकाश के नीचे पृथ्वी पर भून डालनेवाली गर्मी का आतंक छा गया। पीटवाली दलदलों और जंगलों में आग लग जाती। ख़ुश्क और गर्म हवा के झोंके प्रचण्ड शक्ति से उठकर एक तेज़ सीटी की-सी आवाज़ के साथ पेड़ों पर से झड़ते हुए पत्तों को तोड़-मरोड़ डालते, पिछले साल की बची-खुची मटमैली चीड़ की नुकीली पत्तियों को बिखेर देते, धूल के रेतीले बादलो को उड़ाते हुए, जिनमें लकड़ी का कूड़ा-करकट और मुर्ग़ियो के पर मिले होते; ये झोंके लोगो को ज़ोर से धकेलते, उनके कपड़ों को फाड़ डालने का यत्न करते और अन्त में जगल में छिप जाते, जिसके परिणामस्वरूप आग की लपटें और भी तेज़ी से ऊंची उठने लगती।

कारख़ाने में बीमारी फैली थी। तकलों के शोर और चरख़ियो की घुरघुराहट के बीच अर्तामोनोव को लगातार ख़ुश्क गले से खांसने की आवाज़ें सुनायी देती। करघों पर काम करनेवाले लोगों के चेहरे क्षुब्ध और उदास होते, उनकी गति-विधियां ढीली-ढाली होती। उत्पादन कम हो गया, कपड़े की गुणवत्ता भी काफ़ी ख़राब हो गयी। काम से ग़ैरहाज़िर रहनेवालों की संख्या बहुत बढ़ गयी, मर्दों ने ख़ूब शराब पीना

शुरू कर दिया था और स्त्रियां घर पर रहकर बीमार बच्चों की देख-भाल करती थीं। हंसमुख और बच्चों के-से गुलाबी चेहरेवाला बूढ़ा बढ़ई सेराफ़ीम आये दिन नन्हे ताबूत बनाने में व्यस्त रहता; अक्सर वयस्कों के लिये भी उसे फ़र-वृक्ष के पीले तख़्तों को जोड़कर ताबूत तैयार करने पड़ते।

"हमें दावत और मौज की व्यवस्था करनी चाहिये," अल्योशा ने आग्रह किया। "ताकि हम लोगों का मन प्रसन्न कर उन्हें उत्साहित कर सकें!"

पत्नी के साथ मेले के लिये रवाना होने के पहले भी उसने अपनी सलाह को दोहराया –

"उनके लिये दावत और मौज की व्यवस्था करनी चाहिये, उनमें स्फूर्त्ति आ जायेगी! मैं सच कहता हूं कि मन हल्का होने मे सब रोग दूर हो जाते हैं!"

"तो तुम इसका प्रबन्ध कर डालो," प्योत्र ने अपनी पत्नी से कहा। "बढिया ढंग मे और बहुतायत से।"

नतालिया बड़बड़ाने लगी। प्योत्र ने झल्लाकर पूछा –

"क्या हो गया?"

नतालिया ने अप्रसन्नता प्रकट करते हुए अपने पेशबन्द के छोर से ज़ोर से नाक साफ़ की और जवाब दिया –

"कुछ नही, मैंने सुन लिया है।"

दावत और मौज का कार्यक्रम प्रार्थना से शुरू हुआ। पादरी ग्लेब ने बहुत गम्भीरता से प्रार्थना की। वह पहले से अधिक दुबला और रूखा हो गया था। अपरिचित शब्दों का उच्चारण करते समय उसकी फटी हुई आवाज़, मानो उसकी अन्तिम क्षीणप्राय शक्ति से याचना कर रही थी। तपेदिक़ के मारे बुनकरों के बेरग चेहरों पर कठोरता और कुढ़न के चिह्न थे। वे श्रद्धापूर्वक बुत बने खड़े रहे। अनेक स्त्रियां सिसकियां भरकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी और जब पादरी ने अपनी उदास आंखें धुंधले आकाश की ओर उठायी, तो लोग भी कुहासे में छिपे हुए धुंधले और आभाहीन सूर्य को याचना-भरी दृष्टि से देखने लगे। शायद उनका ख़्याल था कि विनम्र पादरी आकाश में किसी को देख रहा है जो उसे जानता है और उसकी प्रार्थना सुन लेता है।

प्रार्थना के बाद औरतों ने सड़क पर मेज़ें लगा दीं और कारख़ाने

के तमाम मज़दूर गोश्त से लबालब भरे कटोरो के गिर्द बैठ गये। हरेक कटोरे के गिर्द दस व्यक्ति बैठे थे और प्रत्येक मेज़ पर घर की बनी तेज़ बियर की बालटी और वोद्का की एक बोतल रखी थी। इससे क्षीण और मृतप्राय लोगों में भी जान आ गयी। ज़मीन पर छायी घुटन और नीरसता इकट्ठी होकर दलदलों और जलते हुए जंगलों में हट गयी। सारी की सारी बस्ती खुशी के क़हक़हों से गूज उठी – लकड़ी के चम्मचों की खटखटाहट, बच्चो की हसी, औरतों की झिड़कियो तथा नवयुवको के मज़ाक़ों से सारा वातावरण गूज उठा।

लोगों को मज़ेदार खाना खाने में तीन घण्टे से भी अधिक समय लग गया। इसके बाद नशे में चूर पियक्कड़ो को थामकर उनके घर पहुंचाया गया और बहुत से छोकरे साफ-सुथरे और सलीकेदार सेराफ़ीम बढ़ई को घेरकर बैठ गये। उसकी नीली सूती कमीज़ और पतलून का रग बहुत बार धुलने के कारण फीका पड़ गया था। उसकी तीखी नाकवाला गुलाबी चेहरा खुशी की उत्तेजना मे दमक रहा था, उसकी मिचमिचाती, चमकीली और अभी तक बुढापे की छाप से मुक्त आखें चमक रही थी। ताबूत बनानेवाले इस हसमुख व्यक्ति के चेहरे पर एक प्रकार की गुद-गुदानेवाली फुर्ती और अलौकिक प्रसन्नता छायी रहती, गूस्ली बाजे को नुकीले घुटनो पर रखकर एक बेच पर बैठा हुआ वह अपनी काली और अश्वमूला जैसी गांठदार उंगलियो से तारो को बजा रहा था और जान-बूझकर अन्धे भिखारियो की तरह करुण नकियाते स्वर मे गाने लगा –

लोगो सुनो, तुम्हे किस्सा हम, बढ़िया एक सुनाते है
यह तो एक पहेली, मानो हम तुमसे बुझवाते है।

उसने लडकियो की ओर देखकर आख मिचमिचायी। उन्नत वक्ष और ढिठाई-भरी आखोवाली उसकी सुन्दर बेटी जिनईदा, जो तागा लपेटने का काम करती थी, बड़े रोब से उस झुण्ड में खडी थी। सेरा-फ़ीम का स्वर और भी अधिक ऊचा और नैराश्यपूर्ण हो गया –

अपने प्यारे स्वर्ग लोक मे, ईसा सुख से बैठे है
महक बसी सब ओर, हवा मे अपना मन बहलाते है,
लकडी का सिहासन उनका, ऊपर लिडन की छाया
प्यारी-प्यारी ठण्डक, जिसमे सुख पाये उनकी काया,

बाट रहे वे सोना-चादी, बाट रहे हीरे-मोती,
दौलत मिले उन्ही को, जिनकी किस्मत है अच्छी होती,
जो अमीर है, वे ही उनसे, ऐसी दौलत पाते है
यह इनाम है इसी चीज का, क्योंकि धनी कहलाते है,
जो गरीब है, उनके प्रति वह, अपना प्यार दिखाते है
जो भूखे है, लुज-पुज है, खाना उन्हे खिलाते है।

उसने फिर लड़कियो की ओर आंख मिचमिचायी और अचानक नाच की धुन बजानी शुरू कर दी। उसकी बेटी पतली आवाज में कूककर आगे उछली। जिप्सियों की तरह उसके हाथ सिर के पीछे बंधे हुए थे और उसके विशाल उरोज कम्पित हो रहे थे। अपने पिता के गीत की खनकती आवाज़ और तारो की झनक के साथ ताल मिलाते हुए उसने नाचना शुरू किया।

जो ईसा से चादी पाये
उनकी टागे टूटेगी,
सोना लेनेवालो पर तो
कड़क बिजलिया टूटेगी,
जो भी हीरे-मोती लेगे
उनकी आखे फूटेगी।

लडको की ऊची सीटियो मे सगीत की ध्वनि और सेराफीम के मधुर गीत का स्वर दब गया। तब लड़कियों और औरतों ने नाच की द्रुत लय मे गाना छेड़ा —

पोत बढे जाते जल्दी मे, सागर के उस पार
ललनाओ तक पहुचायेगे, वे सुन्दर उपहार।

और ज़िनईदा ने पाव थिरकाते हुए अपने ऊचे स्वर में ये पक्तिया गायी —

पाशा ने पालाशा को
चिथडा भेजा चुन के,
तेरेश्का ने मत्र्योना को
भोज-पत्र के झुमके।

इल्या अर्तामोनोव पावेल नीकोनोव के साथ लकड़ियो के ढेर पर बैठा था। यह छोकरा हड्डियों का ढांचा मात्र था। उसका बूढ़ों का सा

और गंजा-सा सिर उसकी लम्बी गर्दन पर बेचैनी से हिलता रहता था। उसके आभाहीन, रुग्ण चेहरे पर सहमी-सहमी भूरी आंखें चंचलता से इधर-उधर देखती रहती थीं। नीले वस्त्रोंवाला बुड्ढा इल्या को बहुत भाया। उसे गूसली बाजे की ध्वनि और सेराफ़ीम का सुखद, उल्लास और विनोद से भरा गीत अच्छा लग रहा था। लेकिन चटकीले लाल रंग के ब्लाउज़वाली औरत यकायक उचककर उठी और चक्कर काटकर नाचने लगी, जिससे सब कुछ गड़बड़ हो गया। अनाप-शनाप सीटियां बजने लगी और चीखती आवाज़ में बेसुरा गाना शुरू हो गया। उसके मन में इस स्त्री के प्रति घृणा उबलने लगी जब नीकोनोव ने धीमे स्वर में कहा –

"ज़िनईदा बड़ी बदचलन है। वह हर किसी से राज़ी है। तुम्हारे बाप के साथ भी, मैने ख़ुद उन्हें उसके साथ छेडख़ानी करते देखा था।"

"किसलिये?" इल्या ने बात न समझते हुए पूछा।

"यह भी कोई समझाने की बात है!"

इल्या ने अपनी आंखें झुका ली। वह जानता था कि लडकियों के साथ क्यों छेड़ख़ानी की जाती है और उसे अपने पर झुंझलाहट हुई कि उसने अपने मित्र से ऐसी बात पूछी।

"तुम झूठ बोलते हो," उसने नीकोनोव के शब्दों को न सुनते हुए ग्लानि से भरकर कहा। उसे यह उपेक्षित, डरपोक और कारख़ाने की लड़कियो की एक जैसी नीरस कहानियां सुनानेवाला सुस्त छोकरा अच्छा नही लगता था। लेकिन नीकोनोव कबूतरों का पारखी था और इल्या को कबूतरों का बड़ा शौक़ था। साथ ही उसे मज़दूरों की बस्ती के छोकरों से अपने इस दुर्बल साथी की रक्षा करके ख़ुशी भी होती थी। इसके अलावा नीकोनोव जो कुछ भी देखता उसे एक दिलचस्प अन्दाज़ में बयान करना भी जानता था, यद्यपि उसे अप्रिय चीज़ों के अतिरिक्त और कुछ दिखायी ही नहीं देता था और वह उनके बारे में उसी लहजे में बात करता जिस लहजे में इल्या का छोटा भाई याकोव बाते करता था, मानो दुनिया की हर चीज़ के विरुद्ध शिकवा-शिकायत कर रहा हो।

इल्या कुछ देर तक चुपचाप बैठा रहा, फिर उठकर घर चला गया। बगीचे में धूल से भूरे पड़े वृक्षों की गरम छांह में चाय लगायी जा चुकी

थी। बड़ी मेज़ पर मेहमान बैठे थे। शान्त स्वभाववाले पादरी ग्लेब, जिप्सियों जैसे काले और घुंघराले बालोंवाला मेकेनिक कोप्तेव और मुंशी नीकोनोव भी था जिसने अपने मुंह को इतना रगड़-रगड़कर साफ़ किया था कि यह समझना कठिन था कि वह कैसा है। उसकी बालोंवाली छोटी-सी नाक थी, माथे पर गुमटा था, नाक और गुमटे के बीच मुस्कान फैली थी जो त्वचा की कांपती सिलवटों से आंखों की छोटी-छोटी सेंधों को ढक लेती थी।

इल्या अपने पिता की बग़ल में जा बैठा। उसे विश्वास नही हुआ कि उसके बाप जैसा नीरस व्यक्ति उस बेहया लड़की से कोई सम्बन्ध रख सकता है। पिता ने कुछ कहे बिना अपने बलिष्ठ हाथ से उसके कन्धे को थपथपाया। वे सब गर्मी के मारे बेहाल हो रहे थे और उनके बदन से पसीने की धारें छूट रही थी। लोग मन मारकर बात करते थे। सर्दियों की उजली, पालेवाली रात की तरह सिर्फ़ कोप्तेव की ऊंची और साफ़ आवाज़ सुनायी दे रही थी।

"हम बस्ती तो जायेंगे न?" मां ने पूछा।

"हां, मैं अभी तैयार होकर आता हूं," पिता ने कहा। वह उठकर घर की ओर चल दिया। थोड़ी देर बाद इल्या भी उसके पीछे-पीछे चल दिया और ओसारे में उससे जा मिला।

"क्या बात है?" पिता ने दुलार से पूछा। बेटे ने आंखें मिलाते हुए पूछा –

"तुमने ज़िनईदा के साथ छेड़खानी की थी या नही?"

इल्या को लगा जैसे उसका पिता भयभीत हो उठा है। उसे हैरानी नही हुई, क्योंकि वह अपने पिता को डरपोक समझता था, जो हर किसी से डरता हो। शायद इसीलिये वह चुप रहता था। इल्या को अक्सर लगता कि उसका पिता उससे भी डरता है। सचमुच इस समय भी वह डर गया था। उसे दिलासा देते हुए इल्या ने कहा –

"मुझे इस बात पर विश्वास नही। मैं तो बस, पूछ रहा हूं।"

पिता ने उसे अपने कमरे के दरवाज़े के भीतर ढकेल दिया। अन्दर से कमरा बन्द करके वह एक कोने से दूसरे कोने में चक्कर काटने लगा। गुस्से के मारे उसकी सांस फूल रही थी।

"इधर आओ," पिता ने मेज़ के पास रुकते हुए कहा। बेटे ने आज्ञा का पालन किया।

"तुमने क्या कहा था ?"

"यह बात पाशा ने कही थी, लेकिन मैं उस पर विश्वास नही करता।"

"तुम उस पर विश्वास नही करते ? तो ऐसी बात है।"

बेटे के चौड़े माथे तथा गम्भीर चेहरे को ग़ौर से देखने पर प्योत्र का ग़ुस्सा पिघल गया। वह कान की ललरी ऐंठकर कुछ सोचने लगा – इल्या ने अपने हमउम्र लड़के की बेहूदा बकवास पर विश्वास नही किया – यह बात अच्छी है या बुरी, उसने इस बात पर विश्वास नही किया और सम्भवतः यही अविश्वास उसे सान्त्वना देता है ? उसकी समझ में नही आ रहा था कि वह अपने बेटे से क्या तथा कैसे कहे और उसे पीटना तो वह बिल्कुल नही चाहता था। लेकिन कुछ तो करना ही चाहिये था। उसने फ़ैसला किया कि पीटना ही सबसे सरल और उचित होगा। अपने झिझकते हाथ से उसने लडके के घुघराले बालो को जोर से झकझोरा और बुदबुदाया –

"मूर्खों की बात मत सुना करो, बिल्कुल नहीं सुना करो!"

फिर उसने लड़के को ढकेलते हुए डाटा –

"जाकर अपने कमरे मे बैठो और वही बैठे रहो।"

लड़का दरवाज़े की ओर बढ गया। उसका सिर एक ओर को झुका और ऐसे अकड़ा हुआ था जैसे वह किसी और के धड से जुडा हो। उसे देखकर प्योत्र ने अपने आपको दिलासा दिया –

"वह रो नही रहा है। मैंने उसके बालो को ज़ोर से नही झकझोरा।"

उसने अपने आप को तैश में लाने की कोशिश की –

"ज़रा इसकी बात तो सुनो! विश्वास नही करता! मैंने तेरी अक़्ल ठिकाने कर दी।"

लेकिन इससे अपने लडके के प्रति दया, उसे चोट पहुचाने के कारण मन को हुए दुख और अपने प्रति तीव्र असन्तोष की भावना दब न सकी।

"मैंने उस पर पहली बार हाथ उठाया है," उसने चिढ़कर अपने लाल, बालों मे ढके हाथ की ओर देखते हुए सोचा। "लेकिन मुझे तो दस साल का होने तक शायद सैकड़ो बार मार खानी पड़ी थी।"

लेकिन इससे भी उसके मन को चैन नहीं मिला। अर्तामोनोव ने

खिड़की से झांककर सूरज की ओर देखा जो मटमैले पानी पर पड़े चिकनाई के धब्बे जैसा लग रहा था। कुछ देर तक वह बस्ती से आते शोर-गुल को सुनता रहा, फिर अनमना-सा मेले की ओर चल दिया। रास्ते में उसने धीमे से नीकोनोव से कहा –

"तुम्हारा लड़का मेरे इल्या से तरह-तरह की बेहूदा बाते कहता रहता है "

"मै उसकी मरम्मत करूंगा," मुंशी ने फ़ौरन और कुछ हद तक प्रसन्नता से जवाब दिया।

"उसे ज़बान संभालकर बोलना सिखाओ," प्योत्र ने जोडा। नीकोनोव के भावशून्य चेहरे को कनखियो से देखते और राहत महसूस करते हुए उसने सोचा।

"कितनी सीधी-सादी बात है।"

बस्ती मे ज़ोर-शोर से मालिक का स्वागत हुआ। नशे में डूबे हुए चेहरे मुस्कराकर उसकी चापलूसी करने लगे। सेराफ़ीम अपने नये जूते पहने था, सफ़ेद पट्टियो को मोर्दोवियाई लोगो के ढंग से लाल फीते से बाधे थे। वह अर्तामोनोव के सामने ठुमक-ठुमककर गीत गाने लगा –

अरे, वह कौन आता है?
यह तो खुद ही आता है!
मग किसे वह लाता है?
वह खुद को ही लाता है!

इवान मोरोज़ोव ने, जो अपनी सफ़ेद दाढ़ी और लम्बे बालों के कारण पादरी-सा लगता था, भारी-भरकम स्वर मे कहा –

"हम लोग तुमसे बहुत खुश है। बहुत खुश है।"

एक अन्य बूढ़ा – मामायेव – उल्लासपूर्वक चिल्लाया –

"अर्तामोनोव परिवारवाले अपने लोगों का रईसो की तरह ध्यान रखते है!"

नीकोनोव ने सबको सुनायी पड़नेवाले ऊंचे स्वर में कोप्तेव से कहा –

"ये सब बड़े कृतज्ञ लोग है – अपने उपकारी का सम्मान करना जानते हैं!"

"मां, ये मुझे धक्के दे रहे हैं!" याकोव ने शिकायत की। वह गुलाबी रंग की रेशमी क़मीज़ पहने गेंद की तरह गोल-मटोल दिख रहा था। मां उसका हाथ थामे थी। कृपालु मुस्कान से स्त्रियों की ओर देखते हुए उसने याकोव से कहा –

"देखो, बूढ़ा कैसे नाच रहा है..."

बढ़ई बिना थके लट्टू की तरह घूम और उछल रहा था। उसके मुंह से एक के बाद एक मज़ाक़िया गीत निकल रहा था –

ठुमका दे देकर तुम नाचो
ताल ज़ोर से दे देकर!
चप्पल जूते से हल्की है,
औरत युवती से मधुतर!

अर्तामोनोव अपनी ऐसी प्रशसा पहली बार नही सुन रहा था। वह साधारण लोगों की निष्कपटता पर शक करता था। फिर भी ख़ुशी से पुलकित होकर उसने कहा –

"ख़ैर, धन्यवाद! हम हेल-मेल मे रह रहे है।"

और मन ही मन उसने सोचा –

"अफ़सोस की बात है कि इल्या यहां नही है, नही तो वह देखता कि उसके पिता को कितना सम्मान मिलता है।"

उसका मन हो रहा था कि वह लोगो पर कोई कृपा करे, किसी ढंग से उन्हें सान्त्वना दे। अपनी ललरी ऐंठने और कुछ सोचने के बाद उसने कहा –

"बच्चों के अस्पताल को दुगना करेंगे।"

सेराफ़ीम ने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाये और उछलकर कहा –

"आप लोगों ने सुना? मालिक की जय हो!"

लोगों ने एक स्वर में तो नही, पर ज़ोर मे जयकार किया। औरतों के झुण्ड में बैठी हुई नतालिया बड़ी प्रसन्न हुई। वह नकियाती आवाज़ में मिनमिनायी –

"जाकर बियर के तीन पीपे और ले आओ। तीख़ोन दे देगा, जाओ!"

औरतें इस बात से और भी पुलकित हो उठी। नीकोनोव ने सिर हिलाते हुए उत्साहपूर्वक कहा –

"आज का उत्सव तो बड़े पादरी के उत्सव जैसा है ..."

"मां, मुझे गर्मी लग रही है ..." याकोव कुनमुनाया।

इसी समय रंग में थोड़ा भंग पड़ गया। काली दाढ़ी और आलूबुखारों की बड़ी-बड़ी काली आंखोंवाला वोल्कोव जो भट्ठी झोंकने का काम करता था, लपककर नतालिया के पास पहुंचा। वह एक तिनके-से सूखे-दुबले, फुंसियों से भरे बच्चे को, जो गर्मी के मारे बदहवास हो रहा था, अटपटे ढंग से बायें हाथ मे उठाये हुए था। उसने विक्षिप्त स्वर में नतालिया से कहा –

"मैं क्या करूं! मेरी घरवाली गर्मी से मर गयी। इसे छोड गयी है। अब मैं क्या करू?"

उसकी पागल जैसी आंखों से मानो पीले रग के बड़े-बड़े आंसू बहने लगे। औरतें धक्का देकर उसे नतालिया से परे हटाते और मानो क्षमा मांगते हुए बोली –

"आप इसकी बातें मत सुनिये। यह तो पागल है। इसकी घरवाली कुलटा थी। तपेदिक की मारी। खुद भी बीमार है।"

"कोई इसका बच्चा तो सम्भाल ले," अर्तामोनोव ने भारी आवाज़ में कहा और फ़ौरन ही कई हाथ बेहाल बच्चे को थामने के लिये आगे बढ़ गये, लेकिन वोल्कोव गालिया बकता हुआ वहां मे भाग गया।

कुल मिलाकर तो पर्व का-सा वातावरण था, मज़दूरो में नये लोगों को देखकर अर्तामोनोव ने लगभग गर्व से सोचा –

"लोगो की सख्या बढ रही है। काश, पिता जी, यह देख पाते ..."

अचानक उसकी पत्नी ने खेदपूर्ण स्वर मे कहा –

"तुमने इल्या को ग़लत वक्त पर सज़ा दी है। वह नहीं देख पाया कि लोग तुम्हें कितना प्यार करते है।"

अर्तामोनोव ने कोई उत्तर नही दिया। उसने कनखियो से ज़िनईदा की ओर देखा। वह क़रीब दर्जन भर लड़कियो के आगे मटकती हुई कानों को बुरी लगनेवाली, भारी आवाज़ में गा रही थी –

चला जा रहा है पास से
और नज़र मे प्यार है,
लगता प्यार लुटाने को
वह बिल्कुल तैयार है।

"कंजरी कहीं की," उसने सोचा। "और यह गाना भी कितना भोंड़ा है।"

उसने जेब से घड़ी निकालकर उस पर नज़र डाली और न मालूम क्यों अपनी पत्नी से झूठमूठ कहा – "मैं एक मिनट के लिये घर जा रहा हू। अल्योशा का तार आनेवाला है।"

वह तेज़ क़दम बढ़ाता और यह सोचता हुआ घर की ओर चल दिया कि अपने बेटे से क्या कहेगा। उसने कठोर, किन्तु खासे प्यार-भरे कुछ वाक्य सोच लिये। लेकिन जब वह धीमे से द्वार खोलकर इल्या के कमरे में दाखिल हुआ तो उसे वह सब भूल गया। बेटा कुर्सी पर घुटने टिकाये और खिडकी के दासे पर कोहनियां जमाये हुए धुंधले-लाल आसमान को ताक रहा था। ढलती हुई सांझ के झुटपुटे ने इस छोटे-से कमरे को भूरी-मटमैली धूल से भर दिया था। दीवार मे लटकते हुए बड़े पिंजरे में बन्द मैना सोने की तैयारी करते हुए अपनी पीली चोच को माफ़ कर रही थी।

"तो यही बैठे हो?"

इल्या ने चौंककर पीछे देखा। वह धीरे से कुर्सी से नीचे उतर गया।

"अच्छा! वहां खडे-खड़े तुम लोगों की बकवास सुन रहे थे!"

लड़का मिर झुकाये चुपचाप खड़ा रहा। प्योत्र समझ गया कि यह याद दिलाने के लिये कि उसे सज़ा दी गयी है, वह जानबूझकर ऐसा कर रहा है।

"तुम झुककर क्यो खड़े हो? अपनी गर्दन मीधी करो।"

इल्या ने भौंहें ऊपर उठायी, लेकिन अपने पिता की ओर नही देखा। पिजड़े मे मैना ने फुदक-फुदककर चहचहाना शुरू कर दिया था।

"यह नाराज़ है," अर्तामोनोव ने इल्या के बिस्तर पर बैठते और तकिये मे उगली गड़ाते हुए सोचा। "तुम्हे लोगो की बकवास नही सुननी चाहिये।"

इल्या ने कहा –

"लेकिन अगर वे ऐसा करते है तो क्या किया जाये?"

उसके गम्भीर स्वर मे पिता को सन्तोष हुआ। प्योत्र ने अधिक नर्मी मे हिम्मत बांधकर कहा –

"वे करते रहें, लेकिन तुम उनकी बातो पर कान न दिया करो! उन्हें भूल जाया करो! जहां भी बेहूदा बात सुनो, उसे भुला दो।"

"क्या तुम भुला देते हो?"

"बेशक! अगर मैं वह मब याद रखता जो सुनता हू तो तुम ही मोचो कि मेरा क्या हाल हो जाता?"

वह धीमे स्वर में मावधानी मे चुने हुए मादे शब्दो का प्रयोग कर रहा था और बहुत अच्छी तरह मे यह समझ रहा था कि इस समय शब्दो की कोई आवश्यकता नही थी। जल्द ही वह मरल शब्दो की जटिल बुद्धिमत्ता में उलझ गया और लम्बी सास लेकर बोला –

"मेरे पास आओ।"

इल्या मतर्कतापूर्वक उमके पाम गया। पिता ने लडके को गोद मे बिठाकर उमके चौड़े माथे पर हाथ फेरा और आहिस्ता से उमके मिर को ऊपर उठाने की कोशिश की। लेकिन इल्या ने मिर ऊपर नही उठाया। इम पर पिता ने बुरा माना।

"तुम किस बात पर कुढ रहे हो? जरा मेरी ओर देखो।"

इल्या ने पिता की आखों मे आखे डालकर देखा, लेकिन इससे बात और बिगड गयी, क्योंकि उमने पूछा –

"तुमने मुझे मारा क्यो? मैंने तो तुममे कह दिया था कि मै पाशा पर विश्वास नही करता।"

बडे अर्तामोनोव ने तत्काल कोई उत्तर नही दिया। वह हैरान होते हुए यह महसूस कर रहा था कि उसका बेटा मानो किसी चमत्कार मे उसके बराबर हो गया है, लडका खुद बालिग जैसा हो गया था या उसने अपने बालिग पिता को अपने स्तर तक नीचे उतार लिया था।

"अपनी उम्र के लिहाज मे कुछ ज़्यादा ही तुनुकमिज़ाज है," प्योत्र ने सोचा, फिर बेटे से जल्द ही सुलह कर लेने की आतुरता में उसने उठकर कहा –

"मैंने तो ज़रा तुम्हारे बाल ही खीचे थे। बच्चो को सिखाना पड़ता है। उफ, मेरे पिता जी मेरी कैसे पिटाई करते थे! और मेरी मा भी। इसके अलावा माईस, कारिदे और जर्मन नौकर भी पीटते थे। अगर मां-बाप तुम्हे पीटे तो इतनी बुरी बात नही। मगर जब पराये लोग पीटते है तो बहुत दुख होता है। अपनों के हाथ की चोट महसूस नही होती।"

दरवाज़े से खिड़की तक छः क़दम आ-जाकर वह जल्दी से अपनी बात समाप्त करना चाहता था, ताकि उसका बेटा कोई और नया सवाल न पूछ बैठे।

"तुम्हें यहां ऐसी चीज़ें देखने-सुनने को मिलती है जिन्हें तुम्हें देखना-सुनना नही चाहिये," उसने बिस्तर के पैताने से सटकर खड़े बेटे पर से आंखें हटाते हुए कहा। "तुम्हें पढ़ना चाहिये। शहर के स्कूल में। पढ़ना चाहते हो?"

"हा।"

"तो ठीक है..."

उसने बेटे को दुलारना चाहा, लेकिन कोई चीज उसके ऐसा करने मे आड़े आ रही थी। उसे याद नही आ रहा था कि क्या उसके मा-बाप भी उसके दिल को ठेस लगाने के बाद उसे कभी दुलारते थे या नही?

"अच्छा जाओ, बाहर जाकर खेलो। पाशा मे अधिक मिला-जुला न करो।"

"उसे तो कोई भी पसन्द नही करता।"

"करे भी क्यो – आख़िर उस बीमार पिल्ले में धरा ही क्या है?"

अपने कमरे में लौटकर और खिडकी के सामने खडा होकर अर्तामोनोव सोच रहा था कि बेटे के साथ ढंग से बातचीत नही हुई।

"मैंने उसे बिगाड़ दिया है। वह मुझसे डरता ही नही।"

बस्ती की ओर से तरह-तरह का शोर-गुल, लड़कियो के हसने-गाने तथा दबे-घुटे स्वर में बाते करने और हथबाजे की आवाज़ें आ रही थी। इसी समय फाटक पर से तीख़ोन के ये साफ़ शब्द सुनायी दिये –

"बच्चे! घर में घुसे क्यों बैठे हो? आज तो सभी मौज कर रहे है! तुम पढने जाओगे? यह अच्छी बात है! कहते है कि जो पढ़ा नही, वह जन्मा नही। पर तुम्हारे बिना मुझे यहां सूना लगेगा।"

अर्तामोनोव ने चिल्लाकर कहना चाहा –

"तुम झूठ बकते हो! सूनापन तो मुझे लगेगा!" उसने घृणा-पूर्वक सोचा, "धोखेबाज़, कमीना! मालिक के बेटे की खुशामद कर रहा है!"

बेटे को पादरी ग्लेब के भाई के पास शहर भेजकर, जो वहां

अध्यापक था और जिसे इल्या को स्कूल के लिये तैयार करना था, प्योत्र को लगा जैसे उसका दिल सूना हो गया है और घर काटने को दौड़ता है। उसे रह-रहकर बेचैनी होती। ठीक वैसी ही बेचैनी, जैसी कभी सोने के कमरे में देव-प्रतिमा के सामने जलनेवाले दीपक के बुझ जाने पर होती थी। प्योत्र उस नन्ही-सी नीली लौ का इतना अभ्यस्त हो चुका था कि उसके बुझने पर वह पूरी रात आंखों में ही काट देता था।

जाने से पहले इल्या ने ऐसी बुरी हरकतें-शरारतें कीं, मानो वह जानबूझकर अपनी दुःखद स्मृतियां पीछे छोड़ जाना चाहता हो। उसने अपनी गुस्ताख़ी से मां को रुला दिया। पिंजरा खोलकर उसने याकोव के सारे पक्षियों को उडा दिया और याकोव को मैना देने का वायदा करने के बावजूद उसे नीकोनोव को दे दिया।

"तुम्हारे सिर पर क्या भूत सवार हुआ है?" प्योत्र ने पूछा, पर इल्या ने कोई जवाब न देकर एक ओर को सिर झुका लिया। प्योत्र को लगा कि बेटा उन स्मृतियो को बरबस ताज़ा करके, जिन्हें वह भूल जाना चाहता था, उसका मुह चिढ़ा रहा है। इस नन्हे व्यक्ति ने उसके दिल मे कितनी अधिक जगह बना ली थी, यह सोचकर प्योत्र को आश्चर्य होता।

"क्या मेरे पिता जी भी कभी मेरे लिये इतने परेशान हुए थे?"

स्मृतियो ने विश्वास दिलाया कि प्योत्र ने अपने पिता को कभी ऐसे घनिष्ठ और स्नेहपूर्ण व्यक्ति के रूप में अनुभव नही किया था। वह कड़ाई से काम लेते थे। पिता का सारा लाड़-प्यार अल्योशा के लिये था।

"तो क्या मैं अपने पिता मे अधिक दयालु हू?" अर्तामोनोव ने अपने से पूछा और उलझन मे पड़ गया – वह अपने बारे मे ठीक से नही कह सकता था कि वह दयालु है या क्रोधी? अचानक बेमौक़े ऐसे विचार आकर उसे परेशान कर डालते, उसके लिये काम करना दूभर हो जाता। उधर कारोबार तेज़ी से बढ़ रहा था। सैकड़ों आंखें मालिक की ओर लगी थी और कारोबार की तरफ़ निरन्तर और अनथक ध्यान देने की आवश्यकता थी। पर इल्या का ध्यान आते ही कारोबार सम्बन्धी विचारों का तानाबाना एक झटके के साथ टूट जाता और प्योत्र बड़ी मुश्किल से उसे फिर जोड़ पाता। उसने इल्या की अनु-

20*

पस्थिति की कमी को याकोव पर अधिक ध्यान देकर पूरा करना चाहा, लेकिन उसे यह बात जानकर गहरी निराशा हुई कि याकोव से उसे कोई सान्त्वना नहीं मिल सकती।

"पिता जी, मुझे एक बकरा ले दो," याकोव ने गिड़गिडाकर कहा। वह हमेशा किसी न किसी चीज़ के लिये गिडगिडाता रहता था।

"बकरा किसलिये?"

"सवारी के लिये।"

"कितनी बेहूदा बात है! बकरे की सवारी तो डाइने ही करती हैं।"

"येलेना ने मुझे एक तस्वीरों की किताब दी थी। उसमें तो एक अच्छा लडका बकरे पर सवार है "

बाप सोचने लगा –

"इल्या कभी तस्वीर की बात को सच्ची न मानता। वह तो डाइनों की बातें सुने बगैर मेरा पीछा ही न छोड़ता।"

याकोव कारख़ाने के बच्चों से छेडख़ानी करता और बाद मे शिकायत करता –

"वे मुझे तग करते हैं।" प्योत्र को यह आदत नापसन्द थी।

इल्या भी तो लड़ता-भिड़ता था, झगडालू था. बस्ती के लडकों मे मार-पीट करते समय उसे अक्सर चोटे लग जाती थी. लेकिन उसने कभी शिकायत नही की थी। छोटा लडका डरपोक और आलसी था। वह हर समय कुछ न कुछ चूसता-चबाता रहता था। कभी-कभी तो याकोव का व्यवहार 'बडा अटपटा और बेहूदा होता। एक रोज प्याले में दूध डालते समय चाय का गिलास उसकी मा की आस्तीन से उलझकर उस पर ढुलक गया और गरम पानी से छाले पड़ गये।

"मैं जानता था कि तुम गिलास लुढका दोगी," याकोव ने दात निपोरते हुए डीग मारी।

"देखकर भी तुमने कुछ नही कहा। यह क्या तरीक़ा है?" प्योत्र ने कहा, "देखो, तुम्हारी मां की टांगो पर छाले पड़ गये है।"

याकोव आंखें मिचमिचाता, नाक से सुड़-सुड करता पहले की तरह लगातार मुंह चलाता रहा। कुछ रोज़ बाद प्योत्र ने उसे अहाते में जल्दी-जल्दी यह कहते सुना –

"मैं जानता था कि वह हमला करेगा। वह लुक-छिपकर पास

सरकता आया, सरकता आया और दे मारा!"

अर्तामोनोव ने खिड़की से झांककर देखा कि उसका बेटा आवेश-पूर्ण ढग मे उस निकम्मे पाशा नीकोनोव से घुल-घुलकर बातें कर रहा था। उसने याकोव को बुलाया और नीकोनोव से मिलने-जुलने की मनाही कर दी। वह कुछ और कहनेवाला था, लेकिन लड़के की आंखे देखकर उसने ठडी मास ली और उसे धक्का देकर एक ओर हटा दिया – लड़के की आंखों में अजब-सा सूनापन था, उसकी पुतलियां सफ़ेद थी।

"भाग जा, सूनी आखोंवाले .. "

याकोव कोहनियो को बग़लो से चिपकाये और हथेली को ऐसे आगे बढ़ाये हुए, मानो भारी बोझ उठाये हो, फूंक-फूंककर कदम रखता हुआ चल दिया, जैसे कि उसके पांवो तले फिसलनी बर्फ़ बिछी हो।

"फूहड़, बेवकूफ," प्योत्र ने सोचा।

उसकी लम्बी, गुमसुम लडकी मे भी याकोव जैसी नीरसता और उसी के समान कुछ और भी उबाऊ था। उसे लेटकर पढ़ना पसन्द था। चाय के साथ वह ढेर-सा मुरब्बा खाती और खाने के समय बडे नाज-नखरे से रोटी तोडती। चम्मच से इस तरह खिलवाड करती जैसे कि शोरबे मे मक्खी ढूढ रही हो। अपने लाल, भरे होठों को सदा भीचे रखती। मा से अक्सर छोटे मुंह बडी बात करती –

"आजकल इसका रिवाज नही है, यह फैशन तो बहुत पुराना हो चुका।"

जब पिता ने उससे कहा –

"अच्छा, विदुषी देवी जी, तुम कारख़ाने में जाकर यह क्यों नही देखती कि तुम्हारे कपडे कैसे बनते है?" तो उसने जवाब दिया –

"मै तैयार हू।"

उसने बढिया-सा फ्राक पहना और अपने चाचा अल्योशा से भेट मे मिला छाता लेकर चुपचाप पिता के पीछे-पीछे चल पड़ी। वह अपने फ़ाक की तरफ़ बडा ध्यान दे रही थी कि वह कही उलझ न जाये। उसे कई बार छीकें आयी और जब मज़दूरो ने रूसी परम्परा के अनुसार उसके छीकने पर यह कामना की कि वह स्वस्थ रहे तो किसी शब्द या मुस्कराहट के बिना उसने घमण्ड से केवल सिर हिला दिया। प्योत्र ने कपडा बनाने की विधिया समझानी शुरू की, लेकिन यह

देखकर कि उसका ध्यान मशीनों के बजाय फर्श पर है, वह चुप हो गया। अपने कारोबार के प्रति बेटी की उपेक्षा उसे बहुत अखरी। फिर भी करघों के कमरे से बाहर निकलते समय उसने पूछा –

"तुम्हें कारख़ाना कैसा लगा?"

"वहां धूल बहुत ज्यादा है," अपने फ़ाक को उलट-पलटकर देखते हुए उसने जवाब दिया।

"बहुत कम ही देखा तुमने कारख़ाना," प्योत्र ने मुस्कराने की कोशिश की और उपेक्षा के स्वर में कहा –

"तुम अपने फ्राक को ऊपर क्यों उठा रही हो? अहाता साफ़-सुथरा है और तुम्हारा फ़ाक तो वैसे भी ऊंचा है।"

उसने चौंककर फ्राक का पल्लू छोड़ दिया और खेदपूर्ण ढंग से कहा –

"तेल की सख़्त बू आ रही है।"

उसकी इन दो उंगलियों को हिलता देखकर, जिनसे उसने फ्राक ऊपर उठाया, प्योत्र झल्ला उठा –

"दो उंगलियों से तुम जीवन में कुछ अधिक नही पकड़ सकोगी!"

बरसात के मौसम में एक दिन वह कोच पर लेटी एक किताब पढ़ने में तल्लीन थी। प्योत्र ने पास बैठते हुए पूछा कि वह क्या पढ़ रही है।

"एक डाक्टर के बारे में।"

"मतलब यह कि विज्ञान सम्बन्धी पुस्तक।"

लेकिन किताब पर नज़र दौडाते ही वह आग-बबूला हो गया –

"झूठ क्यों बोलती हो? यह तो कविता है। क्या विज्ञान की पुस्तकें कविता में लिखी जाती हैं?"

उसने घबराते हुए पिता को एक कहानी सुनायी कि कैसे ईश्वर ने शैतान को आज्ञा दी कि वह एक जर्मन डाक्टर को पथभ्रष्ट करे और कैसे शैतान ने इसके लिये अपने एक दूत को भेजा। अर्तामोनोव ने कान की ललरी ऐंठते हुए शुद्ध अन्तःकरण से इस कहानी का अर्थ समझने की चेष्टा की, लेकिन लड़की का ढंग इतना उपदेशात्मक और हास्यास्पद था कि कहानी का सिर-पैर उसकी समझ में नही आया। प्योत्र खीझ उठा –

"यह डाक्टर क्या पियक्कड़ था?"

उसने देखा कि येलेना उसके प्रश्न को सुनकर घबरा गयी। उसकी बातों पर कोई ध्यान न देते हुए उसने ग़ुस्से से कहा –

"यह सब ऊल-जलूल है, मनगढ़न्त क़िस्सा है। डाक्टर लोग शैतानों में विश्वास नही करते। तुम्हें यह किताब कहां से मिली ?"

"मिस्त्री से।"

येलेना जब भी गम्भीर होती तो उमकी बिल्ली जैसी भूरी आखों मे शून्यता आ जाती। प्योत्र को लगा कि लड़की को चेतावनी दे दे –

"कोप्तेव तुम्हारी बराबरी का नही है। उससे अधिक मेल-जोल ठीक नही।"

हां, इल्या के मुक़ाबले में येलेना और याकोव बुद्धू और नीरस थे। यह प्योत्र स्पष्ट देख रहा था। अपने पुत्र के प्रति स्नेह का स्थान पाशा नीकोनोव के प्रति घृणा ने ले लिया था – यह परिवर्तन ऐसे धीरे-धीरे हुआ कि स्वय प्योत्र को भी इसका पता न चला। जब भी वह उस रुग्ण बालक को देखता, तो मन ही मन सोचता –

"इस निकम्मे की वजह से..."

इस लड़के को देखकर उसका रोम-रोम घृणा से भर उठता। नीकोनोव कन्धों को झुकाकर चलता। उसकी पतली गर्दन पर उसका सिर बेचैनी से हिलता-डुलता रहता। यहां तक कि दौड़ते समय भी अर्तामोनोव को वह कायर उचक्के जैसा प्रतीत होता। वह जी-तोड़कर मेहनत करता। सौतेले बाप के जूतों पर पालिश करना, कपड़ों पर ब्रश फेरना, लकड़ी काटना, पानी ढोना, रसोई के जूठे बर्तन बाहर लाना, नदी में अपने भाई के पोतड़े धोना, आदि सब काम उसके ज़िम्मे थे। गन्दा और फटेहाल वह गौरैया की तरह काम में जुटा रहता और खीझ पैदा करनेवाली गिड़गिड़ाहट-भरी मुस्कुराहट से हर किसी का अभिवादन करता। अर्तामोनोव को बहुत दूर से देखते ही उसकी मुर्गाबी जैसी गर्दन झुककर छाती से लग जाती। यह देखकर कि लड़का बारिश में भीग रहा है, या सर्दी के दिन लकड़ी काटते हुए अपनी सुन्न उंगलियो को मुंह की भाप से गरमाने की कोशिश कर रहा है – विशेषकर जब वह कलहंस की तरह एक टांग पर खड़ा होकर एक पांव से दूसरे को दबाता है और उसके चिथड़े जूते बिल्कुल खस्ताहाल हैं, अर्तामोनोव को आनन्द-सा प्राप्त

होता। खांसते वक्त उसके समूचे शरीर में पीड़ा होती और वह अपने छोटे-छोटे, सुन्न, नीले हाथों से अपनी छाती थाम लेता।

यह सुनकर कि नीकोनोव ने गुसलखाने की दुछत्ती मे कबूतरों के दो जोड़े बन्द कर रखे है, अर्तामोनोव ने तीखोन को फ़ौरन कबूतरों को छोड़ देने की आज्ञा दी। साथ ही लडके का ऊपर जाना भी बन्द कर दिया गया।

"कही छत से गिरकर चोट खा जायेगा! इतना मरियल-सा तो है!"

एक रोज़ शाम के समय दफ्तर मे जाने पर प्योत्र ने देखा कि यही लडका फ़र्श पर गिरी स्याही को चाकू से खुरचकर तथा गीले चिथड़े से रगड़कर साफ कर रहा है।

"यह किसने गिरायी?"

"पिता जी ने।"

"तुमने नही?"

"मैंने नही गिरायी! क़सम खाता हू!"

"फिर तुम रो क्यो रहे थे?"

पाशा सिर झुकाकर घुटनो के बल बैठ गया मानो मार खाने की प्रतीक्षा कर रहा हो, उसने कोई उत्तर नही दिया। तब अर्तामोनोव ने उसे घूरकर देखा और सन्तोष से कहा—

"तुम पिटने के ही लायक हो।"

अचानक इस तुच्छ जीव के प्रति अपनी बच्चो की सी हास्यास्पद घृणा का विचार आने पर वह मन ही मन मुस्करा उठा।

"मै भी किन खुराफातो मे अपना समय नष्ट करता रहता हू!" उसने लापरवाही से सोचा और फर्श पर तांबे का पांच कोपेक का भारी सिक्का फेंकते हुए बोला—

"यह लो! जाकर मिठाई खा लेना।"

लड़के ने सिक्के की ओर सावधानी से हाथ फैलाये—मानो उसे डर हो कि यह सिक्का कही उसकी गदी, गांठदार उंगलियों को काट न खाये।

"क्या तुम्हारा सौतेला बाप तुम्हे पीटता है?"

"हां।"

"तो क्या हुआ? सभी की पिटाई होती है," अर्तामोनोव ने

दिलासा देते हुए कहा। कुछ दिनो बाद जब याकोव ने पाशा की शिकायत की तो अपने बेटे की बात पर विश्वास न करते हुए भी उसने आदत से लाचार होकर मुंशी से कहा –

"ज़रा अपने सौतेले बेटे की मरम्मत कर देना।"

"मैं तो वैसे भी उसकी अच्छी मरम्मत करता रहता हूं," नीकोनोव ने सादर उत्तर दिया।

गर्मी की छुट्टियों मे इल्या घर आया। वह अजब-से कपडे पहने था और बाल छोटे कटे होने के कारण उसका माथा और भी अधिक चौड़ा नज़र आता था। यह देखकर कि इल्या इस आवारा छोकरे से दोस्ती जारी रखने पर अड़ा हुआ है, पाशा के प्रति अर्तामोनोव की घृणा और भी भडक उठी। स्वय इल्या में बुरे ढग की शिष्टता आ गयी थी। वह मा-बाप को शिष्टाचारपूर्वक सम्बोधित करता। जेबो में हाथ डालकर घर में इस तरह घूमता जैसे कोई मेहमान हो। भाई को तग करके रुला डालता और बहन को इतना चिढ़ाता कि वह अपनी किताबें उस पर फेकने लगती। कुल मिलाकर उसका व्यवहार घिनौना था।

"मै तो पहले ही कहती थी!" नतालिया ने पति से शिकायत की। "सब लोग कहते है कि स्कूल मे लिखाने-पढाने से उद्दण्डता आ जाती है।"

अर्तामोनोव बेटे की हरकतो को परेशानी से देखता हुआ चुप रहता। ऐसा लगता था कि इल्या इच्छा न होते हुए भी जानबूझकर शरारते करता है। गुसलखाने की छत की मुण्डेर पर फिर कबूतर गुटरगू करते हुए दीखने लगे। इल्या और पाशा या तो पक्षियों को उडाते या फिर घंटो चिमनी के पास बैठकर बाते करते रहते। एक बार इल्या के आने के कुछ दिन बाद ही प्योत्र ने बेटे से कहा –

"ज़रा बताओ तो, तुम वहां कैसे रहते-सहते हो। मैंने तुम्हें बीसियो कहानिया सुनायी थी, अब तुम्हारी बारी है।"

इल्या ने बड़ी जल्दी-जल्दी और संक्षेप मे यह नीरस-सी बात सुनायी कि किस प्रकार लड़के अध्यापको को चिढ़ाते रहते है।

"तुम लोग ऐसी हरकतें क्यों करते हो?"

"अध्यापकों के कारण नाक मे दम आ जाता है," इल्या बोला।

"यह मामला है। मुझे तुम्हारी यह बात अच्छी नही लगी। क्या पढ़ाई बहुत कठिन है?"

"नहीं, आसान है।"

"सचमुच?"

"आप मेरी रिपोर्ट पढ़ लें," इल्या ने कन्धे झटककर जवाब दिया। उसकी आंखें बगीचे के पार आकाश पर लगी थीं। पिता ने पूछा –

"वहां क्या देख रहे हो?"

"बाज़।"

अर्तामोनोव ने ठंडी सांस भरी।

"तो जाओ, बाहर जाकर खेलो। ऐसा लगता है कि मेरे साथ तुम्हें ऊब महसूस होती है।"

अकेला रह जाने पर उसे याद आया कि बचपन में अपने पिता के साथ बातें करते वक़्त वह हमेशा डरता था या ऊब जाता था।

"ये लड़के अपने अध्यापकों को चिढ़ाते है। जब गिरजे का मुंशी कोड़ा हाथ में लेकर मुझे पढ़ाता था, मेरे दिमाग़ में तब ऐसी बात तक कभी नहीं आयी थी। लगता है कि आजकल बच्चे मौज उड़ाते है।"

स्कूल वापस जाने से पहले इल्या ने पिता से केवल एक प्रार्थना की –

"पिता जी, पाशा को ग़ुसलखाने की दुछत्ती में कबूतर रखने की इजाज़त दे दीजिये..."

"तुम हर किसी की तकलीफ़ तो दूर नही कर सकते।"

"मतलब यह कि वह कबूतर वहां रख सकता है," बेटे ने निष्कर्ष निकाला। "मैं जाकर उससे कहे देता हू – वह बडा खुश होगा।"

बाप के दिल को चोट लगी – उसका बेटा उस ऐरे-ग़ैरे मनहूस छोकरे को खुश करने के लिये कितना उत्सुक है। लेकिन उसने कभी अपने बाप की ज़िन्दगी में खुशी लाने की कोशिश नही की, उसे इसकी परवाह ही नही। इल्या के जाने के बाद मुंशी के सौतेले बेटे के प्रति उसकी घृणा और भी तीव्र हो उठी। यहां तक कि घर में, कारखाने या बस्ती में अगर कोई भी गडबड़ होती तो अर्तामोनोव के सामने अनायास ही इस गंदे, फटेहाल छोकरे की सूरत आ जाती और वह एकदम खीझ उठता। उसे लगता कि यह दुर्बल छोकरा ही उसके सारे कटु विचारों और दुर्भावनाओं का कारण है। यह लड़का फफूंदी और शाम की परछाइयों की तरह बढ़ता जाता था, रह-रहकर नन्हे प्रेत

की भांति प्योत्र के सामने प्रगट होता था।

सुहावनी पतझड़ के मौसम में एक रोज़ थका-हारा और खीझा हुआ अर्तामोनोव बगीचे में गया। शाम झुक रही थी और पतझड़ का थका सूरज आंधी और बारिश से धुले-पुते हरिताभ आकाश में किसी प्रकार की गर्माहट के बिना पिघल-सा रहा था। तीख़ोन व्यालोव बगीचे के एक कोने में गिरे-सड़े पत्तों की ढेरी बना रहा था। उनकी हल्की, उदासी-भरी चरमराहट पेडो के झुरमुट में समायी हुई थी। बग़ीचे के पीछे कारख़ाने से आनेवाला शोर सुनायी पड़ रहा था, मटमैले रंग का धुआं मन्द-गति से ऊपर उठकर वायुमंडल की स्वच्छता को दूषित कर रहा था। कही तीख़ोन मे मुलाक़ात न हो जाये, उससे कुछ बातचीत न करनी पड़े, यह सोचकर अर्तामोनोव बगीचे के दूसरे कोने में चला गया, जहां गुसलख़ाना था। उसने देखा कि गुसलख़ाने का दरवाज़ा चौपट खुला है।

"यह छोकरा अन्दर होगा।"

उसने अंदर झांककर देखा। उसका दुश्मन एक अंधेरे कोने में एक बेंच पर पांव पसारकर लेटा था। उसका सिर झुका था, दोनों टागे चौड़ी फैली हुई थी और वह हस्तमैथुन करने में तल्लीन था। क्षण भर के लिये अर्तामोनोव को खुशी-सी हुई। लेकिन फिर याकोव और इल्या का विचार आते ही वह भय और घृणा से चिल्ला उठा –

"सूअर के बच्चे! यह क्या हो रहा है?"

लड़के की बांह मुन्न होकर लटक गयी। अजीब ढंग मे उसका सारा शरीर बेंच से अलग हो गया, उसका मुंह खुला और एक हल्की-सी चीख़ के साथ वह गेंद की तरह दरवाज़े की ओर लुढ़ककर गिरा, जहां प्योत्र खड़ा था। प्योत्र ने खुशी महसूस करते हुए अपने दाहिने पांव से उसकी छाती पर ठोकर मारी। कुछ कड़कड़ाहट की सी आवाज़ हुई और बालक एक क्षीण आह के साथ फ़र्श पर लुढ़क गया।

क्षण भर के लिये अर्तामोनोव को लगा कि इस ठोकर से उसके मन का सारा बोझ हल्का हो गया है। दूसरे ही क्षण उसने बहुत ग़ौर से बगीचे की ओर देखा, कान लगाकर आहट ली। फिर दरवाज़ा बन्द करके पाशा पर झुका और धीमे स्वर में बोला –

"उठो, चलें!"

लड़का एक बांह आगे की ओर फैलाये और दूसरी घुटने के नीचे दबाये लेटा था। उसकी एक टांग दूसरी की अपेक्षा छोटी लग रही थी। ऐसे लगा मानो वह चुपके से प्योत्र की ओर रेंग रहा है। आगे को फैली हुई बांह अस्वाभाविक रूप से बडी लम्बी लग रही थी। अर्तामोनोव लड़खड़ाया और उसने दरवाजे का सहारा लेकर अपने को सम्भाला, टोपी उतारकर उसके अस्तर से माथा पोंछा – पसीने की धारें फूट निकली थी।

"खड़े हो जाओ, मैं किसी से नही कहूंगा," वह फुसफुसाया, लेकिन वह यह समझ रहा था कि उसने लडके को मार डाला है। वह लड़के के मुंह से फ़र्श पर टपकती हुई गहरे ख़ून की धार को पहले ही देख चुका था।

प्योत्र ने मन ही मन सोचा, "मैने मार डाला।" इन सीधे-सादे शब्दो से उसके शरीर में सनसनाहट फैल गयी। उसने टोपी को कोट की जेब मे ठूंसकर जल्दी से क्रॉस का चिह्न बनाया। वह मुंह बाये इस ऐंठे हुए नन्हे शरीर को हतप्रभ-सा देखता रहा। भय की भावना से यह साधारण-सा विचार उसके मस्तिष्क में घूम रहा था –

"मैं कहूंगा कि यह एक दुर्घटना थी। मैंने दरवाज़ा खोला कि उसे धक्का लग गया। हां, दरवाज़े से टकरा गया। काफ़ी भारी दरवाज़ा है।"

वह मुड़ा और धम मे बेंच पर गिर पड़ा – हाथ मे झाड़ू लिये तीख़ोन उसके पीछे खडा था। उसकी पनीली आंखे नीकोनोव पर टिकी थी और वह सोच में पड़कर अपने गाल की कठोर हड्डी को उगलियो से खुजला रहा था।

"देखो," अर्तामोनोव ने दोनों हाथों मे बेच को ज़ोर से पकडकर बोलना शुरू किया, लेकिन तीख़ोन ने उसे बीच में ही टोक दिया। सिर हिलाते हुए उसने कहा –

"कमजोर, मरियल छोकरा। मैने कितनी बार इसे मना किया था कि ऊपर मत चढा करो!"

"क्या?" प्योत्र ने भय और आशा से पूछा।

"मैंने उसे बार-बार समझाया था कि किसी दिन अपनी गर्दन तोड़ बैठोगे। तुम्हें याद है न, प्योत्र इल्यीच, तुमने भी यही कहा था? ऐसी शरारतों के लिये फुर्ती चाहिये। क्या यह बेहोश हो गया है?"

चौकीदार ने उकड़ूं बैठकर पाशा की नाड़ी टटोली। कलाई, छाती, गाल सब देख डाले। फिर उसने कुरते से ऐसे उंगली रगड़ी, मानो दियासलाई की तीली जला रहा हो और बोला –

"लगता है कि काम तमाम हो गया। इस गले-सडे प्राणी को मरने में भला देर ही कितनी लग सकती थी?"

तीखोन का स्वर, गति-विधिया और चेहरा सदा की तरह ही शान्त था। फिर भी उसका मालिक उस पर विश्वास न करते हुए धमकी देनेवाले तथा भर्त्सनापूर्ण शब्दों की प्रतीक्षा कर रहा था। किन्तु तीखोन ने छत के चौकोर छेद की तरफ देखा, कुछ देर तक कबूतरो की गुटरगूं सुनने के बाद उसने पहले की सी सरलता और शान्ति से कहा –

"वह हमेशा दरवाजे के सहारे ऊपर चढ़ता था। बेंच पर खड़ा होकर दरवाजे की सिटकनी पर पैर जमाता और उसके सिरे को पकडकर ऊपर लटक जाता। बाहो मे ताकत न होने की वजह से उसका हाथ छूट गया होगा और जरूर दरवाजे के कोने से दिल टकराया होगा।"

"मैंने तो यह देखा नही," प्योत्र ने कहा। आत्मरक्षा की भावना से उसके मन मे कई प्रकार के सन्देह पैदा हुए –

"क्या यह झूठ बोल रहा है? मक्कारी तो नहीं कर रहा? शायद जाल बिछा रहा है, ताकि उसमे फसकर मै इसकी मुट्ठी में आ सकू या यह मूर्ख सचमुच ही कुछ नही समझता?"

प्योत्र को अन्तिम सम्भावना अधिक जची। तीखोन मूर्खो जैसा व्यवहार कर रहा था। ऐसे सिर हिलाकर मानो किसी पर माथे से चोट की हो, उसने ठंडी सांस भरकर कहा –

"मिट्टी का लोदा! ऐसे प्राणी भला दुनिया मे आते ही किसलिये है? मै जाकर इसकी मा को बताता हूं। मेरा अनुमान है कि उसके सौतेले बाप को तो विशेष दुःख नहीं होगा। उसके लिये यह लड़का फालतू बोझ ही था।"

अर्तामोनोव सन्दिग्ध मन से चौकीदार की बाते सुन रहा था, वह इस ताक मे था कि कही पाखड का कोई सकेत मिले; लेकिन सदा की भांति तीखोन गम्भीरता से बात कर रहा था।

"सुनो!" उसने अपनी भौहें हिलायी और कुछ सुनने लगा। बाहर अहाते में कोई स्त्री गुस्से मे पुकार रही थी –

"पाशा! पाशा-आ-आ!"

तीख़ोन ने अपना गाल सहलाया।

"यह हाल है तुम्हारे पाशा का! आंसू बहाने के लिये तैयार हो जाओ..."

"कितना बेवक़ूफ है," अर्तामोनोव ने सोचा और बाहर बग़ीचे में चला गया। उसने जेब से टोपी निकाली और उसके टूटे हुए छज्जे को उलट-पलटकर देखने लगा।

दो-तीन सप्ताह तक उसका मन लगातार बढ़ते हुए एक अज्ञात डर से आतंकित रहा, उसे रोज़ यही लगता कि जैसे कोई मुसीबत आयी कि आयी। उसे लगता कि अगले ही क्षण दरवाज़ा खोलकर तीख़ोन अन्दर आ जायेगा और कहेगा –

"मुझे तो बेशक सब कुछ मालूम है..."

लेकिन बाहरी तौर पर किसी तरह की कोई गड़बड़ नही हुई। जन्म और मरण के आदी होने के कारण लोगों ने लड़के की मृत्यु को स्वाभाविक घटना मात्र समझा। नीकोनोव ने अपनी पीली गर्दन पर काली टाई बाधी। उसके फीके चेहरे पर विनम्रतापूर्ण महत्त्व का भाव था, मानो उसे लम्बी प्रतीक्षा के बाद कोई पुरस्कार मिला हो। मृत लडके की मा, जो एक लम्बी, गठीली, घोड़े के से मुंहवाली स्त्री थी, बिना आंसू बहाये चुपचाप अपने बेटे के दफ़नाये जाने की राह देख रही थी। अर्तामोनोव को लगा जैसे वह इसके सस्कार के जल्द समाप्त होने के लिये उत्सुक हो। वह बार-बार कभी ताबूत के सिरहाने लगी हुई झालक की सिलवटे ठीक करती, कभी कागज़ की बनी सन्तो की मूर्तियों को लड़के के नीले माथे पर ढंग मे टिकाती, कभी लडके की आंखों पर ढंके हुए ताबे के नये, चमकीले सिक्कों को धीरे से दबाती। वह अपने शरीर पर भद्दे ढग से और जल्दी-जल्दी क्रॉस का चिह्न बनाती जा रही थी। अन्त्येष्टि-क्रिया के दौरान प्योत्र ने देखा कि उसकी बांह इतनी अधिक शिथिल हो गयी थी कि वह दो बार उसे ऊपर नहीं उठा पायी, वह उसे उठाती, मगर वह ऐसे नीचे गिर जाती मानो हड्डी चटख़ गयी।

इस दृष्टि से तो सारा मामला ठीक-ठाक रहा। नीकोनोव दम्पति ने अन्त्येष्टि-संस्कार के हेतु अर्तामोनोव द्वारा दी गयी माली मदद के लिये धन्यवाद दे-देकर दिमाग़ चाट डाला। बहुत खुले दिल से माली मदद देने पर कहीं तीख़ोन को सदेह न हो जाये, इस डर से उसने

थोड़ी-सी रक़म ही दी थी। अर्तामोनोव को तीख़ोन की मूढ़ता पर अभी तक विश्वास नहीं होता था। दूसरी बार ग़ुसलख़ाने की घटना ही इस व्यक्ति को प्योत्र के जीवन में अधिकाधिक गहरा धसाती जाती थी। यह बड़ी अजीब और भयानक बात थी। कई बार तो अर्तामोनोव ने सोचा कि वह ग़ुसलख़ाने को आग लगा दे या ईंधन के लिये तुड़वा डाले। वैसे भी वह पुराना हो गया था और उसके तख़्ते गलने लगे थे। किसी दूसरी जगह पर नया ग़ुसलख़ाना बनाना चाहिये।

बहुत कड़ी नज़र रखते हुए उसने देखा कि तीख़ोन की ज़िन्दगी में कोई अन्तर नही आया था। हमेशा की तरह वह अपने अस्तित्व के प्रति विनयशील था जैसे अपनी इच्छा के विरुद्ध केवल कृपा करता हुआ जी रहा हो। वही हमेशा की सी चुप्पी माधे रहता था। मिल के मज़दूरों के साथ वह पुलिस के सिपाहियों की सी सख़्ती से पेश आता, वे उसे पसन्द नही करते थे। औरतो के प्रति तो वह ख़ास तौर पर बेरुख़ी दिखाता था। लेकिन नतालिया के सामने आते ही वह कुछ और हो जाता – ऐसे बाते करता मानो वह मालकिन न होकर उसकी कोई सगी मौसी या बड़ी बहन हो।

"तुम तीख़ोन के साथ तो बहुत ज्यादा हेल-मेल दिखाती हो?" प्योत्र कई बार अपनी पत्नी से कह चुका था, वह सदा उत्तर देती –

"मैं इसकी आदी हो गयी हू।"

अगर तीख़ोन के दोस्त होते या वह लोगों से मिलने कही आता-जाता तो ऐसा सोचा जा सकता था कि वह किसी सम्प्रदाय का अनुयायी है। पिछले कुछ समय मे तरह-तरह के बहुत-से सम्प्रदाय बन गये थे। लेकिन सिवा सेराफ़ीम बढ़ई के तीख़ोन का कोई दोस्त ही नही था; उसे गिरजे में जाना अच्छा लगता था, वहां वह अत्यन्त श्रद्धापूर्वक प्रार्थना करता, हालांकि प्रार्थना के समय वह अपना मुंह बड़े भद्दे ढंग से खोलता, मानो अभी चिल्ला उठेगा। कभी-कभी तो तीख़ोन की मिचमिचाती आंखो को देखकर प्योत्र के माथे पर बल पड़ जाते; उसे लगता कि इन पनीली आंखों में कोई धमकी छिपी हुई है। अर्तामोनोव की इच्छा होती कि उसकी गर्दन पकड़कर झकझोर दे और चिल्लाकर कहे –

"बोलो भी!"

लेकिन तीख़ोन की आंखों की पुतलियां सिकुड़कर निर्जीव हो जाती

और चेहरे की कठोर शान्तिपूर्ण मुद्रा को देखकर प्योत्र का सन्देह दूर हो जाता। मूर्ख अन्तोनुश्का जब ज़िन्दा था, तो वह अक्सर चौकीदार के घर आया करता था या शाम के समय फाटक के पास बेंच पर बैठा रहता था। तीख़ोन ने अनेक बार उस बुद्धू से पूछने की कोशिश की –

"बकवास मत करो। जरा सोचकर बताओ कि कुयातीर कौन है?"

"कयामास," अन्तोनुश्का पुलकित होकर चीख़ता और गाना शुरू कर देता –

ईसा फिर से जिंदा हो गया

"चुप रहो!"

गाडी का पहिया खो गया

"आखिर तुम इससे जानना क्या चाहते हो?" अर्तामोनोव ने एक बार खीझकर पूछा। उसे स्वयं अपनी खीझ का कारण ज्ञात नही था।

"इसके इन विचित्र शब्दो का अर्थ।"

"लेकिन ये तो एक मूर्ख के शब्द है!"

"मूर्ख की भी अपनी कुछ बुद्धि होनी चाहिये," तीख़ोन ने उत्तर दिया था।

वैसे अच्छा तो यही होता कि इसमे कोई बात ही न की जाये। एक रात को प्योत्र को तूफान के कारण नीद नही आयी। उसे लगा कि आत्मा पर पडा यह भारी बोझ अब असह्य हो चला है। उसने पत्नी को जगाकर उसे नीकोनोव छोकरे की घटना सुनायी।

नतालिया ने नीद मे झपती आखो मे उसकी बाते सुनी और जम्हाई लेकर बोली –

"मुझे तो सपने कभी याद नही रहते।"

फिर अचानक वह डर से चौक उठी।

"हाय! मुझे बड़ा डर लग रहा है, कही याशा भी वैसा ही न करने लगे!"

"वैसा ही – क्या?"

और जब नतालिया ने स्पष्ट बताया कि वैसा ही से उसका मतलब क्या है तो प्योत्र ने खेदपूर्वक ललरी को ऐंठते हुए सोचा –

"बेकार ही इसे यह बताया।"

उस रात बर्फ़ीले तूफ़ान के शोर और चीखों में अपने अकेलेपन की तीव्र भावना के साथ-साथ उसे एक ऐसी चीज़ की प्राप्ति हुई, जिसने उसके द्वारा की गयी हत्या का स्पष्टीकरण प्रस्तुत कर दिया। उसके मन में यह विचार आया कि उसने इल्या को इस खतरनाक हमजोली की बुरी संगत से बचाने के लिये, पुत्र के प्रति वात्सल्य से प्रेरित होकर ही उस दुष्ट छोकरे की हत्या की है। इस विचार से उसे कुछ शान्ति मिली। साथ ही नीकोनोव छोकरे के प्रति उसकी ज़हरीली घृणा को तर्क-संगत आधार भी मिल गया। लेकिन वह समूचे पाप का बोझ किसी दूसरे के मत्थे मढ़कर स्वयं उससे पूर्ण मुक्ति पाना चाहता था। उसने पादरी ग्लेब को बुलवा भेजा, ताकि इस असाधारण पाप की अन्य साधारण पापों के साथ नहीं, बल्कि अलग से चर्चा करे।

झुके कन्धोंवाला दुबला-पतला पादरी शाम को आया और एक कोने मे चुपचाप बैठ गया। किसी अन्धेरे कोने में दुबककर बैठ जाना उसकी हमेशा की आदत थी, मानो वह किसी तरह की शर्म को छिपा रहा हो। उसके चोग़े की काली सिलवटें आरामकुर्सी के काले चमडे से बहुत कुछ मिलती-जुलती थी और इस उदास पृष्ठभूमि में केवल उसके चेहरे की धुधली-सी झलक मिल रही थी। पिघली बर्फ की बूंदें उसकी कनपटियों पर शीशे की तरह चमक रही थीं। वह अपनी विरली, लम्बी दाढी को सदा की भांति हड़ीली मुट्ठी में दबाये था।

सीधे बात कहने की हिम्मत न करते हुए अर्तामोनोव ने लोगो के तेज़ी से पतन की ओर बढ़ने, उनकी गुस्ताख़ी, नशेबाज़ी और व्यभिचार की बात शुरू की; लेकिन जल्द ही इस चर्चा से ऊबकर वह चुपचाप कमरे में टहलने लगा। और अब अन्धेरे कोने से शिकायत करती-सी पादरी की आवाज़ सुनायी दी।

"साधारण लोगों के आध्यात्मिक जीवन पर कुछ विचार नही किया जाता और स्वयं तो वे इसके आदी ही नही। वे ऐसा करना ही नही जानते। पढ़े-लिखे लोग. खैर, मुझे भर्त्सना करने का क्या अधिकार है? इसके अलावा हममें ऐसे लोग हैं भी बहुत कम और आप जानते हैं, वे हमारी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में आम लोगों में खप ही नहीं पाते। वे प्रयत्नशील हैं, ठीक है, लेकिन अनावश्यक चीज़ों के लिये। वे विद्रोह करते हैं और सरकार उन्हें कठोर दण्ड देती है। पता नहीं चारों ओर

ऐसी गड़बड़ क्यों है ? कुछ समझ में नही आता। इस निरर्थक गुल-गपाड़े में केवल एक स्पष्ट आवाज़ मानव आत्मा को जागरण की प्रेरणा देती है। यह आवाज है काउण्ट तोलस्तोय नाम के एक दार्शनिक और साहित्यिक की। ग़ज़ब का व्यक्ति है वह ; उसके साहसिक शब्द तो धृष्टता की सीमा तक पहुंच जाते है। लेकिन जहा तक ईसाई धर्म का सवाल है... आप जानते है..."

वह काफ़ी समय तक लेव तोलस्तोय की बातें करता रहा। अर्तामोनोव यद्यपि उसकी बातें पूरी तरह से नही समझ रहा था, पर अन्धेरे में से मृदुल लहरियों की तरह निकलते पादरी के मन्द स्वर और इस असाधारण व्यक्ति के अलौकिक चित्रण ने उसे अपने विचारों से अलग कर दिया। वह यह नहीं भूला था कि उसने पादरी को किसलिये बुला भेजा है, पर प्योत्र को लगा कि वह उसके प्रति दया से द्रवित होता जा रहा है। उसे मालूम था कि नगर के लोग पादरी ग्लेब को सनकी समझते हैं, क्योकि वह लालची नही था और हर किसी से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करता था ; सब सस्कारों को, विशेषकर अन्त्येष्टि संस्कार को बड़े मार्मिक ढंग से निभाता था। अर्तामोनोव को यह सब स्वाभाविक लगा। पादरी को ऐसा होना चाहिए। पादरी के प्रति प्योत्र की सहानुभूति का यह कारण भी था कि नगर के पादरी और नगर के संभ्रान्त लोग पादरी ग्लेब को नापसन्द करते थे। लेकिन यह तो सच है कि पादरी को कठोर होना चाहिये, विशेष प्रकार के शब्दों का प्रयोग करना उसका कर्तव्य है, हृदयबेधी और चुभनेवाले वाक्यो के जादू से उसे लोगों में पाप के प्रति डर और घृणा पैदा करनी चाहिये। अर्तामोनोव जानता था कि ग्लेब के पास यह जादू नही था। पादरी कुछ असमंजस के स्वर में बोल रहा था। उसकी आवाज़ जैसे किसी का दिल दुखाने के डर से कांप रही थी। कुछ देर चुप रहने के बाद प्योत्र ने कहा –

"पिता ग्लेब, मैंने यह बताने के लिये आपको कष्ट दिया है कि इस वर्ष मैं धर्म-संस्कार में शामिल न हो सकूगा।"

"क्यों ?" पादरी ने अनमने ढंग से पूछा और कोई उत्तर न पाकर बोला, "आप स्वय अपनी आत्मा के सम्मुख उत्तरदायी है।"

अर्तामोनोव को लगा कि पादरी भी तीखोन की सी निर्मम उदासीनता दिखा रहा है। ग़रीबी के कारण पादरी जूतों के ऊपर पहने जानेवाले रबड़ के जूते नहीं पहनता था, इसलिये उसके भारी-भरकम

बूटों पर जमी हुई बर्फ़ पिघल-पिघलकर फ़र्श को गन्दा कर रही थी। पादरी इस पानी में तलों को छपछपाता हुआ भर्त्सना नहीं, खेद के स्वर में कह रहा था –

"इस परिस्थिति में मन को एक ही चीज़ से सान्त्वना मिलती है – जीवन की बढ़ती बुराइयां भी एक ही जगह इकट्ठी होती जाती है और इस तरह मानो उनसे छुटकारा पाने में आसानी होती है। मैंने देखा है कि हमेशा ही ऐसा होता है: पहले बुराई की छोटी-सी धुरी प्रकट होती है, फिर तकली के ऊपर लिपटे सूत की तरह वह दिन प्रतिदिन बढ़ती जाती है। बिखरी हुई बुराई पर क़ाबू पाना कठिन है, लेकिन उसके एक ही जगह सकेन्द्रित हो जाने पर न्याय की तलवार के एक ही झटके से उसके टुकड़े-टुकड़े किये जा सकते है ..."

ये शब्द अर्तामोनोव के स्मृति-पटल पर अंकित हो गये, उसे कुछ सान्त्वना मिली। पाशा – उसी तरह की धुरी था! सारे बुरे-बुरे विचार उसी छोकरे की ओर चुम्बक की तरह खिंच रहे थे। इसी क्षण उसने एक बार फिर यह सोचा कि कुछ हद तक उसने यह पाप अपने बेटे के कारण ही किया है। चैन की एक सास लेकर उसने पादरी को चाय पीने का निमन्त्रण दिया।

भोजन का कमरा उजला और आनन्ददायी था। सुखद गर्म हवा में जायकेदार भोजन की सुगन्ध फैल रही थी। मेज़ पर समोवार में पानी खौल रहा था और भाप के सुखद लहरे निकल रहे थे। आरामकुर्सी पर बैठी हुई प्योत्र की सास अपनी चार वर्षीय नातिन को गाकर लोरी सुना रही थी –

यह देवी का महिमा-गान
बाट दिये जिसने वरदान,
प्योत्र देवदूत को उसने
गर्मी का उपहार दिया,
प्रभु के प्यारे निकोलाई को
सागर, नद, विस्तार दिया,
भाला सोने का पैगम्बर इल्या को
दे, ऊंचा सत्कार किया।

"यह काफ़िरो का गाना है," कुर्सी खींचते हुए पादरी ने क्षमापूर्ण मुस्कराहट के साथ कहा।

शयनकक्ष में प्योत्र की पत्नी ने उसे बताया –

"अल्योशा लौट आया है। मैंने उसे देखा था। वह मास्को के लिये अधिकाधिक दीवाना होता जाता है। उफ़, मुझे डर है..."

गर्मियों में नतालिया की दूध-सी सफ़ेद गर्दन और नर्म हो गयी, गुलाबी गालों पर सूई की नोक के बराबर लाल-से कुछ दाने निकल आये। नतालिया इनके कारण कुछ परेशान थी और सप्ताह में दो बार सोने से पहले वह शहद के रंग का एक मरहम अपने गालों पर मलती थी। इस समय भी वह शीशे के सामने बैठी और अपनी नंगी कोहनियों को हिलाती-डुलाती हुई मुंह पर मालिश कर रही थी। रात की पोशाक के भीतर से उसके पयोधर दो टीलों के समान दिखायी दे रहे थे। सिर के नीचे बांहें दबाये प्योत्र बिस्तर पर लेटा था, उसकी नुकीली दाढ़ी ऊपर की ओर उठी हुई थी। उसने कनखियों से पत्नी की ओर देखते हुए सोचा कि वह एक मशीन से कितनी मिलती-जुलती है और उसका मरहम उबली हुई स्टर्जन मछली जैसी बू फैला रहा है। शान्त, धीमे स्वर में रात की प्रार्थना के बाद जब नतालिया ने अपने स्वस्थ शरीर का आदेश-पालन करते हुए अपने आपको पति के सामने समर्पित किया, तो प्योत्र ने यह ढोंग किया मानो वह सो रहा हो।

"धुरी," उसने सोचा। "और मै भी तो एक तकला हू। घूं-घूं करके चक्कर काटता रहता हू। पर कातता कौन है? तीख़ोन कहता है – आदमी कातता है और शैतान उससे टाट बुनता है। शैतान कहीं का!"

अल्योशा के प्रयासों की बदौलत अर्तामोनोवों का कारोबार नदी पार की रेतीली पहाड़ियों तक फैल गया। पहाडियों की सुनहरी आभा नष्ट हो गयी। अबरक की चादी की सी चमक न जाने कहां चली गयी और बिल्लौरी पत्थर फीके पड़ गये, रेत पैरों से दब गयी थी। प्रतिवर्ष वसन्त के मौसम में चारों ओर अधिकाधिक हरियाली दिखायी देने लगी। सड़क के दोनों ओर प्लानटेन और चौड़े पत्तोंवाले बर्डोक उग आये। मिल के आस-पास पेड़ों के सघन कुंज शोभायमान होने लगे। पतझड़ की सड़ी-गली पत्तियां गिरकर रेत के टीलों में खाद बनने लगी। मिल की चिल्ल-पो और भी तेज़ हो गयी। समूचे वातावरण में आशंकाओं और चिन्ताओं की अनुभूति होती थी। सुबह से शाम तक सैकड़ों तकले घरघराते, करघे खटखटाते और दम लिये बिना मशीनें चलती तथा

गूंजती आवाज़ पैदा करती रहतीं। अपने आपको इस सारे व्यापार का स्वामी जानकर एक सुखद अनुभव होता – विचित्र-सी गुदगुदी होती, गर्व से छाती फूल उठती।

लेकिन आजकल अक्सर ही अर्तामोनोव थककर चूर हो जाता। उसे गांव की याद आ जाती, जहां उसने अपना बचपन गुज़ारा था। नदी की शान्त, निर्मल धारा, क्षितिज तक फैले हुए खेत और किसानों का सीधा-सादा जीवन। उसे ऐसा लगता मानो किसी अदृश्य शक्तिशाली शिकंजे ने उसे जकड़ लिया है, वह विवश होकर छटपटा रहा है। दिन भर की इस दौड़-धूप के बाद उसका दिमाग़ सुन्न हो जाता है और वह कारोबार से सम्बन्धित बातों के अतिरिक्त और कुछ भी न सोच पाता। मिल की चिमनी से उठनेवाले छल्लेदार धुएं ने सारे वातावरण को एक अजब निराशा और थकावट से ढंक लिया है।

ऐसे समय में उसे मिल के मज़दूर ख़ास तौर पर अच्छे न लगते। उसे लगता कि धीरे-धीरे उनकी शक्ति क्षीण होती जा रही है। किसानों का धैर्य ख़त्म होता रहा है और वे बात-बात पर औरतो की तरह खीझ उठते हैं, हद से ज़्यादा तुनकमिज़ाज और बोलने मे ढीठ होते जा रहे हैं। उनमें लापरवाही और अस्थिरता आ गयी है। जब प्योत्र के पिता जीवित थे, ये लोग एक परिवार की तरह बड़े मेल-मिलाप से रहते थे। तब कोई भी इतनी शराब नही पीता था और न इतनी बेहयाई थी। अब हर चीज़ उलझ गयी थी। मज़दूरों के दिल-दिमाग़ शायद पहले से अधिक चुस्त हो गये थे, लेकिन अब काम के प्रति लापरवाही बढ़ गयी थी और एक-दूसरे के साथ स्नेह-सम्बन्ध भी उतने गहरे नही रहे थे। सबके सब इस तरह कनखियो से, नज़र बचाकर देखते थे, मानो सब कुछ नाप-तौल रहे हों। छोकरे तो विशेष रूप से मनमानी करनेवाले और उद्दण्ड होते जा रहे थे। मिल थोड़े ही समय में इन छोकरों के देहाती गुणो को नष्ट कर देती थी।

भट्ठी में कोयला झोंकनेवाले वोल्कोव को पागलखाने में भेजना पड़ा था। पांच साल पहले जब वह मिल में नौकरी करने आया था, तब वह एक सुन्दर और स्वस्थ जवान था। आग मे घर-बार स्वाहा हो जाने के कारण उसे गांव छोड़कर भागना पड़ा था। यहां आकर उसकी सुन्दर बीवी पास-पड़ोस के लोगों से आंखें लड़ाने लगी और वोल्कोव ने उसे मारना-पीटना शुरू कर दिया था। एक साल में ही

उस बेचारी को तपेदिक़ ने आ दबाया, अब दोनों का सत्यानाश हो चुका था। अर्तामोनोव ने ऐसे कई लोगों को तबाह होते देखा था। पांच वर्ष के दौरान चार हत्याएं हुई थी – दो मार-पीट में, एक बदले के रूप में और एक ईर्ष्या के कारण। एक अधेड़ जुलाहे ने एक जवान मज़दूरिन को छुरा भोंक दिया था। मार-पीट और खून-खच्चर तो अक्सर ही होता रहता था।

ऐसा लगता कि अल्योशा पर इन सब बातों का कोई असर नही पड़ता था। दिन-प्रतिदिन उसे समझना मुश्किल होता जा रहा था। उसे देखकर साफ़-सुथरे और हंसी-मज़ाक करनेवाले बढ़ई सेराफ़ीम की याद आ जाती थी, जो बड़ी खुशी और बढिया ढंग से मज़दूरों के बच्चों के लिये सीटियां और तीर-कमान तैयार करता था और उतनी ही खुशी से उनके लिये ताबूत बनाता था। अल्योशा को विश्वास था कि सब मामला ठीक चल रहा है और आगे भी वैसे ही चलता रहेगा। उसकी बाज़ की सी आंखें आत्मविश्वास से चमकती रहती थी। उसके परिवार के तीन प्राणी तो कब्रिस्तान में पहुंच चुके थे। केवल एक बेटा मिरोन जीवन की डोर को मज़बूती से पकड़े हुए था। प्रकृति ने बडे फूहड ढंग से उसके अस्थि-पंजर पर मांस का खोल चढाया था। उसको देखकर ऐसा लगता था मानो उसके शरीर का हर जोड़ अभी खुल जायेगा। वह अपनी उंगलियों को अक्सर ज़ोर से चटखाता रहता। तेरह वर्ष की उम्र में ही उसे चश्मा लगाना पड गया था जिससे उसकी मुर्गे जैसी नाक कुछ छोटी प्रतीत होने लगी थी और आंखों का भद्दा, भूरा रंग भी कुछ मन्द पड़ गया था। वह हर वक्त कोई पुस्तक हाथ में लिये रहता और उसमें ऐसे ढग से उगली खोंसे रखता मानो उसका हाथ पुस्तक के साथ ही लगा हुआ है। मा-बाप के सामने वह बराबर-वालों की तरह बात ही नही, बहस भी करता और वे भी अपने बेटे की इस बात पर फूले न समाते। प्योत्र ताड़ गया था कि उसका भतीजा उसे पसन्द नही करता, सो वह भी उसके साथ इसी ढंग से पेश आता।

अल्योशा के यहां किसी तरह का भी नियम-कायदा न था। बडे अर्तामोनोव को अपने और अपने भाई के जीवन मे वैसा ही अन्तर दिखायी देता जैसा एक मठ और मेले-ठेले की सजी दुकान में होता है। अल्योशा और उसकी पत्नी के मित्रों में से कोई भी शहरी न था; फ़र्नीचर के कारण कबाड़खाने जैसे दिखायी देनेवाले उनके कमरे छुट्टी

के दिन सन्देहजनक लोगों से भर जाते। सोने के दांतोंवाला व्यंग्यपूर्ण, दुष्ट, मिल का डाक्टर याकोव्लेव; मिस्त्री कोप्तेव जो एक नम्बर का शराबी, जुआरी और बकवासी था; मिरोन का अध्यापक, विद्यार्थी जिसकी पढाई पुलिस ने बन्द करवा दी थी और उसकी बीवी जो सिगरेट फूंकती और गिटार बजाती थी; इनके अतिरिक्त कई और ऐरे-ग़ैरे नत्थू-खैरे जमा होते। सब के सब पादरियो और मक्कारी अफसरो को पानी पी-पीकर कोसते। हर कोई अपने आपको अक़्ल का ठेकेदार समझता। अर्तामोनोव इन लोगों की नस-नस पहचानता था। उसे मालूम था कि सब दिल के खोटे है। वह सोचता — इतने बड़े कारोबार का आधा मालिक होते हुए उसका भाई इस तरह के लोगों को क्यों मुंह लगाता है? उनके शोर-गुल को सुनकर उसे याद आता कि पादरी को भी यही शिकायत थी —

"ये लोग चाहते तो बहुत कुछ है, मगर मुख्य बात की ओर ध्यान नहीं देते।"

उसके मन मे यह सवाल नही उठा — "तो फिर मुख्य बात कौन-सी है?" वह जानता था कि मुख्य बात तो कारोबार में ही है।

उसका भाई तो उस ऊधमी जिप्सी कोप्तेव का दीवाना था। वह पियक्कड़ लगता था, उसमें एक विचित्र शक्ति भरी थी, शायद वह अक्लमन्द भी था। वह अक्सर बडबड़ा उठता —

"यह कोरा फ़लसफ़ा है, सब बकवास है! कारखाने, मशीनें! असली चीजें तो यही है!"

लेकिन बडे अर्तामोनोव को हमेशा यही शक होता कि कोप्तेव नास्तिक और विध्वसकारी व्यक्ति है।

"यह आदमी ख़तरनाक है," उसने अपने भाई से कहा। अल्योशा को बड़ा आश्चर्य हुआ।

"कौन, कोप्तेव? यह तुम क्या कह रहे हो? वह तो ग़जब का आदमी है — चुस्त, कामकाजी, मेहनती, होशियार! काश, ऐसे हजारो लोग होते!"

फिर उसने हसकर इतना और कह दिया —

"अगर मेरी कोई बेटी होती तो मैं उसे अपना दामाद बनाकर कारोबार से बांध लेता!"

प्योत्र खिन्न होकर उससे दूर हट गया। ताश बन्द होने पर वह अपनी

प्यारी, बिस्तर की तरह चौड़ी और मुलायम आरामकुर्सी पर बैठकर कान की ललरी ऐंठता और लोगों को देखता रहता। वह किसी की भी बातों से सहमत न था और हर एक से बहस करना चाहता। इसका कारण सिर्फ़ यही नही था कि वे उसकी अवहेलना करते थे, हालांकि वह कारोबार में बड़ा साझीदार था, पर इसके और भी कई कारण थे। वह इन कारणों से अनभिज्ञ था। बात करने का ढंग वह नहीं जानता था, सिर्फ़ बीच-बीच में एकाध शब्द कह देता था।

"पादरी ग्लेब किसी काउण्ट की बात सुना रहा था..."

और कोप्तेव फ़ौरन ही उस पर बरस पड़ा –

"आपको, आपको उस काउण्ट से क्या लेना-देना है? यह काउण्ट – कृषक रूस की अन्तिम आह है..."

वह चिल्लाता और साथ ही बड़ी गुस्ताखी से प्योत्र की तरफ़ उंगली से इशारा करता और उसे सुनते हुए उसे बाकी सब भी कोप्तेव की तरह बे-घरबार खानाबदोश जिप्सी लोगों की तरह लगते।

"कीडे," प्योत्र सोचता, "जोंकें कही की।"

एक रोज़ उसने कहा –

"यह कहावत ग़लत है कि व्यापार कोई रीछ तो नही होता, जंगल में नही भाग जायेगा, व्यापार रीछ तो है ही, उसने हमें कसकर दबोच लिया है। व्यापार का आदमी से यही नाता है।"

"वाह, वाह!" कोप्तेव चिल्ला उठा, "भला ऐसी अक़्लमन्दी की बात कहां सुनने को मिलेगी? कौन कहेगा ऐसी बात? अब हमें खतरे का पता चल गया!"

अल्योशा ने मज़ाकिया ढंग से पूछा –

"तुम क्या ऐसी बातें तीखोन से सीखते हो?"

प्योत्र को बहुत बुरा लगा। घर आकर उसने अपनी पत्नी से कहा – "ज़रा येलेना का ध्यान रखा करो। वह कजड कोप्तेव हर दम उसके गिर्द चक्कर काटता रहता है। अल्योशा उस दुष्ट का पक्ष लेता है। कहां येलेना और कहां वह? ज़मीन-आसमान का फ़र्क है। येलेना के लिये कोई लड़का तलाश करो।"

"यहां क्या लड़का मिलेगा उसके लिये," नतालिया ने गम्भीर स्वर में कहा। "उसके लिये तो शहर जाना पड़ेगा, लेकिन अभी तो ऐसी क्या जल्दी है..."

"कहीं वे तुम्हारी लापरवाही का फ़ायदा न उठा लें," अर्तामोनोव ने चुटकी ली, उसकी बीवी खिलखिलाकर हंस पड़ी।

क्षण भर के लिये जब कभी वह कारोबार की चिन्ताओं के संकुचित घेरे से निकलने में सफल होता तो फ़ौरन अपने को लोगों के प्रति घृणा और अपने प्रति असन्तोष के घने कुहरे से घिरा पाता। इस अंधेरे में रोशनी की एक ही किरण होती थी – अपने बेटे के प्रति उसका मोह, लेकिन यह किरण भी नीकोनोव की छाया से ग्रस्त थी और रह-रहकर हत्या के पाप के बोझ से वह छिन्न-भिन्न हो जाती थी। कभी-कभी उसके मन में आता कि इल्या को साफ़-साफ़ बता दे –

"देखो तो, मैंने तुम्हारी चिन्ता करते हुए क्या कर डाला है।"

लेकिन वह इतना चालाक नहीं था कि अपने आपको धोखा दे। उसे ठीक याद था कि अपने बेटे की चिन्ता का तो हत्या के सिर्फ़ एक क्षण पहले ही उसके दिमाग़ में ख्याल आया था, हालांकि प्योत्र जानता था कि बेटे के बारे में चिन्ता ही उसके पाप की कुछ सफ़ाई पेश कर सकती है। फिर भी इल्या की उपस्थिति में वह नीकोनोव का नाम लेते भी डरता था, घबराता था कि अपने उस अपराध का कोई संकेत ही न कर बैठे जिसे अपने शौर्य का प्रतीक बनाना चाहता था।

प्योत्र ने देखा कि इल्या तेज़ी से बढ रहा है, लेकिन एक अनोखी दिशा में। उसके रंग-ढंग मे संयम आ गया था। वह मां से अत्यधिक नम्रता से बात करता, यहां तक कि याकोव को भी, जो अब खुद भी स्कूल में पढ़ता था, उसने तंग करना छोड़ दिया था; अपनी छोटी बहन तात्याना के साथ लाड़-प्यार करना उसे अच्छा लगता था, येलेना के साथ हल्का-सा हंसी-मज़ाक करता। लेकिन उसके हर व्यवहार में सोच और चिन्तन की विरक्ति-सी दिखायी देती। पाशा नीकोनोव का स्थान मिरोन ने ले लिया था। दोनो चचेरे भाई हर समय इकट्ठे रहते, हाथो को लहराते हुए लगातार बाते करते रहते। दोनों बगीचे के ग्रीष्मगृह में बैठकर पढ़ते-लिखते। इल्या तो शायद ही कभी घर पर रहता। सुबह जल्दी से चाय पीने के बाद वह नगर में अपने चाचा के घर चल देता या मिरोन और काले घुंघराले बालोवाले गोरीत्स्वेतोव के साथ जंगल में ग़ायब हो जाता। गोरीत्स्वेतोव नाटे क़द का तेज़, चुस्त लड़का था। वह मटक-मटककर चलता, उसकी टेढ़ी-मेढ़ी आंखें देखने में ऐंची-सी लगती।

"तुम उस यहूदे के साथ क्यों चिपके रहते हो?" नतालिया ने घृणा से पूछा। प्योत्र ने देखा कि लड़के की सुन्दर भौंहें सिकुड़ गयी हैं।

"मां, यहूदा शब्द अपमानजनक है। फिर आप अच्छी तरह जानती है कि अलेक्सान्द्र पादरी ग्लेब का भतीजा है। इसका मतलब है कि रूसी है। क्लास में वह सबसे आगे रहता है..."

मां ने घृणा से मुंह बिचकाकर कहा –

"यहूदे हमेशा आगे रहते है।"

"आपको यह कैसे मालूम है? सारे शहर मे कुल चार यहूदी है और दवाफ़रोश के सिवा बाक़ी तीनों ग़रीब है," बेटे ने विरोध किया।

"और यहूदे के चालीस बच्चे है, वोरगोरोद मे तो यहूदे ही यहूदे है, मेले में भी उनकी भरमार है.."

इल्या ने चिढकर फिर दुहराया –

"यहूदा बुरा शब्द है।"

मां तश्तरी पर ज़ोर से चम्मच मार कर तथा गुस्से मे लाल होती हुई चिल्ला उठी –

"चले हो तुम मुझे अक़्ल सिखाने? क्या मै यह नही जानती हूं कि मुझे क्या कहना और क्या नही कहना चाहिये? आखिर भला मुझे नही दिखायी देता कि वह थूक चाटनेवाला यहूदा किस तरह हर किसी के सामने दुम हिलाता है, यहा तक कि तीखोन के सामने भी। इसीलिये मैं कहती हू वह यहूदे की तरह मुह का मीठा है, और मुह के मीठे बड़े ख़तरनाक होते है – मेरा भी एक ऐसे मुह के मीठे आदमी से वास्ता पड़ चुका है.."

"बस, बहुत हो चुका!" प्योत्र ने सख्ती से कहा। नतालिया रुआंसी होकर बोली –

"आख़िर यह भी कोई बात है, प्योत्र इल्यीच? क्या कोई अपनी ज़बान पर ताला लगा ले?"

भौंहें चढ़ाते हुए इल्या चुप रहा। उसकी मां बोली –

"मैंने ही तुम्हें पैदा किया है।"

"धन्यवाद," इल्या ने ख़ाली प्याले को एक ओर सरकाते हुए कहा। पिता ने कनखियो से बेटे की ओर देखा और कुछ मुस्कराते हुए अपने कान की ललरी ऐंठने लगा।

पत्नी के बात करने के ढंग से प्योत्र समझ गया था कि वह अपने बेटे से डरती है, ठीक उसी तरह जैसे कुछ समय पहले उसे मिट्टी के तेल के लैम्पों से डर लगता था। आजकल उसे ओलगा द्वारा दिये गये बढ़िया कॉफ़ीदान से डर लगता था – उसे प्रतीत होता कि कॉफ़ी-दान फट जायेगा। इल्या के मामले में उसकी पत्नी द्वारा अनुभव किये जानेवाले इस हास्यास्पद डर को प्योत्र खुद भी महसूस करता था। इल्या को समझ पाना कठिन होता जा रहा था। वैसे तो तीनों लड़के ही समझ में नहीं आते थे। उन्हें तीखोन जैसे आदमी से न जाने क्या लड्डू मिलते थे। शाम को वे तीखोन के साथ फाटक के सामने बैठे रहते और प्योत्र अर्तामोनोव जब-तब तीखोन को इस तरह के उपदेश देते सुनता रहता –

"यह ठीक है। अपनी पीठ पर जितना कम बोझ लादोगे, उतने ही हल्के रहोगे। लेकिन ओनों-कोनो की बात कोरी गप्प है। भला आसमान मे कोने कहां से आये, वहां दीवारें थोड़े ही है।"

बच्चे खिलखिलाकर हंस पड़े। इल्या की हंसी स्निग्ध, लेकिन संक्षिप्त थी। मिरोन की खुश्क और तीखी, गोरीत्स्वेतोव औरों की अपेक्षा कम हंसता और वह हमेशा ही दोस्तों को यह विश्वास दिलाते हुए हंसना बन्द कर देता –

"ज़रा रुको तो! इसमें हंसने की तो कोई बात ही नही!"

और तीखोन फिर से अपने रहस्यमय शब्दों को धीरे-धीरे बोलने लगता –

"तो बच्चो, तुम्हे मनुष्य के बारे में और वह अधिक यह जानना चाहिये कि मनुष्य है क्या? कौन किस काम के अधिक उपयुक्त है और किस का कैसा भाग्य है? इन्ही बातों पर तुम्हें सोच-विचार करना चाहिये। और फिर शब्द भी तो है। उन्हें बहुत अच्छी तरह समझना चाहिये। तुम लोग कभी एक, तो कभी दूसरा शब्द इस्ते-माल करते हो, मगर उसकी तह में नही जाते, उसका सार नही समझते!"

और इसके बाद तीखोन ने अपनी प्रिय कहावत को, जिससे प्योत्र अच्छी तरह परिचित था, दुहरा दिया –

"आदमी कातता है और शैतान उससे टाट बुनता है। आदिकाल से यही होता आया है।"

बच्चे फिर खिलखिलाकर हंस पड़े, तीख़ोन ने भी हंसी में उनका साथ दिया। फिर वह ठंडी सांस लेकर बोला –

"ज्ञान तो पाया, मगर उसे नहीं पचाया!"

सांझ के झुटपुटे में बच्चे दिन की अपेक्षा अधिक छोटे दिखायी देते और तीख़ोन मानो और भी चौड़ा और बड़ा लगता, दिन की अपेक्षा उसकी बकवास अधिक मूर्खतापूर्ण हो जाती।

तीख़ोन के साथ इल्या के मेल-जोल ने प्योत्र के दिल में चौकीदार के प्रति घृणा की तीव्र आग सुलगा दी थी, साथ ही एक अज्ञात और विचित्र-सी शंका भी उसके मन में सिर उठाने लगी थी। उसने अपने बेटे से पूछा –

"तीख़ोन मे ऐसा कौन-सा सुर्ख़ाब का पर लगा है, ज़रा सुनूं तो?"

"वह दिलचस्प आदमी है।"

"भला दिलचस्पी की कौन सी बात है? उसकी मूर्खता?"

इल्या ने शान्ति से उत्तर दिया –

"मूर्खता को भी समझना चाहिये।"

अर्तामोनोव को यह उत्तर रुचा।

"यह सच है। दुनिया मूर्खों से भरी पडी है।"

अगले ही क्षण उसे याद आया –

"यह तो तीख़ोन के ही शब्द है!"

बेटे को देखकर उसके मन में विशेष प्रकार की आशाएं अकुरित होती। जब इल्या अपनी जेबों में हाथ डाले खिड़की के पास खड़ा होकर हल्की-सी सीटी बजाता हुआ मज़दूरो को देखता अथवा करघोंवाले कमरे में दबे क़दमों से चक्कर लगाता, या जब फुर्ती से मिल की बस्ती की ओर जाता, तो पिता को सन्तोष की अनुभूति होती –

"यह कठोर मालिक साबित होगा। यह ही कारोबार में भी सफल और होशियार साबित होगा – मेरी तरह मजबूरी से यह बोझ नही ढोयेगा।"

लेकिन लड़के की चुप्पी को देखकर कुछ निराशा होती थी। वह जब भी बोलता, तो उसके नपे-तुले, नीरस शब्दों को सुनकर बातचीत जारी रखने की सारी इच्छा धूल में मिल जाती।

"कुछ रूखे स्वभाव का है," अर्तामोनोव सोचता, अपने मन को इस विचार से तसल्ली देता कि इल्या बाक़ी लड़कों से निराला है।

इल्या न तो बातूनी गोरीत्स्वेतोव जैसा है, न सुस्त और आलसी याकोव जैसा और न ही मिरोन जैसा, जो किशोरावस्था के सारे लक्षण खोकर किताबी ढंग से बातें करता था और जिसकी गुस्ताखी तो किसी स्वेच्छाचारी अफ़सर की सी थी जिसे यह मालूम होता है कि जीवन की हर समस्या के लिये किताबों मे विशेष और कड़े नियम लिखे हुए है।

देखते-देखते छुट्टियां भी गुज़र गयी और सब लड़के वापस लौटने की तैयारियां करने लगे। ऐसा हुआ कि विदाई के समय नतालिया ने याकोव को नसीहतों से लाद दिया और पिता ने इल्या से वह सब नही कहा जो कहना चाहता था। और फिर वह बेटे से यह कैसे कहता कि उसकी ज़िन्दगी नीरस है, कारोबार की चिन्ताएं उसे मच्छरों के झुंड की तरह घेरे हुए है? भला लड़कों से भी कही ऐसी बातें कही जाती है? अर्तामोनोव की आत्मा किसी अद्भुत, असाधारण अनुभव के लिये, किसी ऐसे अनुभव के लिए जो हिमपात, वर्षा, कीचड़, गर्मी और धूल की तरह मामूली और अवश्यम्भावी न हो, इतना तड़प रही थी, कि आखिर उसे इस तरह की चीज़ प्राप्त हो जाये या फिर वह इसकी कल्पना कर ले। जून महीने में एक सुदूर जंगली प्रदेश मे यात्रा करते हुए उसे एक बार भयानक वर्षा और ओलों का सामना करना पड़ा। बादलों की गडगड़ाहट और बिजली की चमक से मानो सारा आकाश फटा जा रहा था। तंग जंगली रास्ते पर पानी की धाराएं बह निकली। घोड़ो के सुमो से रौंदी हुई कीचड़ उछलकर पहियों की धुरियों तक पहुंच गयी। रह-रहकर दिल दहलाती बिजली चमक उठती थी, जिसकी ठंडी नीली लपटो में उबलती ज़मीन और वर्षा के जाल मे से आस-पास के अंधेरे में से काले वृक्ष कांपते-से नज़र आते थे। अचानक ही घोड़े हिनहिनाकर तथा सुमो से पानी को छपछपाते हुए रुक गये। मोटे, नम्र कोचवान याकीम ने उन्हे प्यार से पुचकारकर शान्त किया। कुछ देर बाद ओलों की धडधड़ बन्द हो गयी, लेकिन इतने में ही मानो आस-पास के वृक्षों को चाबुक से मारती हुई वर्षा की अनगिनत बूंदो ने जंगल के अन्धकार को एक क्रोध-भरी हुंकार से गुजा दिया।

"हमें पोपोव के यहां चलना चाहिये," याकीम ने कहा।

और इस तरह, जैसे एक स्वप्न में अर्तामोनोव ने अपने को पराये कपड़े पहने, जो उसके अंगों को कस रहे थे, एक मेज़ के पास बैठा

पाया। उस गरम कमरे के खुशनुमा झुटपुटे में बैठा वह इतना लजा रहा था कि उसके लिये हाथ-पाव हिलाना-डुलाना दूभर हो रहा था। क़लई किया हुआ समोवार मेज़ पर रखा उबल रहा था और चुन्नट-दार काली पोशाक पहने, लम्बे छरहरे शरीरवाली एक स्त्री चाय ढाल रही थी। ललछौहें बालों के नीचे सुन्दर, भूरी आंखें उसके पीले मुख को आलोकित-सा कर रही थी। अत्यन्त सरल और तटस्थ भाव से, जिसमें शिकायत का नाम भी नही था, वह अपने पति की अकाल मृत्यु और अब अपनी हवेली को बेचकर नगर में जाकर प्राइवेट स्कूल खोलने के बारे में मधुर कंठ से बातें कर रही थी।

"आपके भाई ने मुझे यह सलाह दी है। वह बडे दिलचस्प आदमी हैं। इतने उत्साही और मौलिक..."

प्योत्र ने कमरे मे चारों ओर दृष्टि घुमाते हुए ईर्ष्या से हुकारी भरी। जवानी के दिनों में अपने पिता के साथ यात्रा करते समय वह कुलीन ज़मीदारो के घरों में भी आया-गया था, लेकिन वहा उसे कभी कोई विशेष आकर्षण की चीज़ न दिखायी दी थी। उनमें रहनेवाले लोगों और सजावट की चीज़ों को देखकर उसके मन मे हमेशा एक परेशानी का भाव ही पैदा हुआ था। किन्तु इस घर में मन को परेशान करनेवाली कोई चीज़ नही थी। यहा का वातावरण सौजन्यता और स्वाभाविकता से परिपूर्ण था। दूधिया शेडवाला एक बड़ा लैम्प मेज़ पर रखी तश्तरियों और चांदी के बर्तनो पर दुग्ध-धवल प्रकाश डाल रहा था। इसका कोमल आलोक आखों पर हरे छज्जेवाली टोपी झुकाये, ड्राइंग की कॉपी पर तन्मयता से झुकी हुई एक नन्ही-सी बालिका के चिकने, काले बालों को मानो प्यार से सहला रहा था। वह नन्ही लड़की अपनी महीन, नुकीली पेंसिल से कॉपी मे चित्र बना रही थी और साथ ही ऐसे कोमल अस्फुट स्वर से कुछ गुनगुना रही थी कि उससे मां के शान्त वार्तालाप में कोई बाधा नही पड़ती थी। कमरा बड़ा नही था और उसमें फ़र्नीचर भरा हुआ था। हर वस्तु कमरे का अभिन्न अंग थी और साथ ही वे बिल्कुल अलग अस्तित्व रखती थी, जैसे दीवार पर लगे तीन चमकीले चित्रों की तरह स्वयं अपने को अभिव्यक्त कर रही हों। सामनेवाली तस्वीर मे परियों की किसी कथा के एक श्वेत घोड़े का चित्र था, जिसकी गर्व से उठी गर्दन के लम्बे अयाल भूमि को छू रहे थे। सारा वातावरण सुखद और शान्तिपूर्ण था, जिसमें

गृह-स्वामिनी का मधुर स्वर प्योत्र के कानो में एक दूर से आ रहे स्वप्न-गीत की तरह तिरता हुआ आ रहा था। ऐसे वातावरण में एक आदमी किसी आशंका के बिना सारा जीवन बिता सकता है और पाप से सर्वथा दूर रह सकता है। यदि ऐसी स्त्री अपनी पत्नी हो तो उसका आदर किया जा सकता है, उसके साथ हर बात की चर्चा की जा सकती है।

बरामदे के दरवाज़े के रंगीन शीशो के बाहर बादलों से घिरे हुए आकाश को अब भी रह-रहकर नीली कौंध थरथरा देती, मगर वह दहशत न पैदा करती।

पौ फटते ही अर्तामोनोव वहां से अपने मन में सुख और शान्ति की स्मृतियो का भडार लेकर और इस सुख-शान्ति की निर्माता भूरी आंखोवाली, शान्त-चित्त और अपार्थिव सौन्दर्य की प्रतिमा जैसी स्त्री का चित्र मानस-पट पर अकित करके चल पड़ा। उसकी गाड़ी पानी के गढों पर मे फिसलती हुई बढ रही थी, जिनमें सूरज की सुनहली आभा और वायु से छितराये बादलों के गन्दे से धब्बे समान रूप मे प्रतिबिम्बित हो रहे थे। उसने उस समय ईर्षाजन्य उदासी मे सोचा –

"कुछ लोग ऐसे भी रहते हैं।"

न जाने क्यों, उसने न तो अपनी पत्नी और न भाई अल्योशा को ही इस नये परिचय की सूचना दी। इसलिये कुछ सप्ताह बाद जब एक दिन अपने भाई के यहा जाने पर उसने पोपोवा को ओलगा की बगल मे सोफे पर बैठे देखा, तो वह सकपका गया। अल्योशा ने उसे आगे ढकेलते हुए कहा –

"मेरे भाई से मिलिये, वेरा निकोलायेव्ना।"

मुस्कराते हुए उसने अपना हाथ आगे बढा दिया।

"हम दोनो पहले से ही परिचित है।"

"सो कैसे?" अल्योशा हैरानी से चिल्ला उठा। "कब से? मुझे पहले क्यों नही बताया?"

भाई की धिक्कार से प्योत्र ने कुछ अटपटा-सा अनुभव किया, उसकी दाढ़ी के बाल तक सिहर उठे और अपने कान की ललरी को ऐंठते हुए उसने उत्तर दिया – "मैं भूल गया था।"

अल्योशा ने प्योत्र की ओर निर्लज्जतापूर्वक इशारा करते हुए चीखकर कहा –

"देखो, देखो—यह तो शर्म से गड़ा जा रहा है! यह भी क्या जवाब दिया है तुमने, मेरे अज़ीज़, ऐसी महिला को एक बार देख लेने के बाद भला कौन भुला सकता है इसे? देखो तो, इसके कानों में खुजली होने लगी है—वे बढ़ने भी लगे हैं!"

पोपोवा किसी प्रकार का बुरा माने बिना स्नेहपूर्वक मुस्करा दी।

उन्होंने शीशे के सुन्दर बड़े गिलासों से बर्फ़ के साथ शहद की मदिरा पी। इस स्त्री द्वारा ओलगा के लिये उपहारस्वरूप लायी गयी शहद की यह मदिरा सुनहरे कहरुबा के रंग की थी और जीभ पर प्यारी चुटकी-सी काटती थी। इसको पीते ही प्योत्र के मस्तिष्क में अनेक साहसपूर्ण शब्द उछल-कूद मचाने लगे, लेकिन उसे उनको व्यक्त करने का अवसर ही न मिला, उसका भाई लगातार बोले जा रहा था—"नही, नहीं, वेरा निकोलायेव्ना! अपनी सम्पत्ति को बेचने के मामले में जल्दी नहीं कीजिये। आपके स्थान को तो ऐसे ख़रीदार की ज़रूरत है जो शान्ति की टोह में हो, वह तो हृदय को सुख-शान्ति देने की जगह है। हमारे जैसे लोग उस स्थान का भला क्या मूल्य दे सकेंगे? हमारी दृष्टि से आपके पास है ही क्या? ज़मीन आपके पास है नही, जंगल थोड़ा-सा है और वह भी बुरा। और फिर ख़रगोशों के अलावा यहां जंगल की ज़रूरत भी किसे है?"

प्योत्र बोला—"आपको उसे बेचना नही चाहिये।"

"क्यों नही?" पोपोवा ने उदासीन भाव से मदिरा का घूंट पीते हुए पूछा। फिर एक निःश्वास भरकर बोली—"मुझे बेचना ही पड़ेगा।"

ओलगा उसे जिस दृष्टि से देख रही थी तथा अपनी मुस्कराहट को दबाने के लिये जिस तरह होंठों को भीच रही थी, प्योत्र को वह अप्रिय लगा। पोपोवा को उत्तर दिये बिना ही वह उदास मन से मदिरा पीने लगा।

दो दिन के बाद अल्योशा ने दफ्तर में घोषणा की कि वह पोपोवा की चीज़ो को अपने पास गिरवी रखकर उसे कुछ रक़म देना चाहता है।

"उसकी ज़मीन तो कौड़ी मोल की भी नही है, लेकिन चीज़ें..."

"तुम ऐसा नही करो," प्योत्र ने निश्चयात्मक स्वर में कहा।

"क्यों नही? मैं चीज़ों का मूल्य और महत्त्व समझता हूं..."

"फिर भी ऐसा नहीं करो।"

"आखिर क्यों ?" अल्योशा चिल्लाया। "मैं अपने साथ किसी विशेषज्ञ को वहां ले जाऊंगा और हर चीज़ की ढंग से क़ीमत तय करा लूंगा।"

प्योत्र ने मना करते हुए अपना सिर हिला दिया। वह अपने भाई को ऐसा करने से बेहद रोकना चाहता था, लेकिन उसे इसके विरुद्ध कोई तर्क नही सूझ पड़ा। इसके बजाय उसने हठात् प्रस्ताव किया –

"तो हम आधी-आधी रक़म दे देंगे। आधी तुम और आधी मैं।"

उसकी ओर घूरते हुए अल्योशा हस पड़ा –

"दिमाग़ खराब होने लगा है क्या ?"

"यही समझो कि इसका समय आ गया," प्योत्र अर्तामोनोव ने ज़ोर से कहा।

"ग़लत निशाने पर तीर चला रहे हो – वह आसानी से क़ाबू में आनेवाली नही।" उसके भाई ने चेतावनी दी।' "मैं कोशिश करके देख चुका हूं – मगर बेसूद!"

पोपोवा से दो-तीन बार और भेंट करने के बाद प्योत्र उसके बारे में सपने गूंथने लग गया। वह कल्पना करता कि यह स्त्री उसके साथ है और तुरन्त ही उसके मन की आंखों के आगे आश्चर्यजनक सुख और शान्तिमय जीवन के सीमाहीन विस्तार खुल जाते, जो आंखों को सुन्दर और हृदय को सुखद शान्ति से परिपूर्ण लगते। उस जीवन में उसे दिन-प्रतिदिन उन दर्जनों निकम्मे लोगों के सम्पर्क में आने से छुट्टी मिल जाती जो सदा ही असन्तुष्ट रहते है, जो सदा ही चीखते-चिल्लाते, शिकायत करते, झूठ बोलते और धोका देते रहते है और जो उसे अपनी झूठी खुशामद से घेरे रहते है – जिनकी खुशामद मन को उतना ही क्लेश देती है जितनी उनकी छिपी और निरन्तर बढ़ती हुई दुर्भावना। इन सब क्षुद्रताओ से मुक्त जीवन की कल्पना – ऐसे जीवन की कल्पना कर लेना जो लगातार अपना जाल अधिकाधिक फैलाती जानेवाली मिल की उस विशाल लाल मकड़ी से कोसों दूर हो, बहुत आसान होता। कल्पना में वह अपने को एक बड़े बिल्ले के रूप में देखता, जिसे सुरक्षित स्थान में आश्रय दिया जाता है, जिसे गृह-स्वामिनी अपना प्यार और दुलार देती है, जिसे इससे अधिक और कुछ पाने की इच्छा नही होती। कुछ भी नहीं।

जिस तरह कुछ दिनों पहले नीकोनोव का बालक हर प्रकार के

कटु और अप्रिय विचारों का केन्द्र बना हुआ था, उसी तरह पोपोवा अब एक ऐसा चुम्बक बन गयी थी जो अनायास ही केवल प्रकाश, प्रिय और सुखद विचारो और संकल्पों को अपनी ओर आकर्षित कर लेती थी। उसने अपने भाई के साथ पोपोवा की हवेली पर जाने से इन्कार कर दिया। अल्योशा पोपोवा की चीज़ों का मूल्य निर्धारित करने के लिये एक चतुर, चश्माधारी बूढे को अपने साथ लेकर वहां गया, किन्तु अल्योशा जब सौदा पटाकर वापस लौटा तो प्योत्र ने कहा –

"रेहन को मुझे बेच दो।"

अल्योशा को एक अप्रिय आश्चर्य हुआ। उसने प्रश्नो की झड़ी लगा दी – क्यो और किसलिये, और अन्त मे बोला –

"सुनो, मेरे लिये यह नफे का सौदा नही है! वह इसे छुड़ाने के लिये कभी पैसे नही जुटा पायेगी, पर उसकी चीजे कीमती है – समझे? इसलिये तुम्हे कुछ रकम और जोडनी होगी!"

सौदा पट गया। अल्योशा ने माथे पर बल डालकर कहा –

"मेरी शुभकामनाएं लो। यह अच्छा धन्धा है।"

प्योत्र को भी लगा कि उसने अच्छा ही किया है। उसने अपने लिये विश्राम का स्वर्ग खोज लिया है।

"तो तुम्हारी पत्नी से कुछ न कहूं?" भाई ने आख मारते हुए पूछा।

"यह तुम जानो।"

अल्योशा ने उसकी ओर मर्मभेदी दृष्टि से ताकते हुए कहा –

"ओलगा सोचती है कि तुम्हे पोपोवा से इश्क हो गया है।"

"यह मेरा अपना मामला है।"

"ऐसे चिल्लाओ नही। हमारी उम्र मे अधिकाश पुरुष ऐसी हरकते करते ही है।"

प्योत्र ने किंचित रोष और रूखेपन से उत्तर दिया –

"तुम मेरी फ़िक्र नही करो "

कुछ ही दिनों में उसने देखा कि ओलगा उसके साथ पहले से अधिक आत्मीयता, पर साथ ही किंचित दया-भाव से बातचीत करती थी। पतझर की एक संध्या को उसके कमरे में बैठे प्योत्र ने पूछा –

"क्या अल्योशा तुमसे पोपोवा के बारे में कुछ खुराफ़ात बकता रहा है?"

उसके बालो से ढंके हाथ को अपनी हल्की उंगलियों से एक आत्मीय की तरह छूते हुए ओलगा बोली –

"यह बात आगे नही बढेगी।"

"यह बात कही बढ़ेगी ही नही," प्योत्र ने अपने घुटने पर घूंसा मारते हुए कहा, "यह बात मेरे हृदय में ही बद रहेगी। यह तुम्हारे समझने की बात नही है। तुम पोपोवा से कुछ न कहना।"

पोपोवा के प्रति उसके हृदय में वासना नही थी। वह इस स्त्री को अपनी काम-लिप्सा शान्त करने के लिये नही चाहता था, बल्कि उसे आत्मीयता और सुखद वातावरण के एक अनिवार्य तत्त्व के रूप में देखता था जो उपयुक्त और सुखी जीवन का अभिन्न अंग है। लेकिन यह स्त्री जब नगर में आकर बस गयी तो अल्योशा के घर पर उसकी उससे अक्सर भेंट होने लगी और वह सकते मे आकर रह गया। एक दिन उसने उसे बीमार ओलगा के सिरहाने देखा। वह अपने ब्लाउज़ की आस्तीनो को चढाये पानी से भरे तसले मे तौलिया भिगो रही थी। वह झुकी, फिर सीधी हुई, उसके शरीर की गठन अद्‍भुत थी और कुमारियो जैसे छोटे-छोटे उरोजों सहित वह बरबस अपनी ओर खीचती थी। दरवाजे के पास खड़ा अर्तामोनोव चुपचाप उसकी गोरी बाहो, उसकी सुगठित पिंडलियो और उसके नितम्बो को घूरता रहा और उसे यकायक वासना की इतनी प्रबल अनुभूति हुई कि उसने अपने को इस स्त्री के आलिंगन मे अनुभव किया। पोपोवा के अभिवादन का उत्तर देने के लिये उसने बडी मुश्किल से सिर हिलाया और कमरे में घुसकर खिड़की के पास कुर्सी पर धम से बैठ गया। नीरस स्वर में उसने पूछा –

"तुम्हें क्या हो गया, ओलगा? इस तरह बीमार न पड़ जाया करो "

जीवन मे पहले कभी किसी स्त्री ने उसे इतने प्रबल रूप मे प्रभावित नही किया था, कोई भी उसके मन पर ऐसे पूरी तरह से न छा सकी थी। इससे वह भयभीत हो गया। उसके मन में विपत्ति की धुंधली आशकाएं उठने लगी। उसने डाक्टर लाने के लिये अपनी गाड़ी भेज दी और स्वय फौरन पैदल ही कारखाने की ओर लौट पडा।

फ़रवरी के अन्तिम दिनों की बात थी। कुनकुना मौसम तूफ़ान के आने की धमकी दे रहा था। समूचे आकाश को आच्छादित करनेवाले भूरे बादलो का वितान-सा तन गया था जिसने अर्तामोनोव पर जैसे

चारों ओर से एक विशाल प्याला-सा उलट दिया था। उसमें से नम, शीत धूल धीरे-धीरे गिर रही थी और अर्तामोनोव की दाढ़ी और मूंछों पर प्रचुर मात्रा में जमा होकर श्वास लेना दूभर कर रही थी। नर्म बर्फ़ पर लम्बे डग भरता हुआ अर्तामोनोव अनुभव कर रहा था जैसे वह उसी तरह परास्त हो गया है, टूट गया है, उसी रात की तरह, जब निकीता ने फांसी लगा ली थी या जब उसने पाशा नीकोनोव की हत्या की थी। इन दोनो अनुभवों की यातना की समानता उसे स्पष्ट थी और इसी कारण यह तीसरा अनुभव उसे और भी भयावह लगा। यह प्रत्यक्ष था कि वह कभी भी इस स्त्री को अपनी रखेल न बना सकेगा और उसे लगा कि पोपोवा के प्रति उसके हृदय मे अकस्मात ही वासना का जो तूफ़ान उठा था, वह उसके हृदय की पुनीत और मधुर भावना को कलुषित करके इस स्त्री को साधारण स्त्रियों की कोटि में ढकेल रहा है। पत्नी क्या होती है, यह तो वह भली-भांति जानता था और उसके पास ऐसा सोचने का कोई कारण न था कि एक रखेल किसी भी रूप में पत्नी से अच्छी ही होगी, जिसकी नीरस चेष्टाएं और बरबस आलिंगन उसके हृदय में कामना की चिनगारी सुलगाने मे असफल रहते थे।

"तुम चाहते क्या हो?" उसने अपने आपसे ही प्रश्न किया। "वासना की तृप्ति? इसके लिये तो पत्नी है ही।"

अर्तामोनोव का स्वभाव ही ऐसा था कि आशंका के समय वह शीघ्र से शीघ्र उस विपत्ति से बचकर निकल जाने और फिर मुड़कर कभी उस दिशा में न देखने के लिये कष्टप्रद चिन्ताओ से ग्रस्त हो जाता। विपत्ति में पड़ जाना रात के अंधेरे में गहरी नदी की वसन्त की टूटती बर्फ़ पर खड़े होने जैसा है। अपनी किशोरावस्था में उसने इस प्रकार का दारुण अनुभव किया था और आज उसकी स्मृति मात्र से उसकी सारी देह भय से कांप जाती थी।

कुछ दिन इसी चिन्ता और दुःख में बीत गये। तब एक दिन सुबह के झुटपुटे में निद्राहीन रात बिताने के बाद बाहर अहाते में निकलते ही उसने देखा कि उसका कुत्ता तुलुन बर्फ़ पर रक्त के कुंड में डूबा पड़ा है। झुटपुटे में रक्त एकदम काला दिखायी दे रहा था। उसने कुत्ते का शव अपने पांव से छूकर देखा। कुत्ते की फटी थूथनी हिली-डुली और बाहर को निकली पड़ी एक आंख उसके पांव को घूरने लगी।

अर्तामोनोव भय से कांप गया। उसने चौकीदार की कोठरी का द्वार खोलकर दहलीज़ से ही पुकारकर पूछा –

"कुत्ते को किसने मारा ?"

"मैंने," तीखोन ने उत्तर दिया जो उंगलियों पर सम्हालकर टिकी तश्तरी से चाय पी रहा था।

"क्यों ?"

"उसने फिर एक आदमी को काट लिया था।"

"इस बार इसने किसको काटा ?"

"सेराफ़ीम की बेटी ज़िनईदा को।"

एक क्षण की विचारमग्न खामोशी के बाद प्योत्र बोला –

"कुत्ते के लिये दुःख हो रहा है।"

"वह तो है ही। जब यह नन्हा पिल्ला था, तब से ही मैंने इसे पाला-पोसा है। लेकिन इधर कुछ दिनों से वह मुझ पर भी गुर्राने लगा था। वैसे तो ज़जीर से बाधकर रखने पर तो आदमी भी कुछ दिनों में पागल हो सकता है..."

"यह ठीक है," अर्तामोनोव ने उत्तर दिया और अपने पीछे दरवाज़े को अच्छी तरह से बंद करके वह चला आया और उसने सोचा –

"कभी-कभी तो यह आदमी भी अक्ल की बात कर देता है।"

वह कुछ देर तक अहाते में खड़ा मिल से आनेवाले शोर-गुल को सुनता रहा। दूर के कोने में घुड़साल की दीवार के सहारे बनी सेरा-फीम की कुटिया की खिड़की से पीली रोशनी आ रही थी। अर्तामोनोव ने वहां जाकर खिड़की में से अन्दर झांककर देखा। मेज़ पर लैम्प जल रहा था और ज़िनईदा सिर्फ़ शमीज़ पहने सिलाई कर रही थी। जब वह कमरे में घुसा तो उसने अपना सिर उठाये बिना ही पूछा –

"तुम वापस क्यों आ गये ?"

किन्तु जब उसने दृष्टि उठाकर द्वार की ओर देखा तो वह अपनी सिलाई वहीं पटककर उछलकर खड़ी हो गयी और मुस्कराती हुई चिल्लायी –

"हे भगवान ! मैं तो समझी थी कि बापू है..."

"मैंने सुना है कि तुलुन ने तुम्हें काट लिया है ?"

"हां, बुरी तरह !" उसने मानो डींग मारते हुए जवाब दिया और पास पड़ी कुरसी पर अपना पांव रखकर उसने पेटीकोट ऊपर

उठाकर दिखाया, "यह देखिये!"

अर्तामोनोव ने उसकी गोरी-गोरी टांग पर उड़ती-सी नज़र डाली जिस पर घुटने के नीचे पट्टी बंधी हुई थी। लड़की के बिल्कुल निकट जाकर वह स्निग्ध स्वर में बोला –

"ज़िनईदा, सबेरे तुम अहाते में क्या करने गयी थी? बोलो?"

ज़िनईदा ने उसकी आंखो में आंखें डालकर देखा और अर्थ समझकर खिलखिला पड़ी। उसने तुरंत ज़ोर की फूंक मारकर लैम्प बुझा दिया और बोली – "दरवाज़े पर ताला डाल देना चाहिये।"

आध घण्टे बाद एक सुखद शैथिल्य से थका अर्तामोनोव मन्द गति से मिल की ओर चल पड़ा और अपने कान की ललरी ऐंठते हुए वह इस ललछौहें बालोवाली लड़की के निर्लज्ज आलिगन-चुम्बनो का हैरानी से स्मरण करता जाता था। मन ही मन यह सोचकर कि उसने बड़ी चतुरता से अभी किसी को उल्लू बनाया है, धोखा दिया, वह गद्गद् कंठ से हंस दिया

मिल मे काम करनेवाली लडकियो के व्यभिचार-वासनामय जीवन में वह इस तरह धडल्ले से टूट पडा जैसे मधुमक्खियो के छत्ते पर रीछ टूटता है। उसने जो कुछ सुना था, उन लडकियो का जीवन उससे कही बढ-चढकर था। सबसे पहले तो वह उनके शब्दो और भावनाओं की उल्लासमयी अश्लीलता, उनकी निर्बन्ध उच्छृखलता और उद्धत निर्लज्जता को देखकर चकित रह गया, जिसमें कही कोई दुराव-छिपाव न था। वे इसी निर्लज्जता के गीत गाती थी और उस पर आसू भी बहाती थी। ज़िनईदा और उसकी सखिया इसे प्रेम कहकर पुकारतीं और इसमें कुछ ऐसा उग्र और कसैला तत्त्व था जो तेज शराब से भी अधिक नशा पैदा करता था।

अर्तामोनोव को मालूम था कि सेराफ़ीम की छोटी-सी कुटिया को "फंदा" और जिनईदा को "पम्प" कहकर पुकारा जाता है। सेराफ़ीम ने स्वय अपने घर को "मठ" की सज्ञा दे रखी थी। कढे हुए तौलिये को कन्धे पर डाले और उस पर गुसली बाजे को रखकर हमेशा अंगीठी के पास बेच पर बैठा हुआ वह अपने घुंघराले बालोवाले सिर को पीछे की ओर झटककर तथा अपने गुलाबी चेहरे को मज़ाक़िया ढंग से मटकाता तथा सब लोगों को आख मारता हुआ चिल्लाता –

"संन्यासिनी बालाओ! मज़े लूटो! प्योत्र इल्यीच, ये सब सन्या-

मिनी बालाएं ही तो है – क्या ख्याल है तुम्हारा? इन्होंने आनन्द के शैतान के आगे इसकी शपथ ली है और मैं इनका पुरोहित हूं, एक तरह का पादरी! जिन्दगी को उल्लासपूर्ण बनाने के लिये एक रूबल तो दो!"

रूबल लेकर वह अपनी पिंडलियों पर बंधी पट्टियों में खोंस लेता और अपने बाजे के तारों को झंकारते हुए पूरे जोश मे गाने लगता –

एक कुलीना कहे नरक मे
बर्फ भुनी दो मुझको,
गर्म सलाखों से तड़पाये
पर शैतान उसी को।

"मालूम होता है कि तुम्हे दुनिया भर के मजाकिया गीत और चुटकुले याद है!" उसका मालिक हैरान होकर कहता; बूढ़ा डीग मारने लगता –

"छलनी, मैं तो छलनी के समान हू! चाहे जितना छान लो मुझे, फिर भी मै आपके लिये गीत छान ही लूगा। मै कुछ ऐसा ही आदमी हू – छलनी!"

और फिर उसने यह बताया था –

"कुलीन लोगो ने मुझे यह सब सिखाया है। कुतूज़ोव कुलनाम के ऐसे ही कुलीन थे। यापुश्किन भी कौन-सा कम था! पियक्कड भी खूब था वह! खानाबदोशो की तरह पीठ पर बोझा लादकर देहातो मे फेरी लगाता फिरता था। जो बात देखता या सुनता, झट से लिख लेता, वह लिखता गया और अन्त में ज़ार के पास जाकर बोला, "देखिये हुज़ूर! हमारे किसान क्या सोचते है!" ज़ार ने सारी बातें पढ़ी और उसे बहुत बुरा लगा। उसने फौरन किसानो की स्वतंत्रता की घोषणा कर दी और आज्ञा दी कि मास्को मे यापुश्किन की तांबे की मूर्ति बनायी जाये। यापुश्किन को सूज़दल नगर भेज दिया गया, उसे सरकारी खर्च पर शराब दी गयी। चाहे जितनी पी ले। बात यह है कि उसने लोगो के सारे भेद लिख लिये थे। लेकिन उनमें ज़ार के विरुद्ध बातें थी, इसलिये मामले को वही दबा दिया गया। यापुश्किन शराब पी-पीकर मौत की गोद में लुढ़क गया और उसकी टिप्पणियों को चुरा लिया गया।"

"यह सब झूठ है," अर्तामोनोव ने कहा।

"ज़िन्दगी में मैंने छोकरियों के सिवा किसी से झूठ नहीं बोला। यह मेरा काम नहीं है," बूढ़े ने गम्भीरता से उत्तर दिया। यह बताना मुश्किल था कि कब वह सच बोल रहा है और कब मज़ाक कर रहा है।

"जो लोग सचाई जानते हैं, वे ही झूठ बोलते हैं। मुझे तो सचाई का पता ही नहीं, मैं भला झूठ कैसे बोल सकता हूं? लेकिन एक बात बता दूं, मैंने ज़िन्दगी में बहुत सचाई देखी है और मेरा विश्वास है कि सचाई तभी तक अच्छी लगती है, जब तक जवान औरत की तरह ताज़ा होती है।"

उसे सत्य का ज्ञान था या नहीं, लेकिन उसे कुलीन ज़मींदारों के मनोरंजनो, मुसीबतों, उनकी क्रूरता और धन-दौलत की अनगिनत कहानियां याद थी। इन किस्सों को सुनाने के बाद वह अफ़सोस की एक ठंडी सास लेकर कहता –

"हां, लेकिन वे भी अब नही रहे। वे धुरी से अलग जा पडे हैं, भटक गये हैं। चक्र से कट गये हैं।"

और झट वह हाथ से एक घेरा ऊपर और एक ज़मीन पर बनाता।

"ज़रूरत से ज़्यादा ही बिगड़ गये थे," उसने आंख मारते हुए कहा और गाने लगा –

कभी, कही पर कुछ सज्जन थे
मास मेमने का खाये,
कमी पड़े तो बूढ़ी भेडें
वे तो हड़प सभी जाये।

सेराफ़ीम लुटेरों और जादूगरनियों, किसान-विद्रोहों, दु:खान्त प्रेम, त्रस्त विधवाओं के सर्प-प्रेमियों की अनेक कहानियां सुनाता रहता था। उसकी शैली इतनी रोचक थी कि उसकी उद्दण्ड बेटी भी अवाक् होकर बच्चों की सी जिज्ञासा से उसे सुनती रहती।

ज़िनईदा के व्यक्तित्व में भयंकर लम्पटता और सक्रिय व्यवसायिकता के मेल को देखकर अर्तामोनोव को ग्लानि होती। उसे कई बार पाशा नीकोनोव की वह झूठी बदनामी याद आती जो अब सच्ची सिद्ध हो गयी थी।

"मैंने इसी छोकरी को क्यों चुना?" वह अपने आप से पूछता। "एक से एक बढ़-चढ़कर सुन्दर छोकरियां हैं। अगर इल्या को पता चल गया तो क्या मुंह रह जायेगा मेरा?"

उसने अनुभव किया कि ज़िनईदा और उसकी सहेलियां इस प्रकार की काम-क्रीड़ाओं में एक अनिवार्य आपद्धर्म निभाने के लिये ही भाग लेती थीं, जैसे ड्यूटी पर तैनात सैनिक को अपना धर्म निभाना होता है। कभी-कभी उसे ऐसा लगता कि उनकी इतनी नग्न निर्लज्जता जैसे अपने आपको और दूसरों को धोखा देने की चेष्टा का ही परिणाम थी। कुछ ही दिनों में पैसों के प्रति ज़िनईदा के लालच और समय-कुसमय भीख-सी मांगते रहने की आदत से अर्तामोनोव के मन में उसके प्रति विरक्ति पैदा हो गयी। ज़िनईदा अपने बाप से भी ज़्यादा लालची थी। सेराफ़ीम तो जो भी मिलता, वह सब का सब मीठी 'टेनेरिफ़' शराब पर, जिसे वह किसी कारण से "शलजम की शराब" कहकर पुकारता था, और अपने मनपसन्द नारंगी के मुरब्बे, मीठी टिकिया और लहसुनवाले हैम पर खर्च कर देता था।

अर्तामोनोव को यह रंगीला आदमी बहुत पसन्द था। वह अपने काम में भी होशियार था और बातें करने में तो उसे कमाल हासिल था। सब लोग सेराफ़ीम को चाहते थे। मिल में उसे "सान्त्वना देने-वाला" कहकर पुकारते थे। इस नाम में व्यंग की अपेक्षा सचाई की मात्रा अधिक थी – प्योत्र यह जानता था। यहां तक कि व्यंग भी स्नेहपूर्ण था।

इसीलिये सेराफ़ीम और तीख़ोन की मित्रता उसे अरुचिकर लगती थी और उसका रहस्य अर्तामोनोव की समझ में न आता। तीख़ोन मानो जानबूझकर मालिक की घृणा को मज़बूत करता रहता था। तीख़ोन को उसके यहां नौकरी करते बीस वर्ष होने को आये थे। इस साल तीख़ोन का जन्म दिन नतालिया ने धूम-धाम से मनाने का निर्णय किया।

उसने अपने पति से कहा, "जीवन में ऐसे लोग बहुत विरले होते हैं। ज़रा सोचो तो कि बीस वर्ष के लम्बे अरसे में उसने हमारे साथ कभी कोई बुराई नही की। उसका स्वभाव कितना शान्त और स्थिर है – मोमबत्ती की लौ की तरह।"

चौकीदार का विशेष रूप से सम्मान करने के लिये प्योत्र उसे

स्वयं उपहार देने गया। सेराफ़ीम भी अपनी मबसे बढिया पोशाक मे वहां मौजूद था। तीख़ोन सिर झुकाये मालिक के पैरो की ओर देख रहा था।

"यह घडी मेरी ओर से तुम्हे भेट है और यह बनात का टुकडा मालकिन ने दिया है। और यह लो कुछ पैसे।"

"पैसों की कोई ज़रूरत नही," तीख़ोन फुसफुसाया। फिर कुछ देर रुककर बोला –

"धन्यवाद।"

उमने मालिक मे सेराफीम की दी हुई मीठी 'टेनेरिफ' शराब पीने का आग्रह किया। बढई ने तुरन्त चहकना शुरू कर दिया –

"प्योत्र इल्यीच, तुम हम लोगो की कद्र करना जानते हो और हम तुम्हारी क़द्र जानते है। हमें मालूम है कि रीछ को शहद अच्छा लगता है, पर लुहार लोहे से चीज़े तैयार करता है। पुराने जमीदार हमारे लिये रीछो के ममान थे, लेकिन तुम लुहार हो। हम जानते है कि तुम्हारा कारोबार बहुत बडा और कठिन है।"

तीख़ोन व्यालोव की उगलिया चादी की घडी मे खेल रही थी। उसकी ओर देखते हुए वह बोला –

"कारोबार .. एक रेलिग है, चारो ओर गढा है और हम रेलिग का ही सहारा लेते हैं।"

"शाबाश!" सेराफ़ीम किमी बात मे खुश होते हुए चिल्ला उठा। "बिल्कुल ठीक! नही तो हम गढे मे गिर जाते!"

"तुम लोग यह तो व्यर्थ की बात कर रहे हो," अर्तामोनोव ने कहा, "कि तुम मालिक नही हो और इन बातो को समझ नही सकते।"

तीख़ोन के शब्दो मे वह बेशक फौरन झल्ला उठा था, फिर भी उसे पर्याप्त रूप मे जोरदार एतराज़ नही सूझ रहे थे। पहले भी कई बार वह अपने दुराग्रही और रहस्यपूर्ण विचारों को ऐसे ही ढग मे व्यक्त कर चुका था और प्योत्र का गुस्सा दिन-प्रतिदिन बढता रहा था। प्योत्र चौकीदार के तेल मे बेहद चुपडे हुए पत्थर जैसे सिर की ओर देखने लगा और उस पर हावी होनेवाले शब्द ढूढ़ना और कान को ऐंठते हुए मुड़सुड़ कर रहा था।

"इसमें कोई शक नही कि कारोबार भी भिन्न प्रकार का होता है – अच्छा और बुरा," सेराफ़ीम ने सुलह के अन्दाज मे कहा।

"अच्छी छुरी भी गर्दन को अच्छी नही लगती है," तीखोन बड़बडाया।

प्योत्र की इच्छा हुई कि उसे जी भरकर गालिया दे। बड़ी मुश्किल से इस इच्छा को दबाकर प्योत्र ने सख्ती से पूछा –

"तुम्हे हो क्या गया है – हर समय कारोबार सम्बन्धी कोई न कोई बकवास किया करते हो! समझना मुश्किल है .."

तीखोन ने नज़र नीची करके उत्तर दिया –

"हा, समझना मुश्किल है।"

बढ़ई ने फिर टोका –

"प्योत्र इल्यीच, तीखोन के कहने का अभिप्राय यह है कि दुनिया मे सिर्फ अच्छी किस्म का कारोबार होना चाहिये "

"तुम चुप रहो, सेराफीम – उसे खुद बोलने दो!"

तब तीखोन अपनी गजी खोपडी नीची किये तथा अविचलित रहते हुए एक नि:श्वास लेकर बोला –

"शैतान ने ही काइन को कारोबार सिखाया था "

"सुना, कैसी बुद्धिमानी की बाते करता है!" सेराफीम ने चिल्लाकर कहा।

अर्तामोनोव उठ खड़ा हुआ और उसने गुस्से से चौकीदार को सलाह दी –

"जिस बात को समझते नही, उसके बारे मे तुम्हारा चुप रहना ही बेहतर होगा, समझे?"

वह गुस्से मे भरा चौकीदार की कोठरी से निकला और सोचने लगा कि तीखोन को अब बर्खास्त कर देना चाहिये। वह उसे कल ही नौकरी मे अलग कर देगा। नही, कल नही, अगले सप्ताह। दफ्तर पहुचकर उसने देखा कि पोपोवा उसकी राह देख रही है। उसने एक अजनबी की तरह उदासीन भाव मे प्योत्र का अभिवादन किया। बैठकर उसने अपने छाते से फ़र्श ठोंका और यह कहने लगी कि वह तुरत सूद चुकाने में असमर्थ है।

"यह तो मामूली-सी बात है," प्योत्र ने शान्त भाव से उसकी ओर देखे बिना ही कहा। पोपोवा बोली –

"आप अगर मियाद बढ़ाने को राज़ी न हो, तो आपको मुझे इन्कार करने का पूरा अधिकार है।"

कुपित स्वर में यह कहकर उसने एक बार फिर छाते से ज़मीन को ठोंका और इतनी तेज़ी से कमरे से बाहर निकल गयी कि प्योत्र ने जब तक उसकी ओर देखने के लिये सिर उठाया तब तक पोपोवा कमरे का द्वार बन्द कर चुकी थी।

"ज़रूर नाराज़ है, पर किस बात से?" प्योत्र ने सोचा।

एक घण्टे बाद ओलगा के कमरे में बैठा वह सोफ़े पर अपनी टोपी मारते हुए कह रहा था –

"तुम उसे साफ़-साफ़ बता दो कि उससे न मुझे सूद चाहिये और न क़र्ज़ की रक़म ही। यह भी कोई रक़म है! और इस बारे में कतई चिन्ता करने की ज़रूरत नही है, समझी?" रेशम के रंग-बिरंगे गोले को सुलझाते और मनकों के डिब्बों को मेज़ पर इधर-उधर हिलाते-डुलाते हुए ओलगा ने सोचते हुए कहा – "मै तो खूब समझती हूं, लेकिन वह भी समझेगी, इसमें मुझे शक है।"

"अच्छा, तो उसे समझा दो। तुम्हारे समझने से मुझे क्या फ़ायदा?"

"धन्यवाद," ओलगा ने कहा। ऊपर आंखे उठाने पर ऐनक में से उसकी मुस्कान झलक गयी जिससे प्योत्र चिढ़ गया –

"मज़ाक़ नही करो!" उसने रूखे ढंग से कहा, "मैं उसके बाग़ में अपनी जड़ जमाने की नही सोच रहा। मैं उसके पीछे नही पड़ गया हूं। ऐसा नहीं सोचो!"

"हाय, तुम पुरुष सब एक से होते हो," ओलगा ने निःश्वास भरकर सन्देह से सिर हिलाते हुए कहा।

प्योत्र चिल्लाया –

"मेरा विश्वास करो! मुझे मालूम है कि मैं जो कुछ कह रहा हूं, उसका क्या मतलब है..."

"शायद ही मालूम हो!"

उसके शब्दों में अर्तामोनोव को सहानुभूति की झलक मिली। चश्मे के भीतर से चमकती हुई आंखें दया, लगभग स्नेह से देख रही थीं, लेकिन यह देखकर प्योत्र का मिज़ाज और भी बिगड़ गया। वह खिड़की के दासे पर खिले बेगोनिया फूलों को देखने लगा, जिनके मोटे पत्ते जानवर के कानों की तरह दिखायी दे रहे थे। वह ओलगा से बहुत ही स्पष्ट रूप में कहना चाहता था, लेकिन उसकी समझ में

न आया कि उससे क्या कहे। अन्त में वह बोला –

"मुझे उसकी हवेली पर दया आती है। बड़ी अद्भुत जगह है। वह वहीं पर पैदा हुई थी ..."

"उसका जन्म तो रियाज़ान नगर में हुआ था .. "

"ख़ैर, वह तो वही की आदी हो गयी थी! वही मेरी आत्मा पहली बार शान्त निद्रा में सोयी थी ."

"तुम्हारा मतलब है जागी थी!" ओलगा ने कहा।

"एक ही बात है आत्मा का जागना या सोना ..."

वह न जाने क्या अंट-संट बकता रहा। ओलगा ठुड्डी पर हाथ रखे उसकी बातें सुनती रही। आख़िर जब प्योत्र चुप हुआ तो ओलगा ने कहा – "अब मेरी बात सुनो .. "

उसने बताया कि नतालिया ज़िनईदा के साथ उसका सारा क़िस्सा जानती है, बहुत दुखी है और रो-रोकर शिकायत करती है। लेकिन इस बात से अर्तामोनोव का हृदय नही पसीजा।

"चालाक है वह," प्योत्र ने खीसें निपोड़कर कहा, "मुझे कभी कुछ नही बताया। तुमसे आकर शिकायत की? और फिर मज़े की बात यह है कि वह तुम्हें पसन्द नही करती।"

कुछ देर रुककर उसने कहा –

"लोग ज़िनईदा को पम्प कहते है, यह ठीक ही है! उसने मेरा सब कीचड़ खीच लिया है।"

"कैसी गंदी बात कह रहे हो," ओलगा ने ठंडी सास लेते हुए कहा। "मुझे याद है, मैंने तुम्हे एक बार कहा था कि तुम अपनी आत्मा से अवैध शिशु की तरह व्यवहार करते हो। बिल्कुल ऐसा ही है प्योत्र, तुम्हें अपने आप से डर लगता है, मानो तुम अपने सबसे बडे दुश्मन हो ..."

प्योत्र यह सुनकर जल-भुन गया।

"तुम भी हद पार कर जाती हो, आख़िर मैं कोई छोकरा तो हूं नहीं! तुम ज़रा इतना ही सोच लेतीं कि मैं यहां बैठा तुमसे बातें कर रहा हूं और मेरी आत्मा के द्वार खुले है। भला और किसी से मैं ऐसे खुलकर बातें कर सकता हूं? नतालिया से तो नही कर सकता। कभी-कभी तो मेरा मन होता है कि मैं उसकी पिटाई कर दूं। ओह, तुम ... हाय, तुम औरतें! ..."

उसने टोपी सिर पर रखी और अचानक मूक ऊब की गिरफ्त में आकर तथा पत्नी के बारे में सोचता हुआ चल दिया। एक अरसे से वह उसकी उपेक्षा करता आया था, यहा तक कि उसकी ओर आंख उठाकर देखता तक नही था, यद्यपि वह हर रात को प्रार्थना करने के बाद स्नेह भाव से उसके पास आ लेटती थी।

"वह सब कुछ जानती है, फिर भी मुझे तंग करती है, सूअर की बच्ची!" उसे इस बात पर गुस्सा आ रहा था।

प्योत्र के लिये उसकी पत्नी एक चिरपरिचित मार्ग की तरह थी जिस पर ठोकर खाये बिना आखें मूदकर भी चला जा सकता है। वह उसके बारे में सोचना भी नही चाहता था। लेकिन उसे अपनी सास का सूजा हुआ लाल चेहरा याद हो आया जो आरामकुर्सी पर लेटी-सी अपनी मौत की घडियां गिन रही थी। वह अब उसे कभी तो सुन्दर, किन्तु अब बुझी-बुझी और कारुणिक ढग से आसू बहाती नम आखो से अधिकाधिक शत्रुता से देखती थी। उसके सिकुडे होंठ कुछ हिलते थे, लेकिन वह बोलने मे असमर्थ रहती थी और बोलने की चेष्टा मे उसकी जीभ बाहर लटक आती थी। बेचारी अपने बाये हाथ से, जिसे लकवा मार गया था, अपनी जीभ वापस ढकेलने की कोशिश करती।

"यह महसूस करती है। इसके लिये अफसोस होना है," उसने सोचा।

उसके लिये ज़िनईदा से लज्जाजनक सम्बन्ध खत्म करने के हेतु बहुत दृढता से काम लेना जरूरी था। लेकिन जैसे ही उसने ऐसा किया, उस छोकरी की स्मृतियों के साथ-साथ दूसरे ही नये विचार उसे सताने लगे। उसे लगा कि एक नये प्योत्र ने जन्म लिया है जो छाया की तरह पहले प्योत्र का पीछा करता है। उसने महसूस किया कि यह नया व्यक्ति उसमें बढता जा रहा है और उन सभी कामों मे बाधा डालता है जो वास्तविक प्योत्र को करने चाहिये थे। यह दूसरा प्योत्र किसी कोने से अचानक उड आनेवाली हवा की भाति विचारमग्नता के क्षणो का उपयोग करते हुए उसके कान मे दुखद और कटु विचार फुसफुसाता —

"तुम घोडे की तरह मेहनत करते हो। किसलिये? तुम्हारे पास इतना धन है जिससे सारी जिन्दगी मजे मे कट सकती है। अब तुम्हारे बेटे के मेहनत करने का वक्त आ गया है। बेटे के प्यार के कारण ही तुमने एक निर्दोष बालक की हत्या कर डाली। किसी सुन्दरी पर तुम्हारी

आंखे टिकी कि व्यभिचार के फेर मे पड़ गये।"

इन विचारो के बाद ज़िन्दगी और भी नीरस और अन्धकारपूर्ण प्रतीत होती।

इल्या कब इतना बडा हो गया, इस बात पर उसने ध्यान ही न दिया था। उसे यह भी न पता था कि ननालिया ने कब और कैसे येलेना की शादी एक धनी जौहरी के लड़के से कर दी थी और उसका दामाद काली मूछोवाला एक शोख नौजवान है। इसी तरह उसकी सास भी आखिर जून महीने की उमस-भरी दोपहर मे तूफान के पहले चल बसी थी। उसका दम घुट गया था। वे उसके शव को पलग पर लेटा भी नही पाये थे कि बिजली कडकी थी जिसने सबको डरा दिया था।

"दरवाजे और खिडकिया बन्द कर दो!" ननालिया ने कानो पर हाथ रखते हुए चिल्लाकर कहा था और मा का बहुत बडा पांव उसके हाथो से छूटकर धम से फर्श पर गिर पडा था।

इल्या जब कमरे में दाखिल हुआ तो प्योत्र को एक क्षण के लिये ऐसे लगा कि वह भूरे रग का सूट पहने उस लम्बे, गठीले नवयुवक को पहचान नही पाया। उसका सावला चेहरा पतला हो गया था और ऊपरवाले होठ पर मूछो की रेखा उभरने लगी थी। स्कूल की वर्दी पहने मोटा-थल्ला याकोव अभी भी पहले जैसा लगता था। पिता का सादर अभिवादन करके दोनो बेटे बैठ गये।

"तो तुम्हारी नानी चल बसी," प्योत्र ने कमरे मे टहलते हुए कहा।

सिगरेट सुलगाता हुआ इल्या चुप रहा। याकोव ने एक नये अपरिचित-से स्वर में कहा –

"यही अच्छा है कि छुट्टिया है, नही तो मेरा आना न हो सकता।"

छोटे बेटे की इस बेहूदा बात की तरफ कोई ध्यान न देकर प्योत्र ने बहुत गौर से बडे बेटे के चेहरे को देखा। इल्या की आकृति पहले से बहुत बदल गयी थी। उसके बाल अधिक काले और घने हो गये थे, जिससे उसका मस्तक कम चौडा दिखने लगा था। नीली आंखो का रग और गहरा हो गया था। प्योत्र को दिलचस्प और अटपटा लगा कि कभी उसने बढिया सूट डाटे इस व्यक्ति के बाल खीचे थे। उसे यह विश्वास तक नही हो रहा था कि कभी ऐसा हुआ था। रहा याकोव, सो वह लम्बा तो खूब हो गया था, लेकिन उसका गोल-मटोल

शरीर, खुशी से चमकती आंखें और बचकाना मुंह पहले जैसा ही था।

"इल्या, तुम बड़े हो गये हो। अभी से कारोबार में मन लगाओ तो तीन-चार साल में उसे संभालने योग्य हो जाओगे।"

इल्या ने पिता की ओर देखा। वह लकड़ी के सिगरेट केस से खेल रहा था, जिसके कोने की चिप्पड़ उखड़ी हुई थी।

"नही, मैं अभी और पढ़ूंगा।"

"बहुत अरसे तक?"

"चार-पांच साल तक।"

"अच्छा? क्या पढ़ोगे?"

"इतिहास।"

अर्तामोनोव को बेटे का सिगरेट पीना अच्छा नही लगा और उसका सिगरेट केस भी रद्दी था। न जाने क्यों, उसने अच्छा सिगरेट केस नही खरीदा था। सबसे ज्यादा गुस्सा तो उसे इस बात पर था कि इल्या ने घर में क़दम रखते ही पढ़ाई जारी रखने का फ़ैसला सुना दिया था।

खिड़की से कारखाने की छत की ओर इशारा करते हुए, जहां एक तंग पाइप से भाप की नन्ही फुहारें निकलकर मज़दूरों के श्रम से ताल मिला रही थीं, प्योत्र ने गम्भीर, किन्तु कोमल स्वर मे कहा –

"वह रहा तुम्हारा इतिहास! तुम्हें इसी को सीखना-जानना चाहिये। हमारा पेशा लिनेन का कपड़ा बुनना है, न कि इतिहास पढ़ना। मैं पचास का हो चला, अब तुम्हे मेरी जगह लेनी चाहिये।"

"मिरोन और याकोव आपका काम संभालेंगे। मिरोन तो इंजीनियर बनने जा रहा है," इल्या ने खिड़की के बाहर सिगरेट की राख भाड़ते हुए उत्तर दिया। पिता ने कहा –

"मिरोन मेरा भतीजा है, बेटा नही। खैर, यह सब बातें बाद मे करेंगे..."

लड़के उठकर बाहर चले गये। पिता उन दोनों की ओर आश्चर्य और वेदना-भरी नज़रों से देखता रहा। इन लड़कों के पास उससे कहने को कुछ भी नही? पाच मिनट ही बैठे थे। उनमें से एक तो अपनी मूर्खतापूर्ण बात करके बैठा जमुहाई लेता रहा था। दूसरे ने सारे कमरे में तम्बाकू का धुआं भर दिया था और उसे एकदम विचलित कर दिया था। अब वे दोनों अहाते में थे। उसे इल्या के ये शब्द स्पष्ट सुनायी दिये –

"चलो ज़रा नदी को देख आयें।"

"नही, मैं तो सफ़र से थक गया हू।"

"ख़ैर, नदी तो जहां है, कल भी वही रहेगी। उधर मां नानी की मृत्यु से शोकमग्न है और अन्त्येष्टि का इन्तज़ाम करते चूर-चूर हो गयी है।"

अप्रिय प्रसग को जल्द से जल्द ख़त्म कर देने की आदत से विवश, ताकि किसी तरह जल्द बला टले और पिण्ड छूटे, प्योत्र ने अपने बेटे को एक सप्ताह का समय दिया। इस एक सप्ताह मे उसने देखा कि मज़दूरों से बात करते समय वह आप जैसे शिष्टाचारी शब्दों का प्रयोग करता है और सन्ध्या के समय फाटक के पास की बेंच पर बैठकर घण्टो तक तीख़ोन और सेराफ़ीम से बातें करता रहता है। एक दिन अपनी खिड़की से प्योत्र ने उनकी बातचीत के कुछ अश भी सुन लिये। तीख़ोन अपने मरियल स्वर में मूर्खतापूर्वक बके जा रहा था –

"ग़रीब होने का मतलब है कुछ भी न होना। ठीक है न, इल्या पेत्रोविच, कि अगर लोग अपना लालच छोड दे तो किसी को किसी चीज की कमी न रहे।"

और सेराफ़ीम ने ख़ुशी से चहककर कहा –

"यह मै जानता हू! बहुत पहले ही यह बात सुन चुका हूं "

याकोव का व्यवहार अधिक समझ मे आनेवाला था। वह कारख़ाने की इमारत के इर्द-गिर्द मंडराता रहता, लडकियो से आखें लडाता फिरता और जब दोपहर को खाने के समय औरते नहाने के लिये नदी पर जाती तो वह घुड़साल की छत पर चढ़कर उन्हें घूरता रहता।

"निरा अल्हड़ साड है," पिता ने किंचित उदास होकर सोचा, "सेराफ़ीम से कहना होगा कि इस लड़के पर नज़र रखे। उसे कही फसने न दे.."

मंगल का दिन उदास और शान्त था। सुबह-सुबह लगभग एक घण्टे तक बूदा-बांदी होती रही थी और मेंह की अलसाई-सी फुहारें पृथ्वी का आचल भिगोती रही। दोपहर के बाद सूरज ने फिर बादलों में से झांककर कारख़ाने और नदियो के संगम की ओर एक अनमनी-सी दृष्टि डाली और जैसे रात को सोने से पहले नतालिया अपने गुलाबी गालो को रोयेंदार तकियों में छिपा लेती थी, ठीक उसी तरह सूरज ने भी मटमैले बादलों में अपना मुंह छिपा लिया।

23-1176

शाम की चाय के समय अर्तामोनोव ने याकोव से पूछा –

"तुम्हारा भाई कहां है?"

"पता नहीं, कुछ देर हुई पहाड़ी पर चीड़ के पेड़ के नीचे बैठा था।"

"उसे बुला लाओ। नहीं, रहने दो। मुझे बताओ कि तुम दोनों की कैसी पटती है?"

उसे लगा कि याकोव के होंठों पर एक अर्थपूर्ण मुस्कान दौड़ गयी है –

"खूब अच्छी पटती है।"

"बस? मैं सचाई जानना चाहता हूं..."

याकोव आंखें झुकाकर सोचने लगा –

"हमारे विचार एक-दूसरे से भिन्न हैं।"

"कौन-से विचार?"

"हर प्रकार के विचार।"

"क्या मतलब?"

"वह हमेशा किताबी बातें करता है और मैं अपनी बुद्धि के अनुसार चलता हूं – सिर्फ़ अपनी बुद्धि के अनुसार।"

"हुंह, यह बात है," पिता ने कहा। अधिक विस्तार से इससे कुछ और कैसे पूछे, यह उसे नही मालूम था।

प्योत्र ने कन्धे पर बरसाती डाली और अपनी छड़ी उठायी, जिसकी चांदी की मूठ पर एक पक्षी अपने पंजे में मेलाकाइट का गेंद दबोचे बैठा था। यह छड़ी उसे अल्योशा ने भेंट की थी।

फाटक से बाहर आकर उसने आंखों पर हाथ से ओट करके चारों ओर नज़र दौड़ायी। इल्या सफ़ेद क़मीज़ पहने नदी किनारे के वृक्षों के नीचे पहाड़ी पर लेटा था।

"आज रेत भी सीली है। उसे सर्दी न लग जाये। बड़ा लापरवाह है।"

वह जाकर अपने पुत्र से क्या कहेगा, इसका एक-एक शब्द तोलते तथा पांवों के नीचे सूखी घास के तिनके नोचते हुए वह धीरे-धीरे बेटे की तरफ़ बढ़ने लगा। इल्या मुंह नीचा किये एक भारी-भरकम पुस्तक पर पेंसिल मारते हुए उसके पन्ने उलट रहा था। क़दमों की आहट सुनकर उसने गर्दन घुमाई और पिता को सामने देखकर पेंसिल को

किताब में रखते हुए उसे ज़ोर से बन्द कर दिया, वृक्ष के तने के साथ टेक लगाकर बैठ गया और पिता की ओर स्नेहपूर्वक देखने लगा। पहाड़ी पर चढ़ने के कारण पिता की सांस फूल गयी थी और वृक्ष की वक्र जड़ पर बैठकर यह सोचने लगा – " अभी कारोबार की बात नहीं करूंगा। इसके लिये बहुत समय पड़ा है। हम यों ही गपशप करेंगे।"

लेकिन इल्या ने अपने घुटनों के गिर्द बांहें डालते हुए शान्त भाव से कहा :

" पिता जी, मैंने अपना जीवन विज्ञान को समर्पित करने का निश्चय किया है।"

"समर्पित करने का," पिता ने उसके शब्दों को दुहराते हुए कहा, "पादरी की तरह।"

उसने तो मज़ाक़िया ढंग से यह कहना चाहा, किन्तु इच्छा के विपरीत उसके शब्द उग्र रूप धारण करते गये। अपने आपसे चिढ़कर प्योत्र ने ज़ोर से छड़ी को रेत पर पटका। इसी क्षण स्थिति एक अप्रत्याशित और अवांछित करवट लेने लगी। इल्या की आंखों का नीला रंग और भी गहरा हो गया और उसके माथे पर बल पड़ गये। माथे की लटों को पीछे की ओर फेंककर उसने अवज्ञापूर्ण दुराग्रह से कहा –

" मैं उद्योगपति नही बनना चाहता। मैं इसके लिये बना ही नहीं ..."

"तीख़ोन भी यही कहता है," प्योत्र ने मुस्कराते हुए कहा।

पिता के शब्दो की ओर ज़रा भी ध्यान न देकर इल्या दस मिनट तक प्योत्र को समझाता रहा कि वह क्यों कारखानेदार या किसी भी धन्धे का स्वामी नही बनना चाहता। इसी बीच प्योत्र ने कई बार अनुभव किया कि इल्या की बातों में सचाई की ऐसी अस्पष्ट झलक है जो उसके अपने धुंधले विचारों से मेल खाती है। लेकिन समग्र रूप से उसे इल्या की बातें असंगत और बचकानी जान पड़ीं।

"ज़रा रुको," उसने बेटे के पावों के पास रेत में छड़ी गाड़ते हुए कहा, "यह सब बकवास है। किसी को तो मालिक बनना ही पड़ेगा। इसके बिना लोगों की कोई गति नही। अपना लाभ सोचे बग़ैर कोई किसी काम में नही पड़ता। हर कोई यही पूछता है – 'इसमें मेरा फ़ायदा क्या है?' हम सब इसी तकले पर कते हैं। बड़े-बूढ़ों का भी यही कहना है कि 'अगर उसकी आत्मा लाभ के लिये न छटपटाती तो वह एड़ी से चोटी तक पूरा सन्त होता!', 'यहां तक कि सन्त भी फ़ायदे

के लिये प्रार्थना करते हैं', या 'बेजान होने पर भी मशीन तेल के बिना नहीं चलती'।"

प्योत्र शान्तिपूर्वक बोल रहा था और अपनी बात में पुरानी कहावतों में निहित विवेक और बुद्धिमत्ता का भरपूर प्रयोग कर रहा था। किसी यत्न या कठिनाई के बिना शब्दों का शान्त प्रवाह अबाध गति से जारी था। प्योत्र को विश्वास था कि उसकी बातों का वांछित प्रभाव पड़ेगा। इल्या एक मुट्ठी से दूसरी मुट्ठी में रेत डालते और उसमें छिपी चीड़ की नुकीली पत्तियों को हथेली पर रखकर फूंक से उड़ाते हुए चुपचाप सारी बातें सुन रहा था। अकस्मात वह पिता की तरह ही शान्त स्वर में बोला –

"इन सब बातों का मेरे मन पर कोई असर नहीं पड़ता। इस बुद्धिमत्ता से अब काम नही चलेगा।"

पिता अपनी छड़ी का सहारा लेकर खड़ा हो गया, पुत्र ने पिता की सहायता न की।

"मतलब यह कि तुम्हारे पिता की बाते सच नही है?"

"एक और सत्य भी है।"

"यह सरासर झूठ है। कोई और सत्य नहीं है।" फिर कारखाने की ओर छडी घुमाते हुए प्योत्र ने कहा –

"वह रहा हमारा सत्य! तुम्हारे दादा ने इसकी नीव डाली थी। मैंने सारी ज़िन्दगी इसमें खपा दी है। अब तुम्हारी बारी है। बस, इतनी ही बात है। और तुम क्या राग अलाप रहे हो? हम खून-पसीना एक करते रहे और तुम गुलछर्रे उडाओ? तुम दूसरों की मेहनत पर संत बनना चाहते हो! कुछ बुरा विचार नही! तुम इतिहास को गोली मारो। इतिहास कोई छोकरी तो नही, तुम उससे शादी तो नही कर सकते। क्या करोगे इस कमबख्त इतिहास को लेकर? इससे क्या लाभ होगा? मैं तुम्हें काहिल नही बनने दूंगा..."

अर्तामोनोव को लगा कि उसका स्वर आवश्यकता से अधिक कठोर हो गया है। उसने बात बदलते हुए कहा –

"मैं यह समझ सकता हूं कि तुम मास्को में रहना चाहते हो। वहां ज़िन्दगी में रंगीनी और लुत्फ़ है। अल्योशा भी.."

इल्या ने किताब उठाकर जिल्द पर पड़ी रेत को झाड़ते हुए कहा –

"मुझे आगे पढ़ने की अनुमति दीजिये।"

"नहीं!" पिता ने छड़ी को रेत में और गहरा गाड़ते हुए कहा। "और यह बात फिर कभी नहीं दोहराना।"

इल्या भी उठ खड़ा हुआ। उसकी नीली आंखों का रंग फीका पड़ गया था। पिता के कन्धों से परे देखते हुए उसने शान्त स्वर में कहा –

"अच्छी बात है। अब मुझे अनुमति के बिना ही अपने उद्देश्य की पूर्ति मे लगना होगा।"

"तुम ऐसी जुर्रत नहीं करोगे..."

"अपने मनचाहे ढंग से जीवन बिताने से कोई किसी व्यक्ति को नही रोक सकता," इल्या ने अपने सिर को झटका देते हुए कहा।

"किसी व्यक्ति को न? पर तुम तो मेरे बेटे हो, पराये व्यक्ति नही हो। फिर तुम व्यक्ति भी क्या हो? तुम्हारे शरीर का एक चिथड़ा भी तो तुम्हारा नही, सब कुछ मेरा दिया हुआ है।"

यह बात जैसे अपने आप ही मुंह से निकल गयी। अच्छा होता यदि वह ऐसा न कहता। और प्योत्र ने धिक्कार से सिर हिलाते हुए किंचित कोमल शब्दो में अपनी बात जारी रखी –

"मैंने पाल-पोसकर तुम्हें बड़ा किया, सो उसका बदला तुम इस तरह चुका रहे हो? ओह, कैसे निकम्मे हो..."

पिता ने देखा कि इल्या के कपोल लाल हो गये है और उसके हाथ कांपने लगे हैं। उसने अपने हाथों को जेब में डालकर छिपाना चाहा, लेकिन उन्हें जेबे नही मिल रही थी। और अर्तामोनोव इस डर से कि उसका बेटा कही सीमाओ का उल्लंघन करने पर न तुल जाये या कोई ऐसी बात न कह बैठे जिसे वापस लेना असंभव हो जाये, जल्दी से बोला –

"शायद तुम्हारी ख़ातिर ही मैने एक इन्सान की हत्या कर डाली.."

अर्तामोनोव ने "शायद" इसलिये जोड़ दिया था कि इन परिस्थितियों में, जबकि पुत्र उसकी बात समझना ही नहीं चाहता, उसे उससे यह नही कहना चाहिये था।

"अब वह पूछेगा – किस इन्सान की?" उसने सोचा और वह तेज़ी से पहाड़ी से नीचे उतरने लगा। उसके बेटे ने पीछे से बहुत ऊंची आवाज़ में ये शब्द कहे –

"सिर्फ़ एक इन्सान की ही नही। उधर कारख़ाने के शिकार बने मज़दूरों से पूरा क़ब्रिस्तान भरा पड़ा है।"

अर्तामोनोव ने पीछे मुड़कर देखा। इल्या खड़ा हाथ उठाकर अपनी किताब से उन क्रॉस-चिह्नों की ओर इशारा कर रहा था जो क्षितिज पर अनेक पंक्तियों में फैले हुए थे। अर्तामोनोव के पांव के नीचे की बालू किरकिरायी। अभी कुछ देर पहले कारखाने और क़ब्रिस्तान के बारे में आक्रोश-भरी जो बातें सुनी थीं, उनको उसने एक बार फिर मन में दोहराया। साथ ही उसके मुंह से अनजाने ही जो बात निकल गयी थी, वह चाहता था कि उसके पुत्र की स्मृति से वह मिट जाये और तेज़ी से क़दम उठाते हुए वह भालू की तरह पहाड़ी पर चढ़ने लगा। इस आशा से कि उसका बेटा डर जायेगा, वह अपनी छड़ी को हवा में घुमाते हुए डपटकर चिल्लाया –

"क्या कहा तुमने, कमीने कहीं के?"

इल्या उछलकर पेड़ के तने की ओट में हो गया।

"यह क्या कर रहे हैं! क्या पागल हो गये हैं?"

बाप ने पूरे ज़ोर से छड़ी घुमाकर पेड के तने पर दे मारी। छडी टूट गयी और उसने हाथ में बचे टुकड़े को बेटे के पांवों की ओर फेंक दिया। वह थरथराता हुआ बालू में घुस गया। उसने क्रोधपूर्वक कहा –

"मैं तुमसे पाखाने साफ़ करवाऊंगा!"

और वह लड़खड़ाता, फिसलता हुआ तेज़ी से पहाड़ी से नीचे उतरने लगा। उसके मन में एक तूफ़ान उठ रहा था और वह खेद और क्रोध-भरे असम्बद्ध शब्दों के जाल में फंसी चिड़िया की तरह छटपटा रहा था।

"मैं इसे घर से निकाल बाहर करूंगा। ज़रूरत उसे फिर वापस ले आयेगी और तब – मैं इससे पाख़ाने साफ़ करवाऊंगा।" इस तरह के विचार इस जाल में से तेज़ी से चक्कर काटते हुए उसके मन में आये और इसके साथ ही उन्होंने धुंधला-सा संकेत दिया कि उसने उचित काम नहीं किया, कि वह सीमा का अतिक्रमण कर गया और व्यर्थ ही इतना अधिक बुरा मान गया।

ओका नदी के किनारे पहुंचकर वह कुछ देर को सुस्ताने के लिये रेतीली मिट्टी पर बैठ गया। उसके चेहरे पर पसीने की बूंदें चमक रही थीं, उसने उन्हें हाथ से पोंछकर साफ़ किया। वह नदी की ओर देखने लगा। डेस मछलियों का झुण्ड छोटी-छोटी सुइयों की भांति पानी को छेद रहा था। इतने में एक बड़ी रोहू मछली अपने सुन्दर परों को फैलाये

हुए आयी। कुछ देर इधर-उधर डुबकी लगाने के बाद उसने अपनी लाल आंख से फीके आसमान की ओर देखा और उसके मुंह से बुलबुलों का झरना निकल पड़ा जो पानी के भीतर से सफ़ेद धुएं की तरह दिखायी देता था।

अर्तामोनोव ने उस मछली की ओर उंगली उठाकर धमकाते हुए कहा –

"मैं तुम्हें जीना सिखाऊंगा!"

उसने पीछे मुड़कर देखा: उसकी धमकी में सचाई नही थी। नदी के अबाध, कलकल प्रवाह में उसका सारा क्रोध बह गया था। मटमैले, अलसाए वातावरण में न जाने कितने अप्रत्याशित विचार उमड़ आये। सबसे अधिक आश्चर्य तो उसे इस बात से हो रहा था कि उसके प्यारे बेटे ने, जिसके लिये वह पिछले बीस वर्षों से लगातार चिन्तित रहा था, अचानक ही उसकी आत्मा को व्यथित कर दिया था। इन बीस वर्षों में अर्तामोनोव अपने इस पुत्र के उज्ज्वल भविष्य की सुखद कल्पनाओं में डूबा रहा था, उसने अपने बेटे से बड़ी-बड़ी आशायें लगायी थी।

"दियासलाई की तरह वह भभक उठा और बुझ गया! पर क्यों?"

मटमैले आकाश पर एक धुंधली-सी लाली छा गयी। एक कोने में किसी फटे-पुराने कपड़े की चमक-सरीखी कोई रोशनी दिखायी दी। कुछ देर बाद बादलों में से कटी फांक के आकार का चांद झांकने लगा। हवा में ठण्डक और सीलन आ गयी और नदी का पानी कुहरे से ढंक गया।

प्योत्र उस समय घर आया, जब उसकी पत्नी कपड़े उतारकर गोल-गोल दायें घुटने पर बायां पांव टिकाये तथा माथे पर बल डाले उंगलियों के नाखून काट रही थी। पति की ओर देखते हुए उसने पूछा –

"तुमने इल्या को कहां भेज दिया?"

"जहन्नुम में," प्योत्र ने कपड़े उतारते हुए कहा।

"तुम हमेशा बिगड़े रहते हो," नतालिया ने एक लम्बी, ठंडी सांस ली। प्योत्र चुप रहा। वह जानबूझकर शोर मचाते हुए निद्रा का उपक्रम कर रहा था। इतने में खिड़कियों के शीशों पर वर्षा की फुहार पड़ने लगी और सारे बगीचे में उसकी नम सरसराहट फैल गयी।

"इल्या मनमाना हो गया है। पढ़ाने का यही फल है।"

"उसकी मां जो बेवक़ूफ़ है।"

मां ने नाक से सूं-सूं की। फिर शरीर पर क्रॉस का निशान बनाती हुई वह बिस्तर में घुस गयी। प्योत्र अभी कपड़े उतार रहा था। उसने मजा लेते हुए पत्नी को ताना मारा—

"तुम हो किस काम की? तुम्हारे बच्चे तुम्हारा आदर नही करते। तुमने उन्हें क्या सिखाया है? तुम्हें तो सिर्फ़ खाना और सोना आता है। और तोबड़ा रंगना!"

पत्नी तकिये में भुनभुनायी—

"उन्हें पढ़ने के लिये किसने भेजा था? मैंने तो तुम्हें लाख समझा-या..."

"चुप रहो!"

प्योत्र भी चुप हो गया। वह ध्यानपूर्वक बर्डचेरी की पत्तियों पर पड़ती वर्षा की बूदों की पटापट सुन रहा था। यह वृक्ष निकीता ने अपने हाथों से लगाया था।

"कुबडा भी मौज उड़ाता है। न बाल-बच्चे, न कारोबार की चिन्ता। मधुमक्खियों का शौक़ीन है। मैं तो मधुमक्खियों के फेर में भी न पडता—जिसे शहद की ज़रूरत होती, वह स्वय हासिल करता।"

नतालिया ने ऐसे सावधानी से करवट बदली मानो वह बर्फ की सिल पर लेटी हो। पति के कन्धे से अपना गर्म गाल छुआकर वह बोली—

"क्या इल्या के साथ कोई झगडा हो गया था?"

पहाड़ीवाली घटना सुनाते हुए उसे शर्म आयी। वह बड़बडाया—

"बच्चो से झगडा नही होता। उन्हे डाटा-डपटा जाता है।"

"वह शहर चला गया है।"

"लौट आयेगा। रोटी पेड़ों पर तो नही फलती। पैसे के बिना उसे जल्दी जिन्दगी का स्वाद मालूम हो जायेगा—तब लौट आयेगा। मुझे तंग मत करो, चुपचाप सो जाओ।"

कुछ देर ठहरकर वह बोला—

"याकोव को अब और पढ़ने की ज़रूरत नही।"

फिर कुछ क्षण रुककर—

"परसों मैं मेले में जा रहा हूं। सुनती हो?"

"हां।"

"आखिर यह सब क्या है?" प्योत्र मन ही मन झुंझला उठा। उसने आंखें मूंद ली, लेकिन उसकी आंखों के सामने अब भी उस छोकरे

का चेहरा नाच रहा था। चौड़ा माथा, असह्य ठेस लगानेवाली चमकती हुई आंखें। "कमीने ने अपने पिता के साथ ऐसा बर्ताव किया जैसा कोई अपने भाड़े के नौकर को बर्खास्त करते समय करता है। किसी भिखमंगे की तरह फटकार दिया..."

क्षणभर में ही यह घटना कैसे हो गयी, प्योत्र को इसी बात पर आश्चर्य हो रहा था। ऐसा लगता था कि इल्या ने पहले से ही नाता तोड़ने का फ़ैसला कर लिया था। लेकिन उसने ऐसा क्यों किया? बेटे के भर्त्सना से भरे कठोर शब्दों की याद आते ही प्योत्र गहरी सोच में डूब गया –

"मिरोन ने उसे यह शिक्षा दी है। ग़लीज़ कुत्ता! और कारोबार से आदमी खराब हो जाता है – यह बकवास तीख़ोन की है। मूर्ख! पागल! कान भी किस आदमी की बात पर दिया? फिर पढ़ाई-लिखाई भी की है! पढ़-लिखकर क्या सीखा? उसे मज़दूरों पर दया आती है, पिता पर नही। आया है न्याय और धर्म का पुछल्ला बनकर!"

इस पर मानो उसके ज़ख्मो पर किसी ने नमक छिड़क दिया –

"नही! तुम ऐसे अपना पिंड नही छुड़ा पाओगे!"

उसे निकीता की याद आयी जो इन सब बखेड़ों से बचकर शान्त वातावरण में पलायन कर गया था।

"सब के सब मेरे कन्धों पर बोझ डालकर भाग जाते हैं।"

अचानक प्योत्र के मन में खलबली मची – इस बात में सचाई नहीं थी। अल्योशा तो कारोबार छोड़कर नही भागा था। उसे अपने पिता की तरह कारोबार से प्रेम था। वह लालची था, बेहद लालची। और उसके सभी काम झटपट तथा आसानी से हो जाते थे। प्योत्र को याद हो आया कि कैसे एक दिन कारख़ाने के मज़दूर के शराब पीकर दंगा करने पर उसने अल्योशा से कहा था –

"मज़दूर बिगड़ रहे है।"

"सो तो दीख रहा है," अल्योशा ने सहमति प्रकट की थी।

"ये सब हर बात पर झुंझलाये रहते हैं। मानो सबकी आंखों में एक-सा भाव हो..."

अल्योशा ने इस बात का भी समर्थन करते हुए कहा –

"यह भी ठीक है। मुझे याद है, तुम्हारी शादी मे लौटते समय रास्ते में जब पिता जी सिपाहियो से कुश्ती कर रहे थे, तो तीख़ोन के

चेहरे पर भी ऐसा ही भाव था, फिर वह स्वयं कुश्ती करने लगा था। याद है?"

"तीख़ोन की बात छोड़ो! उसके दिमाग़ के तो पेच ढीले हैं।"

इस पर अल्योशा गंभीर होकर बोलने लगा—

"मैंने अक्सर तुम्हें ऐसी बातें करते सुना है कि लोगों का चरित्र गिर रहा है, उनकी आदतें बुरी होती जा रही हैं। आख़िर इन सब बातों से हमें क्या मतलब? इन बातों से मग़ज़पच्ची करने का काम पादरियों और अध्यापकों या फिर डाक्टरों और सरकारी अफ़सरों का है। यह देखना उन्हीं का काम है कि लोगों की आदतें न बिगड़ें। उनके पास बेचने को यही माल है और हम-तुम उनके ख़रीदार हैं। भाई मेरे, समय के साथ दुनिया में हर चीज़ ही थोड़ी-बहुत बिगड़ जाती है। उदाहरण के लिये तुम बूढ़े होते जा रहे हो और मैं भी। लेकिन तुम किसी नौजवान छोकरी से यह तो नहीं कहोगे कि वह मौज करना छोड़ दे, क्योंकि एक दिन उसकी जवानी ढल जायेगी!"

"यह आदमी कितना होशियार है!" बड़े भाई ने सोचा। "शैतान की तरह होशियार है!"

उसे अपने भाई के उत्साही स्वभाव और नये ढंग के व्यंग और विनोद से भरी वाक्पटुता से ईर्षा हुई। फिर उसे निकीता की याद आयी। पिता की अन्तिम इच्छा थी कि निकीता हम सबको सान्त्वना दे, लेकिन वह स्वयं एक स्त्री के रूप पर लट्टू होकर मूर्खतापूर्ण कार्य कर बैठा और फिर घर छोड़कर चला गया।

वर्षा की उस रात को प्योत्र अर्तामोनोव अपनी अनेक पुरानी स्मृति-यों को उलटता-पुलटता रहा। उसकी कटु स्मृतियों में से जैसे धुंए की तरह उन परस्पर विरोधी और पराये विचारों का झुण्ड का झुण्ड उठकर उसके मन पर छा गया जो मानो अंधेरे में रिमझिम करते हुए मेह के साथ कानाफूसी कर रहे हों और अपने लिये कोई सफ़ाई ढूंढ़ने के मार्ग में बाधक बन रहे हों।

"पर मैं किस बात के लिये अपराधी हूं?" उसने किसी से पूछा और यद्यपि इसका उसे कोई उत्तर नही मिला, फिर भी उसे लगा, जैसे इसका उत्तर कही न कहीं मौजूद है। पौ फटने पर उसने यकायक निश्चय किया कि वह मठ में जाकर अपने भाई से मिलेगा। शायद, वहां उस आदमी के पास, जो एकान्त में तथा सांसारिक प्रलोभनों और

चिन्ताओं से मुक्त जीवन बिताता है, उसे भी सान्त्वना का और कोई निर्णायक मार्ग मिल जाये।

किन्तु डाक की दो घोड़ोंवाली बग्घी में देहात की टूटी-फूटी सड़क पर झटके खाने के कारण बेहाल होता हुआ वह मन ही मन सोच रहा था –

"एक कोने में आसन जमाकर पड़े रहना तो बहुत आसान है। ज़रा खुले में दौड़ लगाकर देखो! ठण्डे तहखाने में खीरा जल्दी नहीं सड़ता, लेकिन धूप में तेज़ी से खराब होता है।"

उसने अपने भाई को चार वर्षों से न देखा था और उनकी आखिरी मुलाक़ात उत्साहहीन तथा रूखी-सी थी। प्योत्र को लगा कि उसके आने से कुबड़ा परेशान हो उठा है और नाखुश है। वह अपने अन्दर ही अन्दर सिमटता जा रहा था, जैसे घोंघा अपने खोल में घुस जाता है। वह किंचित खीझे स्वर में बातें कर रहा था, भगवान के बारे में नहीं, स्वयं अपने, या परिवार के बारे में नहीं, बल्कि मठ की आवश्यकताओं, तीर्थ-यात्रियों और लोगों की ग़रीबी के बारे में। वह जैसे मन मारकर हिचकिचाते हुए बोल रहा था। प्योत्र ने जब उसे कुछ धन देना चाहा तो उसने शान्त उदासीनता से उत्तर दिया –

"बड़े पादरी को दे दो। मुझे इसकी ज़रूरत नहीं।"

यह स्पष्ट था कि मठवासी भिक्षु निकोदिम (निकीता) के परम भक्त थे। सब उसका मुंह जोहते थे और भीमकाय, मोटी हड्डियोंवाले, एक कान से बहरे, जंगल के भूत जैसे मगर चोग़ा पहने बड़े पादरी ने प्योत्र के मुख की ओर अपनी काली आंखों से घूरते हुए अनावश्यक रूप से ऊंचे स्वर में कहा था –

"पादरी निकोदिम हमारे इस मामूली-से मठ की शोभा है।"

भिक्षुओं का यह मठ एक पहाड़ी पर चीड़-वृक्षों के घने झुरमुट में स्थित था। सन्ध्या की प्रार्थना के लिये बुलावा देनेवाली घण्टियों की मन्द टनटन ने अर्तामोनोव का स्वागत किया। द्वार खोलते समय एक लम्बे, अकड़े से दरबान ने, जिसके बांस जैसे शरीर पर एक बच्चे जैसा छोटा-सा सिर था और जो बदरंग, फटी-पुरानी टोपी पहने था, हकलाते हुए कहा –

"स्वा ... ग-ग .."

फिर लम्बी सांस लेकर कहा –

"स्वागत।"

एक भूरे बादल ने मठ के ऊपर आधे आसमान को ढंक लिया था। तांबे की घंटियों की टनटन ध्वनि भी इस नीरस, नम और नैराश्यपूर्ण वातावरण को दूर न कर पायी।

"ओह यह बहुत भारी है," अतिथि-गृह के चाकर ने उस सन्दूक़ को उठाने की कोशिश करके जिसमें प्योत्र निकीता के लिये उपहार लाया था, विनीत भाव से कहा और भारी भरकम सन्दूक़ पर मुट्ठी से हल्का-सा घूंसा मारा।

थकावट से चकनाचूर और धूल से लथपथ प्योत्र बगीचे की ओर चल पड़ा, जहां सेब और चेरी के वृक्षों के झुरमुट के बीच उसके भाई की सफ़ेद कुटिया थी। उसे खेद हो रहा था कि वह यहां आया– मेले में जाना अधिक अच्छा रहता। जंगल की ऊबड़-खाबड़, पथरीली सड़क ने उसके नैराश्यपूर्ण विचारों में गड़बड़ पैदा कर दी थी। उसे एक कड़वी वेदना का अनुभव हो रहा था। उसका मन शान्ति तथा विश्राम के लिये आकुल होने लगा।

"खूब मौज करनी चाहिये।"

प्योत्र ने देखा कि उसका भाई लिंडन के नौउम्र वृक्षो के झुरमुट में बैठा था और किसी परिचित चित्र की भांति उसके सामने दर्जन भर तीर्थ-यात्रियों का झुण्ड था। झुण्ड में काली दाढ़ीवाला एक व्यापारी भी था जिसने एक पांव पर चिथडे लपेटकर ऊपर रबड़ का जूता पहन रखा था; एक मोटा-सा बूढ़ा जो देखने में हिजड़ा महाजन लगता था और पास ही में सिपाही का वर्दी-कोट पहने एक नवयुवक बैठा था जिसके बाल लम्बे, गाल की हड्डियां नुकीली और आंखें मछली की सी थी। द्र्योमोव का नानबाई मुरज़िन, जो अव्वल दर्जे का पियक्कड़ और लड़ाका था, बास की तरह तनकर खड़ा फटे गले से कुछ बोल रहा था। ऐसा लगता था, जैसे कोई चोर न्यायाधीश के सामने खड़ा हो। वह कह रहा था–

"यह सच है। ईश्वर बहुत दूर है।"

निकीता अपनी सफ़ेद छड़ी की नोक से सख़्त ज़मीन पर रेखाएं खींच रहा था। आंखें नीची करके वह उपदेश दे रहा था–

"व्यक्ति जितना नीचे गिरता है, ईश्वर उतना ही दूर हो जाता है–इसका कारण हमारे पापों की सड़ांध है।"

"सान्त्वना दे रहा है," प्योत्र मन ही मन यह सोचकर मुस्करा दिया।

"हमारे विश्वास की उद्देश्यहीनता को ईश्वर जानता है। उद्देश्य के बिना विश्वास से क्या लाभ? क्या हम अपने भाई-बन्धुओं की सहायता करते हैं? आपस में स्नेह है? हम प्रार्थना किसलिये करते हैं? छोटी-छोटी चीज़ों के लिये। प्रार्थना तो करना ही चाहिये, पर..."

कुबड़े ने आंखें ऊपर उठायी। वह कुछ क्षण के लिये चुप रहा और बहुत ध्यान से भाई को सिर से पांव तक देखता रहा। फिर धीमे से उसने ऐसे अपना डंडा उठाया, मानो किसी पर प्रहार करना चाहता हो। वह उठा, उसने सिर झुका दिया, लोगों पर क्रॉस का चिह्न बनाया और प्रार्थना करने के बजाय सिर्फ़ इतना ही कहा –

"मेरा भाई मुझसे मिलने आया है।"

गंजे बूढ़े ने मुड़कर प्योत्र की ओर देखा। उसकी ताम्रवर्णी आंखों में कूट-कूटकर दुष्टता भरी थी। उसने भी अपने शरीर पर क्रॉस का चिह्न बनाया।

"जाइये, भगवान आपका भला करे," निकीता ने कहा।

चरागाह से खदेडे गये पशुओ की तरह वे इधर-उधर चल पड़े। बूढे ने घायल पांववाले व्यापारी की एक बांह थाम ली और नानबाई मुरजिन ने दूसरी।

"तो नमस्कार! आशीर्वाद दो," प्योत्र ने कहा।

पादरी निकोदिम ने काले लबादे में ढंकी लम्बी बाह से जैसे पंख फैलाकर अपने भाई के जुड़े हाथों को एक ओर हटा दिया। फिर खुशी का कोई चिह्न प्रकट किये बिना ही वह शान्त भाव से बोला –

"मुझे तुम्हारे आने की आशा नही थी।"

उसने डंडे से अपनी कोठरी की ओर इशारा किया और फिर मार्ग दिखाता हुआ उधर चल पड़ा। वह जैसे झटके दे-देकर चल रहा था और अपनी टांगों को फैला-फैलाकर डग भर रहा था। वह अपना एक हाथ दिल पर रखे था।

"तुम बुढ़ा चले हो," प्योत्र ने संकोचपूर्वक कहा।

"यही हाल है अपना तो। टांगों में दर्द रहने लगा है। यहां सीलन है।"

लगता था निकीता पहले से भी अधिक कुबड़ा हो गया है। उसका

दाहिना कंधा और उसके कूबड़ का कोण और ऊपर को उठ गया था जिससे उसकी कमर पृथ्वी की ओर और भी अधिक झुक गयी थी तथा वह पहले से क़द में अधिक छोटा और चौड़ा दीखता था। वह एक सिर-कटे मकड़े जैसा नज़र आता था जो आंखों के बिना मार्ग की किर-किराती रेत पर टेढ़ा-टेढ़ा-सा रेंग रहा हो।

साफ़-सुथरी पर तंग कोठरी में पादरी निकोदिम अपेक्षाकृत बड़ा, किन्तु अधिक भयानक प्रतीत होने लगा। जब उसने सिर पर से टोपी उतारी तो उसकी कान्तिहीन, मुरदे जैसी गंजी, त्वचा के बिना हड़ीली खोपड़ी दिखायी दी। उसकी कनपटियों के पीछे तथा गुद्दी पर भूरे बालों की लटें लटक रही थीं। चेहरा भी हड़ीला और मोम के रंग का था और हड्डियों पर चर्बी का अभाव था। आंखें बुझी हुई थीं। ऐसा लगता था मानो उसकी दृष्टि उसकी बड़ी, किन्तु पिलपिली नाक पर जमी है। नीचे दो गहरी लकीरों की तरह होंठ अस्पष्ट स्वर में फड़क रहे थे। उसका मुंह पहले की अपेक्षा अधिक बड़ा लगता था – चेहरे को दो हिस्सों में बांटनेवाला गहरे गड्ढे-सा। उसके ऊपरवाले होंठ पर बालों की भूरी-सी काई विशेष रूप से बुरी लग रही थी।

भिक्षु ने धीमी आवाज़ में मानो कुछ सुन रहा हो और हौले-हौले जैसे कि मुश्किल से शब्दों को याद कर पा रहा हो, अपने गोल-मटोल चेहरेवाले सहायक को आदेश दिया –

"समोवार, रोटी, शहद।"

"तुम कितना धीमा बोलते हो।"

"मेरे दांत टूट गये हैं।"

भिक्षु एक सफ़ेद आरामकुर्सी सरकाकर मेज़ के सामने बैठ गया।

"आप लोग कैसे हैं?"

"अच्छे हैं।"

"तीखोन ज़िन्दा है?"

"ज़िन्दा है – उसे हो भी क्या सकता है?"

"बहुत दिनो से वह मुझसे मिलने नही आया।"

दोनों चुप हो गये। निकीता ने हाथ हिलाया जिससे उसका चोग़ा सरसराया। तिलचटे जैसी इस सरसराहट से प्योत्र की ऊब और भी बढ़ गयी।

"मैं तुम्हारे लिये कुछ चीज़ें लाया हूं। सन्दूक़ यहां मंगवा लो।

थोड़ी शराब भी है। यहां शराब पीने की इजाज़त है?"

एक ठंडी सांस लेकर भाई ने उत्तर दिया –

"बड़ी मनाही भी नहीं। भीड़-भाड़ में कुछ शराबी भी यहां आ धमकते हैं। क्या करें। दुनिया की हवा में ज़हर है, लेकिन हर किसी को सांस लेनी पड़ती है। भिक्षु भी आखिर मनुष्य हैं।"

"मैंने सुना है कि बहुत-से लोग तुम्हारे दर्शनों के लिये आते हैं?"

"बेसमझी के कारण। हां, आते हैं, यहां चक्कर काटते रहते है। वे सत्य और सत्यनिष्ठ व्यक्ति खोजते है, चाहते हैं कि कोई उन्हें जीना सिखाये। वे अब तक जीते रहे हैं, लेकिन अब नहीं जी सकते। ज़िन्दगी बर्दाश्त नहीं होती।"

इन शब्दों को सुनकर प्योत्र की बेचैनी और अधिक बढ़ गयी। उसने शिकायत के स्वर में कहा –

"बिगड़ गये हैं – उन लोगों ने भूदासता बर्दाश्त की, पर आज़ादी नही बर्दाश्त कर सकते! इन लोगों को तो कड़ा शासन चाहिये।"

निकीता चुप रहा।

"जमींदारों के समय में लोग इधर-उधर नही भटकते, आवारा-गर्दी नही करते थे।"

कुबड़े ने प्योत्र की ओर देखा और आंखें नीची कर ली।

तो मुश्किल से शब्दों को ढूंढ़ते और देर तक चुप रहते हुए वे तब तक बातचीत करते रहे जब तक कि भूरे बालोंवाला सहायक समोवार, सुगन्धित शहद और ताज़ी गर्म रोटी लेकर नही आ गया। इसके बाद वह सन्दूक़ का ढक्कन खोलने लगा, दोनों भाई चुपचाप बैठे उसकी फूहड़ हरकतों को देखते रहे। प्योत्र ने मेज़ पर ताज़ा केवियर का डिब्बा और शराब की दो बोतलें रख दी।

"'पोर्ट'," निकीता ने बोतल पर चिपके लेबल को पढ़कर कहा। "बड़े पादरी को यह शराब बहुत पसंद है। होशियार आदमी है, बहुत कुछ समझता है।"

"पर मैं बहुत कम समझता हूं," प्योत्र ने चुनौती के स्वर में स्वीकार किया।

"जितना ज़रूरी है, उतना तुम भी समझते हो। ज्यादा समझने की क्या ज़रूरत है? जितना समझना चाहिये, उससे ज्यादा समझना हानिकारक है।"

भिक्षु ने ठंडी सांस ली। प्योत्र उसके शब्दों में छिपी कटुता को अनुभव कर रहा था। कोठरी के एक कोने में रखी देव-प्रतिमाओं के पास जल रहे एक छोटे-से दीप तथा मेज़ पर टिमटिमाते पीले शीशे के सस्ते से लैम्प की मद्धिम रोशनी में उसका गन्दा और तेल के धब्बों-वाला चोग़ा चमक रहा था। भाई के शराब पीने के लालची ढग को देखकर प्योत्र ने मन ही मन सोचा –

"शराबों का पारखी है।"

हर गिलास के बाद निकीता अपनी सूखी और बहुत सफ़ेद उगलियों से रोटी का एक टुकड़ा तोड़ता और उसे शहद में डुबोकर आहिस्ता-आहिस्ता खाता और उसकी छोटी, छितरी, भूरी दाढ़ी हिलती। अभी तक उसे नशा नही चढ़ा था, लेकिन उसकी धुधली-धुंधली आंखों में चमक आ गयी थी और उसकी नज़र अब भी नाक की नोक पर जमी थी। प्योत्र भाई की तुलना में कम शराब पी रहा था, नही चाहता था कि भाई उसे नशे में देखे। पीते हुए वह सोच रहा था –

"यह नतालिया की बात क्यों नही करता? पिछली बार भी चुप रहा था। इसे शरम आती होगी। किसी के बारे में कुछ नही पूछता। हम तो सासारिक लोग है, यह सन्त ठहरा। लोग इसके दर्शन करने आते है।"

झल्लाहट से वास्कट पर दाढ़ी को रगड़कर तथा कान की ललरी को ऐंठकर उसने कहा –

"तुम अच्छी जगह आ छिपे हो। बुद्धिमानी का काम किया है।"

"पहले तो अच्छा था। अब इन यात्रियों के मारे मुसीबत है। रोज़ नये लोगों का आगमन ..."

"आगमन?" प्योत्र हंसा। "जैसे दातो के डाक्टर के पास लोग आते है।"

"मैं यहां से कही दूर जाना चाहता हूं," भिक्षु ने ध्यानपूर्वक शराब उंडेलते हुए कहा।

"जहां अधिक शान्ति मिल सके," प्योत्र ने हसकर कहा। निकीता चुपचाप शराब के घूंट भरता रहा। उसने अपनी काली, चिथड़े जैसी जीभ होंठों पर फेरी और गंजे सिर को हिलाकर कहा –

"अशान्त लोगों की संख्या बहुत बढ़ती जा रही है। लोग चिन्ताओं से भागकर छिपना चाहते हैं ..."

"मुझे तो ऐसा दिखायी नही पड़ता," प्योत्र ने खीझकर कहा। वह मन ही मन जानता था कि झूठ बोल रहा है। "यह तो तुम ही यहां आ छिपे हो," वह कहना चाहता था।

"और चिन्ताएं परछाईं की तरह उनके पीछे लगी रहती हैं . ."

भाई को झिड़कने के लिये प्योत्र के होंठ फड़कने लगे। वह गुस्से मे आकर निकीता को जी भरकर कोसना चाहता था। बेटे की याद ने उसके शब्दो को और कड़वा बना दिया –

"लोग अपने आप चिन्ताओ को खोजते फिरते है। मुसीबते उनकी इच्छा से आती है! चुपचाप अपना काम करो, अधिक बक-बक मत करो तो जीवन मे शान्ति ही शान्ति है!"

पर निकीता अपने विचारो में डूबा था और उसने सम्भवत: प्योत्र के शब्दों पर ध्यान नही दिया था। अचानक उसका नुकीला शरीर ऐसे हिला, मानो वह गहरी नीद से जागा हो। उसके चोग़े की सिलवटें काली लहरो की तरह हिलने लगी, उसके होठ कटुता से टेढे हो रहे थे और उसने बिल्कुल साफ शब्दों मे कहा –

"वे यहां उपदेश लेने आते है। मैं क्या जानता हूं? उन्हें क्या सिखा सकता हूं? मेरे पास बुद्धि नही। बडे पादरी ने यह सारा बखेडा खड़ा किया है। मै खुद कुछ नही जानता। एक निर्दोष क़ैदी की तरह मुझे लोगो को उपदेश देने की सज़ा दी गयी है। किस जुर्म के कारण?"

"यह सकेत कर रहा है – शिकायत करना चाहता है," प्योत्र ने सोचा।

वह जानता था कि निकीता को भाग्य के विरुद्ध उचित शिकायत है। वह जब पिछली बार भी उससे मिलने आया था तो उसने ऐसी शिकायत सुनने की आशा की थी। उसने कान की ललरी को ऐंठते हुए गम्भीर स्वर मे कहा –

"भाग्य के विरुद्ध बहुत-से लोगो को शिकायत है। लेकिन उससे क्या फ़ायदा?"

"सच है, लेकिन ज़िन्दगी मे खुश लोग भी बहुत कम देखने को मिलते हैं," कुबडे ने कोने में जल रहे दीप को ताकते हुए कहा।

"तुम्हारे बारे में पिता जी की भी यही इच्छा थी कि तुम सान्त्वना देनेवाले बनो।"

निकीता के होंठों पर एक विद्रुप-भरी मुस्कान आ गयी। उसने

अपनी भूरी दाढ़ी को मरोड़कर मुस्कान छिपा ली। झुटपुटे में कहे जानेवाले शब्दों से प्योत्र को ठेस पहुंची और उसकी उद्विग्नता बढ़ गयी। उसे आनेवाली विपत्ति का आभास होने लगा।

"यहां लोग इस बात का भरसक प्रयत्न करते हैं कि मैं अपने आपको बुद्धिमान समझूं और दुनिया को भी यही दिखाऊं। यह मठ के लिये लाभदायक है, इस तरह लोगों को आकर्षित किया जा सकता है लेकिन मेरा काम तो बड़ा कठिन है। मैं कैसे सान्त्वना दूं! बताओ भला! मैं कहता हूं, दुःखों को सहन करो। लेकिन देखता हूं कि लोग सहते-सहते तंग आ चुके हैं। मैं कहता हूं आशा पर जीवित रहो – किस बात की आशा पर? ईश्वर की? इससे उन्हें कोई सान्त्वना नही मिलती। यहां एक नानबाई अक्सर आता है . ."

"अरे हां – मुरज़िन, वह हमारी बस्ती का रहनेवाला है। जबर्दस्त पियक्कड है," प्योत्र ने मानो किसी अज्ञात भावना से पिण्ड छुड़ाते हुए कहा।

"वह तो ईश्वर पर भी टीका-टिप्पणी करता है। ईश्वर उसके लिये सर्वशक्तिमान नही रहा – आजकल ऐसे ढीठ लोगो की कमी नही है। यहां दाढी के बिना एक और आदमी भी था। तुमने उसे देखा? उसे सारी दुनिया से दुश्मनी है। ईर्ष्यालु कही का! ऐसे लोग आकर मेरा मग़ज़ चाटते है। मैं उन्हें क्या बताऊं? वे मेरी मानसिक शान्ति नष्ट करने के लिये आते है।"

भिक्षु की आवाज़ अधिकाधिक तेज़ होती जा रही थी। प्योत्र को ख़्याल आया कि निकीता पहले की तरह आखें नीची नही रखता। पिछली बार कुबड़े की अपराध-भावना की चेतना को देखकर प्योत्र को सन्तोष मिला था – जो खुद अपराधी है, उसे शिकायत करने का अधिकार नही। लेकिन आज निकीता ऐसे शिकायत कर रहा है, मानो उसके साथ भारी अन्याय किया गया हो। प्योत्र को डर था, कहीं उसका भाई यह न कह बैठे –

"यह सारी करतूत तुम्हारी है!"

वह नाक-भौंह सिकोड़कर तथा घडी की चेन से खिलवाड़ करते हुए आत्मरक्षा के शब्द तलाश करने लगा।

"हां," कुबडे ने कहा और लगा कि शिकायत में बड़ा आनन्द मिल रहा था। "लोग दिन-प्रतिदिन क़ाबू से बाहर होते जा रहे है।

उनके दिमाग़ों में अजब फ़ितूर भर गया है। कुछ दिन की बात है कि एक विद्वान, बेशक जवान, कोई दो हफ़्ते हमारे साथ रहा। वह बेहद डरा-सहमा और ऐसे था मानो उसका दिमाग़ फिर गया हो। बड़े पादरी का आदेश था, "इसे शक्ति प्रदान करो। अपने सरल ढग से उसे यह बात समझाओ, वह बात समझाओ।" लेकिन मेरी स्मरणशक्ति भी ऐसी नही कि मैं लोगों की सब बातें याद रख सकूं। उस विद्वान ने मेरे नाक मे दम कर दिया, हर वक्त बोलता रहता, बोलता रहता, विचारों तक पहुंचना तो दूर रहा, उसके शब्दों का अर्थ भी समझ में न आता था। वह कहता था, "यह विचार ग़लत है कि शैतान हमारी इन्द्रियों का स्वामी है – इसका मतलब है कि हम दो प्रभुओं की पूजा करते है, यह तो ईसा के शरीर का अपमान होगा, बाईबल मे लिखा है – 'ईसा को स्वीकारो, अमरत्व का स्रोत पाओ।' कैसा कुफ़ बकता था, एक बार कहने लगा, 'मुझे एक ईश्वर चाहिये, चाहे वह सींगो-वाला ही क्यो न हो, वरना ज़िन्दगी बितानी दूभर है।' वह रोज मुझे तग करता था। मै पादरी फ्योदोर का आदेश तो भूल गया और उस पर बरस पडा, 'तुम्हारी नस-नस मे उलटी-सीधी बातों का वास है और तुम्हारी आत्मा के अणु-अणु में विनाश है।' बाद मे बडे पादरी ने मुझे डाटा, 'तुम्हे हो क्या गया है – कैसी नास्तिक बकवास की तुमने।' हा, तो यह बात है ..."

प्योत्र को सारी बात निरर्थक लगी, लेकिन भाई की दुर्गति का हाल सुनकर उसे सान्त्वना मिली।

"ईश्वर की चर्चा करना कठिन है," वह बुदबुदाया।

"सचमुच बहुत कठिन है," पादरी निकोदिम ने सहमति प्रकट की और तीखे व्यग से कहा, "याद है पिता जी क्या कहा करते थे: हम सीधे-सादे श्रमजीवी है, लम्बी-चौडी बाते हमारी बुद्धि से परे हैं।"

"हा, याद है।"

"पादरी फ्योदोर का आदेश है – 'पुस्तके पढ़ो!' लेकिन मेरे लिये पुस्तक को समझना उतना ही कठिन है जितना दूर जगल की सरसराहट को। आज की दुनिया मे पुस्तको का कोई स्थान नही। पुस्तकें आज की समस्याओं का उत्तर देने मे असमर्थ है। चारों ओर कट्टरपन्थियों का बोलबाला है। लोग इस तरह बात करते है जैसे सपने सुना रहे हों, या

फिर नशे में हों। उस मुरज़िन को ही देखो..."

भिक्षु ने शराब का एक घूंट पीकर रोटी का टुकड़ा चबाया। उसने रोटी का कौर तोड़कर एक गोला बनाया और उसे मेज़ पर रखकर लुढ़काने तथा बात करने लगा।

"पादरी फ्योदोर का कहना है कि 'बुद्धि ही सारी मुसीबतो की जड़ है। यह एक कमीने, लालची कुत्ते की तरह है। शैतान उसे भड़काता है और कुत्ता व्यर्थ ही भूंकने लगता है।' यह बात शायद सच हो, लेकिन इसके साथ सहमत होना अच्छा नही लगता। यहा एक डाक्टर रहता है—बड़ा ही सीधा-सादा और हंसमुख। उसका विचार है कि बुद्धि एक बच्चे की तरह है जो हर खिलौने को देखकर मचल उठती है। बच्चा इस बात को जानने के लिये उत्सुक रहता है कि चीज़े कैसे बनती हैं, उनके अन्दर क्या है, और इसी कारण वह चीज़े तोड-फोड़ देता है..."

"मैं सोचता हूं कि यह बातें बड़ी ख़तरनाक है," प्योत्र ने अपनी राय दी। निकीता की बातें तीर की तरह उसके दिल में चुभ रही थी, उसको ठेस पहुंचा रही थी। उसके हर शब्द में अप्रत्याशितता और उग्रता थी। उसकी फिर से यह प्रबल इच्छा हुई कि वह निकीता को कुचल डाले, उसका अपमान करे।

"शायद अधिक शराब पी गया है," उसने अपने मन को स्थिर करने के लिये सोचा।

कोठरी मे दम घुट रहा था। समोवार के कोयलों तथा टिमटिमाते दीप से खटास-भरी दुर्गन्ध फैल रही थी। उनसे प्योत्र का मन भारी हो गया। लोहे के बेलबूटों के समान किसी पौधे के पत्ते खिड़की में से निश्चल झांक रहे थे। उसका भाई मकड़े की तरह धैर्यपूर्वक शब्दो का ताना-बाना बुनता जा रहा था।

"वैसे तो सभी विचार ख़तरनाक होते है, विशेषकर सीधे-सादे विचार। तीख़ोन को ही देखो।"

"वह पागल है।"

"नहीं, तुम व्यर्थ ही ऐसा कहते हो। वह बड़े कठोर स्वभाव का आदमी है। शुरू में तो मुझे उससे बात करते हुए डर लगता था। लेकिन पिता जी की मृत्यु के बाद तीख़ोन ने मेरा मन जीत लिया। तुम तो पिता जी को मेरी तरह प्यार नही करते थे। तुम्हें और अल्योशा

को पिता जी की ऐसी अकाल मृत्यु पर इतना दुःख भी नहीं हुआ था। लेकिन तीख़ोन बहुत दुखी हुआ था। मुझे उस दिन पादरिन की मूर्खता पर उतना क्रोध नहीं आया था जितना ईश्वर पर। तीख़ोन इस बात को भांप गया। उसने कहा, 'ठीक है। मच्छर जीता है और आदमी ...'।"

"तुम्हारा तो सिर फिर गया है! तुमने बहुत शराब पी ली है। किस पादरिन की बातें कर रहे हो?"

लेकिन निकीता अपनी बात कहता ही रहा।

"तीख़ोन का कहना है कि यदि ईश्वर ही ससार का मालिक है तो वह ठीक समय पर पानी क्यों नही बरसाता? जंगलों पर गाज क्यों गिरती है? मानवजाति को मर्त्य बनाने के लिये काइन ने पाप क्यों किया? ईश्वर को विकृत अंगवालो की क्या ज़रूरत है? उदाहरण के लिये उसे कुबड़ो की क्या ज़रूरत है?"

"ओह! तो यह बात है!" प्योत्र मन ही मन मुस्करा दिया। भिक्षु को परिवार के लोगो से कोई शिकायत नही है, वह तो ईश्वर को ही कोस रहा है।

"काइन के मामले को समझ पाना मुश्किल है। इस तरह तीख़ोन ने मेरा मन जीत लिया। पिता जी की मृत्यु से लेकर संन्यास की प्रतिज्ञा लेने के बाद तक भी तीख़ोन के विचार मेरे मन मे चक्कर काटते रहे। मेरा ख़्याल था कि मठ मे चला जाऊंगा तो यह सब भूल जाऊंगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। मैं तो इन्ही विचारों को लेकर जी रहा हू।"

"पहले तो तुम कभी ऐसी बातें नही करते थे..."

"बहुत-सी बातें एकदम नहीं की जातीं। मैं शायद जीवन भर चुप रहता। लेकिन तीर्थ-यात्रियों ने मेरी आत्मा में अशान्ति पैदा कर दी। मान लो, उपदेश देते समय तीख़ोन के शब्द उमड़ पड़ें, तो? तुम चाहे जो कहो, पर है वह बुद्धिमान आदमी, यद्यपि शायद मैं भी उसे पसन्द नही करता। वह तुम्हारे बारे मे भी सोचता है, कहता है कि तुमने जीवन भर अपने बच्चो के लिये जान खपायी, लेकिन तुम्हारे बच्चे तुम्हारे ही लिये अजनबी हैं..."

"क्या ख़ुराफ़ात बक रहे हो? उसे इसका कैसे पता हो सकता है?" प्योत्र ने ग़ुस्से से पूछा।

"उसे सब मालूम है। उसका कहना है कि कारोबार एक धोखा है..."

"मैंने भी उसकी बातें सुनी हैं... उसे बर्खास्त कर देना चाहिये। मुसीबत तो यह है कि उस कमबख्त को हमारे परिवार के बारे में सब कुछ मालूम है..."

प्योत्र ने यह बात निकीता को उस अभागी रात की याद दिलाने के लिये जानबूझकर कही थी, ताकि उसे अपनी आत्महत्या का स्मरण हो आये, लेकिन प्योत्र स्वयं निकोनोव के छोकरे की बात सोचने लगा था।

निकीता संकेत नही समझा। वह शराब का एक घूंट पीकर होंठ चाटते हुए निर्ममता से कहता गया –

"कभी किसी ने तीखोन के मन को भी चोट पहुंचायी थी। तभी से वह एक दिवालिये की तरह सबसे अलग रहता है ."

"इस प्रसंग को बदलना ज़रूरी है," यह सोचकर प्योत्र ने कहा –

"अच्छा, तो इस सारी बहस से नतीजा क्या निकला ? क्या ईश्वर पर तुम्हारा विश्वास उठ गया है ?" प्योत्र ने जानबूझकर अपने स्वर में कटुता लाने की चेष्टा की थी, किन्तु न जाने क्यों वह इसमे सफल न हो सका।

"आजकल ईश्वर पर कौन विश्वास करता है और कौन नही, यह बताना कठिन है," निकीता ने कुछ क्षण रुककर उत्तर दिया। "सोचते तो सभी लोग बहुत ज़्यादा है, लेकिन विश्वास दिखायी नही देता। विश्वास हो तो सोचने की ज़रूरत नहीं होती। वह जो सींगोवाले ईश्वर की चर्चा कर रहा था .."

"हटाओ इस बात को," प्योत्र ने सिर घुमाकर भाई की ओर कनखियों से देखते हुए कहा। "यह सब बातें ऊब और निठल्लेपन का नतीजा हैं। लोगों को लोहे के से मज़बूत जूए मे जोतने की ज़रूरत है।"

"नही। एकसाथ दो तरह के भगवानों में विश्वास नहीं किया जा सकता," पादरी निकोदिम ने ज़ोर देकर कहा।

इतने में घंटे की आवाज़ सुनायी दी। उसकी नपी-तुली ध्वनियां रह-रहकर खिड़की के धुंधले शीशे से टकराती थी। प्योत्र ने पूछा –

"तुम प्रार्थना के लिये जा रहे हो ?"

"नही। मेरे पैरों में दर्द होता है, मैं खड़ा नही रह सकता।"

"तो तुम हमारे लिये यही प्रार्थना करते हो ?"

निकीता ने कोई उत्तर नही दिया।

"अच्छा, रास्ते में मैं बहुत थक गया हूं। सोना चाहता हूं।"

निकीता ने कुर्सी के हत्थे के सहारे अपने टेढ़े-मेढ़े शरीर को उठाया और आवाज़ दी – "मीत्या! ओ, मीत्या!"

फिर कुर्सी पर बैठते हुए उसने याचना-भरे स्वर में कहा –

"मुझसे भूल हो गयी। मेरा सहायक अतिथि-गृह में सोने के लिये चला गया है। मैं दिल खोलकर बातें करना चाहता था, इसलिये उसे वहां भेज दिया। यहां सब चुग़लखोर जो है ."

फिर अनावश्यक रूप से लम्बे ढंग से उसने अतिथि-गृह का मार्ग समझाया। बाहर ठण्डी वर्षा हो रही थी। प्योत्र ने सोचा –

"वह नही चाहता था कि मैं उठकर आऊं। उसका मन बाते करने को था।"

अचानक प्योत्र के दिल का चिरपरिचित भय जाग उठा। उसे लगा कि वह एक गहरे खड्ड के किनारे चल रहा है और किसी भी क्षण गिरकर चकनाचूर हो सकता है। उसके कदम तेजी से उठ रहे थे। वर्षा ने रात्रि के अधकार को और भी भयानक बना दिया था। प्योत्र की आंखे अतिथि-गृह की लालटेन से आती रोशनी के धुधले चिह्न पर लगी हुई थी।

"नही," उसने ठोकर खाते हुए जल्दी मे सोचा, "मुझे इस सबकी ज़रूरत नही है। मैं कल ही यहां से चला जाऊंगा। आखिर बिगडा क्या है? इल्या तो लौट ही आयेगा। मुझे ज़िन्दगी पर अपनी पकड़ मज़बूत रखनी चाहिये। अल्योशा को देखो, कैसे उत्साह से आगे बढता जाता है। किसी दिन वह मुझे पीछे छोड देगा।"

निकीता और तीखोन को मन से हटाने के लिये ज़बरदस्ती अल्योशा की बात सोची गयी थी। लेकिन अतिथि-गृह की कठोर खाट पर लेटते ही प्योत्र के मन को भिक्षु और तीखोन ने फिर आ घेरा। यह तीखोन, आखिर है कैसा व्यक्ति? आस-पास की कोई भी चीज़ उसकी छाया से अछूती नही। इल्या की बाल-सुलभ बातों मे उसके शब्दो की गूंज मिलती है और निकीता पर तो मानो उसने जादू कर रखा है।

"यह भी क्या सान्त्वना देनेवाला है!" उसने निकीता के विषय मे सोचा। "लेकिन सीधा-सादा बढ़ई सेराफीम सान्त्वना देना जानता है।"

उसे नीद नही आयी। मच्छर काट रहे थे। पास के कमरे से बात-चीत की आवाज़ आ रही थी। प्योत्र को लगा कि नानबाई मुरज़िन, लंगड़ा व्यापारी और हिजड़े-सा दिखायी देनेवाला आदमी – ये तीनों बातें कर रहे हैं।

"ज़रूर ही सबके सब पी रहे हैं।"

मठ का चौकीदार कभी-कभी लोहे का टुकड़ा बजाता। फिर अचानक प्रातःकालीन प्रार्थना की घंटिया बजने लगी और इन्ही की गूज के साथ प्योत्र की आख लग गयी।

सबेरे उसने देखा कि उसका भाई सामने खड़ा है। ठीक वैसा ही जैसा प्योत्र ने उसे कल बगीचे में देखा था। आंखो में अब भी वही शत्रुता का भाव झलक रहा था। प्योत्र ने जल्दी-जल्दी हाथ-मुह धोकर कपड़े बदले और निकीता के महायक को निकटतम घोडा-बदल-चौकी तक जाने के लिये बग्घी लाने का आदेश दिया।

"इतनी जल्दी क्यों?" भिक्षु ने विशेष आश्चर्य प्रकट किये बिना ही पूछा। "मैंने तो सोचा था कि तुम कुछ दिन यहा ठहरोगे।"

"बहुत-सा ज़रूरी काम निबटाना है।"

वे चाय पीने बैठ गये। बड़ी देर तक प्योत्र को अपने भाई मे कहने के लिये कुछ न सूझा। अन्त में याद आने पर वह बोला –

"तो तुम इस मठ को छोड़ देने की सोच रहे हो?"

"मेरी तो इच्छा है। पर ये लोग मुझे नही जाने देते।"

"उन्हें क्या मतलब है?"

"मेरे रहने में उन्हें लाभ होता है। मै उनके लिये काफ़ी उपयोगी हू।"

"समझा। तुम कहां जाना चाहते हो?"

"शायद यात्रा करता फिरू।"

"अपनी बीमार टागों से?"

"लोग तो टागों के बिना भी घूमते-फिरते है।"

"हा, यह सही है, घूमते है," प्योत्र ने स्वीकार किया।

कुछ देर तक खामोशी रही। फिर निकीता बोला –

"तीख़ोन से मेरा प्रणाम कहना।"

"और किससे?"

"सभी से।"

"ज़रूर कह दूंगा। लेकिन तुमने यह नही पूछा कि अल्योशा कैसा है?"

"इसमें पूछने की बात ही क्या है? मुझे मालूम है कि उसे ख़ूब ज़िन्दगी बसर करना आता है। मैं शायद जल्दी ही यहां से चलता बनूं।"

"सरदियों में तो तुम कहीं नही जा सकोगे।"

"क्यों नही? लोग सरदियो में भी तो आते-जाते है।"

"हा, हां, यह भी ठीक है," प्योत्र ने पुन. स्वीकार किया। उसने अपने भाई को कुछ रक़म देनी चाही।

"अच्छी बात है। इससे आटे की चक्की की मरम्मत हो जायेगी। क्या बडे पादरी से नही मिलोगे?"

"नही, अब समय नही है। बग्घी आ गयी है।"

विदा होते समय दोनो भाई गले मिले। निकीता को गले लगाना असुविधाजनक था। उसने अपने भाई को दुआ नही दी। उसका दाहिना हाथ लबादे की आस्तीन में फंस गया था और प्योत्र को लगा कि जैसे यह जानबूझकर किया गया था। उसका कूबड़ प्योत्र के पेट मे लग रहा था। निकीता ने निर्विकार भाव मे याचना की—

"कल मेरे मुंह से अगर कोई ऐसी बात निकल गयी हो, जो नही कहनी चाहिये, तो क्षमा करना।"

"यह तुम क्या कर रहे हो! हम दोनो भाई हैं।"

"रात-रात भर सोचते रहते हो, रात-रात भर "

"हा, हा! अच्छा, नमस्कार .."

मठ के फाटक से बाहर निकलकर प्योत्र ने पीछे मुड़कर देखा। अतिथि-गृह की सफ़ेद दीवार के सामने उसके भाई की आकृति एक शिलाखण्ड की तरह अंकित थी।

"नमस्कार," वह बुदबुदाया और उसने टोपी उतार ली। उसका नगा सिर क्षण भर में ही मेह की फुहारों से भीग गया। सड़क चीड के जगल के बीच से जाती थी। चारों ओर निस्तब्धता छाई थी, केवल चीड़ वृक्षों की नुकीली पत्तियां ही वर्षा की बूंदों से बज उठती थीं। कोचवान की सीट पर एक भिक्षु बैठा ऊपर-नीचे झटके खा रहा था। घोड़ा बादामी रंग का था जिसके कानो पर बाल नही थे।

"लोग कैसी-कैसी बातें करते है!" प्योत्र सोच रहा था। "भगवान

ग़लत समय पर मेह् बरसाता है। यह सब बातें मन में भरे द्वेष तथा ईर्ष्या और शरीर की विकृति के कारण दिमाग़ में चक्कर काटती हैं। यह काहिली और बेफ़िक्री की ज़िन्दगी का नतीजा है। चिन्ताओं के बिना एक आदमी की ज़िन्दगी स्वामीहीन कुत्ते के समान होती है।"

ठड से कांपते हुए प्योत्र ने पीछे मुड़कर देखा। उसे लगा कि यह वर्षा तो वास्तव में असमय ही हो रही है। उसके अवसाद-भरे विचारो ने उसे पुनः जैसे घने बादलो से ढंक दिया। उनसे पिण्ड छुड़ाने के लिये वह हर घोडा-बदल-चौकी पर वोदका पीता गया।

सन्ध्या के समय जब धुंध मे लिपटा नगर दिखायी देने लगा, तब फक-फक करती हुई रेलगाड़ी सड़क को बीच मे काटती हुई जा रही थी। इजन ने सीटी दी, एक फूत्कार के साथ भाप उगली और खोह के अर्द्ध वृत्ताकार मुख में घुसकर एक क्षण मे ही पृथ्वी के गर्भ मे अन्तर्धान हो गया।

३

मेले मे बिताये उच्छृंखल दिनो की याद करते ही प्योत्र को अत्यधिक अचम्भा, लगभग भय की अनुभूति हुई। उसे विश्वास ही न आया कि स्मृति ने जिन घटनाओं को पुन ताज़ा कर दिया है, वे सचमुच हुई भी थी, कि पागलों जैसे अन्य लोगों की तरह वह भी मदिरा के उन्माद और आत्म-पीडा मे सभी हृदयविदारक करुण चीत्कारो के साथ पत्थर की विशाल नाद के गिर्द होनेवाले शोर-गुल, आह्लादपूर्ण सगीत, चीख़-पुकार और गायन में सम्मिलित हुआ था। इन सब लोगों को फ़ॉक-कोट और टोप पहने, घुघराले बालोंवाले एक भीमकाय आदमी ने, जिसके खूब कसकर हजामत करने के कारण नीले, सफ़ाचट चेहरे पर उल्लू जैसी गोल आंखे बाहर को निकली पड़ती थी, उत्तेजित और प्रेरित कर दिया था। वह आदमी अपने होंठ चाटते हुए अर्तामोनोव को भुजाओ में बाधकर चिल्लाया था—

"अरे मूर्ख, खामोश रह! रूस का बपतिस्मा, समझे? वोल्गा और ओका के तट पर होनेवाला रूस का वार्षिक बपतिस्मा!"

उसकी मुखाकृति एक बावर्ची जैसी थी और वह उन मशाल लिये

लोगों की सी पोशाक पहने था, जिन्हें धनी लोग क़ब्र तक जनाज़े के साथ चलने के लिये भाड़े पर बुलाया करते है। प्योत्र को इस व्यक्ति से कुश्ती लडने की धुंधली-सी स्मृति रह गयी थी। कुश्ती के बाद दोनों ने आइसक्रीम में ब्रांडी मिलाकर पी थी और इस आदमी ने ज़ोरों से सुबककर कहा था –

"रूसी आत्मा का चीत्कार समझो! मेरा बाप पादरी था और मैं एक लफ़ंगा हू!"

उसकी आवाज़ भारी-भरकम, ऊंची, किंतु मधुर थी। उसने अनसुने-अनजाने शब्दो की झड़ी लगाकर सब पर सम्मोहन-सा कर दिया था और उसके शब्द आत्मा को विचलित कर अपने बस मे कर लेते थे।

"शरीर का भ्रष्टाचार!" वह गरजा। "शैतान से युद्ध! उसे, सूअर को, उसका गन्दा खिराज दे दो! शरीर के विद्रोह को दबा दो, प्योत्र! अगर तुम पाप न करोगे तो पश्चात्ताप नही कर सकोगे और अगर पश्चात्ताप न करोगे तो तुम्हारी आत्मा का उद्धार नही हो सकेगा। अपनी आत्मा को धोकर साफ़ करो! अपने शरीरो को धोने के लिये हम गुसलख़ाने मे जाते है। मगर आत्मा? आत्मा भी ग़ुसल के लिये चीत्कार कर रही है। रूसी आत्मा को विस्तार दो, इस सगीत-मयी, पुनीत और महान आत्मा को!"

इन शब्दो से द्रवित होकर प्योत्र भी रोया और बुदबुदाया –

"हमारी आत्मा, वह तो अनाथ है, जैसे कही पडी पायी हुई विस्मृत और उपेक्षित।"

और सभी उपस्थित लोग चिल्ला उठे –

"बिल्कुल ठीक! सच है!"

लाल दाढीवाला एक गोल-मटोल और फुर्तीला गजा आदमी, जिसके गाल और कान लाल हो रहे थे, एक लट्टू की तरह चारों ओर घूमता हुआ चीखकर कह रहा था –

"स्तेपान, यह सच है! मैं तुम पर मुग्ध हूं। तुम पर मरता हूं। तीन चीज़ों को – तुम्हें, अचार और सत्य को अपनी जान से भी ज़्यादा प्यार करता हू। आत्मा सम्बन्धी सत्य को!"

और फिर वह भी रोते हुए गाने लगा –

मौत से ही मौत को जीत कर।

प्योत्र ने मूर्ख अन्तोनुश्का के शब्द गुनगुनाकर उसका साथ दिया –

"गाडी का पहिया खो गया, खो गया।"

उसे भी लगा जैसे वह भी उस काले बालोंवाले स्तेपान से प्रेम करता है और उसने एकाग्र मन से उसके चीख़ने को सुना और यद्यपि उसके असाधारण शब्द कभी-कभी डरावने लगते, फिर भी अधिक शब्द ऐसे थे जिनसे उसका हृदय मधुरता से भर उठता था। ऐमा लगता था कि अंधेरे और शोर-गुल से भरी जगह को एक द्वार खोलकर उल्लासपूर्ण शान्ति में बदल दिया गया हो। मबसे अधिक उसे "संगीतमयी आत्मा" शब्द पसन्द आये। इनमें कुछ बहुत ही ठीक और मन को व्यथित करने-वाली चीज़ थी और वे इस तरह के दृश्य की याद दिलाते थे – द्र्योमोव की एक गन्दी गली मे उमस से भरे दिन एक लम्बा, सफ़ेद दाढ़ीवाला, मौत के पंजर जैसा बूढ़ा आदमी खड़ा है। वह थका-थका-सा बाजे का हत्था घुमाता है और उसके सामने मिचुड़े हुए नीले कपडे पहने बारह-तेरह वर्ष की एक बालिका ऊपर को मुंह उठाये और आंखे बद किये दर्द-भरे स्वर में गा रही है –

चाहता कुछ भी नही अब जिदगी मे
चाहता हू मुक्त होना, चैन पाना

उस नन्ही बालिका की याद ने प्योत्र को उस लाल कानोवाले आदमी से कहने को विवश कर दिया –

"संगीतमयी आत्मा! उसने यह बात बिल्कुल सही कही है!"

"किमने, स्तेपान ने?" लाल दाढीवाले ने शोर मचाते हुए पूछा। "स्तेपान सब कुछ जानता है! उसके पास हम मब की आत्माओ की कुंजियां है!"

उसकी उत्तेजना बढती जा रही थी। उसने चिल्लाकर कहा –

"मानवजाति के मित्र स्तेपान, आओ! वकील पारादीज़ोव, हमें विषमता की गुफा में ले चलो! सब कुछ सम्भव है..."

मानवजाति का मित्र उद्योगपतियों की इस पियक्कड़ मडली का प्रेरक और निर्देशक था। उसके साथ दर्जनो लोग झूमते हुए चलते, खूब ज़ोर से संगीत और गीत गूंजते। कभी रुलानेवाले निराशा-भरे गीत और कभी हंसी से लोट-पोट कर देनेवाले उल्लास-भरे, जिनकी

लय पर लोग पागल होकर नाचते। लेकिन प्योत्र की स्मृति में बड़े ढोल की नीरस ढम-ढम ध्वनि और बांसुरी की दुर्दमनीय स्वरलहरी के अतिरिक्त और कुछ नहीं रह गया था। नैराश्यपूर्ण गीतों के धीमे स्वर को सुनकर प्योत्र को लगता कि घटिया रेस्तरानों की दीवारों की ईंटें सिकुड़ रही है और उसका दम घुटने लगता। उल्लासपूर्ण गीत के साथ जब भड़कीले कपड़े पहनकर नर्तक उछल-कूद मचाते तो ऐसा लगता, मानो किसी अज्ञात हवा के झोंके दीवारों को धक्का देकर बाहर की ओर को सरका रहे हैं। एक मनोदशा से दूसरी मनोदशा के बीच झटके खाते हुए, निराशा से उल्लास के गर्त में गिरते हुए अर्तामोनोव कभी-कभी भावावेश से पागल हो जाता। उसका मन कोई असाधारण और स्तम्भित कर देनेवाला कार्य करने के लिये तडप उठता। उसकी इच्छा होती कि किसी की हत्या कर डाले और उसके बाद घुटने टेककर सब लोगो के सामने कहे –

"मुझे अपराधी घोषित करो, भयानक दड दो!"

ये एक विचित्र ढग के छोटे-से रेस्तरां 'चक्र' मे बैठे थे। उसका फर्श घूमता रहता था। मेज़-कुर्सियो, नौकरों-चाकरो तथा पंखोंवाले तकिये की तरह मेहमानों से खचाखच भरे इस रेस्तरा में सभी धीरे-धीरे चक्कर खाते रहते थे। सिर्फ़ इसके कोने ही गतिहीन थे। हर समय शोर-गुल मचा रहता। फ़र्श के घूमते ही क्रमशः पहले कोने में बाजेवालों की मडली, दूसरे में गानेवाले, बालो में फूल लगाये सतरंगी नर्तकिया, तीसरे मे शराब की बोतलों और प्लेटो से भरी आलमारिया दिखायी देती, चौथे कोने में आने-जाने का दरवाज़ा था, जहा हर समय धक्कम-धक्का होता रहता। दरवाज़े से लोग अंदर घुसते थे और चक्करदार फर्श पर खडे होकर पागलो जैसा अट्टहास करते, लड़खड़ाते और ग़ायब हो जाते थे।

मानवजाति के मित्र स्तेपान ने प्योत्र को समझाया –

"मूर्खतापूर्ण चीज़ है, लेकिन निराली है! यह फ़र्श नीचे से लकड़ी की थूनियों पर वैसे ही टिका है, जैसे कोई फैली उंगलियों पर तश्तरी को थाम ले। यह थूनिया बीच के एक ही मोटे-से खम्भे के निचले भाग से शाखो की तरह चारों ओर को फूटती है। नीचे उस खम्भे में लकड़ी के दो धुरे लगे हुए है, जिनमें घोड़े जोते जाते है। ये घोड़े गोल दायरे में चक्कर काटते रहते हैं और बड़ा खम्भा अपनी कीली पर लगातार

घूमता रहता है, जिससे ऊपर का फ़र्श भी घूमता जाता है। है न सीधी-सादी तरकीब! लेकिन इसका भी अपना अर्थ है। प्योत्र, याद रखो, हर चीज़ का अपना अर्थ होता है!"

उमने ऊपर की ओर इशारा किया और उसकी उगली पर भेड़िये की आंख की तरह हरे रंग का एक नग चमक उठा। चौडी छाती और कुत्ते जैसे मुखवाले एक व्यापारी ने अर्तामोनोव की आस्तीन थाम ली और एक मुर्दे की सी पथराई आखो से उसकी ओर घूरने लगा। बहरे आदमी की तरह ऊचे स्वर मे चिल्लाकर उसने पूछा –

"दून्या क्या कहेगी, ऐं? तुम कौन हो?"

उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही उसने मुड़कर किसी और को जा पकडा और उससे भी पूछा –

"तुम कौन हो? दून्या से मैं क्या कहूं? ऐ?"

फिर कुर्सी की टेक पर पीछे को गिरते हुए बड़बडाया –

"उफ, शैतान!"

और ज़ोर से चिल्लाकर बोला –

"चलो, और किमी जगह चले!"

फिर वह एक गाड़ी मे कोचवान की जगह बैठ गया। उममें दो भूरे घोडे जुते थे। यह व्यक्ति मड़क पर चलनेवाले राहगीरो से गरजते हुए चिल्ला-चिल्लाकर कहता जाता –

"हम सब पाउला के यहा जा रहे है! आओ, हमारे माथ चलो!"

वर्षा हो रही थी। गाडी में पाच व्यक्ति थे। उनमे से एक अर्तामोनोव के पांवो पर लेटा बडबड़ा रहा था –

"उमने मुझे उल्लू बनाया, मैं उमको उल्लू बनाऊगा। उमने मुझे – मैं उमे .."

एक पहाडी के नीचे चौराहे पर, जो एक विशाल गोल रोटी जैसा दीखता था, घोड़ागाड़ी उलट गयी। प्योत्र के मिर और कोहनी पर चोट आ गयी। गीली दूब पर बैठकर वह लाल दाढी और कानोवाले आदमी की ओर देखता रहा, जो पहाड़ी पर पास की ममजिद की दिशा मे बढ़ता हुआ चिल्लाता जा रहा था –

"दूर हटो! मैं तातार बनना चाहता हू! मैं मुहम्मद बनना चाहता हूं! मुझे जाने दो!"

काले बालोंवाले स्तेपान ने टांगें पकड़कर उसे पहाड़ी के नीचे खीच

लिया और उसे कही ले गया। ईरानी, तातार, बुखारावासी सबके सब दुकानों और सराय से उठकर दौड़े आये। पीला चोग़ा पहने और हरी पगड़ी बाधे एक बूढ़े ने प्योत्र पर अपना डंडा घुमाते हुए कहा –

"रूसी, शैतान .."

ताम्रवर्णी चेहरेवाले पुलिस के एक सिपाही ने प्योत्र को उठाकर खड़ा करते हुए कहा –

"शोर करना मना है, जनाब।"

घोड़ागाडिया आ गयी। और नशे मे चूर लोगो को उठाकर उनमें डाल दिया गया और वे चलती बनी। मानवजाति का मित्र सबसे अगली गाडी में खडा अपनी मुट्ठी बांधे कुछ चिल्लाता रहा, जैसे वह भोपू हो। वर्षा थम गयी थी, लेकिन आकाश पहले की तरह काले मेघो से घिरा रहा और उसके तेवर बिगडे हुए थे। अधेरे की दीवार मे आग की दरारे डालती हुई बिजली सराय की विशाल इमारत के ऊपर ज़ोर से चमकी। बेताकूर नहर के काठ के पुल पर जब घोडो के सुम एक पोली ध्वनि से बजने लगे तो अर्तामोनोव का हृदय भय से काप उठा। उसे लगा कि पुल टूट जायेगा और वे सब नीचे के स्थिर, अविचल, काले पानी में डूबकर मर जायेगे।

इन दृश्यों की सपनो की सी उखड़ी-उखड़ी याद में अर्तामोनोव ने शराब के नशे मे चूर इन लोगो के बीच अपने को एक नितान्त अपरिचित और अजनबी के रूप मे अनुभव किया। यह अजनबी यानी वह खुद पागलो की तरह शराब पीता था और रह-रहकर यह आशा करता था कि बस अगले ही क्षण कोई असाधारण, उसके जीवन मे सबसे विलक्षण, सबसे आश्चर्यजनक घटना हो जायेगी और वह या तो निराशा और अवसाद के अतल गर्त मे गिर जायेगा या फिर सदा के लिये आनन्द और सुख के सीमाहीन, उत्तुंग शिखरो पर उठता चला जायेगा।

चौंधियाने और रोंगटे खडी करनेवाली स्मृति तो पाउला मेनोत्ती की थी। उसने उसे एक बड़े ख़ाली कमरे में देखा था जिसकी दीवारो पर परदे या तस्वीरे कुछ भी नही थे। कमरे का एक तिहाई हिस्सा एक विशाल मेज़ ने घेर रखा था, जिस पर बोतलें, तरह-तरह के रंगों के जाम और काच के गिलास, फलों से भरे कटोरे और फूलो के गुलदस्ते, और केवियर तथा शेम्पेन से भरे चादी के बर्तन रखे थे। लाल बालोवाले, गंजे सिरवाले, सफ़ेद बालोंवाले दस-बारह आदमी मेज़ के चारों ओर

बैठे उद्विग्न हो रहे थे। कई कुर्सियां अभी भी खाली पड़ी थी जिनमें से एक फूलों से सजी थी।

कमरे के मध्य में खड़े होकर काले बालोंवाला स्तेपान एक मोमबत्ती की तरह अपनी सोने की मूठवाली छड़ी उठाकर चिल्लाया –

"अरे सूअरो! अभी भोजन पर नही टूट पड़ो!"

किसी ने रूखे ढंग से कहा –

"भूंकना बंद करो।"

"चुप रहो!" मानवजाति के मित्र ने डाटा। "यहा का मालिक मैं हूं!"

और न जाने कैसे अचानक कमरे में अंधेरा-सा छा गया। बाहर से ढोल बजने की धीमी-धीमी आवाज़ आने लगी और स्तेपान ने दरवाज़ा खोल दिया। एक मोटा-सा आदमी पेट पर ढोल बाधे अन्दर दाखिल हुआ। वह लड़खड़ाती हंस-चाल से क़दम उठाता आया और अपने ढोल को पूरे ज़ोर से पीटने लगा –

"ढम-ढमा-ढम .. "

फिर पांच आदमी और दाख़िल हुए। वे भी उतने ही गम्भीर और शालीन दीख रहे थे। जुते हुए घोडों की तरह कमर से दुहरे होते हुए वे तौलियों मे पाये बांधकर एक बड़े पियानो को खीचकर अन्दर लाये। पियानो के चमकते हुए काले ढक्कन पर एक नंगी स्त्री लेटी थी। वह इतनी गोरी-चिट्टी थी कि देखकर आंखें चकाचौंध हो जाती थीं और वह अपनी नग्नता की निर्लज्जता में भयावह दीख रही थी। वह बाहों का तकिया लगाये और उरोज उभारे चित लेटी थी। उसके खुले, घने, काले केश पियानो के चमकते काले ढक्कन पर फैले हुए थे, जैसे काली पालिश का अंग बन गये हों। वह जैसे-जैसे निकट आती गयी, उसके शरीर की गोलाई की रेखाएं वैसे-वैसे उभरती गयी और हरेक की विस्फारित आंखें उतनी ही एकाग्रता से उसकी बग़ल और पेट के नीचे के बालों के गुच्छों पर गड़ती गयी।

पियानो के तांबे के पहिये जैसे पीड़ा से कराहे और कमरे का फ़र्श चरमराया। ढोल और भी ज़ोर से ढमाढम बजने लगा। इस विशाल रथ से जुते हुए आदमी रुके और अपनी कमर सीधी करके खड़े हो गये। अर्तामोनोव को आशा थी कि सब लोग एकसाथ हंस पड़ेंगे। शायद ऐसा होने से यह सब कुछ समझने में आसानी होती। लेकिन मेज़ के

निकट बैठे सारे लोग चुपचाप उठकर खड़े हो गये और उस स्त्री को एक सुस्त अन्दाज़ में उठते और पियानो के ढक्कन से अलग होते हुए एकटक देखते रहे। ऐसा लगता था जैसे वह अभी जागी हो और रात्रि का एक अंश मानो पत्थर की तरह जमकर अभी भी उसके नीचे पड़ा हो। सारा दृश्य परियों की कहानी-सा था। खड़े होकर उस स्त्री ने अपने लम्बे काले बालों को सिर फटकारकर अपने कन्धों के पीछे फेंक दिया और अपने पाव से ठोकर मारकर ढक्कन की चमकदार कालिमा के जैसे अभ्यन्तर तक को कंपा दिया। ढक्कन पर उसके पांवों के पड़ने के साथ-साथ पियानो के तार झनझना उठते।

दो और व्यक्ति अन्दर आये — चश्मा लगाये सफ़ेद बालोंवाली एक बूढ़ी औरत और फ़ॉक-कोट पहने एक पुरुष। बुढ़िया बैठकर पियानो के हाथी-दात से मढे काले और सफेद परदो के हिलने के साथ-साथ अपने पीले दांत निपोरने लगी। पुरुष ने वायोलिन उठाकर कन्धे से लगायी, एक ललछौंही आंख इस तरह मीची जैसे निशाना लगा रहा हो और तार पर कमानी चलाने लगा और वायोलिन का कोमल स्वर पियानो की ध्वनि में मिलाने लगा। नगी स्त्री लहराती, बल खाती हुई सीधी खड़ी हो गयी। उसने अपना सिर झटकारा और बाल उसके उन्नत उरोजो को ढंकते हुए आगे आ पड़े। हिलती हुई नकियाती आवाज़ में वह धीरे-धीरे गाने लगी। उसका धीमा स्वर जैसे स्वप्निल और उदासीन-सा था।

वे सब मुंह उठाये चुपचाप बैठे उसे देखते रहे। सभी की एक-जैसी मुख-मुद्रा थी। उनकी आंखे मानो अंधी लगती थी। वह स्त्री अनिच्छा-पूर्वक गा रही थी, जैसे अभी आधी नीद में हो। उसके भरे होठ उन शब्दो का उच्चारण कर रहे थे, जो किसी की समझ मे न आते थे। उसकी धुंधली-सी आखें लोगों के सिरों के ऊपर लगी हुई थी। अर्तामोनोव ने कभी कल्पना भी न की थी कि एक स्त्री के शरीर की गठन इतनी सुकुमार, सुन्दर, इतनी आकर्षक और मनोहर भी हो सकती है। अपने सिर को लगातार झटकारते हुए वह उरोजो और नितम्बों पर हाथ फेरती रही। ऐसे लगा कि उसके केश बढ़ते जा रहे हैं, वह समूची बढ़ती जा रही है, यहा तक कि और सब वस्तुएं आंख से ओझल होती जा रही हैं और दृष्टि के ओर-छोर में केवल वही व्याप्त है, जैसे उसके अतिरिक्त और किसी का अस्तित्व ही नहीं रहा। अर्तामोनोव

को स्पष्ट याद आया कि उसके मन में उस स्त्री ने एक क्षण के लिये भी तो उसे प्राप्त करने की वासना नहीं जगायी थी। उसको देखकर मन में केवल भय ही उठा था और उसने हृदय में एक पीड़ाजनक घुटन-सी अनुभव की थी। उससे छलना और जादूगरनी की भयावहता ही टपकती थी। पर साथ ही उसे लगा कि यह स्त्री अगर कहे तो वह उसके पीछे-पीछे कहीं भी चला जायेगा, वह जो चाहेगी उसके लिये करेगा। दूसरों की ओर देखकर उसे इस बात पर और भी दृढ़ विश्वास हो गया था।

"ये सभी ऐसा ही करेंगे।"

उसका नशा उतर रहा था और उसकी इच्छा हुई कि वह उठकर चुपचाप वहा से चलता बने – यह इच्छा उस समय एक दृढ़ निश्चय के रूप में परिणत हो गयी, जब किसी ने ज़ोर से फुसफुसाकर कहा –

"चारूसा! क़ुदरत का जाल! समझे! चारूसा।"

चारूसा – अर्तामोनोव को इसका अर्थ मालूम था – एक दलदली या धंसाऊ जंगल में हरा-भरा मनोरम स्थान, ऐसा स्थान जहां की घास विशेष रूप से सुन्दर और मुलायम होती है, परन्तु उस पर जिसका भी पांव पडता है, उसे अतल दलदल अपने भीतर सोख लेती है। किन्तु फिर भी वह उस स्त्री की जादू-भरी नग्नता की दुर्जेय शक्ति से अवसन्न हो मंत्रमुग्ध-सा उसे देखता रहा था और जब कभी उसकी धुंधली-सी आंखों की बोझिल दृष्टि उस पर पडती तो उस समय वह उद्विग्नतापूर्वक अपने कन्धों और गर्दन को मोड़कर अपने मुख को दूसरी दिशा में फेरने लगता। तब उसे दूसरों के चेहरे दिखायी देते – भयानक, शराब में आधे चूर चेहरे, जो भौचक्के होकर विमूढ़ भाव से नग्न स्त्री की ओर आंखें फाड़-फाडकर घूर रहे थे। द्रयोमोव के नगरवासी भी एक दिन इसी तरह आंखे फाड़-फाड़कर देखते रहे थे, जब एक रंगसाज़ गिरजे की छत से गिरकर मर गया था।

काले, घुंघराले बालोवाला स्तेपान खिड़की के दासे पर बैठा था। उसके मोटे होंठ खुले हुए थे और वह अपने कांपते हाथों से माथा रगड रहा था। उसे देखकर लगता था जैसे वह अगले ही क्षण सिर के बल फ़र्श पर गिर पड़ेगा। उसकी आस्तीन का एक कफ़ लटक रहा था। न जाने क्यों, उसने अचानक वह कफ़ फाड़कर एक कोने में फेंक दिया।

उस स्त्री के अंग-संचालन की गति अधिक तीव्र होती गयी। वह

अपने शरीर को ऐसे मरोड़ और ऐंठ रही थी मानो पियानो से कूद पड़ना चाहती हो, पर किसी कारण कूद न पाती हो। उसकी घुटी-घुटी चिल्लाहट सानुनासिक हो गयी और उसका स्वर और भी तीक्ष्ण होता गया। उसकी टांगों की लहरियादार भंगिमा, सिर की तीखी झटकार और उसके घने बालों का पंखों की तरह कंधों पर से तिरकर उरोजों और पीठ पर किसी जानवर की खाल के समान गिरने का दृश्य रोंगटे खड़े कर देता था।

संगीत अचानक बंद हो गया और स्त्री फ़र्श पर कूद गयी। काले बालोंवाले स्तेपान ने जल्दी से उसे एक सुनहरा लबादा ओढ़ा दिया और वह उसे कमरे से बाहर खींच ले गया। लोग ज़ोर-ज़ोर से चीखने-चिल्लाने और तालियां पीटने लगे और शोर-शराबा शुरू हो गया। कफ़न जैसे सफ़ेद लबादों से ढंके नौकर दौड़-धूप करने लगे। जामों की खनक सुनायी देने लगी। सभी लोग जैसे गरमी और उमस के दिन की प्यास से शराब पीने लगे। वे सभी भद्दे और बेहूदा ढंग से खा-पी रहे थे। मेज़ पर झुके हुए उनके सिरों को देखकर उबकाई-सी आती थी, ऐसे लगता था मानो सूअर अपनी नांद में थूथन गडाये हों।

जिप्सियों का एक दल यहां आ गया। उनके नाच-गानों से ये लोग खीझ उठे और उन पर खीरे और नेपकिन फेंकने लगे जिससे वे चलते बने। उनके स्थान पर स्तेपान शोर-गुल मचाती हुई औरतों के एक झुंड को हांकता हुआ लाया। इनमें नाटे क़द की एक गोल-मटोल लड़की, जो लाल पोशाक पहने थी, प्योत्र के घुटनों पर आ बैठी और अपने शेम्पेन के गिलास को उसके गिलास के साथ खनकाकर ज़ोर से चिल्ला-यी –

"लाल बालोंवाले, आओ, मीत्या की सेहत के लिये पियें!"

वह एक तितली की तरह हल्की-फुल्की थी और उसका नाम पशूता था। उसने बड़े सुंदर ढंग से गिटार बजाते हुए मार्मिक स्वर में गाना शुरू किया –

निर्मल, नीला भोर – मुझे आया सपना

और फिर उसकी स्पष्ट कंठध्वनि इस पंक्ति को गाकर करुणा-सिक्त हो गयी:

कभी न लौटे वह यौवन बीता अपना।

अर्तामोनोव ने उसे सान्त्वना देने के लिये उसके सिर को मित्र और पिता के ढंग से थपथपाया –

"ऐसे ठुनको नही। तुम तो अभी जवान हो... कुछ फ़िक्र नहीं करो..."

रात को उसे अपने आलिंगन में बांधते हुए वह ज़ोर से अपनी आंखें मूंद लेता ताकि उस पाउला मिनोत्ती को अपने स्मृति-पटल पर देख सके।

नशे के बिना विरले क्षणों में उसने आश्चर्यचकित होते हुए अनुभव किया कि यह कमबख़्त पशुता तो उसे बहुत ही अधिक महंगी पड़ी है और उसने मन ही मन सोचा –

"वाह, री, तितली!"

मेले में ये औरतें पुरुषों की जेब से कितनी होशियारी से ढेर के ढेर पैसे निकाल लेती है और शराब और व्यभिचार की अपनी कमाई को ये औरतें पानी की तरह लुटाती हैं, यह बात उसे आश्चर्यजनक लगी। किसी ने उसे बताया था कि उस कुत्ते जैसे मुहवाले समूर के बड़े व्यापारी ने पाउला मिनोत्ती पर दसियो हज़ार रूबल ख़र्च कर दिये थे – उसके प्रत्येक नग्न प्रदर्शन के लिये वह उसे तीन हजार रूबल देता है। लाल कानोंवाले व्यक्ति ने तो अपना सिगार जलाने के लिये मोमबत्ती की लौ में सौ रूबल का नोट लगा दिया था और स्त्रियो की चोलियों में नोटों की भारी-भारी गड्डियां खोंस दी थी।

"ले लो, जर्मन, मेरे पास बहुत हैं।"

वह हर औरत को "जर्मन" कहकर पुकारता था। अर्तामोनोव को हर स्त्री में घने बालोंवाली पाउला मिनोत्ती की नग्न निर्लज्जता ही दिखायी देने लगी थी। उसे लगा कि हर औरत, वह चाहे चालाक हो या मूर्ख, घुन्नी या उद्दंड, उसे शत्रु भाव से ही देखती है। उसे स्मरण हो आया कि उसकी पत्नी में भी उसके प्रति इस प्रकार की एक दबी हुई वैमनस्य भावना है।

"तितलियां!" उसने सोचा, और उसकी स्मृति में जवान और युवा स्त्रियों के दल का चित्र साफ़ उभर आया।

इस सबका क्या अर्थ है, यह उसकी समझ में न आ सका। ऐसा क्यों होता है? अपने व्यापार या काम की बेड़ियों में बंधकर केवल धन कमाने, अधिक से अधिक धन कमाने के उद्देश्य से लोग जी तोड़

परिश्रम करते हैं और फिर उस धन को जला देते हैं, व्यभिचारिणी औरतों के चरणों में उसे मुट्ठियां भर-भरकर फेंक देते हैं। और ये सब बड़े लोग है, समाज में उनका ऊंचा दर्जा है, वे पति और पिता हैं, बड़े-बड़े कारखानों और मिलों के मालिक हैं।

"पिता यदि जीवित होते तो शायद वह ऐसा ही करते," उसने लगभग पूरे विश्वास से सोचा। स्वयं अपने को वह इस प्रकार के जीवन, इस शराबखोरी और कामुक-प्रदर्शनों मे सक्रिय भाग लेनेवाले के रूप में न देखता था, बल्कि सोचता था कि वह तो मात्र एक तटस्थ द्रष्टा है, जो संयोगवश यहा आ फंसा है। किंतु ये विचार उसे शराब से भी ज्यादा नशीला कर देते थे और शराब ही उनके नशे को उतार सकती थी। वह तीन सप्ताह तक शराबखोरी के दु:स्वप्न में डूबा रहा। और अल्योशा के आने पर ही होश में आया।

प्योत्र अर्तामोनोव फ़र्श पर बिछी एक पतली, पत्थर-सी सख्त चटाई पर पडा था। उसके पास बर्फ़ से भरी एक बालटी, क्वास पेय की कुछ बोतले, कद्दूकश की गयी अश्वमूलावाली अचारी बन्दगोभी से भरी एक तश्तरी रखी थी। सोफे पर नतालिया की तरह भौंहें उठाये और मुंह खोले पशूता लेटी थी। एक सफ़ेद टाग, जिसमें नीली शिराएं थी और अंगूठे के नाखून मछली के सुफ़नो की तरह चमकदार थे, सोफ़े की एक बग़ल मे नीचे लटक रही थी। खिड़की से बाहर अपने चिर अतृप्त कठों से अखिल रूसी मेला गरज रहा था।

शराब के कारण सिर में होती हुई सनसनाहट और शरीर में फैले विष की पीडा में अर्तामोनोव बीती रात की घटनाओं और क्रीड़ा-कौतुकों को उदास भाव से याद कर रहा था कि अल्योशा ऐसे अचानक अन्दर दाखिल हुआ, मानो दीवार फाड़कर आ गया हो। वह लंगड़ाकर चल रहा था जिससे उसकी छडी बार-बार फ़र्श पर खट-खट करके बज उठती थी। नीचे पडे प्योत्र की ओर देखकर वह बड़बड़ाया –

"बस, देर हो गये? चित होकर पड़े हो? मैंने कल दिन भर तुम्हारी तलाश की, फिर सारी रात तुम्हें ढूंढ़ा और सुबह होते-होते मेरा भी यही हाल हो गया।"

उसने फ़ौरन एक नौकर को बुलाया और उसे लेमोनेड, ब्रांडी और बर्फ़ लाने का आदेश दिया। सोफ़े पर झपाक से बैठते हुए उसने पशूता के कन्धे पर एक थाप दी।

"उठ, जवान छोकरी!"

जवान छोकरी आंखें खोले बिना ही बड़बड़ायी–

"जहन्नुम में जाओ! मुझे मत छेड़ो।"

"जहन्नुम में तो तुम्हें जाना है," अल्योशा ने झल्लाये बिना उत्तर दिया। उसने उसके कन्धे पकड़े और उठाकर बैठा दिया। फिर उसे झकझोरकर दरवाज़े की ओर इशारा किया–

"भाग यहां से!"

"उसे मत छेड़ो," प्योत्र ने कहा। पर उसके भाई ने हंसकर आश्वासन दिया–

"कोई बात नही, जब इसे बुलायेंगे, तब फिर आ जायेगी!"

"शैतानो!" वह औरत बोली, किन्तु साथ ही वह अन्यमनस्क भाव से अपने कपड़े पहनने लग गयी।

अल्योशा बिल्कुल डाक्टर की तरह आदेश दे रहा था–

"उठो, प्योत्र! अपनी क़मीज़ उतारो और शरीर पर बर्फ़ मलो।"

पशूता ने अपनी मुड़ी-मुडायी टोपी फ़र्श पर से उठाकर अपने बिखरे हुए बालों पर रख ली। फिर भी सोफ़े के ऊपर लगे दर्पण मे अपना मुख देखते हुए उसने कहा–

"महारानी-सी सुन्दर हूं!"

और जम्हाई लेते हुए उसने टोपी उतारकर फेंक दी।

"अच्छा, नमस्कार, मीत्या! याद रखना, मैं सिमान्स्की के होटल में १३ नम्बर के कमरे में रहती हूं।"

प्योत्र को इस पर दया आयी। चटाई पर से बिना हिले-डुले ही उसने अपने भाई से कहा–

"इसे कुछ दे दो।"

"कितना?"

"कोई पचासेक।"

"यह तो बहुत ज़्यादा है।"

अल्योशा ने उस स्त्री के हाथ में कुछ रक़म ठूंस दी और उसे कमरे से बाहर कर ज़ोर से दरवाज़ा बन्द कर दिया।

"तुम बड़े कंजूस हो," प्योत्र ने ताना मारते हुए कहा। "इससे ज़्यादा तो कल उसने एक टोपी पर ही ख़र्च कर दिये थे।

अल्योशा एक आरामकुर्सी पर बैठ गया। उसके दोनों हाथ अपनी छड़ी की मूठ पर टिके थे और ठोड़ी हाथों पर थी। उसने संचालक जैसे रूखे स्वर में पूछा –

"तुम यह क्या कर रहे हो?"

"पी रहा हूं," बड़े भाई ने उत्फुल्ल मन मे कहा। वह उठ बैठा और नाक फरफराते हुए अपने शरीर पर बर्फ़ मलने लगा।

"पीओ, पर पी-पीकर अपना होश मत खोओ। और तुम क्या कर रहे हो?"

"क्या कर रहा हूं?"

अल्योशा प्योत्र के निकट चला गया और ऐमे घूरते हुए मानो वह कोई अजनबी हो, उसने कठोर स्वर में पूछा –

"तो तुम्हें याद नही? तुम पर यह अभियोग लगाया गया है कि तुमने एक वकील का मुह तोड डाला और एक पुलिमवाले को नहर में ढकेल दिया..."

अल्योशा इतनी देर तक अपराध गिनता रहा कि प्योत्र ने सोचा –

"यह झूठ बोल रहा है। मुझे डराना चाहता है।"

और उसने पूछा –

"किस वकील का? बेकार मत बको।"

"मै बेकार नही बक रहा हू। उस वकील का – उस कमबख़्त का नाम भूल रहा हूं।"

"हम दोनों में तो पहले भी कुछ हाथापाई हुई थी," प्योत्र ने होश में आते हुए कहा। लेकिन अल्योशा और भी कठोर स्वर में कहता गया –

"और तुमने सम्मानित व्यक्तियों को गालियां क्यों बकीं? यहां तक कि अपने परिवार तक को नही बख़्शा!"

"मैंने?"

"हां, तुमने! अपनी बीवी को गालियां दी, और तीख़ोन को, और मुझे भी और तुम किसी बालक के बारे में बड़बडाते हुए चिल्ला उठे थे – अब्राहम, इसाक़, मेढ़ा! इसका क्या मतलब है?"

प्योत्र पर डर हावी हो गया। वह धम से एक कुर्सी पर गिर पडा।

"मुझे नहीं मालूम। मैं नशे में था।"

"यह तो कोई सफ़ाई नही है!" अल्योशा ने वस्तुतः चिल्लाकर और ऐसे उछल-उछलकर कहा, मानो लंगड़े घोड़े पर सवार हो। "इसके पीछे कोई दूसरी बात है। आदमी होश-हवास में जो सोचता है, नशे की हालत में वही बक डालता है – इसके पीछे यही बात है। घर के मामलों के बारे में बकवाद करने के लिये शराबखाना कोई उपयुक्त स्थान नहीं है। अब्राहम, क़ुर्बानी, वग़ैरह बेहूदा बातों से तुम्हारा क्या मतलब है? इस तरह तुम हमारे व्यापार पर बुरा असर डाल रहे हो और मेरे नाम पर भी बट्टा लगाते हो। तुमने तो ग़ुसलखाने की तरह अपने को नंगा कर दिया। यह तो कहो भाग्य से मेरा दोस्त लोक्तेव वहा था। उसमें इतनी बुद्धिमानी थी कि उसने तुम्हें ब्रांडी पिला-पिलाकर बेहोश कर दिया और मुझे तुरन्त आने के लिये तार भेज दिया। यह सब बातें उसने ही बतायी हैं। उसका कहना है कि तुम्हारी अंट-संट बकवास को सुनकर पहले तो लोग हंसते रहे, लेकिन फिर ध्यान से कान लगाकर सुनने लगे – आख़िर यह आदमी किस बात के बारे में चिल्ला-चिल्लाकर बके जा रहा है?"

"सभी तो चिल्लाते हैं," प्योत्र ने हताश होकर धीमे से कहा। भाई के शब्द उसके दिमाग़ में फिर से एक नशा-सा भरते जा रहे थे, किन्तु अल्योशा कहता गया, उसका स्वर धीमा होकर अस्फुट हो गया –

"सब तो केवल एक बात के बारे में, लेकिन तुम सभी कुछ के बारे में चिल्ला रहे थे! अपने भाग्य को सराहो कि लोक्तेव में इतनी सहजबुद्धि थी कि उसने शराब का एक दौर और चलवा दिया जिससे सभी के सभी नशे मे चूर होकर गिर पड़े। हो सकता है कि वे ये सब बातें भूल जायें। पर तुम तो स्वय जानते हो कि हमारे व्यापार मे वैसा ही होता है जैसा राजनीति में। लोक्तेव आज हमारा मित्र है, पर कल कट्टर शत्रु बन सकता है।"

प्योत्र दीवार के साथ ज़ोर से अपना सिर सटाये बैठा था। वह चुप रहा। सड़क के शोर-गुल से दीवार में कम्पन हो रहा था और उसे लगा कि यह कम्पन उसके मस्तिष्क में होनेवाले नशे के गड़बड़-झाले को दबा देगा, उसके डर को दूर भगा देगा। उसके भाई ने जो बातें कही थी, उसे उनमें से एक भी तो याद नहीं थी। और अपने भाई को एक न्यायाधीश, एक बुज़ुर्ग के अन्दाज़ में बातें करते

सुनना उसे बहुत बुरा लग रहा था। न जाने वह और क्या-क्या कहेगा, इसकी कल्पना मात्र भयावह थी।

"तुम्हें हो क्या गया है?" अल्योशा ने पहले की तरह उछलते हुए ही पूछा। "तुमने तो कहा था कि तुम निकीता से मिलने जा रहे हो..."

"मैं उससे मिलने गया था।"

"मैं भी गया था। हमने जब तार भेजा और उसने उत्तर दिया कि तुम वहां हो ही नहीं, तो मैं फौरन वहां गया। सब लोग परेशान हो उठे थे। आखिर यह दुनिया कोई निरापद स्थान तो नहीं है। तुम्हारी कही हत्या ही हो जाती।"

"मेरे हृदय में कोई चीज़ बुरी तरह से कसक रही है," उसने धीमे से और जैसे क्षमा-याचना के स्वर में स्वीकार किया।

"तब तो क्या इस चीज़ को लोगों के सामने लाना ज़रूरी था? इतना तो समझो कि तुम इस तरह सारे व्यापार को हानि पहुंचा रहे हो? आखिर कैसी क़ुर्बानी के बारे में तुम बक रहे थे? तुम क्या कोई फ़ारस के हो जो छोकरों के साथ खेलते-फिरते हो? कौन-सा छोकरा है वह?"

दोनों हाथो से बालों और दाढ़ी को सहलाते हुए प्योत्र ने कहा –

"इल्या .. यह सब उसके कारण ही हुआ है..."

धीरे-धीरे, संकोचपूर्वक, मानो अंधेरे में रास्ता टटोल रहा हो, वह अल्योशा को इल्या से अपने झगडे की बात बताने लगा। उसे कुछ अधिक नही कहना पड़ा। उसका भाई चैन की सांस लेकर ज़ोर से बोल उठा –

"छिः! यह तो कोई बड़ी मुसीबत नही! और लोक्तेव ने एशिया में प्रचलित इसके गन्दे अर्थ लगाये। तो यह इल्या की बात थी? अरे भाई, माफ़ करना, पर यह तो कोई समझदारी की बात नही! व्यापारी वर्ग को तो सब कुछ सीखना चाहिये, जीवन के हर क्षेत्र में और कार्य में पारंगत होना चाहिये, लेकिन तुम तो ."

वह बड़ी देर तक और उत्साह से यह कहता रहा कि व्यापारियों के लड़कों को इंजीनियर, सरकारी कर्मचारी, फ़ौजी अफ़सर आदि सभी कुछ बनना चाहिये। खिड़की से थियेटर को जानेवाली गाड़ियों, आइसक्रीम, सोडा-शरबत बेचनेवालों और ढोल बाजों का कर्कश,

कानों को बहरा करनेवाला शोर आ रहा था। नहर के पानी में खम्भे खड़े करके ब्राज़ीलवालों द्वारा लोहे और शीशे से बनाये गये मंडप से तो विशेषतः संगीत का बहुत शोर आ रहा था। ढोल की आवाज़ से प्योत्र के मन में पाउला मिनोत्ती की याद कौंध गयी।

"मेरे हृदय में कोई चीज़ बुरी तरह कसक रही है," प्योत्र ने दुहराया और अपने कान की ललरी को ऐंठते हुए उसने अपने लेमोनेड के गिलास में ब्रांडी उंडेलने के लिये हाथ बढ़ाया। पर उसके भाई ने उसके हाथ से बोतल छीन ली—

"होश में आओ। फिर नशे में ग़र्क़ हो जाओगे। हां, तो मिरोन को ही लो—वह इंजीनियर बनना चाहता है। मैं इससे बेहद खुश हूं। वह विदेश भ्रमण के लिये जाना चाहता है—मैं इस बात से भी खुश हूं। यह सब हमारी भलाई की बात है, इसमें नुक़सान कहां है? तुम इस बात को समझो कि हमारा वर्ग एक मुख्य शक्ति है.."

प्योत्र कुछ भी नही समझना चाहता था। अपने भाई की बातें सुनता हुआ वह अपनी ही सोच रहा था कि यहां बैठे इस आदमी ने न जाने कैसे अपने से अधिक धनी, और शायद अधिक बुद्धिमान लोगो का भी आदर प्राप्त कर लिया है—ऐसे लोगों का, जो समूचे राष्ट्र के व्यापार की नकेल घुमाते है, कि उसके दूसरे भाई ने भिक्षुओं के मठ में बैठकर ज्ञानी और धर्मात्मा होने की ख्याति प्राप्त कर ली है; और वह, प्योत्र, केवल समय के क्रूर संयोगों की दया पर जीवित है। आखिर क्यो? किन पापों के कारण?

"और सम्मानित जनों पर तुमने व्यभिचारी होने का आरोप क्यों लगाया?" अल्योशा कहता गया। उसका स्वर अब पहले से नरम और अनुग्रहपूर्ण था। "यह व्यभिचार नही है, यह तो अतिरिक्त शक्ति का उच्छ्वास है। वह वकील है तो पक्का बदमाश, लेकिन चीज़ों को ठीक-ठीक देखता-समझता है, अक़्लमन्द आदमी है! निश्चय ही ये सब वयोवृद्ध लोग हैं—कुछ उनमें से बूढ़े भी है और वे छोकरों की तरह उच्छृंखल भी हो जाते है। पर, छोकरे भी अगर बेक़ाबू हो जाते है, तो इसीलिये न कि उनमें शक्ति की विपुलता होती है। फिर तुम्हे यह बात भी तो ध्यान में रखनी होगी कि हमारी औरतें नीरस हैं। उनमें चटपटा तो कुछ है ही नहीं! मैं ओलगा की बात नहीं कर रहा, वह तो भिन्न है! कुछ स्त्रियां इतने मूर्ख ढंग से बुद्धिमान होती है कि

उनके पास पाप और बुराई को देखनेवाली आंख ही नहीं होती। ओलगा उनमें से एक है। तुम उसको चोट पहुंचा ही नही सकते, वह बुराई को देखती ही नही और न किसी बुराई में विश्वास ही करती है। पर नतालिया के बारे में तुम यह बात नही कह सकते। तुमने सब लोगों के सामने उसे जो घरेलू मशीन कहकर पुकारा, वह बिल्कुल सही है।"

"क्या सचमुच मैंने यही कहा था?" प्योत्र ने उदास मन से पूछा।

"लोक्तेव ने अपने मन से तो ये शब्द गढ़े नही है।"

प्योत्र ने अपने भाई से अनेक और बातें पूछनी चाही, लेकिन इससे अल्योशा को और चीज़ो, कुछ अन्य तथ्यों की याद आ जाती जिन्हे शायद वह भूल गया था। प्योत्र के मन में अपने भाई के प्रति वैमनस्य और ईर्ष्या की भावना ने सिर उठाया।

"वह अधिकाधिक चतुर होता जाता है, शैतान .."

वह अपने भाई में घोड़े जैसी तेज़ी, चुस्ती और लोमडी जैसी चालाकी महसूस करता था। प्योत्र उसकी बाज़ जैसी पैनी दृष्टि से खीझ रहा था। उसके फड़कते हुए ऊपर के होठ के नीचे चमक रहे सोने के दात, फ़ौजी जवान की तरह ऐंठी हुई सफ़ेद मूछों, छोटी-सी साफ़ तराशी दाढ़ी और लम्बी, पतली उंगलियों को देखकर उसे चिढ़ हो रही थी। उसके दाहिने हाथ की तर्जनी से उसे विशेषकर खीझ महसूस होती थी जो वायु में लगातार मनमाने आकार बनाती जाती थी। स्लेटी रंग की छोटी-सी जैकेट पहने अल्योशा एक उद्दंड गुमाश्ता जैसा दीख रहा था।

प्योत्र की यकायक इच्छा हुई कि अल्योशा वहा से चला जाये।

"मुझे नीद आ रही है," उसने आंखें मूंदते हुए कहा।

"यह अक्ल की बात है," अल्योशा ने समर्थन करते हुए कहा। "आज तो तुम कही नही जाना।"

"मुझे नसीहत करता है, जैसे मैं कोई बालक होऊं," प्योत्र ने अल्योशा के जाने पर क्षुब्ध मन से सोचा। वह कोने में तिपाई पर रखे तसले में हाथ-मुंह धोने के लिये उठा, लेकिन अपने जैसे ही एक दूसरे आदमी की आकृति देखकर वह ज्यों का त्यों खड़ा रह गया। वह अस्त-व्यस्त बालोंवाले आदमी की आकृति थी जिसके मुख पर

भूर्रियां पड़ रही थी और आंखें डर के मारे बाहर को निकली पड़ती थीं, जो अपने लाल हाथ से अपनी गीली दाढ़ी और बालदार छाती को सहला रहा था। पहले तो प्योत्र को यह विश्वास ही नही हुआ कि सोफ़े के ऊपर लगे आईने में यह उसका ही प्रतिबिम्ब दीख रहा था। फिर एक उदास मुस्कान के साथ वह पुनः अपने मुंह, गर्दन और छाती पर बरफ़ मलने लगा।

"एक किराये की घोड़ागाड़ी लेकर शहर चला जाऊंगा," उसने निश्चय किया और अपने कपड़े बदलने लगा। लेकिन कोट की आस्तीन में बांह डालते ही उमे फिर उतारकर फेक दिया और ज़ोर से घंटी का बटन दबाया।

"चाय, खूब तेज़ लाओ!" उसने नौकर को आदेश दिया, "साथ में कुछ नमकीन और ब्रांडी भी।"

उसने खिड़की में से बाहर झांककर देखा – दुकानो के चौड़े-चौड़े दरवाज़ों में ताले पड़ चुके थे। उमस-भरे अंधेरे में लोग धीमी चाल से सड़क पर इधर-उधर आ-जा रहे थे। थियेटर के प्रवेश-द्वार पर दूधिया रोशनीवाला एक लैम्प जल रहा था। कही निकट से ही स्त्रियों के गाने की आवाज़ें आ रही थी।

"तितलियां।"

"सफ़ाई कर सकती हूं?" उसे अपने पीछे से सुनायी दिया। उसने तेज़ी से मुड़कर देखा और हाथ में सफ़ाई का ब्रुश और झाड़न लिये एक कानी बुढ़िया को दरवाज़े पर खड़े पाया। वह चुपचाप निकलकर बरामदे में चला गया। वहा एक ऐसे आदमी से टकराया जो धूप का चश्मा और काला टोप लगाये एक अधखुले दरवाज़े में से कह रहा था –

"हां, हां, बस इतना ही!"

यहां हर चीज़ उल्टी-सीधी थी, हर चीज़ समझने के लिये दिमाग़ पर ज़ोर डालना पड़ता था। शब्दों के गूढ अर्थों की खोज करनी पड़ती थी। कुछ देर बाद प्योत्र अर्तामोनोव एक गोल मेज़ के पास बैठा था, उसके सामने एक छोटा-सा समोवार खौल रहा था और ऊपर लैम्प का शीशा झनझना रहा था, मानो कोई अदृश्य हाथ उसे धीरे से हिला रहा हो। उसकी स्मृति में शराब के नशे में चूर विचित्र मनुष्यों की आकृतियां, गीतों के बोल और अपने भाई के तानाशाही वार्तालाप

के टुकड़े एक चलचित्र की तरह घूम गये। संयोग से क्षण भर को किसी की आंखें चमक उठी, फिर भी मस्तिष्क खाली-खाली और धुंधला-धुंधला था। इस धुंधलके में बस रोशनी की एक क्षीण और कांपती हुई किरण ही थी, जिसमें धूल के कणों की तरह ये आकृतियां चक्कर काटती दिखायी दे रही थी। और इनके कारण ही वह एक दूसरी चीज़ पर जो अत्यन्त महत्त्व की थी, अपने ध्यान को एकाग्र कर पाने मे असमर्थ हो रहा था।

वह गर्म तेज़ चाय और गले को जलाती ब्रांडी पीता गया, लेकिन उसने यह महसूस नही किया कि उसे नशा हो रहा है – सिर्फ़ उसकी बेचैनी बढती गयी और यह मन होने लगा कि कही चला जाये। उसने घंटी बजायी। कोई आया, कुहरे-सा उडता, जिसका मानो न तो चेहरा था, न बाल थे – वह हाथी-दांत की मूठवाली छड़ी जैसा लगता था।

"हरी लिकर ले आओ, वान्का। जानते हो न – हरे रंगवाली।"

"जी हां, शार्त्रेज।"

"तो तुम्हारा नाम वान्का ही है?"

"जी नही, कोन्स्तान्तीन है।"

"अच्छी बात है, जाओ।"

नौकर जब शराब ले आया तो प्योत्र ने उससे पूछा –

"फ़ौज में थे?"

"जी नही।"

"पर बोलते तो फौजियों की तरह हो।"

"यह भी कुछ वैसा ही काम है – हुक्म बजाना होता है।"

अर्तामोनोव ने एक क्षण सोचा, फिर उसे एक रूबल देकर नसीहत की –

"और तुम हुक्म मत बजाओ। सभी को जहन्नुम रसीद कर दो,"

यह लिकर शीरे की तरह चिपचिपी और अमोनिया की तरह तीखी थी। उसे पीकर प्योत्र का मस्तिष्क कुछ हल्का और साफ़ हो गया। सब बातें मन में जमा होने लगी और जब मन मे जमा होने की यह क्रिया जारी थी, उस समय सड़क का कोलाहल भी धीमा होता जा रहा था और एक मन्द मर्मर के रूप में परिणत होकर दूर होता हुआ अपने पीछे निस्तब्धता छोड़ता जाता था।

"हुक्म बजाना होता है?" अर्तामोनोव सोच रहा था, "किसका

हुक्म? मैं तो मालिक हूं, नौकर नही। मैं मालिक हूं या नहीं?"

लेकिन ये विचार शीघ्र ही छिन्न-भिन्न तथा लुप्त हो गये और उनके स्थान पर भय और आतंक ने डेरा जमा लिया। अर्तामोनोव ने यकायक देखा कि वह आदमी ठीक उसके सामने बैठा है, जो वास्तव में दोषी है, जो उसे अल्योशा या किसी अन्य चतुर आदमी की तरह पूरे आत्मविश्वास से जीवन-पथ पर आगे बढ़ने से रोकता है। चौड़े मुख का और दाढ़ीवाला यह आदमी उसके सामने समोवार के पास खामोश बैठा था, बायें हाथ की उंगलियां दाढ़ी में खोसे और गाल हथेली पर टिकाये हुए। उसने ऐसी शोकपूर्ण दृष्टि से प्योत्र अर्तामोनोव की ओर ताका, मानो सदा के लिये उससे विदा ले रहा हो, पर साथ ही उस पर दया तथा उसकी भर्त्सना कर रहा हो। उसकी ओर घूरते हुए वह रोने लगा और उसकी लाल डोरे पड़ी आखों से कटुतापूर्ण आंसू टपकने लगे। एक बड़ी-सी मक्खी उसकी बायी आंख के पास दाढ़ी के किनारे भिनभिन कर रही थी। अब वह उसके मुख पर रेंगने लगी, मानो वह कोई शव हो। वह कनपटी पर पहुंची, फिर माथे की ओर बढ़ गयी और एक भौंह पर रुककर उसकी आंख मे झाकने लगी।

"कहो, हरामी कहीं के!" अर्तामोनोव ने अपने शत्रु से पूछा। लेकिन उसका शत्रु न हिला न डुला, केवल उसके होंठ किंचित हिलकर रह गये।

"अब ज़ार-ज़ार रो रहे हो न?" प्योत्र अर्तामोनोव द्वेषपूर्वक प्रसन्नता से चिल्लाया। "मुझे कीचड में फसा दिया तुमने, गन्दे कुत्ते, और अब ज़ार-ज़ार रो रहे हो? अपनी करनी पर पश्चात्ताप हो रहा है तुम्हें? हाय, हाय . है!"

मेज़ पर से एक बोतल उठाकर उसने अपनी पूरी शक्ति से उस गंजी खोपड़ी पर दे मारी।

दर्पण के टूटने की आवाज़ और मेज़ पर उलटी-पलटी तश्तरियों की खनक और समोवार के गिरने की आवाज़ से कुछ लोग भागे-भागे कमरे में आये। इनमें से हर कोई दो हिस्सों में बंटता और फैलता हुआ नज़र आता था। कानी बुढ़िया ज़मीन से समोवार उठाने के लिये झुकी और साथ ही सीधी खड़ी भी दिखायी दे रही थी।

फ़र्श पर बैठते हुए अर्तामोनोव ने लोगों को शिकायत के स्वर में कहते सुना —

"रात का वक़्त है – सब लोग सो रहे हैं।"

"आईना तोड़ दिया।"

"भला कोई ऐसा भी करता है?"

अर्तामोनोव ने अपनी बांहें आगे-पीछे फैलायी, जैसे तैर रहा हो, फिर कराहा –

"मक्खी . ."

दूसरे दिन शाम होते-होते अल्योशा हड़बड़ाया हुआ आया और अपने भाई की ओर ऐसी सहृदयता मे देखने लगा, जैसे कोई डाक्टर अपने रोगी या कोचवान अपने घोडे की ओर देखता है। अपनी मूंछों पर एक छोटा-सा ब्रुश फेरते हुए उसने कहा –

"तुम्हारे चेहरे पर बेहद शराब पीने का असर साफ़ नज़र आ रहा है। ऐसे हुलिये में तुम्हें घर नही जाना चाहिये! फिर तुम यहा पर मेरी सहायता भी कर सकते हो। प्योत्र, तुम्हें अपनी दाढ़ी छंटवानी पड़ेगी और हां, अपने लिये नये बूट भी ख़रीदने होंगे। तुम्हारे बूट तो किसी कोचवान जैसे दीखते हैं।"

अपने दांतों को भीचे हुए प्योत्र अर्तामोनोव किसी तरह की हील-हुज्जत के बिना अल्योशा के पीछे-पीछे नाई की दुकान पर चला गया। वहां अल्योशा ने बड़ी कड़ाई मे नाई को यह ठीक-ठीक बताया कि बालो और दाढ़ी की कितनी-कितनी काट-छांट होनी चाहिये। इसके बाद जूतो की दुकान पर अल्योशा ने उसके लिये स्वयं बूट चुने। यह सब हो जाने पर जब प्योत्र ने अपने को शीशे मे देखा तो उसे लगा कि वह एक कारिंदा-सा लगता है। नये बूट पांव दबाते थे, पर वह कुछ न बोला और अपने को यही विश्वास दिलाता रहा कि अल्योशा सब कुछ ठीक ही कर रहा है। बाल कटवाना और नये बूट बदलना – यह सब ज़रूरी था। संक्षेप में, अब समय आ गया था कि अपना होश संभाले और शराब के नशे से उत्पन्न मन को यन्त्रणा देनेवाले उन धुंधले विचारो से मुक्ति पा जाये जो उसके हृदय पर इतना दारुण बोझ डालकर उसे दबा रहे थे।

किन्तु अपने मस्तिष्क में छायी धुंध और अपने विषाक्त और रिक्त शरीर में भरी थकान के बीच, अपने भाई को देखकर उसके मन में रह-रहकर ईर्ष्या और आदर, गुप्त व्यंग्य और शत्रुता से मिश्रित एक विचित्र भाव जाग उठता। यह दुर्बलकाय, फुरतीला, हाथ में

छड़ी लिये तीक्ष्ण दृष्टिवाला आदमी व्यापार के जूए में अधिक से अधिक भाग लेने की अमिट प्यास के उत्ताप से चारों ओर जैसे धुआं और चिनगारियां बिखेर रहा था। मेले के सबसे अच्छे रेस्तरानों में प्रमुख व्यापारियों के साथ भोजन करते हुए प्योत्र ने चकित होते हुए यह अनुभव किया कि अल्योशा धनी व्यापारियो का एक मसखरे की तरह अपने चुटकुलों और व्यंगों से मनोरंजन करता है। उसे लगा कि ये व्यापारी उसके इस तरह के मसखरेपन की ओर ध्यान न देते हुए स्पष्टतया अल्योशा को पसंद और उसका आदर करते हैं और बहुत ग़ौर से उसकी बातें सुनते है।

सूती कपड़े के व्यापारी कोमोलोव नाम के एक भीमकाय, घनी दाढ़ीवाले आदमी ने अल्योशा को गाजर के रग की उंगली दिखाते हुए धमकाया। पर उसका स्वर स्नेहपूर्ण था और वह अपनी बैलों जैसी आंखों को मटकाते तथा होंठों को ज़ोर से चाटते हुए बोला –

"तुम बडे होशियार हो, अल्योशा! लोमडी की तरह चालाक हो! तुम तो मुझसे भी बाजी मार ले गये . ."

"येरमोलाई इवानोविच!" अल्योशा जैसे आत्मविभोर होकर चिल्लाया। "यह तो मुक़ाबला है – ठीक है न?"

"बिल्कुल ठीक। अपनी आखें खुली रखो और हमेशा अपना तुरुप का इक्का चलो!"

"येरमोलाई इवानोविच, यह सब सीख रहा हूं!"

कोमोलोव ने सहमति प्रकट की –

"हां, सीखना चाहिये।"

"सज्जनो!" अल्योशा ने कहा – उसके स्वर मे अभी भी आत्मोल्लास भरा था, किन्तु साथ ही कुछ चापलूसी भी थी, "मेरा बेटा मिरोन बड़ा होशियार लड़का है – इंजीनियर बनने जा रहा है। उसने मुझे बताया कि किसी समय सिराक्यूज़ नगर में एक विश्व-विख्यात बुद्धिमान आदमी रहता था। उसने अपने राजा से कहा – मुझे सहारा लेने के लिये कोई चीज़ दे दो और फिर मैं सारी पृथ्वी को उलटकर रख दूंगा!"

"अरे, वाह!"

"उलटकर रख दूंगा – उसने कहा था! सज्जनो! हमारे वर्ग का सहारा है रूबल! हमें बुद्धिमान लोगों की ज़रूरत नहीं, जो चीज़ों

को उलटकर रख दें। हम स्वयं काफ़ी बुद्धिमान हैं। हमें बस एक ही चीज़ की ज़रूरत है – दूसरे प्रकार के प्रबन्ध-कर्त्ताओं या कर्मचारियों की ! सज्जनो ! अभिजात वर्ग पतनोन्मुख है, वह हमारे मार्ग में रोड़ा बनकर नही अड़ सकता। पर सारे दफ़्तरों में, सारे महत्त्वपूर्ण पदों पर हमें अपने ही आदमी चाहिये, ऐसे आदमी, जो व्यापारी वर्ग से निकले हों और जो हमारे व्यापार को ठीक-ठीक समझते हों – बस, इतना ही ज़रूरी है ! "

सफ़ेद बालोंवाले बड़े-बूढ़ों, गंजी खोपड़ियों और बड़ी तोंदवाले लोगों ने हर्षातिरेक से अपनी सहमति प्रकट की –

"तुम ठीक कहते हो ! "

तीखी नाकवाले, हडीले, दुर्बल और काने बुड्ढे लोसेव ने, जो हुंडियों का मिती-काटा करता था, नम्रतापूर्वक दांत निपोडते हुए कहा –

"अलेक्सेई इल्यीच का दिमाग़ तो चूहे की तरह है – उसे सब मालूम है कि कहा क्या चीज़ रखी है। वह उसे कुतरता जाता, कुतरता जाता है। तो यह जाम उसकी सेहत के लिये उठाता हूं ! "

जाम उठ गये और अल्योशा ने उन सबके जामों के साथ अपना जाम खनकाया। कोमोलोव के चौडे-चकले कधे को थपथपाने के लिए अपना नन्हा-सा हाथ बढाते हुए लोसेव बोला –

"हमारे बीच अब चतुर आदमी पैदा होने लगे हैं।"

"हमेशा ही पैदा होते रहे है ! " कोमोलोव ने गर्व से उत्तर दिया। "मेरे बाप ने जहाज़ के कुली की हैसियत से ज़िन्दगी शुरू की थी और फिर देखो वह कितने ऊंचे चढ़ गये .. "

"लोगों का कहना है कि तुम्हारे बाप ने तो एक धनी अर्मीनी की हत्या से अपनी उन्नति का मार्ग आरम्भ किया था," लोसेव ने खिलखिलाकर कहा। घनी दाढ़ीवाले कपड़े के व्यापारी ने अपने अट्टहास से कमरा गुंजा दिया और फिर बोला –

"निरी बकवास है ! लोग बेवक़ूफ़ है, इसीलिये ऐसा कहते हैं· अगर तुम्हारा सितारा चमक उठा है तो इसका अर्थ है कि तुमने ज़रूर कोई पाप किया है ! ऐसी गदी अफ़वाहें तो तुम्हारे बारे में भी फैली हुई है, कुज़्मा ... "

"वह तो है ही," लोसेव ने आह भरते हुए कहा, "अफ़वाहें – वे तो मक्खी की तरह उड़ती हैं ! "

प्योत्र अर्तामोनोव बैठा सुनता रहा। वह केवल बीच-बीच में हुंकारी-सी भर देता था। वह डटकर खा रहा था और कम पी रहा था। निराशा से उसने सोचा कि वह इन लोगों से किसी भिन्न नस्ल का जानवर है। उसे ज्ञात था कि ये सब पहले किसान थे और इन सब में उसे लुटेरों की सी उद्दाम साहसिकता और किसी ऐसी अनूठी चीज़ की झलक मिली जो उनके प्रति श्रद्धा की भावना पैदा करती थी और उसके पिता की याद दिलाती थी। निश्चय ही पिता इन लोगों के हमजोली होते और व्यापार, व्यभिचार और शराबखोरी में इनका भरपूर साथ देते। वह भी शायद इन लोगों की तरह खूब शराब पीते, व्यभिचार करते और छीलन की तरह नोट जलाते। इन लोगों के लिये धन वास्तव में छीलन के समान है जो ये निरन्तर अपनी पूरी शक्ति से धरती मे, एक दूसरे से और किसानो से छीलते रहते है।

इन बड़े-बड़े धनी सेठो से अल्योशा कुछ भिन्न था और ऐसे भी क्षण आते जब अपनी दुर्भावना के बावजूद प्योत्र को लगता कि उसका भाई इन सब लोगों मे कहीं ज़्यादा तीक्ष्ण-बुद्धि, होशियार, यहा तक कि खतरनाक भी है।

"सज्जनो!" अल्योशा उन्मत्त होकर चिल्लाया, मानो उस पर भूत सवार हो। "हमारी अनन्त, अक्षय श्रम-शक्ति की ओर देखो, हमारे लाखों किसानों की ओर! वे ही काम करते है और वे ही माल खरीदते है। इतनी अधिक संख्या में तुम्हें किमान और कहा मिलेंगे? कही नही! और हमें विदेशियो की क़तई ज़रूरत नही है। हम खुद ही सब कुछ कर सकते है!"

"ठीक कहते हो!" शराब के नशे में चूर, ऊंचे-ऊंचे बोलनेवालो की मंडली ने सहमति प्रकट की।

अल्योशा विदेशो से आनेवाले माल पर अधिक से अधिक आयात-शुल्क लगाने, ज़मीदारो की ज़मीनें-जागीरें खरीद लेने की ज़रूरत और अभिजातों के बैंकों के खोले जाने से होनेवाली हानि के बारे में विस्तार से बोलता रहा। वह सब कुछ जानता था और प्योत्र अर्तामोनोव को यह देख-देखकर आश्चर्य हो रहा था कि उसका भाई जो कुछ कहता था, सभी लोग पूरे उत्साह से तुरन्त उसके साथ सहमत हो जाते थे।

"निकीता ने ठीक ही कहा था – अल्योशा को जीना आता है," प्योत्र ने ईर्ष्यालु मन से सोचा।

अपने दुर्बल स्वास्थ्य के बावजूद अल्योशा भी रंगरेलियों में भाग लेता था। उसकी भी एक रखेल थी जो शायद काफ़ी दिनों से स्थायी रूप से उसकी होकर ही रहती थी। वह मास्को की रहनेवाली थी। उसकी एक गायिका-मंडली थी। वह गदराये बदन और सुन्दर गठन-वाली औरत थी। उसका स्वर मधुर और आखें प्रफुल्ल तथा चमकीली थी। उसकी उम्र लगभग चालीस थी, लेकिन देखने में वह तीस से भी कम लगती थी – उसकी मलाई जैसी कोमल त्वचा और गालो की लाली को देखकर यही अनुमान होता था।

"अल्योशा, मेरे सूरमा," वह अपने लोमडी जैसे तीखे दांत खोलकर कहती और उसे अपने पीछे वैसे ही छिपा लेती जैसे मा अपने बालक को।

इस स्त्री को यह ज़रूर मालूम था कि अल्योशा उसकी मंडली की अन्य लड़कियों पर भी डोरे डालने से बाज नही आता। उसने यह बात ज़रूर देखी होगी। फिर भी अल्योशा के प्रति उसका व्यवहार सदा मित्रतापूर्ण रहता। प्योत्र ने अक्सर हैरान होकर अपने भाई को अन्य लोगो और अपने मामलो के बारे मे इस स्त्री की सलाह लेते हुए सुना था – और ऐसे मौक़ों पर उसे अपने पिता और उल्याना बैमाकोवा के सम्बन्ध की याद हो आती थी।

"शैतान," प्योत्र ने अपने भाई के जीवन पर विचार करते हुए सोचा।

यहा तक कि अल्योशा के शरारतें करने के तरीक़ों मे भी कुछ अनोखापन था। मेयर नाम का एक मोटा-थल्ला जर्मन विदूषक सर्कस में एक सधा हुआ सूअर दिखाता था। यह सूअर एक लम्बा फ़ॉक-कोट पहने, ऊचा हैट लगाये और पैरो में चमड़े के ऊंचे बूट बांधे, ठीक एक व्यापारी की वेष-भूषा और आकृति बनाये अपनी पिछली टांगों पर चलता था। दर्शको को ख़ूब मज़ा आया, यहां तक कि व्यापारीगण भी ठहाका मारकर हंसते थे। केवल अल्योशा नही हंसा – उसे बुरा लगा और उसने अपने कुछ मित्रो को इसके लिये राज़ी कर लिया कि इस जानवर को चुरा लिया जाये। वे बाड़े के रखवाले को रिश्वत देकर सूअर को चुरा लाये। फिर व्यापारी वर्ग के लोगों ने उसे बा-र्बातेन्को होटल के चतुर बावर्ची द्वारा भिन्न-भिन्न क़िस्म की चटनियों के साथ तैयार किये गये व्यजनों के रूप में बड़े मज़े ले-लेकर खाया।

प्योत्र अर्तामोनोव ने बाद में यह अफ़वाह सुनी कि दुःख के मारे उस विदूषक ने फांसी लगा ली थी।* मेले के दिनों में उसने अल्योशा में जो कुछ देखा, उससे प्योत्र के मन में अनेक आकुल विचार जग गये।

"बड़ा धूर्त है। आत्माहीन है। किसी भी तरह के मलाल के बिना वह मुझे बर्बाद कर सकता है। किसी लालच के वश नहीं, बल्कि मज़ा लेने के लिये।"

इस आशंका की अनुभूति ने उसको गंभीर कर दिया। वह सुस्थिर हो गया और अकेला ही घर को लौटा – अल्योशा मास्को चला गया था। सितम्बर का बरखा-आंधी का महीना था, बारिश भीगी धरती पर ज़ोर-ज़ोर से सुम रखते हुए डाक की गाड़ी के घोड़े द्र्योमोव के रास्ते पर ख़ुशी से बढ़े जा रहे थे। सड़क के दोनो ओर खड़े फ़र वृक्ष ऐसी सीधी क़तारों में फैले थे, मानो सन्तरी इस संकरी और दलदली सड़क की रक्षा कर रहे हों। आसमान में पतझड के भूरे-भूरे बादल छाये थे और वैसी ही भूरी-भूरी नीरसता प्योत्र के मन में भरी थी। उसे लग रहा था, जैसे वह अपने किसी नाती-रिश्तेदार को दफनाकर लौटा है। वह नाती-रिश्तेदार तो था, पर जिसका होना उसके लिये भार बन गया था। मृतक के लिये उसके मन मे दया उमड़ती थी, लेकिन साथ ही यह जानकर खुशी भी हो रही थी कि वह उसमे अब कभी नहीं मिलेगा। वह अपनी अस्पष्ट मागों से उसके मन की शान्ति नहीं छीना करेगा और न वह उसे अपनी मूक भर्त्सना का शिकार बना मकेगा।

"मेरा काम तो व्यापार है, बस और कुछ नही!" उसने अपने आपसे कहा। "काम ही ज़िन्दगी है, हां।"

वह पूरे तन-मन से अपने काम मे जुट गया। गर्मी के सुहावने दिनों और उदास चांदनी रातों का वक़्त था।

पतझड़ की सुबह के मोतिया झुटपुटे में उठकर प्योत्र अर्तामोनोव मिल की ज़ोरदार सीटी सुनता। आधे घंटे बाद श्रम की दुर्दमनीय, शक्तिशाली, किन्तु एकरस ठन-ठन, कट-कट, खट-खट शुरू हो जाती। मिल को फ्लैक्स बेचनेवाले किसान मर्द और औरतें प्रातःकाल से लेकर

* प० द० बोबोरीकिन ने 'रूसी कूरियर' समाचारपत्र मे यह ख़बर छापी थी। यह सन १८८० की घटना है। – ले०

सन्ध्या को देर तक द्वारों पर खड़े बोलते-चिल्लाते रहते ; अकार्डियन बाजे के चीखते हुए सुरों में सुर मिलाकर लोग वतरक्षा के किनारे के शराबखाने में शराब के नशे से चूर होकर पागलों की तरह गाते। अहाते में तीखोन व्यालोव हर समय ही हाथ में झाड़ू, फावड़ा तथा कुल्हाड़ी पकड़े भारी, चुस्त मशीन की तरह अपने काम मे लगा इधर से उधर आता-जाता दिखायी देता। वह लोगों को कठोरता से देखता, हर समय ही किसी तरह की जल्दी के बिना सफ़ाई करता, खोदता, लकड़ी काटता या किसानों और मज़दूरों को भारी स्वर मे डांटता-फटकारता नज़र आता। आसमानी रंग के कपड़े पहने और हमेशा साफ़-सुथरा सेराफ़ीम कभी-कभी उधर से निकलता। घर में नतालिया भी एक मशीन की तरह अपने काम मे लगी रहती। नतालिया बड़ी प्रसन्न थी कि उसका पति मेले से उसके लिये बढिया उपहार लाया था। प्योत्र की खामोशी और आन्तरिक शान्ति को देखकर वह और भी अधिक प्रसन्न थी। हर चीज़ सहज ढंग से अपने आप चल रही थी। लगता था कि सब चीज़ों ने एक स्थायी सामजस्य पा लिया है – मिल, लोग, यहा तक कि घोडे भी – सब इस तरह काम में लगे थे कि लगता था मानो चिरकाल तक ऐसे ही चलते जाने के लिये एक सूत्र में बंध गये हों। और वायु के झोकों से उडाये गये बादलों की तरह महीनों पर महीने बीतते और वर्षों में बदलते गये।

बैल की तरह सिर झुकाये प्योत्र अर्तामोनोव मिल की इमारतों में मे टहलता हुआ गुज़रता या बस्ती की सड़क पर ऐसे चहलक़दमी करता कि बच्चे डर जाते और हर जगह उसे कुछ ऐसी नयी और विचित्र-सी अनुभूति होती मानो इस विशाल धन्धे में वह लगभग अनावश्यक हो गया है, एक तटस्थ द्रष्टा बनकर रह गया है। उसे यह देखकर खुशी होती कि याकोव कारोबार को समझता है और उसमें गहरी दिलचस्पी लेने लगा है। याकोव की गतिविधियों ने पिता के विचारों को बड़े बेटे की ओर भटकने से न केवल रोक दिया, बल्कि इल्या के प्रति उसके क्रोध और क्षोभ को भी कुछ शान्त कर दिया।

"तुम्हारे बिना भी मेरा काम चल जायेगा, विद्वान महोदय! पढ़ते रहो।"

गदराये शरीर, सेब जैसे लाल गालों और आत्मीय दृष्टि से चमकती हुई उत्फुल्ल आंखोंवाला याकोव अपने गोल-मटोल शरीर से

बड़ी शान से चलता। निकट आने पर वह कबूतर-सा लगता, किन्तु दूर से बड़ा होशियार और कामकाजी आदमी प्रतीत होता था। मिल में काम करनेवाली छोकरियां उसे देखकर मुस्करा देतीं और जब वह आंखें सिकोड़कर उनसे बातें करता और उनके पास से ज़रा टेढ़ा होकर गुज़रता तो एक जवान मुर्ग़े जैसी उसकी वासनापूर्ण चंचलता बनावटी गम्भीरता के पर्दे में छिपी न रहती। पिता अपने कान की ललरी ऐंठते हुए मुस्कराता और सोचता –

"अरे, बुद्धू! तुम्हें पाउला दिखानी चाहिये..."

उसे यह देखकर ख़ुशी होती कि अल्योशा के घर जाने पर याकोव तो उसके बेटे मिरोन और उसके फूहड, उद्विग्न साथी गोरीत्स्वेतोव में निरन्तर चलनेवाली बहसों मे कभी भी भाग न लेता। मिरोन भूषा और शक्ल से अब ज़रा भी एक व्यापारी के बेटे जैसा नही लगता था। दुर्बल शरीर, बडी नाक, आंखों पर चश्मा, चमचमाते हुए पीतल के बटनोंवाली जैकेट, जिसके कन्धे पर कोई न कोई चिह्न लगा रहता – वह देखने में जज दिखायी देता। वह एक सैनिक की तरह तनकर चलता और रोबदार, अधिकारपूर्ण स्वर में बोलता। प्योत्र इतना तो समझता था कि उसका भतीजा बातचीत तो बुद्धिमत्ता की करता है, लेकिन वह उसे अच्छा नही लगता था।

"अरे भाई, कहता तो हूं कि यह निर्बलता का दर्शन है," अपने दोनों हाथ जैकेट की जेबों में खोसकर वह उपदेशक के स्वर में कहता। "यह दर्शनबाज़ी, दुर्बलता और अयोग्यता का ही नतीजा है..."

प्योत्र अर्तामोनोव को लगा कि गोरीत्स्वेतोव भी बुद्धिमानी की बातें करता है, मूर्खता की नही। नाटे, भद्दे ढंग से खुले बटनोवाले विद्यार्थियों के फ़ॉक-कोट के नीचे काली कमीज़ पहने गोरीस्त्स्वेतोव के बाल अस्त-व्यस्त होते और उसकी आंखें ऐसे सूजी-सी रहती, मानो कई दिनों से सोया न हो। उसका सावला, लम्बोतरा चेहरा मुंहासों से विकृत रहता। बातचीत में मिरोन पर आक्रमण करते हुए वह बाहो को ज़ोर-ज़ोर से हिलाते हुए चिल्लाता और अपनी बात के बीच किसी की न सुनता –

"तुम लोग अपने उद्देश्य को पूरा कर लोगे। यह तक करने में सफल हो जाओगे कि तुम्हारी मिलों की सीटियां सुनकर ही अब आकाश में सूरज उगा करेगा। और मशीनों की आवाज़ पर दलदलों और जंगलों

में से धुंध-भरा दिन बाहर निकल आया करेगा, लेकिन तुम मानव का क्या करोगे?"

मिरोन अपनी भौंहों को उठाकर किंचित रोष से देखता। अपने चश्मे को ठीक करते हुए वह धीरे-धीरे और रुखाई से कहता –

"यह निर्बलों का दर्शन है, कविता है! अरे भाई, यह तो निरर्थक बकवास है, शून्य कल्पना की बहक है। जीवन एक संघर्ष है। कविता और विक्षिप्तता – इन दोनों की इसमें कोई जगह नही – वे हास्यास्पद तक है ..."

इन दोनों के शब्द ऐसे भिन्न दीखते, जैसे काले कबूतरों के बीच सफ़ेद। प्योत्र अर्तामोनोव मन ही मन सोचता –

"तो इसे कहते है नये पछी – नये गाने।"

उनकी बहस के मूल तत्त्व को वह अस्पष्ट रूप से ही समझ सका था। याकोव की ओर देखकर उसे अपार सन्तोष होता कि उसका पुत्र अपनी उपहासजनक मुस्कान को छिपाने के लिये अपने ऊपरी होंठ के रोयो को सहला रहा है।

"तो ऐसा मामला है!" प्योत्र सोचता। "और इल्या होता तो क्या कहता?"

गोरीत्स्वेतोव चिल्लाया –

"धरती और लोगों को लोहे की जंजीरों से जकडकर, आदमी को मशीन का गुलाम बनाकर ..."

मिरोन ने बीच में ही अपनी नाक को ज़ोर से हिलाते हुए उत्तर दिया –

"तुम्हारा यह आदमी, जिसके बारे मे तुम इतना चिन्तित हो रहे हो, काहिल है। उसे अगर इस बात का चेत नही हुआ कि उद्योग धन्धों के विकास से ही उसका उद्धार सम्भव है, तो वह तबाह हो जायेगा ..."

"इन दोनों में से किसकी बात ठीक है? कौन अधिक अच्छा है?" प्योत्र अर्तामोनोव अनुमान लगाने की कोशिश करता।

गोरीत्स्वेतोव तो उसे अपने भतीजे से भी कम अच्छा लगता था। वह कुछ कमज़ोर क़िस्म का आदमी था, अविश्वसनीय-सा लगता था। वह ज़रूर किसी बात से डरता था और इसीलिये इतना चिल्लाता रहता था। शराबी आदमी की तरह उसे भी शिष्टाचार बरतना नही आता

था। वह अपने मेज़बानों के पहले ही मेज़ पर बैठकर छुरी-कांटों को उलटता-पलटता रहता, जल्दी-जल्दी भोजन करता, बिल्कुल जंगली की तरह, कभी अपने होंठ जला लेता, खांसता। अल्योशा की तरह उसके अन्दर भी कुछ उछलता-सा, फालतू और सम्भवतः द्वेषपूर्ण था। उसकी लाल आंखों की काली पुतलियां मानो अन्ध दृष्टि से घूरती थीं, प्योत्र के साथ वह एक भी शब्द कहे बिना सलाम-दुआ करता, अपना गरम-गरम रूखा हाथ मिलाने के लिये उद्दंडतापूर्वक आगे बढ़ाता और फिर झटके से पीछे खीच लेता। कुल मिलाकर वह एक व्यर्थ का सा आदमी था और यह समझना कठिन था कि मिरोन को उसकी क्या ज़रूरत थी।

"तुम बातें नही करो, स्तेपान," ओलगा उससे कहती और वह खरखरी-सी आवाज़ में उत्तर देता –

"मैं ऐसा नहीं कर सकता, यहां घातक मानवद्रोह का प्रतिपादन किया जा रहा है।"

प्योत्र को यह देखकर आश्चर्य होता कि अल्योशा इन दोनो विद्यार्थियों की बहसों को चुपचाप ध्यान से सुनता रहता था और कभी-कभार ही अपने पुत्र के समर्थन में दो-एक शब्द कह देता –

"बिल्कुल ठीक! जहां शक्ति होती है, वही सत्ता भी होती है। और शक्ति उद्योगपतियों के पास है, इसलिये ..."

भोजन और चाय समाप्त होने के बाद ओलगा काढ़ने का काम लेकर खिड़की के पास बैठ जाती और चुपचाप कपड़े पर सुन्दर, तेज़, चमकते रंगों के फूल काढ़ती रहती। उसकी कनपटियो पर अब झुर्रियां पड़ गयी थीं, उसकी नाक की कोर उसके बिना कमानी के भारी चश्मे के बोझ से लाल पड़ रही थी। प्योत्र को अपने घर की अपेक्षा भाई के घर में अधिक सुख मिलता। यहां समय दिलचस्पी के साथ कट जाता और बढ़िया शराब का गिलास तो हमेशा ही उपलब्ध होता।

याकोव के साथ घर लौटते हुए प्योत्र पूछता –

"इन लोगों की बहस तुम्हारी समझ में आयी?"

"हां," पुत्र संक्षेप में उत्तर देता।

बेटे से यह छिपाने के लिये कि वह खुद कुछ नहीं समझा है, प्योत्र कड़ाई से पूछता –

"अच्छा, तो किस बारे में बहस कर रहे थे वे?"

याकोव के उत्तर हमेशा संक्षिप्त और अनमने होते, किन्तु फिर भी स्पष्ट समझ में आते। उसके अनुसार मिरोन का कहना यह था कि रूस को बाक़ी यूरोप के समान ही रहना चाहिये, जबकि गोरीत्स्वेतोव का मत था कि रूस का अपना मार्ग है। इस मौक़े पर बेटे को यह दिखाने के लिये कि इस विषय में बाप की भी निश्चित धारणाएं हैं, प्योत्र अर्तामोनोव प्रभावपूर्ण ढंग से घोषणा करता –

"विदेशियों की दशा यदि हमसे अच्छी होती तो वे यहां घुसने की चेष्टाए न करते .."

किन्तु यह विचार अल्योशा से लिया हुआ था, उसके अपने विचार तो थे ही नही। प्योत्र अर्तामोनोव बेटे के निम्न शब्दों से और भी खीझ उठा –

"अपनी योग्यता की डींग हांके बिना, बकवास किये बिना भी काम चल सकता है .."

प्योत्र अर्तामोनोव ने बडबडाकर उत्तर दिया –

"मेरा भी ऐसा ही ख्याल है ..."

उसे अक्सर ही छोटी-छोटी ठेसों और हैरानी के झटके लगते। वे उसे एक ओर को ठेल देते, केवल द्रष्टा के रूप में उसकी भूमिका की पुष्टि करते, जिसे सब कुछ देखना और हर बात पर सोच-विचार करना चाहिये। उसके इर्द-गिर्द की हर चीज़ में एक अदृष्ट, किन्तु तीव्र परिवर्तन हो रहा था। हर जगह, शब्दों में और कार्यों में, कोई नया और निरंतर उद्विग्न रहनेवाला तत्त्व आ मिला था जो अपनी सत्ता को बरबस स्वीकृत करा रहा था। एक दिन चाय पीते समय ओलगा ने कहा –

"सत्य तो तभी होता है, जब आदमी की आत्मा परिपूर्ण हो तथा उसे और कुछ भी पाने की लालसा न रहे।"

"बिल्कुल ठीक," प्योत्र ने हामी भरी।

किन्तु मिरोन की आंखों की चमक से चश्मा चमक उठा और वह अपनी मां को अक्ल सिखाने लगा –

"यह तो सत्य नहीं है, बल्कि मृत्यु है। सत्य तो काम मे है, क्रियाशीलता में है।"

एक मोटे काग़ज़ की पाइप-सी लपेटकर मिरोन जब उसे अपने साथ लिये हुए चला गया तो प्योत्र ने ओलगा से कहा –

"तुम्हारा बेटा तुम्हारे साथ बदतमीज़ी से पेश आता है।"

"ज़रा भी नही।"

"मैं तो देखता हूं कि ऐसा ही है!"

"वह मुझसे अधिक समझदार है," ओलगा ने उत्तर दिया, "आखिर मैं अनपढ़ हू और अक्सर मूर्खतापूर्ण बातें कर बैठती हूं। कुल मिलाकर बच्चे हमसे अधिक समझदार है।"

इस बात को तो अर्तामोनोव कभी भी स्वीकार करने को तैयार नही था। उसने हंसकर उत्तर दिया—

"हां, तुम तो मूर्खतापूर्ण बातें कर बैठती हो। लेकिन हमारे बुज़ुर्ग हम से सयाने थे। यह तो उन्ही का कहना था—बेटा खाये रोटी तो बेटी खाये बोटी। समझी?"

ओलगा के मुख से बच्चों की बुद्धिमत्ता की बातें सुनकर प्योत्र जल-भुन गया था। उसका संकेत निश्चय ही इल्या की ओर था। प्योत्र यह जानता था कि अल्योशा इल्या को पैसे भेजता है और मिरोन उससे पत्र-व्यवहार करता है, लेकिन स्वाभिमान के कारण उसने इल्या की कभी खैर-खबर भी नही पूछी थी। ओलगा इस बात को समझती थी और यों ही संयोगवश बड़ी चतुराई से उसे इल्या का हाल-चाल बता देती थी। ओलगा से उसे यह पता चला था कि इल्या आर्खांगेल्स्क चला गया था और वहां से विदेश रवाना हो गया था।

"ठीक है, जहा उसकी इच्छा हो, वही रहे। अक्ल आने पर समझ जायेगा कि वह कितना बड़ा मूर्ख था।"

कभी-कभी अपने बेटे के बारे में सोचते हुए उसे उसकी ढिठाई पर आश्चर्य होता। हर कोई बुद्धिमान बन रहा है। फिर इल्या ही किस चीज़ की प्रतीक्षा कर रहा है?

भाई के घर जाने पर प्योत्र की अक्सर वेरा पोपोवा और उसकी बेटी से भेंट हो जाती। वह पहले की भांति ही सुन्दर, विषादपूर्ण, शान्त और उसके लिये परायी लग रही थी। वह प्योत्र से बहुत कम बात करती, और अगर कभी करती भी तो उसी अन्दाज़ में, जिसमें वह इल्या के साथ तब करता था जब यह सोचता था कि उसने व्यर्थ ही बेटे के दिल को ठेस लगा दी है। पोपोवा को देखते ही उसकी बेचैनी बढ़ जाती। शान्त क्षणों में पोपोवा की प्रतिमा मानस-पटल पर उभर आती, लेकिन आश्चर्य के सिवा प्योत्र के मन में और कोई भाव न

जागृत होता। कैसी विचित्र बात है! यह व्यक्ति मन को अच्छा लगता है, वह उसके विषय में सोचता है, लेकिन क्यो? इसका उत्तर नहीं दिया जा सकता। पोपोवा से बात करना प्योत्र के लिये किसी गूंगे और बहरे आदमी से बात करने के बराबर था।

सब ओर परिवर्तन हो रहा था। यहा तक कि मिल के मज़दूर भी दिन-प्रतिदिन सनकी, अधिक क्रोधी और क्षय-पीड़ित होते जा रहे थे और उनकी औरतों की ज़बाने तेज़ हो गयी थी। बस्ती का शोर-गुल पहले की अपेक्षा अधिक बेचैनी पैदा करता था, ऐसा लगता मानो सन्ध्या के समय लोग भेडियों की तरह गुर्राते हों, यहा तक कि सड़क की बालू भी क्रोध मे फुफकारती हो।

मज़दूरों में एक विचित्र बेचैनी-सी और आवारगी की प्रवृति बढ़ रही थी। किसी आदमी या काम के प्रति असन्तोष का कोई कारण न होते हुए भी छोकरे अचानक दफ्तर में घुसते चले आते और हिसाब चुका देने की माग करते।

"कहां जा रहे हो?" प्योत्र पूछता।

"कही और क़िस्मत आज़माने के लिये।"

"किसलिये इनके दिमाग़ ख़राब होते है?" प्योत्र अपने भाई मे पूछता। अल्योशा उत्तर मे कन्धा झटककर शरारत-भरी हंसी हंस देता और कहता कि हर जगह मज़दूरो में बेचैनी फैली हुई है।

"हमारे यहा तो फिर भी ख़ैरियत है, शान्ति है। पीटर्सबर्ग में तो हमारे यहा अफसर और मन्त्री वैसे नही, जैसे चाहिये"

इसके बाद अल्योशा ने धृष्टता और मूर्खता की ऐसी बहुत-सी दूसरी बाते भी की कि बडे भाई को उसे तुरन्त डांटना पडा –

"यह सब बकवास है! ज़ार से सत्ता छीन लेने से कुलीनो का ही फायदा होगा, क्योंकि वे निर्धन होते जा रहे है। हम तो सत्ता के बिना ही धनी हो जा सकते है। हमारे पिता तो छुट्टी के दिन भी भद्दे जूते ही पहनते थे, लेकिन तुम बढिया, विदेशी जूते पहनते हो और रेशमी टाइयां बाधते हो। हमें ज़ार के चतुर कर्मचारी बनना चाहिये, न कि असन्तुष्ट सूअर। जार तो हमारा कल्पवृक्ष है, हमे उसी से सब वरदान मिलते है।"

अल्योशा ने लापरवाही मे नाक-भौं सिकोड़ी। इससे प्योत्र और झल्ला उठा। प्योत्र यह महसूस करता था कि लोग कही अक्सर व्यंग्य-

पूर्वक मुस्कराते हैं और उनकी इस नयी आदत में कुछ कटु और मूर्खतापूर्ण है। हां, इनमें से कोई भी बूढ़े बढ़ई सेराफ़ीम की तरह मनोरंजक तथा सन्तोषप्रद ढंग से मन खुश नही कर सकता था।

बूढ़े सेराफ़ीम के साथ प्योत्र की मित्रता बहुत गाढ़ी हो गयी थी। प्योत्र को फिर उदासी के दौरे पड़ने लगे थे। ऐसे क्षणों में वह शराब पीने के लिये उद्विग्न हो उठता। अल्योशा के यहां पीने में उसे संकोच होता, क्योंकि वहां हर समय अजनबी लोगों का जमघट लगा रहता। साथ ही वह यह भी नही चाहता था कि पोपोवा उसे नशे मे धुत्त देखे। घर पर उसकी मानसिक दशा को देखकर नतालिया मन मसोसकर रह जाती। प्योत्र की इच्छा उससे लड़ाई-झगड़ा करने की होती, लेकिन नतालिया का व्यवहार उसे निरस्त्र कर देता। उसकी संत्रस्त और भयभीत मुद्रा क्रोध के स्थान पर दया का भाव जगाती और प्योत्र तुरन्त उठकर सेराफ़ीम के घर की ओर चल देता।

"बूढ़े मियां, पीने को मन हो रहा है!"

विनोदी बढई मुस्कराकर इस प्रस्ताव का स्वागत करता –

"गरमियों की धूप की तरह यह तो स्वाभाविक बात है। थक गये हो – अच्छा है, अपने को फिर ताज़ा कर लो। तुम्हारा काम भी तो चेहरे के मस्से की तरह छोटा-सा नही है!"

वह अपने मालिक के लिये हमेशा बढ़िया शराब छिपाकर रखता। रंग-बिरंगी बोतलें दिखाकर कहता –

"यह मेरा आविष्कार है। एक पादरी की विधवा इसे तैयार करती है। चखकर तो देखो। इसमे बर्च की कलियों की सुगन्ध है और बसन्त की ताज़गी है। बढ़िया है न?"

और वह एक कुर्सी खीचकर अपनी "शलजम" की प्रिय शराब की चुसकियां ले-लेकर चहकता रहता –

"हा, वह पादरिन है। अभागी बेचारी। उसका हर प्रेमी चोर निकलता है और वह कमबख़्त प्रेमियों के बिना रह भी नही सकती – उसके खून में इतनी गर्मी जो है!"

"मैंने मेले में एक ऐसी औरत देखी थी कि कुछ न पूछो," प्योत्र ने कहना शुरू किया।

"सो तो ज़ाहिर है! वहां तो दुनिया भर का चुना हुआ माल आता है, मुझे मालूम है!"

सेराफ़ीम हर किसी को और हर बात जानता था। वह मिल के कर्मचारियों तथा मज़दूरों के व्यक्तिगत जीवन की मनोरजक कहानियां सुनाता। सबके बारे में उसकी बातचीत का लहजा सहानुभूतिपूर्ण होता। वह अपनी बेटी के बारे में भी इसी तरह बात करता जैसे वह कोई परायी हो।

"अब उसने घर बसा लिया है। वह मिस्त्री सेदोव के साथ रहती है। दोनों की खूब पटती है। हर कोई अपना घोंसला ढूंढ़ ही लेता है।"

सेराफ़ीम के यहा का वातावरण उसे बहुत सुखद लगता। उसका छोटा-सा साफ़-सुथरा कमरा, जिसमें चीड़ के तख़्तों की मन्द सुगन्ध भरी रहती और दीवार पर टंगे टीन के लैम्प की हल्की रोशनी के बावजूद वहा एक सुखद अंधियारा-सा छाया रहता।

थोड़ी-सी पी लेने के बाद प्योत्र लोगो के विरुद्ध अपनी शिकायतों का बही-खाता खोल देता और सेराफ़ीम उसे सान्त्वना देता –

"चिन्ता मत करो! सब भले के लिये ही है! लोग-बाग अब दौड़ने लगे है – सारी बात बस इतनी सी है! वे अब तक सोये पड़े थे, सोच-विचार करते रहे – किन्तु अब उठकर खडे हो गये है और चल पडे है। चलने दो। तुम ऊबो नहीं। इन्सान में विश्वास रखो। तुम्हे अपने पर तो विश्वास है न?"

प्योत्र अर्तामोनोव ने मौन रहकर इस प्रश्न पर विचार किया – क्या उसे अपने पर विश्वास है या नही? लेकिन सेराफ़ीम बोलता चला गया और उसके मुह से निकले शब्दो मे जैसे सान्त्वना देनेवाली सहानुभूति ध्वनित हो रही थी –

"कौन बुरा है, कौन अच्छा है, इस चिन्ता से अपने को परेशान मत करो। यह सब कुछ स्थायी नही है। कल जो बात अच्छी थी, वह आज बुरी समझी जाती है। प्योत्र इल्यीच, मैने भले-बुरे दोनों को खूब परखा है। आह, मैंने अपनी ज़िन्दगी में क्या-क्या नही देखा! कभी मैं कहता – हां, यह अच्छी बात है! लेकिन पलक झपकते ही उसका नाम-निशान बाक़ी न रहता। मैं तो जहां का तहां ही होता, पर वह जैसे हवा के साथ उड़ जाती। मैं ठगा-सा वही खड़ा रह जाता। अरे भाई, मैं हूं ही क्या? बस एक मच्छर, न? भीड़-भाड़ में किसी को नज़र भी नही आता। लेकिन तुम तो..."

अपनी तर्जनी को एक अर्थपूर्ण ढंग से ऊपर उठाकर वह चुप हो जाता।

उसकी बातों से प्योत्र को दोहरा आनन्द मिलता। वे सचमुच मनोरंजक होतीं, सान्त्वना देती ; साथ ही प्योत्र यह भी जानता था कि बूढ़ा अभिनय कर रहा है। वह ईमानदारी से नहीं, बल्कि सान्त्वना देने के विचार से प्रेरित होता। यह सब समझते हुए प्योत्र सोचता –

"यह बदमाश बहुत ही होशियार है! निकीता को यह नही आता है।"

और फिर प्योत्र के स्मृति-पटल पर सान्त्वना देनेवालों के चित्र उभर आते – मेले की निर्लज्ज स्त्रिया, सरकस के विदूषक, कलाबाज़, जादूगर, साईस, गवैये, संगीतज्ञ और मानवजाति का मित्र काले बालोंवाला स्तेपान। और अल्योशा भी इन लोगो जैसा था। लेकिन तीखोन व्यालोव में ऐसा कुछ नही था। न पाउला मिनोत्ती मे ही यह बात थी।

थोड़ा नशा चढ़ने पर वह सेराफ़ीम से कहता –

"तुम झूठ बोलते हो, बूढ़े शैतान!"

लेकिन बढ़ई अपने हड़ीले घुटनों पर हाथ मारकर गम्भीरता से कहता –

"नही! तुम ज़रा सोचो तो। अगर मै सच को ही नही जानता तो भला झूठ कैसे बोल सकता हू? मै सच्चे दिल से कहता हू – अगर सच को नही जानता, तो फिर झूठ कैसे बोल सकता हू?"

"तो चुप रहा करो!"

"मैं क्या गूंगा-बहरा हू?" सेराफ़ीम स्नेहपूर्वक पूछता। उसके गुलाबी गालो पर मुस्कान फैल जाती। "मैं बूढ़ा हो गया हू और दुनिया में चन्द ही दिनो का मेहमान हू – मेरा तो सच के बिना भी काम चल सकता है। सत्य की खोज तो नौजवानो को करनी चाहिये। इसीलिये तो वे आंख पर चश्मा चढ़ाकर चलते है। मिरोन अलेक्सेयेविच चश्मा चढ़ाये घूमता है, वह सब चीज़ों को आर-पार देख लेता है। वह सब बातों को जानता है।"

प्योत्र को यह जानकर खुशी हुई कि बढ़ई को मिरोन अच्छा नही लगता और जब सेराफ़ीम ने गुसली बजाकर यह गाना शुरू किया तो प्योत्र हसी से लोट-पोट हो गया –

मिल में घूम रहा कठफोडा
ऐनक मे से घूर रहा,
समझदार मै एक यहा पर
बाक़ी बुद्धू सभी, अहा!

"ठीक कहते हो!" प्योत्र ने समर्थन किया।

और बढ़ई, जो ख़ुद भी नशे मे था, अपने छोटे-से पांव मे ताल देता हुआ गाता गया –

यह उकाब भी, बाज नही है
झपटे पक्षी जो मिल जाये,
अरे, अलेक्सी इल्यीच यह तो
भगत ईश का कहलाये!

प्योत्र अर्तामोनोव को यह गीत भी पसन्द आया और सेराफ़ीम और भी निर्लज्ज भाव से याकोव के बारे मे गाने लगा –

याशा माशा को बाहो मे भरता है
कुछ भी नही समझता है

और इस तरह यह गाना चलता रहा। कभी-कभी तो सुबह हो जाती। तब तीख़ोन व्यालोव किवाड़ पर दस्तक देता, प्योत्र अगर सो गया होता तो उसे जगाकर उदासीन भाव से कहता –

"घर जाने का समय हो गया। मिल का भोंपू अब बजने ही वाला है और मज़दूर तुम्हें देख लेगे – यह अच्छा नही होगा!"

इस पर अर्तामोनोव डाटकर चिल्लाता –

"क्या अच्छा नही होगा? मै मालिक हू!"

लेकिन आज्ञाकारी की तरह चुपचाप उठ बैठता और नीद में झूमता हुआ घर जाकर सो रहता। कभी-कभी तो वह दिन भर सोया पडा रहता और रात को फिर सेराफ़ीम के यहा आ जमता।

विनोदी बढई एक दिन काम करते-करते मर गया। वह डाक्टर के काने सहायक के पानी में डूबकर मरे बेटे के लिये ताबूत तैयार कर रहा था कि अचानक फ़र्श पर ढेर हो गया। प्योत्र अर्तामोनोव ने बूढ़े की क़ब्र तक जनाज़े के साथ जाने का निश्चय किया। गिरजाघर मे पहुंचकर उसने देखा कि वहां मिल के मज़दूर खचाखच भरे हुए हैं। लाल

सिरवाला पादरी अलेक्सान्द्र, जो पुराने, विनम्र स्वभाववाले पादरी ग्लेब के स्थान पर, जो अचानक अपना पादरी का काम छोड़कर न जाने कहां चला गया था, आया था, कठोर मुद्रा में खड़ा प्रार्थना करवा रहा था। मिल के स्कूल में पढ़ानेवाले बिल्ले जैसे ग्रेकोव द्वारा आयोजित मंडली बहुत ही सुन्दर ढंग से सहगान गा रही थी और बहुत बडी संख्या में जवान लोग उपस्थित थे।

"आज इतवार जो है," अर्तामोनोव ने इतनी बड़ी भीड़ के जमा होने के कारण सोचा।

नौजवान बुनकर सेराफ़ीम के हल्के-से ताबूत को उठाकर ले चले। कुछ बड़ी उम्र के मज़दूर दूर ही रहे। ज़िनईदा एक भड़कीला-सा ब्लाउज पहनकर, जो शोक के इस अवसर के सर्वथा अनुपयुक्त था, ताबूत के पीछे-पीछे चल रही थी। उसके मुख पर दुख की गहरी छाया थी, लेकिन आखों में आंसू न थे। साफ़-सुथरी पोशाक पहने चौड़े कन्धोंवाला मिस्त्री सेदोव उसकी बग़ल में चल रहा था। कुछ दूर सड़क के किनारे-किनारे तीख़ोन व्यालोव अपने भारी-भारी क़दमों से रेत को रौंदता चला जा रहा था। सूरज ख़ूब तेज़ चमक रहा था। गानेवाले ख़ूब ज़ोर से तथा सुर मिलाकर गा रहे थे। सबसे विचित्र बात तो यह थी कि जनाज़े के इर्द-गिर्द शोक और उदासी का वातावरण नही था।

"अच्छे ढंग से तो दफना रहे हैं," प्योत्र ने माथे का पसीना पोंछते हुए कहा। तीख़ोन रुक गया और अपने पांव की ओर देखते हुए कुछ सोचकर बोला –

"वह सबका मनोरंजन करता था। हत्थेवाले बाजे की तरह ..."

और उसने हवा में बाजे का हत्था घुमाने की हरकत की।

"बूढ़ा आदमी बाजा बजाता था और एक छोटी-सी लड़की थी जो उसके बाजे के साथ गाती थी ... बूढ़ा लोगों को सान्त्वना देता था।"

अपने मालिक की ओर अवज्ञापूर्ण, कठोर दृष्टि से देखते हुए तीख़ोन फिर बोला –

"वह लोगों को रास्ते से भटकाता था। किसी के दिल को ठेस नहीं लगाता था, लेकिन उसने सचाई की ज़िन्दगी नहीं बसर की।"

"सचाई, सचाई!" उसके मालिक ने जैसे खिल्ली उड़ायी। "तुम

इन विचारों के साथ वैसे ही ज़ंजीर से बंधे हो जैसे तुलुन अपने खूंटे से बंधा रहता था। देखना, कही उसकी तरह तुम्हारा भी दिमाग़ न ख़राब हो जाये ... "

और तेज़ी से उसकी ओर पीठ फेरकर प्योत्र घर चला आया।

अभी दोपहर नही हुई थी, लेकिन गरमी बहुत तेज़ थी। रेतीली सड़क और वायु की नीलिमा उष्णतर होती जा रही थी। शाम होते-होते आकाश में श्वेत बादलो के पर्वत-से छाकर मन्द गति से पूर्व की ओर बढ़ने लगे, जिससे वायु उमस-भरी हो गयी। अर्तामोनोव कुछ देर तक तो बगीचे में टहलता रहा, फिर फाटक की ओर निकल गया। तीख़ोन फाटक के क़ब्ज़ों पर तारकोल लगा रहा था।

"आज क्यो काम में लगे हो – आज तो इतवार है।" अर्तामोनोव ने बेंच पर बैठते हुए उदासी से कहा। तीखोन ने उसकी ओर कनखियों से देखा और धीमे स्वर में बोला –

"सेराफ़ीम हानिकारक आदमी था।"

"वह कैसे ?"

और उसके उत्तर में अर्तामोनोव को कुछ ऐसे विचित्र शब्द सुनायी दिये, मानो तिलचटे रेंग रहे हों –

"उसे ज़रूरत से ज़्यादा बातें याद रह जाती थी। जो भी देखता उसे याद करता था और देखने को मिलता ही क्या है ? बुराई, ऊब, दौड़-धूप। सो वह हरेक से इन्हीं के बारे में बातें करता था। उसने ही लोगो में गडबड़ फैलायी है। मुझे सब कुछ दिखायी दे रहा है।"

क़ब्ज़े पर ब्रश चलाते हुए तीख़ोन और अधिक कटुतापूर्वक कहता रहा –

"लोगो के दिमाग में से स्मृति को बिल्कुल मिटा देना चाहिये। स्मृति ही पाप की जड़ है। होना तो यह चाहिये कि एक पीढ़ी अपनी ज़िन्दगी बसर करके जब मरे तो उसके साथ ही उस पीढ़ी की सारी बुराइयां, उसकी समस्त मूर्खताएं भी मर जायें। जो नयी पीढ़ी पैदा हो, उसे बुरा कुछ भी याद न हो, केवल अच्छा ही याद हो। मुझे ही ले लो – मैं भी अपनी स्मृति के कारण दुःख झेल रहा हूं। मैं बूढ़ा हो गया, मुझे शान्ति चाहिये। लेकिन मुझे शान्ति कहां मिल सकती है ? शान्ति तो विस्मृति में ही है ... "

तीख़ोन ने पहले कभी इतनी बातें न की थीं और न ऐसे खीझते

हुए ही। सदा की तरह उसकी मूर्खता-भरी बातों ने आज भी अर्तामोनोव के मन में वैमनस्य की भावना जगा दी थी। उसकी झबरीली दाढ़ी, उसकी पीली, पनीली आंखों और उसके झुर्रियोंवाले पत्थर के समान कठोर माथे को ग़ौर से देखकर अर्तामोनोव एक बार फिर उसकी नित्य-प्रति बढ़ती हुई कुरूपता से हैरान हुआ। तीख़ोन के माथे की झुर्रियां वैसे ही गहरी थी, जैसे टख़नों पर जूते मे गहरी सिलवटें पड़ जाती हैं। उसके गाल जिन पर बुढ़ापे के कारण बाल झड़ गये थे, भूरे दिखायी देते थे और उसकी नाक के रोमछिद्र स्पंज जैसे हो गये थे।

"सठिया गया है – हर समय बक-झक करता रहता है – अब काम करने के योग्य नही रहा। मैं इसे बर्खास्त कर दूंगा। इनाम दे दूंगा।"

एक हाथ में ब्रश और दूसरे में तारकोल की बालटी लिये तीख़ोन मालिक के पास आ पहुंचा। कच्चे मांस की तरह लाल रंग की मिल की इमारत की ओर इशारा करते हुए उसने कहा –

"काश तुम लोगों की बातें सुन पाते – छैले मेदोव, काने मोरोज़ोव, उसके भाई ज़ाख़ार और ज़िनईदा की बातें – सब दो टूक कहते हैं – जो कारोबार दूसरे लोगो की मेहनत से बना है, उसे नष्ट कर देना चाहिये.. "

"ऐसा लगता है, उन्होने तुमसे शिक्षा ली है," मालिक ने ताना दिया।

"मुझसे शिक्षा ली है?" तीख़ोन ने सिर हिलाया। "नही, यह मेरी शिक्षा नही है, ऐसी बेकार बातों से मुझे क्या मतलब? यदि सब लोग स्वयं मेहनत करें तो दुनिया की सभी मुसीबतें और बुराइया दूर हो जायें। लेकिन वे तो कहते हैं – सब कुछ हमने किया है, हम मालिक हैं! देखो, प्योत्र इल्यीच, वैसे तो उनकी बात ठीक ही है। यह सब उनका ही किया हुआ है। उन्होंने तुम्हें कारोबार में जोत दिया, तुमने इस गाड़ी को कीचड़ में से निकालकर अच्छे पथ पर ला खड़ा किया। और अब ..."

प्योत्र उठ खड़ा हुआ। दोनों हाथ जेब में डालकर तीख़ोन के सिर के पीछे बिखरे बादलों को देखते और बेशक शब्दों को कुछ गड़बड़ाते हुए उसने दृढ़ निश्चय के स्वर में कहा – "देखो, मैं यह खूब अच्छी तरह से समझता हूं कि तुमने अपनी सारी ज़िन्दगी मेरे पास ही बिता

दी है। लेकिन अब तुम्हारी उम्र ढल गयी है, तुम्हारे लिये अब काम करना मुश्किल होगा।"

"सेराफ़ीम इनकी ऐसी बातों का समर्थन करता था," तीख़ोन ने मालिक की बात अनसुनी करके अपनी बात जारी रखी।

"ज़रा रुको। तुम्हारे लिये आराम करने का वक़्त आ गया है..."

"बेशक, सभी लोगों के लिये, ठीक है न?"

"ठहरो, तुम्हारे जैसे स्वभाववाले के साथ निभाना बहुत मुश्किल काम है..."

तीख़ोन व्यालोव अपनी बर्ख़ास्तगी पर ज़रा भी हैरान नही हुआ। वह शान्त स्वर में बुदबुदाया – "अच्छा, तो..."

"तुम्हें मुआवज़े के रूप में अच्छी-ख़ासी रक़म दी जायेगी," प्योत्र ने चौकीदार की आवेशहीन मुद्रा को देखकर झेंपते हुए कहा। तीख़ोन चुपचाप अपने धूल-भरे बूटों पर तारकोल लगाता रहा। प्योत्र ने फिर दृढ़ निश्चय के स्वर में कहा –

"अच्छा, तो तय हो गया, विदा!"

"अच्छी बात है," तीख़ोन ने उत्तर दिया।

प्योत्र नदी के किनारे की ओर चल दिया – उसे आशा थी कि वहां ठंडक होगी। उस चीड वृक्ष के नीचे, जहां इल्या के साथ उसका झगड़ा हुआ था, सेराफीम ने उसके लिये बर्च की सफ़ेद टहनियां काटकर एक तरह की आरामकुर्सी बना दी थी। वह यहा बैठकर मिल की इमारत, घर, अहाता, मज़दूरों की बस्ती, गिरजाघर और क़ब्रिस्तान – सब कुछ देख सकता था। मिल के अस्पताल तथा स्कूल की विशाल खिड़कियां बरफ़ की तरह झिलमिला रही थी। मनुष्यों की नन्ही-नन्ही आकृतियां करघे की घिन्नी की तरह कारोबार के असीम ताने-बाने में इधर से उधर फिरती थी। बस्ती की रेतीली सड़क पर और भी अधिक नन्ही-नन्ही आकृतियां इधर-उधर रेंग रही थी। गिरजे के पास की भूरी घास पर बकरियों का झुड चर रहा था और खिलौनों के समान दिखायी दे रहा था। यह बकरियां डाक्टर के काने सहकारी मोरोज़ोव ने पाल रखी थीं – मिल की बहुत-सी औरतें अपने बच्चों के लिये बकरी का दूध खरीदती थी। अस्पताल के परे घास के बिना वर्गाकार अहाते में रोगी घूम रहे थे। उनके पीले लबादों और सफ़ेद टोपियों को देखकर लगता था जैसे पागलख़ाने के जीव हों। मिल के आसपास पक्षियों के

झुण्ड आ बसे थे। कौए, गौरैयां और सफ़ेद पहलुओं की रेशमी चमक दिखाते हुए मैगपाई इधर-उधर उड़ रहे थे। नीलगूं कबूतर ज़मीन पर घूम रहे थे। नदी-किनारे के भटियारख़ाने के आस-पास, जहां सन लाने-वाले किसान ठहरते थे, पक्षियों की संख्या और भी अधिक थी।

पिछले कुछ दिनों से इन सब चीज़ों से प्योत्र के मन को उल्लास और गर्व की अनुभूति नहीं होती थी। ये सब उसके दिल को तरह-तरह की ठेस लगाने के स्रोत थे। उसके भाई, भतीजे और दूसरे लोग हर समय बंजारों की तरह हाथ मटकाकर चीख़ते-चिल्लाते रहते थे, कारोबार में बड़ा होने के बावजूद उसकी तरफ़ ध्यान तक नहीं देते थे। जब वह कोई बात कहता, तो सब अपनी सहमति दिखाने के लिये चुप्पी का अभिनय करते और बाद में अपनी मनमानी करते। इस तरह की बात बहुत दिनों से चली आती थी, उस समय से जब उन्होंने प्योत्र के विरोध के बावजूद भी बिजली-स्टेशन बनाया था। बाद में प्योत्र भी समझ गया था कि बिजली से काम सस्ता तथा सुविधाजनक होता है। परन्तु उसके मर्मस्थल की चोट वैसी ही रही। छोटी-मोटी चोटें तो लगती ही रहती थी, संख्या में बढकर वे और भी तीव्र होती जाती थी।

प्योत्र का भतीजा मिरोन उद्दण्डता मे सबमे बाज़ी ले गया था। पढाई ख़त्म करने के बाद वह स्कूल की वर्दी की जगह विदेशी क़िस्म की चमड़े की जैकेट पहनने लगा था। सुनहरी चश्मे से लेकर पीले जूतो तक उसकी हर चीज़ चमचमाती रहती। अपनी आंखें सिकोड़कर, माथे पर बल डालकर वह कहता –

"ये बाते अब पुरानी हो गयीं, चचाजान, ज़माना बदल गया है।"

लगता था कि वह ज़माने से घबराता था, जैसे कोई नौकर सख़्त मालिक से डरता है। लेकिन यही चीज़ थी जिससे वह डरता था और बाक़ी सब बातो में बेहद गुस्ताख़ था। एक बार तो उसने यहां तक कह डाला –

"सुनो चाचा, तुम्हारे जैसे लोगों के रहते अब रूस का काम नही चल सकता।"

प्योत्र के होश हवा हो गये थे। वह यह भी न पूछ सका – क्यों?

वह बहुत खिन्न होकर घर चला गया। इस घटना के बाद कई हफ़्तों तक वह अपने भाई के घर नही गया और मिल में सामना होने

पर उसने मिरोन से बात नही की।

मिरोन का विचार वेरा पोपोवा की बेटी से विवाह करने का था, जो अपनी मां की तरह, जिसके बाल सफ़ेद हो गये थे और जीवन के प्रति उदासीन थी, लम्बी और सुडौल थी। उन सब लोगों की तरह वह भी हर चीज़ को खीसें निपोड़कर देखती थी। उसकी बड़ी-बडी आंखे अविश्वास और निर्लज्जता से चमकती रहती थी। वह सुबह से शाम तक मक्खी की तरह गुनगुनाती हुई चित्रकला का अभ्यास करती रहती, चित्रपट को शोख़ रंगो से रंगकर बिगाड़ देती। रिबन से बंधा उसका तिनकों का हैट सदा पीठ पर भूलता रहता और उसके सुनहरे बाल धूप मे खुले रहते। उसकी पोशाक भद्दी होती थी और उसके ऊंचे घाघरे में से घुटनों तक उसकी टांगें दिखाई देती रहती।

उस कमबख़्त गोरीत्स्वेतोव की तो शक्ल देखकर ही प्योत्र को चिढ होती थी। वह तीर की तरह सनसनाता सामने आता और उसी क्षण ग़ायब हो जाता। लोगों पर पागल कुत्ते की तरह झपटता और सदा एक ही बात कहता –

"तुम लोग भावनाहीन अमरीका की नक़ल करके रूस के आध्यात्मिक वैभव का नाश करना चाहते हो। लोगों के लिये तुम एक चूहादानी लगा रहे हो..."

कभी-कभी प्योत्र को इन बातो मे सचाई की झलक दिखायी देती, लेकिन आम तौर पर उसे लगता कि इन बातो मे तीख़ोन की सी मूर्खता भरी हुई है, यद्यपि वह जानता था कि उस गर्म और तुनकमिज़ाज गोरीत्स्वेतोव और टेढे स्वभाव तथा उदासीन प्रवृत्तिवाले तीख़ोन में ज़मीन-आसमान का अन्तर है। गोरीत्स्वेतोव येलिज़ावेता पोपोवा को डाटकर कहता –

"आप ऐसे चुप क्यों रहती हैं, आप जो ऊंचे आदर्शोंवाली है?"

पोपोवा की कंजी, उदास आंखें मुस्करा उठती, पर उसके चेहरे का गर्व और भावहीनता ज्यों की त्यो बनी रहती। ये लोग विचित्र ढंग के शब्दों का प्रयोग करते, जिन्हें समझना प्योत्र के लिये कठिन हो जाता।

"यह रोमासवाद की यातना है," मिरोन अपने चश्मे को साफ़ करता हुआ कहता।

अल्योशा अक्सर मास्को जाता रहता। मोटा-थल्ला याकोव सदा की भांति अलग-थलग ही बना रहता और बहुत कम बोलता। लेकिन वह जो कुछ भी कहता, उसमें ज़रूर पैनी नोक रहती होगी, वरना मिरोन और गोरीत्स्वेतोव दोनों उसकी बात से हमेशा तिलमिला न उठते। याकोव ने तातारों जैसी छोटी ललछौंही दाढ़ी रख ली थी और दाढ़ी के साथ-साथ उसमें उपेक्षा भाव से हर किसी की खिल्ली उड़ाने की प्रवृत्ति भी बढ़ती जा रही थी। अर्तामोनोव को इन चुस्त लोगों से अपने बेटे के इतमीनान से कहने से हार्दिक प्रसन्नता होती –

"अगर इतनी तेज़ी से ऊपर चढ़ना चाहोगे तो एक न एक दिन मुंह के बल नीचे गिरोगे। आख़िर तुम लोग सीधे-सादे ढंग से क्यों नहीं रह सकते?"

प्योत्र अर्तामोनोव और याकोव दोनों को ही यह सुनकर अजब-सा लगा कि येलिज़ावेता पोपोवा ने एक दिन अचानक मास्को जाकर गोरीत्स्वेतोव से शादी कर ली है। मिरोन ग़ुस्से से पागल हो गया और अपनी भावना को छिपा न सका। अपनी नुकीली दाढी को उंगली से ऐंठते हुए उसने रूखे स्वर मे पाखंडियों की तरह कहा –

"स्तेपान गोरीत्स्वेतोव जैसे लोग उस नस्ल की पैदावार है जो अब मिट रही है। दुनिया में कही भी आपको उसके जैसे निकम्मे और व्यर्थ के मनुष्य न मिलेगे।"

पर याकोव ने जले पर नमक छिड़का –

"लेकिन फिर भी इस निकम्मी नस्ल का ही एक आदमी तुम्हारी नाक के नीचे से तुम्हारी प्रेयसी को ले भागा!"

अपने कंधों को झटककर मिरोन ने उत्तर दिया –

"मैं कोई रोमामवादी नही हूं।"

"क्या? क्या नही हो तुम?" प्योत्र ने पूछा और मिरोन ने एक-एक शब्द का ऐसे उच्चारण करते हुए उत्तर दिया, जैसे कोई न्यायाधीश फ़ैसला सुना रहा हो –

"कोई यह नहीं समझता कि रोमांसवादी क्या होता है और चाचा जी, आप भी नहीं समझ सकेंगे। यह तो सौंदर्य के लिये ही कुछ है – जैसे गंजी खोपड़ी पर विग।"

"अहा! तुम्हारी नाक कट गयी है!" प्योत्र अर्तामोनोव ने खुश होते हुए सोचा।

इन चुस्त लोगों से, जो उसे नित्य ही आघात पहुंचाते रहते थे और जो सारे व्यापार पर मज़बूती से अपना पंजा जमाते जाते थे और उसे एक तरफ़, एकान्त में खदेड़ते जाते थे, बदला लेने के रूप में इस तरह के तुच्छ सन्तोष प्योत्र को सुखद लगते। अपने इस एकान्त में भी उसे उदासी-भरा सुख मिलने लगा। इस एकान्त ने उसे एक दूसरे ही कुछ-कुछ जाने-पहचाने व्यक्ति से परिचय कराया – वह व्यक्ति भिन्न प्रकार की प्रवृत्तियोंवाला उसके अंतःकरण का प्योत्र अर्तामोनोव था।

यह आदमी भला था, मगर बेहद चोट खाया हुआ। जीवन ने उसके साथ वैसा ही अन्यायपूर्ण व्यवहार किया था जैसा सौतेली मां सौतेले बेटे के साथ करती है। उसने अपने पिता के मूक, आज्ञाकारी सेवक के रूप मे जीवन प्रारम्भ किया। पिता ने उसे किसी तरह की खुशियां नही दीं, बल्कि एक बुद्धू और नीरस बीवी उसके पल्ले बांध दी और उसके कंधो पर एक विशाल और जटिल कारोबार का भारी बोझ डाल दिया था। ठीक है कि उसकी पत्नी उससे प्रेम करती थी और विवाह का प्रारम्भिक वर्ष सुखद भी रहा था, लेकिन अब वह जानता था कि ज़िनईदा जैसी दुश्चरित्र लड़की भी अपने प्यार में उसकी पत्नी से कही अधिक गर्मी और चटपटापन भर सकती है। मेलेवाली चतुर, चंचल तितलियों की तो बात ही अलग थी। उसकी पत्नी का जीवन डर में बीता था, प्रारम्भिक दिनों में वह अल्योशा और मिट्टी के तेल के लैम्पों से डरती थी, बाद में उसे बिजली के बल्बों से डर लगता था। उनमें रोशनी देखते ही वह चौंककर क्रॉस का चिह्न बनाने लगती थी। एक बार मेले में ग्रामोफ़ोन की दुकान पर उसके कारण प्योत्र को बहुत लज्जित होना पडा था।

"हाय! इसे मत खरीदो! शायद इसमे शैतान की आत्मा बैठी हो!" उसने गिड़गिड़ाकर पति से प्रार्थना की थी।

आजकल उसे मिरोन, डाक्टर याकोव्लेव और अपनी ही बेटी तात्याना से डर लगता था। काफी मोटी होते हुए भी वह सबेरे से रात तक खाती ही रहती थी। उसके कारण छोटे भाई निकीता ने अपने को लगभग फांसी लगा ली थी। बच्चे उसका आदर नही करते थे। जब उसने याकोव को शादी करने की सलाह दी तो वह बिगड़कर बोला –

"अम्मा, यही अच्छा होगा कि तुम कुछ खा लो।"

उसने नम्रतापूर्वक और डांवांडोल मन से उत्तर देती –

"लगता है कि मेरा दिल नहीं चाहता।"

और फिर खाने लगती।

पिता ने याकोव से कहा –

"मां का मज़ाक़ क्यों उड़ाते हो? तुम्हारी शादी हो ही जानी चाहिये!"

"आजकल परिवार के झंझटों में फंसने का वक़्त नही है," याकोव ने कामकाजी ढंग से जवाब दिया।

"तुम सब लोग वक़्त से डरते क्यों रहते हो?" प्योत्र ने क्रोध से पूछा। बेटे ने कोई उत्तर न देकर सिर्फ़ कन्धे झटक दिये।

याकोव भी अक्सर कहता –

"पिता जी, आप समझते नहीं।"

वह नम्रता से यह कहता, लेकिन यह सम्भव नही था कि पिता पुत्र की अपेक्षा कम जाने-समझे। लोग अतीत की ओर देखते है न कि भविष्य की ओर। यही दुनिया की रीति है।

बड़ा बेटा इल्या, जो पिता का लाड़ला था, जा चुका था। उसके प्रेम के कारण पिता ने ऐसा काम कर डाला था, जिसे याद करते ही आत्मा कांप उठती थी।

बड़ी बेटी येलेना, जो अब भारी-भरकम स्त्री बन गयी थी, शराबी पति के धन-दौलत और लाड़-प्यार के कारण बिल्कुल परायी हो गयी थी। वह खूब बढ़िया ढंग से पहने-ओढ़े कभी-कभी मां-बाप से मिलने आती थी। उसकी उंगलियां अंगूठियों से भरी रहती और गले में सोने के हार रहते। अपने सुनहरी चश्मे को ऊपर उठाकर वह थकी-थकी-सी आवाज़ में कहती –

"यहां कैसी दुर्गन्ध बसी रहती है। सारा घर सड़-गल गया है। आप लोग नया घर क्यो नही बनाते? अब मिल के पास कौन रहता है!"

एक दिन प्योत्र ने संयोगवश येलेना को मा से यह कहते सुना –

"पिता जी ज़रा भी नही बदले? तुम उनके साथ ऊब जाती होगी! मेरा छैला तो पीता-पिलाता है, शरारती है, लेकिन बड़ा खुशमिजाज है।"

येलेना को सफ़ाई करने का जनून था। बैठने से पहले वह रूमाल से कुर्सी पोंछती। उसके कपड़े इतने अधिक सुगन्धित होते कि लोगो

को छीकें आने लगतीं। अपने घर के प्रति उसकी अवहेलना तथा अपमान-जनक घिन को देखकर प्योत्र का मन बदला लेने के लिये भड़क उठता। येलेना की उपस्थिति में वह जानबूझकर अंडरवियर पहने, ड्रेसिंग गाऊन की पेटी खोले और मोज़ो के बिना रबड़ के जूते पहने घर तथा अहाते में चक्कर काटता। खाने के समय वह फूहड़ ढग से खाना चबाता और डकार लेता। बेटी क्रोध मे तड़प उठती—

"पिता जी, यह सब क्या है?"

प्योत्र यही चाहता था।

"क्षमा करना, मेम साहब! तुम तो जानती हो, मैं देहाती आदमी हू।"

वह जानबूझकर पहले मे ज़्यादा ज़ोर से खाना चबाने की आवाज़ पैदा करता और डकारे लेता।

येलेना विदेशों की सैर भी कर आयी थी। सन्ध्या के समय वह मानो मन मारकर मां को तरह-तरह की गप्पे सुनाती रहती: एक शहर में औरते साबुन और ब्रश से घर की बाहरी दीवारें धोती थी, तो दूसरे शहर मे साल भर इतना कुहरा रहता था कि सडको की बत्तिया दिन भर जलती रहती थी। लेकिन फिर भी कुछ दिखायी नही देता था। पेरिस की दुकानों में कपड़े बिकते थे और वहा एक इतनी ऊची मीनार थी कि उस पर से समुद्र-पार के शहर भी दिखायी देते थे।

येलेना अपनी छोटी बहन के साथ हर समय लड़ती-झगडती रहती। तात्याना दुबली-पतली थी, उसकी त्वचा काली थी और उसे अपनी बदसूरती का गहरा क्षोभ था। उसे देखकर छोटे पादरी की याद आ जाती। शायद ऐसा उसकी छोटी-सी चोटी, सपाट छाती और नीली-सी नाक के कारण ही था। वह अपनी बहन के साथ शहर में रहती थी। वह हाई स्कूल की परीक्षा मे फ़ेल हो गयी थी। उसे चूहों से डर लगता था। वह मिरोन की तरह ज़ार के अधिकारो को सीमित करने के पक्ष में थी। हाल ही में उसने सिगरेट पीना भी सीख लिया था। गर्मी की छुट्टियों में जब वह घर आयी तो मां को नौकरों की तरह डांटती, पिता के साथ दात पीसते हुए बोलती, दिन भर किताबें पढ़ती और शाम को वह अपने चाचा के यहां नगर चली जाती। सोने के दातोंवाला डाक्टर याकोव्लेव उसे घर पहुंचाने आता। रात को किसी की याद में तड़पने के कारण न सोती और सैंडलों से मच्छरों को दीवार पर ऐसे

दनादन मारती रहती मानो पिस्तौल से गोलियां चला रही हो।

प्योत्र को दुनिया की हर चीज़ में शोर-गुल, मूर्खता और अजनबीपन दिखायी देता था। मिरोन के उद्दण्डतापूर्ण शब्दों से लेकर वास्का के मूर्खता-भरे गाने तक उसे व्यथित कर देते थे। कोयला झोंकनेवाले इस लंगड़े वास्का के बाल बिखरे रहते और वह छुट्टी के दिन बावर्चिन के प्रति अपना प्रेम जताने के लिये रसोई के आसपास अपना बाजा लेकर चक्कर काटता। वह आखें बन्द करके ऊंचे स्वर में गाता –

हाय, बनी है बहुत बुरी-सी
अब तो यह आदत मेरी!
यही चाहता हर क्षण देखूं
मैं थूथन, मूरत तेरी!

बहुत दिनों से ओलगा ने उसे इल्या का कोई समाचार नहीं दिया था। इधर प्योत्र अपने नये, आहत व्यक्ति के रूप में हर समय बड़े लड़के के विषय में सोचता रहता। शायद इल्या को अपनी ज़िद का फल मिल गया हो। अल्योशा के यहां उसके प्रति बदला हुआ रवैया इसका सबूत था। एक दिन शाम को भाई के घर की ड्योढ़ी में कोट उतारते हुए उसने मास्को से लौटे मिरोन को यह कहते सुना –

"इल्या उन लोगो में से है जो किताबों के माध्यम से ही दुनिया देखते है – वे गाय और घोड़े में अन्तर नही बता सकते।"

"यह झूठ है," प्योत्र ने भतीजे की इस शत्रुतापूर्ण सम्मति से कुछ संतोष का अनुभव करते हुए सोचा।

अल्योशा ने पूछा –

"क्या वह गोरीत्स्वेतोव के दल जैसा ही है?"

"उससे भी हानिकर," मिरोन ने कहा।

कमरे में आकर प्योत्र ने मन ही मन उन्हें धमकी दी –

"ज़रा सब्र करो, वह वापिस आने पर तुम्हारी अक़्ल ठिकाने करेगा ..."

मिरोन ने फ़ौरन मास्को के किस्से बनाने शुरू किये – उसे सरकार की मूर्खता पर क्षोभ था। इतने में नतालिया और याकोव आ गये। मिरोन काग़ज़ बनाने की मिल के विषय में बातें करने लगा। वह बहुत दिनों से उन लोगों को इसके लिये परेशान कर रहा था।

"चचा देखो, हमारी कितनी पूंजी बेकार पड़ी है," मिरोन ने कहा। नतालिया के कान तक क्रोध से लाल हो गये। उसने चिल्लाते हुए आपत्ति की –

"कहां पड़ी है पूंजी? किसके पास पड़ी है पूंजी?"

प्योत्र को सहसा उदासी ने आ घेरा, मानो किसी ने एक ऐसे कमरे का दरवाज़ा खोल दिया हो जिसमें सब चीज़ें परिचित हों, जैसी की तैसी, जिससे कमरे मे रिक्तता-सी दिखायी देती हो। ऐसी अप्रत्याशित उदासी का आक्रमण होते ही प्योत्र के कानों और आंखों पर एक कुहरा-सा छा जाता। मन में मृत्यु और रोग सम्बन्धी विचार भर जाते।

"तुम सब मेरी नाक में दम कर देते हो, कभी एक क्षण को आराम भी करने दोगे?" प्योत्र ने कहा।

याकोव बुड़बुड़ाया –

"जितना कुछ है, वही काफ़ी मुसीबत है..."

और नतालिया ने चिल्लाकर कहा –

"जैसा कुछ चल रहा है इसमें भी मज़दूरों के मारे बाहर तक नही निकल सकते! चारों ओर शराबख़ोरी और व्यभिचार..."

प्योत्र खिडकी के पास जा खड़ा हुआ। बगीचे में मुह ऊपर उठाये तीख़ोन एक नन्ही लड़की को सेब का पेड़ दिखा रहा था।

"अरे, वाह रे, आदम," प्योत्र ने मन ही मन सोचा। उसकी ऊब दूर हो गयी। इस तरह के दूर के विचार कभी-कभार ही चूहों की तरह उसके मन मे आ जाते थे। प्योत्र उनके आने से बहुत प्रसन्न होता था, क्योंकि वे बिजली की चमक की तरह उसे परेशान किये बिना आकर चले जाते – बस इतना ही।

तीख़ोन का मामला भी बड़ा पेचीदा था। प्योत्र को यह बात बहुत बुरी लगी थी कि कोई एक वर्ष तक ग़ायब रहने के बाद जब तीख़ोन ने आकर मठ से निकीता के कही चले जाने का समाचार सुनाया तो भाई अल्योशा ने उसे अपने यहां नौकर रख लिया। प्योत्र को विश्वास था कि तीख़ोन को निकीता का पता मालूम है और वह सिर्फ़ इसलिये वह पता नही बता रहा है कि उसे दूसरों का दिल दुखाना अच्छा लगता है। इस आदमी के कारण दोनों भाइयों में झगड़ा भी हो गया। अल्योशा ने तीख़ोन का पक्ष लेते हुए अकाट्य तर्क प्रस्तुत किया –

"ज़रा सोचो तो। जो आदमी जीवन भर हमारे लिये काम करता

रहा, तुम उसे निकाल दो, क्या यह उचित होगा?"

प्योत्र जानता था कि उसने अनुचित काम किया है, लेकिन तीखोन को बर्दाश्त करना अब उसके लिये असम्भव था। जीवन में पहली बार उसकी पत्नी ने अल्योशा का पक्ष लिया था। उसने दृढ़ निश्चय के स्वर में अपना मत प्रकट किया –

"प्योत्र इल्यीच, यह ठीक नही। तुम जो चाहे कहो, लेकिन यह बात अनुचित है!"

ओलगा की सहायता से विरोधी पक्ष ने उसे राज़ी और शान्त किया था। लेकिन उसके भीतर का आहत व्यक्ति जीत गया था।

"देखा! तुम्हारी मर्ज़ी किसी के लिये भी क़ानून नही बन सकती। समझे!" प्योत्र के अन्तर में बैठा आहत व्यक्ति उभरकर सामने आता-जाता था और स्पष्ट आकार ग्रहण करता जाता था। अपने भारी-भरकम शरीर को घसीटता हुआ प्योत्र पहाड़ी पर जाता और चीड़ के नीचे अपनी आरामकुर्सी पर बैठकर अन्तर के आहत पुरुष के बारे में सोचता – अपने हृदय की सारी करुणा उस पर उंडेल देता। इस अभागे पुरुष को, जिसे न कभी ठीक से समझा गया, न पसन्द किया गया, यद्यपि उसमे इतने अच्छे गुण थे, अपने दृष्टि-पट पर लाने मे उसका मन एक विचित्र माधुर्य और कटुता से भर जाता। वह अन्तर का पुरुष शून्य मे मे निकलकर तुरन्त आकार ग्रहण कर लेता, जैसे गर्म दिनों में दलदलों के ऊपर नीले शून्य मे न जाने कहा से बादलों की सफ़ेद धुंध-सी छा जाती है।

फिर वहा से मिल और उसके कारण अस्तित्व मे आनेवाली सभी चीज़ों पर एक विहंगम दृष्टि डालकर वह आदमी सोचता –

"इन सब के बिना भी ज़िन्दगी गुज़ारी जा सकती है।"

लेकिन मिल का स्वामी अर्तामोनोव इस पर आपत्ति करता –

"यह तो तीखोन के समान विचार है।"

"पादरी ग्लेब भी तो यही कहता था और गोरीत्स्वेतोव और अनेक लोग भी तो यही कहते हैं। यह सच है कि लोग एक मकड़े के जाले में फंसी हुई मक्खियों के समान है।"

"लेकिन तुम कुछ किये बिना कुछ नही पा सकते," मिल का स्वामी प्योत्र उत्तर देता।

कभी-कभी उसके भीतर इन दो व्यक्तियों का मूक वाद-विवाद

उग्र रूप धारण कर लेता और वह अन्तर का आहत व्यक्ति निर्मम होकर चीख़ उठता –

"याद है न, उस दिन मेले में नशे में चूर होने पर तुम चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे थे कि तुमने अपने बेटे को वैसे ही बलिदान कर दिया जैसे अब्राहम ने इसाक को बलिदान कर दिया था, और यह कि दुम्बे की जगह पर निकोनोव का बेटा तुम्हारे मत्थे मढ़ दिया गया था, याद है? यह बात एकदम सच्ची है! और इसी सचाई के कारण तुमने मेरे सिर पर एक बोतल दे मारी थी। तुमने मुझे कुचल डाला था, मार डाला था! तुमने मेरी बलि भी दी थी। किसे, किसे मेरी बलि दी थी? मीगोवाले देवता को जिसकी चर्चा निकीता ने की थी? उसे? ओह, तुम ..."

इन वाद-विवादों के समय मिल का स्वामी प्योत्र क्रोध और अपमान के कड़वे आसुओं को थामने के लिये आंखें मीच लेता, किन्तु आंसुओ की बाढ़ बह निकलती। वह अपने गालो पर से बहते हुए आसुओं को पोंछता और फिर अपनी दोनों हथेलियो को रगड़कर सुखा देता। वह अपनी सूजी हुई लाल हथेलियों को शून्य दृष्टि मे ताकता रहता और फिर शराब की बोतल को ही मुंह लगाकर बडे-बड़े घूंट भरते हुए उसे पी जाता।

अपने सारे रोने-धोने के बावजूद भी प्योत्र अपने अन्तर के आहत व्यक्ति के बिना नही जी सकता था। वह स्नान-गृह के उस सेवक की भांति था, जो आपकी पीठ पर, जहा आपका अपना हाथ नहीं पहुंचता, मुलायम, सुखद झागवाला स्पंज मलता है।

अचानक साइबेरिया के परे से रूस को भयकर आघात पहुंचा।*

अल्योशा हाथ में अख़बार लिये कुर्सी से उछल पड़ा और चिल्लाया –

"लूट, दिन दहाड़े लूट!" और वह अपने छोटे-से हाथ को छत की ओर उठाकर और उगलियों को गुस्से से हिलाते हुए चीख़ा –

"हम उन्हें ... हम उन्हें मज़ा चखा देंगे!"

सोने के दांतवाला डाक्टर जेब में हाथ डाले अंगीठी की टाइलों का सहारा लेकर खड़ा हुआ बुदबुदा रहा था –

"शायद वे ही हमें मज़ा चखा दें।"

* यहा रूसी-जापानी (१९०४–१९०५) युद्ध की ओर सकेत है। – स०

निस्सन्देह यह लम्बा, लाल रंग का व्यक्ति मज़ाक़ उड़ा रहा था। हर बात का मज़ाक़ उड़ाना उसकी आदत थी। बीमारी और मौत तक की बातें वह इस तरह व्यंग-भरी मुस्कराहट से करता जैसे कि वह ओंठ बिचकाकर ताश की हारी बाज़ी के बारे में बातें कर रहा हो। प्योत्र को ऐसा लगता कि डाक्टर एक विदेशी की तरह है, जो अपने लिये पराये लोगों की बातें समझने में असमर्थ हो। प्योत्र को डाक्टर नापसन्द था और उसे उस पर विश्वास नहीं था। बीमारी की हालत में वह गुमसुम जर्मन डाक्टर क्रोन को बुलाना अधिक पसन्द करता था।

मिरोन सारस की तरह कमरे में चक्कर लगा रहा था। उसकी उंगलियां अन्यमनस्क भाव से दाढ़ी से खेल रही थीं। उसके चिड़चिड़ेपन को देखकर लगता था मानो उसके सिर में पीड़ा हो रही हो। वह सबको उपदेश दे रहा था –

"यह मामला हमें अंग्रेज़ों को साझीदार बनाकर शुरू करना चाहिये था .."

"कौन-सा मामला?" प्योत्र ने कई बार पूछा, लेकिन न तो उसका चुस्त भाई और न योग्य भतीजा ही इस अकस्मात युद्ध के कारण के विषय में समझदारी से कुछ बता सका। इन आत्मविश्वासी सर्वज्ञ लोगों की परेशानी देखकर मन को सन्तोष होता, विशेषकर अल्योशा को देखकर। उसके विचित्र व्यवहार से ऐसा लगता मानो इस अकस्मात युद्ध के छिड़ जाने से उसके, अल्योशा अर्तामोनोव के किसी गूढ़ उद्देश्य को क्षति पहुंची हो।

एक धार्मिक जलूस का आयोजन किया गया। घनी दाढ़ियोवाले प्रभावशाली व्यापारी सुनहरी छटावाले पादरियो के पीछे-पीछे बहुत ही बड़ी मात्रा में पड़ी बर्फ़ को रौंदते हुए चले जा रहे थे। वे हाथों में देवताओ की प्रतिमाएं उठाये हुए थे और झंडे फहरा रहे थे। शहर के सब गिरजों की भजन-मण्डलियों का सम्मिलित स्वर आकाश मे गूंज उठा –

"हे भगवान, लोगो की रक्षा करो..."

इस प्रार्थना में विनती की अपेक्षा मांग की भावना अधिक थी। भजन-मंडली के गवैयों के गोल मुंहों से ये शब्द सफ़ेद भाप की तरह निकलकर उनकी भौंहों और मूंछों तथा बेसुरे ढंग से गानेवाले व्यापारियों की दाढ़ियों में जम जाते थे। गाड़ी बनानेवाले का बेटा मेयर वोरोपोनोव

तो ख़ास तौर पर तीखे, ज़ोरदार और बेसुरे ढंग से गा रहा था। लाल गालोंवाले, सीपी के बटन-सी आंखोंवाले, मोटे वोरोपोनोव ने जायदाद के साथ-साथ अर्तामोनोव परिवार के विरुद्ध घोर शत्रुता भी विरासत में पायी थी।

अर्तामोनोव परिवार के सातो व्यक्ति एकसाथ चल रहे थे। लंगड़ाता अल्योशा और उसकी पत्नी, फिर याकोव, नतालिया और तात्याना, उनके पीछे मिरोन और डाक्टर, और सबसे पीछे नरम बूट पहने प्योत्र।

"समूचा राष्ट्र," मिरोन ने धीमे स्वर में कहा।

"शक्ति की परेड," डाक्टर बोला।

मिरोन अपने चश्मे को उतारकर रूमाल से साफ़ करने लगा। डाक्टर ने इतना और कह दिया –

"देख लेना, मुंह की खानी पडेगी!"

"हुंह ... गीली लकड़ी है, आग पकड़ने में काफी समय लगेगा ..."

"ख़ामोश रहो," प्योत्र ने अपने भतीजे को डाटकर कहा। मिरोन ने चचा की ओर कनखियो से देखा और फिर अपनी लम्बी नाक को उगलियो से छूकर चश्मा लगा लिया।

"हे भगवान, लोगो की रक्षा करो!" वोरोपोनोव ने ऊंचे स्वर मे भगवान से मांग की। उसने पीछे मुडकर नगर के लोगों को देखा और अपनी फ़र की टोपी हिला दी।

पोम्यलोव की बेटी ऊचे स्वर मे गा रही थी। चालीस के लगभग होने पर भी उसके शरीर में ताज़गी थी और उसके वक्ष ऊंचे और सुडौल थे। वह तीन बार विधवा हो चुकी थी और निर्लज्जता और उच्छृखल जीवन के लिये सारे शहर मे आगे-आगे रहती थी। प्योत्र ने उसे नतालिया से यह कहते सुना –

"बहन, तुम अपने पति को युद्ध में क्यो नही भेज देती। ऐसे कुरूप को देखते ही दुश्मन भाग खड़ा होगा।"

फिर वह याकोव की ओर मुड़कर बोली –

"क्यों बेटे, शादी क्यों नही करते, आवारागर्द कही के?"

प्योत्र ने अपने सिर को झटका दिया। यह सारे शब्द उसके मस्तिष्क में मक्खियो की तरह भिनभिना रहे थे। वह भीड़ में से निकलकर आ-हिस्ता-आहिस्ता चल दिया। विशाल जनसमूह आगे बढ़ गया। दूध जैसी सफ़ेद बरफ़ की पृष्ठभूमि में लोग असाधारण रूप से काले लग रहे

थे। उनके मुंह से ऐसी सफ़ेद सांस निकल रही थी जैसे समोवार से भाप।

कठोर मुद्रावाली वेरा पोपोवा स्कूल की लड़कियो का नंगे सिर नेतृत्व कर रही थी। उसके पके, सफ़ेद बालों पर हिम-बिन्दु चमक रहे थे। अर्तामोनोव का अभिवादन करते समय उसकी बरफ़ से ढंकी बरौनियां कांप उठी। प्योत्र को उस पर दया आ गयी –

"मूर्खा कही की! बत्तखें चरानेवाली बन गयी है।"

इसके बाद मुंडे सिरों की बारी आयी। नगर के दोनों स्कूलों के लड़के पंक्तिबद्ध होकर जा रहे थे। उनके पीछे सैनिकों की आधी कम्पनी थी, जिसका शान्तचित्त लेफ़्टिनेन्ट मावरिन नेतृत्व कर रहा था। यह आदमी सारे शहर में चर्चा का विषय बना हुआ था, वह वसन्त के आरम्भ से प्रथम हिमपात तक ओका नदी में स्नान करता था और पोम्यलोव की बेटी के साथ अनुचित सम्बन्ध रखते हुए रहता था और उसका पैसा उडाता था।

उसके बाद हंस की तरह मोटा-ताज़ा, चीनी मूछोंवाला पुलिस अफ़सर नेस्तेरेंको शान से अकड़कर चल रहा था। उसकी बीमार पत्नी अपने भाई जितेइकिन की बांह का सहारा लेकर चल रही थी। स्वर्गीय मेयर का बेटा जितेइकिन अब चमडे की मिल का मालिक था। उसके बारे में प्रसिद्ध था कि मठवासियो के साथ रगरेलियां करने के बावजूद भी उसने सात सौ किताबें पढी थी और ढोल बजाने में वह अपना सानी नही रखता था, यहां तक कि गुप्त रूप मे सैनिको को यह कला सिखाता भी था।

मास का पिण्ड स्तेपान बास्कीं अपने पियक्कड दामाद और भेंगी लड़की के साथ स्लेज में बैठा हुआ गुज़रा। उनके पीछे साधारण जनता का विशाल जन-समूह था, जिसमे निम्न-मध्यवर्ग के लोग, चमड़े की मिल के मज़दूर, बुनकर, गाडीसाज़, भिखारी और कुछ बूढी लावारिस स्त्रियां भी थी, जिन्हें देखकर चूहो की याद आती थी। लोगो के नंगे सिरो पर बर्फ़ मानो अनिच्छा मे गिर रही थी। दूर कही मे वोरोपोनोव की माग करती आवाज़ सुनायी दी –

"हे भगवान, लोगो की रक्षा करो..."

"भगवान को भला इन लोगों की क्या ज़रूरत है?" प्योत्र ने सोचा। उसे शहर के लोगों से नफ़रत थी और व्यापारिक सम्बन्धों

के अतिरिक्त वह उनसे किसी प्रकार का नाता नही रखना चाहता था। नगर के लोग भी उसे उद्दण्ड और अहंकारी समझकर उससे घृणा करते थे। लेकिन अल्योशा के प्रति उनके मन में अपार आदर था, क्योंकि वह शहर को सम्पन्न बनाना चाहता था – उसने मुख्य सड़क पक्की करवा दी थी, मैदान के चारों ओर लिंडन के वृक्ष लगवा दिये थे तथा ओका नदी के किनारे पार्क बनवा दिया था। मिरोन और याकोव से वे डरते थे और लालची समझते थे, कहते थे कि वे सारी दुनिया को हड़प जाना चाहते थे।

मन्दगति से चलनेवाले इस गम्भीर जलूस को देखकर प्योत्र ने नाक-भौं सिकोड़ ली – असंख्य अपरिचित आखें उसकी ओर लगी थी। सब मे वही विरोध की भावना झलक रही थी।

अल्योशा के घर के फाटक पर तीख़ोन ने उसका अभिवादन किया। प्योत्र ने पूछा –

"तीखोन, लड रहे है क्यों?"

तीख़ोन ने चुपचाप आदत के अनुसार अपना गाल सहलाया। प्योत्र ने सवाल किया –

"तुम्हारी क्या राय है?" आज पहली बार उसके स्वर में विश्वास था।

"यह बच्चों का खेल है," तीख़ोन ने तुरंत इस तरह उत्तर दिया मानो वह इस प्रश्न की प्रतीक्षा मे था।

"तुम्हें सब बातें बच्चो का खेल ही दिखायी देती है," अर्तामोनोव ने संदिग्ध स्वर में कहा।

"बेशक। आख़िर हम क्या कुत्ते हैं? हम दरिन्दे तो नही है।"

प्योत्र छोटे-छोटे, धूल जैसे हिमकणो के बीच में आगे बढ़ गया, जन-समूह बर्फ़ से लदे वृक्षों और छतों की ओट में छिप गया।

सेराफ़ीम की मृत्यु के बाद अब प्योत्र तईसिया परक्लीतोवा से सान्त्वना प्राप्त करता था। अनिश्चित आयु की पादरी की यह विधवा देखने में किशोरी और श्यामा बकरी की तरह लगती थी। वह प्राय चुप रहती और प्योत्र की हर बात का समर्थन करती –

"ठीक है, प्यारे! हां, प्यारे, यही बात है!"

प्योत्र बहुत शराब पीता। लेकिन उसका प्रभाव धीरे-धीरे होता, जिससे उसे खीझ होती, क्योंकि तईसिया की तेज़, मज़ेदार शराब के

बावजूद उसके मन पर छाये उदासी-भरे विचार बहुत देर तक दूर नहीं होते थे। शुरू में वह अपने और लोगों के बारे मे उसके विचारों को और ज़हरीले बना देती, जीवन को अधिक क्रूरता और तीव्रता प्रदान करती। उसे लगता कि यह तीव्रता उसे घुमा रही है, चक्कर दे रही है और किसी भी क्षण किसी अनिश्चित ढाल पर गिरा देगी। प्योत्र दांत पीसकर अपने मन की धुंधली अशान्ति को सुनता, उसे घूरता, फिर चिल्लाकर पादरिन से कहता –

"कुछ बोलती क्यों नही? कोई नयी बात है?"

यह स्त्री बकरी की तरह छलाग मारकर उसके घुटनों पर आ बैठती। यह अद्भुत रूप मे हल्की-फुल्की और स्नेहमयी थी। मानो एक पुस्तक के पन्ने पलटते हुए वह कहती –

"पोम्यलोव की बेटी ने लेफ़्टिनेन्ट मावरिन को बर्ख़ास्त कर दिया। ताश में वह तीन सौ बीस रूबल हार गया है। वह उससे वसूली के लिये हुडी देना चाहती है, उसके पास उसकी हुडी है। जानते हो, फ़ौजी पुलिस अफ़सर अपनी बीमार पत्नी को अपने साथ क्यो नही रखता? क्योंकि नगर में उसकी प्रेमिका है "

"यह सब गन्दी बकवास है," प्योत्र कहता।

"गन्दी बकवास, मेरे प्यारे, गन्दी बकवास!"

नगर की गन्दी अफ़वाहों की उसकी बकवास सुनकर प्योत्र के विचार विभिन्न दिशाओ मे दौड़ने लगते। ऊब-भरे पापियो – यानी नगरवासियों – के प्रति उसकी घृणा को और अधिक बल मिलता। उसे रह-रहकर मेले की ज़ोरदार शराबनोशी याद आ जाती। वहां लोग पागल-से होकर इधर-उधर भागते-फिरते थे – उनकी नशे मे चूर, अतृप्त आंखें लालच मे निकली-सी पड़ती थी, वे नोट जलाते थे और वासना के उन्माद में आकर काली पृष्ठभूमि मे पड़ी गोरी-चिट्टी, निर्लज्ज नग्न स्त्री की ओर झपटते थे .

प्योत्र चुपचाप रंग-बिरंगी शराबों को पीता और फिसलनेवाले अचारी कुकुरमुत्ते खाता। नशे में उसे लगता कि संसार का सबसे प्यारा शक्तिशाली वरदान, दुनिया की सचाई अपने नग्न शरीर का प्रदर्शन करनेवाली उस लम्पट स्त्री मे है जो पैसे के लिये नंगी होती है और जिसकी खातिर धनी लोग अपना पैसा, इज़्ज़त और स्वास्थ्य बर्बाद करते हैं। लेकिन अब उसके जीवन में इस श्यामा बकरी के

सिवा कुछ न था, जो उसके घुटनों पर बैठी थी।

"अपने कपड़े उतारो! नाचो!" प्योत्र दहाड़ता।

"बिना संगीत के कैसे नाचूं?" पादरिन अपने कपड़ों के बटन खोलते हुए कहती। "क्यो न शिकारी नोस्कोव को यहां बुला ले – वह बाजा अच्छा बजाता है.. "

ऐसे मनोरंजनो में समय तेज़ी से बीत जाता। बीच-बीच में कोई घटना मन को विचलित कर देती। सर्दियों मे यह खबर आयी कि पीटर्सबर्ग में मज़दूरों ने राजमहल को ध्वंस कर जार को क़त्ल करने की कोशिश की है।

तीख़ोन गुर्राया –

"गिरजों को भी तोड़ेंगे। बर्दाश्त करने की भी एक हद होती है।"

गर्मियों मे खबर आयी कि रूसी समुद्रो में एक रूसी जहाज़ घूम रहा है और तटवर्ती शहरो पर गोलाबारी कर रहा है। तीख़ोन बोला –

"वे भला ऐसा करेंगे क्यों नही? लड़ने के आदी जो हैं!"

फिर धार्मिक जलूस निकाला गया। भूरे कोटवाले वोरोपोनोव ने जार की बड़ी-सी तस्वीर उठाकर प्रार्थना की –

"हे भगवान, लोगों की रक्षा करो!"

इस बार वह पहले की अपेक्षा और अधिक जोर से चिल्लाया, और अधिक क्रोधपूर्वक, किन्तु सहायता की माग करनेवाले उसके स्वरो में चिन्ता की गूंज थी।

शराब के नशे में चूर और नगे सिर जितेइकिन की गजी लाल खोपडी चमक रही थी। वह चमडे की मिल के मज़दूरो के आगे-आगे चल रहा था। उसके हाथ में दुनाली बन्दूक थी और वह गरज-गरजकर चिल्ला रहा था –

"दोस्तो! हम रूस को यहूदियों को नही देंगे। रूस हमारा है!"

"हमारा है," नशे मे धुत्त चर्मकार चिल्लाये। अपने पुराने दुश्मनो – बुनकर मज़दूरों – का सामना होते ही दोनों दलों में टक्कर हो गयी। डाक्टर याकोव्लेव को डंडा मारा गया और बूढ़े दवाफ़रोश को नदी में फेंक दिया गया। जितेइकिन ने उसके बेटे का पीछा किया और दो बार उस पर गोली चलायी। निशाना चूक गया और दर्ज़ी ब्रुस्कोव की पीठ घायल हो गयी।

मिल बन्द हो गयी। तरुण बुनकरों ने आवेश में आकर अपनी

आस्तीनें चढ़ा लीं। मिरोन जैसे सलाहकारों और औरतों के आंसुओं की परवाह न करके वे नगर की ओर भाग चले।

मिल सुनसान पड़ी थी। सनसनाती हवा में उसका आकार संकुचित होता प्रतीत होने लगा। लगता था कि हवा भी विद्रोह में चीख रही हो और दीवारों पर बर्फ़ की वर्षा के छींटे मार रही हो, फिर चिमनी को बर्फ़ से ढंक रही हो और क्षण भर बाद उसे धो डालती हो।

प्योत्र खिड़की के पास बैठा शून्य दृष्टि से नगर से और नगर की ओर जानेवाली सड़क पर बढ़े जा रहे लोगों की चीटियों-सी आकृतियां देख रहा था। खिड़की के शीशे मे से लोगों की आवाज़ें आ रही थी – लगता था वे खुशियां मना रहे हैं। फाटक के पास मज़दूरों के दल में ज़ोरों से अकार्डियन बज रहा था और कोयला झोंकनेवाला लंगड़ा वास्का क्रोतोव गा रहा था –

तग हुई अब अपनी पृथ्वी
लड़ते हम जापान से !
लिये देव-प्रतिमाए घूमे
वह सिर तोडे शान से।

नगर की ओर से हवा के झोंके में आनेवाली लोगों के असन्तोष की ध्वनि ऐसी लग रही थी, मानो झील भर का पानी किसी बड़े समोवार में उबलकर बुदबुदा रहा हो। अल्योशा की गाड़ी फाटक में मुड़ी। डाक्टर का काना सहकारी मोरोज़ोव कोचवान की सीट पर बैठा था। शाल में लिपटी ओलगा गाड़ी से कूद पड़ी। टांगों का दर्द भूलकर प्योत्र हड़बड़ाकर उतर पडा –

"क्या बात है ?"

घबरायी हुई मुर्ग़ी की तरह कांपकर ओलगा बोली –

"चर्मकारों ने हमारी खिड़किया तोड़ डालीं .."

उसके लिये रास्ता छोडकर प्योत्र एक ओर हट गया। खीसें निपोड़कर वह बुदबुदाया –

"तो यह मामला है... तुम लोगों की बातों का यह नतीजा निकला ! मेरा तो विरोध करते थे और अब यह हाल हो रहा है ! जी नहीं, ज़ार..."

ओलगा अकस्मात ज़ोर से चिल्ला उठी –

"बस करो! तुम्हारा ज़ार पक्का बेईमान है!"

"तुम्हें ज़ारों के बारे में बहुत अधिक ज्ञान है!" प्योत्र ने अपने कान की ललरी को छूते हुए खिसियाकर कहा।

इस चश्मेवाली स्त्री के अचानक क्रोध को देखकर प्योत्र चकित रह गया। वह प्रायः शान्त रहती थी, कभी किसी पर टीका-टिप्पणी नही करती थी। उसके शब्दों में आश्चर्यचकित करनेवाली निश्छलता थी, हालांकि वह वैसी नगण्य और अर्थहीन थी जैसे कि बैल के अनजाने मे चुहिया की दुम कुचलने पर चुहिया का बिलबिलाना। प्योत्र अपनी आरामकुर्सी पर बैठकर चिन्तामग्न हो गया।

वह कई हफ़्तों से ओलगा से नही मिला था, मिरोन से झगडा होने के बाद उससे कन्नी काटता था। गर्मियों के अन्तिम दिनों में पैरो मे सूजन के कारण प्योत्र जब बिस्तर पर पडा था तो उस समय पसीने से तर वोरोपोनोव उसके पास आया और अपने मोटे नीले होंठो को चाटते हुए उसने प्योत्र से जार को भेजे जानेवाले एक तार पर हस्ताक्षर करने को कहा। तार में ज़ार से प्रार्थना की गयी थी कि वह किसी के सामने न झुकें और दृढ़ रहे। प्योत्र को मेयर के दुस्साहस पर आश्चर्य हुआ, लेकिन अल्योशा और मिरोन को चिढाने के लिये उसने हस्ताक्षर कर दिये। उसे यह भी विश्वास था कि पीटर्सबर्ग से वोरोपोनोव को करारी डाट पड़ेगी: मोटे होठोंवाले मूर्ख, बिना कहे अपने से बडों के मामले मे टाग मत अड़ाओ!

वोरोपोनोव ने कागज़ को जेब मे रखकर कोट के सब बटन बन्द कर लिये। वह अल्योशा, मिरोन, डाक्टर और उन लोगों के विरुद्ध शिकायत करने लगा, जो यहूदियों के बहकावे में आकर ज़ार के विरुद्ध काम कर रहे थे। उसका कहना था कि कुछ लोग तो स्वार्थवश ऐसा करते हैं और कुछ अज्ञान के कारण। अर्तामोनोव ने बड़ी खुशी से ये शिकायते सुनी और सिर हिलाकर अनुमोदन किया। लेकिन जब वोरोपोनोव ने वेरा पोपोवा के ख़िलाफ़ ज़हर उगलना शुरू किया तो प्योत्र की त्यौरिया चढ़ गयी –

"वेरा निकोलायेव्ना का इससे कोई सम्बन्ध नहीं है।"

"क्या मतलब, कोई सम्बन्ध नही? हमें मालूम है..."

"तुम्हें कुछ मालूम नही।"

"तो ठीक है, आप लोग मुसीबत में फंसें," मेयर धमकी देकर चला गया।

उसी दिन शाम को प्योत्र का भतीजा और बेटी उस पर पिल पड़े। उसकी उम्र का कुछ ख़्याल न रख वे कुत्तों की तरह भूंकने लगे –

"पिता, तुम क्या कर रहे हो?" तात्याना चिल्लायी। उसके कुरूप चेहरे पर आखें विक्षिप्तता से बाहर निकली पड़ रही थीं। याकोव खिड़की के पास खडा शीशे पर ताल दे रहा था। प्योत्र को लगा कि उसका बेटा भी उसके ख़िलाफ़ है। मिरोन ने ताने से पूछा –

"आपने तार पढा कि उसमें क्या लिखा था?"

"नही, मैंने नही पढ़ा! लेकिन मुझे मालूम है उसमें क्या लिखा था – पिल्लों को छूट नही मिलनी चाहिये!"

मिरोन और तात्याना को उत्तेजित देखना उसे अच्छा लग रहा था, लेकिन याकोव की चुप्पी ने उसे उद्विग्न कर दिया। उसे अपने पुत्र की व्यावसायिक चतुराई पर भरोसा था और उसे लगा कि शायद उसने उसके हित के विपरीत कार्य किया है। लेकिन याकोव का विचार जानने के लिये उसे इस बहस में घसीट लेने के मामले मे उसका स्वाभिमान उसके आड़े आ रहा था। वह लेटे-लेटे गुर्रा-चिल्ला रहा था और मिरोन नाक फरफराते हुए यह कहता जा रहा था –

"आप इस बात को समझिये कि ज़ार ठगों के गिरोह से घिरा हुआ है। उन्हें हटाकर उनकी जगह पर ईमानदार लोगों को लाना ज़रूरी है.."

प्योत्र जानता था कि मिरोन स्वय इन ईमानदार लोगो की श्रेणी में आना चाहता है। अल्योशा इसी उद्देश्य से मिरोन को राज्य दूमा का सदस्य बनवाने के लिये मास्को हो आया था। अपने सारस जैसे भतीजे के ज़ार के निकट खड़े होने की कल्पना ही हास्यास्पद और भयावह थी। यकायक अल्योशा झपटा हुआ आया। उसके कपड़े और बाल सब अस्त-व्यस्त थे। आते ही वह उसे फटकारने लगा –

"पागल आदमी, तुम्हें पता है कि तुम क्या कर रहे हो?"

ऐसा लगता था जैसे वह किसी क्लर्क को डाट रहा हो।

"भाड़ में जाओ! बड़े आये मुझे अक्ल सिखानेवाले! तुम सब जहन्नुम में जाओ! दफ़ा हो जाओ यहा से!" प्योत्र को स्वयं अपने आकस्मिक क्रोध पर आश्चर्य हुआ।

और अब कोने में बैठते हुए नगर में विद्रोह की बात सुनते हुए प्योत्र को इस झगड़े की याद आ रही थी और वह यह समझने की कोशिश कर रहा था कि कौन सही है – वह या वे लोग?

ओलगा के बच्चों जैसे क्रोधपूर्ण शब्दों से वह विशेष रूप से उद्विग्न हो उठा था। किन्तु अब वह शान्त हो गयी थी, यहां तक कि स्नेह से बोली –

"हमारे बुनकर कितने अच्छे हैं! उन्होंने देखते-देखते ही वोरोपोनोव के मज़दूरों और चर्मकारों को भगा दिया। अब वे घर की रखवाली कर रहे हैं ."

नतालिया डर से सहमी बैठी थी। वह क्रोध से भभककर बोली –

"तुम्हारा घर ही तो सारी मुसीबत की जड़ है। बहुत अच्छा हुआ, जैसी करनी – वैसी भरनी।"

इतने मे मिरोन आ धमका और दुआ-सलाम के बिना लचीली चाल से कमरे में टहलते हुए उसने धमकियों की बौछार शुरू कर दी –

"लोगो को उपद्रव के लिये उकसानेवाले वोरोपोनोव और जितेइ-किन जैसे लोगों को भारी क़ीमत चुकानी पड़ेगी। ये लोग ऐसी आसानी से बचकर नही जा सकते, इन पर जवाबी चोट पडेगी! इल्या पेत्रोविच अर्तामोनोव के मित्रों का सिखाया विद्रोह का पाठ ही काफी है और अगर ये भी शुरू कर देगे तो . "

प्योत्र चुप रहा।

वोरोपोनोव की अर्ज़ी के झगड़े के बाद प्योत्र को मिरोन से सख़्त नफरत हो गयी थी। लेकिन सारी मिल मिरोन के हाथ मे थी। वह कुशलता से विश्वासपूर्वक काम चलाता था। मज़दूर उसकी बात मानते या उससे डरते थे, नगर के मज़दूरो की तुलना में वे अधिक सयत और नम्र व्यवहार करते थे।

बरफ़बारी हो जाने के कारण हवा बंद हो गयी। खिड़किया सफ़ेद बर्फ के पर्दों से ढंक गयी और अहाता दृष्टि से ओझल हो गया। कोई प्योत्र से बात तक न करता था और उसे लगा कि नतालिया के सिवा सब लोग हर बात के लिये उसे ही दोषी मानते है। उपद्रव, बुरा मौसम, ज़ार की करतूते – सभी चीजें उसके मत्थे मढ़ दी गयी हैं।

"याकोव कहां गया? मैं पूछती हूं याकोव कहां गया?" मां ने चिन्तित स्वर में पूछा।

मिरोन ने चाची की नज़र बचा, मुंह बिचकाकर घृणा से कहा –

"अपने दरबे में छिपा पड़ा होगा।"

"क्या? कहां?" नतालिया भयभीत होकर बोली।

प्योत्र सोच रहा था –

"शायद इस बुद्धू औरत को याकोव की प्रेमिका के बारे में कुछ भी पता नही।"

अचानक प्योत्र ने दृढ़ स्वर में कहा –

"सुनो, जैसे चाहो, रहो! जो मन में आये, करो। मेरी समझ में कुछ नही आता। यह सही है, मै बूढ़ा हो गया हू, और... और यहां शैतान अपने रंग दिखा रहा है। मैंने ज़िदगी के दिन पूरे किये, लेकिन मैं कुछ नहीं समझता .."

४

छब्बीस वर्ष की आयु तक याकोव अर्तामोनोव ने आराम और शान्ति का जीवन बिताया था। अप्रिय और कटु अनुभवो ने तब तक उसके जीवन मे विष न घोला था, लेकिन वह आ ही गया। यह तब हुआ जब शान्ति के प्रेमियो के शत्रु क्रूर काल ने झूठ और फ़रेब से भरा एक नाटक रचा और याकोव को उसका सूत्रधार बनना पड़ा। यह नाटक उस विद्रोह के तीन वर्ष बाद, जिसने दीर्घकाल से मन मसोस-कर शान्त रहनेवाली जनता के हृदयों मे तूफ़ान जगा दिया था, एक अप्रैल की रात को शुरू हुआ।

याकोव सोफ़े पर लेटा सिगरेट पी रहा था। उसके मन मे एक ऐसी तृप्ति छायी थी, जब कोई भी इच्छा न रहती। इस तृप्ति को वह जीवन में सर्वोपरि मानता था। उसकी दृष्टि मे यह तृप्ति ही जीवन का उद्देश्य और वास्तविक मूल्य थी। यह तृप्ति स्वादु भोजन खाने और एक स्त्री का उपभोग कर लेने के उपरान्त समान रूप से सुखद होती थी।

गदराये और सुगठित शरीरवाली स्त्री कमरे के बीच मेज़ के पास खड़ी विचारपूर्ण मुद्रा में कॉफ़ी के बर्तन के नीचे स्पिरिट से जलने-वाले स्टोव की तेज़ बैंगनी लपटों की ओर देख रही थी। लैम्प की

रोशनी लाल शेड में से छनकर उसकी नंगी बांहों और बाल-सुलभ मुख पर चमक रही थी। उसके काले अस्त-व्यस्त बाल गर्दन और कन्धों पर बिखरे हुए थे। अपने नग्न शरीर को वह बुखारा के सुनहरे रंग के गाउन से ढंके थी और उसके पैरों में हरे बढ़िया चमड़े के स्लीपर थे। पोलीना ऐसी हल्की-फुल्की थी कि मानो रूसी न हो। उसका छोटा प्रफुल्ल मुख किसी किशोर बालक का सा लगता था। उसकी आंखें चेरी के फल की भांति गोल और होठ भरे हुए थे। उससे पूरी तृप्ति पाने के बाद भी वह याकोव को आकर्षक लग रही थी। निस्सन्देह अभी तक वह जिन लडकियों से परिचित था, उनसे वह कहीं अधिक सुन्दर थी। यदि उसका स्वभाव मूर्खतापूर्ण न होता, तो वह लाजवाब होती।

"मुझे और कॉफ़ी नही चाहिये, मेरी जान!" याकोव ने सिगरेट का धुआ उड़ाते हुए कहा। पोलीना ने उसकी ओर देखे बिना ही पूछा–

"और मुझे?"

"मै क्या जानू, तुम्हें क्या चाहिये?" याकोव ने थकी-सी जम्हाई लेते हुए कहा।

"तुम अच्छी तरह जानते हो!" लडकी ने झुंझलाकर खरी-खोटी सुनायी। कुछ क्षणो तक उसके तीखे और चुभते शब्द सुनने के बाद याकोव उठ खडा हुआ। उसने सिगरेट ज़मीन पर फेककर जूते चढाये। फिर गहरी सांस लेकर बोला–

"मेरी समझ में नही आता कि तुम रंग में भंग क्यों करती हो? तुम अच्छी तरह जानती हो कि पिता के मरने से पहले मै तुम्हारे साथ विवाह नही कर सकता .."

यह सुनकर पोलीना ने हमेशा की तरह ताने मारने शुरू किये–

"तुम्हे तो हर समय रगरेलिया चाहिये, मकडे कही के! मै जानती हूं, रगरेलियों की खातिर तुम मुझे तातार कबाड़ी के यहां भी बेच आओगे! तुम्हें अपनी इज़्ज़त-आबरू का ख़्याल हो, तब न .."

जब वह उसे "मकड़ा" कहती तो याकोव को यह अच्छा नही लगता था, किन्तु प्रेम के क्षणों में वह उसे एक दूसरे मनोरंजक नाम से पुकारती–"मेरे चटपटे साजन।" कम से कम उसकी राय के अनुसार आज उसे उससे झगड़ा करना नहीं चाहिये था। अभी दो घण्टे पहले उसने पोलीना को सौ रूबल दिये थे।

"चीखने-चिल्लाने से कुछ न बनेगा," याकोव ने चेतावनी दी और सिर पर टोपी लगाकर हाथ बढ़ाया, "सलाम!"

"सूअर! फिर सिगरेट के टोटे तमाम फ़र्श पर बिखेर दिये.."

सडक पर सीली-सीली हवा चल रही थी। बादलों की छाया धरती पर रेंग रही थी, मानो पानी के गड्ढों को सुखाना चाहती हो। क्षण भर के लिये जब चन्द्रमा ने नीचे झांककर देखा, तो ये गड्ढे, जिन पर बर्फ़ की झिल्ली छा रही थी, ताबे की तरह चमक उठे। इस वर्ष सर्दियों का मौसम बसन्त के आगमन को जबरन रोक रहा था। अभी कल ही खूब बर्फ पड़ी थी।

याकोव अर्तामोनोव जेबों में हाथ डाले, अपनी मोटी छड़ी को बगल में दबाये धीमी चाल से चलता जा रहा था। वह सोच रहा था, आखिर किस कारण लोग इतने मूर्ख होते है। इस प्यारी मूर्ख लड़की पोलीना के जीवन मे भला किस चीज की कमी है? वह आराम से रहती है। उसे न कोई चिन्ता है, न परेशानी। उसे कीमती उपहार भेट किये जाते है, वह कीमती कपडे पहनती है, ऊपर से हर महीने सौ रूबल खर्च को मिलते है। वह उसे चाहती है, याकोव यह जानता था। फिर उसे और क्या चाहिये? उसे विवाह की क्या ज़रूरत है?

"मुरब्बे के मर्तबान मे बैठे चूहे-सी मूर्ख," याकोव ने सोचा। यह उसकी, अपने मन से गढी हुई प्रिय कहावत थी। जीवन उसे एक सीधी-सादी चीज लगता था, जो एक मनुष्य से कुछ अधिक नही मांगता – जो है वही पर्याप्त है। आखिर बात तो बिल्कुल स्पष्ट है – सब लोग एक ही लक्ष्य के लिये, पूर्ण शान्ति पाने के लिये प्रयत्नशील है – दिन की दौड़-धूप रात की शान्ति की भूमिका ही तो है। उस शान्ति की, जिसके चन्द घंटों मे पुरुष एक स्त्री के साथ होता है और उसके प्यार की सुखद थकान से चूर होकर गहरी नीद सो जाता है। वास्तव में यही महत्त्वपूर्ण है, यही सत्य है। सब लोग मूर्ख है, क्योंकि लगभग सभी स्पष्ट या गुप्त रूप से अपने को उससे अधिक बुद्धिमान समझते है। उन्होंने इतनी व्यर्थ की चीज़े ईजाद कर ली हैं। कदाचित एक विशेष प्रकार के अन्धेपन के कारण, क्योंकि हर व्यक्ति दूसरों के मुक़ाबले में अपने को विशिष्ट साबित करने के लिये परेशान है, ताकि वह कहीं भीड़ में न खो जाये, अपने को भूल न जाये।

बुद्धू इल्या भी विद्यार्थी जीवन में ही किताबों के फेर में पड़ गया

और अब कहीं समाजवादियों के गिर्द चक्कर काट रहा है। उसने कई बार याकोव को अपमानित किया था और अब इल्या साइबेरिया में था। याकोव ने कुछ दिन पहले उसको वहा पैसे भेजे थे। उनकी मां असह्य और हास्यास्पद रूप से मूर्ख है, नीरस स्वभाववाला उसका पिता और असह्य तथा असाध्य रूप से मूर्ख है। यह बूढा भालू किसी के साथ भी बनाकर नही रख सकता, वह हमेशा नशे मे धुत्त और गन्दा है। दौड़-धूप करनेवाला, बेचैन चचा अल्योशा राज्य दूमा का सदस्य बनना चाहता है। इस इरादे से वह भूखे भेड़िये की तरह अख़-बारों को चाटता है और शहर में हर किसी से बनावटी मिठास मे बोलता है। मिल के मज़दूरों को अधेड कामुक स्त्री की तरह रिझाता फिरता है। सबसे अधिक दुखदायी मूर्ख तो वह लम्बी नाकवाला कठ-फोडवा मिरोन है जो अपने को देश का सबसे योग्य व्यक्ति समझता है और सचमुच ही उसे विश्वास है कि वह भविष्य मे कभी मन्त्रिमण्डल का सदस्य बन जायेगा। रही वर्तमान की बात, तो वह इस विश्वास को छिपाने का प्रयत्न नही करता कि सिर्फ वही स्पष्ट देखता है कि क्या करना चाहिये और सबको कैसे सोचना चाहिये। वह भी मज़दूरो की सहानुभूति अपनी ओर करने मे लगा है। इसलिये वह तरह-तरह के मनोरंजन जुटाता है, फुटबाल की टीमें बनाता है और पुस्तकालय खोलता है। गाजरे खिलाकर भेडियो को पालतू बनाना चाहता है।

सुन्दर कपडे बुननेवाले मजदूर फटे-चीथडे पहनने, गन्दी कोठरियों मे नशे मे पडे रहते। वे सबके सब भी एक बड़ी मूर्खता के शिकार थे और उनमें सीधे-सादे किसान जैसी चतुराई भी न थी। याकोव हर समय मज़दूरो के बारे में सोचता रहता, क्योंकि उसे रोज़ मज़दूरों से वास्ता पडता था। बचपन से ही उसके मन मे उनके प्रति तीव्र घृणा थी। छोकरियो के कारण बीसियो बार उसकी बुनकरों से लडाइयां हुई थीं। पहले के प्रतिद्वंद्वियों में से कुछ तो अब तक अपने पुराने क्षोभ को न भूले थे। युवावस्था में ही वह दो बार रात को पत्थरों की बौछार सह चुका था। अनेक बार उसकी मां को बदनामी से बचने के लिये रुपये देकर चीखती हुई औरतो का मुंह बन्द करना पड़ा था। ऐसे मौकों पर उसकी मां हास्यास्पद ढंग से उसे समझाती हुई कहती –

"तुम भी क्या करते फिरते हो? छुट्टे साड की तरह घूमते हो। शादी होने तक अपने को रोक नहीं सकते? नहीं तो फिर एक को चुन-

कर उसके ही होकर रहो। अगर कहीं तुम्हारे पिता तक बात तो वह तुम्हें इल्या की तरह निकाल बाहर करेंगे ..."

गड़बड़ी के पिछले दो-तीन वर्षों में याकोव को मिल में कोई विशेष चिन्ता की बात नहीं दिखायी दी। तो भी मिरोन की बाते, चचा अल्योशा की आहें और अख़बार तो थे ही जिन्हें पढ़ने का उन्हें क़तई शौक़ नही था। फिर भी उसे अनिच्छापूर्वक राज्य दूमा में दिये गये मज़दूर प्रतिनिधियों के भाषण पढ़ने पड़ते। इस सबसे मज़दूरों के प्रति उसकी घृणा और भी बढ़ती, उसमें उन पर निर्भरता की अपमानजनक भावना पैदा होती। उसे लगता कि उसने मज़ाक़ों, मुस्कानों और छोटी-मोटी रियायतों के पीछे अपनी इस भावना को चालाकी से छिपाना सीख लिया है। वैसे तो समग्र रूप में जीवन बुरा नही था, किन्तु कभी-कभी याकोव के मन में एक विचित्र प्रकार की ग्लानि-सी पैदा होती। उसे ऐसा लगता मानो उनका मालिक, यानी वह ख़ुद, मज़दूरों के यहां बहुत दिनों से टिका हुआ है, जिससे उसके मेज़बान तंग आ गये हैं और उसे देख-देखकर चुपचाप सोचते है –

"तुम निकलते क्यों नही? इसका वक़्त आ गया है!"

ऐसे क्षणो में उसे धुंधली-सी आशका होती कि मिल में कुछ छिपा हुआ, कुछ अदृश्य-सा सुलग-सा रहा है, जो उसके लिये, व्यक्तिगत रूप से उसके ही लिये अति हानिकर होता है।

याकोव को विश्वास था कि मानव ख़ुद सीधा-सादा होता है और यह सिधाई उसकी सबसे प्रिय इच्छा रहती है। अपने आप मानव दुश्चिन्ता नही उपजाता, अपने में उसके बीज नही रखता। ऐसे विषैले विचार तो मानव के बाहर कही बाह्य वातावरण से आते है और जब वे उसके मन पर आक्रमण करते है तो वह बड़ा ही अजीब हो जाता है। इन विचारों को न जानना और उन्हे अपने अन्दर न पनपने देना ही सबसे अच्छा है। लेकिन इन विचारों का विरोध करते हुए भी याकोव अपने आस-पास के व्यक्तियो को इन विचारो का शिकार पाता था। वह देखता कि वे उसके चारों ओर फैली मूर्खता की कठिन गांठो को सुलझा नही पाते और जिन स्पष्ट और सीधी चीज़ों को वह प्यार करता है, उन्हें उलझा ही देते हैं।

अपने परिचितों में से उसे तीख़ोन व्यालोव ही सबसे अधिक बुद्धिमान लगता था। तीख़ोन के अथक परिश्रम तथा दूसरे लोगों के प्रति

संयत भाव को देखकर याकोव को उससे ईर्ष्या होती थी। यहां तक कि सोते समय भी तीख़ोन बुद्धिमान दिखायी देता – उसके कान तकिये पर दबे रहते, मानो वह कुछ सुन रहा हो।

याकोव पूछता –

"क्या तुम्हें सपने आते है?"

"मुझे क्यों आने लगे? मै क्या औरत हूं?" तीख़ोन उत्तर देता और इन शब्दों के पीछे याकोव को एक दृढ़ और परिपक्व शक्ति का भान होता, अडिग शक्ति का।

"स्त्रियो के से सपने!" चचा अल्योशा के घर होनेवाली बहसो को सुनकर याकोव सोचता। उसे मन ही मन हंसी आती।

याकोव बड़ी मुश्किल से ही अपने को सोचने के लिये विवश करता। जब वह सोचने लगता तो उसका शरीर शिथिल हो जाता, मानो उस पर भारी बोझ आ पडा हो। सिर और आंखें नीचे झुक जाती। जिस रात को वह पोलीना को छोड़कर बाहर निकला, उस समय भी विचारों मे डूबा हुआ था। इसीलिये उसे अधेरे में से निकलता तगड़ा काला आकार तब तक दिखायी न दिया, जब तक कि वह उसके सामने न आ गया। उसका हाथ याकोव के सिर पर उठता दिखायी दिया। याकोव ने तुरन्त घुटने के बल बैठकर जेब से पिस्तौल निकाली और आक्रमण-कारी की टाग पर गोली चलायी। गोली की आवाज़ धीमी और अस्पष्ट थी, लेकिन वह मनुष्य उछल पड़ा। उसका कन्धा बाड़े से टकरा गया और वह कराहकर बाडे के सहारे बैठ गया।

तभी याकोव ने अनुभव किया कि वह बहुत अधिक डर गया है, इतना अधिक कि वह चिल्लाना चाहता था, पर उसके मुह से आवाज़ न निकलती थी। उसने उठने की कोशिश की, लेकिन उसके हाथ-पावों ने जवाब दे दिया। दो क़दमो की दूरी पर वह व्यक्ति ऐठ रहा था, वह भी उठने की कोशिश कर रहा था। उसकी टोपी गिर गयी थी, जिससे उसके घुंघराले बाल दिखायी दे रहे थे।

"शैतान! मैं तुझे गोली मार दूंगा," याकोव ने पिस्तौल तानकर फटी-सी आवाज़ में कहा। घूमने से उस आदमी का चौडा चेहरा सामने हुआ, वह बुदबुदाया –

"तुम तो मुझे गोली मार भी चुके हो..."

उस व्यक्ति को पहचानते ही याकोव की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी –

"नोस्कोव! कुत्ते कही के, तुम हो?"

याकोव का भय तुरन्त दूर हो गया और वह मन ही मन प्रसन्न भी हुआ – इसीलिये नही कि उसपर किया गया हमला असफल रहा, बल्कि इसलिये भी कि आक्रमणकारी उसकी मिल का मज़दूर नहीं था। नोस्कोव शिकार मारकर और लोगों की शादियो में अकार्डियन बजाकर अपना पेट पालता था। यह एकाकी आदमी था और पादरिन परक्लीतोवा के यहा किराये पर रहता था। इस रात की घटना के पहले नगर में कभी किसी ने उसकी निन्दा नही की थी।

"अच्छा, तो तुम ऐसी हरकते किया करते हो?" याकोव ने उठते हुए पूछा। पेड़ो मे सरसराती हुई वायु के अतिरिक्त चारो ओर निस्तब्धता छायी थी।

"कैसी हरकते किया करता हू?" नोस्कोव ने ऊची आवाज़ से पूछा, "मैं तो तुम्हें डराने के लिये मज़ाक़ कर रहा था और तुमने आव देखा न ताव, झट से गोली दाग़ दी! तुम्हें इस बात पर शाबाशी नही मिलेगी, इतना कहे देता हू। मै ख़ुद भी डर गया था.."

"ओह, सचमुच?" याकोव ने विद्रूप-भरे विजय स्वर मे पूछा। "अच्छी बात है, खडे हो जाओ, थाने चलते है।"

"मै खड़ा नही हो सकता, तुमने मुझे लंगड़ा कर दिया है।"

नोस्कोव ने अपनी टोपी उठायी और कहा –

"मै पुलिस से नही डरता।"

"यह तो वहा जाकर मालूम होगा। चलो!"

"मैं नही डरता," नोस्कोव ने दुहराया। "पहले तो तुम यह साबित ही कैसे करोगे कि मैंने तुम पर आक्रमण किया था, तुमने नही?"

"अच्छा, और दूसरे?" याकोव ने घृणा से मुस्कराकर पूछा, यद्यपि नोस्कोव को ऐसे शान्त देखकर उसे थोडा आश्चर्य हो रहा था।

"दूसरी बात यह कि तुम्हे मेरी ज़रूरत है।"

"यह मनगढन्त बात है। मन मे बनायी हुई।"

अकस्मात आवेश मे आकर याकोव ने शिकारी के चेहरे पर पिस्तौल तान दी –

"अभी मैं तुम्हारी खोपड़ी उड़ा दूंगा!"

नोस्कोव ने शान्त भाव से याकोव के चेहरे की ओर देखा, फिर

टोपी की ओर नज़र झुका ली और प्रभावपूर्ण स्वर में बोला –

"झगड़ा पैदा करने की कोशिश मत करो। अमीर होते हुए भी कुछ साबित नही कर पाओगे। मैं कह रहा हूं कि तुम्हारे साथ मज़ाक़ करना चाहता था। मैं तुम्हारे पिता को जानता हू। कितनी ही बार उन्हे बाजा सुना चुका हूं।"

उसने झट से टोपी लगायी और अस्पष्ट स्वर मे कुछ बुदबुदाते हुए अपनी पतलून चढ़ायी। ज़ख़्म घुटने से ऊपर था। फिर जेब मे रूमाल निकालकर उसने जख़्म पर पट्टी बांधी। सारे वक्त वह कुछ बड़बडाता रहा। उसके इस विचित्र व्यवहार मे याकोव की सारी अकड मिट्टी मे मिल गयी।

असाधारण शीघ्रता मे याकोव अर्तामोनोव ने सारी स्थिति पर विचार किया। यो तो नोस्कोव को यहा छोडकर उसे थाने में इस आक्रमण की रिपोर्ट करनी चाहिये। लेकिन फिर छानबीन शुरू होगी और नोस्कोव बतायेगा कि किस तरह उसका पिता पादरिन के यहा रगरेलिया मनाता था। हो सकता है कि नोस्कोव के दोस्तो को भी बदला लेने का अवसर मिले। किन्तु नोस्कोव को सजा जरूर मिलनी चाहिये .

सर्दी बढ़ती जा रही थी। पिस्तौल पकड़े याकोव की उगलिया ऐंठकर दुखने लगी थी। थाना वहा से बहुत दूर था और निश्चय ही सारे कर्मचारी नीद मे बेसुध होंगे। याकोव किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो चुपचाप खड़ा था। उसे इस बात का खेद था कि उसने इस बदमाश को, जिसकी टागें कमान की तरह मुडी थी, मानो वह जीवन भर गोल पीपे पर चढ़ा रहा हो जान से नही मार दिया। हठात याकोव का ध्यान टूटा। नोस्कोव कह रहा था –

"मै तुम्हें एक गुप्त रहस्य बताता हू। मै तुम लोगों की भलाई के लिये ही यहा रहता हू, तुम्हारे मजदूरो पर नजर रखने के लिये। सम्भव है कि तुम्हें डराने की बात झूठ कही हो। सच बात तो यह है कि एक आदमी है, जिसे पकड़ना है, और मैने तुम्हे ही वह आदमी समझ लिया था ."

"शैतान, तुम्हारा क्या मतलब है?" याकोव ने पूछा।

"हां, मेरा मतलब यह है .. तुम नही जानते कि पादरिन के स्नान-गृह में समाजवादी छिप-छिपकर जमा होते हैं, तरह-तरह की

पुस्तकें पढ़ते हैं और विद्रोह की बातें करते है ..."

"तुम भूठ बोलते हो," याकोव बुदबुदाया, यद्यपि उसे हर शब्द पर विश्वास हो गया था। "कौन-कौन जमा होते है?"

"मैं तुम्हें यह नही बता सकता। जब वे गिरफ़्तार किये जायेंगे तब तुम्हें पता चल जायेगा।"

नोस्कोव बाड़े के तख़्तो का सहारा लेकर खड़ा हो गया और बोला—"मुझे अपनी छड़ी दे दो। मैं बिना सहारे के नही चल सकता ."

याकोव ने झुककर ज़मीन से छड़ी उठायी, शिकारी को पकड़ा दी और मुड़कर नोस्कोव की ओर देखते हुए उसने धीमे स्वर में पूछा—

"लेकिन तुमने .. मुझ पर प्रहार क्यो किया?"

"मैंने तुम पर प्रहार नही किया। सिर्फ़ पहचानने मे ग़लती हो गयी। मैं किसी और की तलाश में था। अब छोड़ो इस बात को। ग़लती हो गयी। तुम्हें जल्दी ही यह मालूम हो जायेगा कि मेरी बात सच है। मुझे इलाज कराने के लिये थोडे पैसे दे दो .."

फिर एक हाथ से छडी और दूसरे हाथ से बाड़े के तख़्तों का सहारा लेता हुआ नोस्कोव नगर के बाहरी भाग में स्थित अंधेरे मकानो की ओर चल पडा। ऐसा लगता था जैसे वह बादलो की शीतल छाया को चीरता हुआ आगे बढ रहा है। दसेक क़दम आगे बढ़कर वह ठिठक-सा गया और धीमे स्वर से उसने याकोव को आवाज़ दी—

"याकोव पेत्रोविच!"

याकोव लपककर उसके पास पहुंचा। शिकारी ने कहा—

"इस बारे में किसी से एक शब्द भी न कहना, वरना ... तुम स्वयं समझदार हो।"

वह छड़ी टेकता हुआ वहां से चला गया और याकोव बुत बना वहीं खड़ा रहा। इस बात के अनेक पहलू है, सभी पर सोचना और तुरन्त यह निश्चय करना होगा कि उसने ठीक काम किया या नही। निस्सन्देह, यदि नोस्कोव समाजवादियों पर जासूसी करता है, तो वह बड़ा उपयोगी व्यक्ति है, बहुत ज़रूरी आदमी है। लेकिन अगर यह सब धोखा हो तो? अगर नोस्कोव ने ठीक मौका ढूढ़ने के लिये भूठ बोला हो कि बाद मे अपनी असफलता और घायल पैर का बदला ले। याकोव को कोई और समझ लेने की बात भूठ है और उसे डराने की बात भी सफ़ेद

झूठ है। मान लो, मज़दूरों ने उसे पैसा देकर याकोव की हत्या करानी चाही हो। बुनकरों में गुण्डों और बदमाशों की कमी न थी, पर उनमें समाजवादी हों इस बात पर विश्वास नही होता था। मज़दूरों में सबसे अधिक सम्मानित सेदोव, क्रिकुनोव और मास्लोव, आदि ने तो हाल ही में एक पुराने बदमाश की बर्खास्तगी की मांग की थी। नोस्कोव की सारी बातें झूठ है। क्या यह बात मिरोन को बतानी उचित होगी?

उसकी समझ में न आया कि मिरोन से नोस्कोव के बारे में कहने का क्या नतीजा होगा, लेकिन यह बात पक्की थी कि मिरोन जज की तरह ज़रा-ज़रा-सी बातें पूछेगा और किसी न किसी बात पर सारा दोष उसके मत्थे ही मढ़ देगा। वह और कुछ करे या न करे, पर उसका मज़ाक़ ज़रूर उड़ायेगा। यदि नोस्कोव जासूस है तो यह बात शायद मिरोन को मालूम होगी। इसके अतिरिक्त दोनों में से ग़लती किसकी थी – नोस्कोव की या याकोव की? नोस्कोव ने कहा –

"तुम्हें जल्दी ही यह मालूम हो जायेगा कि मेरी बात सच है।"

याकोव चुपचाप खड़ा शिकारी को देखता रहा। शिकारी रात के अंधेरे मे ग़ायब हो गया। शुरू में हर चीज़ सीधी-सादी और समझ में आनेवाली मालूम होती थी। नोस्कोव ने लूटने के इरादे से याकोव पर हमला किया था और याकोव ने आत्मरक्षा के लिये उस पर गोली चलायी थी। लेकिन बाद की बाते एक भयानक सपने के समान थी। नोस्कोव जिस ढंग से बाडे के सहारे चल रहा था, वह भी असाधारण था। नोस्कोव के पीछे रेंगनेवाली घनी और भयानक परछाइया भी असाधारण थी। याकोव ने ऐसी परछाइयो को किसी व्यक्ति के पीछे इस तरह रेगते कभी नही देखा था।

इन चिन्ताओं से चूर होकर याकोव ने चुप रहने और प्रतीक्षा करने का निश्चय किया। लेकिन नोस्कोव की बात उसके मन में लगातार बनी रही, जिससे वह दुःखी और खिन्न हो उठा। खाने के समय जब सब मज़दूर मिल से निकलकर बाहर आते तो याकोव दफ़्तर की खिड़की के पास खड़ा होकर समाजवादियों को पहचानने की कोशिश करने लगा। कही भट्ठी में कोयला झोंकनेवाला गन्दे मुंह का लंगड़ा वास्का तो इनमें शामिल नही है, जिसने सेराफ़ीम से विचित्र तुकबन्दियां जोड़ने की कला सीखी थी।

कुछ दिन बाद याकोव एक अड़ियल घोड़े को दौड़ाने के लिये

जंगल में ले गया। उसे वहां पुलिस अफ़सर नेस्तेरेंको दिखायी दिया। स्वीडिश जाकेट और ऊंचे बूट पहने वह जंगल के छोर पर खड़ा सिगरेट जला रहा था। उसके हाथ में बन्दूक़ थी और कंधे पर शिकार किये गये परिन्दों से भरा थैला था। उसकी चमड़े की जाकेट धूप में लोहे की बनी दिखायी देती थी। याकोव को यकायक एक बात सूझी। वह घोड़ा दौड़ाता हुआ उसके पास पहुंचा और जल्दी में बोला –

"कहो, यहां कब आये?"

"परसों। मेरी पत्नी का रोग फिर बढ़ गया है!"

इस शोकपूर्ण समाचार को उल्लासपूर्ण ढंग से सुनाने के बाद नेस्तेरेंको ने अपने थैले की ओर इशारा करके कहा –

"अपनी क़िस्मत आज़माता रहा हूं। नतीजा कुछ बुरा नही है!"

"तुम शिकारी नोस्कोव को जानते हो?" याकोव ने धीमे स्वर से पूछा। नेस्तेरेंको की ललछौंही भृकुटियां आश्चर्य से चढ़ गयी और उसकी चीनियों जैसी मूंछें हिल उठी। वह आसमान की ओर देखकर कुछ सोचने और मूंछ का एक सिरा मरोड़ने लगा। याकोव ने उसे देखकर मन ही मन सोचा –

"कोई मनगढन्त कहानी सोच रहा है, ज़रा मैं भी देखूं कि क्या कहता है?"

"नोस्कोव? वह कौन है?"

"एक शिकारी, घुंघराले बालों और टेढ़ी टांगोंवाला..."

"हां, अब याद आया। शायद मैंने उसे जंगल में कही देखा है। उसके पास एक रद्दी-सी बन्दूक़ है... क्यों?"

नेस्तेरेंको की चमकती हुई कंजी आंखें उत्सुकतापूर्वक याकोव के चेहरे पर जम गयी। याकोव ने सारी घटना कह सुनायी। नेस्तेरेंको सिर नीचा किये बन्दूक़ के कुंदे से चीड़ के फल को कुचलता हुआ चुप-चाप सुनता रहा। जब याकोव कह चुका तो आखें उठाये बिना ही उसने पूछा –

"तुम पुलिस के पास क्यों नही गये? ऐसी बातों की छानबीन करना उनका काम है। मेरे दोस्त, उन्हें बताना तुम्हारा फ़र्ज़ था।"

"यही तो मैं तुम्हें बता रहा हूं। उसने मुझसे कहा कि वह मज़दूरों पर जासूसी करता है। और यह तुम्हारा काम है..."

"हुं," नेस्तेरेंको ने सिगरेट की राख झाड़ी। फिर वह याकोव

की ओर पैनी दृष्टि से देखकर अस्पष्ट स्वर में कुछ कहने लगा। याकोव ने पुलिस से यह घटना छिपाकर क़ानून के विरुद्ध काम किया है, लेकिन अब समय बीत गया, इसलिये कुछ नही किया जा सकता।

"अगर तुम उसे फ़ौरन पुलिस के दफ़्तर में ले जाते, तो मामला साफ़ हो जाता। सो भी पूरी तरह से नहीं। लेकिन अब तुम यह कैसे साबित कर सकते हो कि उसने तुम पर हमला किया? रही उसकी घायल टांग? सो तो यह भी हो सकता है कि तुमने डर के मारे उस पर गोली चलायी हो .. यो ही संयोग से, लापरवाही से..."

याकोव को लगा कि नेस्तेरेंको चालाकी से काम ले रहा है, डरा-धमकाकर उसे या अपने को इस मामले से अलग करना चाहता है। डर के मारे गोली चलाने की बात सुनकर याकोव को विश्वास हो गया कि वह झूठ बोल रहा है।

"मेरे दोस्त, विश्वास रखो, उसे जासूस बनने का पूरा फल मिलेगा। हम उससे सारी बातें उगलवा लेंगे।"

फिर याकोव के कन्धे पर हाथ रखकर उसने कहा—

"देखो, वादा करो कि यह बात यही तक रहेगी। यह तुम्हारे हित मे है। कहो, वादा करते हो?"

"बेशक।"

"अपने चचा या मिरोन तक से इस बात की चर्चा मत करना। क्या सचमुच ही तुमने उनसे अभी तक यह बात नहीं कही? अच्छी बात है, इस बात को यही रहने दो। समझे? शिकारी ने स्वयं गोली चलाकर अपनी टांग ज़ख़्मी कर ली है—तुम्हारा इस घटना से कोई सम्बन्ध नहीं।"

याकोव मुस्करा दिया। नेस्तेरेंको अचानक सजीव हो गया था, रंग में आ गया था—बिल्कुल दूसरा आदमी।

"सलाम, अपना वादा याद रखना!"

याकोव घर लौट आया। उसके मन का बोझ कुछ हल्का हो गया था। शाम को चचा ने उसे ज़िला-केंद्र जाने के लिये कहा—वह फ़ौरन राज़ी हो गया। आठ दिन बाद जब वह वापिस लौटा तो चचा के यहां भोजन के समय जो ख़बरे सुनी, उनसे उसकी दु:शकाये और अधिक बढ़ गयीं। मिरोन बोला—

"नेस्तेरेंको उतना लफ़ंगा नही, जितना मैं समझता था। उसने

नगर में भी तीन आदमियों को पकड़ा है, जिनमें एक स्कूल का अध्यापक मोदेस्तोव और दो अन्य व्यक्ति हैं।"

"और हमारे यहां?" याकोव ने पूछा।

"मिल में? सेदोव, क्रिकुनोव, अब्रामोव और पांच और छोकरे पकड़े गये। वैसे तो ज़िला-केंद्र की पुलिस ने गिरफ़्तारियां कीं, लेकिन यह सारा काम नेस्तेरेंको का है। उसकी पत्नी की बीमारी हमारे लिये फ़ायदेमन्द साबित हुई। वह मूर्ख नही – हर समय अपनी रक्षा के लिये सतर्क रहता है..."

"आजकल उन लोगों ने हत्या करना बन्द कर दिया है," अल्योशा बोला।

"अरे, हां, मैं भूल गया। नगर में एक और आदमी पकड़ा गया है। क्या नाम है उसका, वह शिकारी..."

"नोस्कोव?" याकोव ने क्षीण स्वर में पूछा।

"मुझे उसका नाम तो नहीं मालूम, लेकिन वह पादरिन के यहा रहता था, जिसके गुस्लख़ाने में इन क्रान्तिकारियो की बैठके होती थी। और उसी समय तुम्हारे पिता पादरिन के साथ उसके शयनकक्ष में रगरेलियां मना रहे थे! यह संयोग सुखद नही है..."

"सुखद तो नही है," अल्योशा ने अपना गंजा सिर हिलाते हुए कहा, "लेकिन उसे कौन समझाये?"

याकोव की आंखों के सामने अंधेरा छा गया। वह अब मिरोन और चचा की बातचीत नही सुन रहा था। वह सोच रहा था: नोस्कोव गिरफ़्तार हो गया था। इससे यह बात साफ़ हो गयी कि वह लुटेरा नही; बल्कि समाजवादी है। इसका अर्थ यह है कि मज़दूरों ने उसे मालिक को पीटने या मार डालने के लिये भेजा था, उन्हीं मज़दूरो ने जिन्हें याकोव सबसे अधिक सम्मानित और योग्य समझता था! हमेशा साफ़-सुथरा रहनेवाला सेदोव, हसमुख और शिष्ट मिस्त्री क्रिकुनोव, बढ़िया काम करनेवाला गायक अब्रामोव, ये सभी के सभी समाजवादी निकले। कौन सोच सकता था कि ये लोग भी उसके दुश्मन निकलेंगे?

उसे लगा कि उसकी अनुपस्थिति में चचा के यहां और अधिक शोर-गुल मचने लगा था। सोने के दांतवाला डाक्टर याकोव्लेव, जो कभी किसी चीज़ या व्यक्ति के बारे में भली बात नही कहता था, जीवन

की हंसी उड़ाकर उसे दूर-दूर से देखता रहता था—वही डाक्टर याकोव्लेव अब सबसे आगे आ गया है। उसके अख़बार पलटने के ढंग में ही कुछ डरावना-सा था।

"हां," वह बोला और उसके सोने के दात चमक उठे। "हममें जीवन आ रहा है, हम जाग उठे है! जनता ऐसे नौकरों के मानिन्द है जिन्हें अचानक मालिक के आने की खबर मिली हो। नौकरी छूटने के भय से वे भाग-दौड़ कर रहे हैं।"

"यह सब अस्पष्ट बातें हैं, डाक्टर!" मिरोन ने मुंह बनाकर कहा, "यह तुम्हारी अराजकता और संशयवाद है..."

लेकिन डाक्टर की आवाज़ लगातार ऊंची होती गयी। उसके भाषण भी लम्बे होते गये और उसके शब्दों से याकोव चिन्तित हो उठा। ऐसा लगा मानो सब लोगो के मन में कोई अज्ञात भय समा गया है। सभी विपत्ति की भविष्यवाणी करके एक दूसरे का डर बढ़ाते रहते। लगता था कि वे वास्तव मे अपने ही विचारो और व्यवहार से डरते थे। याकोव को यह भी उस सर्वव्यापी मूर्खता का ही रूप जान पड़ा, जबकि उसका अपना भय काल्पनिक अनिष्टों का नही था। उसका भय वास्तविक था, ऐसा वास्तविक कि गले के फन्दे के स्पर्श की कल्पना मात्र से उसकी खाल सिकुड़ जाती। यह फन्दा अदृश्य होते हुए भी तंग होता जाता था, और उसे किसी महान और अनिवार्य विपत्ति की ओर खीच रहा था।

उसका भय और बढ़ गया, जब दो महीने बाद नोस्कोव नगर में फिर दिखायी दिया और पीला, दुबला-पतला अब्रामोव मिल में लौट आया।

"क्या तुम मुझ बूढ़े को फिर से काम पर लगा लोगे?" अब्रामोव ने मुस्कराकर पूछा। याकोव को मना करने का साहस न हुआ।

"अच्छा, बताओ तो जेल में जीवन कठिन है?" उसने पूछा। अब्रामोव ने मुस्कराते हुए ही जवाब दिया—

"वहां बेहद भीड़ है। अगर टाइफ़स अफ़सर लोगों की मदद न करता, तो पता नहीं कि वे लोगों को कहां बन्द करते।"

उसके चले जाने के बाद याकोव ने सोचा, "तुम मुस्कराते हो, पर मैं जानता हूं, तुम क्या सोचते हो .."

उसी शाम को मिरोन ने अब्रामोव को लेकर बखेड़ा खड़ा कर दिया।

वह याकोव पर लगभग चिल्लाता और इस तरह अपना पांव भी पटकता रहा जैसे किसी नौकर को डाट रहा हो।

"क्या तुम पागल हो गये हो? उसे कल ही निकाल बाहर करो!" वह चिल्लाया। उसकी नाक क्रोध से लाल हो गयी थी।

कुछ दिनों बाद जब याकोव सबेरे ओका में नहाने जा रहा था, तब लेफ्टिनेन्ट मावरिन और नेस्तेरेंको से उसकी भेंट हो गयी। वे बंसी उठाये नाव खेते हुए किनारे आ रहे थे। शान्त स्वभाववाला लेफ्टिनेन्ट तो याकोव का लापरवाही से अभिवादन करके नाव खेता हुआ बिना बोले बीच धार की ओर बढ गया, लेकिन नेस्तेरेंको ने कपड़े उतारते हुए कहा –

"तुम्हें अब्रामोव को नही निकालना चाहिये था। खेद है कि मै पहले तुम्हें चेतावनी न दे सका।"

"इसकी ज़िम्मेदारी मिरोन पर है," याकोव ने अनुभव किया कि नेस्तेरेंको के शब्दों के साथ शराब की तेज़ गन्ध आ रही है।

"अच्छा? इसमें तुम्हारा हाथ नही था?" नेस्तेरेंको ने पूछा।

"नही।"

"बड़े दु:ख की बात है। नही तो वह लोगो को फासने के काम आता, फदे का काम देता।"

उसकी नंगी देह सूरज की धूप में सुनहरी लग रही थी। उसकी खाल उछलती मछली के सुफनो की तरह चमक रही थी। याकोव की ओर एक षड्यन्त्रकारी साथी की दृष्टि से देखते हुए उसने पूछा –

"अपने शिकारी दोस्त से तुम्हारी मुलाक़ात हुई?"

वह आत्मतुष्ट आदमी की तरह धीरे से हस दिया –

"जानते हो वह उस दिन तुम्हारी ताक में क्यों बैठा था? वह अपने लिये एक दुनाली बन्दूक़ ख़रीदना चाहता था। मेरे प्यारे, लोग भावावेशों के विवश होकर ही अच्छे-बुरे काम करते है। अब वह शिकारी भी बड़े काम आयेगा, क्योंकि तुम्हारे साथ अपनी गलती के कारण वह अब मेरे शिकंजे में है..."

"ग़लती? लेकिन अभी तो तुम कह रहे थे.."

"ग़लती, जनाब, ग़लती!" अफ़सर ने ज़ोर से कहा और वह नगी छाती पर सलीब बनाता तथा घोड़े की तरह पावों से छप-छप करता हुआ पानी में घुस गया।

"तुम सब पर शैतान की मार!" याकोव ने उदासी से सोचा।

अचानक मानो दरवाज़ा बन्द हो गया था, जहां जीवन का शोर था, वहां मृत्यु आ पहुंची थी।

रात को उसकी मां ने उसे जगाकर रोते हुए कहा–

"उठो, तीख़ोन अभी सरपट घोड़ा दौड़ाता आया है, चचा अल्योशा चल बसे।"

याकोव उछलकर खड़ा हो गया–

"यह कैसे हुआ! वह तो बीमार भी नही थे..."

इसी वक्त लड़खडाता और हाफता हुआ प्योत्र भी आ गया।

"तीख़ोन," वह बडबड़ाया। "जहा तीख़ोन हो, वहा किसी अच्छी बात की उम्मीद न करो। देखा तुमने, याकोव, कितनी अप्रत्याशित बात है.."

नगे पांव और रात के कपड़ों पर ड्रेसिग गाउन पहने प्योत्र अपने कान की ललरी ऐंठ रहा था, इधर-उधर ऐसे देख रहा था मानो किसी परायी जगह पर आ गया हो और आहें भर रहा था।

"यह कैसे हुआ?" याकोव ने घबराकर पूछा।

"अंतिम प्रार्थना तक के बिना," मां ने कहा। वह आटे की बड़ी बोरी-सी दिखायी दे रही थी।

सब लोग गाड़ी मे बैठकर चल दिये। याकोव घोडों को हाक रहा था। आगे-आगे तीख़ोन घोड़े पर उचकता जा रहा था। उसकी हिलती हुई परछाईं मानो धरती में समा जाना चाहती थी।

अहाते मे ओलगा इनसे मिली। वह लगातार फाटक और सायबान के बीच चक्कर काट रही थी। उसने अपने रात के कपडे और सफ़ेद घघरा पहने थी। रात की चांदनी मे वह एक पारदर्शी और नीली-सी दिख रही थी। अहाते के खडंजो पर उसकी लम्बी छाया एक विचित्र-सी आकृति बना रही थी।

"मेरा जीवन तो समाप्त हो गया," उसने धीमे स्वर में कहा। काला कुत्ता कुचुम लगातार उसके पीछे-पीछे चल रहा था।

रसोईघर के बाहर की बेंच पर मिरोन सिर झुकाये बैठा था। उसके एक हाथ में सुलगी सिगरेट थी और दूसरे हाथ में चश्मा। उसकी सोने की कमानी रह-रहकर चमक उठती थी। चश्मा उतारने के कारण उसकी नाक और भी बड़ी दिखायी दे रही थी। याकोव चुपचाप

मिरोन के पास बैठ गया और प्योत्र अहाते के बीचोंबीच खड़ा होकर खुली हुई खिड़की की ओर देखने लगा, मानो कोई भिखारी भीख की आशा कर रहा हो। ओलगा ने आकाश की ओर देखकर नतालिया को गम्भीर स्वर में बताया –

"मैं नहीं जानती कब... अचानक उनका कन्धा पत्थर-सा ठंडा हो गया और मुंह खुला रह गया। मेरे प्यारे पति तो अंतिम शब्द भी नही कह पाये। कल वह हृदय में पीड़ा की बात कह रहे थे।"

ओलगा का स्वर धीमा था, उसके शब्द भी मानो छाया छोड़ते जा रहे हों।

मिरोन ने बुझी हुई सिगरेट फेंक दी। याकोव के कन्धे पर धीरे से अपना सिर मारकर उसने रोते हुए कहा –

"तुम नही जानते, वह कितने अच्छे आदमी थे..."

"अब क्या किया जा सकता है?" याकोव ने जवाब दिया। उसकी समझ में न आया कि और क्या कहे। चाची से भी कुछ कहना चाहिये – पर क्या? वह चुपचाप ज़मीन पर आंखें गड़ाये बेंच के नीचे पाव रगड़ता रहा।

प्योत्र विक्षिप्त अवस्था में घर में गया। याकोव चुपचाप पजो के बल उसके पीछे-पीछे गया। अल्योशा का शव एक चादर से ढंका हुआ था। उसके मुंह को बन्द करने के लिये ठोढ़ी से सिर तक एक रूमाल बंधा हुआ था। सिर पर गांठ के दोनों छोर सींगों के समान दिखायी देते थे। अंगूठों पर चादर ऐसे तनी हुई थी कि वे चादर को फाड़ने की चेष्टा में निकलते लग रहे थे। खिड़की में से चांद की तेज़ रोशनी आ रही थी। हवा से परदा फरफरा रहा था। बाहर अहाते में कुचुम हूकने लगा और मानो उसके उत्तर में अपने शरीर पर क्रॉस का चिह्न बनाते हुए प्योत्र ने ज़ोर से कहा –

"ऐसी हल्की-फुल्की ज़िन्दगी और ऐसी हल्की-फुल्की मौत..."

खिड़की से बाहर झांककर याकोव ने देखा कि वेरा पोपोवा मठवासिनी के से काले कपड़े पहने उसकी चाची के आसपास चक्कर काट रही है। ओलगा पुनः उसी स्वर में अपनी शोक कहानी सुना रही थी –

"सोते-सोते ही चल बसे.."

"टिककर खड़ा रह!" तीखोन ने धीमी आवाज़ में घोड़े को फटकारा। वह सूखी घास से उसे खरहरा कर रहा था। घोड़ा बार-बार

तीख़ोन के कानों को पकड़ने की कोशिश कर रहा था और वह हर बार अपने सिर को झटका देकर पीछे हटाता था। प्योत्र ने भी खिड़की से बाहर झांकते हुए कहा –

"बेवकूफ़, कैसे चिल्ला रहा है, रत्ती भर भी अक्ल नही है..."

"मैं चुप रहूंगा।" याकोव ने मन ही मन निश्चय किया। बाहर बरामदे में आकर यह देखने लगा कि कैसे श्वेत और काले वस्त्रों में लिपटी उन दोनों स्त्रियों की परछाइयां पत्थरों पर से धूल साफ़ कर रही है और पत्थर अधिक चमकीले होते जा रहे है। नतालिया तीख़ोन से फुसफुसाकर कुछ कह रही थी। तीख़ोन ने सिर हिलाकर हामी भरी। घोडे ने भी सिर हिला दिया। उसकी ताम्रवर्णी आंखो में एक विचित्र-सी चमक आ गयी। प्योत्र बाहर निकल आया। नतालिया बोली –

"हमें निकीता को तार दे देना चाहिये। तीख़ोन को उसका पता मालूम है।"

"तीख़ोन को मालूम है!" प्योत्र ने गुस्से से दुहराते हुए कहा। "मिरोन, तार भिजवा दो।"

मिरोन दरवाज़े की ओर चल दिया। उसका कन्धा दरवाज़े के कोने से टकरा गया और उसने हथेली से दरवाज़े के कोने को सहलाया।

"इल्या को भी ख़बर कर दो," प्योत्र ने पीछे से आवाज़ दी। पर मिरोन ने दीवार के अधेरे-से सूराख़ में से उत्तर दिया –

"इल्या नहीं आ सकता।"

"मैने उनके साथ तीस साल गुज़ारे और शादी के पहले भी चार साल तक उनके साथ मेरी दोस्ती रही, अब मै क्या करूगी?" ओलगा मानो अपने हर शब्द पर स्वयं चकित होते हुए कह रही थी।

प्योत्र याकोव के पास आकर खड़ा हो गया।

"इल्या कहा है?"

"मुझे नही मालूम।"

"झूठ बोलते हो?"

"पिता जी, इस समय इल्या की बाते करने का मौक़ा नही है।"

डाक्टर याकोव्लेव झपटता हुआ अहाते में आया। उसने हांफते-हांफते पूछा – "सोने के कमरे में?"

"मूर्ख, मृतक को तो फिर से ज़िन्दा नही कर सकते।" याकोव ने मन ही मन सोचा।

आनेवाले नीरस क्षणों की कल्पना से उसका दम घुटने लगा। चारों ओर निराशा छायी थी। लोगों की बातें, चांदनी में तांबे की तरह चमकता हुआ घोड़ा, शोक से मौन कुत्ता – सभी कुछ बहुत बोझल और व्यर्थ था। उसे लगा कि चाची ओलगा अपने सुखद अतीत की शान बघार रही थी। कोने में बैठी मां झूठ-मूठ भद्दे स्वर में शोक-प्रदर्शन करती हुई सुबक रही थी। पिता की आंखें सूनी-सूनी और भावहीन थीं। सभी चीज़ें उससे कही बुरी और बोझल थी जितनी होनी चाहिये।

जनाज़े के दिन ताबूत को दफ़नाने के बाद जब लोग उस पर मुट्ठियां भरकर मिट्टी डाल रहे थे तो निकीता क़ब्रिस्तान में आ पहुचा।

"यह भी ख़ूब रही।" याकोव ने निकीता के नुकीले शरीर की ओर देखकर सोचा। भिक्षु अपने रोपे हुए बर्च के सहारे टेक लगाकर खड़ा था।

"तुम देर से पहुंचे," प्योत्र ने अपने आंसुओं को पोंछते हुए उसके पास आकर कहा। कछुए की तरह उसने अपना सिर कूबड़ के साथ मटा दिया। उसका मटमैला लबादा धूप में बदरंग हो गया था। उसकी टोपी टीन के पुराने डिब्बे की तरह मटमैली हो रही थी। उसके बूटों की एड़ियां घिसी हुई थी। उसके फूले गाल धूल से भद्दे हो रहे थे। क़ब्र के इर्द-गिर्द लोगों की ओर अपनी धुंधली दृष्टि से देखकर वह अस्पष्ट शब्दों में कुछ बुदबुदाया। उसकी छोटी-सी भूरी दाढ़ी हिल रही थी। याकोव ने कनखियो से चारों ओर देखा। दर्जनों जिज्ञासु आंखे धनी घराने के भिक्षु बेटे की ओर उत्सुकतापूर्वक घूर रही थी – कहीं कोई झगड़ा न हो जाये। याकोव जानता था कि नगर के लोगों का दृढ विश्वास था कि दोनों बड़े भाइयों ने सम्पत्ति के लालच से इस कुबडे को सन्यास लेने के लिये विवश किया था।

मोटे पादरी निकोलाई ने उच्च स्वर में ओलगा को समझाया –

"रोने-धोने से ईश्वर का अपमान होता है, क्योंकि उसकी इच्छा ..."

ओलगा ने सयत स्वर में उत्तर दिया –

"पर मैं रो नही रही हूं, न शिकायत ही कर रही हूं।"

उसने कांपते हुए हाथों से अपनी जेब टटोली। वह अपने आंसुओ से तर रूमाल को छिपाने की कोशिश कर रही थी।

तीख़ोन व्यालोव कुशलता से फावड़ा भर-भरकर क़ब्र में मिट्टी डाल

रहा था। मिरोन बुत बना क़ब्र के सिरहाने खड़ा था। कुबड़े भिक्षु ने मृदु स्वर में नतालिया से कहा –

"ओह, तुम कितनी बदल गयी हो! पहचानी नहीं जाती!"

फिर अपने कूबड़ की ओर संकेत करके उसने जो बात कही वह वातावरण के अनुरूप नही थी, अनावश्यक थी –

"मैं तो हमेशा पहचाना जा सकता हू। वह सामने कौन है? तुम्हारा याकोव? और वह लम्बा? अल्योशा का बेटा मिरोन? अच्छा! तो अब चलें..."

याकोव क़ब्रिस्तान मे रुका रहा। कुछ देर पहले उसने नोस्कोव को मज़दूरो की भीड़ में खड़े देखा था। उसके साथ भट्ठी मे कोयला झोंकनेवाला लंगड़ा वास्का भी था। पास से गुज़रते ममय शिकारी ने याकोव की ओर दुर्भाव और प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा था। आख़िर यह आदमी क्या सोचता होगा? निश्चय ही उस आदमी के बारे में उसके विचार अच्छे नही हो सकते, जिसने उस पर गोली चलायी थी, जिसने उसे जान ही से मार डाला होता।

तीख़ोन अपने कोट की मिट्टी झाड़ता हुआ आ पहुंचा और बोला –

"ज़रा सोचो, अलेक्सेई इल्यीच ने कितनी कोशिश की, लेकिन कुछ न बन सका... और अब निकीता इल्यीच भी कमज़ोर हो गये हैं..."

"यहा एक..." याकोव को कोई बात अचानक ही सूझी, लेकिन वह बीच में ही चुप हो गया।

"क्या बात है?"

"मज़दूरों को चचा की मृत्यु पर शोक है।"

"शोक कैसे नही होगा?"

"यहा एक शिकारी है – नोस्कोव," याकोव ने फिर बात छेड़ी, "मै उसके बारे मे तुम्हें कुछ बता सकता.."

"लोगो को तो एक घोड़े की मृत्यु पर भी दु:ख होता है," तीख़ोन ने गम्भीर स्वर में कहा। "अलेक्सेई इल्यीच जीवन भर सरपट दौड़ते रहे और इस दौड़ में ही उनकी मृत्यु हुई, मानो किसी चीज़ से टकरा गये हो। मरने से एक दिन पहले उन्होंने मुझसे कहा था .."

याकोव यह समझकर चुप हो गया कि इस समय उसकी बात तीख़ोन के पल्ले नही पड़ेगी। उसने मन में निश्चय कर लिया था कि वह तीख़ोन को यह बात ज़रूर बतायेगा, केवल इसीलिये कि उसे किसी से यह

बात कहनी ही थी। इस नीरस वातावरण की अपेक्षा नोस्कोव का ख़्याल उसे अधिक व्यथित कर रहा था। कल ही शहर में यह टेढ़ी टांगोंवाला जीव सिपाही-सा भावहीन चेहरा बनाये अचानक किसी कोने से निकलकर उसके सामने आ खड़ा हुआ था। उसने अपनी टोपी उतारकर और उसके अस्तर पर दृष्टि डालते हुए याकोव से कहा था –

"आप पर मेरे कुछ पैसे हैं। आपने मेरी टांग के इलाज के लिये एक रक़म देने का वादा किया था। इसके अलावा आपके चचा की मृत्यु हो गयी है – उनके लिये प्रार्थना करने को भी पैसों की ज़रूरत है। साथ ही मैं आपके पिता के मनोरंजन के लिये एक नया बाजा भी ख़रीदना चाहता हूं।"

याकोव पर मानो वज्रपात हुआ। वह चुपचाप खड़ा नोस्कोव की ओर देखता रहा। शिकारी की हिम्मत और भी बढ़ गयी –

"चूंकि मैं आपकी भलाई के लिये ही रूस के दुश्मनों के ख़िलाफ़ ..."

"कितनी रक़म चाहिये?" याकोव ने पूछा।

नोस्कोव ने कुछ क्षण सोचकर उत्तर दिया –

"पैंतीस रूबल।"

क्रोध और भय से ओत-प्रोत याकोव उसे रक़म देकर जल्दी से चल दिया। "वह मुझे मूर्ख समझता है। शायद उसका ख़्याल है कि मै उससे डरता हू। बदमाश कही का! मैं उसे मज़ा चखाऊंगा ..."

क़ब्रिस्तान से लौटते समय याकोव के मन में बस यही एक समस्या थी कि किस तरह इस व्यक्ति से पिण्ड छुडाया जाये, जो उसे बलि के बकरे की तरह बलिस्थान की ओर घसीट रहा है।

स्मृति-भोज बड़ी देर तक चलता रहा। अतिथियो ने पादरी कार्त्सेव और गिरजे की भजन-मंडली से मृतक आत्मा की चिरंतन स्मृति के गीत सुने। जितेइकिन तो इस हद तक नशे में चूर था कि भद्रता और शिष्टाचार को भूलकर कांटा हिलाता हुआ गाने लगा –

बीते हुए दिनो को योद्धा करते हैं अब याद
साथ-साथ जब लडे, युद्ध का कैसा उन्माद

जब स्तेपान बास्कीं की परों के तकिये जैसी मोटी और गुदगुदी देह गाड़ी में ठूंसी जाने लगी, तो उसने ऊंचे स्वर में कहा –

"शाबाश, प्योत्र इल्यीच! तुम्हें ज़रूर अपने भाई से गहरा प्रेम

था ! आज की दावत आसानी से भुलाई नही जा सकती ! "

याकोव ने अपने पिता को, जो ख़ूब पी रहे थे, व्यंगपूर्वक कहते सुना –

"तुम तो जल्दी ही यह सब कुछ भूल जाओगे, तुम्हारा पेट फटने-वाला है।"

प्योत्र ने अपने भतीजे के विरोध की परवाह न करते हुए नगर से जितेइकिन, बास्कीं, वोरोपोनोव तथा अन्य मम्मानित व्यक्तियों को निमन्त्रित किया था। मिरोन ने अपना क्रोध छिपाने का प्रयत्न नही किया। वह कोई आध घंटे तक स्मृति-भोज की मेज़ के पास बैठने के बाद सारस की तरह अकड़ता हुआ चला गया। कुछ देर बाद ओलगा भी चली गयी। नशे में धुत्त लोगों के मठ के विषय में उत्सुकतापूर्ण प्रश्नों से तंग आकर भिक्षु भी उठ खड़ा हुआ। प्योत्र के व्यवहार से ऐसा लगता था, मानो वह सब से लड़ाई मोल लेना चाहता हो और याकोव अपने पिता तथा नगरवासियो की लड़ाई की प्रतीक्षा में चुपचाप बैठा था।

नतालिया इस बात से जल-भुनकर घर चली गयी कि ओलगा वेरा पोपोवा की ओर बहुत ध्यान दे रही थी। लेकिन प्योत्र ने किसी न किमी कारण मे भाई के अध्ययनकक्ष में रात बिताने का निश्चय किया। याकोव को ये सारी बातें अनावश्यक और हास्यास्पद जान पड़ीं। सोफ़े पर लेटकर दो-एक घंटे तक सोने की व्यर्थ चेष्टा करने के बाद वह आख़िरकार उठकर अहाते में चला गया। वहां रसोईघर की खिड़की के नीचेवाली बेच पर उसने तीख़ोन की बग़ल में भिक्षु की काली आकृति देखी, जो विचित्र ढंग से मशीन के किसी टूटे पूर्ज़े की याद दिलाती थी। टोपी के बिना भिक्षु देखने में और भी नाटा तथा चौड़ा लग रहा था, उसका मुरझाया-सा मुख नन्हे बालक जैमा दिखायी देता था। उसके हाथ मे एक गिलास था और पास ही में बेच पर क्वास पेय की एक बोतल रखी हुई थी।

"वह कौन है?" उसने मृदु स्वर में पूछा और तुरन्त अपने ही प्रश्न का उत्तर दिया – "यह तो याकोव है। यहां आओ और कुछ देर बुजुर्गों के पास भी बैठो!"

अपने गिलास को चांदनी की ओर हाथ में उठाकर वह उसके भीतर के धुधले-से द्रव को देखने लगा। चांद ने घंटे की मीनार के पीछे

छिपकर मीनार को एक धुंधली रजत आभा से नहला दिया था जिससे वह रात्रि के गुनगुने अंधियारे की पृष्ठभूमि में एक विचित्र आकार बनाती हुई उभर आयी थी। घंटे की मीनार के बहुत ऊपर घने बादल छाये थे। लगता था जैसे गहरी नीली मखमल में फूहड़ ढंग से भद्दे पैबन्द टांक दिये गये हों। अल्योशा का प्यारा, शोकमग्न-सा कुत्ता कुचुम ज़मीन को सूंघता हुआ अहाते में घूम रहा था। और फिर अचानक आकाश की ओर थूथनी उठाकर प्रश्नसूचक ढंग से धीमे से रो पडा।

"ऐ! कुचुम!" तीख़ोन ने शान्त स्वर में कहा।

कुत्ते ने उसके पास आकर अपना मोटा-सा सिर उसके घुटनों के बीच घुसेड़कर रोते हुए शिकायत-सी की।

"इस बेचारे को याद आती है," याकोव ने कहा। बाक़ी दोनों चुप रहे, लेकिन वह सोच में पड़ने से बचने के लिये बातें करना चाहता था।

"मैंने कहा कि यह भी समझता है," उसने दोहराया। तीख़ोन ने मन्द स्वर में उत्तर दिया–

"हा, सो तो ठीक है।"

"सुज़दल नगर में मठ का कुत्ता तो चोरों को गन्ध से ही पहचान लेता था," भिक्षु बोला।

"आप लोग क्या बातें कर रहे थे?" याकोव ने पूछा। भिक्षु ने थोड़ी-सी क्वास पीकर चोग़े की आस्तीन से होंठ पोंछे और अपने पोपले मुंह से इस तरह झटके देते हुए बड़बडाया मानो सीढ़ियो से उतरकर नीचे आ रहा हो–

"तीख़ोन कह रहा था कि लोग यहां फिर विद्रोह का इरादा कर रहे हैं। लगता भी ऐसा ही है! हर आदमी का दिमाग विचारो से परेशान दीखता है..."

"काम-काज ने परेशान कर डाला है," तीख़ोन ने कुत्ते के कानो से खेलते हुए कहा।

"कुत्ते को हटाओ, इसके बदन में पिस्सू पडे हुए है," याकोव ने आदेश दिया।

चौकीदार ने कुचुम के पंजे अपने घुटने से हटा दिये और उसे पांव से परे ढकेल दिया। कुत्ता टांगों में दुम दबाकर वही बैठ गया और दो बार उदासी से भूंका। तीनों व्यक्तियों ने उसकी ओर देखा, याकोव ने सोचा शायद तीख़ोन और भिक्षु को क़ब्र में सोये हुए स्वामी की

अपेक्षा उसके कुत्ते के लिये अधिक दुःख हो रहा है।

"विद्रोह तो होगा ही," याकोव अहाते के अंधेरे कोनों की ओर घूरते हुए बोला। "तीख़ोन, तुम्हें याद है न कि सेदोव और उसके साथी गिरफ़्तार किये गये थे?"

"हां, याद है।"

भिक्षु ने अपने चोग़े की जेब में से एक छोटी-सी टीन की डिबिया निकालकर एक चुटकी सुंघनी नाक मे लगायी। उसने भतीजे को समझाया –

"देखो, यह सुंघनी है – इससे मेरी आखों को फ़ायदा होता है। अब मुझे पहले जैसा दिखायी नही देता।"

छीककर उसने अपनी बात जारी रखी –

"गावों में भी गिरफ़्तारिया हो रही हैं"

"सभी ओर जासूस फैले हुए है," याकोव ने अपने स्वाभाविक स्वर मे कहने का यत्न किया। "वे हर आदमी पर नज़र रखते है।"

तीख़ोन भुनभुनाया –

"अगर नज़र न रखे, तो फिर उन्हें मालूम ही कुछ नही होगा।"

रात की ठड से कापते हुए याकोव ने अनिश्चित भाव से फुसफुसाकर कहा –

"वे लोग यहा भी मौजूद है। उस शिकारी नोस्कोव के विषय मे भद्दी अफ़वाहें फैली हुई है... कहते है, उसने ही सेदोव और उसके साथियो का भेद बताया था .."

"उल्लू कही का," तीख़ोन ने कुछ देर रुककर कहा। उसने कुत्ते को थपथपाने के लिये हाथ बढाया, लेकिन एकदम पीछे खीचकर घुटने पर रख लिया। याकोव को लगा कि वह बेकार ही बोला। उसने तीख़ोन को चेतावनी दी –

"देखो, तुम नोस्कोव के बारे में कही भी चर्चा नही करना।"

"मुझे उससे क्या लेना-देना है? और यहा बात करने को है ही कौन – कोई किसी पर विश्वास नहीं करता।"

"सच कहते हो," भिक्षु बोला, "विश्वास तो रहा ही नहीं। युद्ध के बाद मुझे कुछ घायल सैनिक मिले थे। उन्हें भी युद्ध में विश्वास नही था। याकोव, हर जगह लोहा ही लोहा है! मशीनें काम करती है, मशीनें गाती हैं! जीवन का यह लौह-तत्र लोहे के व्यक्तियों की

ही मांग करता है। बहुत-से लोग इस बात को समझते हैं, मैं उनमें से कुछ लोगों से मिला हूं। उनका कहना है, 'हम तुम्हारे जैसे कोमल-हृदय लोगों को मज़ा चखा देंगे!' कुछ लोग बुरा मानते हैं। वे आदमी के आदेश-पालन के तो आदी हैं, लेकिन जब धातु की कोई चीज़ ऐसा करती है, तो बुरा लगता है! वे चीज़ों-हथौडों, बसूलों, आदि के, जिन्हें हाथ में लिया जा सकता है, – के आदी है, लेकिन यहां टनों बोझ की मशीनें हैं, जो काम करती हैं जीवितों की तरह।"

तीख़ोन ने एक हुंकार भरी और फिर आश्चर्यजनक रूप मे हंसते हुए बोला –

"कैसी उल्टी बात है कि गाडी घोड़ों के आगे भाग रही है, ओह, शैतान!"

"लोग ख़फ़ा है," भिक्षु धीमे स्वर में कहता गया – "तीन वर्ष तक मैं चारों ओर घूमता रहा हूं। मैंने लोगो के इस रोष को देखा है। दुर्भाग्य से एक दूसरे पर ही क्रोध करते है, उस पर नही, जिस पर करना चाहिये। कुल मिलाकर सब दोषी है, अक्ल के कारण या बेअक्ली के कारण। मुझे पादरी ग्लेब ने यह बात बतायी थी।"

"क्या पादरी अब भी ज़िन्दा है?" तीख़ोन ने पूछा।

"अब वह पादरी नही रहा। वह गांव के मेलों में घूम-घूमकर किताबें बेचता है।"

"बड़ा भला पादरी था। मैंने कई बार उसके सामने अपने पाप स्वीकार किये थे। मेरा ख़्याल है कि वह केवल ग़रीबी के कारण ही पादरी बना था; वैसे तो उसे ईश्वर में रत्तीभर भी विश्वास नही था।"

"वह ईसा मसीह में विश्वास करता था। सभी अपने-अपने ढंग मे विश्वास करते हैं।"

"यही तो सारी मुसीबत की जड़ है," तीख़ोन ने दृढ़ता से कहा। वह फिर कटुता से हंसा। "बहुत सोचने से यही कुछ होता है.."

प्योत्र रात के कपड़े पहने नंगे पांव चुपचाप बरामदे में आ खड़ा हुआ। उसने पीले आसमान की ओर देखकर तीनों व्यक्तियो से कहा –

"मुझे नींद नही आ रही। इधर कुत्ते ने नाक में दम कर रखा है और तुम लोग भी यहां बैठे फुसफुसा रहे हो..."

अहाते के बीचोंबीच बैठा हुआ कुत्ता बार-बार रो उठता था। उसके

कान खड़े थे और आंखें खिड़की की ओर लगी थी, मानो वह स्वामी के आदेश की प्रतीक्षा में हो।

"तीखोन, तुम वही पुराना राग अलापते जा रहे हो!" प्योत्र ने कहा। "देखो, याकोव, एक दिन एक मर्द के मन में कोई सनक सवार हुई और वह भेड़िये की तरह फंदे में फंस गया। यही हाल तुम्हारे भाई का भी हुआ। तुम्हें इल्या का क़िस्सा मालूम है, निकीता?"

"सुना है।"

"हां, मैंने उसे घर से निकाल दिया। उसने जीवन की दौड़ में ग़लत घोड़ा चुना और उड़ गया – कहा? संसार में उसकी तरह के लोग विरले ही हैं, जो पैसे के लालच को छोड़कर तकलीफ़ में रहें..."

"खुदा के बन्दे अलेक्सेई ने भी ऐसा ही किया था," भिक्षु ने प्योत्र को स्मरण दिलाया।

प्योत्र कनपटी पर हाथ रखकर थोडी देर चुपचाप खड़ा रहा और फिर बगीचे की ओर जाते हुए उसने याकोव से कहा –

"मेरे लिये लतामण्डप में तकिये और कम्बल पहुंचा दो। शायद मुझे वहा नीद आ जाये।"

सफेद कपड़ो में उसकी विशाल आकृति भयानक दीख रही थी। उसके बाल अस्त-व्यस्त थे और चेहरा सूजा हुआ और बदरंग था।

"निकीता, मशीनो के बारे में तो तुमने व्यर्थ की बातें की। उनके बारे में भला तुम क्या जानते हो? तुम अपने काम यानी ईश्वर से मतलब रखो। मशीनों से कोई परेशानी नही होती .."

तीखोन ने अवज्ञापूर्ण स्वर मे दृढ़ता से ही बीच में टोककर कहा –

"मशीनें जीवन को महंगा और अशान्त बनाती हैं।"

प्योत्र उसकी ओर हाथ झटककर बगीचे की तरफ़ गया। हाथों मे तकिये उठाये याकोव आगे-आगे चल रहा था। वह खीझ और उदासी से मन ही मन सोच रहा था –

"सगे रिश्तेदार – मेरे पिता और चचा – मुझे क्या ज़रूरत है इनकी? ये मेरी मदद कर नहीं सकते।"

पिता ने भाई को अपने पास रहने के लिये नहीं कहा। भिक्षु चची ओलगा के घर की दुछत्ती में रहने लगा और उसने उससे यह भी कह दिया –

"मैं कुछ समय तक यहां रहकर जल्द ही चला जाऊंगा।"

30-1176

वह बहुत ही ख़ामोशी का जीवन बिताता और अगर उसे नीचे नहीं बुलाया जाता था तो कमरों में भी नहीं जाता था। वह वृक्षों की सूखी टहनियां काटता हुआ बाग़ में इधर-उधर आता-जाता रहता, कंटीली घास उखाड़ने के लिये कछुए की तरह ज़मीन पर रेंगता। वक़्त के साथ उसके चेहरे पर झुर्रियां पड़ती जा रही थीं, उसका शरीर दुबला होता जा रहा था। वह लोगों के साथ सदा धीमे स्वर से बोलता, मानो कोई गुप्त रहस्य बता रहा हो। ख़राब स्वास्थ्य के बहाने वह गिरजे में बहुत कम और सो भी, अनिच्छापूर्वक जाता। घर में थोडी ही देर प्रार्थना करता। वह स्वयं ईश्वर की चर्चा न चलाता और इस विषय पर बात छिड़ते ही तटस्थ हो जाता।

याकोव ने देखा कि ओलगा ने भिक्षु से मित्रता कर ली है और शान्त स्वभाववाली वेरा पोपोवा भी उसका सम्मान करती है। यहां तक कि मिरोन भी बिना किसी चू-चपड़ के चचा की यात्राओं की कहानियां सुनता रहता है, यद्यपि पिता की मृत्यु के बाद मिरोन की धृष्टता और भी बढ गयी थी। मिल मे वह याकोव को इस तरह डांटता, मानो वह सारे कारोबार का मालिक और याकोव एक साधारण क्लर्क हो।

नतालिया के गोल-मटोल, लाल चेहरे पर भिक्षु वैसी ही स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखता जिससे औरों को देखता था, पर दूसरों की तुलना मे उससे बहुत कम बोलता-चालता। वास्तव में तो नतालिया खुद भी बोलना भूलती जा रही थी, केवल श्वास लेती थी। उसकी जड़-सी आखें भावशून्य हो गयी थी और उनमें पति के स्वास्थ्य की चिन्ता, मिरोन के भय, मोटे रोबीले याकोव के प्रति स्नेह उमडने पर ही कभी-कभी भावना की चमक दिखायी दे जाती थी। लगता था कि तीख़ोन से भिक्षु का कुछ मतभेद हो गया था। वे एक दूसरे पर बड़बड़ाते थे, और यद्यपि उनमे झगड़ा नही हुआ, पर एक दूसरे से कन्नी काटते थे।

भिक्षु की काली, भद्दी आकृति को देखकर याकोव की चिन्ताएं और भी बढ़ जाती। उसके मन मे अनेक प्रकार की दुःशंकाएं उठने लगती। उसकी काली, क्षीण देह बरबस मृत्यु के विचार पैदा कर देती। घर में होनेवाली घटनाओं के प्रति याकोव का एक ही दृष्टिकोण था – वह सबसे पहले अपनी सुख-सुविधा की चिन्ता करता था। उसकी यह

चिन्ता बेशक दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी, पर साथ ही घर में भी कोई न कोई नयी परेशानी उठ खड़ी होती थी। एक कुशल प्रेमी की चतुर अन्तर्दृष्टि से उसने भाप लिया था कि पोलीना उसके प्रति विरक्त होती जा रही है। शान्तचित्त के लेफ़्टिनेन्ट मावरिन के व्यवहार से उसका यह सन्देह और पक्का हो गया था। याकोव को देखकर वह सिर्फ लापरवाही से अपनी टोपी छूकर सलाम करता था और ऐसे आखें सिकोड़ लेता, मानो वह सुदूर स्थित किसी तुच्छ वस्तु को देख रहा हो। उसके व्यवहार मे पहले कही अधिक शिष्टता थी; नगर के क्लब मे जुआ खेलने के लिये कुछ सिक्के उधार मांगते समय या क़र्जे की अदायगी को स्थगित कराने की प्रार्थना करते समय वह घिघियाकर कहा करता था –

"तुम्हारा शरीर तो ठीक तोपची के लायक़ है।"

इस तरह की शिष्ट आत्मीयता मे याकोव खुश हो उठता था। सर्दी का मुह चिढ़ानेवाले, अपनी शक्ति और स्फूर्ति, अप्रकट, किन्तु सशयहीन दु:साहस और रबड़ की तरह लचीले इस अफ़सर ने समस्त नगर को चकित कर दिया था। अपनी गोल पथराई आखो को लोगो की आखो मे डालकर वह एक अभ्यस्त सेनापति के स्वर मे कहता –

"मै ठडे दिमाग़ का आदमी हू, मुझे अतिशयोक्ति से बेहद चिढ़ है।"

एक दिन ताश खेलते समय वह बूढ़े पोस्टमास्टर द्रोनोव से झगड पड़ा। यह बूढ़ा अपने तीखे व्यगो के लिये सारे शहर मे प्रसिद्ध था। मावरिन ने उससे कहा –

"मै अतिशयोक्ति नही करता, लेकिन यह सच है कि तुम एक मूर्ख खूसट हो!"

मावरिन को अपने प्रतिद्वन्द्वी के रूप मे देखकर याकोव भयभीत हो उठा – उसे डर था कि कही किसी दिन उनकी आपस मे ठनेगी। पर वह कभी भी यह सहन न कर सकता था कि पोलीना उसके हाथो से निकलकर लेफ़्टिनेन्ट के पास चली जाये। वह दिन-प्रतिदिन उसके मन को अधिकाधिक भाती जाती थी, फिर भी वह पोलीना को चेतावनी दे चुका था –

"देखो, अगर मैने तुम्हारे और मावरिन के बीच कुछ अधिक मेल-जोल बढ़ते देखा तो मैं तुमसे नाता तोड़ लूंगा!"

साथ ही नोस्कोव के कारण उसके दिल में बराबर शंका बढ़ती जाती थी। वह नगर से बाहर वतरक्षा के पुल के पास याकोव की प्रतीक्षा में छिपा रहता और अकस्मात प्रगट होकर पैसों का तक़ाज़ा करता, मानो याकोव उसका क़र्ज़दार हो।

शिकारी का प्रगट होना अजीब था – वह सदा वही पर निकल पड़ता, जहां दो ऐंठे विलो पेड़ों के चारों ओर बर्डोक और बिच्छूबूटी की घनी झाड़ियां थी। कोई दो वर्ष पहले यहां माली पानफ़ील का घर था। किसी ने उसकी हत्या करके घर में आग लगा दी थी। दोनों विलो वृक्षों पर अभी तक जलने के निशान बाक़ी थे। स्किट्ल खेल के प्रेमियों ने अपनी उछल-कूद से राख को रौंदकर जमा दिया था। घर में सिर्फ़ रूसी ढग की बड़ी अंगीठी बची थी। उसकी चिमनी गिरी हुई ईंटों की नींव पर क्षितिज की पृष्ठभूमि में और अधिक लम्बी लगती थी। निर्मल रातों में एक हरे रंग का तारा कांपता हुआ आकाश में उसके ऊपर टिमटिमाता रहता। नोस्कोव इस चिमनी के पीछे से बिच्छूबूटियों की झाड़ियों को सरसराता हुआ धीमी चाल से सामने आ खड़ा होता और आहिस्ता से अपनी टोपी उतारकर भुनभुनाने लगता–

"मैं आपके काम आऊंगा। फिर से एक नया गुट बन रहा है . "

"मुझसे उसका क्या सम्बन्ध है?" याकोव क्रोध से लाल-पीला हो जाता। नोस्कोव धृष्टतापूर्वक उत्तर देता –

"बेशक, यह आपका किया नही है, पर उसका मतलब तो आपसे है।"

"काश, मैं उसी रात इसका काम तमाम कर देता!" याकोव दसवीं बार मन ही मन खीझता हुआ ऐसा सोचता, फिर खुफिये को रक़म देकर कहता –

"देखो – सावधानी से!"

"जानता हूं।"

"मुझे इन पचड़ों में मत घसीटना।"

"कभी नहीं। निश्चिन्त रहिये।"

"मुझे ज़रूर मूर्ख समझता है ..." याकोव सोचता।

नोस्कोव की उपयोगिता को जानते हुए भी याकोव को इस चपटे चेहरे और मुड़ी टांगोंवाले शिकारी से डर लगता था। हो न हो, वह अपनी घायल टांग का बदला लेने का अवसर ढूंढ़ रहा है। वह किसी

न किसी मजदूर को धमकाकर या पैसे देकर याकोव को उसी के पैसे से मरवा डालेगा। याकोव को मजदूरों की आंखों में दुश्मनी दिखायी देने लगी थी।

मिरोन के कहने के अनुसार मजदूर अपनी हालत अच्छी करने के लिये विद्रोह नही करते हैं, बल्कि इस कारण कि कही बाहर से एक अटपटा और बेहूदा विचार उनके दिमाग़ में डाला जाता है कि वे बैंकों, दुकानों, कारखानों और देश की सारी अर्थव्यवस्था को हथिया लें। ऐसी बातें करते वक़्त वह अपनी लम्बी टांगों से कमरे में चक्कर काटता रहता। ऐसे समय वह ख़ूब सीधा होकर तथा तनकर चलता, गर्दन को टेढ़ा करता और मानो कालर को ढीला करने के लिये उसमें उंगली डाले रहता, गोकि उसकी गर्दन पतली थी और कालर तग न होता था।

"ये लोग तो समाजवादियों को भी पीछे छोड़ गये है – पता नही इन कमबख़्तो का क्या नाम है! और ऐसे विचार फैलानेवालों में तुम्हारा भाई भी है। हमारी सरकार में बूढ़े-खूसट भरे हुए है..."

याकोव जानता था कि इस सारे भाषण का अर्थ था कि मिरोन अपने श्रोतागण को और स्वय अपने को यह आश्वस्त कर दे कि वह राज्य-दूमा का सदस्य बनने का अधिकारी है। फिर भी इससे याकोव का भय और बढ़ जाता और उसे लगता कि सैकड़ो मजदूरो के बीच वह अरक्षित तथा अकेला है। एक दिन बड़ी भयानक घटना घटी। पौ फटने से पहले मिल के अहाते में चीख़-पुकार सुनकर वह जाग गया और उसने देखा कि सामने की सफ़ेद दीवार पर सैकड़ो छायाए भाग रही हैं, उछल-कूद रही है और हाथों को ज़ोर से हिला-डुला रही हैं। याकोव पसीने से तर हो गया, उसकी समझ में एक विचार कौंधा और वह मन ही मन में चिल्लाया –

"विद्रोह!"

कुछ देर बाद झपटती हुई परछाइयां, जो जीती-जागती आकृतियों से कहीं डरावनी थीं, लुप्त हो गयी। याकोव समझ गया कि यह तो छुट्टी के बाद होनेवाले चिरपरिचित झगड़े थे। लेकिन वह उन ख़ौफ़नाक आकृतियों को मन से न निकाल सका। जीवन में इतनी दुःशंकाएं आ बसी थीं कि अख़बारों को पढ़ना तो दूर, उन्हें देखने से रूह कापती थी। सरल और स्पष्ट घटनाओं का स्थान भयानक, अप्रिय घटनाओं

ने ले लिया था। रगमच नये लोगों से भर गया था।

याकोव की बहन तात्याना सहसा एक विवाह-इच्छुक को वोरगोरोद से अपने साथ ले आयी। लाल बालोंवाला और इंजीनियरों की टोपी लगाये यह छोटे क़द का फुर्तीला और हंसमुख व्यक्ति था। आयु में वह तात्याना से दो वर्ष छोटा था। तात्याना की देखादेखी बाक़ी सब लोग भी उसे केवल मीत्या कहकर पुकारने लगे। वह गिटार बजाकर तरह-तरह के गीत गाता था। एक गीत जो वह अक्सर गाता था, याकोव को अपमानजनक लगता था और नतालिया गुस्से से भर उठती थी।

मेरी बीवी पडी कब्र मे
हे भगवान!
स्वर्गलोक में इस दासी को
दे दो स्थान!

लेकिन तात्याना को बुरा न लगता। औरो की तरह यह व्यक्ति उसका भी मनोरजन करता। कभी-कभी नतालिया भी पिघलकर कहती –

"अरी, ओ चहकती चिड़िया, कुछ खा ले, शैतान!"

खाने-पीने के मामले मे मीत्या कबूतर की तरह पेटू था। प्योत्र टकटकी लगाकर उसे देखता, मानो कोई स्वप्न देख रहा हो। चकित हो आखे मिचमिचाकर वह पूछता –

"तुम्हारे स्वभाव को देखते हुए तो तुम्हे पियक्कड़ होना चाहिये। पीते हो?"

"हा, पी सकता हू!" दामाद ने उत्तर दिया। रात के खाने पर उसने पीने की अच्छी क्षमता दिखायी। वह वोल्गा, उराल, क्रीमिया, काकेशिया सब जगहो पर घूम आया था। उसे असख्य कहानिया और चुटकुले याद थे। वह ऐसे देश का निवासी मालूम होता था, जहा चिन्ताओं का नाम तक नही।

"जीवन एक लाड़ली सुन्दरी है!" वह हंसकर कहता। वह आते ही कारोबार के भंवर में फस गया। मजदूर उसे चाहने लगे, बूढ़े बुनकर उसके चुटकुलों पर सिर हिलाते, छोकरे हंसी के मारे लोटपोट हो जाते, यहां तक कि सिरोन भी मीत्या की हसानेवाली बातें सुनकर खिल उठता था। एक दिन वे मिल के आंगन को एकसाथ पार कर पांचवी इमारत की ओर जा रहे थे। हाल ही में लाल ईंट के बने इस

पांचवें हिस्से में अभी तक बास-बल्ली के पाड़ बंधे थे। बढ़ई जगह-जगह काम कर रहे थे। इधर बढइयों के बसूले चांदी की तरह चमक रहे थे – उधर मिरोन के सुनहरे चश्मे की किरणें लौ दे रही थी। मिरोन ने प्राचीन भद्दे चित्र के सेनापतियों के ढंग से हाथ उठाया। मीत्या ने सिर हिलाकर अपनी बांहें इस ढंग से फैलायी, मानो वह धरती पर कुछ बिखेर रहा हो।

दफ्तर मे बैठा याकोव उन दोनो की ओर खिड़की से देख रहा था। उसे भी अपना भावी बहनोई पसन्द था। उसकी संगत में समय जल्दी से बीत जाता था और चिन्ताएं दूर भाग जाती थी। याकोव को मीत्या के व्यक्तित्व से स्पर्द्धा होती। साथ ही अविश्वास की एक धुधली रेखा भी उसके मानस-पटल पर खिच जाती। उसे आशका होती कि यह मुक्त पक्षी जैसे आया है, वैसे ही कल कही उड न जाये, क्या पता किसी सनक मे आकर वह अभिनेता या नाई ही न बन जाये। मीत्या मे एक गुण और था – वह लालची नही था। उसने तात्याना के दहेज की रकम तक न पूछी थी। हो सकता था कि इसमें तात्याना की कोई चालाकी छिपी हो। प्योत्र बड़बडाता –

"इस ललछौंहे के लिये ही मै जान खपाता रहा था "

मिरोन ने भी शादी कर ली।

"मेरी पत्नी से मिलिये," मास्को से लौटने पर वह एक गोल-मटोल, नन्ही-सी गुडिया को साथ ले आया, जिसकी आखे नीली और बाल घुघराले थे। उसका प्रत्येक अग इतना सुडौल था कि याकोव को वह हाड़-मास की न लगकर चचा अल्योशा की प्रिय घडी पर बनी चीनी मिट्टी की मूर्ति की तरह दिखायी दे रही थी। इस मूर्ति का सर टूट गया था और जोड़ते समय ज़रा टेढा जुड गया था, जिससे उसकी आखें कमरे मे लोगों की ओर न होकर उस दर्पण की ओर घूम गयी थी जिसके सहारे वह खड़ी थी। मिरोन ने बताया कि उसकी पत्नी का नाम आन्ना है और वह अट्ठारह वर्ष की है। लेकिन उसने यह नही बताया कि वह एक कागज़ के व्यापारी की इकलौती बेटी है और दहेज मे ढाई लाख रूबल लायी है।

"ऐसे शादी की जाती है," प्योत्र लाल-लाल आखो से याकोव की ओर देखते हुए बोला, "और तुम न जाने किसके साथ घूमते हो। इल्या का तो कोई सवाल ही नही उठता।"

प्योत्र को अपने मुटापे के कारण चलने में कठिनाई होती थी। याकोव को लगता था कि शायद प्योत्र अपनी देह के मुटापे से तंग आकर जानबूझकर दर्शकों के सामने अपनी कुरूपता का प्रदर्शन करना चाहता है। वह स्लीपर पहने, ड्रेसिंग गाउन के बटन खोले और अपनी चर्बी चढ़ी छाती को दिखाता हुआ घूमता – जैसा कि उसने येलेना को तंग करने के लिये किया था। कभी-कभी वह याकोव के दफ़्तर में आकर अपना दुखड़ा रोता और कहता कि कारोबार तथा सन्तान की ख़ातिर उसने अपना सारा जीवन क़ुर्बान कर दिया है, वह कारोबार की चिन्ता-ओं की चक्की में पिस गया है और उसे एक क्षण के लिये भी मनोरंजन अथवा सुख नही मिला।

याकोव चुपचाप सुनता रहता। इस रोने-धोने से प्योत्र को कुछ सान्त्वना मिलती। और साथ ही वह उसे घटाघर की बुर्जी की तरह ऊंचा और बडा बना देता। उस बुर्जी की तरह जिस पर बस्ती के घरों से बहुत पहले ही सूर्य चमकता और रात को अस्त होते समय सबसे अन्त में विदा लेता। इस सारे रोने-धोने से याकोव ने एक शिक्षाप्रद परिणाम ज़रूर निकाला। वह यह कि उसके लिये पिता की तरह जीवन बिताने में कोई तुक नही।

याकोव देखता था कि अपना दुखडा रोने के बाद प्योत्र दूसरों के मन को ठेस पहुंचाने के लिये हर समय व्याकुल रहता था। वह खिड़की के पास बैठी अपनी पत्नी के पास जाता जो घण्टों घुटनों पर हाथ रखे शून्य दृष्टि से बाहर ताकती रहती थी। प्योत्र उसके पास बैठकर ताना मारता –

"क्या सोच रही हो? तुम इतनी मोटी होते हुए भी नज़र नही आतीं। तुम्हारे बच्चे भी तुम पर नज़र नही डालते। तात्याना तुमसे अधिक रसोइये का आदर करती है। येलेना तुम्हारे प्रति उदासीन है, वह तुमसे मिलने नही आती। किसी नये प्रेमी के साथ रगरेलिया मना रही होगी। और इल्या कहां है?"

लेकिन पत्नी को तंग करने से प्योत्र को विशेष आनन्द न मिलता। वह फ़ौरन रो पड़ती और उसकी आंखों से, गालों से, दोहरी ठुड्डी से, कहीं कानों के पास से आंसुओं की नदियां बहने लगतीं।

"टपकते पीपे की तरह हो," प्योत्र चिढकर कहता और उसकी ओर ऐसे हाथ हिलाता हुआ मानो धुएं को अपने से दूर हटा रहा हो,

वहां से चल देता। नही, वह उसके मन को नहीं बहलाती थी।

प्योत्र याकोव को कभी न चिढ़ाता। लेकिन याकोव को पिता की आंखों में अपमानजनक दया दिखायी देती। प्योत्र ठंडी सांस लेकर कहता –

"ओह तुम! सूनी-सूनी आंखोंवाले ..."

मिरोन पर तानो का कोई प्रभाव न होता था। इसलिये प्योत्र उससे दूर रहता। याकोव इस बात को अच्छी तरह समझता था। मिरोन से मिल में और घर पर सभी डरते थे – उसकी मां और चीनी की गुड़िया-सी बीवी से लेकर दरवाज़ा खोलनेवाला ग्रीश्का तक। मिरोन के अहाते में आते ही चारो ओर सन्नाटा छा जाता, मानो उसकी लम्बी छाया अपने इर्द-गिर्द ख़ामोशी पैदा कर देती हो।

लाल बालोवाले दामाद को भी तंग करने में प्योत्र को कोई आनन्द न मिलता। मीत्या दूसरों से ज़्यादा स्वयं ही अपना मज़ाक़ उड़ाता था। औरों से कोड़े खाने की अपेक्षा उसे स्वयं अपनी खाल उधेड़ना अधिक पसन्द था। तात्याना मां बननेवाली थी। वह खाना खाने के बाद एक-साथ तीन पुस्तकें सामने रखकर आराम करती और फिर सैर को चल देती। पति एक पालतू कुत्ते की तरह उसके साथ-साथ दौड़ता जाता।

तीख़ोन और निकीता को सताने के लिये प्योत्र गाड़ी जोतने का हुक्म देता। नगर में जाकर वह निकीता से कहता –

"अरे, पादरियो की टोपीवाले विद्यार्थी! तुम्हारा ईश्वर कहां गया?"

निकीता मानो अपने कूबड़ में सिकुड़ता हुआ लम्बे-लम्बे हाथों की हथेलियो मे नुकीले घुटनो को ज़ोर से सहलाता और मृदु स्वर मे जवाब देता –

"ओह! तुम्हें ऐसा नही बोलना चाहिये .."

"क्यो नही? तुम ग़लत टोपी पहने हो, कपटपूर्ण टोपी पहने हो। तुम्हारे सारे कपड़े कपटपूर्ण है। कैसे भिक्षु हो तुम?"

"इसकी चिन्ता मुझे करनी चाहिये।"

"तुम सुघनी भी सूंघते हो। तुमने भारी ग़लती की। अगर ठीक वक्त पर किसी निर्धन अनाथ कन्या से शादी कर लेते, तो वह तुम्हें कृतज्ञ होकर सन्तान देती और आज तुम भी मेरी तरह नाती-पोतोंवाले होते। लेकिन तुम पर तो सनक सवार थी – याद है?"

भिक्षु एक मन्दगतिवाले बहुत बड़े कछुए की तरह वहां से चल

देता। फिर प्योत्र ओलगा के पास जाकर उसे मेले में अल्योशा की रंग-रेलियों की कहानियां सुनाता। इससे भी उसके मन को शान्ति न मिलती। पति की मृत्यु के बाद ओलगा बहुत बेचैन रहती। हर समय वह घर के सामान को इधर-उधर रखती फिरती या शून्य दृष्टि से खिड़की से बाहर ताकती रहती। वह अपने सिर को न हिलाती-डुलाती और मोटा चश्मा पहनने पर भी वह चीज़ों को छूती हुई चलती। प्योत्र के द्वेषपूर्ण आक्षेप सुनकर वह कहती –

"तुम जो मन चाहे, सो कहो। अपने अल्योशा को जिस रूप में मैं जानती हूं, अब उस में किसी भी बुराई या भलाई की वृद्धि या कमी नही हो सकती।"

"तुम्हारे बारे में अल्योशा ठीक कहा करता था – तुम एक ही आंख से दुनिया को देखती हो।"

"अब तो दोनों से लगभग कुछ नज़र नही आता। अपने अन्धेपन के कारण कल मैने उनका प्यारा प्याला तोड़ डाला।"

प्योत्र तीख़ोन को तडपाने की कोशिश करता, लेकिन यह आसान न था। तीख़ोन कभी ख़फ़ा न होता। वह तिरछी नजर से देखकर सयत रूप में संक्षिप्त-सा जवाब देता।

"बहुत लम्बे अरसे तक जी रहे हो तुम," प्योत्र कहता।

"बहुत-से लोग मुझसे भी अधिक अरसे तक ज़िन्दा है," तीख़ोन जवाब देता।

"लेकिन किसलिये जिये हो तुम? मुझे बताओ तो सही!"

"हर कोई जीता है।"

"सो तो ठीक है, लेकिन सब लोग आगन नही बुहारते फिरते ."

तीख़ोन का जीवन के प्रति अपना दृष्टिकोण था –

"मनुष्य पैदा होता है और मरने तक जीवित रहता है," उसने जवाब दिया, लेकिन प्योत्र ने सुना नही –

"तुम्हारा सारा जीवन झाड़ने-बुहारने में बीत गया। न पत्नी, न बच्चे, न कोई फ़िक्र, न चिन्ता, क्यों? मेरे पिता ने तुम्हें अच्छी नौकरी पर लगाना चाहा, लेकिन तुमने वह स्वीकार नहीं की। तुमने ऐसी ज़िद्द क्यों की?"

"अब इस बात को पूछने मे क्या लाभ है, प्योत्र इल्यीच?" तीख़ोन मुंह फेरकर कहता।

ख़फ़ा होकर अर्तामोनोव ने हठ के साथ तंग करते हुए कहा –

"ज़रा सोचो तो सही! तुम्हारे सामने कितने लोगों के भाग्य पलट गये? हर कोई धन-दौलत चाहता है .."

"धन-दौलत जमा करो, फिर शैतान के हवाले कर दो, क्यों?" तीख़ोन ने उत्तर दिया।

याकोव सोच रहा था कि उसका पिता भभक उठेगा और चिल्लायेगा, लेकिन थोड़ी देर चुप रहकर वह मुंह ही मुह कुछ बड़बड़ाता हुआ वहां से चला गया। तीख़ोन बुढ़ापे के कारण गंजा हो गया था और उसका चेहरा झुर्रियों से भर गया था। तो भी उसका स्वास्थ्य अच्छा था – उसके व्यक्तित्व में एक विचित्र आकर्षण आ गया था और उसके शब्द पहले से अधिक प्रभावशाली हो गये थे। याकोव को ऐसा प्रतीत होता कि अपनी बातचीत और व्यवहार में प्योत्र की अपेक्षा तीख़ोन कही अधिक मालिक लगता है।

याकोव स्वयं अधिक स्पष्टता से अनुभव करता कि वह अपने परिवार में पराया है। परिवार मे यदि कोई मन का आदमी है तो वह बाहरी मीत्या लोगिनोव। याकोव को मीत्या न तो बुद्धिमान लगता, न मूर्ख। वह इन श्रेणियो में न आता। वह और लोगो की तरह न था। और मीत्या के प्रति मिरोन का व्यवहार उसके महत्त्व की पुष्टि करता। रूखा और रोब-दाब दिखाने और सब पर हुक्म चलानेवाला मिरोन मीत्या के साथ खूब घुल-मिलकर रहता, यद्यपि वे दोनो अक्सर बहस करते, पर कभी झगडने नही और बहस भी बड़ी सावधानी से करते। सबेरे से रात तक घर गूंजता रहता –

"मीत्या!" तात्याना पुकारती।

"मीत्या कहां है?" नतालिया पूछती, यहा तक कि प्योत्र भी खिड़की से झांककर आवाज़ देता –

"मीत्या, खाने का समय हो गया है!"

मीत्या लोमड़ी की तरह सारी मिल में चक्कर काटता। उसके विनोद-भरे चुटकुलों को सुनकर मज़दूर हंसी से लोट-पोट हो जाते और मिरोन के दुर्व्यवहार को भूल जाते। वह मजदूरों को मित्र कहकर पुकारता।

"देखो, दोस्त, यह ग़लत है!" मीत्या बढ़इयों के बुज़ुर्ग फ़ोरमैन को लाल चमडे की जिल्दवाली नोटबुक दिखाकर कहता या पास ही

के किसी तख़्ते पर उसका रेखाचित्र खींचकर दिखाता।

"देखो, इस तरह, और इस तरह, और फिर ऐसे। ठीक?"

"समझ गया, लेकिन हम पुराने ढंग से कर रहे थे, जैसा कि हमेशा करते रहे थे..." फ़ोरमैन मानकर कहता।

"नही, दोस्त! यह अच्छा नही है। तुम्हें नया तरीक़ा सीखना होगा, उसमें अधिक लाभ है!"

फ़ोरमैन सिर झुकाकर हामी भरता –

"ठीक है।"

कारोबार में मीत्या अल्योशा की तरह कुशल था, लेकिन उसमें मालिकों जैसे लालचीपन की गन्ध तक न थी। उसके हंसोड़पन को देखकर सेराफ़ीम की बहुत याद आती। प्योत्र ने भी इस बात पर ध्यान दिया। एक दिन जब मीत्या ने भोजन के समय उदास वातावरण को दूर कर दिया, तो प्योत्र ने मुस्कराकर कहा –

"हमारे यहां सान्त्वना देनेवाला एक और था, सेराफ़ीम!"

प्योत्र और मिरोन में अक्सर झगड़ा हो जाता। एक बार याकोव ने मिरोन से मीत्या को कहते सुना –

"दयनीयता के साथ क्षुद्रता और भयानकता का संयोजन – यह है शुद्ध रूसी रसायन!"

फिर सान्त्वना देने के लिये उसने कहा –

"पर ठीक है, ऐसी चीज़ें शीघ्र ही समाप्त हो जायेंगी। हमारा शोधन हो रहा है..."

छुट्टी के एक दिन सब लोग सन्ध्या को बगीचे में बैठे चाय पी रहे थे। प्योत्र ने शिकायत के स्वर में कहा –

"मेरे जीवन मे कभी कोई छुट्टी नहीं आई!"

मीत्या के मुंह से ज़ोरदार आतिशबाज़ी-सी छूटी –

"इसमें आपका ही क़ुसूर है! इन्सान अपनी छुट्टी स्वयं बनाता है। जीवन एक लाड़ली सुन्दरी है, वह आये दिन नये उपहार और मनोरंजन मांगती है। जीवन का उपभोग करना चाहिये। हर रोज़ आनन्द मनाने के लिये कुछ न कुछ मिलता ही रहता है।"

वह उत्साही वक्ता की तरह बोलता ही रहा, और लोग चुप रहे। सदा ही ऐसा होता – उसकी बातें सुनकर लोग मानो स्वप्न देखने लगते। याकोव को भी मीत्या के शब्दों में आकर्षण अनुभव होता, सत्य

की झलक दिखाई देती। साथ ही उसके मन में आता कि उससे पूछे –

"तो फिर तुमने ऐसी मूर्ख, बदसूरत छोकरी से शादी क्यों की?"

याकोव को पता लगा कि अपनी पत्नी के साथ मीत्या का दिखावटी सम्बन्ध था। उसके प्रेम-प्रदर्शन में दिखावट की मात्रा आवश्यकता से अधिक थी। याकोव ने सोचा कि तात्याना से भी यह बात छिपी नहीं है। वह प्रायः गुमसुम रहती और ज़रा-ज़रा-सी बात पर खीझ उठती। हंसमुख पति के बजाय उसे मिरोन से राजनीति पर बहस करने में अधिक आनन्द आता। राजनीति के अतिरिक्त वह और किसी विषय पर बात करने में असमर्थ थी।

कभी-कभी याकोव को लगता कि मीत्या खुशी और मस्ती-भरी किसी दुनिया से नहीं, बल्कि एक नीरस और अंधेरे गर्त से निकलकर आया है। नये, अपरिचित लोगों से मिलकर उसकी नीरसता दूर हो गई है और वह प्रसन्नता से चहकता फिरता है। मीत्या एक ऐसे शिशु के समान था, जो खिलौनों से भरे कमरे में मुंह बाये खड़ा हो, पर ऐसे चतुर बालक के समान जिसने शीघ्र ही पहचान लिया हो कि कौन-से खिलौने सबसे अधिक काम के हैं।

पूरे परिवार और मिल में केवल दो प्राणी ही ऐसे थे जिन्हें मीत्या से चिढ़ थी – निकीता और तीख़ोन। जब याकोव ने तीख़ोन से मीत्या के बारे मे पूछा तो तीख़ोन ने शान्त स्वर में कहा –

"भरोसे का आदमी नहीं।"

"क्यों?"

"वह मक्खी की तरह हर गन्दगी पर भिनभिनाता फिरता है।"

याकोव ने बूढ़े से बीसियों प्रश्न पूछे, लेकिन वह एक ही जवाब देता –

"याकोव पेत्रोविच, तुम स्वयं ही देखो। देखते नहीं कि वह हर तरह की तिकड़में करता फिरता है?"

निकीता की भी ऐसी ही राय थी।

"दिखावा करता है," निकीता ने ठंडी सांस लेते हुए कहा। "मैंने ऐसे बीसियों लोग देखे हैं। बकवासी। वे शब्दों का जाल रचकर लोगों की आंखों में धूल झोंकते हैं। ऐसे लोग स्वयं भी शब्दों में उलझ गये है। हां, ऐसे हैं वे।"

विनयशील कुबड़े को घृणा का प्रदर्शन करते देखकर याकोव चकित

रह गया। सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह थी कि ये दोनों बुड्ढे, जो हर समय लड़ते-झगड़ते रहते थे, तात्याना के पति के प्रति एक मत हो रहे थे। याकोब को इस बात में इन्सानों में फैली उसी मूर्खता की झलक मिली, जिससे उसे चिढ़ थी। उन लोगों में भला क्या असहमति हो सकती थी जो क़ब्र में पांव लटकाए बैठे थे?

चचा निकीता मरणासन्न अवस्था में था। याकोव को लगा कि प्योत्र उसे जानबूझकर क़ब्र में ढकेल रहा था। वह हर मौक़े पर भाई को अपनी घृणा से कुचलना चाहता था।

"मैं जीवन-भर कोल्हू का बैल बना रहा हूं और तुम बिल्ले की तरह आराम से रहते हो। सब लोग तुम्हे आराम और सुख देने का यत्न करते हैं। शायद उन्हें यह ध्यान ही नही रहता कि तुम कुबड़े हो। और मै—मुझे सब बुरा कहते हैं। मै बुरा कैमे हू? जीवन-भर "

भिक्षु अपने कूबड़ मे सिमटता और खासता हुआ कहता—

"खफ़ा मत हो।"

और दूसरी बात जिससे याकोव को जीवन कठिन लगता, वह थी याकोव के मन में अपने पिता के प्रति घृणा। प्योत्र की नगी छाती उसे सफ़ेद बालों से भरे साबुन जैसी दिखाई देती, जिसे देखते ही वह विक्षुब्ध हो उठता। अपने को संयत रखने के लिये वह बार-बार खुद को याद दिलाता—

"ये मेरे पिता हैं। इन्होंने मुझे जन्म दिया है।"

लेकिन इन विचारो से उसके पिता का रूप न बदलता, उसके कारण उत्पन्न घृणा न दब सकती। इसके विपरीत यह विचार ही घृणाजनक था, अपमानजनक था। प्योत्र हर रोज़ मानो निकीता को मरते देखने के लिये ही शहर जाता। हांफता हुआ सीढ़ियां चढ़ने के बाद वह भिक्षु के बिस्तर पर बैठकर उमे सूजी हुई लाल-लाल आंखों से घूरता। निकीता चुपचाप पड़ा रहता। बार-बार खांसकर वह शून्य दृष्टि से छत की ओर ताकता रहता। उसके हाथ चोग़े में मानो कुछ झाड़ते रहते। खांसते-खासते उसका दम फूल जाता और वह उठने की कोशिश करता।

"तड़क रहे हो?" प्योत्र अपने भाई से पूछता।

निकीता भाई के कंधे, बिस्तर और कुर्सियों का सहारा लेता हुआ

खिड़की तक जा पहुंचता। उसका ढीला चोग़ा टूटे मस्तूल पर लटके हुए पाल की तरह दिखाई देता। खिड़की के पास बैठकर वह मुंह खोले हुए नीचे के बगीचे या दूरस्थ जंगल की ओर देखता रहता।

"अच्छा, तो आराम करो," प्योत्र कान की ढीली ललरी को ऐंठते हुए कहता और नीचे आकर ओलगा को बताता –

"तड़क रहा है, ज्यादा देर न लगेगी .."

इतने में मोटा पादरी मार्दारी आ पहुचा। उमने कहा कि धार्मिक नियमों के अनुसार निकीता को मठ मे ही प्राण देने चाहिये, और उसे वही दफनाया जाना चाहिये, लेकिन कुबड़े ने ओलगा को इन्कार करने के लिये मना लिया –

"मरने के बाद ही मुझे वहां भेजना।"

फिर उमने गिड़गिड़ाकर कहा –

"जनाज़े का ढक्कन ऊचा रखना, नही तो मेरा कूबड़ दबेगा। भूलना मत।"

महायुद्ध छिडने से चार दिन पहले वह चल बसा। मरने से एक दिन पहले उसने मठ में सूचना भेजने को कहा –

"बेशक वे मुझे लेने के लिये आ जायें। उनके आने तक मेरे प्राण निकल जायेगे।"

अन्तिम दिन याकोव अपने पिता को सहारा देकर ऊपर ले गया। प्योत्र ने अपने शरीर पर क्रॉस का निशान बनाते हुए भाई के राख जैसे, रक्तहीन चेहरे की ओर देखा। निकीता की आंखे अधमुंदी थी और मुंह धंसा हुआ था। उसने अस्वाभाविक रूप से ऊंचे स्वर में कहा –

"मुझे क्षमा कर दो।"

"यह तुम क्या कह रहे हो? तुमने क्या क़सूर किया है?" प्योत्र बुदबुदाया।

"मेरी धृष्टता के लिये. "

"क्षमा तो मुझे मांगनी चाहिये," बडे भाई ने कहा। "मैंने कई बार तुम्हारी खिल्ली उड़ाई है. ."

"ईश्वर हंसी-मज़ाक़ से नही चिढ़ता," भिक्षु ने क्षीण स्वर में विश्वास दिलाया। प्योत्र ने पूछा –

"अब तुम कैसे? किधर .. "

"मैं भूल गया था," भिक्षु ने भाई को जल्दी से बीच में टोका।

"याकोव, जाकर तीख़ोन से कह दो कि ग्रीष्म-गृहवाला मेपल वृक्ष काट दे। वह बढ़ नहीं सकता..."

याकोव भिक्षु की अलौकिक स्पष्ट आवाज़ को सहन नहीं कर सका और न वह उसकी टेढ़ी-मेढ़ी छाती को ही देख सका। काले वस्त्रों में ढंके इस अस्थि-पंजर में जीवन की एक भी किरण शेष न बची थी। वह अपनी मुट्ठी में प्राचीन ढंग का तांबे का एक क्रॉस पकड़े हुए था। याकोव को अपने चचा के लिये दुःख हो रहा था, लेकिन साथ ही वह यह भी सोच रहा था—यह बुरा रिवाज है कि बुड्ढे और कुल मिलाकर कुटुम्ब के लोग सबकी आंखों के सामने मरें।

निकीता के फिर से बोलने की प्रतीक्षा में प्योत्र कुछ देर चुपचाप वहां खड़ा रहा, इसके बाद याकोव की बांह का सहारा लेकर धीरे-धीरे चल दिया। नीचे उतरकर वह बोला—

"निकीता मर रहा है।"

"सच?" मिरोन ने अख़बार पढ़ते हुए पूछा। उसने एक क्षण के लिए भी अख़बार से दृष्टि नही हटाई। कुछ देर बाद अख़बार को मेज़ पर फैलाकर उसने पत्नी को आवाज़ दी—

"देखो, मैं ठीक कहता था न—इसे पढ़ो!"

उसकी गोल-मटोल पत्नी मेज़ के पास आई और ओलगा घबराकर खिड़की पर से चिल्लाई—

"मिरोन! क्या सचमुच युद्ध छिड़ गया है?"

"अब दूसरा अर्तामोनोव भी..." प्योत्र ने ज़ोर से कहकर स्मरण दिलाया।

"यह सरासर झूठ है," मिरोन ने न जाने अपनी पत्नी को या याकोव को सुनाकर कहा। याकोव भी अख़बार पर दृष्टि गड़ाये सोच रहा था कि इस सबमें व्यक्तिगत रूप से उसके लिये क्या परेशानी हो सकती है। प्योत्र चिढ़कर कमरे मे बाहर चला गया। गरमी के कारण फ़र्श के पत्थर इतने तप गये थे कि उनकी गर्मी मख़मली बूटों में मे प्योत्र के तलवों तक पहुंचने लगी। खिड़की में से मिरोन की रूखी, डांटने की आवाज़ आ रही थी। याकोव ने खिड़की के पास खड़े और अख़बार हाथ में लिये पिता को किसी पर गुस्से से बाहर मुट्ठियां तानते देखा, मानों किसी को धमकी दे रहा हो।

तीन दिन बाद तड़के ही सात भिक्षु आ पहुंचे। सब के सब एक

दूसरे से लम्बाई और चौड़ाई में भिन्न थे, लेकिन याकोव को एक को छोड़कर सभी नवजात शिशु के समान अबोध दिखाई दिये। उनका नेता, जो क़द में सबसे लम्बा और दुबला था, हाथ में काले रंग का एक बड़ा-सा काला क्रॉस उठाये हुए था। उसका ऊंचा, प्रफुल्ल स्वर भिक्षु तथा इस शोकपूर्ण अवसर के सर्वथा अनुपयुक्त था। उसकी घनी दाढ़ी थी, पर चेहरा तो मानो ग़ायब था. उसकी गंजी खोपड़ी और दाढ़ी के बीच बस एक मोटी-सी नाक गालों से मिल गयी थी और चेहरे पर दो काले गड्ढों के सिवा कुछ न था। वह इतने धीमे-धीमे क़दम उठाता था कि अंधे जैसा लगता था। गाते समय उसके गले से तीन आवाज़ें एकसाथ ही निकलती थीं।

"पवित्र ईश्वर," भारी स्वर में उसने भजन की टेक आरम्भ की।

"पवित्र और शक्तिमान," उसका स्वर कुछ ऊंचा हो गया।

"पवित्र और अमर, हम पर दया कर!" – गले से इतनी तीखी आवाज़ निकली कि गली में खेलते बच्चे इस तीन आवाज़ोंवाले दढ़ियल को देखने के लिए दौड़े आये।

जब जनाज़ा चौक पहुंचा, तो शहर के लोगों की भारी भीड़ थी और उनके बीच नगर के कुछ अधिकारी, लेफ़्टिनेण्ट मावरिन और उसके जवान और पादरियों का एक झुण्ड था। शान्तचित्त लेफ़्टिनेण्ट मावरिन अपनी चमकती वर्दी पहने एक स्मारक की भांति अचल खड़ा था। नुकीली टोपियां पहने पुरोहित और पादरी पत्थर पर खुदी मूर्तियों की तरह चुपचाप खड़े थे। उनके सुनहरे कपड़ों की किरणें लेफ़्टिनेण्ट मावरिन के मुख पर पड़ रही थीं। एक मोटा-सा अफ़सर अपनी टोपी हिलाता हुआ इधर-उधर घूम रहा था।

तीन आवाज़ोंवाले भिक्षु ने क्रॉस हिलाते हुए लोगों की दीवार के सामने रुककर भारी-भरकम स्वर में कहा –

"हट जाओ!"

लोग हट गये, लेकिन भिक्षु के लिए नहीं, बल्कि सहकारी पुलिस अफ़सर एक्के के लम्बे, लाल घोड़े को आता देखकर। भिक्षु को एक ओर धक्का देते हुए एक्के ने आगे बढ़कर चौक का रास्ता रोक लिया और सफ़ेद दस्ताने को हिलाकर लोगों को डांटा --

"कहां जा रहे हो? दिखाई नहीं देता? वापस जाओ!"

भिक्षु ने क्रॉस उठाकर गाना शुरू किया –

"पवित्र ईश्वर ..."

"हुर्रा!" अफ़सर चिल्लाया और चौक में खड़े लोगों की भीड़ भी चीखी –

"हुर्रा!"

एक्के घोड़े की रकाबों में ज़रा खड़ा होकर चिल्लाया –

"प्योत्र इल्यीच, कृपया बग़ल से, कूचे से निकल जायें! मिरोन अलेक्सेयेविच, आप से अनुरोध करता हूं! इस उपद्रव के बीच आप यह क्या है?"

नतालिया और याकोव को साथ लिये जनाज़े में सबसे आगे-आगे खड़े प्योत्र ने एक्के के भावहीन चेहरे की ओर देखकर उदासी से भिक्षुओं से कहा –

"आप लोग पीछे मुड़ चलिए .."

फिर रुंधे गले से बोला –

"मुझे लगता है कि आदेश देने का मेरा यह अन्तिम अवसर है ..."

याकोव को सारी घटना अनुचित और हास्यास्पद तक लगी। वे लोग उस गली की ओर मुड़ गये, जिसमें पोलीना रहती थी। इतने में सफ़ेद कपड़े पहने और हाथ में गुलाबी रंग का छाता लिये पोलीना स्वयं दिखाई दी। चौक पार करते समय उसने जल्दी से अपने उन्नत वक्ष पर क्रॉस का चिह्न बनाया।

"मावरिन को देखने जा रही है," याकोव ने सड़क की धूल और मन के क्षोभ से खिन्न होकर सोचा। भिक्षुओं ने तेज़ी से क़दम बढ़ाये। दढ़ियल का स्वर भी धीमा हो गया और भजनमंडली चुप हो गई। नगर के बाहर क़साईख़ाने के सामने दो चितकबरे घोड़ों से जुती काले कपड़ों से ढंकी एक विचित्र ढंग की गाड़ी खड़ी थी। कफ़न को इस गाड़ी पर रख दिया गया और शोक-प्रार्थनाएं शुरू हुई। शहर की सड़क पर बैंड 'ईश्वर ज़ार की रक्षा करे' की धुन बजा रहा था। तीनों गिरजों की घण्टियां टन-टन बज रही थीं और एकत्रित भीड़ चिल्ला रही थी –

"हुर्रा-ा-ा!"

याकोव ने मन ही मन लेफ़्टिनेण्ट मावरिन को यह आदेश देते सुना –

"सावधान ! "

प्रार्थना के बाद वह अन्य लोगों के साथ अपनी चची के यहां लौट आया। स्मृति-भोज के अवसर पर उसने पिता की क्रोध-भरी बड़बड़ाहट सुनी –

"किस बेवक़ूफ़ ने गाड़ी को क़साईख़ाने के सामने खड़ा किया था ?"

"पुलिस ने," मीत्या ने शान्त करते हुए स्पष्ट किया। "राष्ट्रीय उत्साह के अवसर पर जनाज़े का जलूस शोभा नही देता ..."

डाक्टर याकोव्लेव शोक के अवसरों पर विशेषतः सबकी नज़रों में आता था। मिरोन ने मुस्कराकर कहा –

"यदि हम 'रजत राजकुमार' उपन्यास के नायक मीत्या की भांति सबको संयुक्त कर ले तो ... आख़िर तो जीत अधिक संख्या-वालों की ही होगी ..."

"जीत तकनीक की ही होगी," डाक्टर ने उसकी बात काटी।

"तकनीक ? यह तो ठीक है, लेकिन .."

इस सब झंझटों से छुट्टी पाकर रात के नौ बजे के बाद याकोव पोलीना के घर की ओर चल पडा। रास्ते भर वह एक ऐसी अपूर्व चिन्ता में डूबा रहा जैसी उसने पहले कभी अनुभव नही की थी। उसे लग रहा था कि कोई असाधारण बात होनेवाली है और वह हो गयी।

"हाय री दैया ! " पोलीना की नौकरानी ने याकोव को आते देख बेंच पर धम्म से बैठते हुए कहा।

"गन्दी कुटनी ! " याकोव ने घुसते हुए नाक-भौं सिकोडकर कहा। वह क्षण भर के लिए पोलीना के कमरे के बाहर ठिठक गया। कमरे के भीतर से फ़ौजी क़दमों के साथ ही परिचित फ़ौजी आवाज़ सुनाई दे रही थी –

"अच्छी बात है, अपने दिमाग़ से काम लो। तुम्हें दिमाग़ से काम लेना ही पड़ेगा, ठीक है न ?"

"शायद अभी तक कुछ नही हुआ ! " याकोव ने सोचा।

लेकिन दरवाज़ा खोलते ही उसने देखा कि सब कुछ हो चुका है। शान्तचित्त लेफ़्टिनेण्ट जेबों में दोनों हाथ डाले कमरे के बीचोंबीच खड़ा था और उसकी वर्दी के बटन खुले हुए थे। पोलीना सोफ़े पर बैठी थी और उसका एक मोज़ा टखने तक उतरा हुआ था। उसकी आंखों में एक विचित्र चमक थी और गाल लाल हो रहे थे।

"कहिये ?" शान्तचित्त लेफ़्टिनेण्ट का यह धृष्टतापूर्ण प्रश्न सुनकर याकोव के मन का सन्देह सही साबित हो गया। कमरे में दाखिल होते ही अपना हैट एक कुर्सी पर फेंककर वह बदले हुए अजीब स्वर में बोला – "मैं अभी जनाज़े से लौटा हूं ..."

"तो फिर ?" लेफ़्टिनेण्ट ने घर के मालिक की सी प्रश्नसूचक ध्वनि से कहा। पोलीना सिगरेट का एक गहरा कश खींचते हुए उपेक्षापूर्वक बोली –

"इप्पोलीत सेर्गेयेविच की राय है कि मुझे रेड क्रॉस की नर्सों में भरती हो जाना चाहिये ..." उसके स्वर में आत्मग्लानि का आभास तक न था।

"नर्सों में ?" याकोव व्यंग्यपूर्वक मुस्करा दिया। शान्तचित्त लेफ़्टिनेण्ट ने उसके पास आकर रूखे स्वर में पूछा –

"तुम किस बात पर मुस्करा रहे हो ? यह समझ लो कि मुझे अतिशयोक्ति से घृणा है ! मैं उसे बर्दाश्त नहीं कर सकता !"

याकोव का शरीर अपमान और क्रोध से अंगारे की तरह जलने लगा। उसे हठात यह चेतना हो आयी कि सामने बैठी हुई छोटी-सी औरत उसके लिये अपने शरीर के किसी अंग के समान आवश्यक है और वह यह कभी नहीं बर्दाश्त कर सकेगा कि कोई दूसरा व्यक्ति आकर उसे उससे छीन ले। इस विचार के आते ही वह फिर क्रुद्ध हो उठा, उसे झुरझुरी-सी महसूस हुई और वह जेब में हाथ डालते हुए बोला –

"ख़बरदार जो मेरे नज़दीक आये !" उसकी आंखें क्रोध से फटी जा रही थी।

"क्यों न-न-ही ?" लेफ़्टिनेण्ट ने उसकी ओर बढ़ते हुए कहा। याकोव को लेफ़्टिनेण्ट का व्यंजनों को दुहराकर बोलना सदा नापसन्द था और अब तो उससे वह बौखला उठा। जेब से हाथ निकालने का प्रयत्न करते हुए उसने चिल्लाकर कहा –

"जान से मार दूंगा !"

लेफ़्टिनेण्ट मावरिन ने ज़ोर से उसकी कलाई दबोच ली। पिस्तौल का घोड़ा याकोव की जेब ही में दब गया और लेफ़्टिनेण्ट ने याकोव की शिथिल उंगलियों को झटका देते हुए पिस्तौल छीनकर पास की कुर्सी पर फेंक दी और कहा –

"निशाना चूक गया!"

"याकोव! याकोव!" पोलीना ज़ोर से फुसफुसाई। "इप्पोलीत सेर्गेयेविच! क्या तुम लोग पागल हो गये हो? आख़िर किस बात पर हाथापाई कर रहे हो? यह तो बदनामी की बात है! किसलिए?"

"ख़ैर, हटाओ," शान्तचित्त लेफ़्टिनेण्ट गरजा और याकोव की दाढ़ी पकड़कर ज़ोर से नीचे की ओर खींचते हुए बोला –

"माफ़ी मांगो, बेवक़ूफ़!"

वह बार-बार याकोव की दाढ़ी को झटके देकर नीचे-ऊपर कर रहा था।

"हाय! हाय! कुछ तो शर्म करो!" पोलीना ने बढ़कर लेफ़्टिनेण्ट की कोहनी थाम ली।

याकोव की दाहिनी बांह निर्जीव-सी लटक रही थी। उसने दांत पीसकर लेफ़्टिनेण्ट को बायें हाथ से धक्का देने की कोशिश की। उसकी आंखों से क्रोध और अपमान के आंसू टपकने लगे।

"अपने हाथ मुझसे दूर रखो!" लेफ़्टिनेण्ट ने चिल्लाकर याकोव को उस आरामकुर्सी पर पटक दिया जिस पर पिस्तौल पड़ी थी। याकोव दोनों हाथों से अपने आंसुओं को छिपाने की कोशिश कर रहा था। उसे मूर्छा-सी आ रही थी। उसने पोलीना को चीख़कर कहते सुना –

"हाय भगवान! कितनी बुरी बात है! तुम, तुम ही इसके लिये ज़िम्मेदार हो! इतना अपमान, किसलिए?"

"श्रीमती, तुम जहन्नुम में जाओ!" लेफ़्टिनेण्ट ने कठोर आवाज़ में कहा। "लुत्फ़ देने के लिये यह लो, एक रूबल! इतना ही काफ़ी है। मुझे अतिशयोक्ति से घृणा है, लेकिन तुम बहुत मामूली क़िस्म की हो..."

पैर पटकते हुए लेफ़्टिनेण्ट ज़ोर से दरवाज़ा बन्द करके ग़ायब हो गया और उसके पीछे लटकते लैम्पों के शीशों की हल्की आवाज़ और पोलीना की छोटी-सी चीख़ ही सुनाई दी। याकोव उठ खड़ा हुआ। उसके पैर रूई के गाले की तरह शिथिल हो गये थे और उसका सारा शरीर कांप रहा था। पोलीना लैम्प के नीचे खड़ी थी। उसका दम फूल रहा था और वह अपने हाथों में पकड़े गंदे रूबल के नोट की ओर देख रही थी।

"हरामज़ादी! यह तूने क्यों किया? तू तो हमेशा कहा करती

थी ... तुझे तो मार डालना चाहिये ..." याकोव बोला।

पोलीना ने नोट ज़मीन पर पटककर रुंधे स्वर में कहा –

"कैसा नीच, कमीना है ..."

वह अपना सिर पकड़कर आरामकुर्सी में धंस गई। याकोव ने उसके कन्धे पर घूंसा मारकर कहा –

"हटो! मुझे पिस्तौल लेने दो ..."

वह पत्थर की तरह निश्चल बैठी रही, फिर भी उसने चकित स्वर में पूछा –

"तो तुम मुझसे प्रेम करते हो?"

"बेहद नफ़रत करता हूं!"

"झूठ बोलते हो! अब प्यार करते हो!"

वह ऐसे तेज़ी से झपटकर याकोव के गले से लिपट गई कि याकोव उसे पीछे नहीं हटा पाया, ज़ोरो से उसके होंठ चूमने और उसकी आंखों तथा मुंह पर गर्म-गर्म सांस छोड़ती हुई फुसफुसाने लगी –

"झूठ बोलते हो! तुम मुझे चाहते हो और मैं तुम्हें, आह! मेरे सलोने साजन!"

केवल प्रेम के उन्माद में आकर ही पोलीना याकोव को इस नाम से पुकारती थी। इसे सुनकर याकोव पागल हो उठता था – उसने पोलीना को अपने आलिंगन में कस लिया और चूमते हुए बदहवासी की हालत में बोला –

"कुतिया, छिनाल, अच्छी तरह से जानती हो ..."

घण्टे भर बाद वह सोफ़े पर बैठा पोलीना को गोद में लिटाये उसे झुला रहा था।

"कितनी जल्दी सारा ग़ुस्सा गिला जाता रहा!" याकोव ने आश्चर्य से सोचा।

पोलीना अलसाये स्वर में बोली –

"मैंने क्रोध में आकर तुम्हें छोड़ देने का निश्चय कर लिया था। तुम हर समय अपने परिवार के पचड़ों में पड़े रहते हो। आज जनाज़ा है, तो कल कुछ और। मैं अकेलेपन से उकता गई हूं और मुझे यह भी यक़ीन नही था कि तुम मुझे प्रेम करते हो या नहीं। अब मुझे ज़्यादा प्यार करोगे, दूसरों से डाह करोगे। और जब डाह होती है ..."

"काश, हम यहां से कहीं दूर जा सकते," याकोव बुदबुदाया।

"हां, पेरिस चलें। मुझे फ़्रांसीसी भाषा आती है।"

कमरे में अंधेरा था। बाहर आधी रात का सन्नाटा छाया था। सिपाहियों की ऊंची आवाज़ें सुनायी दे रही थीं।

"आजकल विदेश जाना असम्भव है, युद्ध जो छिड़ गया है," याकोव को याद आया। "युद्ध, इन सब पर शैतान की मार!"

पोलीना अपनी विचारधारा में डूबी हुई थी –

"डाह-ईर्ष्या के बिना प्रेम संभव ही नहीं, कुत्तों के प्रेम को छोड़-कर। संसार के सभी दुःखान्त नाटक ईर्ष्या से उद्भूत है..."

याकोव मुस्कराकर बोला –

"जिस ढंग से गोली छूटी, उसे तो सौभाग्य ही मानना चाहिये। वह मेरी टांग में लग सकती थी, पर सिर्फ़ पतलून में छेद हो गया है।"

पोलीना ने छेद में उंगली घुसेड़ दी। अचानक वह सिसककर तीव्र घृणा के स्वर में बोली –

"ओह, बड़े अफ़सोस की बात है कि तुम उसे अपनी गोली का निशाना नहीं बना पाये। उसके रबड़-से पेट को!"

"चुप रहो!" याकोव ने उसे झकझोरकर कहा। लेकिन वह दांत किटकिटाकर क्रोध में फुफकारती रही –

"कैसा कमीना है! उसने मेरा कितना अपमान किया! कैसे हो तुम सब पुरुष... स्त्री के हृदय को बिल्कुल नही समझ सकते!"

फिर उसने सूजे हुए होंठों को खोलकर अपने लोमड़ी जैसे दांतों की पंक्ति दिखाकर कहा –

"कोई स्त्री यदि पुरुष से विश्वासघात करती है तो इसका यह अर्थ नही कि वह उसे प्यार नही करती!"

"मैं कहता हूं, चुप रहो!" याकोव ने चिल्लाकर उसे इतने ज़ोर से दबाया कि वह कराह उठी।

"आह! अब मुझे विश्वास हो गया कि तुम सचमुच प्रेम करते हो! मेरे सलोने साजन..."

पौ फटने पर याकोव पोलीना के घर से निकला। उसे लग रहा था, मानो वह एक भयंकर प्रतियोगिता में विजयी होकर लौटा है। जाने से पहले उसने पोलीना से अपनी पिस्तौल मांगी। पोलीना के इन्कार करने पर याकोव ने उसे नोस्कोववाली पूरी घटना कह सुनायी। पोलीना के भय से उसे बड़ी प्रसन्नता हुई, उसे विश्वास हो गया कि

वह वास्तव में ही उसे चाहती है, प्यार करती है। आह-ओह करते और हाथों को लहराते हुए उसने भर्त्सना के अन्दाज़ में पूछा –

"तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?"

फिर कुछ देर रुककर वह बोली –

"सचमुच बड़ी दिलचस्प बात है – जासूस! तुमने शेरलोक होल्म्स पढ़ा है? पर हमारे यहां के तो जासूस भी कमीने होंगे?"

"बिल्कुल," याकोव ने पुष्टि की।

पिस्तौल की जांच करने के लिए पोलीना ने याकोव से एक गोली दाग़ने को कहा। दोनों पेट के बल फ़र्श पर लेट गये, घोड़ा दबाते ही अंगीठी से राख का एक बादल उड़ता दिखाई दिया। पोलीना डर से चीख़ पड़ी। यकायक उसने कहा –

"देखो!"

लकड़ी के रंगे फ़र्श पर गोली का एक छेद था।

"ज़रा सोचो तो, इसी छेद में से मृत्यु गुज़रकर गई है!" पोलीना ने ठंडी आह भरते हुए भौंह सिकोड़कर कहा।

पोलीना उसे पहले कभी इतनी प्यारी नही लगी थी, उसने कभी उसे अपने हृदय के इतना अधिक निकट अनुभव नही किया था। नोस्कोव की बातें सुनकर उसकी आंखें बाल-सुलभ आश्चर्य से चमकने लगी। उसके नन्हे किशोर मुख पर क्रोध का कोई चिह्न शेष नही रहा था।

"इसे आत्मग्लानि नहीं हो रही," याकोव ने आश्चर्य से सोचा। वह मन ही मन प्रसन्न हुआ।

विदा होते समय पोलीना ने याकोव की दाढ़ी में उंगलियां डालते हुए कहा –

"ओह, याकोव, याकोव! क्या सचमुच ऐसा ही है! हे भगवान! लेकिन वह कमीना .."

फिर मुट्ठियां तानकर उसने भर्त्सना के स्वर में कहा –

"हे ईश्वर! दुनिया में कितने कमीने भरे पड़े है!"

यकायक याकोव की बांह पकड़कर वह गम्भीर स्वर में बोली –

"ज़रा ठहरो, ठहरो! यहां एक लड़की रहती है... ओह, सो तो ज़ाहिर है!"

फिर याकोव के ऊपर क्रॉस का चिह्न बनाती हुई वह प्रफुल्लता से बोली –

"जाओ, मेरे सलोने साजन!"

सुबह ठंडी और ओस भीगी थी। बगीचे में हवा सनसना रही थी। आकाश की हरिताभ-रजत आभा में सेबों की महक बसी थी।

"कोई बात नहीं, क्रोध में आकर उसने बेवफ़ाई की थी, पिता के मरते ही मुझे उससे शादी करनी होगी," याकोव ने उदारता-पूर्वक सोचा। उसे सेराफ़ीम का एक चुटकुला याद आया –

"हर छोकरी डूबती है, तिनके का सहारा ढूंढ़ती है। इसी वक्त उसे हथियाना चाहिये।"

शान्तचित्त लेफ्टिनेण्ट का ख़्याल आते ही वह चिन्तित हो उठा। वह तो तिनका नही है, उसके क्रोध के कुपरिणाम हो सकते है, ज़रूर कोई नीचता करेगा, किन्तु सम्भव है कि उसे मोर्चे पर भेज दिया जायेगा। पहले की अपेक्षा आज उसे नोस्कोव सम्बन्धी विचार कम तंग कर रहे थे, यद्यपि याकोव पिस्तौल के घोड़े पर हाथ रखे सतर्क होकर चारो ओर देखता हुआ चल रहा था – बहुधा इसी समय उससे मुठभेड़ हो जाया करती थी।

इस घटना के दो सप्ताह बाद याकोव का पुराना भय कड़ुए धुएं की तरह फिर लौट आया। इतवार के दिन याकोव जंगल में काटने के लिए ख़रीदी लकड़ी का निरीक्षण करने गया। वहां उसे नोस्कोव दिखायी दिया। वह पीठ पर एक बोरी लटकाये झाड़ी में से निकल रहा था। उसकी पेटी में अनेक फंदे लटके हुए थे।

"अच्छा हुआ कि तुम मिल गये," उसने याकोव के पास आकर टोपी उतारते हुए कहा। वह सिपाहियों की तरह टोपी लगाता था, दाहिनी आंख पर झुकी हुई और उसने उसे छज्जे से पकड़ने के बजाय ऊपर से उठाया था।

इस विचित्र अभिवादन का, जिसमें याकोव ने धमकी महसूस की, कोई उत्तर न देकर वह दांत पीसते हुए जेब में पडी पिस्तौल को टटोलने लगा। नोस्कोव भी याकोव की ओर देखे बिना चुपचाप खड़ा अपनी टोपी के अस्तर को उंगलियों से कुरेदता रहा। इसी तरह कुछ क्षण बीत गये।

"तो?" अर्तामोनोव ने पूछा। नोस्कोव ने अपनी कुत्ते-सी आंखें ऊपर उठाकर छितरे बाल ठीक करते हुए स्पष्ट स्वर में उत्तर दिया –

"तुम्हारी प्रेमिका, मेरा मतलब पोलीना, आजकल पादरी की

32-1176

बेटी से दोस्ती बढ़ा रही है। उसे मना कर दो।"

"क्यों ?"

"इसलिये कि ऐसा करना चाहिये ..."

कुछ क्षण गिरजे की घण्टियों को सुनने के बाद शिकारी ने कहा –

"मैं तुम्हारी भलाई के लिए ही यह सलाह दे रहा हूं। तुम मुझे कुछ रूबल ..."

आकाश की ओर देखकर उसने कुछ सोचा –

"पैंतीस रूबल ..."

याकोव ने रूबल गिनते हुए मन ही मन सोचा – "इस कुत्ते को गोली मार देनी चाहिये!"

शिकारी ने रूबलों के नोट लिये, लोहे के फंदों की खनक पैदा करते हुए टेढ़ी टांगों पर मुड़ा और जंगल की ओर चला गया। याकोव को लगा कि यह आदमी दिन-ब-दिन उसके लिये पहले से अधिक बुरा और असह्य होता जा रहा है।

"नोस्कोव!" उसने शिकारी को आवाज दी और जब वह फ़र-वृक्ष की शाखाओं मे आधा छिपा हुआ रुका तो याकोव ने उससे कहा –

"तुम यह छोड़ क्यो नही देते ?"

"क्यों छोड़ दूं ?" नोस्कोव ने मुह आगे बढाकर पूछा। याकोव को शिकारी की आंखों में भय अथवा द्वेष की झलक दिखाई दी।

"ख़तरनाक काम जो है।"

"अपना काम जानना चाहिये, अनाडी के लिये हर काम ख़तरनाक होना है," नोस्कोव ने जवाब दिया और उसकी आखे बुझ गयी।

"जैसी तुम्हारी मर्ज़ी।"

"तुम अपने ही अहित की बात कर रहे हो।"

"शत्रुता में भला किसका हित हो सकता है ?" याकोव बुद-बुदाया। उसे खेद हो रहा था कि उसने भेदिये से बातें कीं। "उल्लू! चला है मुझसे बहस करने ..."

नोस्कोव ने उपदेश-सा दिया –

"इसके बिना काम नही चलता। हर किसी की अपनी शत्रुता और अपनी जरूरत होती है। अच्छा, नमस्कार!"

इतना कहकर नोस्कोव फ़र-वृक्षों की घनी हरियाली में घुस गया। याकोव चुपचाप खड़ा कुछ देर तक सूखी टहनियों की सरसराहट सुनता

रहा। फिर तुरन्त रास्ते में जाकर घोड़ागाड़ी पर सवार हुआ, जो उमके इन्तज़ार में वहां खड़ी थी और शहर में पोलीना के यहां पहुंचा।

"है न कमीना!" पोलीना आश्चर्यमिश्रित प्रसन्नता से बोली। "उसने पता भी चला लिया कि मै पादरी की बेटी मे मिलती-जुलती हूं! भई, वाह!"

"तुम ऐसे लोगों से दोस्ती करती ही क्यों हो?" याकोव ने चिढ़कर पूछा। पोलीना भी इस प्रश्न से चिढ़ गई। वह अपने महीन, पीले रूमाल को मरोड़ते हुए बोली –

"पहले तो यह तुम्हारे ही भले के लिए है! और फिर मैं करूं भी क्या – कुत्ते-बिल्लियां पालूं या मावरिन सरीखे लोगों को... मैं दिन भर कैदी की तरह बन्द रहती हू। कोई ऐसा भी नही, जिसके साथ बाहर घूमने के लिए जा मकू। वह दिलचस्प बातें करती है। पढने को पुस्तकें और पत्रिकाएं देती है। उमे राजनीति में गहरी रुचि है। हम दोनो पोपोवा के स्कूल मे पढ़ने जाती थी, बाद में हमारे बीच झगड़ा हो गया"

याकोव के कन्धे पर उगली मारते हुए वह अधिकाधिक झल्लाहट से कहती गयी –

"तुम्हारे विचार में गुप्त रूप से रखेल बनकर रहना आसान है? स्लाद्कोपेव्त्सेवा कहती है कि रखेल औरत रबड के जूते के समान होती है, जिसकी केवल कीचड़ में ज़रूरत होती है। समझे? तुम्हारे डाक्टर से उसका प्रेम-सम्बन्ध है। वे दोनों इस बात को किसी से नही छिपाते। एक तुम हो, जो मुझे फोड़े की तरह छिपाये फिरते हो। तुम तो इस तरह शरमाते हो, मानो मैं कानी या कुबड़ी होऊं। मैं तो बदसूरत भी नही हूं.."

"थोड़ा सब्र करो," याकोव ने कहा, "मैं तुमसे शादी कर लूंगा! गंभीरतापूर्वक कहता हूं.. वैसे तो तुम सूअर हो..."

"हम दोनो में से कौन ज्यादा सूअर जैसा है, यह बात अभी तय नही हुई!" पोलीना क़हक़हा लगाकर हंस पड़ी। "कौन ज़्यादा सूअर, किसका ज़्यादा क़ुसूर – सब गड़बड़ हो गया! अरे, मेरे सलोने साजन! मेरे निःस्वार्थ प्रियतम! कोई और होता तो इस बारे में खामोश रहता। बात यह है कि वह जासूस तुम्हारे लिये उपयोगी है..."

सदा की तरह आज भी याकोव उसके पास से शान्त होकर गया।

एक सप्ताह बाद नाटे, टेढ़ी नाकवाले चेचकरू येलागिन ने आकर ख़बर सुनाई कि बुनकर लोग जब मछली मार रहे थे, तो शिकारी नोस्कोव को डूबने से बचाने की चेष्टा में बुनकर मोर्दवीनोव स्वयं डूबते-डूबते बचा। उसे अस्पताल पहुंचा दिया गया है। यह ख़बर सुनते हुए याकोव इसलिये अपनी टांगों को फैलाये बैठा था कि हाथों को जेबों मे दूर छिपा ले। उसके हाथ कांप रहे थे।

"इन्हीं लोगों ने उसको डुबोया होगा," उसने सोचा, लेकिन मोर्दवीनोव के कोमल, औरतों जैसे मुंह का ख़्याल आते ही उसे यह विश्वास न हो सका कि यह आदमी भी ख़ून कर सकता है।

"चलो अच्छा हुआ," उसने चैन की सांस ली। पोलीना की भी यही राय थी।

"अच्छा हुआ, नहीं तो यदि किसी और ढंग से उसे मारा जाता तो एक लम्बा बखेड़ा खड़ा हो जाता," पोलीना ने गम्भीर स्वर में कहा।

फिर भी उसने इस तरह उसके प्रति दया प्रकट की—

"अच्छा होता यदि उसे पकड़कर उसकी करनी के लिये उससे अफ़सोस करवाया जाता और फिर उसे फासी पर चढ़ा दिया जाता या गोली मार दी जाती। तुमने यह पढ़ा है कि ..."

"व्यर्थ की बातें मत करो, पोलीना," याकोव ने बीच मे टोका।

कुछ दिन शान्ति से बीत गये। इस बीच याकोव वोर्गोरोद भी हो आया। वापस लौटते ही मिरोन ने चिन्तित स्वर से कहा—

"मिल में फिर गड़बड़ी शुरू हो गई है। एक्के को आदेश मिला है कि वह शिकारी के डूबने की घटना की पूरी छानबीन करे। उन्होंने मोर्दवीनोव, किर्याकोव और मसख़रे क्रोतोव को पकड़ लिया है—उन सभी को जो शिकारी के साथ मछली पकड़ने गये थे। मोर्दवीनोव का सारा चेहरा ख़रोंचा और उसका कान फटा हुआ है। उन्हें इसमे कोई राजनीतिक चाल लगती है... हां, फटे कान में नहीं ..."

मिरोन एक उंगली पर चश्मा साधे पियानो के पास खड़ा था और आंखें मिकोड़े हुए कमरे के एक कोने की ओर देख रहा था। सिलवटों-वाली स्वीडिश जाकेट, भूरी पतलून और धूल में सने ऊंचे बूटों में वह इंजन का ड्राइवर-सा दिखायी दे रहा था, जबकि उसके हजामत किये गालों और तिरछी मूंछों को देखकर उसके फ़ौजी होने का भ्रम

होता था। वह चाहे कुछ भी और कैसे भी क्यों न कहता, उसके भाव-शून्य चेहरे पर लगभग कोई परिवर्तन नही होता था।

"अजब बेहूदा ज़माना है! लो, एक नये युद्ध में कूद पड़े। सदा की तरह अपनी मूर्खता पर पर्दा डालने के लिये हम लड़ाई छेड़ देते हैं। मूर्खता के विरुद्ध युद्ध नही कर सकते, उसके लिये हम में ताक़त नही। फिर भी हमारी अधिकांश समस्याएं घरेलू हैं। किसानों के देश में मज़दूरों की पार्टी शासन करना चाहती है। और उस पार्टी में एक व्यापारी का बेटा इल्या अर्तामोनोव भी शामिल है। उसने एक ऐसे वर्ग में जन्म लिया है जिसके कन्धों पर देश को औद्योगिक और तकनीकी दृष्टि से यूरोपीय रंग देना चाहिये। बेवक़ूफ़ी पर बेवक़ूफ़ी। अपने वर्ग के साथ विश्वासघात करने के लिये उसे फ़ौजदारी के जुर्म के अनुरूप कठोर दण्ड मिलना चाहिए। सच पूछो तो यह देशद्रोह है.. यदि कोई बुद्धिजीवी, गोरीत्स्वेतोव जैसा आदमी ऐसी बातें करे तो समझ में आ सकता है, क्योंकि वह पढ़ने और बातें करने के अतिरिक्त और किसी काम के योग्य नहीं है। मेरे विचार मे रूस में केवल निकम्मे लोग ही क्रान्तिकारी गतिविधियों के फेर में हैं।"

याकोव को ऐसा लगता था, मानो मिरोन लोगों से भरे कमरे में भाषण दे रहा हो। वह अपनी आंखों को अधिकाधिक सिकोड़ता गया और आख़िर उन्हें बिल्कुल मूंद लिया। याकोव अपनी चिन्ताओं में डूब गया – नोस्कोव की मौत की जांच का क्या नतीजा निकलेगा और उसका उस पर क्या असर पड़ेगा?

मिरोन की अलमारी-सी लगनेवाली गर्भवती पत्नी कमरे में दाखिल हुई। उसने पति की ओर देखकर अलसाये स्वर में कहा –

"जाकर कपड़े बदल लो!"

मिरोन ने आज्ञा मानते हुए चश्मा नाक पर टिकाया और कमरे से बाहर चला गया।

एक महीने बाद सब मज़दूर रिहा कर दिये गये। मिरोन ने याकोव को ऐसे कठोर स्वर में, जो आपत्ति की गुंजाइश नही छोड़ता, आदेश दिया – "इन सब को बर्खास्त कर दो।"

याकोव को अनजाने ही बहुत अरसे से भाई के रूखे आदेश पूरे करने की आदत पड़ गई थी। एक तरह से यह अच्छा भी था, क्योंकि इस प्रकार उसे मिल के झंझटों की ज़िम्मेदारी से मुक्ति मिल जाती

थी, लेकिन फिर भी उसने कहा –

"कोयला झोंकनेवाले क्रोतोव को नहीं निकालना चाहिए।"

"क्यों ?"

"वह बड़ा हंसमुख है और इतने वर्षों से हमारे यहां काम कर रहा है। वह लोगों का मनोरंजन करता है।"

"अच्छा ? तो हम उसे बर्खास्त नहीं करेंगे।"

फिर होंठों पर जीभ फेरकर मिरोन बोला –

"मसख़रे तो सचमुच काम के आदमी होते है।"

कुछ दिनों के लिये याकोव को लगा कि सब ठीक चल रहा है। युद्ध के कारण लोग अधिक गम्भीर और बुझे-बुझे-से हो गये थे। लेकिन याकोव मुसीबतों का आदी था, अनुभव कर रहा था कि अभी उनका अन्त नही हुआ और उसे नई मुसीबतों की अस्पष्ट-सी पूर्वानुभूति हो रही थी। उसे अधिक दिन प्रतीक्षा नही करनी पडी। नेस्तेरेंको एक लम्बी औरत की बांह थामे शहर में दिखाई दिया। उसकी सूरत वेरा पोपोवा से मिलती थी। उसने उसे दूर से ही आर-पार देख लिया, नज़दीक आने पर दुआ-सलाम के बाद उसने पूछा –

"क्या तुम एक घटे बाद मेरे यहा आ सकोगे ? मैं अपने ससुर के यहा ठहरा हू। मेरी पत्नी मृत्यु शय्या पर है, इसलिये मुख्य द्वार की घंटी न बजाना। अहाते की ओर से चले आना। नमस्ते !"

एक घटा बड़ी मुश्किल से बीता। उसके बाद याकोव जब किताबों की अलमारियों से भरे एक कमरे में पहुंचा, तो नेस्तेरेंको ने किसी चीज़ की आहट लेते हुए शान्त स्वर मे कहा –

"हमारा दोस्त तो मार दिया गया। इसमे सन्देह नही, यद्यपि अभी तक प्रमाणित नही हुआ। यह काम बडी चतुराई से किया गया। अब बात यह है – तुम्हारी प्रेयसी पोलीना स्लाद्कोपेव्त्सेवा नाम की लड़की की सहेली है। यह लड़की हाल ही में वोर्गोरोद में गिरफ़्तार हुई थी। वह उसकी सहेली है न ?"

"मैं नहीं जानता," याकोव के माथे पर ठंडे पसीने की बूंदें चमकने लगीं। नेस्तेरेंको ने अपने एक हाथ को नाक के निकट लाकर और नाख़ूनों पर दृष्टि डालकर बड़े संयत स्वर में कहा –

"तुम जानते हो।"

"लगता है कि पोलीना उससे परिचित है।"

"यही तो मैं कह रहा था।"

"आखिर यह चाहता क्या है?" याकोव ने उदास दृष्टि से नेस्तेरेंको के लाल नसों, धुंधली आंखों और चपटी नाकवाले भूरे, चपटे चेहरे की ओर देखते हुए मन ही मन सोचा। इन आंखों में से मानो भारी ऊब और शराब की तेज़ दुर्गन्ध बही आ रही थी।

"मैं तुम्हारे साथ एक अफसर की हैसियत से नहीं, बल्कि एक ऐसे हितैषी परिचित की तरह बात कर रहा हूं जो तुम्हारे कारोबार की भलाई चाहता है। बात यह है, मेरे प्यारे.. निशानेबाज़!" वह मुस्कराया, कुछ क्षण चुप रहने के बाद उसने स्पष्ट किया –

"मैं निशानेबाज इसलिए कह रहा हूं कि पिस्तौल से ग़लत निशाना लगाने की तुम्हारी एक और घटना से भी मैं परिचित हूं। बात यह है कि स्लाद्कोपेव्त्सेवा तुम्हारी प्रेयसी की सखी है। ज़रा सोचकर देखो, हम दोनों के अतिरिक्त कोई तीसरा उस शिकारी के असली पेशे को नही जानता था। जान-पहचान के इस घेरे में मेरे आने का तो प्रश्न ही नही उठता। नोस्कोव भी मूर्ख नही था, यद्यपि "

नेस्तेरेंको ने आह भरकर नीचे देखते हुए अपनी बात जारी रखी –

"शाश्वत तो कुछ है ही नही। बस तुम ही रह जाते हो.. "

याकोव को लगा, मानो नेस्तेरेंको के होंठों मे शब्द नही, फन्दे निकल रहे हों। ये अदृश्य, सूक्ष्म फन्दे उसकी गर्दन के गिर्द इतने ज़ोर मे लिपट रहे थे कि याकोव का दम घुटने लगा और उसके कलेजे की धड़कन बन्द होने लगी। उसके चारों ओर तूफान का सा चक्कर और सांय-साय होने लगी। नेस्तेरेंको जानबूझकर धीमे स्वर में कहता जा रहा था –

"मुझे पक्का विश्वास है कि तुम इस बीच सतर्क नही रहे। तुमने ज़रूर किसी से बातें की है, क्यों, कुछ याद है?"

"नही तो," याकोव ने धीमे से कहा। वह मन ही मन डर रहा था कि कहीं उसकी आवाज़ धोखा न दे।

"सच कहते हो?" अफसर ने अपनी लाल उंगलियों से मूंछे मरोड़ते हुए पूछा।

"हां, ऐसा कुछ नही हुआ," याकोव ने सिर हिलाते हुए उत्तर दिया।

"ताज्जुब है, बड़े ताज्जुब की बात है। खैर, बात संभाली जा

सकती है। देखो, नोस्कोव की जगह किसी और को रखना पड़ेगा, जो तुम्हारे लिये उपयोगी सिद्ध हो। मिनायेव नाम का एक आदमी तुम्हारे पास आयेगा। मुझे विश्वास है कि तुम उसे रख लोगे।"

"अच्छी बात है।"

"मुझे यही कहना था। आगे से सतर्क रहना। औरतों के सामने कभी मुंह न खोलना। समझे?"

"मुझे यह छोकरा और बिल्कुल मूर्ख समझता है," याकोव ने सोचा।

इसके बाद नेस्तेरेंको ने पतझड़ में पक्षियों के गर्म क्षेत्रों में उड़ जाने, युद्ध, पत्नी की बीमारी और अपनी बहन के बारे में बातें की जो उसकी देख-भाल करती थी।

"हमें और भी बड़ी मुसीबत के लिये तैयार हो जाना चाहिये," उसने अपनी मूंछों के सिरो को कानों की मोटी ललरी तक ऊपर उठाते हुए कहा। इससे ऊपरी होंठ भी उठ गया और पीले दांतों की पंक्ति दिखायी देने लगी।

"मुझे यहां से चल देना चाहिये, नही तो यह दुष्ट मुझे मुसीबत में डाल देगा," याकोव ने मन ही मन सोचा।

नदी के किनारे-किनारे जाते समय वह बडबड़ाया –

"तुम सब पर शैतान की मार! मुझे क्या लेना-देना है तुम सबसे?"

पतझड़ के आगमन की सूचना देनेवाली बूंदाबांदी हो रही थी, नदी के पीले पानी पर हल्का कम्पन हो रहा था और हवा में मतली-सी लानेवाली गर्मी थी। इस वातावरण ने याकोव की उदासी को और भी गहरा कर दिया। क्या ऐसी चिन्ताओं मे मुक्त होकर एक शान्त, सीधा-सादा जीवन बसर नहीं किया जा सकता?

जिस तरह जाड़े में हवा के थपेड़ों और बर्फ़ का सामना करती गाड़ियां बढ़ती हैं, वैसे ही भारी बोझ से लदे और चिन्ता से परिपूर्ण महीने पर महीने बीतते गये।

जाखार मोरोज़ोव मोर्चे से संत जार्ज क्रॉस आर्डर लेकर लौटा। उसकी जली हुई चांद लाल फोड़ों से भरी थी, एक कान ग़ायब था, दाहिनी भौंह के स्थान पर एक लाल घाव का निशान था और उसके नीचे कुचली, मुर्दा आंख थी। दूसरी आंख संसार को बड़ी कड़ाई और

ग़ौर से देखती थी। ज़ाख़ार और लंगड़े क्रोतोव में मित्रता हो गयी। सेराफ़ीम के शिष्य ने फ़ौरन एक नया राग छेड़ा –

पानी बरसे और ज़ोर से चले हवा
मै ख़न्दक में पडा हुआ,
मैं उल्लू यो मदद कर रहा
यूरोप मे जा जान खपा!

याकोव ने मोरोज़ोव से पूछा –

"क्यों ज़ाख़ार, क्या हम लोग ठीक से नही लड़ रहे है?"

"हमारे पास लड़ने के लिये है ही क्या?" बुनकर ने उत्तर दिया। उसका स्वर ऊंचा और गुस्ताख़ी मे भरा था और उसमे से वही निर्लज्ज झनकार निकल रही थी जो भट्ठी झोंकनेवाले के गीत में थी।

"याकोव पेत्रोविच, हमारा कोई मालिक नही है। चारों ओर बद-माश और धोखेबाज़ मालिक बन बैठे है," उसने मालिक के मुंह पर कहा।

यह व्यक्ति और भट्ठी झोंकनेवाला वास्का मज़दूरों के बीच उसी तरह विशिष्ट बन गये जैसे पतझड़ की रात के अधेरे में रोशनी। जब तात्याना का चंचल पति बहुत ही ढीले आसन का पतलून पहनकर आया तो भट्ठी झोंकनेवाले ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा और गाने लगा –

यह तो है पतलून मूर्खों की ख़ातिर
तुरन्त दिखायी देता है इसका अन्तर,
कुछ पतलून बिगाडा करते यदि चूतड,
तो कुछ दिखलाते है बिगडा माथा, सिर!

याकोव यह देखकर आश्चर्यचकित हुए बिना न रह सका कि नाराज़ होने के बजाय मीत्या ठहाका मारकर हंस पड़ा है, जिससे वास्का की हिम्मत और भी बढ़ गई। सब मजदूर भी हंसने लगे। एक दिन ज़ाख़ार अपने साथ एक झबरीले पिल्ले को ले आया, जिसकी फूली-फूली पूंछ उसकी पीठ पर मुड़ी थी। पूछ के सिरे पर सफ़ेद संत जार्ज क्रॉस लटक रहा था। मिरोन से यह गुस्ताख़ी बर्दाश्त न हुई और ज़ाख़ार को गिरफ़तार कर लिया गया। तीख़ोन व्यालोव ने पिल्ले को अपने पास रख लिया।

नगर की सड़कें फ़ौजी कोट पहने अपाहिज, अंधे और लूले-लंगड़े

सैनिकों से भर गयीं। सारे नगर पर उनकी बदरंग वर्दियों का रंग छा गया। नगर की भद्र महिलाएं अपाहिज सैनिकों को घुमाने के लिये ले जातीं। सीकिया और बेहद दुबली-पतली वेरा पोपोवा इस महिला-दल की मुखिया थी। उसने पोलीना को भी इस दल में खींच लिया। वह याकोव के सामने सिर को झटका देकर चिल्लाती –

"ओह! मैं यह सब सहन नही कर सकती! कैसा भयानक अत्याचार है! ज़रा सोचो, याकोव! ये सब कितने कमउम्र है, हट्टे-कट्टे हैं, पर सब लुज-पुज और विकृत है तथा इनसे कैसी बदबू आती है! मै इसे बर्दाश्त नही कर सकती! चलो, कही और चले!"

"कहां जायें?" याकोव चिढ़कर पूछता। उसने देखा कि पोलीना दिन-प्रतिदिन चिड़चिडी होती जा रही थी। वह ज़्यादा सिगरेट पीने लगी थी और उसकी सांस में तम्बाकू की दुर्गन्ध बसी रहती थी। यो तो नगर की सभी औरतों, विशेषकर मिल की औरतों का स्वभाव चिडचिडा हो गया था। वे हर समय महगाई का रोना रोती रहती थीं। उनके पति सीटिया बजाते हुए अधिक वेतन मागते और काम में कम मेहनत करते। बस्ती में शाम के समय का कोलाहल पहले की अपेक्षा अधिक कर्कश और क्रोधपूर्ण हो गया था।

यहूदियों की तरह काले बालों और बडी-बडी नाकवाला तीसेक वर्ष का गम्भीर फिटर मिनायेव मजदूरो से मेल-जोल रखता था। वह खोया-खोया-सा अपनी काली आखों से सभी की ओर ऐसे देखता मानो किसी भूली बात को याद कर रहा हो। याकोव डरता हुआ उससे कन्नी काटता।

प्योत्र अपनी दुखती टांगो को जैसे-तैसे घसीटता और गन्दे मलबे-सा प्रतीत होता अहाते मे घूमता रहता। उसके चौड़े कन्धो पर लोमडी के अस्तरवाला एक सफरी ओवरकोट लटकता रहता और वह आने-जाने-वाले मज़दूरों को रोककर कठोर स्वर में पूछता –

"किधर जा रहे हो?"

उत्तर मिलने पर वह हाथ झटककर बडबड़ाता –

"अच्छा, जाओ! निकम्मे कहीं के! तुम तो मेरा लोहू पीने-वाली जोंकें हो!"

उसका फूला-फूला नील लोहित चेहरा कांपने लगता और उसका निचला होंठ घृणा से खुल जाता। याकोव को पिता के कारण लोगों से

शर्म आती। तात्याना सारे दिन अखबार उलटती-पलटती और किसी बात से इतनी डरी-सी रहती कि उसके कान सदा लाल रहते। मिरोन मानो पंख लगाये ज़िला-केन्द्र, मास्को और पीटर्सबर्ग आता जाता रहता। घर लौटकर वह चौड़ी एड़ी के अमरीकी जूते पहनकर टहलता रहता और द्वेषपूर्ण प्रसन्नता से यह बताता कि कैसे एक नशेबाज़, लम्पट गंवार* जोंक की तरह ज़ार का खून चूस रहा है।

"मुझे इस बात का रत्तीभर विश्वास नहीं कि वास्तव में ऐसा कोई गंवार है भी!" अध-अंधी ओलगा सोफे पर लेटे-लेटे बोलती। उसके पास ही उसकी पुत्रवधू बैठी थी और दो वर्ष का पौत्र प्लतोन खेल रहा था। "ये सब मनगढ़न्त बाते हैं .."

"शाबाश, बहुत खूब! किसानों ने भी अच्छा बदला लिया!" तात्याना के चचल पति ने खुशी मे उछलकर कहा।

हर्षातिरेक में वह अपने लाल बालोंवाले मोटे-मोटे हाथ मलने लगा। उन सब लोगों मे अकेले उसी को किसी भावी आह्लाद की आशा थी।

"हाय भगवान!" तात्याना चिढकर बोली। "आखिर तुम किस बात पर इतने खुश हो रहे हो?"

उसकी ओर आश्चर्य से आखें फाडकर मीत्या कूक उठा—

"क्या कहा? तुम्हें दिखाई ही नही देता? किसानो को जो अत्याचार सहने पड़े है, वे आज उसका बदला ले रहे है! इस गवार के रूप मे ये एक घातक विष बन गये है "

"सुनिये तो!" मिरोन ने कहा। "कुछ दिन पहले तो तुम दूसरा ही राग अलापते थे "

लेकिन मीत्या मानो उन्मादी ढंग मे एक ही सांस में कहता चला गया—

"एक प्रतीक है वह, प्रतीक, मात्र गवार नही! तीन साल पहले ही ज़ार के वंश ने अपने शासन की तीन सौवी वर्षगांठ मनायी थी और आज. "

"बकवास है," मिरोन ने तीव्र उपेक्षा से कहा। डाक्टर याकोव्लेव ने सदा की भाति खीसें निपोर दी। याकोव ने मन ही मन सोचा कि कही पुलिस अफ़सर नेस्तेरेंको को इस तरह की बातों का पता न चल जाये .."

* यहां ग्रिगोरी रास्पूतिन की ओर सकेत दिया गया है। —स०

"ऐसी बातें क्यों करते हो?" उसने पूछा। "इससे क्या फ़ायदा?" और फिर उसने इन लोगों को मना करते हुए कहा –
"यह बातें बन्द करो!"

याकोव को यह देखकर गहरी निराशा हुई कि मिरोन भी काफ़ी घबराया-सा रहता है। सभी लोगों में केवल मीत्या ही अपने पहलेवाले रंग में बना रहा, वह हर समय लट्टू की तरह घूमता रहता और हंसी-मज़ाक़ करता और शामों को गिटार बजाकर गाता –

मेरी बीवी पड़ी क़ब्र में

किन्तु तात्याना को अब उसके गाने अच्छे नहीं लगते थे।

"उफ़ जी तंग आ गया है इन से!" वह कमरा छोड़कर बच्चों के पास चली जाती।

मीत्या मज़दूरों को संतुष्ट रखने का भरसक प्रयत्न करता। उसने मिरोन को सलाह दी कि वह देहात से आटा, सूजी, सूखे मटर और आलू ख़रीदकर मज़दूरों को परिवहन के समय होनेवाली हानि के ख़र्च को ही ध्यान में रखते हुए सस्ते दामों पर बेचे। इस बात पर मज़दूर बहुत खुश हुए और याकोव को यह स्पष्ट हो गया कि मज़दूर मिरोन के बजाय हंसमुख व्यक्ति पर अधिक विश्वास करते है। याकोव ने यह भी देखा कि मिरोन आये दिन मीत्या से झगड़ पड़ता है।

"आख़िर तुम चाहते क्या हो – हवा का रुख़ देखकर चलें?" मिरोन अपने क्रोध को छिपाये बिना पूछता। मीत्या मुस्कराकर उत्तर देता –

"लोगों की इच्छा.. लोगों के अधिकार..."

"तुम कौन हो, मैं सिर्फ़ इतना ही जानना चाहता हूं," मिरोन चिल्लाता।

"यह चीख़ना-चिल्लाना बन्द करो," प्योत्र झल्ला उठता। किन्तु याकोव को पिता की धुंधली आंखों में खुशी की चमक दिखायी देती, पिता को भतीजे और दामाद का झगड़ा देखकर प्रसन्नता होती थी, वह तात्याना के झल्लाहट से चीख़ने-चिल्लाने पर और तब भी खुश होता, जब नतालिया क्षीण स्वर में कहती –

"तात्याना, एक प्याली चाय और बना दो..."

हर नयी घटना चिन्ताजनक होती और पहले की किसी चीज़ से सम्बन्ध के बिना अचानक उभरकर सामने आ जाती। बिल्कुल अन्धी

हो गयी ओलगा को सहसा सरदी लग गयी और वह दो दिनों में ही चल बसी। उसकी मौत के कुछ दिन बाद ज़ार के गद्दी छोड़ने की ख़बर आयी। नगर और मिल में खलबली मच गयी, मानो कोई वज्रपात हो गया हो।

"अब क्या होगा? क्या प्रजातन्त्र बनेगा?" याकोव ने अपने भाई से पूछा, जो बहुत ख़ुश होता हुआ हाथों में अख़बार थामे बैठा था।

"निःस्सन्देह प्रजातन्त्र ही बनेगा!" मिरोन ने उत्तर दिया। वह मेज़ पर हथेलियां टिकाये और अख़बार के ऊपर झुका हुआ उसे पढ़ रहा था। अचानक अख़बार के खिंच जाने से उसके दो टुकड़े हो गये। याकोव को यह अपशकुन लगा, लेकिन मिरोन का चेहरा खिल उठा और उसने ऊंचे, प्रफुल्ल स्वर मे कहा –

"मेरे दोस्त, रूस का नया जीवन शुरू होनेवाला है!"

उसने मानो याकोव को गले लगाने के लिये अपनी बांहें फैलायी। फिर कुछ सोचकर एक हाथ नीचे कर लिया, दूसरे को फैलाये रखा और उससे अपना चश्मा ठीक किया और इस तरह सिगनल जैसा बन गया तथा उसी क्षण उसने अगले दिन मास्को जाने की घोषणा कर दी।

मीत्या ने एक ठिठुरे कोचवान की तरह हाथों को हिलाते-डुलाते हुए कहा –

"अब सब बढ़िया हो जायेगा। अब आख़िरकार लोगों को उनकी आत्माओं में कभी का धधकता ज़ोरदार शब्द कहने का अवसर तो मिलेगा!"

मिरोन ने अब मीत्या से बहस नहीं की, विचारमग्न होकर मुस्करा-ता हुआ अपने होंठों पर केवल ज़बान फेरता रहा। याकोव को लगा कि सचमुच सब ठीक हो गया है और सब लोग प्रसन्न है। मीत्या ने बरामदे में खड़े होकर मज़दूरो की एकत्रित भीड़ को पीटर्सबर्ग के सारे समाचार सुनाये। मज़दूर हुर्रा चिल्ला उठे और मीत्या को ऊपर उछालने लगे। मीत्या ने अपने शरीर को एक बहुत बड़े गेंद की तरह गोल बना लिया और ख़ूब ऊंचे उछला। लेकिन जब मिरोन को भी इसी तरह उछाला गया तो ऐसा लगा कि उसके अंजर-पंजर उखड़कर गिर पड़ेंगे। वह हवा में अपनी टांगें और हाथ बेतहाशा इधर-उधर फेंकता था। पुराने मज़दूरों ने मीत्या को चारों ओर से घेर लिया और विशालकाय,

तगड़े बुनकर गेरासिम वोइनोव ने उसके मुंह के निकट चिल्लाकर कहा –

"तुम भले आदमी हो, भले आदमी, समझे? दोस्तो, उसके लिये हुर्रा!"

सब लोग ज़ोर से हुर्रा चिल्लाये और वास्का ने अपनी चांद की लौ देते और नाचते हुए नशे में धुत्त व्यक्ति की तरह ज़ोरों से गाना शुरू किया –

लोग दूर थे सिंहासन से ज़ार के,
देख न पाये बैठा उस पर कौन, क्या!
बहुत निकट आकर जो देखा ग़ौर से
उन्हे नज़र आया, बैठा उस पर कौवा!

"और सुनाओ, वास्का!" मज़दूर चिल्लाये। वे याकोव को भी उछालना चाहते थे, लेकिन वह घर में जाकर छिप गया, क्योंकि उसे पूरा विश्वास था कि उसे उछालकर मजदूर अपने हाथ हटा लेगे और तब वह ज़मीन पर गिरकर टुकड़े-टुकडे हो जायेगा। शाम के समय याकोव दफ़्तर में बैठा था कि इतने में खिडकी के बाहर से तीख़ोन की आवाज़ सुनायी दी – "तुम पिल्ले को रखकर क्या करोगे? मेरे हाथ बेच दो, मैं उसे बहुत बढिया कुत्ता बना दूंगा।"

"बूढे, क्या यह समय कुत्ते पालने का है?" ज़ार्ख़ार ने व्यंग किया।

"पर तुम उसे लेकर क्या करोगे? यह लो एक रूबल और सौदा पक्का हुआ!"

"हटाओ इस बात को।"

याकोव ने खिड़की से सिर बाहर निकालकर कहा –

"तुमने ख़बर सुनी, तीख़ोन?"

"हां," बूढे ने उत्तर दिया और घर के पीछे नज़र दौडाकर धीरे से सीटी बजायी।

"लोगों ने ज़ार का तख़्ता उलट दिया!"

तीख़ोन ने बूट का ऊपरी भाग खींचते हुए कहा –

"तूफ़ान फट पड़ा है! अन्तोनुश्का कहा करता था न, गाड़ी का पहिया खो गया!"

इसके बाद खड़ा हो गया और धीरे-धीरे यह कहता हुआ घर के पीछे की ओर चल दिया –

"तुलुन, तुलुन ..."

खूब हंसी-खुशी के शोर-शराबे में अनेक सप्ताह बीत गये। मिरोन, तात्याना और डाक्टर – सभी एक दूसरे के प्रति स्नेहशील हो गये थे। शहर से कुछ अजनबी आकर मिस्त्री मिनायेव को साथ ले गये। वसन्त की गर्म और धूप नहायी, सुहावनी ऋतु आ गयी।

"सुनो, मेरे सलोने साजन! मेरी समझ में तो कुछ नही आता। ज़ार शासन करने मे इन्कार करता है। सारे सैनिक अपाहिज हो गये है या मारे जा चुके है। पुलिस की छुट्टी कर दी गयी है। चारो ओर नागरिकों का राज्य है। हम लोग कैसे जियेंगे? हर बदमाश अपनी मनमानी कर सकेगा और मै तुम्हे बताये देती हूं कि यह कमबख्त जितेइ-किन मुझे चैन मे नही रहने देगा। वह और वे सारे लोग, जो मुझे पाना चाहते थे और जिन्हें मैंने निराश किया है, मेरी जान के पीछे पड़ जायेंगे। अब, जब सब कुछ एक जैसा हो गया है, मैं यहां नही रह सकती। और रहना भी नही चाहती। मै ऐसी जगह जाना चाहती हू, जहां मुझे कोई न जानता हो! इसके अतिरिक्त क्रान्ति और स्वतन्त्रता के बाद तो हर किसी को अपने मनचाहे ढग मे रहने का अवसर मिलना चाहिये।"

पोलीना का आग्रह दिन-प्रतिदिन बढता गया। याकोव उसे तसल्ली देता – "कुछ देर और ठहरो। शान्ति स्थापित होते ही "

लेकिन उसे इस बात का विश्वास नही रहा कि उसके चारो ओर फैली गडबड कभी शान्त होगी। मिल मे दिन-प्रतिदिन असन्तोष बढ़ता जा रहा था। जिस व्यक्ति के लिये भय स्वाभाविक हो गया हो, वह हर बात से घबरा जाता है और याकोव को ज़ाखार की जली हुई खोपडी से डर लगता। वह सब का बेताज बादशाह बना हुआ था। मज़दूर भेडों की तरह उसके पीछे चलते। मीत्या भी एक पालतू चिड़िया की तरह उसके चारों ओर मंडराता रहता। जाख़ार वास्तव में एक बड़े कुत्ते जैसा हो गया जिसने पिछली टांगों पर चलना सीख लिया हो। झुलसे सिर के कारण अक्सर वह मीत्या द्वारा भेंट किये गये तात्याना के रोयेंदार तौलिया को सिर पर पगड़ी की तरह बांध लेता। ज़ाख़ार का बहुत बड़ा सिर उसके कद को छोटा कर देता, वह मोटे सहायक अफ़सर एक्के की तरह शान से चलता, अपने फटे-पुराने फ़ौजी पतलून की पेटी में बडी उंगलियां खोंसे रहता और बाक़ी उंगलियों

को मछली के सुफनों की तरह हिलाते हुए ज़ोर से चिल्लाता –

"गड़बड़ बन्द करो, साथियो!"

एक दिन तीन मज़दूर कपड़ा चुराने के अपराध में उसके सामने लाये गये। उसकी ऊंची आवाज़ से पूरा अहाता गूंज उठा –

"मालूम है कि तुमने किसकी चीज़ चुराई है?"

और स्वयं ही उत्तर दिया – "अपनी और हम सब की! हरामी पिल्लो! अब चोरी नही कर पाओगे!"

उसने अपराधियों को कोड़े लगाने का आदेश दिया और दो मज़दूर फौरन कोड़े लेकर उन पर पिल पड़े। वास्का पागलों की तरह गाने लगा –

> कीडों और मकोडो की यों खाल उधेडी जाती है!
> अब इन्साफ यहा पर कितना बढ़िया है

अचानक वास्का ज़ोर से कह उठा –

> दया करो अपने लोगो पर हे ईश्वर!

मीत्या ने ऊंची आवाज़ मे कहा –

"शाबाश!".

भूरा पतलून और चमड़े की छज्जेदार टोपी पहने, जो गुद्दी पर खिसकी हुई थी, वह इधर-उधर भागता-फिरता था। उसके लाल चेहरे पर पसीने की बूंदें चमक रही थी और आंखो मे उल्लास फूटा पड़ता था। पिछली रात पत्नी से उसका बुरी तरह झगड़ा हो गया था। याकोव ने शुरू में उनके कमरे की खिड़की मे तात्याना की ऊंची खुसर-फुसर और फिर क्रोध-भरी आवाज़ सुनी थी –

"तुम भांड़ हो! तुम तिरस्कार के लायक़ हो! तुम्हारे विचार? भिखारियों के कोई विचार नही होते। सब झूठ है! एक महीने पहले तुम्हारे ये विचार.. बस काफ़ी है! मैं तंग आ गई हूं! मैं कल ही अपनी बहन के पास शहर चली जाऊंगी... बच्चे भी मेरे साथ जायेंगे..."

इस बात से याकोव को रत्ती-भर आश्चर्य नही हुआ। काफ़ी अरसे से वह देखता रहा था कि मीत्या घृणित व्यक्ति होता जा रहा था।

उसे सिर्फ़ इस बात का आश्चर्य और कुछ गर्व भी हुआ कि सबसे पहले उसने ही मीत्या के बारे में यह भांपा था कि वह भरोसे का आदमी नहीं है और अब नतालिया भी, जो पहले मीत्या को मुर्ग़ों की तरह प्यार करती थी, बिगड़कर बोली –

"उसे क्या हो गया है? यहूदी बच्चे की तरह हर किसी से झगड़ता रहता है। कितना कृतघ्न है . ."

मीत्या चिल्लाकर कहता –

"सब कुछ लाजवाब है! जीवन एक लाड़ली सुन्दरी की तरह है! लेकिन अब हमें भेड़ियों और मेमनो के एक घाट पानी पी सकने के क़िस्सों को भूलना होगा। वह ज़माना बीत गया, तात्याना!"

मिरोन चिढ़कर पूछता –

"और कल तुम क्या कहोगे?"

"जो भी ज़िन्दगी कहलवायेगी! और कुछ?"

मिरोन और तात्याना उससे ऐसे कन्नी काटते मानो उसपर कालिख पुती हो। कुछ दिन बाद मीत्या अपना सामान – किताबों के तीन बडे पुलिन्दे और कपड़ों की टोकरी – लेकर शहर चला गया।

याकोव को चारों ओर बेमानी और तीव्र हलचल दिखायी देती। सब लोग मूर्खता का धुआं छोड रहे थे। पागलपन के ये दिन ख़त्म होते न लगते थे। उसने पोलीना से कहा –

"अच्छी बात है, मैंने फ़ैसला कर लिया है। हम पहले मास्को जायेंगे, फिर आगे देखा जायेगा . ."

पोलीना प्रसन्नता से गद्गद होकर उसके गले से लिपट गयी और उसने बार-बार उसका मुख चूमा।

जुलाई की शाम थी। बगीचे पर रक्तिम आभा फैल गयी, सारे कमरों में वर्षा से भीगी गरम मिट्टी की गन्ध बसी थी। वातावरण सुखद, किन्तु उदासी-भरा था। याकोव ने पोलीना के गरम, नम हाथों को अपनी गर्दन से हटाकर अनमने स्वर में कहा –

"जाकर कपड़े पहन लो .. गम्भीरता से सोचना चाहिये।"

पोलीना भागकर एक गाउन पहन आई और कामकाजी ढंग से उसके पास बैठ गई।

याकोव ने हथेली से अपनी दाढ़ी को गाल पर इतने ज़ोर से रगड़ते हुए कहा कि बालों से आवाज़ पैदा हो गयी –

"हमें कोई ऐसा स्थान ढूंढ़ना होगा, ऐसा देश, जहां शान्ति हो, जहां न चीज़ों को समझने के लिये मग़ज़पच्ची करनी पड़े और न दूसरे लोगों के लिये परेशान होना पड़े। ठीक है न?"

"ठीक," पोलीना ने कहा।

"हमें सब कुछ सावधानी से करना होगा। मिरोन कहता है कि गाड़ियों मे भगोड़े सैनिकों की भरमार रहती है। हमें गरीब होने का ढोंग करना चाहिये।"

"लेकिन तुम काफ़ी धन अपने साथ ले चलना।"

"हां, ज़रूर। मैं घरवालों को यह नहीं बताऊंगा कि कहां जा रहा हूं, जैसे कि वोर्गोरोद जा रहा हू – समझी?"

"इसे छिपाने से क्या लाभ?" पोलीना ने आश्चर्य से सन्दिग्ध स्वर में पूछा।

वह इसका कारण नही जानता था। यह बात अभी-अभी उसके दिमाग़ में आई थी। किन्तु उसे लग रहा था कि यह विचार अच्छा है–

"देखो, मेरे पिता और मिरोन तरह-तरह के सवाल पूछेंगे... व्यर्थ की बहस से क्या फ़ायदा? मैं मास्को जाकर बहुत धन जुटा सकता हूं ."

"तो जल्दी ही सब ठीक कर डालो! अब यहा रहना असम्भव हो गया है। महंगाई की तो हद हो गयी है, चीज़े मिलती नही। ऐसी हालत में चोरी-डाके पड़ेगे, क्योंकि लोग जियें तो कैमे?"

फिर दरवाज़े की ओर देखकर वह फुसफुसायी –

"मेरी बावर्चिन को ही देखो! पहले वह इतनी भली थी, पर अब बेहद गुस्ताख़ हो गयी है और हर वक्त मानो नशे में धुत्त रहती है। किसी रात को मेरी हत्या भी कर डाले, तो आश्चर्य की बात नही, क्योंकि सब कुछ ऐसे गड़बड़ हो गया है। कल मैंने उमे किसी से छिप-छिपकर बाते करते सुना। हे भगवान! मैंने धीरे मे दरवाज़ा खोला, तो देखा कि वह घुटनों के बल होकर कुछ बुदबुदा रही थी। कैसी भयानक बात है।"

"ज़रा रुको," याकोव ने उसकी चिन्ताजनक फुसफुसाहट के तीव्र प्रवाह को रोकते हुए कहा। "पहले मैं चला जाऊंगा..."

"नही," उसने अपने घुटने पर घूंसा मारते हुए ऊंची आवाज़ में कहा। "पहले मैं जाऊंगी! तुम मुझे पैसे दे देना और..."

"क्या तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं?" याकोव ने बुरा मानते और झल्लाते हुए पूछा।

"नहीं। मैं ईमानदारी से साफ़ बात कहती हूं – नहीं! जब सब लोगों ने ज़ार को धोखा दे दिया और हर चीज़ के बारे में धोखा हो रहा है तो विश्वास कहां रहा? तुम्हें किसी पर विश्वास है?"

पोलीना के कथन में ज़ोर था और उससे भी अधिक ज़ोर था उसके उरोजों में, जो खुले गाउन की सिलवटों से दिखायी दे रहे थे। याकोव ने हथियार डाल दिये। अन्त में यह तय हुआ कि पोलीना अगले रोज़ ही सामान बांधकर वोग्गोरोद चली जाये और वहां याकोव की राह देखे।

दूसरे दिन याकोव ने घर जाकर सिरदर्द और पेट दुखने की शिकायत की। उसका यह नाटक मच-सा प्रतीत हुआ। पिछले कुछ महीनों में वह बहुत दुबला हो गया था, मुरझा गया था और बेख्याल रहने लगा था, उसकी लौ देती आंखें फीकी पड गयी थी। आठ दिन बाद वह रेलवे स्टेशन की ओर चल दिया। वह जहा-तहां दरारोंवाले टूटे-फूटे रास्ते के किनारे-किनारे धीरे-धीरे घोडा-गाडी बढा रहा था। इस रास्ते के गहरे गड्ढों में जहा-तहा उलटे गोल पत्थर पडे थे तथा उनके बीच सूखी मिट्टी फूली हुई थी। इसी भद्दे रास्ते जैसा टूटा-फूटा और ऊबड़-खाबड़ जीवन वह पीछे छोड़ आया था। सामने धुंधले बादलो के बीच सूर्य टिमटिमा रहा था।

एक महीने बाद मास्को से लौटकर मिरोन ने सिर झुकाये तथा अपनी हथेली की ओर देखते हुए तात्याना से कहा –

"मै एक दुखद समाचार लेकर आया हू। वह बेहूदा औरत, जो याकोव के साथ रहती थी, मास्को में मुझे मिली थी। उसने बताया कि रास्ते में कुछ लोगों ने – और आजकल लोग है भी कैसे? – याकोव को मार-पीटकर रेलगाड़ी के डिब्बे से नीचे ढकेल दिया..."

"नही!" तात्याना ने कुर्सी से उठने का प्रयत्न करते हुए चिल्लाकर कहा।

"चलती गाड़ी से। दो दिन बाद वह चल बसा। पोलीना ने पेतुश्की स्टेशन के पास देहात के एक क़ब्रिस्तान में उसे दफ़ना दिया।"

तात्याना ने चुपचाप अपना रूमाल आंखों से लगा लिया, फफक-फफककर रोने लगी। उसके हड़ीले कन्धे कांपने लगे, उसके काले वस्त्रों

पर ऐसे आंसू बहने लगे मानो लम्बी गर्दनवाली यह दुबली-पतली औरत घुलने लगी हो।

मिरोन ने अपना चश्मा ठीक किया, हाथों को मलते हुए उंगलियां चटकायीं, सन्ध्या की प्रार्थना शुरू होने के पहले बजनेवाले गिरजे के एकमात्र घण्टे की आवाज़ सुनता रहा और फिर कमरे में टहलते हुए उसने तात्याना को समझाया –

"रोने-धोने से क्या लाभ? मैं सिर्फ़ तुमसे ही यह कह रहा हूं कि वैसे वह बेहद निकम्मा, बेहद मूर्ख आदमी था। ऐसा कहने के लिये क्षमा करना। ज़ाहिर है कि उसके लिये अफ़सोस है।"

"हे भगवान!" तात्याना ने रोने के कारण लाल हो रही आंखों को झपकाते हुए कहा और एक उंगली पर थूक लगाकर अपनी भौंहों को ठीक किया।

"वह तेज़ छोकरी," जेबों में हाथ डालते हुए मिरोन ने कहा, "एक दुखी विधवा का बड़ा भोडा अभिनय कर रही थी, लेकिन उसकी वेश-भूषा को देखने से लगता था कि उसने याकोव को अच्छी तरह लूटा है। वह कह रही थी कि उसने हम लोगो को यहां भी सूचना भेजी है।"

तात्याना ने सिर हिलाया।

"नहीं न? मैं तो पहले ही जानता था कि उसने सूचना नही भेजी होगी। मैं सोचता हूं कि तुम्हारे माता-पिता को यह बात नहीं बतानी चाहिये। अच्छा हो कि वे यही समझें कि याकोव ज़िन्दा है, क्यों?"

"हा, यही ठीक रहेगा," तात्याना ने सहमति प्रकट की।

"वैसे चचा तो बिल्कुल सठिया गये है और कुछ भी नहीं समझते, लेकिन चाची रो-रोकर अपना बुरा हाल कर लेगी..."

तात्याना ने निराशा से सिर हिलाते हुए कहा –

"हम सब भी जल्द ही ख़त्म होनेवाले है।"

"हां, ऐसा हो सकता है, अगर हम यही रहे। मैं अपनी पत्नी और बच्चों को बाहर भेज रहा हूं। तुम भी कहीं चली जाओ। कही ज़ाख़ार मोरोज़ोव... अच्छा तो हम बूढ़ों को कुछ भी नही बतायेंगे। अब मुझे इजाज़त दो – मेरी पत्नी की तबीयत अच्छी नही..."

फिर उसने आगे बढ़कर तात्याना से हाथ मिलाया। जाते-जाते वह बोला – "आजकल सफ़र करना भी बड़ा मुश्किल मामला है। सड़कों की बुरी हालत है!"

प्योत्र आजकल अर्द्धसुप्त अवस्था में रहता, धीरे-धीरे उस पर अधिकाधिक गहरी नींद हावी होती जाती। वह रात को और दिन के अधिकतर भाग में भी बिस्तर पर पड़ा रहता या खिड़की के सामने रखी आरामकुर्सी पर बैठा रहता। खिड़की के बाहर नीला शून्य होता, जिसपर कभी-कभी बादल छा जाते। शीशे में एक मोटे बूढ़े व्यक्ति की आकृति दिखायी देती थी, जिसका चेहरा और आंखें सूजी हुई थीं, दाढ़ी के बाल सफ़ेद और बिखरे थे। प्योत्र अपनी शक्ल देखकर बुदबुदाता –

"क्या खूब मच्छर है यह!"

उसकी पत्नी आती, उसके ऊपर झुकती, उसे हिलाती और ठुनकते हुए कहती।

"कही चले जाना चाहिये, इलाज करवाना चाहिये..."

प्योत्र मन मारकर कहता – "जाओ यहां से, मोटी भैंस! मैं तो तुमसे तंग आ गया हूं। मुझे चैन लेने दो।"

अकेला रह जाने पर वह कान लगाकर सुनता कि कैसे अहाते में, बाग़ में, चारों ओर लोग खुशी से शोर मचाते थे, लेकिन मिल में सन्नाटा छाया था।

उसके अन्तर का असन्तुष्ट, निराश व्यक्ति, जो अपने विचारों के इंजेक्शनों से उसे सजीव बनाता था, ग़ायब हो गया था, मर चुका था। चलो अच्छा हुआ, क्योंकि प्योत्र में अब सोचने की शक्ति नहीं रही थी और न उसे सोचने की इच्छा ही होती थी। बहुत पहले ही वह समझ गया था कि सोचना-विचारना व्यर्थ है, क्योंकि कुछ भी समझ में नही आता था। सब लोग कहा ग़ायब हो गये? याकोव, तात्याना, मीत्या?

कभी-कभी वह अपनी पत्नी से पूछता –

"क्या इल्या वापस आ गया?"

"नही।"

"अभी तक नही लौटा?"

"नहीं।"

"और याकोव?"

"वह भी नहीं।"

"तो वे कही मौज उड़ा रहे हैं और मिरोन कारोबार को जोंक की तरह चूस रहा है।"

"यह बातें मत सोचो," नतालिया समझाती।

"जाओ यहां से!"

वह कोने में जाकर बैठ जाती, उदास नज़रों से प्योत्र को, उस पहलेवाले व्यक्ति को देखती जिसके साथ उसने सारी ज़िन्दगी काटी थी। उसका सिर हिलता था, हाथ इस तरह अविश्वास से हिलते-डुलते थे मानो उनकी हड्डी उतरी हुई हो, वह दुर्बल हो गयी थी और पिघलती मोमबत्ती की तरह उसके चेहरे पर कही-कहीं सूजन आ गयी थी।

प्योत्र कभी-कभी, किन्तु अधिकाधिक अक्सर अपनी समझ मे न आनेवाली दौड़-धूप से जाग उठता। घर में अजनबी लोग आते और वह उनके ऊल-जलूल कोलाहल को समझने की कोशिश करते हुए आखें फाड़कर उनकी ओर ताकता रहता। उसकी पत्नी चिल्लाकर कहती –

"हे भगवान! यह क्या हो रहा है? किसलिये ऐसा हो रहा है? यह तो मालिक हैं। हम मालिक है! मुझे इन्हें शहर ले जाने की इजाज़त दीजिये, इनका इलाज होना चाहिये। इन्हें शहर ले जाने दीजिये।"

"यह मुझे छिपाना चाहती है। आख़िर क्यों?" प्योत्र सोचता। "मूर्ख है। उम्रभर मूर्ख ही रही। याकोव इस पर गया है। लेकिन इल्या मेरी तरह है। उसे आने दो, वह सब ठीक कर देगा..."

वर्षा, बर्फ़ और पाला। साथ में तेज तूफ़ान।

अचानक ज़ोर की भूख ने प्योत्र की तन्द्रा भंग कर दी। उसने अपने को बाग़ में, लता-मंडप में पाया, सामने के शीशे और पेड की शाखाओ के बीच लाल-लाल और अजीब ढंग मे बहुत निकट ही आकाश चमक रहा था। प्योत्र को लगा कि वह वृक्षों के पीछे लटका हुआ है और वह हाथ बढ़ाकर उसे छू सकता है।

"मुझे भूख लगी है," उसने कहा; लेकिन कोई उत्तर नही मिला।

बाग़ पर नीली-भूरी धुंध छायी थी। लता-मंडप के सामने दो घोड़े एक दूसरे की गर्दन पर सिर रखे खड़े थे। उनमें से एक भूरे रंग का और दूसरा मुश्की था। पास की बेंच पर श्वेत क़मीज़ पहने एक आदमी बैठा रस्सी के एक बड़े गुच्छे को सुलझा रहा था।

"नतालिया, सुनती नही? मुझे कुछ खाने को दो..."

पहले जब कभी उसकी तन्द्रा टूटती थी और वह पत्नी को बुलाता था तो वह सदा पहली आवाज़ पर ही आ जाती थी। मानो कही पास में ही हो। पर आज उसका कही पता नही था।

"कहीं ऐसा तो नहीं?" उसने सोचा, फिर कुछ देर बाद यह ख़्याल आया – "शायद वह बीमार हो?"

उसने अपना सिर उठाया। गुसलखाने के दरवाज़े पर कोई चीज़ चमक रही थी। उसने देखा कि वह हरी वर्दीवाले एक सैनिक की पीठ पर लटकी हुई बन्दूक़ की संगीन थी। अहाते में कोई चिल्ला रहा था–

"यह क्या हो रहा है, साथियो! क्या घोड़ों से ऐसा बर्ताव किया जाता है? लोग सुअरों तक से अच्छा सलूक करते है! और यह सूखी घास क्यों बाहर पडी भीग रही है? क्या तुम गुसलखाने में बन्द होना चाहते हो?"

बेच पर बैठा व्यक्ति रस्सी को भूमि पर पटककर सैनिक से बोला–

"न जाने, कहां से आ टपका है। शैतान इसकी ख़बर ले!"

"आजकल पहले से ज़्यादा अफ़सर हो गये है," सिपाही ने कहा।

"इन शैतानो की नियुक्ति कौन करता है?"

"यह लोग अपनी नियुक्ति स्वय ही करते है। आजकल सब बातें अपने आप ही होती है, बूढ़ी नानी के क़िस्से-कहानियो की तरह।"

उस आदमी ने आगे बढ़कर घोडों के अयाल पकड़ लिये। प्योत्र ने पूरी ताकत से चिल्लाकर कहा–

"अरे, मेरी बीवी को बुलाओ!"

"चुप रह बुड्ढे! हुह, इसे अपनी बीवी चाहिये..." जवाब मिला।

घोडे वहां से चले गये। प्योत्र ने अपने मुख और दाढ़ी पर हाथ फेरा, ठडी उगलियों से कान को छुआ और चारों ओर देखा। वह लता-मंडप के पिछवाड़े की, शीशे के बिना दीवार पर चित्रित सेब के एक पेड़ के नीचे लेटा था। पेड़ पर लाल सेब लटक रहे थे। उसके नीचे कठोर बिस्तर था। उसने लोमड़ी के अस्तरवाला कोट ओढ़ रखा था और गरम कोट पहन रखा था। फिर भी उसे सरदी लग रही थी। उसकी समझ में न आया कि वह वहां क्यों पड़ा हुआ है। शायद किसी त्यौहार के अवसर पर घर में सफ़ाई हो रही है? लेकिन कौन-सा

त्यौहार? बगीचे में घोड़े और ग़ुसलखाने के पास कौन लोग हैं? अहाते में यह कौन चिल्ला रहा है: "कामरेड! तुम निरे बुद्धू छोकरे हो! क्या कहा? सैनिक थक गये हैं? थकने का समय अभी बहुत दूर है! बेवक़ूफ़ी मत करो..."

लोग दूरी पर चीख़-चिल्ला रहे थे, फिर भी प्योत्र के कान फटने लगे और उसका सिर चकराने लगा। उसकी टांगों को मानो लक़वा मार गया—घुटनों से नीचे वे मानो नाकारा हो गयी थीं। दीवार पर सेब का पेड़ वान्या लुकीन ने चित्रित किया था। वह चोर था। बाद में उसने एक गिरजे में चोरी की थी और जेल में ही मर गया था।

"झबरीली टोपी ओढ़े एक लम्बा-चौड़ा व्यक्ति लता-मंडप में दाखिल हुआ। उसकी परछाईं धुंधली-सी थी और उसके शरीर से तारकोल की गंध आ रही थी।

"कौन है, तीख़ोन?"

"वही है..."

तीख़ोन का रूखा-सा उत्तर सुनकर भी प्योत्र के कान मानो बहरे हो गये। बूढ़े चौकीदार ने अपने हाथ ऐसे लहराये, मानो वह चरचराते फ़र्श पर तैर रहा हो।

"यह कौन चिल्ला रहा है?"

"ज़ाख़ार मोरोज़ोव।"

"और यह सिपाही यहां किसलिये है?"

"युद्ध जो छिड़ा है।"

कुछ देर चुप रहने के बाद प्योत्र ने पूछा—

"क्या दुश्मन यहां भी पहुंच गया?"

"यह युद्ध तो तुम्हारे विरुद्ध है, प्योत्र इल्यीच..."

मालिक ने कठोर स्वर में डांटा—

"मेरे साथ मज़ाक़ मत करो, मूर्ख बुड्ढे! मैं तुम्हारा कामरेड थोड़े ही हूं!"

इसका उसे शान्त स्वर में उत्तर मिला—

"यह अन्तिम युद्ध है। वे अब और किसी युद्ध की इच्छा नहीं रखते। अब सब लोग एक दूसरे के कामरेड हैं और मूर्ख होने के लिये मैं सचमुच बूढ़ा ही हूं।"

तीख़ोन स्पष्टत: उसकी खिल्ली उड़ा रहा था। वह किसी तरह की शिष्टता न दिखाते हुए तथा टोपी उतारे बिना अपने मालिक के चरणों के पास बैठ गया। अहाते में से एक खरखरी और ऊंची आवाज़ सुनायी दी –

"याद रखो, आठ बजे के बाद कोई गलियों में दिखाई न दे!"

"मेरी बीवी कहां है?" प्योत्र ने पूछा।

"वह रोटी की तलाश में गयी है।"

"क्या मतलब?"

"जो कुछ कह रहा हूं, वही मतलब है। रोटी ईंट-पत्थरों की तरह सड़कों पर तो पड़ी नही रहती।"

बगीचे में अंधेरा घना हो रहा था। गुसलख़ाने के पास खड़ा सैनिक जम्हाई ले रहा था। वह अब दिखायी नही दे रहा था, सिर्फ़ उसकी संगीन ही पानी में तैरती मछली के समान चमक रही थी। प्योत्र बहुत-सी बातें पूछना चाहता था, लेकिन वह चुप रहा। तीख़ोन की तो कोई बात पल्ले नही पड़ेगी। प्योत्र के मन की उलझनें बढ़ती जा रही थीं। वह बहुत भूखा था।

तीख़ोन भुनभुनाया –

"मैं मूर्ख सही, लेकिन सबसे पहले मैंने ही सत्य को पहचाना था। देख लो, ज़िन्दगी ने कैसी करवट ली है। मै हमेशा कहता था कि सबको कठोर-दण्ड देना चाहिये। लो, वह दिन भी आ पहुंचा। तुम्हें कूड़े-करकट की तरह झाड़कर बाहर फेंक दिया गया। हां, प्योत्र इल्यीच, शैतान काटता रहा और तुम उसका छुरा तेज़ करते रहे, किसलिये? तुमने अनगिनत पाप किये है। तुम्हें देखकर मुझे आश्चर्य होता था और मैं सोचता था कि इसका अन्त कब होगा? और अब तुम्हारा अन्त आ गया है। तुम्हें अपने कर्मों का फल मिल रहा है ... तो गाड़ी का पहिया खो गया ..."

"यह आदमी बहक रहा है," प्योत्र ने मन ही मन सोचा। फिर भी उसने पूछा –

"मैं यहां क्यों पड़ा हूं?"

"लोगों ने तुम्हें घर से बाहर निकाल दिया है।"

"और मिरोन को?"

"सभी को।"

"और याकोव?"

"वह बहुत दिनों से ग़ायब है।"

"इल्या कहां है?"

"सुना है वह नयी हुकूमत के साथ है। उसी के कारण शायद तुम ज़िन्दा हो, क्योंकि वह उनके साथ है, नहीं तो..."

"यह बहक रहा है," प्योत्र को इस बात का अब पूर्ण विश्वास हो गया। वह चुपचाप सोचने लगा, "तीख़ोन मठिया गया है, इसी की उम्मीद की जा सकती थी।"

आकाश में नन्हे-नन्हे, निस्तेज तारे टिमटिमाने लगे। प्योत्र ने ऐसे तारे पहले कभी नही देखे थे, इतने तारे कभी थे भी नही।

तीख़ोन ने अपनी टोपी ले ली और उसे उगलियों पर घुमाते हुए भुनभुनाया –

"तुम्हे अपनी करनी का फल मिल रहा है, तुम्हारी चालाकी-भरी बेवक़ूफ़ी ही तुम्हे हड़प गयी। सयानपन-भरी बेवक़ूफ़ी का नतीजा है यह। बेघर-बार लोगो की ज़िन्दगी ज़्यादा आसान है।"

अचानक उसका स्वर बदल गया। वह बोला –

"तुम्हे वह छोकरा याद है? मुशी का बेटा?"

"क्यों, क्या बात है?"

प्योत्र समझ नही पा रहा था कि इस आकस्मिक प्रश्न से वह आश्चर्यचकित हुआ या डर गया? किन्तु उसे समझने में देर न लगी, जब तीख़ोन बोला – "तुमने उसे मार डाला, उसी तरह जैसे ज़ाख़ार ने अपने पिल्ले को मार डाला था। भला किसलिये?"

अब प्योत्र की समझ मे आया – तीख़ोन ने इतने बरस बाद उसकी बीमारी की हालत में उसके विरुद्ध रिपोर्ट करके उसे गिरफ़तार करवा दिया है। इस बात से वह बहुत तो नही डरा। वह तीख़ोन की इस बड़ी मूर्खता पर झुझला उठा। कुहनियो का सहारा लेकर उसने सिर ऊपर उठाया और गले में कड़वाहट और सूखापन अनुभव करते हुए भर्त्सना तथा व्यग्य के स्वर में धीरे से बोला –

"यह झूठ है! और फिर हर अपराध की अवधि होती है। वह अवधि कब की बीत चुकी। इसके अलावा तुम्हारा दिमाग़ चल निकला है। तुम भूल गये हो कि उस दिन तुमने स्वयं ही क्या देखा था, स्वयं ही क्या कहा था..."

"मैंने क्या कहा था? यह सच है कि मैंने तुम्हें हत्या करते नहीं देखा था, लेकिन मैं समझ ज़रूर गया था! मैंने यह देखने के लिये ही ऐसा कहा था कि इसके बाद तुम क्या करते हो। मैंने झूठ बोला था और तुम खुश हुए, तुमने झूठ का सहारा ले लिया। मैं देखता रहा, प्रतीक्षा करता रहा .. तुम सब एक जैसे हो। अलेक्सेई इल्यीच ने अपने शराबी ससुर को उकसाकर बास्कीं के शराबखाने को आग लगवा दी। तुम्हारे पिता ने समझ लिया कि यह किसका काम है और उसने शराबी को मरवा डाला। निकीता इस बात को जानता था, समझदार आदमी था। उसे चुप रहना चाहिये था, लेकिन उसने द्वेषपूर्वक यह बात मुझे बता दी। मैंने उसे समझाया– 'तुम भिक्षु हो, तुम्हें ऐसी बाते भूल जानी चाहिये, पर मैं इन्हें याद रखूगा'। तुमने निकीता के साथ क्या नही किया? पहले उसे अपनी हरकतो से डराया। फिर फांसी लगाने पर और इसके बाद संन्यास लेने के लिये विवश कर दिया, ताकि वह तुम्हारे लिये दुआएं मांगे! तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हुए उसका दिल डरता था, उसकी हिम्मत नही होती थी! इसीलिये ईश्वर पर से उसका विश्वास उठ गया था..."

ऐसा लगता था कि तीखोन क़यामत तक बातें करता जायेगा। उसके शब्द शान्त और संयत थे, मानो उनमें द्वेष का भाव न हो। रात के घने, गर्म अंधेरे में उसका शरीर लगभग अदृष्ट था। खरखरी आवाज़ में निकलते उसके शब्द रात में तिलचटों की सरसराहट की याद दिलाते थे। शब्दों से प्योत्र को डर नही लग रहा था, पर उनकी गुरुता से वह दबा जा रहा था, उनके अप्रत्याशित रूप ने उसको गूंगा-सा बना दिया। प्योत्र को पूरा विश्वास हो गया कि तीखोन की मति मारी गयी है। तीखोन ने ऐसी लम्बी सास ली, मानो अपने कधे से कोई भारी बोझ उतार फेंका हो। वह एकरस स्वर में अतीत की भूली घटनाओं को खोदकर बाहर निकाल रहा था, उन घटनाओ को, जिनको भूल जाना ही अच्छा था–

"तुम लोगो ने, अर्तामोनोव घराने ने, ईश्वर में मेरी आस्था भी खत्म कर दी। तुम्हारे ही कारण निकीता ने अपनी और मेरी भी आस्था नष्ट कर दी .. तुम लोगों का न कोई भगवान है और न शैतान। सिर्फ़ लोगों की आंखों में धूल झोंकने के लिये ही तुम्हारे घर में देव-प्रतिमाएं रखी हैं। तुम किस पर विश्वास करते हो? यह समझ में

नहीं आता। लगता है कि तुम किसी चीज़ में तो विश्वास करते हो। धोखा-धड़ी में। तुम्हारा सारा जीवन धोखा-धड़ी ही था। अब सारी पोल खुल गयी है। तुम्हारा पर्दाफ़ाश हो गया है..."

प्योत्र ने बड़ी कठिनाई से अपने शरीर को हिलाया, अपने बेहद भारी पांवों को फ़र्श पर टिकाया, लेकिन उसके तलवे निर्जीव हो गये थे। उसे लगा मानो उसकी टांगें अलग हो गयी हैं और वह हवा में लटक रहा है। घबराकर उसने तीखोन के कंधे का सहारा लिया।

"यह क्या कर रहे हो?" चौकीदार ने उसे झटककर अलग करते हुए रुखाई से पूछा। "खबरदार, जो मुझे छुआ! तुम मेरा गला नहीं घोंट पाओगे — तुम्हारे शरीर में इतनी ताक़त नही बची। तुम्हारे पिता मज़बूत थे, लेकिन उन्होंने अपनी सारी शक्ति डींगें हांकने में नष्ट कर दी। तुमने भगवान में मेरी आस्था नष्ट कर दी। अब मुझे मृत्यु से भय लगता है, यह सब तुम लोगों के काले कारनामे देख-देखकर हुआ, शैतानो..."

प्योत्र की भूख बढ़ती जा रही थी। वह अपनी टांगों की दशा देखकर भयभीत हो रहा था।

"क्या सचमुच मैं मर रहा हूं? अभी तो मैं पचहत्तर वर्ष का भी नहीं हूं, हे भगवान..."

उसने लेटने की कोशिश की, लेकिन अपनी टांगें उठा न सका। तब उसने तीखोन से कहा —

"मेरी मदद करो, टांगें उठाकर बेंच पर रख दो!"

तीखोन ने अपने भूतपूर्व मालिक की निर्जीव टागों को उठाकर बेंच पर रख दिया और थूककर फिर से बैठ गया। उसके हाथों में कोई चमकदार चीज़ थी। प्योत्र ने ग़ौर से देखा — यह रफ़ू करने की सूई थी, वह अंधेरे में सूई से अपनी टोपी सी रहा था, जिससे उसकी दृष्टि में तीखोन का पागलपन और भी प्रमाणित हो गया। उसे उसके ऊपर रात्रिकालीन भूरी तितली की झलक मिली, बगीचे में रोशनी की तीन लकीरें दिखायी दीं। दूरी पर, लेकिन स्पष्ट स्वर में किसी ने कहा —

"साथियो! पीछे नही हटेंगे, कभी नहीं!"

तीखोन ने अपनी बात में उस आवाज़ को डुबो दिया -

"तुम्हारे पिता ने मेरे भाई को मरवा दिया था।"

"यह झूठ है," प्योत्र के मुंह से हठात् निकल गया। फिर उसने पूछा – "कब ?"

"तभी !"

"तुम झूठ क्यों बके जा रहे हो, सिरफिरे ?" एकाएक क्रोध के आवेश में प्योत्र चिल्लाया। भूख के कारण उसकी शक्ति और भी क्षीण हुई जा रही थी। "आखिर तुम क्या चाहते हो ? तुम क्या मेरी अन्तरात्मा हो ? मेरा न्याय करने आये हो ? पिछले तीस साल तक तुम क्यों चुप रहे ?"

"क्योंकि मैं सोच रहा था !"

"अपने मन में घृणा एकत्र कर रहे थे ? अच्छा ... जाओ, पुलिस को बता दो।"

"यहां पुलिस नही है।"

"जाकर उनसे कहना – 'इस आदमी ने जीवन-भर मुझे खाना-कपड़ा दिया। इसे सज़ा दो।' लेकिन तुम तो पहले ही पुलिस को सब कुछ बता चुके हो ! आख़िर तुम चाहते क्या हो ? मुझे डराते-धमकाते क्यों नही ? मुझसे रक़म वसूल करो !"

"तुम्हारे पास तो पैसा है ही नही। तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है और न कभी था। किसी से इन्साफ़ की परवाह करे, मेरी जूती। अपने लिये मैं ख़ुद जज हूं।"

"तो फिर तुम यह धमकी किस बात की दे रहे हो, मूर्ख गंवार ?"

किन्तु प्योत्र ने अस्पष्ट रूप से यह समझ लिया कि तीख़ोन धमका नही रहा है। तीख़ोन भुनभुनाया –

"मेरे भाई के हत्यारों का अन्त आ पहुंचा है। किसलिये, किसलिये उन्होंने मेरे भाई को मारा था ?"

"भाई के बारे में तुम झूठ बोल रहे हो !"

दोनों बूढ़े एक-दूसरे की बात काटते हुए तेज़ी से बोलने लगे।

"मैं झूठ बोल रहा हूं ? मैं उस रात उसके साथ था ..."

"किसके साथ ?"

"अपने भाई के। जब तुम्हारे बाप ने उसकी हत्या की, तो मैं भाग आया। मरते समय तुम्हारे पिता ने ख़ून क्यों उगला था ? वह मेरे भाई का ख़ून था।"

"वक़्त हाथ से निकल गया ..."

"अब लोगों ने तुम्हारा तख़्ता उलट दिया, तुम्हें निकाल बाहर किया। यहां कोई तुम्हारी बात पूछनेवाला भी नहीं है। मैं भी सदा की तरह एक किनारे खड़ा रहूंगा..."

"पागल हो रहे हो..."

प्योत्र को लगा कि तीख़ोन उसे एक ऐसी भयानक, अंधेरी खाई की ओर ढकेल रहा है जहां कुछ भी नज़र और समझ में नहीं आता। वह बार-बार कह रहा था—

"वक़्त हाथ से निकल गया। भाई के बारे में झूठ बोल रहे हो। तुम्हारा कोई भाई नही था। तुम जैसे लोगों का कुछ भी नही होता..."

"हमारी अपनी अन्तरात्मा होती है।"

"तुमने मुझसे बदला चुका लिया—इल्या को भटका दिया।"

"यह तो तुम अर्तामोनोवों ने ही मुझे भटका दिया—निकीता इल्यीच की बातों ने!"

"वह तो कहता था कि तुमने उसे ग़लत रास्ते पर डाला है!"

"मैंने कई बार तुम्हारे पिता की हत्या करनी चाही। अपना फावड़ा उसके सिर पर मारते-मारते रह गया.. तुम चालाक लोग हो .."

"और तुम ख़ुद..."

"तुम लोगों ने सेराफ़ीम को ख़ूब सताया। वह भी मुझे व्यथित करता रहा। वह किसी के साथ बुराई नही करता था, पर उसके जीने का ढंग अच्छा नहीं था। इसका कारण? चारों ओर तुम लोगो की चालें थी .."

"कौन जा रहा है? किधर?" अंधेरे मे एक क्रोध-भरी आवाज़ सुनायी दी—"तुम गधों को कितनी बार बताया जाये कि आठ बजे के बाद मटरगश्ती करना मना है?"

तीख़ोन उठकर दरवाज़े की ओर बढ़ा और अंधेरे में ग़ायब हो गया। उत्तेजना, भूख और थकान से चूर प्योत्र ने अंधकार में देखा कि कैसे बाग़ में नज़र आनेवाली प्रकाश की तीन रेखाओं के बीच कुछ चौडा और काला-सा झलक उठा था।

"कहो कुछ मिला?" तीख़ोन किसी से पूछ रहा था।

"बस, इतना ही!"

यह नतालिया की आवाज़ थी। वह इतनी देर तक कहां थी? इस बूढ़े के साथ उसे अकेला क्यों छोड़ गयी थी?

प्योत्र ने आंखें खोलीं। वह कुहनियों के सहारे उचका और दरवाज़े के पास उसे दो काली आकृतियां दिखायी दी। अचानक उसे याद आया कि वह जीवन भर एक ही समस्या का समाधान ढूंढ़ता रहा है। उसका जीवन इस बुरी तरह से उलझा हुआ और धोखा-धड़ी से क्यों ग्रस्त है? इसमें किसका क़सूर है? अब उसकी समझ में आया।

उसकी पत्नी उसके पास आयी और उसके ऊपर झुककर बुदबुदायी–

"भगवान, भला हो तुम्हारा ..."

"देखो, तीखोन! सारा क़सूर इसी का है!" प्योत्र ने दृढ़तापूर्वक और राहत की सांस ली। "हां, यह लालची औरत ही मुझे उकसाती रही है!"

फिर वह ज़ोर से चिल्ला उठा –

"मेरा भाई निकीता भी .. इसी के कारण तबाह हुआ। यह तो तुम भी जानते हो ..."

प्योत्र हांफने लगा। सबसे विचित्र बात तो यह थी कि उसकी पत्नी न तो ख़फ़ा हुई, न डरी और न रोने ही लगी। कांपते हाथों से प्योत्र के बालों को सहलाते हुए वह घबराये, किन्तु स्नेहपूर्ण स्वर में फुसफुसायी –

"धीरे बोलो, चिल्लाओ नही! यहां सभी हमारा बुरा चाहते है ."

"कुछ खाने को दो .."

नतालिया ने एक खीरा और रोटी का एक भारी टुकड़ा उसके हाथ पर रख दिया। खीरा गरम था और रोटी गुंधे आटे की तरह उसकी उंगलियो में चिपक गयी।

प्योत्र भौचक होकर चिल्ला उठा –

"यह क्या है? यह – मेरे लिये? इतना ही?"

"भगवान के लिये चुप रहो। और कुछ नही है। और सिपाही भी .." नतालिया ने फुसफुसाकर कहा।

"मेरे, सब कुछ के बदले में तुम मुझे यही दे रही हो? मेरे सारे डर, मेरी सारी ज़िन्दगी के बदले में?"

वह रोटी को हाथ में लेकर तौलते हुए बुदबुदाया और उसने यह अनुमान लगा लिया कि कोई असह्य बात हो गयी है, कोई बहुत ही अपमानजनक बात जिसके लिये नतालिया भी दोषी नही है।

उसने रोटी दरवाज़े की ओर फेंक दी और घुटे-घुटे, किन्तु दृढ़ स्वर में बोला –

"मुझे यह नहीं चाहिये।"

तीख़ोन ने रोटी उठाकर झाड़ी-पोंछी। नतालिया ने एक बार फिर पति के हाथ में रोटी थमा दी।

"इसे खा लो, ख़फ़ा मत हो..."

नतालिया का हाथ झटककर प्योत्र ने ज़ोर से आंखें मूंद ली और दांत भींचते हुए बहुत ही गुस्से से फुफकारकर कहा –

"मुझे यह नहीं चाहिये। दफ़ा हो जाओ!"